श्रीश्री महाभारत।

आदि, सभा, बन, विराटपर्व्व ।

सबलसिंह चौहान विरचित ।

कलकत्ता ;
३४।१ कोलुटोला ष्ट्रीट, बङ्गवासी ष्टीम-मेशिन प्रेसमें
श्रीवरुणोदय राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित ।

मूल्य १) रुपैया

सूचीपत्र।

आदिपर्व्व।

सभापर्व्व।

वनपर्व्व।

विराटपर्व्व।

महाभारत।

आदिपर्व्व।

गजमुख सुखकर दुखहरण, तोहिं कहौं शिर नाय।
कीजै यश लीजै विनय, दीजै ग्रन्थ बनाय॥
जगदीश्वरको धन्य जिन, उपजायो संसार।
क्षिति जल नभ पावक पवन, करि इनको विस्तार॥
नृपहि दास दासहि नृपति, पवि तृण तृणहिं पषान।
जलधि अल्पसर लघु सरहि, उदधि करै छणमान॥

प्रथमहिं आदि पुरुषको ध्यावौं। जा प्रसाद शिक्षा सब पावौं॥
पूरुष परम अखण्डित रूपा। है सर्व्वोत्तम रूप अनूपा॥
अक्षर कृष्णाक्षर मझारा। जाते देखत सब संसारा॥
क्षर अक्षरमय कृष्ण अभङ्गा। परम पुरुषकर रूप अनङ्गा॥
जो सर्वज्ञ लेप निर्लेपा। ता महिमा को कह संक्षेपा॥
जाके नाम तरत संसारा। जासु नाम दुख शोक संहारा॥

एक ब्रह्मते अगनित रङ्गा । वरण वरण संसारप अङ्गा ॥
ता माया सब देवता भयऊ । गुण निर्गुण एकै निर्मयऊ ॥
पुरुपक वीज मूल पुनि धारहि । मूलरूप वरणों निरँकारहि ॥
हरि हर कृष्ण तु शाखा भयऊ । जन्म वृद्धि संहार न लयऊ ॥

एक ब्रह्म वहुरूप है, जानि जात नहि भेद ।
नाना छवि ताही विषे, महिमा भाषत वेद ॥

ता महिमा वरनैं जगमाहीं । को समरथ ज्ञानी अस आही ॥
परब्रह्म ब्रह्म सूक्ष्म ओङ्कारा । जा महिमा वरणै सुर सारा ॥
सोभगवान स्वरूपनिकाया । देव नाग सुर मुनि जन माया ॥
त्रिगुणमयी माया संसारा । सत रज तम त्रय देव विचारा ॥
जो मायावल है विस्तारा । पुरुष रूप कत तासुसंसारा ॥
माया ब्रह्म अछेद न कीन्हो । प्रवल योग मायाकर लीन्हो ॥
माया योग करै सु अपारा । देव दैत्य नर नाग संभारा ॥

आपहि कर्म्म अकर्म्म करि, आप करत संहार ।
माया योग उभय रची सर्व तासु विस्तार ॥
ज्योति रूप है तासु गुण पुरुष पुनीत सुवास ।
जा मायाकी प्रवलता स्वामी कौन प्रकास ॥

सो गुण कर्म्म कछुक विस्तारा । भाषिय जाहि त्रिगुण संसारा ॥
कृष्ण स्वरूप धरे जगमांही । माया रूप रचा महिमांही ॥
सो लीला जगमहं विस्तारा । कथा रहस्य रङ्ग संसारा ॥
वरणिनिरंजन पुरुषप्रधाना । कही व्यास मुनिगुणकनिधाना ॥

हरिचरित्र कोउ भेद न पावहिं। कै भाषा संक्षेपहि गावहिं॥
महामुनी जो व्यास वखाना। श्रीभगवन्त चरित जिन जाना॥
तिन यह रच्यो प्रथम महाभारथ। लक्षश्लोक परमपुरुषारथ॥
लेखक कोउ न मिल्यो जगमाहीं। तब गणेशकर ध्यानकराहीं॥
कहि गणेश हम लिखिहैं सोई। बोलत बचन रुकै नहिं कोई॥
व्यास बूझि गणपतिकी इच्छा। निज बुधि उनहुक लीन्ह परिच्छा
भलेहि रुकै नहिं बचन हमारा। विन बूझे न लिखे तुम पारा॥
ऐसे हि व्यास श्लोक बनावैं। बीच बीच कछु कूट सुनावैं॥
तिन्हें समुझिबे कारण तबहीं। गणपति धरहिं लेखनी जबहीं॥
तौलों व्यास करैं अरु रचना। गणपतिलिखैं बहुरि सोइ रचना
व्यास मुनी भारत निर्माये। वैशम्पायन शिष्य पढ़ाये॥
जनमेजय राजा अवतारा। धर्म्मरूप कृष्णताकुमारा॥
एक समय मुनि व्यास जु आये। राजसभाके मांहिं सिधाये॥
पूजार्चा तब राजा कीन्हों। हर्ष गात कछु पूंछे लीन्हों॥
सबही देख्यो तुम महभारथ। कौरव पाण्डवकर पुरषारथ॥
कौन प्रकार चरित्र अपारा। मारे कौरव पञ्च कुमारा॥

औरौ वंशचरित्र जो, सुनिये तोहिं प्रसाद।
ताहि सुनत जो महामुनि, नाशत चित विषाद॥

सुनिकै व्यास कहै नृपपाहीं। यह अब कहैक अवसर नाहीं॥
वैशम्पायन शिष्य हमारा। सो तौ कहै चरित्र अपारा॥
यह कहि व्यास तपहि वन जाई। वैशम्पायन कथा सुनाई॥

आगे व्यास सुआशिष दयऊ । तव आश्रमकहं गवनत भयऊ ॥
प्रथमहिं कहो वंश विस्तारा । जामें भे नृप अमित प्रकारा ॥
ब्रह्मपुत्र मरीच मुनि भयऊ । मारिच सूरसभा निर्मयऊ ॥
सूरसभासुत सूर्य्य ऽवतारा । सूर्य्यपुत्र स्वायम्भु भुवारा ॥
स्वायँभुपुत्र नखतपति भयऊ । बुद्धनाम सुत ता निर्मयऊ ॥
ताके पुत्र अनूपम आही । वेद पुराण प्रशंसत जाही ॥
अनुपम पुत्र नहूष भुवारा । सुत नहूष संयति संसारा ॥
संयतिपुत्र पुरोजनमाहीं । संयति पुत्र अनूपम आहीं ॥

संयति सुत है बृहस्पति, जगत महा सञ्चार ।
तसत्र पुत्र जो भोज भे, सुनो जु वचन भुवार ॥

भोजपुत्र भयो सन्त ऽवतारा । भरतनाम भयो तासु कुमारा ॥
मञ्जमीठ ताके सुत भयऊ । तासु पुत्र ब्रह्मा निर्मयऊ ॥
विष्णूसुता सत्यसुत माहीं । तासु पुत्र शन्तनु नृप आहीं ॥
चित्रवीर्य्य है तासु कुमारा । लीन्हा जासु पाण्डु अवतारा ॥
भये पाण्डुसुत अर्जुननामा । अर्जुनसुत ऽभिमनुत्र गुणधामा ॥
अभिमनुत्रपुत्र परीक्षित रहत्रऊ । जनमेजय तिनके सुत भयऊ ॥
यहिविधि भयो वंश विस्तारा । सोमवंश शन्तनू भुवारा ॥
महाबली जानत संसारा । करै राज्य नित नीति विचारा ॥
नाम अमोघा तेहि पटरानी । रूपवती नहीं जाइ वखानी ॥
मानौ रति तेहि देखि लजाहीं । तीनलोक तासम है नाहीं ॥
[illegible] निहारी । शान्तनु राजाकै प्रिय नारी ॥

ब्रह्माके मन मोह भो हरो रूप सो ज्ञान ।
मारभार तन प्रबल अति लग्यो नैनके बान ॥
शन्तनु राजा गये शिकारा । ब्रह्मा शन्तनु गेह सिधारा ॥
ब्रह्मा रानीके ढिग गयऊ । करि बहुयत्न कामसुख लयऊ ॥
कीन्हे हरण अमोघा रानी । राजा सुनु मैं कहौं बखानी ॥
ब्रह्मलोक जब ब्रह्म सिधाये । शन्तनुराजा गृह तब आये ॥
अबहीं रति रस हमसों लयेऊ । साज अहेरक देखत भयऊ ॥
राजा तब जाना विरतन्ता । माया धरेउ कोउ जानेउ अन्ता ॥
जानी कथा सबै विस्तारा । शन्तनु लज्जित क्रोध अपारा ॥
अन्तःपुर शान्तनु तब गयेऊ । देखत रानी चक्रित भयेऊ ॥
इस्त्री जानि वधन नहिं करेऊ । तब राजा सङ्गति परिहरेऊ ॥
सो रानी बहु लज्जा पाई । गङ्गाजी में प्राण गंवाई ॥
आगे सुनु राजा मन जानी । शन्तनुके घर नहिं है रानी ॥
वंशरहित भो सुत है नाहीं । यही सोच राजा मनमांहीं ॥
सोचवन्त भो राजा, वंशरहित निज आह ।
अस विचार करि थाके, जनमेजय नरनाह ॥
राजा सुनहु पुनीत कहानी । जाते सर्व पापकी हानी ॥
ऋषि वशिष्ठ जानै संसारा । कामधेनु ता गृहमझारा ॥
ऋषि वशिष्ठ सुरपुरके मांहीं । तहां अष्टवसु रहहिं सदाहीं ॥
अष्टवसू कै ऋषि अवतारा । तिन वशिष्ठके गृह पगु धारा ॥
आदर बहुत ऋषैकर कीन्हो । भोजन बहुत प्रकारक दीन्हो ॥

तबै अष्टवसु धेनुहि देखा। भयउ पाप मन हेतु विशेषा॥
अष्टवसू निज गृहकहं गयेऊ। दिना दोय तब बीतत भयऊ॥
एक दिना मन मन्त्र दृढ़ाये। बंधु कनिष्ट मुनि गृहै पठाये॥
तबहि वशिष्ठ ध्यानमहं पाई। अष्टवसू मम गाय चुराई॥
गौ वसिष्ठकी चोरी कीन्हा। क्रोधितऋषै शाप तब दीन्हा॥
आपन गवस चोर भो आपा। मानुष जन्म मृत्यु परितापा॥

मनुष जन्म तुम होउगे, भुगतौ लोक मंझार।
शापै दीन्ह वशिष्ठ तब, अति क्रोधितसञ्चार॥

अष्टौवसू श्राप जब पाये। ता पाछे मुनि विनती लाये॥
भवेउ श्राप अब करहु उधारा। भये वशिष्ठ प्रसन्न अपारा॥
मनुष रूप जब तजब शरीरा। तबहि उधार सुनहिं मुनिधीरा॥
यहं हमार अनुग्रह आही। बहुत काल रहि है तनु नाही॥
युद्ध काल विग्रह तब हुइहैं। रणमें मरन तौ प्रान नसइहैं॥
सावधान होय सुनहु विचारा। जनमत होयहैं तोर उधारा॥
यही प्रकार अनुग्रह कीन्हें। आठौ वसुहि महादुख दीन्हें॥
राजा सुनु मायाके हेता। ऐसे मुनि हुइ गये अचेता॥
ताते जो चरित्र अनुसारा। नानारूप अनेक प्रकारा॥
योगी मध्य सर्व परधाना। ब्रह्म विष्णु हर रूप प्रमाना॥

सोइ विष्णुकी माया, मोहत नर मुनि देव।
जन्ममृत्युकी जातना, सुनु जनमेजय भेव॥

सब देवन मिलि कीन्हविचारा। अष्टौवसु जन्महिं संसारा॥

तब देवन गङ्गा हंकराई । श्राप हेतु तब कह समुझाई ॥
तुम्हरे गर्भ जन्म परभावैं । अष्टौवसू मुक्त तनु पावैं ॥
मानुषरूप धरौ अवतारा । जन्म वर्षलौं गर्भ सँझारा ॥
गङ्गा जाना पर उपकारा । करि माया मानुष तनु धारा ॥
खोजा सबहि जगत संसारा । कहां जाउं को पुरुष हमारा ॥
करै विचार कहै तहं बाता । शन्तनु भूप सवै जगज्ञाता ॥
राजा तबै अखेटक गयऊ । वनमहं गङ्गा दर्शन दयऊ ॥
शन्तनु मोहे देखत नारी । तब गङ्गासन कह्यो विचारी ॥
कौन रूप वन कारण काहा । कहौ सत्य सो हमहीं पाहा ॥

गङ्गा बोली बात असि, देवाङ्गन हम जान ।
बाचाबन्ध सोई पुरुष, कन्या कहा बखान ॥

राजा हर्षित वाचा कीन्ही । तब गङ्गा यह बोलै लीन्ही ॥
कौनौ कर्म करब हम राऊ । तामहं भङ्ग देव जनि पांऊ ॥
तादिन हमहिं न पैहौ राजा । यहि वाचासों बँध है काजा ॥
तब राजा घरको लै आये । हर्षवन्त बाजन बजवाये ॥
राजा रहै हर्ष मनमाहीं । परमहर्ष सो बासर जाहीं ॥
बहुतक दिन बीते यहि भाऊ । बालक एक गर्भ जन्माऊ ॥
राजा हर्ष बहुत मन कीन्हा । बहुत दान विप्रनकहं दीन्हा ॥
रानी प्रसव भई जिहि बारा । बालक लैकै जलमहं डारा ॥
अन्त प्राण बालकके गयऊ । विस्मय मनमहं राजा भयऊ ॥
कहत नहीं कछु वाचा बांधे । रहा दुःख हिरदयमहं साधे ।

यहि प्रकारसों गङ्ग तव, सात पुत्र जल डार।
वाचा बँध हित राजा, महा दुखित खभार ॥

अष्टम गर्भहि भा सञ्चारा। तव शन्तनु विनती अनुसारा
सात पुत्रके नाशे प्राना। यह सुत हमको देवो दाना ॥
हँसिके गङ्गा तव यह कहो। इतने दिन तुम्हरे सङ्ग रहो ॥
वाचा छल आज्ञुइ भा आनो। हमहैं गङ्गा कहत वखानो ॥
अष्टम राजा आप वचाया। यह कनिष्ट जो अष्टम आया ॥
यह वृत्तान्त कहौं तोहिंपाहीं। राजा सुनो कथा मनमाहीं ॥
कामधेनु वशिष्ठको आहो। अष्टौवसू हरण कर ताहो ॥
याही पाप शाप उन दीन्हों। मानुष कर्म्म चोर इन कीन्हों ॥
ताते शाप लेउ समुदाई। यहै कनिष्ट हरण कर गाई ॥

यहै हेतु हम मनुष तनु, गङ्गा कहत विचार।
पर उपकारक कारणै, मैं रहि साथ तुम्हार ॥

गङ्गा पुत्र गोद कर लीन्हा। स्वर्गहि लोक गमन तव कीन्हा ॥
इन्द्र वरुण यम पावकपाहीं। औ दिग्पाल मिलायो ताहीं।
सवते कहा पुत्र यह मोरा। ताते दरश करौं जो तोरा ॥
सवहिं कृपा कीजै यहि काजा। गङ्गा भाख्यो देवसमाजा ॥
रणमें अजय होहु वर देवा। पुत्र हमार जानु यह भेवा ॥
सवहि देवता कहि तव वाता। रणमें अजय होय यह माता ॥
जवलग अस्त्र रहै करमाहीं। तीनि लोक कोउ जीतहि नाहीं ॥
सौंपा शन्तनुको तव जाई। और कहा वहुतक समुझाई ॥

और एक कङ्कण तब दीन्हा। हर्षि गात राजा लै लीन्हा॥
जाके हाथ बराबर होई। ताकर व्याह करब नृप सोई॥
यह कहिकै तब जान्हवी, भई जु अन्तर्द्धान।
राजा पुत्रहिं पालंही, सबलसिंह चौहान॥
पांच सात बर्षनकर भयऊ। परशुरामपहं पढ़ने गयऊ॥
परशुराम किरपा बहु कीन्हा। विद्या राजनीति सब दीन्हा॥
अस्त्र शस्त्र बहु सिखे अपारा। आप समान कीन्ह संसारा॥
भृगुपति बहुत दया तब कीन्हा। आपसमान धनुर्द्धर कीन्हा॥
पढ़ि जो विद्या भीषम आये। वैशम्पायन कथा सुनाये।
यहि प्रकार तब भीषम भयऊ। महाहर्ष शन्तनु मन ठयऊ॥
आगे कही कथा विस्तारा। सावधान होइ सुनौ भुवारा॥
जैसे व्यास मुनी अवतारा। सत्यवतीके गर्भसंस्कारा॥
जैसे सत्यवती अवतारा। तासुपुत्र मुनि व्यास कुमारा॥
सुनत कथा पापनकर नासा। पावत अन्त परम पदवासा।
भारत कथा सुपुण्यफल, राजा सुनु विस्तार।
सबलसिंह चौहान कह, गुण गोविन्द अपार॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

वैशम्पायन करत बखाना। जनमेजय राजा सुनि ध्याना।
वेणु नाम राजा मधुवंसा। अतिही शील वीर अवतंसा।

चन्द्रावती तासु पटरानी। रूप शील नहिं जाइ बखानी॥
रजस्वला सो रानी भयऊ। तादिन राउ अखेटक गयऊ॥
मारे साउज मृगा अपारा। जल आश्रम राजा पशु धारा॥
सरवर एक अनूप सुहावा। नाना जन्तु कमल बहु छावा॥
कमलमाहिं भंवरा इक आही। केलि करत भंवरीके पाही॥
राजा देखि कामवश भयऊ। भूलि ज्ञान राजाकर गयऊ॥
रानी रूप हृदय धरि राऊ। वीर्य्यपात भो वाही ठांऊ॥
राजाकहं देवी वर आही। तासु तेज मिथ्या नहिं जाई॥

मन विचार कर राजा, पक्षी शुकहि बुलाइ।
पद्मपत्र दोना कियो, ताहि वीर्य्य सौंपाइ॥

भाष्यउ राउ पक्षिसों बानी। देहु वीर्य्य यह जहं है रानी॥
कहि सन्देश तुरत मो आवहु। तव पक्षी तुम बात सुनावहु॥
पक्षी वीर्य्य चलेउ लै तवहीं। आधो मारग पहुंचो जबहीं॥
नदी एकके ऊपर आयो। पक्षि एक देखन तव धायो॥
गहेसि जाय निज जानि अहारा। दूनो पक्षिन युद्ध संचारा॥
युगल बुन्द जलमहं पर सोई। महायुद्ध पक्षिनमहं होई॥
जौन बुन्द जलमाहीं डारा। एक मच्छि तव कीन्ह अहारा॥
दूनों पक्षो लरत सु जाहीं। दोना गिरा ताहि वन जाही॥
भरद्वाज जेहि ठाहर रहेउ। दोना देखि महामुनि कहेऊ॥
जोनि मच्छि सो करै अहारा। गर्भवन्त होइ जलमञ्झारा॥

बहुत दिना तब बीतिगे, विधि परपञ्च उपाइ ।
धीमर एक अखेटकहं, मच्छिहेतु तहं जाइ ॥
ओही मच्छि जालमहं परी । दीरघ मच्छि देखि सुख करी ॥
दासाराम तहांकर राऊ । धीमर मछ ले गये तिहि ठाऊ ॥
राजा मच्छि देखि विस्तारा । तब मच्छीकर उदर विदारा ॥
तासु उदर जो देखि भुवारा । कन्या एक अरु एक कुमारा ॥
राजहि मन भो हर्ष अपारा । बोल्यउ वचन समय अनुसारा ॥
मच्छदेश पति राजा सोई । निश्चय राजा जानहु होई ॥
कन्या नृप केवटको दीन्हा । मच्छोदरी नाम त्यहि कीन्हा ॥
बहुत कहे केवटसों राऊ । केवट पालत कन्या भाऊ ॥
सात वर्षकी कन्या भयऊ । नदीमाहिं सो कन्या गयऊ ॥
केवट व्याधी तनसों गही । नाव घाटमें कन्या रही ॥
यहि प्रकारते राजा, सुनो और विस्तार ।
त्यहि मारग पाराशर, आयो जो पशु धार ॥
नदीघाट पाराशर जाई । मच्छोदरिको देख्यउ आई ॥
कन्या देखि मोहि मुनि गयऊ । कामातुर पाराशर कहेऊ ॥
लग्न देखि ऐसा मुनि ताही । जन्महि पुत्र सो पण्डित आही ॥
कन्यापाहिं कहा मुनि बाता । सरिताघाट काम संख्याता ॥
काम जु अनी पञ्चशर मारा । इस्त्री मानहु वचन हमारा ॥
रतिदानहि दे हमको नारी । सुनि कन्या लज्जा भइ भारी
कन्या कहा बाल तनु मोरा । जानों काह कामगति तोरा ॥

देखहिं दिवसमांहि नर नाना । कैसे तुम भाषौ रतिदाना ॥
देखहि दिवसमांहि नरनारी । कैसे मांगहु रति एहि बारी ॥
ऋपय कहत तव वचन विचारी । योजनगन्धा नाम तुम्हारी ॥
यौवनवन्त होहु च्णमाही । अन्ध कुहिर होवै पुनि ताही ॥

यौवनवन्ती भइ सुता, औ सुगन्ध तनु आन ।
दशोदिशा अंधियार भा, कन्या दिय रतिदान ॥

रतिरस पाराशर तव कीन्हा । व्यासदेव जन्महिं तब लीन्हा ॥
जन्मेउ बालक गर्भसंभारा । पिता सङ्ग तब वन पगु धारा ॥
पुत्रहेतु रोवत सो रानी । तबै व्यास अस कहेउ वखानी ॥
विष्णू माया जन्म हमारा । कौन काज तुम करो खंभारा ॥
तपके काज पिता संग जैहौं । सुमिरत मात तुरतही ऐहौं ॥
कन्या कह मम भयो कलङ्का । लोक लाज कर्महु भौ वङ्का ॥
पाराशर भाष्यो विस्तारी । आशिष मम तुम होहु कुमारी ॥
पाराशर वन तवहीं गयऊ । व्यासदेव पुत्रहि संग लयऊ ॥
कन्या तव अपने गृह आई । यह वृत्तान्त सुनो हो राई ॥
ऐसो व्यास देव अवतारा । भाष्यो मुनिवर सुनो भुवारा ॥

व्यासजन्मकी कथा यह, सुनु राजा धरि ध्यान ।
पुण्य कथा श्रीभारत, जा सुनि पाप नशान ॥

शन्तनु राजा केतिक काला । उपजा चित्त हेतु सो बाला ॥
प्रथमें गङ्गा कङ्कण दीन्हा । जगत सकल उपमान सो कीन्हा ॥
काहूके कर होत सो नाहीं । खोज्यो सकल जगतके माहीं ॥

मत्स्योदरि केवटकै बारी । ताके करमहं भयो विचारी ॥
राजा कहै सुनो सुत वाता । व्याहब सो कन्या विख्याता ॥
भीषम कहै जातिकी हीना । कौन बुद्धि यहि विधिने दीना ॥
शन्तनुहठ कीन्हा यहि कारन । भीषम रचे व्याह व्यौहारन ॥
भीषम केवटसन कह जाई । कन्या देहु नृपतिकहं भाई ॥
केवट तो मानत है नाहीं । हम धीवर वह राजा आहीं ॥
कैसे हुइहै मिलन हमारा । केवट कहा तजो व्यौहारा ॥
बहु प्रकार केवटते कहही । पिता हेतु भीषम मन गहही ॥
तव केवट एक रचेउ उपाई । भाखे वचन लहे चतुराई ॥
भीषम सुनत कहेउ तब बाता । सुनहू सत्य बचन सख्याता ॥
हमकहं चाह राजकै नाही । मङ्गल सत्य तातके चाही ॥
औरो पुत्र पात्र नहिं राजा । पुत्रोपुत्र तोर सो राजा ॥
कन्या जितनी सकल जहाना । सो सब मोरे मातु समाना ॥
चन्द्र सूर्य्य साखी सुर तीनी । यह परतिज्ञा भीषम कीनी ॥
केवट कह वाचा करि लेऊँ । तब कन्या राजाकहँ देऊँ ॥
मम कन्याके गर्भ ऽवतारा । सोई राज्य करब संसारा ॥

भीषम तब कीन्हों सोई, वचनबन्ध परमाण ।
हमको राज्य न चाहिये, पिता होइ कल्याण ॥

भीषम प्रण कीन्हों ता पाहा । जगतमाहँ ना करौं विवाहा ॥
योगीरूप रहौं सेवकाई । कन्या देउ पिताको जाई ॥
वाचाबँध जब भीषम कीन्हा । केवट राजहि कन्या दीन्हा ॥

कन्या लै भीषम गृह आये। शान्तनु महाअनन्दित पाये॥
ताके करमहं कङ्कण भयेऊ। राजक काज करै तब लयेऊ॥
शान्तनु राजा कीन्हो व्याहा। वेदविधान यज्ञ अवगाहा॥
ऐसे शन्तनु व्याही जाई। सत्यवती जु नाम सो पाई॥
सत्यवती पटरानी भयऊ। राज्यभोग तब शन्तनु कियऊ॥
चित्राङ्गद भयो एक कुमारा। चित्रवीर्य्य दूसर अवतारा॥
दूनौं पुत्र भये नृप बारा। महाबली गुण रूप अपारा॥
चित्राङ्गदहि राज्यतब दीन्हा। कछुकहिदिवसराज्यउनकीन्हा॥
अन्तकाल शन्तनुको भयऊ। स्वर्गलोक राजा तब गयऊ॥

क्रिया कर्म्म शन्तनु जु कर, कीन्हों दोउ कुमार।
सत्यवती मन शोक है, तरुण अवस्था भार॥

देशराज्य भीषम रखवारा। चित्राङ्गद भो राजसुवारा॥
महायशी राजा यह भयऊ। वैशम्पायन राजहि कहेऊ॥
भीषमजो प्रतिपालहिं राजहि। धर्म्मशास्त्र बांचत हरिकाजहिं॥
सत्यवती कन्या जो आहैं। सञ्जयनाम पुत्र एक आहैं॥
सोउ रहे राजाके पाहा। भारत कथा सुनहु नर नाहा॥
यहि प्रकार भारत विस्तारा। आदि पर्व्व संक्षेप पसारा॥
कहत होत बहु कथा अपारा। राजा सुनु यह बहु विस्तारा॥

भारत कथा जु पुण्यफल, कहतहि पाप विनाश।
सबलसिंह चौहान कह, सुनतहि भक्तिप्रकाश॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

वैशम्पायन कथानुसारा। जाते पार तरै संसारा ॥
राजा सुनौ कथा विस्तारा। काशीराजा वीर भुवारा ॥
कन्या तीनि तासु घर रहंई। तिनके नाम सुनो तव कहंई ॥
अम्बे जेठि अम्बिका माना। सबते छोटि अँवलिका जाना ॥
वरषैं दश बीते जब तासू। तबहिं स्वयम्बर करेउ प्रकासू ॥
देश देशके राजा आये। सत्यावती कतहुँ सुनि पाये ॥
भीषमपाहिं कहा तब रानी। बन्धु विवाहौ कन्या आनी ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीजै। दूनौं बन्धु व्याह करि दीजै ॥
जीति स्वयम्बर कन्या ल्यावो। पुत्र हमारो लै सति जावो ॥
यह सुनिकै भीषम रथ साजा। काशी गये जहाँ सब राजा ॥
तीनों कन्या रूप अपारा। पटभूषणयुत यज्ञ सँभारा।
मनवाञ्छित वर चाहत सोई। कर जयमाल उपस्थित होई ॥

तीनौं कन्या एक संग, जयमाला लिये हाथ।
मनवाञ्छित वर चाहतीं, आये बहु नरनाथ ॥

तीनौं कन्या एकहि साथा। भीषम जाइ गह्यो त्यहि हाथा
तीनौं कन्या रथहि चढ़ाई। हाँका रथ तब चला उड़ाई ॥
कन्या आरत नाद पुकारा। रणा ठाढ़े तब सबै भुवारा ॥
भयो युद्ध तब वरणि न जाई। भीषम जीते सब वरियाई ॥
राजन अस्त्र अनेक प्रहारे। भीषम वीर काटि सब डारे ॥
देवनको वर भीषम पाहीं। को जीतै सन्मुख रणमाही ॥
हारे सब राजा बलधारी। भीषम लैगयो तीनउँ क्वांरी ॥

तीनों कन्या गृह लै आये । सत्यवती माता सुख पाये ॥
चित्राङ्गद अम्बिका विवाही । चित्रवीर्य्य अम्बे उरताही ॥
दोउ बन्धु दुइ कन्या व्याही । अम्बलिका कह भीषमपाहीं ॥

हमको हरिलाये जु तुम, गह्यो बांहसों बांह ।
जो आपन सुख चहो तुम, हमसन करो विवाह ॥

भीषम कह प्रण हुवै हमारा । भामिनि भोग तजा संसारा ॥
भामिनि भोग पुत्र जो होई । राजवंश दुइ होई सोई ॥
हम तजि राज्य तातके कारन । भामिनिभोग तजा संसारन ॥
कन्या सुनतहि भई निरासा । रोवति चलि भृगुपतिके पासा ॥
भीपमकेर गुरु उन जाना । ता कारणतहँ कीन पयाना ॥
जाइ दुःख भृगुपतिसों कहै । भीषम पाप करत जो अहै ॥
हरि लायो मम कारण व्याहा । ताते कहौं बात भृगुनाहा ॥
परशुराम क्रोधित मन भयऊ । कन्या लै भीषमपहँ गयऊ ॥
भीपम पाहि कह्यो भृगुनाथा । तुम हरि लाये पकर्‌यो हाथा ॥

स्त्री भोगरु राज्य सुख, तजा पिताके काज ।
अब जो व्याह सु कीजिये, होत जन्म कुललाज ॥

परशुराम तबहीं अस भाषहि । जीतौ युद्ध हमारे साथहि ॥
वचन हमार करो परमाना । नातर रण ठानहु मैदाना ॥
तोहि जीति हौं कन्या देऊ । भृगुनन्दनका है यह भेऊ ॥
भीपम प्रण करिकै रणठाना । गुरुशिख कीन कठिन सन्धाना ॥
सात दिनालों भा रण भारी । दोऊ वीर महा धनुधारी ॥

सुर वरदानिक भीषम आहो। जगतमाहिं को जीतन चाहो॥
अतिहो मारु करै भृगुनाथा। जय नहिं पायो भीषम साथा॥
सात दिनालौं भो रण भारी। भीषम युद्ध भयो अनुहारी॥
बहुतक शर मारे भृगुनाथा। जय नहिं पायो भीषम साथा॥
भृगुपति अस्त्र भये सब हीना। तब अकुलाय शाप यह दीना॥

गुरु अपमान जु कीन तुम, क्षत्रिय है संसार।
अस्त्रहीन है मृत्यु तव, सन्मुख रणमझार॥

कीन्ह्यो क्षत्रिय गुरु अपमाना। तब अपमान तजौं रण प्राना॥
ओर प्रतिज्ञा यहै हमारा। जेतक क्षत्रिय जगतमँझारा॥
इन्हें अस्त्र देवें अब नाहीं। यहै प्रतिज्ञा अब मनमाहीं॥
परशुराम तो यह कहि जाई। मै निराश कन्या वहि ठाई॥
पक्ष करत हारे भृगुनाथा। हमको विधना कीन्ह अनाथा॥
धिक है जीवन जन्म हमारा। अब धिक रहौं जगत मझारा॥
तब भीषमपहँ कहै रिसाई। तोकहँ भीषम मारब जाई॥
सोरे पाप तोर शिर भारा। सो दरशनते रण संहारा॥
यहै श्राप भीषमकहँ दीन्हा। तब कन्याहिं सरा*रचि लीन्हा॥
महादुखित पावक तनु जारा। सोई कन्या भइ जरि छारा॥

यहि प्रकारते कन्या, तजि पावकमें प्रान।
सोई जन्मी द्रुपद घर, ताहि शिखण्डी मान॥

राजा सुनो कथा परवेशा। विदर देशमहँ एक नरेशा॥

* चिता।

शूद्र नाम ता कन्या अहई। ताहि स्वयम्बर कीन्हा चहई ॥
सो कन्या हरि भीषम लीन्हा। चित्रवीर्य्यकी दासी कीन्हा ॥
वैशम्पायन कहत बखानी। सुनु राजा तुव वंशकहानी ॥
भीषम महावीर जग जाना। वानावरि नहिं वीर समाना ॥
देश राज प्रतिपालन करई। राजाकाज सदा मन धरई ॥
भारतकथा पाप नहिं रहई। तृणसमान अघ पावक जरई ॥
महभारत यह भाख्यऊ, कीन्हो अलप बखान।
सबलसिंह चौहान कह, सर्व पाप क्षय जान ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

राजा सुनो कथा सवधाना। वैशम्पायन करत बखाना ॥
चित्रांगद राजा पुरमाहीं। प्रसन्न हर्ष सदा मनमांहीं ॥
इक दिन राजा गये शिकारा। महा अगम कानन मझारा ॥
तह चित्राङ्गद गन्धर्व रहई। राजा देखि क्रोध सो करई ॥
मानुष ह्वैके गन्धर्व माना। अब निश्चय करि तजिहै प्राना ॥
वनमें गन्धर्व तबै प्रचारा। चित्राङ्गदसों रण विस्तारा ॥
गन्धर्व वीर वाण सो मारै। पैदल हय दल सब संहारै ॥
महामार तब भै वनमाहीं। भीषम खबरि पावतो नाहीं ॥
राजा कहं गन्धर्व तब मारा। एक न बचा सबन संहारा ॥
गन्धर्व गये स्वर्ग अस्थाना। देश राज सब व्याकुल नाना ॥

भीषम चित चिन्ता भई, कह गये बन्ध नरेश।
बहु प्रकारते खोजहीं, कतहुँ न मिल्यो संदेश॥
क्रिया कर्म ताहीकर कीन्हा। चित्रवीर्य्यको राज्यहि दीन्हा॥
सत्यवती सो व्याकुल होई। पुत्रके हेतु मरत सो रोई॥
भीषम ज्ञान बुझावै ताहीं। करि विचार या मनके माहीं॥
युवारूप अरु कन्तक शोगा। ताके ऊपर पुत्रवियोगा॥
रात्रिकाल गङ्गासुत जाई। रात्रि दिवस बहु कथा सुनाई॥
जाते मनै शान्ति दृढ़ आवै। नीति कर्म सो कथा सुनावै॥
दिन केतिक तौ ऐसे गयऊ। चित्रवीर्य्य तब पचैं लयऊ॥
सर्व रात्रि माताके पाहीं। भीषम कहा करै निशिमाहीं॥
पाप चित्तके राजा जाई। देखि पराक्रम जाइ दुराई॥
भीषम उत्तम असन डसाई। माताको तहँ लै बैठाई॥
आप ज्ञान उपदेशते, भाष्यउ तहां पुरान।
जाते माता थिर मन, प्रकट होइ मन ज्ञान॥
यहै कर्म देख्यउ तब राई। बाहि बाहि करि चलेउ पराई॥
तब मनमें नृप करै विचारा। मनसों पाप न मिटै हमारा॥
प्रातकाल नृप रचेउ उपाई। तब पूछो भीषमसों आई॥
सुनो बन्धु एक शङ्का मोहीं। पुरुय अर्थ पूछौं मैं तोहीं॥
मनसा पाप चित्तमें करै। कौन प्रकार जगतमें तरै॥
गुरुजनपर जो पाप सञ्चारा। कैसे बन्धु होइ निस्तारा॥
भीषम भाष्यो अर्थ पुराना। पूछि सहज मनमें अस जाना॥

अनदोषहि जो दोष लगावै। तौ गुरुजनको जगत सतावै॥
काशीमें जो करै प्रवेशा। पावकमहं तन दहै नरेशा॥
ताको पाप हरण तब होई। अर्थ पुराणवन्ध है सोई॥

रच्छ रच्छ शर शर सबै, दाह करत जो आप।
तव वन्धव सो भाष्यऊ, उऋण होत सो पाप॥

सुनिके राजा विस्मय माना। कहा न काहुहि कीन्ह पयाना॥
याहि भेद तौ काहु न पाई। तव राजा वाराणसि जाई॥
तहां जाइके दहेउ शरीरा। येही रूप तजा नृप वीरा॥
पाछै भीषम जानै पायो। महा शोक तव मनमें आयो॥
सत्यवती वहु रोदन करई। वंशनाश भो धीर न धरई॥
महाशोक तव भीषम पायो। वंश नाश भो पाप बढ़ायो॥
सत्यवती तव करै विचारा। पूर्व्व पुत्र तौ व्यास हमारा॥
पितुके सङ्ग तपस्या जाई। ताहि ध्यान धरि लेहुं बुलाई॥
सत्यावती ध्यान तव धारा। आये व्यास क्षणकमञ्झारा॥
मत्स्योदरी कह्यो तव वाता। कर उपाय भो वंशनिपाता॥

देखत हृदय दया भई, कहा वचन विस्तार।
धीर्य्यं धरो तुम मातजू, होय वंश अवतार॥

वन्धु-वधनके गृहमहं जाई। दृष्टिभोग करवै हम माई॥
नग्न होय वस्तर तजि आवहिं। पुत्रदान विधनासों पावहिं॥
वधू ज्येष्ठि अम्वे जेहि नामहिं। सत्यवती तव ताहि वखानहिं॥
वस्त्र डारिके नग्न शरीरा। रहियो गृह सन्धग्रामहं धीरा॥

सत्यवती तब अस कहि आई । सन्ध्यासमय व्यास तब जाई ॥
विकट स्वरूप भयानक होई । अम्बे पाहि गये मुनि सोई ॥
अम्बे कहं तब लज्जा आई । और हृदयमहं परम लजाई ॥
जाते मूंदि नयन जो आई । ताते व्यास वचन कह जाई ॥
होय पुत्र अम्बा अवतारा । महावीर जन्महि संसारा ॥
सत्यवतीते भाष्यउ जाई । नयन मूंदिकै हमपर आई ॥

तातें अन्धा पुत्र होइ, जन्महि गर्भ तुम्हार ।

वंश होय तुव जगतमँह, नहीं राज्य अधिकार ॥

तबहिं अम्बिकाके गृह जाई । अँबिकाकेर चरित्र उपाई ॥
राजाकुल लज्जा उन पाई । अष्टौ गात पिँडोर लगाई ॥
गये मुनीश तासु गृह जबहीं । विकट रूप देखा मुनि तबहीं ॥
अष्टौगात श्वेत सब अहहीं । श्वेत वर्ण देखत भे सबहीं ॥
श्वेत रूप देखा तब चीन्हा । तहां व्यास अस बोलै लीन्हा ॥
जन्महि पुत्र गर्भ मझारा । पाण्डु होय तव पुत्र भुवारा ॥
चित्रवीर्य्यके दूसरि नारी । शूद्र सोहागिनि रहि सो भारी ॥
दासि समान रही सो ताहीं । व्यास गये ताके गृहमाहीं ॥
शूद्रा सुनि अनन्द तब पाई । बिहंसि बदन सो मुनिपहं आई ॥
देखत मुनि तब हर्षित भयऊ । तबहिं महामुनि अस वर दयऊ ॥

तोर पुत्र जन्महि जगत, महाभक्त भगवान ।

अन्तर्द्धान भये मुनी, कीन्हा तुरत पयान ॥

पूरब कथा सुनो अब राऊ। तीनों वधू गर्भ उपजाऊ॥
ऋषि माण्डव तब तज्यो शरीरा। गये तुरत यमराजक तीरा॥
मुनिके नैना अन्ध समाना। यम देखत कीन्हो अपमाना॥
नयन मूंदि कै करि नमस्कारा। क्रोधित मुनि तब वचन उचारा
मनसा फल तोहि मिलिहहि राऊ। अन्धकरूप जन्म जग पाऊ
यमराजा बहु आदर कीन्हा। बालदोष मुनिकहं कहि दीन्हा॥
शिशुतापनमें टीड़ी मारेउ। ता अपराध इहां पशु धारेउ॥
तब मुनीश प्रति उत्तर दयऊ। शिशुतापनका दोष न लयऊ॥
नयन मूंदि यम रहे चुपाई। क्रोधित मुनि तब वचन सुनाई॥
शाप हमार लेउ अब राई। मनुषरूप जन्महु जग जाई॥
शाप देइ मुनि त्यहि क्षण जाई। यमके मनहिं अंदेशा आई॥
जाना व्यासकेर उपकारा। शूद्रा गर्भहि जाय संचारा॥
विदुर भये तब तासु कुमारा। शूद्रा गर्भ लीन्ह अवतारा॥
अँबिका गर्भ पाण्डु अवतारा। सब शरीर पाण्डुर विस्तारा॥

अँबे गर्भ धृतराष्ट्र भे, महावीर बलवान।
यहि प्रकारते वंश भो, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

राजा सुनो कथा परकाशा। जाते होइ पाप सब नाशा॥
यजति पुत्र कुम्भजं बखाना। कुन्ती भोजराज अनुमाना॥

दूसर पुत्र सिंहासनमाहीं । नृप गन्धार देश इक आहीं ॥
गन्धा नाम जो राजा अहई । गन्धारी कन्या घर रहई ॥
सो तौ शङ्कर भक्ति अराधै । इकशत सुत इक कन्या साधै ॥
तबहीं वर यह शङ्कर दीन्हीं । भीषम यहै सुता तब लीन्हीं ॥
सोई सुता स्वयम्बरमाहीं । भीषम हरि लाये तब ताहीं ॥
भाष्यो मनमें अन्ध कुमारा । होन पुत्र ता शत अवतारा ॥
धृतराष्ट्रकका कीन विवाहा । महाहर्ष भीषम मनमाहा ॥
गान्धारी तब कन्त निरीखै । दूनौ नयन अन्ध करि दीखै ॥

पिय देखा गन्धारि जब, अन्ध जन्म अवतार ।
बांधौ पट्टौ नयनमहं, विधि यह लिखा लिलार ॥

धृतराष्ट्रकको आज्ञा लीन्हा । भीषम राज्य पाण्ड कहं दीन्हा ॥
राजा पाण्डु सबै जग जाना । आगे राजा सुनौ बखाना ॥
जो श्रीकृष्ण-पितामह अहैं । शूरसेन राजा त्यहि कहैं ॥
कन्या पुत्र जो दश हैं ताही । ज्येष्ठ पुत्र वसुदेव जो आही ॥
कुन्ती भोज मित्र तौ आही । शूरसेनकी कन्या ताही ॥
प्रथमहिं नाम तासुका अहै । कुन्तिभोज प्रतिपालन चहै ॥
शूरसेन सो कन्या दीन्हा । पुत्री कहि प्रतिपालन कीन्हा ॥
कुन्ती नाम दीन पुनि ताहीं । कन्या रहि राजा गृहमाहीं ॥
बहुत प्रीति कन्यापर करई । मनसा वचन कर्मना धरई ॥

परम हर्षसों कन्या, राजा गृहसों आव ।
वैशम्पायन भाष्यऊ, सुनु जनमेजय राव ॥

एक समय तब ऋषि दुर्वासा। आये कुन्तिभोज नृप पासा॥
भाष्यउ आइ करब हम वासा। चारिमास रहिबे तुव पासा॥
पै जो मानहु वचन हमारा। इच्छा भोजन देब अहारा॥
जबहीं इच्छा होय हमारी। तबहीं भोजन देहु विचारी॥
तप्त अन्न ततच्छणहीं पाऊं। जबहीं भोजन चाहब राऊ॥
राजा सुनि अन्तःपुर गयऊ। सबके पह पूछत तब भयऊ॥
सब रानी तब कहैं बुझाई। कोउ न कहत करब सेवकाई॥
कुन्ती तब भाष्यउ नृप पासा। राखहु तात मुनिहि चौमासा॥
मैं तो सेवा करिहौं ताही। भोजन देव जो मनमैं आही॥
राजा राख्यउ मुनिकहं जाई। कुन्ती मुनिसेवाको आई॥

जब जो चाहत मुनि मनहिं, सो सो कुन्ती देइ।
प्रेम हर्षसों महामुनि, बस कुन्तीको सेइ॥

सोई भयो महामुनि कहे। वर्षा चारि मास तहं रहे॥
कुन्तीभक्ति तुष्ट मुनि भयऊ। मालमन्त्र दुर्वासा दयऊ॥
मालमन्त्र जाको तुम ध्यावो। तीन देवको दरशन पावो॥
ऐसे मालमन्त्र तब दयऊ। मुनिवर विदा भूप सों भयऊ॥
दुर्वासा तब वनमहं जाई। कुन्ती मनमें रच्यो उपाई॥
मन्त्र परीक्षा कुन्ती करई। सूरज देखि मन्त्र उच्चरई॥
सूर्य चन्द्र प्रत्यक्ष देवा। मन्त्र परीक्षा कीन्हेसि भेवा॥
हीनबुद्धि नारी अज्ञाना। माला जपै सूर्यकर ध्याना॥

धरत ध्यान रविदेवकर, तत्क्षण तव तहँ आउ।
वर प्रसाद तब दीन्हों, पुत्र हेत तुव जाउ॥

सुनत लाज कुन्तीकहँ भयऊ। दिनकरसन बोल यह लयऊ॥
भो नहिं व्याह रही मैं क्वाँरी। भल वरदान जन्म भरि गारी॥
भो कलङ्क तुम्हरे परसादा। कुन्ती मनमहं परम बिषादा॥
ह्वै प्रसन्न तब कह दिनमनी। नहीं कलङ्क तोर जग गनी॥
कर्णमार्ग होय जन्म प्रमाणा। महाबीर दानी जग जाना॥ *
यह कहि अन्तर्गत रवि भयऊ। सूर्य प्रताप पुत्र सो ठयऊ॥
कर्णमार्ग कर भो अवतारा। कुन्ती ताहि नीरमें डारा॥
शूद्र अधीरथ धीमर नामहिं। सो तो गयो गङ्ग अस्नानहिं॥
देखा सुन्दर बालक आही। सो लै गो अपने गृहमाहीं॥
राधा नाम तासुके नारी। प्रतिपालन कीन्हों त्यहि भारी॥

यहि प्रकारते कर्ण भे, कुन्ती प्रथम कुमार।
करि संक्षेप बखानेऊ, कीन नहीं विस्तार॥

पांचै सात वर्षके भयऊ। बालसङ्ग खेलन तब गयऊ॥
सब मिलि देहिं कर्णको गारी। तेरो कहाँ पिता महतारी॥
केवट लै प्रतिपाला तोहीं। जानत मात पिता नहिं ओहीं॥
कर्ण सुन्यो लज्जा तब होई। सङ्करवर्ण कहत सब कोई॥
गङ्गा तीर कर्ण तब जाई। तनु त्यागै का रच्यो उपाई॥

* विद्यावान वीर बलवाना।

जबहीं तनु त्यागैका चहे। दिनकर हर्षि हाथ तब गहे॥
काहे तनु त्यागौ तुम बारा। मैं जगज्योति हुँ पिता तुम्हारा॥
सुनते हर्ष कर्ण तव माना। चरण पकरि कै अस्तुति ठाना॥
पिता हमार सूर्य परमाना। मोसम भाग्य न दूसर आना॥
विनती एक हमारी ताता। तुम तौ पिता कौन है माता॥

काके गर्भहि जन्म मम, कहहु कृपा करि नाम।
तौ चित मोरा होइ थिर, कीन्हों कर्ण प्रणाम॥

तबहीं सूर्य परीक्षा कीन्हा। बस्तर एक कर्णको दीन्हा॥
अग्निचोर जानै संसारा। जो पहिरै सो मातु तुम्हारा॥
कै कै छल पहिरै जो कोई। मोर प्रताप भस्म सो होई॥
यहि प्रकार तव कर्ण बुझाई। अन्तर्द्धान भयो दिनराई॥
कर्ण वीर बहुतै सुख पायो। वस्तर लै तब गृहको आयो॥
सो वस्तर गृह राखेउ जाई। बात सकल तव जाय बुझाई॥
यहै प्रकार कर्ण अवतारा। दानी बड़ा सुसूर्यकुमारा॥

वस्तर लै गृह राख्यऊ, चित दै सुनहु भुवार।
विद्याके हित कर्ण तव, कीन्हों हृदय विचार॥

परशुरामपह छलसों जाई। विप्ररूप करि गे वहि ठांई॥
परशुराम तव विद्या दीन्हा। निज समान धनुधारी कीन्हा॥
कर्ण चतुर्दशि चले अन्हाई। परशुराम तव आगे जाई॥
पत्र कदम्ब पुहुप हैं नाना। आधे हने तजे अस बाना॥

खरी तेल तौ हाथहि लाई । पाछे परशुराम तब जाई ॥
देखेउ सब खण्डित हैं फूला । कर्ण बीर देखत तब भूला ॥ *
भूमिप धरौं तौ होई पापा । उछलै तबै कटोरा आपा ॥
मारेउ बाण बाट सब सोई । लीन्हा रोकि कटोरा ओई ॥
लैके खरी गये पुनि ताहां । नदी तीर भृगुपति है जाहां ॥
कै अस्नान चले तब राई । वही वृच्छतर पहुँचे आई ॥
परशुराम भाख्यो तब बाता । आधे हने कौन सख्याता ॥

कर्ण कहा मैं काटेऊ, सुनत हर्ष भृगुनन्द ।
भयो शिष्य सापत्र अब, मनमें भये अनन्द ॥

शयन करेउ दिनकै भृगुनाथा । धरा कर्ण जङ्घापर माथा ॥
वज्रकीट कीड़ा इक आई । कर्ण जङ्घ छेदनकर जाई ॥
ताते रक्त जो तनुमहँ लागे । परशुराम चौंके तब जागे ॥
क्रोधित परशुराम तब कहई । कहुरे शिष्य जाति को अहई ॥
ह्वै चत्रिय मोसों छल कीन्हा । पांच बाण तब भृगुपतिदीन्हा ॥
कर्णपाहिं तब कह परकाशा । बिद्या दै का करौं बिनाशा ॥
यही बाणते मृत्यु तुम्हारा । वर औ शाप है दोउ हमारा ॥
जबलगिबाण जो तोपहँ रहई । तबलगिजगतअजयतोहिंकहई ॥
रिपुके हाथ बाण जब जाई । मरिहौ कर्ण कहा समुझाई ॥
कर्ण बाण पांचो तब लीन्हा । अपने भवन गमन तब कीन्हा ॥

---

* यहि प्रकार देखे सब तूला ।

कर्ण वाण लै तोहिं राखा। अति आनन्द बढ़ी अभिलाखा॥
सदा रहहि अति हर्ष मन, कर्ण वीर गृह जाइ।
भारतकथा पुनीत अति, सुनतहि पाप नशाइ॥

इति पञ्चम अध्याय॥ ५॥

जनमेजय अब होउ सुध्याना वैशम्पायन करत बखाना॥
कुन्तिभोज नरपति परमाना। कुन्तीकेर स्वयम्बर ठाना॥
ऐसे पाण्डु राज जगमांही। जीते जगत आप बलबांही॥
धृतराष्ट्रकके अज्ञा माने। राजा पाण्ड सर्व्व जगजाने॥
देश देशके राजा आये। कुन्तिदेश सब भूप सिधाये॥
कुन्ती देखा अगणित भूपा। देखे राजा अगणित रूपा॥
कर्म लिखा को मेटन हारा। पाण्डु राउको कीन्ह बिचारा॥
जयमाला पाण्डवकहँ दीन्हा। याही भांति स्वयम्बर कीन्हा॥
कुन्ती पाण्डु भयो तव ब्याहा। देश देश गवने नरनाहा॥
दायज दीन बहुत तव राजा। पाण्डव हर्ष परम सुखसाजा॥
दायज कन्या गृह लै आये। परम हर्ष तव भीषम पाये॥
ऐसे कुन्ती पाण्डु विवाहा। सो सब कथा सुनौ नरनाहा॥
यह गाथा जनमेजय, सुनौ वचन परमान।
सुनत पाप सब नाशहीं, वैशम्पयन बखान॥
राजा पाण्ड सबै जग जाना। परजा लोग हर्ष अतिमाना॥

पुरी हस्तिना उत्तम साजा। भीषम प्रतिपालत हैं राजा॥
मद्रसुदेश मद्रपति राऊ। कन्या इक ता गृह जन्माऊ॥
माद्री नाम सकल जगजाना। समय संयोग स्वयम्बर ठाना॥
भीषम वाहि जीति लै आये। पाण्डुराउको ब्याह कराये॥
ऐसी भई माद्री रानी। पटेश्वरी दोनों जगजानी॥

पाण्ड नृपति जग जानत, भाषैं सुनी प्रमान।
भारतकथाते राजा, सर्व्वपाप चय मान॥

पाण्डवराज भयो रजधानी। कुन्ती और माद्री रानी॥
देवराजके कन्या रहै। पाराशरी नाम त्यहि कहै॥
भीष्मबीर तब कीन विचारा। विदुरहि ब्याह तासु अनुसारा॥
बिदुरौ कह सो दीन बिवाही। प्रेम हर्ष सत्यावति आही॥
प्रतिपालक तौ भीषम अहैं। राज्यदेशकी रचा चहैं॥
यहि प्रकार जन्मेजय राजा। तोरे बंशचरितके काजा॥

विदुर पाण्ड धृतराष्ट्र का, तीनों बन्धु प्रमान।
यह चरित्र तुव वंशके, सुनु राजा दै कान॥

शङ्कर वर अनुकम्पा ब्यासा। गन्धारी के गर्भ प्रकासा॥
उदर गर्भ तब भो परकासा। बारह वर्ष गर्भमहं वासा॥
महाकष्ट तब भइ गन्धारी। भेषज कहेउ उदर तब फारी॥
उदरमांहि तौ नाहि उबारा। व्यास तहां तव मन्त्र सचारा॥
मन्त्रतेज गन्धारि बचाई। महा दुःख गन्धारी पाई॥
मांसपिण्ड देखा गन्धारी। करते आप लिलारहि मारी॥

शतपुत्रन हित शङ्कर ध्याये। एक पुत्र नहिं जगमें पाये॥
तब मुनि व्यास कहें समुझाई। शत पुत्रहु होइहैं तुव आई॥
वचन एक मैं कहौं उपाई। सोई मन्त्र करो मन लाई॥
चिन्ता तजि मानहु वच मोरे। शत आत्मज होइहैं अब तोरे॥

एक शत कुण्ड खनाइकै, घृत भरिये तामाहिं।
शत खण्डन कल मांस यह, डारो लै लै ताहिं॥

शीतल जलसों करौ पखारा। कुण्डहि प्रतिहौ होइ कुमारा॥
सुनि गन्धारी कुण्ड खनाये। शत कुण्डनमहँ घृतहिं भराये॥
शीतल जलसों पिण्ड पखारा। एकोत्तरशत भाग सँचारा॥
यक यक भाग कुण्डमहँ डारी। दोई भाग एक महँ धारी॥
भये तहा दुर्योधन वारा। प्रकटभये तहँ सकलकुमारा॥
दुसर अंश इक कन्या जाना। और पुत्र सब भे बलवाना॥
सो कलियुगको भो अवतारा। दुशला कन्या पुनि औतारा॥
अँगुठ प्रमाण पुत्र अवतारा। तब प्रतिपालहिं सबै कुमारा॥
दुःशासन अरु विविंसुत भयऊ। चित्रसेन विक्रम निर्भयऊ॥
परभृत्यु दुर्मुख इक वारा। वत्सासुर योधन अवतारा॥
औरो नाम अनेकन जाना। जन्मे वीर अन्ध हर्षाना॥

शतपुत्रन प्रतिपालहौ, गन्धारी मन लाइ।
परमहर्ष तब भीषम, देखा वंश उपाइ॥

एक दिन राजा पाण्डु नरेशा। मृग विहारकर वन परवेशा॥

दैवीगति कछु जानि न जाहीं। ऋषियक भोग करै दिनमाहीं॥
मृगस्वरूपको लै सञ्चारा। यहि अवसर राजा शर मारा॥
तिया पुरुष के भेषहु बाना। दीन शाप तब मुनि परमाना॥
इस्त्री भोग जबै परकाशै। ताही क्षणहि तोर तनु नाशै॥
शाप देइ मुनि तजा शरीरा। महा शोचवश भा रूपवीरा॥
शोचहि करै अपुत्री भयऊ। महाशाप मुनिवर मोहिं दयऊ॥
ताही वनमें ऋषि बहु अहैं। तिन्हैं जाय पाण्डव नृप कहैं॥
भीषमपाहि कहेउ तिन जाई। ऐसो शाप मुनीश कराई॥
ताते वनमें तप अब करिहौं। जा कारणते जगमें तरिहौं॥

बन अखण्डके माह तब, रहहीं पाण्डु नरेश।
ऐस शाप यह पायऊ, कहा राउ अन्देश॥

आये मुनि सब भीषम पासा। सब वृत्तान्तजाय परकासा॥
भीषम सुनिकै पूछहि गाथा। कहाँ अहैं पाण्डव नरनाथा॥
मैं उनको लै आवत जाई। वनोवास जहँ करहैं राई॥
भीषम चलेउ पाण्डु हैं जहां। दूनौ रानि चलीं पुनि तहा॥
कुन्ती और माद्री नारी। कन्तक पास चलीं अनुसारी॥
आखण्डित बन पहुँचे जहा। भीषम गये तुरतही तहा॥
बहुविधि ते भीषम समुझावै। पाण्डवके मनमें नहिं आवै॥
पाण्डव करत इहाँ वनवासा। रहिबे तात तजो तुम आसा॥
बहु प्रकार गङ्गज समुझायो। पै पाण्डवके मन नहिं आयो॥
याही बनमें रहेउ भुवारा। तब भीषम गृहको पगु धारा॥

कुन्ती अरु माद्री युगल, रही कन्तके पास।
अति वियोगते कुन्ती, पिवसेवाकी आस॥
वनमें राजा हर्षित रहैं। कुन्ती माद्री सङ्गहि गहै॥
महाशोकते राजा रहई। पुत्र हेतु चिन्ता मन गहई॥
तबै सकल मुनि भाषैं वाता। तजो शोक पाण्डव नरनाथा॥
तोर पुत्र होइहै बल धारी। यह आशिष है पाण्डु हमारी॥
ऐसे रह तब वनहीं राजा। होत शोच पुत्रनके काजा॥
विना पुत्रके कुल अँधियारा। कैसे पितर होइँ उद्धारा॥
तब कुन्ती बोली पिय वासा। मन्त्र एक है हमरे पासा॥
यह जो मालमन्त्र मम याही। ध्यावों जाहि देवसो आही॥
जौन देव आराधहि कुन्ती। तौन देव बर देइ तुरन्ती॥
ताते होय पुत्र अवतारा। कन्त तजौ मनको खभारा॥
यहि प्रकारते कुन्ती, कन्तहि धीरज दीन।
मालामन्त्र हाथ लै, देव अराधन कीन॥
मालामन्त्र कीन परमाना। प्रथमहिं धर्म्मकेर धरि ध्याना॥
ताते धर्म्म युधिष्ठिर भयऊ। महाहर्ष पाण्डव मन ठयऊ॥
दूजे पवन केर धरि ध्याना। ताते भीम भयो बलवाना॥
दोनों पुत्र भये तब भारी। तब फिरि मनहिं विचारेउ नारी॥
अब काको मन धरिये ध्याना। कै विचार इन्द्रहिकह ठाना॥
अर्जुन जनमेउ महाकुमारा। इन्द्रक तेज भयो अवतारा॥
अर्जुन नाम सो भयउ कुमारा। इन्द्रतेज तब भयो संसारा॥

माता हर्षवन्त तब भाखै। अर्जुन नाम पुत्रकर राखै॥
पाण्डवराय देखि सुख पाये। श्यामस्वरूप देखि मन भाये॥
नयन विशाल श्याम है देहा। पाण्डव राउ करत बहु नेहा॥
श्यामल रूप देखि पितु भाखै। कृष्ण सुनाम पिता तब राखै॥

दुई नाम तब प्रथमहीं, मात पिता धरि ताहि।
प्रेम हर्ष तन बनविषे, राज रहैं सुखमाहि॥

माद्री पुत्र हेतु मन लाई। कुन्ती बहिनी बैन सुनाई॥
तब कुन्ती मालावहि दीन्हा। औ पुनि नाम मन्त्रकहि दीन्हा॥
माद्री माल मन्त्रतब पाये। तब अश्विनीकुमारहि ध्याये॥
ताते पुत्र भयो अवतारा। नकुलनाम जानत संसारा॥
तब मालाकर तेजहि जाई। अन्तर्द्धान भयो वहि ठाई॥
मन्त्रक तेज शक्ति जब गयऊ। कुन्ती महा दुःख तब कियऊ॥
पुत्रनको प्रतिपालहि साई। प्रेम हर्ष राजा तब पाई॥
चारि पुत्र हैं दुइ हैं माता। प्रेम हर्ष पाण्डव नरनाथा॥
इहां पाण्डव वनमें रहई। उतही भीष्म देशमें रहई॥
राज दियो दुर्योधन राऊ। प्रतिपालैं भीषमसों भाऊ॥

राजा भयऊ अन्धसुत, पाण्डु रह्यो वनवास।
अब राजा सुनु आगे, कहत कथा तवपास॥

सूरज बरतहि पाण्डु भुवारा। पाण्डु राउ तब गयो शिकारा॥
भानु अस्त होई विस्तारा। रानी मनसा करे विचारा॥
तादिन माद्रि रजस्वल भयऊ। पूरब दिन नहान तब कियऊ॥

माद्री कह कुन्तीके पाहीं। जब लग पति आवें घरमांहीं॥
सूरज रथ राखो अटकाई। जाते राजा भोजन खाई॥
सम्मुख रवि बैठी सो रानी। सूरजरथ तहँ जो ठहरानी॥
पाण्डव राइ तबै गृह आये। दिवस जानिकै अन्नहिं खाये॥
पाछे माद्री उठि गृह जाई। राती भई तुरत गृह आई॥
तब राजा आश्चर्यहि कियऊ। कुन्ती सकल भेद तब कहेऊ॥

माद्री रूपहि देखिकै, इस्थिर भये जो भानु।
सुनत पाण्डु राजा तबै, लगे मैनके बानु॥

माद्रीपह राजा तब जाई। करि रति केलि ज्ञान भुलवाई॥
ऋषिहि शाप तब आइ तुलाना। अन्तकाल भे पाण्डव प्राना॥
गर्भवती माद्री तब भई। पाण्डव नृपति देह तजि दई॥
देखा पाण्डु भयो तनु नाशा। द्वौ रानी तब रुदनप्रकाशा॥
दाह कर्म राजाकर कीना। गर्भ हेत माद्री रह हीना॥
कछु दिन गये पुत्र अवतारा। माद्री तनहिं तजा संसारा॥
कन्तके शोक माद्री गयऊ। सुत प्रतिपालन कुन्ती कियऊ॥
सहदेव नकुल माद्री नन्दा। तीनि पुत्र कुन्तीके वन्दा॥
सहदेव अरु नकुल कुमारा। दोनो पुत्र माद्रिके बारा॥
तीन पुत्र कुन्ती सञ्चारा। पाण्डव पुत्र जानि संसारा॥
पांच पुत्र कुन्ती तब पाला। माद्रीकेर भयो जब काला॥
ऋषि ब्राह्मण सब करत उपाई। भीषमपाहिं कहा तब जाई॥

पाण्डव नृपति रु माद्री, वनमें तजा शरीर ।
पांच पुत्र प्रतिपालने, कुन्ती करत गम्भीर ॥
ऋषिवरते भय पञ्च कुमारा । पाण्डव नृपति वंश अवतारा ॥
कुन्ती पांच पुत्र लै रहई । शत बालक गन्धरिके अहई ॥
भीषम सुन्यो तुरन्त सिधाये । कुन्तीकहँ घरही लै आये ॥
पांच सात बयके तब भयऊ । प्रतिपालन भीषम तब ठयऊ ॥
खेलनको जब जात समाजा । कौरव पाण्डव एकहि साजा ॥
पांच पुत्र कुन्तीके आहीं । ताहि समान एकसौ नाहीं ॥
खेलि भीमसों सकेउ न कोई । दुर्य्योधन तब चिन्ता होई ॥
दिन दिन बालक पांचो ऐसे । केहरिके समान हैं जैसे ॥
एक एकते पांचो भाई । सुकल पच्छ ससिकरसम पाई ॥
कुरु राजा कहं चिन्ता होई । इन समान नहिं हम सब कोई ॥
दुर्य्योधनको चिन्त होइ, पांच देखि बरियार ।
रिपु बिचार देखै तहा, कुरुपति मन खम्भार ॥

इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

राजा सुनौ जु कुन्ती अहई । पांचपुत्र यहि ऐसे कहई ॥
तुम्हरे पिताकेर यह राजू । कर्म्म दोषते भयो अकाजू ॥
सुनिकै पांचौ चिन्ता करहीं । पिताको राज हृदैमह धरहीं ॥
खेलन करन जात सब साथा । पांचौ बान्धव औ कुरुनाथा ॥

खेलन भीम कहै यह साथा। राज्य हमार करौ नरनाथा॥
हमरे पिताकेर यह देशा। विधिवश भा कह नाथ नरेशा॥
खेलत भीम और सौ भाई। भीम बांहवल जीति न जाई॥
एक वृक्षपर हैं सब भाई। चढ़े जाइ तव भीम लराई॥
धाइ वृक्ष तव भीम हलायो। गिरे सवे तौ थाह न पायो॥
पेड़ हलाय दीन तो हाँका। परे भूमि जिमि सव फल पाका॥

भीमसेनको करि हसी, हर्षत हैं सौ भाइ।
वहुप्रकार दुर्योधन, मनमें करे उपाइ॥

एकहि वार गहैं दश भाई। पटकि भीम तव चरण घुमाई॥
सदा विवाद भीमसों होई। शत भाई जीता नहिं कोई॥
जहं वे खेलन करहिं पयाना। शतवान्धव तहकर अपमाना॥
चिन्ता करि दुर्योधन राई। भीमहि मारन रच्यो उपाई॥
महावली सो मरत न मारा। देकै गरल करौं संहारा॥
इकदिनप्रीति वहुत तव कीन्हा। छलकरि गरल भीमको दीन्हा
महावली सो भीम अपारा। भोजनमांहि गरल सञ्चारा॥
खाते गरल चेत ना रहई। हर्षि गात दुर्योधन कहई॥
तव गङ्गामें दीन वहाई। वूड़े भीम पतालहि जाई॥
भोगवती गङ्गा है जहा। वहते भीम पहुँच गे तहाँ॥
तहा वीर तव पहुञ्चो जाई। गङ्गा धार रह्यो अटकाई॥

नागसुता अज्ञानको, आई सुनौ सो राय।
देखि कलेवर भीमको, सुता हर्ष तव पाय॥

शङ्कर शाप देखि कै बारी। ताकहँ कन्या वरै विचारी ॥
मुनिकहं राजा पूछै भेऊ। मृतक स्वामि कौनै विधि भयेऊ ॥
शङ्कर शाप हेतु सुनु राई। प्रतिदिन हर पूजै सो जाई ॥
पूजै नागकि सुता सहेशा। पुष्प रु वेलपत्र धर वेशा ॥
यकदिन फूल और नहिं पाये। बासी पुष्पहि जाइ चढ़ाये ॥
ताते हरहि क्रोध बहु कीना। दीन शाप तब यह परवीना ॥
मृतक पुष्प लै पूजेउ मोहीं। मृतकै पुरुष प्राप्ति होइ तोहीं ॥
तब कन्या यह विनती लाई। शोच शाप कब होय गुसांई ॥
हर भाष्यउ मृत्युक वर पाई। पाछे अमृत पान कराई ॥

सोई शाप हित कन्या, भीमहि दीन जिआय।
अतिसुन्दर पति देखिकै, हृदय बहुत हर्षाय ॥

खबरिहेत सो जाइ भुवारा। नागसुता यह प्रीति विचारा ॥
तबहीं वर कीन्हेउ मन लाई। पाछे तबहिं शेष पह जाई ॥
अमृत दैकै भीम बचाये। पुर पाताल भीम सुख पाये ॥
चारि बन्धु कुन्ती महतारी। महा शोक कीन्ही तब भारी ॥
भीम केर उपदेश न पावा। महाशोक कुन्ती मन आवा ॥
कुन्ती कह हम जन्म दुखारी। कहाँ गये सुत भीम हमारी ॥
महा शोच भे चारिउ भाई। कहूँ न खोज भीमकर पाई ॥

चारि बन्धु कुन्ती सहित, पावत शोक अपार।
यहि प्रकार राजा तहाँ, रहि गो भीम पतार ॥

यक दिन भीम गये चलि तहाँ। अमृत सात कुण्ड हैं जहाँ॥
सातौ कुण्ड कीन्ह तब पाना। भागे रक्षक नाग पराना॥
शङ्कर सुन्यउ सकल व्यवहारा। मनमें कीन्हे क्रोध अपारा॥
खायउ अमृत उदर अघाई। मृत्युलोकको सुमिरेउ भाई॥
चलेउ सुभीम मृत्युपुर जवहीं। महादेव घेरा पुनि तवहीं॥
महा मारु कीन्हेउ संहारा। शङ्कर भीम तु पुरी पतारा॥
महादेवको क्रोध अपारा। तब त्रिशूल लै उदर जु फारा॥
अमृत सातौ कुण्ड निकारी। हर्षित गात महेश पुरारी॥
मृत्यु क भीम भवानी जाना। महादेवसों कीन्ह बखाना॥
धन्य धन्य तुम वीर अपारा। खायो अमृत पुरी पतारा॥

धन्य वीर बल साहसी, गौरी कहत विचारि।
कृपा करो अब स्वामी, देहु जीव सम्हारि॥

जीव दान शङ्कर तब दीन्हा। उठ्यो भीम तब रिस बहु कीन्हा॥
रहु रहु कहि तौ उठा जुझारा। महादेव तब हर्ष अपारा॥
हर्षवन्त वीर बल धामा। महादेवको कीन्ह प्रणामा॥
केहरिनाद तहाँ तब कीन्हा। तुरतहि नाम वृकोदर दीन्हा॥
हर्षित गात भीम बलवाना। महादेव तब कीन्ह पयाना॥
वासुकि महाहर्ष तब भयऊ। नाना मणी भीमकहँ दयऊ॥
विदा मांगि तब भीम जुझारा। तब चलनेको हृदय विचारा॥*
हर्षित भीम विदा तब भयऊ। अहिलमतीशोकहित्यहिठयऊ॥

* नागसुता तब रही पतारा॥

विविध भांति समुझायो ताहीं । कछुदिनमें ऐहौं तुम पाहीं ॥
चले हर्ष नरपुरको आये । मातु बन्धु तब दर्शन पाये ॥
मिल्यउ पुत्र हर्षित महतारी । दुर्योधन अचरज भा भारी ॥
दीन्हो विष पुनि मरिय जियाये । बर्ष छिना बीते पुनि आये ॥

कुन्ती माता हर्ष तब, हर्षित धर्म भुवार ।
कै संक्षेप बखानेऊँ, भारत कथा अपार ॥

धर्मराज यह कह तब बाता । भीम आदि सुनियो मम भ्राता ॥
सावधान तैं रहब सभारा । दुर्योधन है शत्रु हमारा ॥
एकहि सङ्ग रहब सवधाना । यहही मन्त्र धर्मसुत ठाना ॥
यह विचार करि पांचौ भाई । विस्मय रहैं सचेत सदाई ॥
यहि प्रकार पाण्डव रह ताहाँ । पांचौ बन्धु सचेतन माहा ॥
महाबीर बृकओदर अहै । कौरव सब मन शङ्का रहै ॥
आपै आप रहै सवधाना । वैशम्पायन करत बखाना ॥
यहि विधिते तो भो अवतारा । कुरु पाण्डव दोउ वंश भुवारा ॥

सुनु राजा जनमेजय, भारतकथा अनूप ।
यहि प्रकार ते उत्पति, कुरु पाण्डव दुइ भूप ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

राजा सुनौ कथा अनुसारा । कुन्ती हर पूजा विस्तारा ॥
सोइ लिङ्गको यह परभावै । राज निमित पूजा मन लावै ॥

कुन्ती पूजै प्रति दिन जाई। औ गान्धारी पूजन आई॥
कुन्ती भेद न जान गँधारी। नहिं कुन्ती गन्धारी नारी॥
यहि प्रकारते पूजा ठावहिं। एक एकको देख न पावहिं।
प्रतिदिन तो यह पूजा करहीं। दूनौं त्रिय हरिभक्ति सँचरहीं
राजेश्वर महीश जगजाना। प्रतिदिन तब पूजत परमाना।

सुनु राजा जनमेजय, आगे कथा बखान।
भारतकथा सु पुण्यफल, जासे पाप नशान॥

भीषम कीन्हेउ हृदय विचारा। विद्यावन्त न एक कुमारा।
कुरु पाण्डव दोऊ सो अहहीं। विद्यावन्त न एकौ रहहीं
द्रोणाचार्य्यकि चिन्ता करही। जो आवै विद्या सञ्चरही
भृगुपतिकेर शिष्य जो अहै। विद्याशास्त्र ज्ञान तौ रहै॥
यह तौ चिन्ता भीषम पाई। खेलनको सब बान्धव जाई
सब बान्धव अरु कुरुपतिसाथा। खेलन गेंदहि कुवँरन हाथा
विधिवश गेंद कूपमें परई। सब मिलि शोच तहाँ सब करई
कन्दुक परेउ कूपमहँ जाही। कोऊ काढ़ि न सकतो ताही।
कुरुपति गेंद लेन सो चहही। काढ़ो हठ करि राजा कहही
बालक रूप कहैं सब कोई। काढ़ै गेंद समर्थ न होई।

यहि प्रकारते बाल सब, करते युक्ति उपाय।
बहुत प्रकार विचारन, गेंद काढ़ि नहिं जाय॥

ताही समय द्रोण गुरु आये। द्रुपद साह जो मान गवाँये
जनमेजय पूछे मुनि ठाईं। किहि विधि द्रोण सो मान गवाँई

वैशम्पायन कह सुनु राजा । द्रोणाचार्य रहै जेहि साजा ॥
पर्यो दुकाल अन्न नहिं पायो । देश छाड़ि तब द्रोण सिधायो ॥
द्रुपद राजके नगरहिं आये । द्वारपालतें खबर जनाये ॥
ब्राह्मण एक आव नृपद्वारा । तुमते मिलन चहत एहि बारा ॥
नृप कह तुरतहि लेहु बुलाई । तब द्वारी तिन कहं लै जाई ॥
दण्ड प्रणाम कीन्ह उठि राजा । भक्ति कीन्ह पूजा बहु साजा ॥
पूछे नृपति कहांते आये । बड़े भागते दर्शन पाये ॥
आपचरित द्विज कह विस्तारा । तुम्हरे ढिग हम आव भुवारा
निज देशहि जब परे दुकाला । तुम्हरे ढिग आये यहि हाला ॥
बरतत भृती देहु जो राई । तो कछु दिन रहि हौं एहि ठाई ॥

रहिये द्विज निज गृह जिमि, करिहौं तुव प्रतिपाल ।
वास करहु एहि नगरमहं, सुखते कह नरपाल ॥

दिनप्रति नृपति सुभोजन दयऊ । एहिबिधि दिवस केतिकौ गयेऊ
अश्वत्थामा पुत्रके नामा । खेलत खेल नगर शिशु ठामा ॥
निज निज गृह सब बालक चले । चीरोदन हम खाते भले ॥
तुमहु जाहु भजन करि आवहु । खेलहु खेल परम सुख पावहु ॥
अस्वथामा निज गृह कहं आये । चीरोदन मातहि फरमाये ॥
भोजन देहु यहै हम खैहैं । खेलन खेल सिसुन संग जैहैं ॥
अति दरिद्र नहिं चीर संचारा । मांगत चीर हठी यह बारा ॥
तन्दुल धोय चीर कहि दीन्हा । यहि प्रकार तेहि भोजन कीन्हा
एक दिवस नृपके मन भाये । द्विज भोजन सांभा करवाये ॥

भोजन हित द्विज न्योतेउ राजा। गये द्रोण भोजनके का
सुत समेत बैठे जेवनारा। चौर लाय तहं दीन्ह भुवारा
भोजन करि सब निज गृह आये। प्रात चौर मातहि फर
पुनि सोइ युक्ति करी लै आना। सो नहिं भी बालक म
न्टपके गृह खायउ हम चौरा। तुम आनत तण्डुलके नी

करत दुन्द सो बालक, भोजन नेक न खाय।
तासु मात तब द्रोणते कहै बात सब जाय॥

न्टपते मांगु गाय एक कन्ता। यह बालक मम कीन्हो अ
द्रोणाचार्य कहै सुनु नारी। न्टप ढिग नहिं जाचन अधि
जो न्टप ढिग यह करौं प्रसङ्गा। देय न होय मान मम भ
तासु वधू हठ करि पठवाये। न्टपके निकट द्रोण तब आ
मित्र मोहि दीजै गोदाना। सो सुनि न्टपति क्रोध मन
तुम भिक्षुक कहो मित्र कुबोला। देखत हों तुम हौ अ
समता होय मित्र तेहि कहिये। इतनी कर्ष न कैसे सहि
न्टप तिनको कीन्हो अपमाना। देशहिं छाड़ि कहो तेहि
दुःखित हृदय विप्र गृह आये। पूछहिं तिया कहां दुख
मन मलीन कस कीन्हो स्वामी। द्विज भाषै बुधि तुम्हरे
प्रथम कहा मम रहे न माना। देश त्यागि न्टप कहेउ नि
सो सब भाषहु कहं चलि जाहीं। तिय भाषा मम वन्धव
कृपाचार्य हस्तिनपुरमाहीं। चलहु वेगि अब जैहों त
उठे तुरत तिय सङ्गहि लीन्हो। हस्तिनपुरी गवन तव कीं

थल रमणीय देखि एक ठामा । डेरा कीन्ह तहां विश्रामा ॥
कृपाचार्य्यके गृह नहिं गयेऊ । मान घटे कछु लाज न ठयऊ ॥
तहंते भ्रमत द्रोण तब आयो । बालक तब सब देखन पायो ॥
द्रुपद समीप जान जो चाहा । द्वारपाल तब रोकेउ ताहा ॥
राजापास जान नहिं दीनों । भयो उदास द्रोण मन हीनो ॥
यहि अन्तर हस्तिनपुर आये । बालक सबसो देखन पाये ॥
युक्ति करत ते गेंद के काजा । दुर्योधन सौ बन्धु समाजा ॥
देखि द्रोण तब कहेउ सुनाई । गेंद काढ़ि देहौं मैं भाई ॥
धनुष माहिं तृण शर सञ्चारा । पढ़िके मन्त्र गेंदको मारा ॥
गेंद उठाय सो ऊपर आयो । दुर्योधन तब आनन्द पायो ॥
गेंद उठाइ जु लीन भुवारा । भीषमके पासहि पगु धारा ॥
भीषम पाहिं कह्यो समुझाई । कन्दुक परेउ कूपमें जाई ॥

बहुत युक्ति हम कीन्हेऊ, गेंद काढ़ि नहिं जाइ ।
यहि अन्तर इक विप्रवर, तह सो पहुँचे आइ ॥

हम भाख्यो तुम काढ़ु गुसाईं । काढे गेंद बार नहिं लाई ॥
देखत बिप्र कहा तब बाता । कन्दुक काढ़ि दीन सख्याता ॥
सींकक शर सायक सन्धाना । कूप मध्य मारेउ तब बाना ॥
गेंद कूपते बाहर आई । भीषमते कह कुरुप सुनाई ॥
तब भीषम मन करत बिचारा । दूजो बिप्र नहीं संसारा ॥ *

---

* ऐसो और करै को पारा ।

परशुरामकर शिष्य खलासा । द्रोणाचार्य तासु को नामा ॥
करि आदर तब वेगि बुलाये । चरण धोइ आसन बैठाये ॥
भीषम वचन कहा रनपाहीं । आपु रहो हस्तिनपुर माहीं ॥
बालक सबतो अहैं हमारा । विद्यावन्त करहु अनुसारा ॥
यहि विधिविनय गङ्गसुत कीन्हा । पाँच ग्राम आचार्यहि दीन्हा
हर्षित द्रोण रहे पुनि ताहीं । दूसरो पुरुष हर्ष मनमाहीं ॥

द्रोणाचार्य रहे तहाँ, पुरी हस्तिनामांह ।
यहि प्रकारते गुरु भये, सुनौ वचन नरनाह ॥

कुरु सौ बान्धव एक समाजा । पांच बन्धु पाण्डव तहँ साजा ॥
भीषम सौंपि द्रोणके पासा । और हर्ष सों वचन प्रकासा ॥
इन सबहिन को क्षत्रिय करिये । विद्या अस्त्रज्ञान सञ्चरिये ॥
अस्त्र शस्त्र सिखये मन जानौ । हर्षित भीषम कहत बखानौ ॥
सुनतहि द्रोण बहुतसुखमाना । जो तुम कहा सोइ परमाना ॥
विद्याशाला एक बनावा । उत्तम थल सो देखि सोहावा ॥
कुरु पाण्डव मिलि हे नरनाथा । विद्या पढ़त दोउ यक साथा ॥
अग्निबाण जलबाण कहाये । पवनबाण गुरु जानि सिखाये ॥
अहिकरबाण नागधार साधा । केकीबाण मोर बहु बाधा ॥
खगघायक पिपील प्रमाणा । अन्धकार औरहु रवि बाणा ॥

सगरी विद्या युद्धकी, सिखत सु गुरुके पास ।
बाणावारी अस्त्र सब, सीखे क्षत्रिय आस

तेहु औसर सब रहे सुठामा । आयेउ एक भील तेहि ठामा ॥

कृपावन्त द्विजवर अब होहू । कहत द्रोण सो पढ़वहु मोहू ॥
द्रोण शूद्र लखि नाहिं पढ़ावा । सोऊ तुरतहि विपिन सिधावा
द्रोणाचार्य मृत्तिकाकेरा । निर्मित कीन्हेसि तहं तेहि वेरा ॥
मूरति विमल सुआसन दीन्हा । भली भांति तेहि पूजा कीन्हा ॥
श्रद्धा भक्ति करै असलीन्हा । लोक विश्वास फलितविधि कीन्हा
पूजै मूरति घर सन्धानै । द्रोण समान सो मूरति जानै ॥
पारथको बाणावरि माहीं । पावत नहिं कोई सुत ताहीं ॥ *
सबै लोग तब देत बड़ाई । धन्य धन्य पारथको माई ॥
स्वर्ग पताल मृत्यु अस्थाना । कम्पमान पारथके वाना ॥
सदा कर्ण आवहिं पनि ताहाँ । बैठत आनि द्रोणके पाहा ॥
परशुरामको शिष्य जु अहै । अतिही प्रीति द्रोणपर रहै ॥
राजनीति औ शास्त्र विधाना । द्रोणाचार्य सिखावै नाना ॥
प्रति वासर नाना व्यवहारा । पढ़त रु सुनत अनेक प्रकारा ॥

यहि प्रकार ते राजा, विद्या सिखवत ताहि ।
सो बान्धव कुरु नाथ जो, पाण्डव पांचो आहि ॥

इति अष्टम अध्यायः ॥ ८ ॥

राजा सुनो कथा परवेशा । कौतुक इक बड़ भयो नरेशा ॥
कुन्ती शिवपूजन को जाई । यहि अन्तर गान्धारी आई ॥

---

* जे नाहिं कोई जगमाही ।

दासी सब लै सङ्ग गन्धारी । हरके मण्डप तब पगु धारी ॥
गन्धारी कुन्तीकहँ देखी । पूंछै बात तौ कहो विशेखी ॥
कारण कौन इहाको आई । ताकर भेद कहौ समुझाई ॥
कुन्ती करत शम्भु की सेवा । दूनौं कहँ तब एकहि भेवा ॥
कहत गंधारी तू कत आई । राजस्त्री तौ पूजन जाई ॥
इहाँ सदा हम पूजत अहई । तू कत आइ गन्धारी कहई ॥
एतो गर्व तोर भो आई । राजेश्वर हर पूजन धाई ॥

कुन्ती कह हम पूजती, प्रथमहिं राज्य हमार ।
आदिहुते हम पूजती, कुन्ती कह सञ्चार ॥

दूनौ महा द्वन्द्व तब कीन्हा । एक एक कह गारी दीन्हा ॥
महादेव तब भाष्यउ बानी । काहे दोऊ भई अयानी ॥
जो पूजा कर भक्त हमारा । ताकर वश हम सुनौ विचारा ॥
शैलसुता अर्द्धाङ्गी आहीं । ताहूकेर वश्य हम नाहीं ॥
पूजत श्रद्धा भक्ति जु कोई । ताके वश्य जगत हम होई ॥
तजौ द्वन्द्व मानौ मैं कहऊँ । जो मो भक्त तास मैं अहऊँ ॥
वचन एक भाषत मैं नारी । तजहु कलह अरु द्वन्द्व विचारी ॥
कनक फूल अरु सगन्ध उपाई । जो कोउ पूजत आनि चढ़ाई ॥
औ ताहीकर सुनहु विचारा । तासु पुत्र तौ होइ भुवारा ॥
ऐसा कहि हर अन्तरधाना । परम हर्ष गन्धारी माना ॥

कहत गन्धारी कुन्तिसे, महाहर्ष परिहास ।
कहौ जाइ सब सुतनते, करौ पुष्प परकाश ॥

कहि गन्धारी गृहको जाई। एतनते कहि तवहि बुझाई॥
कनक सुफूल सहस बनवाई। दीजै पुत्र तु हमको ल्याई॥
राजा सुनतहि कनक मँगायो। चम्पा पुष्प अनेक गढ़ायो॥
गढ़त सुनत तौ पुष्प उपाई। तब कुन्ती गृह विस्मय जाई॥
बैठी जाय सोचगृह माहीं। रन्धन कछुक बनायो नाहीं॥
बैठी जाय शोचके भवनहिं। भोजन अन्न तु कीन्हीं कछुनहिं॥
महादुःख मनमें उपजाये। विद्या पढ़ि आत्मज सब आये॥
क्षुधावन्त भीमहिं तब जाई। क्षुधा लागि भोजन दे माई॥
कुन्ती तब उत्तर नहिं दीन्हा। महाक्रोध भीमहिं तब कीन्हा॥
तीनि बार तौ बोलि कुमारा। उत्तर न दीन मातु सिसकारा॥
रांधन केर समा सब रहै। सो तौ भीम मातु सन कहै॥

दोय पहरमें पठन करि, आये घरके माहिं।
अजहूँ भोजन है नहीं, माता बोलत नाहिं॥

गुरुके पांहि दुःख सहि आवैं। घरमें कछु भोजन नहिं पावैं॥
माता बोलि न उत्तर देई। कहु बन्धव का करैं कलेई॥
आज्ञा देहु समा सब अहै। खाऊँ जाइ वृकोदर कहै॥
धर्मराज कह ऐसी बाता। भीमसेनको रे सख्याता॥
माता क्षुधावन्त जो आही। कैसे कै सुत भोजन खाही॥
माताकहं तौ पूछो जाई। मोरे कहे न बोलत माई॥
राजा कह अर्जुन तुम जाहू। पूछो जाइ कौन दुख आहू॥

पारथ गे मातोके पासा। हाथ जोरिकै बचन प्रकासा॥
भिक्षा पढ़ी छुधा तौ पाई। भोजन हित आयो मैं माई॥
अजहूं रांधन कीन नहिं, कौन दुःख मनमाहिं।
सत्य सत्य जो माता, सो भाषहु हमपाहिं॥
माता कही होव कह पूता। एसी बात भई अनगूता॥
पारथ कहो कहौ तुम माई। करब सत्य जो कीन्हो जाई॥
तव कुन्ती भाषे यह बाता। गन्धारी को द्वन्द सख्याता॥
कनकपुष्प पूजै हर जोई। तासु पुत्र महिराजा होई॥
उन सुवर्ण कीन्हीं सो नाना। पुष्पहि गढ़त अनेक बिधाना॥
हमहूँ कहाँ सुवर्णहि पाई। जाको पुष्प सुजाय चढ़ाई॥
अर्ज्जुन कहा सुनो हो माता। यह तुम कहा कौनि बड़ि बाता॥
प्रातहि काल देव हम माता। रांधन करहु आपु सख्याता॥
सुनि कुन्ती आनन्दित भई। रांधन करन तबहिं चलि गई॥
भोजन पान करे सब कोई। रात्री काल प्रकट तब होई॥
कुन्ती कहती पार्थसों, आनो पुष्प तुरन्त।
प्रातकाल पूजन चहौं, शङ्कर देव अनन्त॥
प्रातकालको बेरा भयऊ। घरी दोइ निशि बाकी रहऊ॥
कुन्ती कहत देउ अब आई। पारथ कहा देउं अब माई॥
धनुषबाण तव अर्ज्जुन गहई। माता धीर धरो अस कहई॥
मन व्यापक तव शर सञ्चारा। महाबली अर्ज्जुन संसारा॥
भये अलोप गये सो बाना। जहाँ कुवेरकेर बगवाना॥

जहां कुबेरकेर बगवाना। तहं सो अर्ज्जुन मारे बाना॥
काटे तरुवर पुष्प उड़ाये। बाणके तेज पुष्प बहु आये॥
शिवकेमण्डप पुष्प जो आये। भीतर बाहर पुष्प सु छाये॥
शिवमण्डप फूलन सों पाटे। औरो बाण जु अर्ज्जुन छांटे॥
कनकपुष्प चम्पा अनुहारा। शोभा बहुत सुगन्ध अपारा॥
शिवमण्डप पुष्पनसों छाये। अर्ज्जुन पाहिं बाण तब आये॥

अर्ज्जुन कह सुनु मात अब, पूजौ शङ्कर आय।
जितक फूल मन मानहीं, मण्डपमा लेउ जाय॥

कुन्ती सुनत हर्ष मन भई। करि अस्नान मण्डपहि गई॥
देखा पुष्प अनेक प्रकारा। पूजत कुन्ती हर्ष अपारा॥
तुष्टवन्त गिरिजापति भयऊ। आशिर्वाद कुन्तिकहँ दयऊ॥
तोर पुत्र होइ है महिराजा। पुरी हस्तिना नगर समाजा॥
यह बर दीन्हो तब त्रिपुरारी। कुन्ती तब गृहको पगुधारी॥
यहि अवसर गन्धारी आई। कनक थार बहु पुष्प भराई॥
जातहि देख्यउ मण्डप माहीं। अगणित पुष्प भरे ता आहीं॥
बाहर भीतर पुष्प सुहाये। तब कुन्तीकहं देखन पाये॥
पूंछै बात कुन्तिके पाहीं। कहौ पुष्प तुम पाये कांहीं॥
कुन्ती कह हम भेद न पायो। अर्ज्जुन पुष्प कहांते ल्यायो॥

तुष्टवन्त गिरिजापतिहि, मोहिं दीन्ह वरदान।
असकहि तबहीं उमापति, भये जु अन्तर्द्धान॥

ऊर्द्ध्वश्वास गन्धारी लीन्हा। अपने गेह गवन तब कीन्हा॥

भाष्यो जाय पुत्रके पाहीं। कुन्ती धन्य जगतमें आहीं॥
कहा पुत्र सौ कहा पचासा। अकिले अर्जुन पुरई आसा॥
कहा पुत्र हमरे सौ भयऊ। अर्जुन जो पुरुषारथ कियऊ॥
महादुःखमें भइ गन्धारी। कहा राज्य धन वृथा हमारी॥
सकल राज्य धन महिकर होई। अर्जुन पुत्र धनंजय सोई॥
यहि प्रकार दुःखित गन्धारी। कुन्ती तब गृहको पगुधारी॥
अर्जुन पाहिं कहै तब वानी। मस्तक चूमि असीसै रानी॥
धन्य धनंजय पुत्र हमारा। आज हमारो पुरवनहारा॥
बहु प्रकारते दीन असीसा। बार बार तब चूमति सीसा॥

यह इतिहास पुनीत अति, सुनत पाप उद्धार।
कुरु पाण्डव सब एकहो, विद्या पढ़ि चटसार॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

गुरुके पहँ बैठे सब ताहा। नाना अस्त्र शस्त्र अवगाहा॥
एक बार चटशाले माहाँ। कर्ण आदि बैठे सब ताहाँ॥
यहि अन्तर भीषम चलि आये। तहाँ जायकै वचन सुनाये॥
को कस विद्या लखो कुमारा। करौ परीक्षा अग्र हमारा॥
आपुइ आप दिखावो सोई। काके विद्या केतिक होई॥
सबही वीर अस्त्र तौ करहीं। भीषम पाहिं सबै अनुसरहीं॥
दुर्योधन शत वान्धव धाये। पाछे पाँच पाण्डवा आये॥

एकलव्य जो नाम किराता। आये कहौ द्रोणसों बाता॥
देवलोक लच्छेउ तेहि बाना। बनते तज्यो अलोप्यो बाना॥
भयो सिद्ध वन विद्यहि पाई। लेन परिच्छा नित हम आई॥
जहां शिष्य सब देहिं परिच्छा। देखि रहा सो अपनी इच्छा॥
देन परिच्छा सोउ तब नाधा। चलवै वान सो अतिहि अगाधा॥
देखि द्रोण अचरज अति माना। कहां सिखी विद्या बलवाना॥

पूछा द्रोण सिखे कहाँ, कहेउ तुम्हारे पास।
विपिनमांहि प्रतिमूरति, माटी कीन्ह प्रकास॥

तुमहीं गुरु मृतिकाके भयेऊ। शक्ति तुम्हारि तहां चलि गयेऊ॥
द्रोण कहा गुरुदच्छिणा दीजै। जो चाहौ सो अबही लीजै॥
कर-अङ्गुठ तुम हमकहं देहू। दीन्हेसि उतर तुरत किन लेहू॥
द्रोण कह्यो शर चलिहै कैसे। दोइ अङ्गुरी गहि मारेसि ऐसे॥
सुनि सबही अति अचरजु लागे। सबै कहत यह परम सभागे॥
भीषम कहेउ सुनहु हो पारथ। अब देखौं तेरो पुरुषारथ॥
करत अस्त्र अर्ज्जुन सब ताहाँ। सन्मुख तौ भीषमके पाहाँ॥
जबहिं अस्त्र अर्ज्जुनने कीन्हा। धन्य धन्य सब बोले लीन्हा॥
भीषम कह्यउ धनंजय पाहीं। त्वहिं समान कोउ जगमें नाहीं॥

तोर अस्त्र अस देख्यउं बहुत मोर मन मान।
तोहि समान कोऊ नहीं भीषम कहत बखान॥

सुनिकै कर्ण कहन तब लागे। सभामाँझ भीषमके आगे॥
अर्ज्जुनकै तुम कौन बड़ाई। हीन कौन कौरव शत भाई॥

मोर अस्त्र जो देखन पावहु। तो अर्ज्जुनको ज्ञान भुलावहु॥
कर्ण वीर तब अस्त्र जु करई। मानहु वज्र भूमिमें परई॥
कम्पमान अवनी तौ होई। ऐसा अस्त्र कर्ण कर सोई॥
कर्णकेर पुरुषारथ देखी। दुर्योधन-मन हर्ष विशेखी॥
आलिङ्गन तब कर्णहिं दीन्हीं। मित्र बोलि सखा तब कीन्हीं॥
कुरुपति कहा मित्र परमाना। यहि जनमांहि बन्धु हम जाना॥
साखी पञ्च देवता कीन्हा। मित्र प्रकाशि जगतमंह दीन्हा॥
राजा कर्ण दोउ व्रत लीन्हीं। पुहुमीमाहिं मित्र तौ कीन्हीं॥

कर्ण और दुर्योधन तत्क्षण भये सँघात।
हर्ष गात दूनौ भये भीषमके सख्यात॥

कहा कर्ण दुर्योधन पाहीं। आशा एक मोर मनमाहीं॥
मल्लयुद्ध देखो तुम राऊ। हारत कौन कौनके दाऊ॥
सुनिकै अर्ज्जुन सह्यो न पारा। क्रोधवन्त कर्णहिं परचारा॥
द्रोण गुरू अर्ज्जुनते कहै। तोरे सन्मुख ब्रत न रहै॥
महावीर अर्ज्जुनको जाना। मल्लयुद्ध करिवेको ठाना॥
पुत्र सनेह इन्द्र नभ छाये। पुत्र हेत सूरज चलि आये॥
युद्ध साज साजे हैं दोऊ। चकित भये देखत सब कोऊ॥
किरपाचार्य्य कहै तब बाता। पाछे युद्ध करौ सख्याता॥
सोमवंश अर्ज्जुन जग जाना। आपन वंशकु करौ बखाना॥

सूर्य्यपुत्र तुम कर्ण हौ मात पिता नहिं जान।
कोने मुख कीन्हों चहौ अर्ज्जुनसों मैदान॥

कर्ण तबै सुनि लज्जा पाई । तब दुर्योधन कहा सुनाई ॥
राजा जौन छत्र विधि भाई । सहसौ क्षत्रिय उत्तम राई ॥
वरणौ विक्रम राजा सोई । अर्ज्जुन कर्ण तुल्य जो होई ॥
आधो आसन राज्य हमारा । राना कहै सु कर्ण तुम्हारा ॥
अधिरथ तब यह सुनि जो पाई । पार्थ कर्ण जहँ होइ लड़ाई ॥
पुत्रके हेतु तुरतही धाये । सभा माँझ तत्क्षण ही आये ॥
कहते पुत्र द्वन्द नहिं काजा । होइ सो देख्यो राजहि राजा ॥
सभा माहिं यह वचन सुनायो । कर्ण लजाके माथ नवायो ॥
भीमसेन भाषैं यह वानी । सुनौ कर्ण तुम अति अज्ञानी ॥
क्षत्रिसभामैं बैठ्यउ जाई । नेक न लाज चित्त तुव आई ॥

क्षत्रि सभाके योग्य नहिं अरे हीन अज्ञान ।
सुनत कर्ण तब कोपेउ सबलसिंह चौहान ॥

क्रोधित कर्णहिं सूर्य्य निहारा । प्रकटि सूर्य्य तब सभामँझारा ॥
भाषै रवि तुम पुत्र हमारा । कौन हेतु मन करत खँभारा ॥
यह कहि सूरज अन्तर्द्धाना । सभा सबै तब अचरज माना ॥
रविको पुत्र सभा सब जाना । दुर्योधन तब करत बखाना ॥
मूढ़ वृकोदर रे अज्ञाना । वचन हमार सुनौ दै काना ॥
कुम्भ अगस्त्य जन्म जो भयऊ । शृङ्गिगर्भ शृङ्गीऋषि लयऊ ॥
द्रोणाचार्य सकल अवतारा । जानौ तौ सर्वज्ञ सँसारा ॥
गङ्गा गर्भ भीष्म अवतारा । शान्तनु सुत जानै संसारा ॥
कहि दुरयोधन धर्म्मकुमारा । इन प्रतिपालन कीन्ह तुम्हारा ॥

दुर्योधन भाषै यहि रूपहिं। सुनहीं बात धर्मसुत भूपहिं॥

दुर्योधनकी बात यह सुनी सकल दै कान।
लोग सभा सब उठे तब सन्ध्या भो परमान॥

कछु दिन तौ यहि विधिते गयऊ। विद्या पढ़ि संपूरण भयऊ॥
गुरुदक्षिणा सबहि तब दीन्हों। हर्षि द्रोण गुरु भाष्यो लीन्हों॥
अर्जुनसों तब भाष्यउ बाता। स्वारथ मोर करो सख्याता॥
द्रोपद राजा मित्र हमारा। मारि किरीट राज्य बैठारा॥
अर्द्ध राज्य वै हमहीं दीन्हा। शपथ कीन्ह तबही हम लीन्हा॥
याती राजै दै वन गयऊँ। पूरण तप मैं पुनि तहँ कियऊँ॥
द्वारपाल जाने नहिं दीन्हों। मेरो तौ अपमानहिं कीन्हों॥
ता कारण मैं मांगत येहू। द्रुपदहिं बांधि चरणतर देहू॥
अर्जुन सुनतहिं तुरत सिधाये। द्रुपद पाहिं सो युद्ध लगाये॥
लगत बाण तब अर्जुन साधे। द्रुपदराजको तुरतहिं बांधे॥

नागफांस सों बांधेउ लै आयो गुरुपास।
द्रुपद बहुत लज्जित भयो विनय कीन्ह परकास॥

कह्यो मित्र मैं तो नहिं जाना। मेरो कीन्हों है अपमाना॥
गुरु द्रोण किरपा तब कियऊ। अब नहिं ऐसे भ्रममें परऊ॥
बन्धन खोलि जु बिदा कराये। महाहर्ष द्रोणा गुरु पाये॥
आशिरवाद तुरतही दीन्हा। धन्य धन्य अर्जुनको कीन्हा॥
कीन्हेउ शिश तुम स्वार्थ हमारा। अबते पारथ नाम तुम्हारा॥
तुम्हरे सन्मुख शत्रु विनाशा। गुरु हर्ष होइ वचन प्रकाशा॥

यही प्रकार शस्त्र व्यवहारा। भयो सभा सो सुनहु भुवारा ॥
अपने गृह पारथ तब जाई। परमहर्ष भो देखत माई ॥
पाण्डव या विधि सुनौ कहानी। जाते होय पाप सब हानी ॥
सुनि मनवांछित सो फलपावहि। अन्तकाल वैकुण्ठ सिधावहि

पाण्डवविजयी कथा यह राजा सुन दे कान।
विजय होय सब जगत में शत्रु होय क्षय जान ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

राजा सुनहु कथा सवधाना। जाते पाप होय क्षय माना ॥
दुर्योधन तब रचा उपाई। पाण्डव एल प्रबल भे आई ॥
भीमसेन अति दुष्ट जु अहई। सदा विवाद जु हमसे करई ॥
भाषा जाय तातके पासा। दुर्योधन नृप होय उदासा ॥
दिन दिन होत सबै बरियारा। तात करो कछु मन्त्र विचारा ॥
पांचौ कण्टक राज्य हमारा। राज्य हमारि तु कहैं विचारा ॥
तिनहिन देखि क्रोध हम पावहिं। सदादुष्ट भीषम परभावहिं ॥
करो तात कछु मन्त्र विचारा। होइ निकण्टक राज्य हमारा ॥
जानौ तात सत्य मनमाहीं। राज दुष्ट तौ पांचौ आहीं ॥
ये तौ साँच होत मन माहा। शत्रु हमार निकासे आहा ॥

ता कारण सुनु तात अब, भला न होइ सो होइ।
शत्रु रहत है निकटही, मम कस भला जु होइ ॥

धृतराष्ट्रक मन्त्री हंकारे। बैठि इकान्तहि मन्त्र विचारे ॥
मन्त्रिनते राजा तब कहई। मोर पुत्र तौ राजा अहई ॥
पाण्डव पुत्र राज्य मन लावे। पिता राज्यके सबहि सुनावे ॥
करो मन्त्र मन्त्री अनुसारा। होइ निकण्टक पुत्र हमारा ॥
धृतराष्ट्रकी बात सब सुनी। मन्त्री मन्त्र करत हैं पुनी ॥
मन्त्री कह सब मन्त्र विचारा। सावधान ह्वै सुनौ भुवारा ॥
दुर्ब्बल शत्रु जानिके राई। निश्चिन्तहि ह्वै रहौ न भाई ॥
युद्ध करन औ यत्न प्रकाशा। जाते शत्रु होय तब नाशा ॥
व्याधिहिसे सब हो सवधाना। जाते व्याधि न होत निदाना ॥
शत्रु दुर्ब्बल अग्नि समाना। चणमा भस्म करे जग जाना ॥

व्याधि शत्रु अरु नदी जल, स्त्री पावक अरु नीर।
इन विश्वास न मानिये, सुनौ मन्त्र सो धीर ॥

करिये यहै मन्त्र ठहराई। तत्कालही जु जाइ नशाई ॥
धीरज कीन्ह सिद्धि तौ होई। करे उतायल भुलवे सोई ॥
यह कहिके मन्त्री सब आये। मन्त्र विचारन को मन लाये ॥
काली नाम जु मन्त्री अहई। दुर्योधन राजासों कहई ॥
मन्त्र हमार सुनौ जो राऊ। करो एक परपञ्च उपाऊ ॥
लाच भवन करिये निर्माना। तामहँ जारहु शत्रु निदाना ॥
यहै मन्त्र सबही ठहराई। यत्न करौ जो होइ सहाई ॥

सौ बान्धव मिलि मन्त्र करि, गये पिताके पास।
प्रेमहर्ष मनमें बहुत, करत वचन परकास ॥

दुर्योधन दुश्शासन अहैं। सो सब बात तात सों कहैं ॥
लाक्षा भवन करौ निर्माणा। जामें पांचौ तजिहैं प्राणा ॥
सनिकै मन्त्र सबन मन भावा। वरुण नगर में महल बनावा ॥
लक्ष भवन की आज्ञा पाये। वरुण नगरमें महल बनाये ॥
पठये विदुर देखिबे काजा। कीन्हों लक्षकेर सब साजा ॥
देखत विदुर चकृत तब भयऊ। यह तो पापकि रचना ठयऊ ॥
विश्वकर्माते विदुर सुनायो। तहाँ सुरङ्ग एक बनवायो ॥
ताके ऊपर खम्भ लगावा। याहि प्रकार विदुर बनवावा ॥
रत्न मुद्रिका करसों लीन्हा। यवई बोलि हाथ तब दीन्हा ॥
दुर्योधन जानैं नहिं जैसे। भाई सुनो मन्त्र यह ऐसे ॥

यहि प्रकार ते विदुर करि, गे दुर्योधन पास।
उत्तम ठांव भवन भयो, कहिन बात परकास ॥

लक्ष भवन यहि रूप बनाये। कुन्तीको धृतराष्ट्र बुलाये ॥
भीमरु दुर्योधन इक ठाऊ। बनत नाहिं अस बोलत राऊ ॥
वरुण नगर में महल बनाये। तहँ तुम रहौ परम सुख पाये ॥
सुनिकै कुन्ती सच करि माना। करि प्रणाम तब कीन पयाना ॥
पांचौ पुत्र सङ्ग लै लीन्हा। वरुणनगर तुरन्त शुभ कीन्हा ॥
देखा उत्तम महल बनाये। परमहर्ष तब कुन्ती पाये ॥
ब्राह्मण भोज प्रतिष्ठा कीन्हा। विविध दान विप्रनकहँ दीन्हा ॥
पाण्डु नाम एक व्याधा रहै। पञ्च पुत्र एक इस्त्री रहै ॥
पाण्डु गये बन मांहि शिकारा। गृहमें स्त्री पांच कुमारा ॥

वनमहं जन्तु एक नहिं पाये। महाशोच व्याधा मनलाये॥

एक मृगी तव देखा, गर्भवन्त वनमांहि।
परसवकाल निकट भयो, व्याधा देखा ताहि॥

चारो दिशि तव घेरा जाई। दक्षिण दिशि महं जाल बिराई॥
उत्तर पावक पूरव श्वाना। पश्चिम दिशिमहं बान सन्धाना॥
मृगी सुगर्भ व्यथा उपजाये। चहुदिशि बन्ध उबार न पाये॥
तव तो मृगी करै हरि ध्याना। यहि औसर राखो भगवाना॥
दीनवन्धु आरतिके नाशन। वन्दि उधारो यह गरुड़ासन।
अपनो तन वैरी है आपो। दुःख समुद्र मांह मन कापो॥
वहु प्रकारते अस्तुति करो। तव रचना कीन्हो यह हरी॥
घटा पवनते जाल उड़ाये। नीर वृष्टि के अगनि बुझाये॥
व्याघ्र भक्ष्य करि स्वानहिं धाई। परयो वज्र व्याधा सिर जाई॥
हर्षित मृगी प्रसव तव करो। आरत दुखभंजन श्रीहरी॥

कष्टमाह जो सुमिरै, आरतनाद प्रमान।
आरतभञ्जन नाम है, सवलसिंह चौहान॥

व्याधा तेहि वन छाड़ेउ प्राना। क्षुधावंततिय सुत सब जाना॥
जाना आज रह्यो वनमाहीं। एको जन्तु तु पायो नाहीं॥
ब्रह्मभोज कुन्ती जो कीन्हो। सोऊ देश सुन्यो जो लीन्हो॥
उहां गये कछु पाण्डव भाई। पांचौ पुत्र सङ्ग ले जाई॥
देखि कुन्ति तव पूछति वाता। जानि कौन उत्तम सख्याता।
शवरी कहै पाण्डु सख्याता। कुन्ती नाम मोर सुनु माता॥

मम सुत अहैं युधिष्ठिर देवा। अर्ज्जुन भीम नकुल सहदेवा॥
जो सहदेव पुत्र लघु अहै। सुनि हर्षित मन कुन्ती कहै॥
पति सन नाम देउ सख्याता। हम तुम दोनो भये संघाता॥
भोजन पान करी परमाना। राति रही तहं करि अस्थाना॥

निशा भोग जब राति भो उल्का पावक लाव।
बाढ़े धूम अन्ध भो पावक प्रबल बढ़ाव॥

पघिलै लाख सो चुइ चुइ परै। कुन्ती बिकल सो रोदन करै॥
क्रुद्ध भीम सहदेवहि कहै। जानो पन्थ कौन दिशि अहै॥
तब सहदेव कहै हंसि बानी। भले ठांव पूछे सुज्ञानी॥
यह तो खम्भ उखारहु भाई। उत्तम मारग विदुर बनाई॥
भीम सो खम्भ उखार्यो ताहा। उत्तम मारग देख्यो जाहा॥
चले तीन मारग सब भाई। कुन्ती माता संगहि लाई॥
गदा भूलि भीम तब आये। ताहि लेनको फेरि सिधाये॥
लैके गदा चले जब ताका। सातो रसना पावक हाका॥
तबही भीम विनय अस कीन्हे। पावक पाह कहै तब लीन्हे॥
आप समान एक सौ देंहीं। भाष्यौ सत्य समय जब पैंहीं॥
व्याधी एक लिया तब आई। तासु पती मारेउ वनराई॥
पांच पुत्र लै तब ह्वां आई। कुन्ती के गृह उपथौ भाई॥
भोजन पान करेउ परवाना। रात्रीकाल रही पुनि याना॥
निशापाय तब अग्नि लगायो। प्रकटी अनल धूम गृहछायो॥
गलि गलि लाख परत तनमाहीं। पाण्डव विकल भये गृहमाहीं

धर्मज विकल कृष्णको टेरो। हे यदुनाथ अग्निने घेरो ॥
रक्षा करहु नाथ दुखहारी। हम अनाथ हैं शरण तुम्हारी ॥
कीन्हो कृपा भक्त भयहारी। धर्मराज भरोस भयो भारी ॥
धर्मपुत्र बोले तब बानी। भ्राता गणित करो सज्ञानी ॥
तब सहदेव गणित करि भासा। ज्योतिष भेद करै परकासा ॥
भीमसेन यह खम्भ उखारैं। तौ प्रभु यहि दुख शीघ्र उबारैं ॥
मारयो गदा वृकोदर तबहीं। टूटयो खम्भ सुरङ्ग भयो जबही ॥

पावक सन विनीत करी, गदा लीन्ह तब वीर।
पाँच पुत्र माता सहित, वनहिं चले मति धीर ॥

सुरङ्ग मार्ग तब कीन पयाना। पहुँचे नदी तीर परमाना ॥
करि अस्नान चले तब राई। वन वन चले जु पांचौ भाई ॥
कुन्ती माता को सङ्ग लीन्हा। यही प्रकार गमन तब कीन्हा ॥
लाक्षा गृह पावक तब जारा। लागी जाइ स्वर्गसों धारा ॥
नगर लोग सब रोदन करईं। पाण्डव विना धीर नहिं धरईं ॥
हाय युधिष्ठिर वृकोदर वीरा। हा कुन्ती तुम तजे शरीरा ॥
हा माद्रीसुत तव बल धारी। नगर लोग रोदन कर भारी॥
पांच पुत्र ले जरी सो ताहीं। व्याधा त्रिया पुत्र जो आहीं ॥
धृतराष्ट्रक राजा के पाहा। दूतन बात कही सब ताहा ॥
रोदन महा भयो भयकारा। धृतराष्ट्रक रोदन विस्तारा ॥

विदुर आदि रोदन करैं, नगर लोग विस्तार।
कपट रूप धृतराष्ट्रक, रोदन करत अपार ॥

क्रियाकर्म्म तब तिनको कीन्हा। विप्र बुलाय दान बहु दीन्हा॥
याहि प्रकार दुष्ट मन राजा। दुर्योधन कीन्हो एर साजा॥
यहि विधि लाक्षाभवन जरावा। जरत पाण्डवन कृष्णबचावा॥
श्रीहरि सदा भक्त रखवारा। नाशहिं पाप उतारहिंभारा॥
सुनु राजा जनमेजय बाता। याहि प्रकार वंश विख्याता॥

आदि पर्व गाथा सुनौ, कहौं भाषि संक्षेप।
श्रवण पठनते राजन, रहत पाप नहि लेप॥

इति एकादश अध्याय॥ ११॥

सुनुराजा अब कहौं बखाना। कुन्ती वनकहं कीन पयाना।
पांचौ पुत्र संग करि लीन्हा। तबहिं प्रवेश महावन कीन्हा॥
थकित भई तब कुन्ती माता। क्षुधा तृषाते दुर्ब्बल गाता॥
भीमै कुन्तिहि कन्ध चढ़ाई। सहदेव नकुल गोद लै जाई॥
धर्म्मराज अर्ज्जुन दोउ भाई। एक गोद में दोऊ चढ़ाई॥
महाबली हैं भीम भयङ्कर। प्रलयकालमें जैसे शङ्कर॥
यहि प्रकार ते वन पगु धारी। चले जात सुमिरत गिरिधारी॥
चलेजात मानहुँ अति रङ्का। महाबली है भीम अशंका॥
सन्ध्या कालहि उतरे जाई। क्षुधा तृषा लागी बहुताई॥
कुन्ती दुःख सहै शहिं भारा। क्षुधा तृषा ते तनु विकरारा॥
वट वृक्षहि तर राखिनि जाई। भीम करत जल हेत उपाई॥

जलके हेत वृकोदर, बहु वन खोजत जाइ।
चारिबन्धु अरु कुन्ती, तब निद्रा वह आइ॥

वनमहं भीम लयो जल जाई। पत्र पलाशक दोना लाई॥
जल ले भीम चले तब धाई। मातु सहित सोवें सब भाई॥
निद्रामग्न पांच जन होई। करहि विलाप भीम बल सोई॥
वनके मध्य मिलो जल नाई। करत विलाप भीम बहुताई॥
माता देखि भीम दुख नाना। विधिचरित नहिं जातबखाना॥
विचित्रवीर्य्यकेर बँधु अहै। शूरसेन नृप कन्या कहै॥
पाण्डुक रानी जननि हमारी। क्षुधा तृषा ते दुःखित भारी॥
भूमिहि मांहि परे सब भाई। क्षुधा तृषाते अति दुख पाई॥
राज्य देश सब छूट हमारा। सहे दुःख वनमांझ अपारा॥
जासु तेज जहँ वीर भुवारा। तासु दुःख अस सहै को पारा॥
धृतराष्ट्रक दुर्बुद्धि विचारा। जन्मेउ वंशहि धर्म्मविसारा॥
दुर्योधन पापी मति भारा। कर्ण आदि सबहैं अविचारा॥

करत विचार जु भीमतहँ, चारि बन्धु हैं सैन।
कुन्ती जननी सहित सब, रोइ भीम कह बैन॥

ताही समय हिडम्बक दानो। वहि वन रहै सो कालसमानो॥
मानुष गन्ध पाय विशेषा। उच्च वृक्ष चढ़ि के तब देखा॥
देखेउ मानुष छः जन अहै। बहिनि हिडम्बीते यह कहै॥
छः मानुष को धरि ले आवहु। परमानन्द ते भोजन पावहु॥

सुनत हिडम्बिनि आई तहाँ। भीम आदि बन्धव सब जहा॥
देखि हिडम्बिनि भीमहि कैसा। महादिव्य पर्व्वत सम जैसा॥
देखि भीम कहं मोहित नारी। तब यहि भांति वचन उच्चारी॥
बन्धव मोर हिडम्बहि नामा। हमको तिन पठयो यहिकामा॥
सहित तुम्है छः बन्धव कारण। यह देखौ आई हति मारण॥
रूप तुम्हार मोर मन लागा। कामवाण हिरदय में जागा॥

परिचय देहु न आपन, भाखहु नाम विशेष।
परम सुन्दरी कौन सो, कत वन कौन प्रवेश॥

तुमहि वरण चाहतहौं आपहि। पै हिडम्ब शंका मन आवहि॥
सुनत वृकोदर भाषेउ बाता। यह सुन्दरी अहै मम माता॥
औ मम बन्धव हैं ये चारी। यह कन्या ते कहा विचारी॥
जो तुम आयउ पास हमारा। तौ हिडम्ब का करै तुम्हारा॥
देव दैत्य गन्धर्व का करिहैं। काहू के डर हम नहि डरिहैं॥
सुनत हिडम्बिनि हर्षित भयऊ। जबहिं वृकोदर बातैं कहेऊ॥
भगिनी गही देखि जबदानौं। क्रोधित ह्वै चल पावक मानौं॥
देखि भगिनि मानुष तनुधारी। काम भावसे देखिसि नारी॥
देखत महा क्रोध सो भयऊ। भगिनीकहँ मारन तब ठयऊ॥
मोर अहार विघ्न तैं कीन्हा। पठवों यमपुर वोलै लीन्हा॥

यह कहि मारन चलो तहँ, दीन भीम तब हाँक।
अरे दैत्य तू अधम अति, वचन वृकोदर भाक॥

मेरि पियारीभै यह नारी। तै मतिहीन चहत है मारी॥
जेतक वल तनु अहै तुम्हारा। देखव तेज आज परचारा॥
सुनत हिडम्ब क्रोधसों कहै। आजु काल जाना तव गहै॥
धावा क्रोधवन्त इक वारा। गहिकै कर दैत्यहि फटकारा॥
पराजाइ दश धनुके पारा। तुरतहिं उठि धावा विकरारा॥
भीमहि दानव धरि फटकारा। आपु तेजते भीम सँभारा॥
वृक्ष उखारि दैत्य लै धावा। भीम वृक्ष तब एक चलावा॥
वृक्षहि वृक्ष निवारण भयऊ। वृक्षयुद्ध तव निष्फल गयऊ॥
दूनों महावीर वल योधा। दूनौं सरस आपने क्रोधा॥
कुन्ती सहित जो वन्धव चारी। छूटी निद्रा चेत सँभारी॥

देखा तहा हिडम्बि को, रूप अनूप तरङ्ग।
देखत कुन्ती देवि तव, पूंछत ताके सङ्ग॥

कहौ कहा तुम अपनो नामा। कौन हेत कीन्हों वन ग्रामा॥
को तुम देव दैत्य की नारी। आपन अर्थ कहौ विस्तारी॥
करि परणाम हिडम्बिनि कहई। हमतौ जाति राक्षसिनि अहई॥
भाई मोर हिडम्वक नामा। तिन हमंहीं पठये यहि कामा॥
पुत्र सहित मारण तुव हेता। यहि कारण हम आइ सचेता॥
पुत्र तुम्हार देखि हम पावा। मोहित भई मोह मन आवा॥
हमतौ वरे पुत्र तुव कारण। वन्धु मोर तौ आयो मारण॥
तुम्हरे सुतसों तेहि रण ठाना। संगर महा होत मैदाना॥
सुनत बात तब चारौं भाई। तुरतहिं देखि भीम तेहि ठांई॥

महायुद्ध दानव के साथा। अर्ज्जुन कह्यो भीमसों गाथा॥

भर्म करो जनि बांधव, दुष्ट जन मारव आइ।
नातर तुम बैठो इहाँ, हम यहि मारन जाइ॥

पारथ वचन सुनत ● क्रोधा। पार्थ दैत्यको अतिबल योधा॥
तब दानवको भीम पछारा। मुष्टिक घाउ उदरपर मारा॥
लागत घाव शब्द घहराना। परा भूमिमें छाँड़ेउ प्राना॥
मारयो दैत्य हर्ष तब कीन्हा। दुष्ट दैत्यको यमपुर दीन्हा॥
कन्या सो मानुष तनु धारी। भीमके सङ्ग करत सुख भारी॥
नाना गिरि वन पर्व्वत देखा। पांच बन्धु अरु कुन्ती पेखा॥
सङ्ग हिडम्बिनि पियके पासा। द्वीप द्वीप देखा परकासा॥
हिडंबिनि गर्भ पुत्र अवतारा। नाम घटोत्कच बीर अपारा॥
घटउत्कच सु नाम विस्तारा। अस्त्र शस्त्र सिखये विस्तारा॥
तबहिं हिडम्बी कहत बुझाई। जाउँ देश तब आज्ञा पाई॥

मम सुमिरण जबहीं करौ, देखा वचन तुम्हार।
जो आज्ञा तुव पावऊँ, जाउँ देश अनुहार॥

इस्त्री पुत्र कहै यह वानी। सुनतै भीम हर्ष अति मानी।
सुमिरत आऊं पास तुम्हारे। जाउ देश अबही अनुहारे॥
कुन्ती पाहिं भीम तो कहई। आन देशको जाना चहई॥
यह आज्ञा तब कुन्ती दीन्हा। लै सँग पुत्र गवन वन कीन्हा॥
राजा सुनहु कथा मन लाई। लै सुत देश हिडम्बी जाई॥

पांचो बन्धव वनमें रहैं। राजा आगे मुनिवर कहैं॥
देश देश भरमत हो राई। माता सँग लै पाँचौं भाई॥
कुन्तीको दिन वनमहँ गयऊ। इकदिन व्यासके दरशनभयऊ॥
कुन्ती कीन्हो मुनिहिं प्रणामा। पांचौं बन्धु चरणपर जामा॥
दुखी देखि पाण्डव मनमाहीं। करुणा कीन व्यासमुनि ताहीं॥
आशिर्वाद व्यास तब दीन्हीं। औ कुन्ती सों बोले लीन्हीं॥
सुत तुम्हार होइ नृप संसारा। दुष्टन केरो बल संहारा॥
मानहु इक उपदेश हमारा। एकचक्ररथ ग्राम संवारा॥
ब्राह्मण एक अहै तो ताहां। इस्थिर होहु ताहि गृह माहां॥

एकचक्रको नगर यह, तहां रहौ तुम जाइ।
यह कहि व्यास सिधाश्यो, कुन्तीको समुझाइ॥

कुन्ती पुत्र सङ्ग सब लीन्हा। तब यकचक्रनगर शुभ कीन्हा॥
रहे जाइ इक द्विजके गेहा। भीख मांगिकै पालत देहा॥
पाचो बन्धु मागि ल आवैं। जननीको लैके पहुँचावैं॥
माता रांधत करत सुसारा। अर्द्ध भीमको देत अहारा॥
आधा चारि बन्धु औ माता। भोजन करैं प्रेम सुख गाता॥
बहुत दिना बीते यहि देशा। माता सहित जु धर्म्मनरेशा॥
ब्राह्मण गृहमें रुदन जो करई। महा विलाप चित्तमहँ धरई॥
रोदन सुनेउ विप्रगृह माहीं। कुन्ती मन चिन्ता तब आहीं॥
पुत्री पुत्र नारि लै साथा। रोदन करत बहुत द्विजनाथा॥
कौन दुःख तोहिं भा द्विजराई। भीमके पाहँ कहत समुझाई॥

येते दिन द्विज गृह रहे, कहा दुःख द्विज पाव।
भीमसेनके आगे, कुन्ती कहत सुभाव॥
जाते द्विजकि आपदा हरई। सोई भीम करौ तुम सहई॥
यह तौ है निज धर्म्म हमारा। कुन्ती तब यह कह्यो विचारा।
ब्राह्मण दुःख जो क्षत्रिय देखहि। टारे दुःख सो क्षत्रिय लेखहि
इनके घरमें बास हमारा। अब चहिये इनको दुख टारा॥
यहै धर्म्म है पुत्र हमारा। यही धर्म्मते उतरब पारा॥
धर्म्म करत जो पै दुख होई। तबहुँ धर्म्म नहिं छाँड़त कोई॥
धर्म्महिते होई धन राजा। धर्म्महिते होइ शुभ काजा॥
ताते भीम कहत समुझाई। जाते द्विजको दुःख नशाई॥
सुनत वृकोदर करै विचारा। कौन दुःख जो है करतारा॥
जो माताकी आज्ञा होई। अवशि विचार करब हम सोई॥
मात पिताकी आज्ञा, पुत्र करत परमान।
धन्य जन्म ताको जगत, पावै पद निर्वान॥
भीमसेन माता समुझाई। कौन दुःख द्विज पूंछहु जाई॥
टारौं दुःख प्रतिज्ञा यहै। भीमसेन माता सो कहै॥
मारौं दुष्ट दैत्य संहारौं। जो संकट द्विजके सो टारौं॥
अब माता पूछो तुम जाई। कौन हेत रोवत द्विजराई॥
माता ताको धीर धरायो। जो कुछ कष्ट पूंछि सो आयो॥
कुन्ती तबै हर्ष मन भई। तब द्विजपहँ सो पूंछन गई॥
रोवै ब्राह्मण करै विलापा। रोवत पुत्र एक पुनि आपा॥

कन्या रोवति आपु पुकारी। विकलवंत तब वहु द्विजनारी॥
ब्राह्मण कहत जबै लग ताहीं। तुम तीनों रहि हो गृहमाहीं॥
पुत्र कहा जो मैं चलि जाऊं। पितुके ऋण उवार तौ पाऊं॥

स्त्री अरु कन्या कहैं, हम जैहैं चलि ताह।
तुम रहिहौ जो जगतमैं, वहुतक होइ विवाह॥

रोवत हैं चारौं विलखाई। तब कुन्ती पूंछनको आई॥
कौन दुःख रोदन करु भारी। सो तुम हमसे कहो विचारी॥
हम हैं तुम्हरे गेह मंझारा। तुम दुख छूटै धर्म हमारा॥
सोई दुःख कहौ द्विज मोहीं। सत्य कहौं दुख का द्विज तोहीं॥
मैं तो करव दुःख परत्राना। मम आगे तुम करौ बखाना॥
हम तौ दुःख छुटाउव भाई। तव आशिष हमार दुख जाई॥
आशिष तोर यहै कल्याना। रोदन तजिकै करौ बखाना॥
तुव रोदन देख्यो अति राई। कारण हम पूंछन को धाई॥

कौन दुःख केहि त्रासते, रोदन विस्मय आहिं।
ब्राह्मणिपै कुन्ती तबै, पूंछै हित गहि बाहिं॥

तबै ब्राह्मणी कहै विचारी। आपदा मोरि सकै को टारी॥
नाम बकासुर दैत्य जु आहै। प्रतिदिन सो मानुषबलि चाहै॥
एकचक्र नगरी कर राजा। मानुष एक खात नित साजा॥
वर्ष पांचमा यक घर परै। ता घरको नर भक्षण करै॥
इक मनुष्यको चहै अहारा। सो आपद है आजु हमारा॥
मोल लेनको शक्तिहि नाहीं। यह चरित्त होवै गृह माहीं॥

इस्त्री पुत्र पुत्रि घर अहै। काहि देउँ रोवत द्विज कहै॥
जो सब जाई नगर भुवारा। चारिउ जनको करहि अहारा॥
भागे तीन लोक नहिं जाऊं। यहि विचारमहँ दुःखहि पाऊं॥
सुनि कै कुन्ती सुतपहँ जाई। भीमादिक जहँ हैं सब भाई॥

तब कुन्ती कह विप्र सुनु, अमृत बचन सुधार।
नगर तुम्हारे रहतहै, है तौ धर्म्म हमार॥

एक पुत्र घर कन्या एका। तुम दोउ प्राणी कहे विवेका॥
पांच पुत्र बल अहै हमारा। तहँ तौ करौं तोर उपकारा॥
भीम नाम जो सुत है मोरा। देखा नयनन तरकर जोरा॥
मारेउ दैत्य एक बल धारी। सोई पुत्र मोर बल भारी॥
कुन्ती धीर विप्र कहँ दीन्हा। आइ भीम ते वैसे कीन्हा॥
सुनत भीम भा काल समाना। अबहिं बकासुर तजिहै प्राना॥
मारि बकासुर करौं निपाता। भाख्यो भीम सत्य यह बाता॥
सब लोगनकर करब उधारा। तबहिं वृकोदर नाम हमारा॥
भोजन कछुक देहु मोहि माता। मारि बकासुर करब निपाता॥

करि भोजन अरु अन्न कछु बांधि लयो कसि फेंट।
चरवण करत चले तब करन दैत्य सों भेंट॥

चला चबात तहांते जाई। अरे बकासुर खासि न आई॥
खान सकै तो खासि न मोही। जेहिते मरन बना अब तोही॥
यहै हांक दै भोजन करहीं। सुनतै क्रोध बकासुर धरही॥
ब्राह्मणि आनि अन्न कछु दीन्हा। भीमसेन तब भोजन कीन्हा॥

मारि हँकारि जहां वकराई। सुनतहि क्रोध वकासुर धाई॥
चला वकासुर क्रोधित अयना। देखि भीमको अपने नयना॥

भोजन करते ठाढ़तहँ, देखा दैत्य प्रकास।
क्रोधवंत तव भाष्यऊ, रूप वर्णि नहिं जास॥

देखत दैत्य करत उपहासा। मनमहं परम क्रोध परकासा॥
दूनौं हाथ देरिकर मारा। करेउ न शङ्का पवनकुमारा।
धाय दैत्य तव गो लपटाई। एक चपेटा जाय लगाई॥
खातहि अन्न वृकोदर वीरा। वकासुरहिं तव धरेउ शरीरा॥
करिकै अचमन भीम सुजाना। वाम हस्त ते गह्यो निदाना॥
तव फटकारि दैत्यकहं दीन्हा। उठिकै कोप महावल कीन्हा॥

वृक्ष एक लै धावा महावीर बलधीर।
भीम गह्यो तरु एक तव रच्यो युद्ध गम्भीर॥

वृक्षहि वृक्ष निवारण भयऊ। महाक्रोध तव दानव ठयऊ।
वृक्ष उखारि एक कर लयऊ। दैत्यके मस्तकसों पुनि दयऊ॥
तवहिं वकासुर वृक्ष उखारा। महाक्रोध करि भीमहिं मारा॥
वृक्ष वृक्ष ते निरफल जाई। महायुद्ध प्रकटत भो आई॥
तव फिरि मल्लयुद्ध दोउ ठाना। उठ्यो गर्द लोपित भे भाना॥
हाथ हाथ उर उर लपटाना। महामार नहिं जात वखाना॥
ठोकत जांघ वजावत तारी। पहिरत काछ भिरत संभारी॥
नगर लोग सव अचरज माना। भिरे वीर दोउ मेरु समाना॥
पीछे भीम हु उठे रिसाई। पकर्यो तवै वकासुर धाई॥

पीठि उपर जङ्घा दियो भारा। धरि ग्रीशा तव भूमि पछारा॥
मुखते रुधिर धार बहिराना। परा भूमिमें छाँड़ेउ प्राना॥
मारि बकासुर भीम भुवारा। सो द्विजकर आपदा उधारा॥

मारा भीम बकासुरहि, द्विज हरष्यो मनमाह।
कुन्ती परमानन्द भै, सुनो बात नरनाह॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२॥

हर्षिगात द्विज आशिष दीन्हा। पूजेउ भुजा हर्ष मन कीन्हा॥
मारि बकासुर भेटयउ भाई। कुन्ती चरण भीम परे जाई॥
रहे तहाँ पुनि हर्षित गाता। सुनु जनमेजय कुलकीबाता॥
तबै व्यास मुनि आये तहां। चक्र नगर पाण्डवहैं जहां॥
पांडव सबै कीन्ह परणामा। मुनिसों कह पूरे मन कामा॥
आसन दीन्ह कीन विश्रामा। तब बोले बच व्यास ललामा॥
पांचौ बन्धुन कहत बुझाई। कन्या एक अहै सुनु राई॥
बड़ तप करि शङ्कर आराधे। नृपन विजय बर इच्छा बांधे॥
महादेव सेवा मन लाये। तुष्टवंत गिरिजापति आये॥
मांगु मांगु बोलत गंगाधर। हर्षित कन्या माग्यो तब बर॥

पति पति देवहु वचन कहि, मांगे पांचौ बार।
भुवन विजय वर शंकरहि, पूरण आश हमार॥

तुष्टवंत शंकर तब कहहीं। जो तुम्हरे मन इच्छा अहहीं॥

पांचौ पति शुभ होइ तुम्हारा। भुवन विजय जीतहिं संसारा॥
सुनिकै बिलखि वदन भै वारी। तव शंकर ने कहा बिचारी॥
पति नहिं दीन कलंक लगाये। फल शंकर पूजा वर पाये॥
शैलसुता तव अरथ सुनाई। पूर्व्वजन्मको कथा बताई॥
तुव पतिते कुरु होव संहारा। पुहुमीकेर उतारव भारा॥
पुरवै शाप केर फल पाये। पाछे शङ्कर वचन सुनाये॥
तुव पति कौरव वंश संहारा। यह वर शङ्कर दीन्ह उदारा॥
द्रौपदराज केर सो वारी। व्यास कहैं यह भेद विचारी॥
दोय बन्धु तासू के अहैं। ताका भेद व्यास मुनि कहैं॥
धृष्टद्युम्न द्रोणको मारै। शीखण्डी भीषम संहारै॥
यहि प्रकार ते व्यास बुझाई। सुनत चले जहं पांचौ भाई॥

तीन ग्रामके निकट महं सबै रहे तब जाय।
यह उपदेश व्यास दै गये महावन राय॥

सुनिकै पञ्चबन्धु मनभाये। जोइ व्यास उपदेश बताये॥
हर्षित चले परम सुख पाई। बन बन माह चले सुनुराई॥
कुन्ती मातु सङ्गमहं जाई। व्यास-उद्देश हृदयमहं ध्याई॥
चले देश पञ्चाल-उदेशा। विपिनमाहं तब कीन्ह प्रवेशा॥
तपोरूप हैं पांचो भाई। कुन्ती मातु सङ्गही जाई॥

तापस वन पाण्डव चले, कुन्ती माता संग।
अमित देश वन उपवन, देखत चले सुसङ्ग॥

चलत फिरत आये पुनि तहाँ। मणिपुर ग्राम एक है जहाँ।

तहं गन्धर्व्व केर अस्थाना । चित्तरथहि विश्रामहि जाना ॥
तासु रहस्य कथा सुनि राई । चित्ताङ्गद तेहि कन्या जाई ॥
निर्त्तत रहे गर्व्व तेहि कीन्हीं । तबै चित्तरथ शाप सुदीन्ही ॥
ताल भङ्ग हमहीं दुख भारी । ग्राह होसि ता कारण बारी ॥
ताते ग्राहक भई सो नारी । रहत तहां सरवर मझारी ॥
पांच बन्धु कुन्ती महतारी । तासु नगर पहुंचे अनुसारी ॥
चारौ बान्धव इत उत जाहीं । भिक्षा हेतु नगरके माहीं ॥
पारथ गे नहानके काजा । ग्राह रहै सो सर सुन राजा ॥
पारथ सरवर प्रविशे जाई । सोई ग्राह चरण गह्यो आई ॥

पूर्व्व शाप परसंगते, मोक्ष कहै तब ताहि ।
पारथके पग पर्शते, शाप सिन्धु तरि जाहि ॥

दिव्य रूप सो नारी भयऊ । पारथ पाहिं विनय तब कियऊ ॥
ताते पारथ पद गहि आई । तुरतहि मुक्त शाप सों पाई ॥
पूरव शाप पिताकी पाई । भा उधार तुम परशि गुसांई ॥
ताते हमहु सत्य करि जाना । तुम पारथ जानत परमाना ।
मैं तुव पद छांड़ौं अब नाहीं । चलौ हमारे पितुके पाहीं ॥
मैं तुव दासी पारथ जानौ । कपटहेतु तुम जनि भय मानौ ॥
पारथ कहै सुनौ वरनारी । जो तुम आशा करौ हमारी ॥
याही नगर रहौ वर नारी । तो पुनि पैहो दरश हमारी ॥
यहि प्रकार धीरज जब दीन्हा । मानि वचन तब अप्सर लीन्हा ॥

करिस्नान तब पार्थ जू, गये तुरत निजवास।
पांचौ बान्धव तहं रहैं, प्रात चले परकास॥

चित्राङ्गद तब भई उधारा। पांच पाण्डवा तब पगुधारा॥
ब्राह्मण रूप चले तौ आई। नाना देश सो देखत जाई॥
मांगत खात चले तौ ताहां। पांचल देश देश है जाहां॥
चलतहिं देशनिकट तब गयऊ। महाहुलास चित्तमहं भयऊ॥
कृष्णदेव द्वारावति अहैं। मनमें बहुत विचारत रहैं।
द्रौपद राजा केरि कुमारी। शङ्कर पुजि पायो वर भारी।
इच्छा वर जो मांगहिं लीन्हा। पांच पतिन वर शङ्कर दीन्हा॥
ता कारण हरि करैं विचारा। पांच बन्धु हैं पाण्डु कुमारा॥
कुन्ती संग कहां धौं अहैं। मनहींमन श्रीपति तौ कहैं॥
कन्याका शङ्कर वर अहैं। ता कारण हरि शोचत रहैं॥
ई कन्याकै पति जो होई। सकल कौरवा मारै सोई॥
पूरुब शाप भवानी पाई। ताते पांच पतिहि निरमाई॥

धर्म्मराज अरु पार्थ जो, भीमसेन बलवीर।
नकुलरुसहदेवकुन्तिका, कौने बन केहि तीर॥

सब जानत हैं अन्तर्य्यामी। भक्तहेतु जन्मे जगस्वामी॥
यहि प्रकार शोचत भगवाना। कुरुदलपाप पहाड़ बखाना॥
दुष्ट मनुष्य जन्म जो पावैं। साधुन कष्ट सदा मन भावैं॥
ऐसे श्रीपति करैं विचारा। मारत दुष्ट सन्त प्रतिपारा॥
मोर भक्त जन सङ्कट पावै। ताते मन उद्वेग जनावै॥

श्रीपति तबै गरुड़ हंकारा। तासों कहते नन्ददुलारा॥
भक्त मोर जो पाँचौ भाई। कौने वन हैं देखहु जाई॥
भेंट होइ तौ कहि सब वाता। द्रौपदकन्या चरित सख्याता॥
पञ्चलदेश रहौ तुम जाई। तहाँ स्वयम्बर होई भाई॥
कोइ स्वयम्बर जीतिहि नाहीं। तव पारथ जीतिहि वह ताहीं॥
सब राजासो अइहैं ताहां। द्रौपदनगर स्वयम्बर जाहां॥
दुष्ट लोग जानै नहिं पावैं। जाते मन उद्वेग बढ़ावैं॥
भाखे मन मत करो खभारा। मङ्गल सकल है साधु तुम्हारा॥
साधु कष्ट दुष्टहि अभिलाषा। शुष्टवन्त देवन तब भाखा॥

कन्या तासु अनूपहै, सब सों मङ्गलदाय।
भाषु जाय विनता सुत, पांचबन्धुकेठाय॥

गरुड़ कीन वेगिय परणामा। आज्ञा पाय चलेउ तेहि ग्रामा॥
वन बन सब सो खोजत जाई। नाना देशरु उपवन आई॥
पांचौपाण्डव कहँ नहिं पाये। खोजत गरुड़ अनेकन ठांये॥
इतही धर्महि राज बखाना। चारहु बन्धु हैं अग्नि समाना॥
पूर्व्व व्यास जो कहा विचारी। पञ्चल देश की करहु तयारी॥
ब्राह्मण रूप रहतहैं ताहाँ। पञ्चलदेश नगरके माहाँ॥
हमरे श्रीपति अहै सहाई। कारण कौन शोचिये भाई॥
सबै जगत के तारण हारा। सन्त तारि दानव संहारा॥
धर्म्मराज की वार्ता सुनी। चारों वन्धुन मनमहँ गुनी॥
पांच वन्धु माता सङ्ग लीन्हें। जहँ मन चहै तहाँ शुभ कीन्हें॥

खोजत गरुड़ गये तव तहां । पांच पण्ड अरु कुन्ती जहां ॥
देखत धर्म्मराज हर्षाना । मानहु दरश दये भगवाना ॥
क्षेम कुशल श्रीकृष्णक सुनै । परम हर्ष आनन्दित गुनै ॥
तव खगपति यह कह्यो सन्देशा । सुना सँदेश सु धर्म्मनरेशा ॥
गरुड़ मिले यहि अन्तर आई । पाण्डवपांहि कहत समुझाई ॥

श्रीपति कहेउ विचारिकै, सुनौ धर्म्मके राज ।
पञ्चालदेश नृपकन्यका, तासु स्वयम्बर काज ॥

द्रुपदराजघर द्रौपद वारी । तहां स्वयम्बर होइहै भारी ॥
ताते श्रीपति हमहिं पठावा । सो सब बातमैं तुम्हैं सुनावा ॥
सो कन्या पारथको वरै । कर्म्म लिखा सो कैसे टरै ॥
ताते तुम अब चलिये ताहां । पाञ्चल देश द्रौपदी जाहां ॥

कृष्ण संदेशते हर्षित, धर्म्मराज सुनि पाव ।
भक्तिवश्य हरि जानेउ, उपजेउ हर्ष सुभाव ॥

यह कहि गरुड़ तुरन्तहि गयऊ । धर्म्मराज हर्षित मनभयऊ ॥
सुनि सन्देश चले अतुराई । कुन्ती सह वे पांचौ भाई ॥
पाञ्चलदेश पाण्डवा जाहां । दक्षिण दिशा नगर के माहां ॥
तापसरूप रहे तहँ जाई । भीख मांगि कै दिवस गवांई ॥

तहां रहे सब पाण्डवा, तप स्वरूप धरि भेश ।
यहि प्रकारसे पाण्डवा, रहते पञ्चल देश ॥

सबतो दरशन चरण सम्हारे । आरतिभञ्जन कृष्ण हमारे ॥
दीनबन्धु हैं हरि भगवाना । जाके नाम होव पतित्राणा ॥

सब दिन सन्त हेतु तनुधारी। देत मारि सन्तनकहं तारी॥
हरिचरणन कहँ ध्यावहि ताहां। रहे नगर द्रौपदके माहां॥
द्रोपद राजा करै विचारा। कन्या गृह जो अहै हमारा॥
सो तो देवन कह्यो पुकारी। पारथको वरिहै यह नारी॥

लाक्षागृहमें ते दहेउ, मेरे मन अन्देश।
देव वाक्य मिथ्या नहीं, करिहौं तासु उद्देश॥

तब राजा पूछत है भेऊ। सुत द्रौपदको कैसे भयेऊ॥
जैसा उपजा यादव नाऊं। ते दूनौं नृप द्रौपद ठाऊं॥
पूर्व्व यज्ञ राजा तप कीन्हा। ते दोऊ मुनि आहुति दीन्हा॥
अग्निकुण्ड में जन्मेउ बारा। धृष्टद्युम्न शिखण्डि कुमारा॥
नाम द्रौपदी सो निर्मयऊ। जन्मै अन्म कन्याको भयऊ॥
वेद वचन ते कन्या भयऊ। वेदन स्वर्ग वाणितौ कियऊ॥
यह कन्या ते कुरुबल नाशा। नभवाणी देवन परकाशा॥
यहिके भर्ता अर्ज्जुन होई। जाते कुरुवंशहि नशि सोई॥
सुरवाणी जब यह तब सुनी। पुत्र ते मृत्यु होइहै गुनी॥
द्रोणाचार्य है जाकर नाऊं। धृष्टदुम्न तेहिप्राण नशाऊं॥
यहै बात पूरव तौ सुनी। द्रुपदराज तब मन में गुनी॥

लाख भवन में दाह सुनि, मन में करै विचार।
देव वाक्य मिथ्या नहिं, पाण्डव हैं संसार॥

कैसेहु कै परिचय नहिं पाये। तवै स्वयम्बर भूप रचाये॥
देश देश तब खबरि पठाये। क्षत्री वीर भूप सब आये॥

धनुपयज्ञ जब रच्यउ भुवारा। जाको मानुष चढ़ेउ न पारा॥
अति विस्तारिक कुण्ड खनाये। तेल कड़ाहे बीच भराये॥
ताके तरे हुताशन लागी। जाको देखि वीरता भागी॥
गाड़ा खम्भ वज्र कर ताहा। ऊपर खम्भ मच्छ कर आहा॥
हीराकनि के नयन बनाये। ताके तरे सो चक्र भ्रमाये॥
निशि दिनसो फिरतो विकरारा। देखत तजा भर्म संसारा॥
जो कोऊ यह धनुष चढ़ाई। वेधत राहु बाणते आई॥
मीन नयन में वेधहि बाना। सो कन्या पावहि परमाना॥

यहि यन्त्र निर्माण करि, पठवा जगत सन्देश।
जहां जौन नरनाह हैं, क्षत्रिय जो जेहि देश॥

सावधान होय सुनहु नरेशा। देश देश पठये सन्देशा॥
धनुष चढ़ाय खरग भौ पाऊ। मीन नयनमें मारे घाऊ॥
सो कन्या पावै यह कोई। चारो वरण होय किन सोई॥
यहि मन्त्र मनमहं ठहराई। द्रौपद राजा रच्यो उपाई॥
देश देशके चली अहई। न्योते राजा द्रौपद चहई॥

यहि मन्त्र द्रौपद करो, पांच पाण्डु उद्देश।
देश देश यह वारता, दूत करे परवेश॥

सुनु राजा अब यह मन लाई। देशन देश दूत तव जाई॥
दुर्योधन बान्धव शत भाई। द्वारावती कृष्णपहं जाई॥
सुरसरराज कलिङ्ग भुवारा। चित्रसेन राजा विस्तारा॥
औरो देश अनेक भुवारा। सब तो जान राव विस्तारा॥

देशन देश दूत फिरि आये । पाछे राजा वीर सिधाये ॥
दल साजे अरु किये सिंगारा । छत्रपती सब चलेउ भुवारा ॥
दुरयोधन कौरव सौ भाई । कर्ण सुशर्मा जेतिक राई ॥
चित्रसेन कलिङ्ग नरेशा । औरो भूप अमित परवेशा ॥
छप्पन कोटि पद्मदल आई । चल वल देव और पर राई ॥
शाल्यऽनुशाल्य आदि जे राऊ । द्रौपदपुर आये सब भाऊ ॥

एक एक सब राजा, दलबल सङ्गहि आय ।
चले बहुत गर्वते, द्रौपदपुर कहं जाय ॥

सब कर आदर राजा कीन्हे । इच्छा भोजन सब कहं दीन्हे ॥
सब जन बैठे सभा बनाई । नानारूप वरणि नहिं जाई ॥
द्विज सबहीके सङ्गहि माहां । पांचो पाण्डव बैठे ताहां ॥
तब द्रौपद नृप वोलन लागे । सबै भूप तन्नीके आगे ॥
राजसभा बैठे हैं जहां । तापसरूप पाण्डु हैं तहां ॥
बैठि सभा सब साज बनाई । नानारूप बरणि नहिं जाई ॥
कन्या सब शृङ्गार तब कीन्हा । हाथमाहिं जयमाला लीन्हा ॥
सब राजनको कन्यहि देखा । भूप अनूप जात नहिं देखा ॥
सबकहं देखि द्रौपदी नयना । धृष्टद्युम्न बोलेउ तब वयना ॥
राहु बेध जाके बल होई । बरि है द्रौपदि कन्या सोई ॥
यह कहिके द्रौपदिहि बुझाई । चीन्हौं सब राजागण जाई ॥
कुरुपति करण दुशासन अहई । विक्रमवेर कुवेर तौ कहई ॥
जहां सुशर्मा भूपति भारो । चित्रसेन वीरहु बलधारी ॥

एक एक सब राजन, देखा कन्या ताहि।
महावीर पुरुषारथी, बैठ सभाके मांहिं॥

कन्या रूपते मोह भुवारा। आप आपुको करै शृंगारा॥
सुर आये सब चढ़े विमाना। यदुवंशी तहँ कौन पयाना॥
हलधर और प्रद्युमन वीरा। श्रीकृष्ण अनिरुद्ध गँभीरा॥
देव दुन्दुभी बाजत बाजा। अंतरिच्छ देवन रसकाजा॥
महावीर राजा हैं जेते। छत्री वीर पराक्रम तेते॥
तब कुरुनाथ शल्य अनुसारा। अश्वत्थामा आये भुवारा॥
अलिंग कलिंग के देश भुवारा। भोजवंश वीरन पगुधारा॥
पुत्र रु पौत्र वीर यदुवंशी। एकै एक करत पर हंसी॥
धनुष माहँ गुण देनके काजा। भये समर्थ न एकौ राजा॥
चक्र सुदर्शन कृष्ण पवाँरा। माया लोप लखैको पारा॥

चक्रराय प्रत्यच्छक, फिरता है दिन सोय।
राहु वेध भूपति करौ, नहिं समर्थ जग कोय॥

तब भीषम बोले कहँ लागे। धृष्टद्युम्न कुंवर के आगे॥
हमतो व्याह करब नहिं भाई। पूरब शपथ कीन्ह हम राई॥
हमहिं जो लखिकै छेदन करई। कुरुपति को कन्या सो वरई॥
यह कहिकै तब शारंग लीन्हों। चरणभारते गुणबहु दीन्हों॥
तबहि शिखण्डी दरशन दीन्हों। महा खेद भीषम मन कीन्हों॥
जबहीं लखा शिखंडि कुमारा। तबहीं धनुष हाथ ते डारा॥

गुण उतारि तुरतहिं सो डारा । देखि शिखण्डी भीषम हारा ॥
द्रोणाचार्य कोपि उठि जबहीं । भीषम वीर हारि गे तबहीं ॥
करि प्राक्रम तब धनुष चढ़ाये । बाण हाथ तब तुरत चलाये ॥
चल्यो सु बाण तेज गति धाई । लाग चक्रमो परो भु आई ॥

लज्जित भे तब द्रोण, कुरु, हारे सर्व भुवार ।
सब राजा लज्जित भये, द्रौपद मन खम्भार ॥

पारथ तपोरूप तहँ रहे । देखा हारि भूप सब गहे ॥
द्विज समान ते पारथ आये । सब द्विज तौ परिहास मचाये ॥
यक द्विज कहा जातहो काहा । हारे बीर महाबल माहा ॥
महाबीर न्टप चत्री हारे । कन्या लाभ विप्र पगु धारे ॥
सुता देखि द्विज बाउर भयऊ । यह कहि द्विज बैठारन लयऊ ॥
गहिकै भुज विप्रन बैठारा । बीर महाबल बैठ न पारा ॥
पारथ उठे फेरि द्विज गह्यऊ । धर्मपुत्र तब द्विजसन कह्यऊ ॥
जानि पराक्रम जाते तहां । बेधी राहु आपन बल महां ॥
आपन तेज आप सब जाना । कारण कौन करों परमाना ॥
सुनिकै विप्र छांड़ि तब दीना । पहुँच्यो जहँा यन्त्र है मीना ॥

कहत वीर सब राजहू, यों गुण शारँग लाव ।
तौ यह विप्र होय नहिं चत्रिय महा स्वभाव* ॥

राजा करैं सबै उपहासा । कर्म्म असम्भव विप्र प्रकासा ॥
पारथ दीखे श्रीभगवाना । चक्रक तेज हरणकर जाना ॥

---

* हानि लाभ जानत नहीं द्विजका यही स्वभाव ।

पारथ तब भुज धनुष चढ़ाये। अलख पञ्चसर गुरुते पाये॥
लाग बाण क्रोध तब होई। मीन नयनमें वेधेउ सोई॥
राहु वेध पारथ तब कीन्हा। हर्षित इन्द्र दुन्दुभी दीन्हा॥
देखि विप्र हर्षित सुख पाये। वेदध्वनि आनन्दते लाये॥
तबै भुवार देखि कहैं बाता। सबको मानमथ्यो द्विजज्ञाता॥
गये पार सर निकसे जबहीं। झूठ मूठ बोले सब तबहीं॥
जान पाय तब पारथ वीरा। दूजे बाण गहे रण धीरा॥
मारे मीन नयनमें बाना। अच्छे भर पारथ सर जाना॥
घोर शस्त्र पारथ तब मारा। द्रुपदसुता जयमाला डारा॥
देखत विप्र हर्ष सब कीन्हे। वेदध्वनि करिवे सब लीन्हे॥

परम हर्ष सब ब्राह्मण, वेद उचारन हेत।
जयध्वनि शब्द करत सब, क्षत्रिय भये सचेत॥

देखत सब क्षत्रिय कह बाता। ब्राह्मण नहिं क्षत्रिय सख्याता॥
अस्त्र गहे क्षत्रिय परचारा। भय नहि कीन्हे मनहिं मझारा॥
द्विजको विधि क्षत्रिय अपमाना। एक मतै भे भूप अयाना॥
द्रुपदहिं मारौ नगर उजारौ। कन्या पावक माहीं डारौ॥
राज्य देश तो देहु बहाई। पै इक विप्र वधो नहि जाई॥

यह विचारिकै भूप सब, द्रुपद गुरूपर धाव।
पार्थ राहु को वेधेऊ, क्षत्रिय लज्जा पाव॥

तब राजा शरणों द्विज आवा। पारथ धनुष हाथ पर भावा॥
अस्त्र गहे राजा परधारा। अभय कीन्ह तहँ मन संझारा॥

कर्ण वीर धनुषहि लै धाये । दुर्योधन चक्रहि ते आये ॥
अर्ज्जुन कर्णहि पूर्व विरोधा । कर्ण वीर बल अर्ज्जुन योधा ॥
तपके तेज विप्र रण ठाना । चेति सूर्य्यसुत तब पछिताना ॥
जब देखा यह तौ कुरु राजन । लज्जा भई वीरके काजन ॥
दुस्सासन भगदत्त भुवारा । जयद्रथ सोमदत्त वरियारा ॥
जरासन्ध औरौ शिशुपाला । शल्यावधि जेतक भूपाला ॥
भूरिश्रवा सुशर्मा वीरा । अलिँग कलिँगके हैं रणधीरा ॥
शैल्या शल्य और चितकरना । काशीपति विराटपुर बरना ॥

अंशुमान अरु कीचक, बलि अरु जितक भुवार ।
सकल वीर सब कोपेउ, यह द्विजकर संहार ॥

शेलै शक्ति बाण की धारा । मुद्गर खड्ग अस्त्र परिहारा ॥
असंख्य अस्त्र द्विजपर सब वर्षैं । महाराज दुर्योधन हर्षैं ॥
घेरि वीर पारथ सब पेखी । बाणहिं बाण परत सब देखी ॥
बरषें बाण असंख्य अपारा । माया कीन्हेउ देव भुवारा ॥
अलखित दुइ गुण ताहाँ आये । सो पारथ सारग मनलाये ॥
परम हर्ष भे पाण्डव नन्दन । बरषत बाण बाणते खण्डन ॥
वर्षत बाणन भो अँधियारा । प्रलयकाल प्रकटेउ संसारा ॥
पारथ बाण छिपानेउ भाना । गज अनेकके मस्तक बाना ॥
रथ अरु हय पैदल बहु मारा । अर्ज्जुन एक अनेक भुवारा ॥
मारे वहु पैदल असवारा । महायुद्ध परकट सन्हारा ॥

बहुत अस्त्र तब बरषत, मानो सावनधार ।
अर्ज्जुन वीर अकेलो, क्षत्रिय बहुत भुवार ॥

पवनके पुत्र वृक्ष लै धाये । नकुल और सहदेव जो आये ॥
दोउ पुत्रन सँग द्रौपद राजा । महायुद्ध खेतन महँ साजा ॥
भीम तौ युद्ध शल्यते ठाना । रथते शल्य परा मैदाना ॥
मातुलराज शल्य कहँ जाना । छाँड़े ताहि वधे नहिं प्राना ॥
हाहा करि सब ब्राह्मण धाये । दशौं दिशामें शोरमचाये ॥
कर्ण वीर तब बोल्यो बाता । तपको हेतु द्विजन के ताता ॥
सुनि सब राजा भये सक्रोधा । दशों दिशा तब करें विरोधा ॥
महा मारु कीन्ही प्रभुताई । दशों दिशाते छेड़ा जाई ॥
दशो दिशाते वर्षत बाना । महायुद्ध नहिं जात बखाना ॥
जौन दिशाको पारथ ताकै । क्रोधवन्त वीरन रण हाँकै ॥

जौनी दिशि राजा सबै, क्षत्री वीर अपार ।
भार होत जेहि दिश सबै, तेहिदिशिपरतपुकार ॥

क्षत्री छेकि लगे शर मारन । सौते सहस सहस्र हजारन ॥
बरषत बाण वृन्दगण घोरा । पारथ बाण हाथ तब जोरा ॥
पारथ बाण चहूँ दिशि मारें । यूथ यूथ क्षत्री सँहारे ॥
जौनि दिशा पारथ शर मारें । भागें वीर न कोउ संभारे ॥
जौनि दिशा हेरें जहँ जोई । सम्मुख रणमहँ रहै न कोई ॥
विप्र मुनीश हते जहँ जेते । करत विचार कहैं सब तेते ॥
जयजय शब्द विप्र सब कीन्हा । दिशनिविजयसबबोलै लीन्हा ॥

दशौ दिशा पारथ के बाना। छत्ती न्टपति सवै भहराना ॥
भागेउ दल पैदल असवारा। पारथ विजय कीन्ह तेहिवारा ॥

जीतिभई द्विज कहत तब, विस्मय सवैसुवार ।
विप्र नाहि यह छत्ति है, न्टप सब करत विचार ॥

राजा सब तब करत बिचारा। नहीं विप्र छत्ती अवतारा ॥
दुर्योधन तब करै विचारा। छत्ती जानब येही वारा ॥
शकुनी पाहिं कहत अस बाता। कहियो जाइ विप्र सख्याता ॥
ब्राह्मणकुल तुम करौ विवाहा। छत्ती कुलै हेतु केहि चाहा ॥
धन सम्पति मनमानो लीजे। यह कन्या कुरुपतिको दीजै ॥
शकुनि गयो तब हाथ उठाई। पारथ पाहिं कहा समुझाई ॥
पारथ सुनी बात यह काना। क्रोध भयो तब कालसमाना ॥
भीमसेन तब मारण धाये। पारथ क्रोधित बात सुनाये ॥
राजा पाहिं कहौ तुम जाई। बात कहत लज्जा नहिं आई ॥
राहु बँधे समरथ नहिं भयऊ। छत्ती मर्म्म कहाँ तब रखऊ ॥

भानुमती जो रानि है, सोइ आनि मोहिं देहु ।
धन कुबेरको भवनसम, जो चाहौ सो लेहु ।

सो सुनि क्रोध भयो कुरुराऊ। महा मारु करने मन लाऊ ॥
कर्ण द्रोण दुश्शासनधाये। पै पारथ पै जीति न पाये ॥
महा मारु तिनहिंनिसों होई। बीच परे ब्राह्मण सव कोई ॥
कौरवदल सब मारेउ बाना। वर्षा भादौं मेघ समाना ॥
पारथ क्रोधित मारत है सर। होनलगी तब मार परस्पर ॥

पारथ बान हनै यहि रूपहिं। प्रलयकाल मानो यम भूपहिं॥
पारथ शरते दल भहराना। भागे चत्री वीर निदाना॥
कहै करण हँसिके तब बाता। देखौं कवन विप्र सख्याता॥
मारे बाण करण करि क्रोधा। महावीर अर्जुन है योधा॥
करणबाण जब पारथ जाना। क्रोधवन्त होय बाण सँधाना॥
बाण बाणते होत विनासा। ब्राह्मण शोर कर्‌यो चहुं पासा॥

मारु मारु करि पारथ, छाड़त बाण अनन्त।
कुरुदल सकल विहण्डेउ, जनु गज सिंह समन्त॥

महा मारु जब थिर नहिं होई। वीच वीच ब्राह्मण सब कोई॥
राजा सकल पराभव पाये। हारे वीर जो अस्त्र गंवाये॥
अस्त्रते हीन भये सब राऊ। करणकेर उर लागे घाऊ॥
काटे धनु गुन पारथ वीरा। कौरव सब भौ हीन शरीरा॥
कौरवदल भो सब अपमाना। सब चत्रिय राजा वहु जाना॥
आगे सब चत्रिय बल हारे। हरष भये सब विप्र निहारे॥
राजा सबै परम भय पाये। हारि वीर सब अस्त्र गँवाये॥
अस्त्रहि हीन भये सब राऊ। अपने अपने देश सिधाऊ॥
राजा सबहि देश तौ गयऊ। परमहर्ष सब पाण्डव भयऊ॥
द्विज स्वरूप हैं पांचो भाई। जीते हर्ष स्वयम्बर आई॥
द्रौपद राजा अचरज पाये। चत्रिय सब तौ मान गँवाये॥

जीति स्वयम्बर पाण्डवा, तब कन्या लै जाइ।
परम हर्ष पगु धारे, जहाँ रहति है माइ॥

कुम्भक नामक द्विज जो अहई। ताके गृह में कुन्ती रहई॥
द्रौपद राजा करत उपाई। भेद लेन कहँ पुत्र पठाई॥
धृष्टद्युम्न गुपित तौ जाई। देखत अचैं हेतु उपाई॥
पाँचौ बन्धु गये तब तहाँ। कुन्ती मातु बैठि है जहाँ॥
माता पाहिं कहा तब जाई। तव प्रसाद हम भिक्षा पाई॥
माता कह्यो भलो भो काजा। पांचौ बन्धु भोग कर राजा॥
पाछे पारथ भेद बताई। विजय नाम अरु कन्या पाई॥
विजयनाम सब द्विजन धराई। कुन्ती सुनत लाज तब आई॥
पुनि कुन्ती तौ करत बखाना। कर्म्मकोलिखा होतनहिं आना॥
वचन हमार न मिथ्या होई। पाँचौ बन्धु भोग कर सोई॥

यहि विधि पुत्री गोद करि, कुन्ती देवी ताह।
पाँच पती यहि कारण, सुनौ बचन नरनाह॥

धृष्टद्युम्न यह देखा ताहां। वह चरित्र सब कुन्ती पाहां॥
गुप्त भये देखा मन लाई। यहिं अन्तरहि कृष्ण तब आई॥
बहुत प्रकार हर्ष तब माना। पूजेउ चरण हर्ष भगवाना॥
बहु प्रकारते कृष्ण बुझाये। धीरज दै यदुपतिहु सिधाये॥
द्रौपद सुत देखेउ प्राक्रमा। जाइ पितासों भाष्यउ मर्मा॥
राजा सुनो हर्ष सब पाये। रथ चढ़ि तहँवाँ आपु सिधाये।
सुत सँग लै राजा तहँ जाई। पाण्डव कहँ सब देत बड़ाई॥
प्रोहित सहित घरहि लै आयो। परमहर्ष राजा तब पायो॥
राजा साज बहुत विस्तारा। दिये पाण्डको द्रुपदभुवारा॥

यहतो बात सुनत सख्याता। कर्ण कहै राजासों बाता॥
जेतक मन्त्र कहा तुम धीरा। एकहु मन्त्र होव नहिं वीरा॥
सजग रहैं वे पांचौ भाई। मारि न सकिहौ कोऊ पाई।
सुनतहि धृतराष्ट्रक अस कहई। कर्ण बात नीको तैं कहई॥
भीषम द्रोण विदुर बुलवाई। मन्त्र करो कछु आनउपाई॥
ऐसे सबै मन्त्र तब करहीं। एकै एक वचन अनुसरहीं॥
भीष्म कहेउ यह मन्त्र हमारा। जो मानो मम वचन भुवारा॥

जस धृतराष्ट्रक तुम अहौ तैसे पाण्डु हमार।
गन्धारी अरु कुन्तियक, सो मैं कहौं विचार॥

औ जैसे कुरुराज भुवारा। तैस युधिष्ठिर धर्मकमारा॥
अपन पुत्र औ पाण्डुकुमारा। इक समान ते जानु भुवारा।
जो राखौ मम वचन सनेहू। बांटि राज्य दूनौकहँ देहू॥
उनके क्रम सब राजा सांचे। महा महा आपद सों बांचे॥
केतक जीवन है जगमाहा। अयश जाइ लीजै नरनाहा॥
याहै मन्त्र द्रोण मन माना। कपट रूप धृतराष्ट्रक जाना॥
दुर्योधन कपटी परमाना। भीषम केर मन्त्र तब माना॥
धृतराष्ट्रक भाषे परमाना। आपु विदुर तुम करो पयाना॥
आनो जाइ कुन्ति कहँ साथा। बन्धुन सहित धर्मनरनाथा॥
पांचो बन्धु साथ लै आवो। हमरे वचन सो जाइ सुनावो॥

होकर हर्षित विदुर तब, तुरतहि कीन पयान।
जहां द्रुपद राजा अहैं, पहुंचे ताही थान॥

द्रुपदराजसों जाइ बखानो । धृतराष्ट्रक पठवा मोंहिं आनो ॥
अर्द्धराज्य देवै निज सोई । तब पाण्डवको अतिसुख होई ॥
सत्यबात तो विदुर बखाना । सो सुनि धर्म्मपुत्र सुखमाना ॥
द्रौपद बहुत बड़ाई कीन्हा । द्रुपदराजने आज्ञा दीन्हा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी लीन्हा । अहोभाग्य पांडवको चीन्हा ॥
पहुंचे जब निज देशहि जाई । धृतराष्ट्रक तब कीन उपाई ॥
भीषम द्रोण कर्ण बलबीरा । आगे पठये हर्ष शरीरा ॥
आगे होइ लेनेको आये । नगर लोग सब देखन धाये ॥
कुन्ती अन्धहि कीन प्रणामा । सब बन्धव पहुंचे निजधामा ॥

मिले धर्म्मसुत बन्धु भ्रात, बैठे सभा मँझार ।
प्रेम हर्ष भीषम तहां, कीन्ही प्रीति अपार ॥

तब धृतराष्ट्र कहा असि बाता । कुन्ती सहित सुनो सबभ्राता ॥
आधा राज देब हम राजा । इन्द्रप्रस्थ जहां लग साजा ॥
सो सुख भोग करौ तुम जाई । धृतराष्ट्रक तब कहेउ बुझाई ॥
राजा कहँ कीन्हयों परणामा । परम हर्ष कीन्हों तब यामा ॥
कुन्ती सहित द्रोपदी साथा । प्रेमहि हर्ष चले नरनाथा ॥
इन्द्रप्रस्थ में कीन्हयों थाना । रजधानी आपनि करिजाना ॥
सुभग शकुन करि भे तब राजा । आज्ञाभद्र तब बाजहिंबाजा
प्रेम हर्ष मन राजा भयऊ । सर्व्व कलेश नाश दुखगयऊ ॥
कृष्ण कृपाते दुख भे नासा । पाई राज्य भक्ति विश्वासा ॥

यहि प्रकार तब धर्मसुत, राजा तहँवां आइ।
वैशम्पायन महामुनि, तिनसों कहत बुझाइ॥
जैतापुरमहं गढ़वनवाये। पांचौ भाइ रहैं तहं जाये॥
राज करैं तहं धर्म नृपाला। पुत्रक भांति प्रजा प्रतिपाला॥
नगरक लोग सबै सुख पाये। धर्मक राज हर्ष मन भाये॥
घर घर परजा करहि अनन्दा। सतयुग राज भये हरिचन्दा॥
वैर व्याधि नगरहि नहिं कोई। मङ्गलचार घरहि घर होई॥
पूजहिं विप्र हृदय धरि ध्याना। जानि सुपात्र देहिं बहुदाना॥
द्विज अरु वैष्णव कृष्णस्वरूपा। पूजै राजा हर्ष अनूपा॥
हर्षित भये परम भगवाना। जनदुखहरनो जाको बाना॥
इष्टरु मित्र हर्ष तब पाये। पाण्डवपुत्र राजमहं आये॥
ऐसे राज्य युधिष्ठिर पाये। वैशम्पायन कथा सुनाये॥
पाण्डव कथा विजय यह धर्मनीति जग जानि।
साहस सत्य बसत जेहि जात पाप क्षय मानि॥
केतक दिवसराज्यतब कियऊ। एक दिना नारदमुनि गयऊ॥
राजा आगे कहैं बखानी। मन्त्रएक तुम सुनु नृपज्ञानी॥
तोहिं हेतु हम मन्त्र बखाना। सुनौ करौ हिरदयमा ज्ञाना॥
सुन्दऽपसुन्द हते दुइभाई। महावीर बल विक्रम राई॥
यक स्त्री तिन दुइ ते भाई। स्त्री हेतु विरोध उपाई॥
यहि कारण तब दोउ जुझारा। आपु आपु मैं भे संहारा॥
यक पत्नी तुम पांचौ भाई। ताकारण हम कहत बुझाई॥

जासु विरोध होइ नहिं राऊ। सो राजा तुम करौ उपाऊ॥
द्रौपदिका प्रतिपाल दुराऊ। ताते होइ सबहि सुख भाऊ॥
ऐसा कहि नारद परिभाषा। दीन्हों सबै बांधि निर्माषा॥

नेम बाँधि मुनि दीन्हेऊ, कहा राउ सन बात।
जो कोइ यह लंघन करै, सुनो बचन नरनाथ॥

नेम उलंघन करै जु कोई। बारह वर्ष वास बन होई॥
यह कहिकै तब नारद जाई। पाचो बन्धु रहे तब राई॥
नेम समय द्रौपदिके साथा। आप अच्छतमें करै बिलासा॥
यक दिन राव युधिष्ठिर ठाऊ। द्रुपदसुता आई सति भाऊ॥
तहँा अस्त्र सब पारथ केरा। ऊच्चस्वर इक ब्राह्मण टेरा॥
पारथ पारथ करै पुकारा। पारथ सबहै काज तुम्हारा॥
तस्कर एक मोर धन लीन्हों। जात चला सो म कहि दीन्हों॥
सुनि पारथ तब आतुर भयऊ। अस्त्रकार्य तुरतहि तब गयऊ॥
नारद बचन कि सुधि नहिं राहा। गये द्रौपदी राजा जाहा॥
आतुर भे वहि मन्दिर जाई। देखत पारथ लज्जा पाई॥

लज्जा पाइ अस्त्रगहि पारथ आयो धाय।
हतेउ तुरत तस्कर तहाँ, द्विजधन लीन्ह छुड़ाय॥

द्विजहि धीर दै पारथ आये। धर्मराज कहँ बात सुनाये॥
हम तो जाब तीर्थके काजा। विस्मय भयउ सुनेउ तब राजा॥
पारथ कहेउ मुनिहि जो भाखा। बारह वर्ष वनहि अभिलाखा॥
यह कहिकै पारथ तब जाई। देश देश चलि वेष बनाई॥

संन्यासी कर रूप बनाई। पारथ बनोबास तब जाई॥
नाना तीरथ देख्यो ताहाँ। नाना वन उपवन के माहाँ॥
तब पारथ के मनसा आई। अनन्त नागको देखहुँ जाई॥
भोगवती गङ्गा है जहाँ। तहँ अस्नानकरौं अस कहाँ॥
यह विचारि पाताल सिधाये। शेषनाग के दरशन पाये॥
भोगवती महँ करि अस्नाना। शेषैनाग परम सुखमाना॥
प्रेमक भक्त प्रवल धनुधारी। इन्द्रकुमार अमित गुणभारी॥
अजयन मृत्य लोकमा आही। कन्या मोरि उन्हीं पै आही॥
नाम उलूपी कन्या रहै। सो पारथ को देनो चहै॥
यह विचारि कै पारथ पाही। कन्या सोतो दीन्हयो व्याही॥
प्रेम हर्ष तब पारथ भयऊ। शेषनाग कन्या को दयऊ॥

संग कन्या लै पारथ, मृत्य लोक तब आय।
सोइ उलूपी नारिहै, प्रेम हर्ष मन पाय॥

शेष दई तब उलुपी नामा। सँग लै आये मणिपुर ग्रामा॥
पूर्व समय चित्राङ्गद नारी। मणिपुर माँह अहै सो नारी॥
सङ्ग उलूपी आये तहा। चित्राङ्गद युवती है जहाँ॥
चित्राङ्गद विवाह तब कीन्हा। गजरथ दान बहुत तब दीन्हा॥
रहैं तहा पारथ सुख पाई। चित्राङ्गद उलुपी सँग लाई॥
केतिक वर्ष उलपी साथा। उपवनमा तब हर्षित गाता॥
नागराज को उपवन रहै। पांच वृक्ष दाड़िमके अहै॥
पांचों पेड़ दिखाये जाई। उलुपी पाहि कहा समुझाई॥

जबहीं लगु हरि अन्तर रहैं। पारथ मर्म्म जगत में कहैं॥
मृत्यु समय पाँचौं तरु जरै। मृत्यु लोक जो पारथ मरै॥

यहै रहस्य परीक्षा, कहेउ उलूपी पाहि।
प्रेम हर्ष मन पारथ, रहते मणिपुर माहि॥

कछु दिन बीते यहि परकारा। चित्राङ्गद देह गर्भ सँचारा॥
गर्भ के माँह बास जबलयऊ। बभ्रुवहन उदरमें भयऊ॥
गर्भ बास नारी भय सोई। मन उदास पारथ तब होई॥
बारह बर्ष कहा बनवासा। सोतौ कीन्हेउ भोग विलासा॥
यह विचार पारथ मनलाये। मनको भेद न काहू पाये॥
बिना कहे तो पारथ गयऊ। पाछे तिया महादुख लयऊ॥
रोदन करै दुवौ तहँ नारी। पारथ गे वन हमहिं बिसारी॥
पारथ वनोवास कहँ गयऊ। चित्राङ्गदहि पुत्र तब भयऊ॥

बभ्रुवाहन नाम तेहि, प्रतिपाले मन लाइ।
बभ्रुवाहन राज भये, मणिपुर नगर उपाइ॥

पारथ गमन तीर्थ उपदेशा। नाना वन उपवन परवेशा॥
गौतम औ गोदावरि परशे। गङ्गासागर हर्षित दरशे॥
गया प्राग तौ परशे जाई। नैमिष दर्शन करेउ जु आई॥
मथुरा वृन्दावन तब देखा। यमुना नदि तब परशि विशेखा॥
चारौं दिशा भर्म्मना कियऊ। प्रदक्षिणा धरती को दयऊ॥
पारथ सब भरमे संसारा। संन्यासीके रूप सँभारा॥

जहँ लग तीरथ जगमें अहैं। देखा सब पारथ मुनि कहैं॥
परकट कीन्हेंउ तब संसारा। नारद वचनक हेत विचारा॥

तीरथ भर्म्म गमन किय, देखा अगणित देश।
नारद वचन के हेतु कहँ, पारथ सहेउ कलेश॥

इति चतुर्द्दश अध्याय॥ १४॥

वैशम्पायन कहत बखानी। सुनु जनमेजय नृप सज्ञानी॥
जहं लगि तीर्थ जगतमहं अहैं। देखे सब तीरथ मुनि कहैं॥
धर्म्मराज अन्देशा करई। पारथ हेतु तौ विस्मय धरई॥
कौन देशकहँ पारथ गयऊ। यहि चिन्ता में राजा भयऊ॥
पारथ देखा वन वन नाना। नारद वचन हेतु परमाना॥
पारथ तहां तो हर्षित जाही। जहां मुनी कौण्डिन्या आही॥
पारथ कहँ तब मुनि जो देखा। पूँछत रूप संन्यासी वेखा॥
कौन हेतु वनको पगु धारा। तब पारथ यह वचन उचारा॥
पांच बन्धु औ द्रुपदी रानी। नारद नेम करि दीन्हयो आनी॥
नेमोलंघन करै प्रकासा। बारह वर्ष जाइ वनवासा॥
एक दिना तौ धर्म्मभुवारा। द्रुपदी सङ्ग रहे सुवनारा॥
आरत नाद विप्र यक करई। मेरो धन तस्कर सब हरई॥
नारद वचन बिसरि तौ गयऊ। अस्त्र हेतु तब गृह में गयऊ॥
राजा देखत लज्जा पाये। राजा आपु तौ लाज लजाये॥

नारद वचन समझि मन माहा। तब हम तीरथ भर्मन चाहा॥
यहि कारण तब मुनिहिं बुझाई। पारथ तीरथ भर्मन जाई॥
नाना वन तो देखत जाई। वन उपवन अगनित सब ठाई॥
काश्मीर तब देखेउ जाई। नगरकोट रानीकि ठाई॥
औरौं तीरथ सकल तु देखा। पर्वत विपिन जात नहिं लेखा॥
रैवा पर्वत देखा जाई। तहँवां दर्श कृष्णाकर पाई॥
परम हर्ष तब पारथ भयऊ। श्रीपतिके पग बन्दन कियऊ॥
कृष्ण पार्थ को लाये ताहाँ। द्वारावती नगरके माहां॥

पारथ कहँ लै राखेऊ, प्रेमरु हर्ष अपार।
घरघर प्रति यदुवंशि हित, नितनित देत अहार॥

यकदिन तबै सुभद्रा देखी। बलदाऊ सन कहा विशेखी॥
काहत बात सुभद्रा ताहा। यह तौ वीर तपी नहिं आहा॥
काम स्वरूप तेज तनु तासू। प्रेम सदा हिरदय परकासू॥
कहत शेष ना जानहुँ ताहीं। प्रेमै सदा रहै मन माहीं॥
एकबार जो कौतुक होई। क्रीड़ा करहिं सखी सब कोई॥
चितै सुभद्रा तौ पारथहीं। प्रेमै सदा रहै मन मनहीं॥
तब सुभद्र पारथ पहिचाना। और भेद जानहिं भगवाना॥
और न जानत यादव कोई। पारथ हेतु सुभद्रा सोई॥
एकै बार सुभद्रा ताहाँ। चलि अस्नान चढ़ी रथमाहाँ॥
जौन द्वार पारथ यदुराई। तौने द्वार सुभद्रा जाई॥
पारथवीर बिलंब जनि लाऊ। वेगि आपने धाम सिधाऊ॥

पारथ धाइ चढ़्यो रथ जाई। लै के सुन्द्र चल्यो तव राई॥
कृष्ण आदि औरो यदु जेते। सजे युद्ध को क्रोधित तेते॥
पारथ रथ रोंका तव ताहीँ। मार्‍यो वाण तो यदु दलमाहीँ॥
तवै सुभद्रा कहत विचारी। मैं रथ हांकौं तुम करु मारी॥
तवहि सुभद्रा रथहि चलाये। पारथ वुन्द वाण वरषाये॥
वामे हाथ गहे धनु जाना। गहे चाप औ धनु सन्धाना॥
वायें हाथ चलावै वाना। महावीर नहिं जात वखाना॥
यक समान शर द्वै करे, देखा तव वलदेव।
हल मूशल तव हाथ लै, कोपि चले सुनु भेव॥
नारायण सेना तव साजा। यदुकुल मतो वाजने वाजा॥
क्रोधवन्त वलदेव भे जवहीं। आये कृष्ण वुझाये तवहीं॥
तपो रूप पारथ है भाई। मम आज्ञा कन्या लै जाई॥
कहि वलदेव तो वात वुझाई। मोहिं काहे नहिं वाल जनाई॥
अवै वोलावो पारथ भाई। करि विवाह तव सौंपहु साई॥
तव श्रीपति पारथहि वोलाये। कन्या लै पारथ तव आये॥
वेदके मतसे भयो विवाहा। हर्ष होइ वलदेव तो काहा॥
वड़ावीर पारथ हम जाना। दोऊ हाथ चलावत वाना॥
दोउकर शायक एक समाना। अति धनुधारी सव जगजाना॥
यहप्रकार पारथकी करनी। वारह वर्ष अन्त भौ धरनी॥
वारह वर्ष वास वन, ऐसे गये सिराइ।
लैके सुभद्रा पारथ, अपने गृह तव आइ॥

तौ पुनि निजदेशहि सो आये। नारि सुभद्रा सङ्गहि लाये॥
कृष्ण समेत राज्यको आये। प्रेम हर्ष आनन्द तब पाये।
एक समय श्रीकृष्ण हैं साथा। पारथ सङ्ग आदि नरनाथा॥
विप्र रूप पावक सख्याता। कही जो आइ सभामें बाता॥
सुनियो बात हमार विचारा। मरुत् नाम जो तहां भुवारा॥
बारह वर्ष यज्ञ तब कीन्हा। मुसलधार तिन आहुति दीन्हा॥
तेहि कारण व्याधी तनु भयेऊ। तब पावक ब्रह्मासन कहेऊ॥
ब्रह्मा कहै लोभ तैं कीन्हो। तेहि कारण व्याधी तैं लीन्हो॥
द्वापर होइ कृष्ण अवतारा। पारथ सन तुम्हार उद्धारा॥
ता कारण हम आये याही। हमरो नाथ निबेड़ा चाही॥

वाचा करौ तौ मांगौं, कहा वचन परमान।
तब हरि पारथ भाषहीं, कीजै सत्य बखान॥

कैसे होइ व्याधि तनु नाशा। सोई वचन करौ परकाशा॥
पावक कहि यह बात बखाना। इन्द्र केर आहें बगवाना॥
पशु पत्ती तरु हैं तह नाना। ताहि देहते व्याधि नशाना॥
बह्व वन दहै पाव जो साई। तौ हमरी तनु व्याधि नसाई॥
मन्दानल है हम संसारा। करो हमार यहै उपकारा॥
सुनियो कृष्ण धनञ्जय सोई। करि परतिज्ञा भाषत दोई॥
चलौ जाइ सो वनहिं जरैये। जातै आपु परम सुख पैये॥
गहिके अस्त्र चले पुनि ताहीं। नर नारायण दूनों आहीं॥
सो वन देखा नयनन जाई। मारे बाण बुन्द सम आई॥

शर पञ्जर वन ऊपर भयऊ। वन भीतर पावक निर्भयऊ॥

पावक वन माही लगी, सुरपति क्रोध अपार।
प्रलय कालके मेघ सब, आयउ वैर सम्भार॥

वर्षंसि नीर सबै वन तहाँ। पावक जरै खण्डि वन जहाँ॥
अन्धकार मेघन घनसाजा। अतिही क्रोधवन्त सुरराजा॥
एको बुन्द जल भेदत नाहीं। भे निशङ्क पावक वन खाहीं॥
पशु पची अरु तरुवर जेते। पावक सकल जराये तेते॥
जीव जन्तु सब करैं पुकारा। दानव दैत्य भयो सब छारा॥
मय दानव यक सुनहु राई। सो पारथपहँ विनती लाई॥
तुम्हरी शरण राखु नृप मोहीं। कबहुँक करब काज हम तोहीं॥
पारथ सुनेउँ हर्ष मन भारी। देहु छांड़ि भाषत वनवारी॥
पावक पाहि धनञ्जय भाखा। सो दानव जारतही राखा॥
पारथ की अस्तुति बहु ठाना। तुम पारथ दीन्हीं जिउदाना॥

पारथ हर्षित प्रेममन, पुलकित सबै शरीर।
खाण्डव वनदाहन करै, पावक प्रकट गम्भीर॥

धुर्मिनाम यक नागिनि रहै। सोई सदा खण्डिवन अहै॥
पावक जरै भागि सो जाई। तेज पुञ्ज आकाश उड़ाई॥
पारथ देखि बाण परिहारा। पंखकाटि पावक महँ डारा॥
सो जरि भस्मभई पलमाहीं। पावक सब खाण्डव वन दाही॥
प्रसन्नभे पावक परमाना। दीन्हेउ श्वेत वाहिनी नाना॥
महादेव आराधेउ जबही। वाहन श्वेत दिव्यरथ तबही॥

सर्वदेवता परसन होई। यक यक बर दीन्हेउ सब कोई॥
यह कहिके वैश्वानर जाई। गृह आये पारथ यदुराई॥
कछु दिन तहां रहे भगवाना। पुनि द्वारावति कीन पयाना॥
गये द्वारका श्री यदुबीरा। पाण्डु रहे सब हर्ष शरीरा॥

यहि प्रकार जनमेजय, तोर वंशगुणमान।
प्रेमकथा अद्भुत सुनहु, सबलसिंह चौहान॥

इति पञ्चदश अध्याय॥ १५॥

राजा सुनौ वचन परमाना। परम रहस्य कियो भगवाना॥
देव पुहुप एक नारद आना। लै दीन्हों तब श्रीभगवाना॥
कृष्ण तो दीन रुक्मिणीपाहाँ। सतिभामा क्रोधित भइ ताहाँ॥
पारिजात एहो भगवाना। सतिभामा लाये भगवाना॥
तब रुक्मिणि बहुतै दुखपाई। यहिते सरस फूल मनलाई॥
तब श्रीपति गे पारथ पासा। जाय वचन कीन्हें परकासा॥
कदली वनहिं तुरतही जैये। सुगंधराज पुष्पन लै ऐये॥
पारथ गये धनुश शर लयऊ। कदलीवनमें प्रविशत भयऊ॥
तोरत फूल रच्छ रहे तहा। जाइ अर्थ हनुमतसे कहा॥
सोसुनि हनू क्रोध तब भयऊ। पारथ पाहिं कहन तब लयऊ॥
यही पुहुप पूजत रघुराई। चोरी करत चोर अन्याई॥

पारथकह तब समकी, करत बड़ाई कीश।
जान्यो सब पुरुषार्थ हम, जौन राम अवधीश॥

मोहिं समान कौन धनुधारी। क्रोधी पारथ कह्यो विचारी॥
शारङ्गहाथ गहे रघुनाथा। ढोये कस पर्वत कपिनाथा॥
कहाँ न प्रभुता सुनु हनुमाना। बांधे सिन्धु पलकमहँ जाना।
झूठ वचन कस कहत अयाना। बाँधौ सिन्धु न हतिहौं प्राना॥
सुनु रे कोश महा अज्ञाना। क्रोध कियो पारथ बलवाना॥
पारथ हनू सिन्धुतट आये। बाण वुन्द पारथ तब लाये॥
सौ योजन शरबांधि सवारा। हनूमान विस्मय अतिभारा॥
देखि कहैं हनुमत यह वाता। सेतूपर हम जाब सख्याता॥
यद्यपि वांध रहे दृढ़ होई। मान्हुँ सत्य धनुर्द्धर सोई॥

पारथ कही वात यह, भरे गर्व अहङ्कार।
केतक वार तुम्हारही, करौं पार संसार॥

तब हनुमान क्रोध अतिपायो। उत्तर दिशा क्रोधकरि धायो॥
योजन सहस वदन विस्तारा। औ लीन्हेउ पुनि बहुत पहारा॥
देखिरूप विस्मय संसारा। रोम रोम प्रति बँधे पहारा॥
आये तुरत समुद्रहि तीरा। आपुहिआपु लड़तदोउ वीरा॥
पारथ देखत भूलेउ ज्ञाना। सुमिरेउ तबहि चरण भगवाना॥
अपने मनमें श्रीपति जाना। भयो विवाद पार्थ हनुमाना॥
हनू भार को जगमें सहै। तीनि लोकको उलटन चहै॥
यहै विचार करैं यदुवीरा। कमठरूप तब धरेउ शरीरा॥
शरको बांधि पार्थ पुल कीन्हा। तेहिमधिजाइपीठि हरि दीन्हा
हनू भार पीठोपर धारा। रक्त बहायो वदन सो फारा॥

रक्त वर्ण तब देखेऊ, करि विचार हनुमान।
मोरभार संभार को, को है जग में आन॥

धरै ध्यान श्रीकृष्णको पाये कूदि हनू तट ऊपर आये॥
निज रुधिरै देख्यो बनवारी। पारथ हन तौ अस्तुति सारी॥
श्रीपतिकह दोउ एक समाना। पारथ बीर और हनुमाना॥
याहि प्रकार प्रीति परमाना। श्रीपति तब भे अन्तर्द्धाना॥
पारथ सखा भये हनुमाना। यहिप्रकार ते ऋषिहि बखाना॥
पाछे पहुप ले पारथग एऊ। श्रीपतिपुहुप रुक्मिणी दयऊ॥
द्वाररवती रहत बनवारी। पारथ धन्य कहत गिरिधारी॥
यहै रहस्य कथा सुनु राऊ। तोरे वंश चरित्त उपाऊ॥
इन्द्रप्रस्थ तब पाण्डव रहहीं। कौरव दल हस्तिनपुर बसही॥
प्रेम अनन्दित सकल रजाई। वैशम्पायन कथा सुनाई॥

पांडव बिजय कथायह, सनत पाप को नाश।
बड़विस्तार न कीन्हेउँ, करउँ संक्षेप प्रकाश।

कहैं बात तब श्री यदुराई। पारथ धन्य धन्य भक्ताई॥
तोहिं समान भक्त नहिं कोई। और जगतमें है नहिं होई॥
पारथ कहै सुनो जगतारण। मिथ्या कहो आप केहि कारण।
मोहिं समान जगत बहुतेरे। तीनि लोक में अहैं घनेरे॥
मैं पातकी कौन मंझारा। नाथ जो तुमहिं सहाय हमारा॥
कहैं कृष्ण ऐसा ना कहहू। तुम्हैं समान जगत नहिं कतहू॥

और अहै नो आनि देखाऊ। झूठि वात केहि हेतु सुनाऊ॥
पारथ कहै जो आज्ञा पाऊं। नाथ आनि अगणित दिखराऊं॥
तब श्रीपति यह आज्ञा दीन्हा। पारथ गमन ततक्षण कीन्हा॥
खोजेउ पारथ सब संसारा। माया हरि जानै को पारा॥

कोइ न पायो आपु सम, मनमें करै विचार।
सब जगकर्ता हरि अहैं, माया जेहि संसार॥

तब पारथ मन कीन्ह विचारा। हीन वस्तु देखा संसारा॥
बिष्ठा देखा पारथ तहँवाँ। बाँधि वस्त्र लै आये जहँवाँ॥
श्रीहरि अग्र कहै तब वाता। खोजा सबहिं जगत सख्याता॥
मोहि समान जगत नहिं कोई। पायो नहिं कहा प्रभु सोई॥
सर्व जगत्‌के अन्तर्यामी। गूढ़ागूढ़ जाने तुम स्वामी॥
एक कहहिं तौ हमहिं समाना। सुनौ देवपति तुम भगवाना॥
आपै अग्र दिखाइ न जाई। हृदय प्रेम जानहु यदुराई॥ *
गहा प्रफुल्लित श्री भगवाना। धन्य धन्य पारथ बलवाना॥
हारि देव मैं तौ सव जाना। मोरे अर्द्ध अंग तुम प्राना॥
मोर तोर है एक शरीरा। काहे दीन होत हौ वीरा॥

मनुष्य रूप तुम पार्थ हौ, भाषैं श्री भगवान।
नारायण जानो हमहिं, सुनियो वचन प्रमान॥

विष्णु नाम मोरा परमाना। विवसतनाम तोर जग जाना॥
विवसत नाम पार्थको दयऊ। सुनत हर्ष तब पारथ भयऊ॥

---

* लज्जित होत अहैं यदुराई।

तब विष्ठा को दीन्हों डारो । करि अज्ञान परे पग भारी ॥
परे कृष्ण के चरणन जाई । प्रेमहि हर्ष भये यदुराई ॥
कछु दिन रहे पार्थ पुनि ताहीं । बिदा होय आये घर साहीं ॥
अपने गृह तब पारथ गयऊ । प्रेमै हर्ष जगतपति भयऊ ॥
पाण्डव जय भारतहि बखाना । जनमेजय सुनिकर सुखमाना ॥

भारत कथा पुनीत अति, जाते पाप विनास ।
श्रवण पानके करतही, यमपुर छूटे त्रास ॥

जो फल ब्रत एकादशि कीन्हें । जो फल होइ भूमिके दीन्हें ॥
जो फल कोटिक कन्या दीन्हें । जो फल सबतीरथ के कीन्हें ॥
जो फल होय शरणके राखे । जो फल होय सत्यके भाखे ॥
जो फल यज्ञ धर्म करवावै । सो फल या भारत सुनि पावै ॥
भारत कथा सुनै अरु गावै । ताके पाप निकट नहिं आवै ॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये । सो फल श्री भारत सुनि पाये ॥
भारत कथा पुणग्र परवेशा । सावधान होइ सुनो नरेशा ॥
पेठे धर्म पाप क्षय जाई । आयुर्बल होवै अधिकाई ॥

चलौ सुनत सुमारग, मानुष ज्ञान प्रकाश ।
सबलसिंह चौहान कहि, होइ परमपद वास ॥

इति षोडश अध्याय ॥ १६ ॥

महाभारत।

सभा पर्व।

सुमिरि व्यास गणपति चरण, गिरिजा हर भगवान।
सभापर्व भाषा गनत, सवल सिंह चौहान॥
सत्रह सो सत्ताइसे, संवत शुभ मधु मास।
नवमी अरु गुरु पक्षसित, भै यह कथा प्रकास॥
सुनु राजा आगे विस्तारा। जैतापुर नृप धर्म्मकुमारा॥
प्रजा लोग आनन्दित रहे। वैशम्पायन नृपसों कहे॥
नगरी धर्म्म पाप नहिं ताहां। धर्म्मपुत्र राजा हैं जाहां॥
सुखी लोग सब हर्षित रहहीं। कोउ काहूते वैर न करहीं॥
देवस्थल पुष्करणी अहैं। ब्राह्मण सब हर्षित तहं रहैं॥
मनसा दान सुचाहत पावैं। धर्म्म व्यतीत दान नहिं भावैं॥
झूठ बड़ाई औ चतुराई। सुनेउ न कोउ ता पुरमहं भाई॥
शास्त्रक वेद पुराणकहानी। श्रवणन सुनै प्रेमसों वानी॥

देवलोक समतामें सोहैं । देखत हरष देवपति मोहैं ॥

बेद वचन अरु शास्त्र जो, सब नर करत प्रमाण ।
और न मानत कोउ कछु, मिथ्या नहीं बखान ॥

सनु राजा यह कथा रसारा । सभापर्व बनमें विस्तारा ॥
एक बार नारद मुनि आये । धर्म्मराज को वचन सुनाये ॥
तुम राजा हो धर्म्मकुमारा । पाण्डुतात जानत संसारा ॥
पिता तुम्हार स्वर्गमहं राजहिं । देवसभा नहि बैठन पावहिं ॥
देवराज भाखेउ यह बाता । पुत्र तुम्हार जगत विख्याता ॥
राजसूय मख कर सुत जबहीं । सभा बैठिहौ तुम न्टप तबहीं ॥
यहि कारण हम आये राऊ । राजसूय आरम्भ कराऊ ॥
न्टप दिगविजय प्रथम परमाना । लक्ष नरेश निमन्त्रण आना ॥
ब्राह्मण और ऋषीश्वर अहहीं । यज्ञमाहि दक्षिणा बहु चहहीं
ताते राजा तुमहि सुनावा । सुनतहि राजाके मन भावा ॥

पांचौ बन्धु विचारिकै, भाखेउ मुनिपहं बैन ।
जाहु द्वारका हरिकहं, लावहु पङ्कजनैन ॥

नारद सुनै हरष मन पाये । चले द्वारकापुर हरषाये ॥
द्वारावति तब पहुंचे जाई । पुरी देखि तब परम सुहाई ॥
श्रीपति पहं तब नारद जाई । गृह गृह प्रति देखे हरि आई ॥
जो गृह देखि तहां यदुराई । चकित नारद देखा आई ॥
कौने हेतु कहत भगवाना गृह गृह मांहि फिरत परमाना ॥
नारद कहै मरम नहि पाये । कौन त्रियासो हरि मन लाये ॥

श्रीपति कहै सर्वमय अहौं। रवि प्रकाश घट घट प्रति रहौं॥
सबही पाहिं हमारो वासा। यहि प्रकारते पुरवहुं आसा॥
तुमतो हेतु सबै लियो चाही। कौन हेतु आये पुरमाही॥
तब नारद अस्तुति बहु कीन्हो। पाछे नृपति निमन्त्रण दीन्हो॥

धर्म्मराजके यज्ञ हित, पायो हमैं भुवार।

यज्ञ पुरावहु जाय प्रभु, चलिये नन्दकुमार॥

सुनतहि कृष्ण हरष मन भयेऊ। तुरतहि चलनक उद्यम कियेऊ
सङ्ग समाज गये प्रभु ताहां। धर्म्मराज जैतापुर जाहां॥
पहुंचे जाय मिले सब पाहा। यज्ञ अरथ तब राजा काहा॥
कृष्णहु कह उत्तम है राऊ। राजसूय अब यज्ञ कराऊ॥
अब प्रथमहि दिग्विजय करैये। पाछे यज्ञ अरम्भ बनैये॥
लच नरेश निमन्त्रहु राई। यज्ञ महा भाखेउ यदुराई॥
धर्म्मराज भाखेउ हरिपाहीं। एतिक धन हमरे तौ नाहीं॥
कैसे यज्ञमांह मन धरिये। लच नृपति सम्भाषण करिये॥
मनहि विचारेउ सारङ्गपानी। दिगजय करन प्रथम तब ठानी॥
जरासन्धको मारा चहिये। धर्म्मराजसों मन्त्र जो कहिये॥

श्रीपति कहै विचारिकै, सुनो धर्म्मके राज।

दिगविजय हि धन आनिहौ, सोच करौ केहि काज॥

जेते दुष्ट नृपति जग आहैं। जीति जीति धन लै हौ ताहैं॥
धर्म्मराज कै मति तब माना। जोरै मन्त्र करैं भगवाना॥

दिगविजयक मन्त्रहि ठहरैये । जीतहु दुष्ट सबै धन लैये ॥
प्रथम उत्तर दिशि पारथ जाई । देश अनेकन जीति लराई ॥
अगणित भूप दुष्टमति जेते । वीर धनञ्जय जीतेउ तेते ॥
पूरब दिशा भीम तब गयेऊ । नाना वीर धीर वश कियेऊ ॥
जीते पूर्व भीम सब जाई । देश देशके जीते राई ॥
दक्षिण जेते राव नरेशा । दुष्टहुपते जीतेउ देशा ॥
नकुलवीर तो पश्चिम जाई । नाना देशन जीते राई ॥
चारि दिशा जीतेउ सब झारी । पाये धन तब बहुतै भारी ॥

दिगविजयहि करि आये, चारो बन्धु सुजान ।
जैतापुर आनन्दित, देखत श्रीभगवान ॥

जैतापुर आनन्द बधाई । देश देश जीते सब राई ॥
जहं लगि भूपति पापि निहारा । ते सब जीते धर्म्मकुमारा ॥
पाये धनरु अश्व तहं नाना । जीते सबै हस्तिना आना ॥
राजा हरिके भक्ति मन धारा । यहि अन्तर एक यक्ष सञ्चारा ॥
श्रीहरि पाहिं दूत सो आवा । बन्दी राजा सबै पठावा ॥
जरासन्ध बन्दी कै राखेउ । साठि सहस्र दूत तब भाखेउ ॥
ते सब हरिचरणन्हको ध्यावैं । प्रभु तिनुको यह बन्दि छुड़ावैं
सुनि हरि दूतन्ह कह समुझाई । कहो दूत राजाते जाई ॥
सुख दुख मह जो मोकहं ध्यावै । कौनौ रूप मोक्ष सो पावै ॥
धीरज देय कहो हरि ताही । कै परणाम दूत तब जाही ॥

बन्दी नृप तब हरषि के, हरिको कीन्हो ध्यान।
वैशम्पायन मुनि तब, राजा पाहं बखान॥

पारथ वीर बहुत धन आना। बहुत समग्री करि निर्माना॥
ऋषि मुनि सब कहं न्योति बुलाये। जैतापुर आनन्दित आये॥
विश्वदेव मुनि तहं तब आये। भरद्वाज मुनि तहां सिधाये॥
गौतम अरु अत्री मुनि ताहां। विश्वामित्र महामुनि जाहा॥
अङ्गिरा भृगु सुमन्तक मुनी। मुनि कौण्डिन आये तब पुनी॥
पराशररु व्यास तब आये। कश्यप मुनि पुनि तहां सिधाये॥
कुम्भज ऋषय सहस तहं आये। नृपके मखमहं सकल सिधाये॥
सहस्र अठासी मुनि हैं जेते। राजसूय आये सब तेते॥
राजा सबकी पूजा करहीं। परमानन्द महा चित धरही॥
उद्धव हरिके सङ्गहि अहे। औरौ यदुवंशी बहु रहैं॥
यज्ञका साज करैं तब काजा। जैतापुर आनन्दके साजा॥

यज्ञ साज निरमानत, सङ्ग लिये यदुराय।
पांच बन्धु अति हरषित, सुनु राजा मन लाय॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

अब नृप सुनहु कथा मैं जोई। तव हित हेतु कहत हैं सोई॥
कुरु पाण्डव सोहैं द्वौ आछे। जस समाज वरणौं मैं पाछे॥
इन्द्रप्रस्थ द्वौ वसैं सुखारी। मतिदृगअंधराज्य अधिकारी॥
धनमहिसन सौंपि सबदीन्हा। बद्धिचच निजसुतनृप कीन्हा॥

कानि राज्यपदकी अतिभारी। भीष्म द्रोण भे अज्ञाकारी॥
सोहत दुर्योधन नृप गादी। भूमि पाण्डु नन्दन के सादी॥
इन्द्रपस्थमहँ पूरब ओरा। कुरु समाज सोहत घन घोरा॥
वसत तहां सब भूप समाजा। भीषम बाहुलीक महराजा॥
विदुर कृपागुणनिधि सुखधामा। रविनन्दन अरु अश्वत्थामा॥

भरद्वाज-सुत आदि भट, दुर्योधन रुख देखि।
करत काज कुरुनाथ संग, निशि दिन रहत विशेखि॥

चित्र रम्य सोहहिं बहु भाँती। त्रिदसपुरी देखत सकुचाती
तेहि थल ते गत पश्चिम आसा। योजन नव कुंतीसुतवासा॥
तहँा युधिष्ठिर राजहिं राजा। विपुलसम्पदा सहितसमाजा
मतिढग दीन्हें नगर पचीशा। धर्मनन्द लीन्हें धरी शीशा।
दुर्योधनहिं राज्य सब दीन्हा। धर्मराज कछु मर्ष कीन्हा॥
भूमि अनेक नरेशन केरी। जीति धर्मसुत लीन्ह घनेरी॥
अर्जुन भीमसेन बलदाई। जीति लिये जहँ तहँ सुवराई॥
ते सब दंड देहिं नृप धर्महिं। नहिं डरपहिं कुरुराज कुकर्महिं

आवहिं विपुल नरेश, जीते प्रथमहिं पांडु जे।
करहिं विनय उपदेश, देहिं दण्डमति ढगसुतहि॥

देन दण्डकुरुपति गृह आवहिं। करिविनती अनेकससुभावहिं
पाण्डुसुतन की अति भयमानी। दण्ड पठाइ देइँ रजधानी
दुर्योधन भय मिलन न जावहिं। गुप्तरूप धनदण्ड पठावहिं॥

इन्द्र समान राज्य नृप करई। चलै सुमार्ग सत्य नहिं टरई॥
नीति निपुणता जगमहँ छाई। प्रजालोग सुख लहहिं अघाई॥
सम्पति गृह-कुबेर ते भारी। राज बन्धु सब अज्ञा कारी॥
मयकी सभा बनाई जोहै। रचना अद्भुत लखि मन मोहै॥
महल अनेक बने शीशा के। लखि मन मोहैं सुर ईशाके॥
जलअगाधथलनहिंलखिपरई। जहँथलदृगजलमनहुँ भ्रमरई॥
लखिविचित्रथलचितभ्रमिजाई। फिरसँभरतनहिंकोटि उपाई॥

भीमसेन अर्जुन नकुल, लघुभ्राता सहदेव।
महावीर बहुभुज बली, करहिं नृपतिकी सेव॥

नृप पदवी शिर कौरव केरो। तिनते अधिक धर्मनृप केरो॥
इकदिन धर्मराज मन आजा। राजसूय करि होई काजा॥
निजमन्त्री अरु बन्धु बुलाये। करिमत ठीक व्यास पहँ आये॥
भाइन सहित चरणशिर नावा। कुशलपूछिऋषि कंठलगावा।
ऋषिहृषपाइ धर्ममहिपाला। कहेउ मनोरथ सकल सुआला॥
जाइ पार तौ करौ उपाई। नत चुप साधि रहौ ऋषिराई॥
कह ऋषि कुशल मनोरथ तोरा। करहिं भूप वसुदेव किशोरा॥
सुनत नरेश विदा पुनि मांगी। ऋषिपदपरशि चलेअनुरागी॥
निज मन्दिर नृप आतुर आये। देश देशकहँ पत्र पठाए॥
लिखि अनेक विधिविनयबड़ाई। दीन्ह पत्र हरिनगर पठाई॥

त्रियपरिजन परिवार अरु, हलधर सहित कृपालु।
नवइ आइ करुणायतन, कीजे मोहि दयालु॥

वासुदेव द्वारका विराजत । बलयुत यदुवंशी सव राजत ॥
एक दिन माधवके मन आई । जहिं कछु गजपुर के सुधिपाई
ऊधो हलधर सभा घनेरो । चरचा करत पाण्डवन केरो ॥
बहुबिधिकरत विचार खरारो । तेहि अवसर आये चर चारो
वेतपाणि तव खबरि जनाये । सुनि यदुनन्दन तुरत बुलाये ॥
जाय सबन नायो तहँ माथा । उठि कै पत्र लीन यदुनाथा ॥
बाँचि सभा महँ सबन सुनाई । दूतन दीन्हेंउ बास देवाई ॥
तेहि अवसर ऋषि नारदआये । हरि गुण गावत वीण वजाये

ऋषिहि देखि करुणायतन, कीन्हेंउ दण्ड प्रणाम ।
सहित सभा उठिमुनिचरण, धय्यो शीश निजराम ॥

दीन सुआसन अति-अनुरागा । प्रभु करजोरि रजायसु मांगा
हम सनाथ आगमन तुम्हारे । निज जन जानि नाथ पगुधारे
अब कृपालु करि मोपर दाया । आगम हेतु कहौ ऋषिराया ॥
तब बोले ऋषि सहित सनेहू । तुमहिंन उचित वचन प्रभु येहू
तुव दर्शन त्रिभुअनमहराजा । यहिते अधिक कवनवड़ काजा
यह हरि केवल हेतु हमारा । शक्र कहेउ कछु चलती वारा ।
भयउ कृपालु भूप शिशुपाला । देत सुरन दुख कठिन कराला
अतिबल देवांगना विलासी । करतदशाननादि कै हाँसी ॥
सबन कहत मैं आप विधाता । संहरता करता अरु त्राता ॥
तेहिको नाथ पंथ कर वासी । करहु कृपाल सहज सुखरासी ।
अतिमारग यहि निपट उलंघा । पठइय शीश सुदर्शन संघा

सुने श्रवण ऋषिमुख वचन, कृपासिन्धु भगवान ।
भ्रुकुटि भंग कीन्हेउ मनहुँ, उदयकेतु अस्थान ॥
रिसवश युगल विलोचनलाला । कहेउनऋषिंवंचिहै शिशुपाला॥
काटौं शीश चक्र गहि हाथा । करौं नाथ सुरनाथ सनाथा ॥
सुनि अस दै अशीश ऋषि नारद । ब्रह्म सभा गै ज्ञानविशारद ॥
कह हरि उद्धव हलधर तेरे । तात परम असमंजस मेरे ॥
धर्म नरेश निमन्त्रन दीन्हा । ऋषि नारद यह आयसु कीन्हा ॥
युगल कर्म कर्त्तव्य हमारे । कल न विना शिशुपालहि मारे ॥
अति वल धर्मराजके भाई । जीते जे नरेश समुदाई ॥
हम विन यज्ञ युधिष्ठिर करिहै । गये विना शिशुपाल उवरिहै ॥
कहहु युगल तुम मंत्र विचारी । पितु सम हो हमरे हितकारी ॥
जो कछु करत मोर अपराधा । सो नहिं सकत नेकु करि वाधा ॥
दाहल लोकपाल शिशुपाला । सो यह होत हृदय मम शाला ॥
सुनत शत्रुवध सुरति करि, नैन तरेरे राम ।
फरकत अधर सरोष अति, वोले वाणी वाम ॥
राखहिं भूलि रिपुहिजे जीती । उदय न होत कहत असनीती ॥
यहि प्रकार रिपुमूल उखारी । उदित यथा तम नाशि तमारी ॥
कीन्हे विना शत्रु पद्म नाशा । करिय प्रतिष्ठाकी जनि आशा ॥
जलविन रजहि पंककरिदीन्हें । थिरनहिंरहत यतन वहुकीन्हें ॥
नवजगसुखनशिद्दिततनधरको । जीवन जव लग एको अरिको ॥
जिमिरविशशिहिराहुदुखदेता । सव सुर तव सहाय कहुकेता॥

अहिजिमि सत्य प्रबुहरि सोई। देखि ठाढ़ि रोमावलि होई॥
हमन डरत सपनेहुरणकालहि। भा रोमांच सुनतशिशुपालहि॥
ताते अब न नागपुर जाहू। रिपु जग जीवत कबनहिं काहू॥
महिषमती पुर लीजै घेरी। सजहु वाजि गज सैन्य घनेरी॥
गत दिन यदुकुल कै तलवारी। लह्रा न दामिनिकै छविभारी॥
अब उड़गण तरवारि तरङ्गा। लहै सुछवि रविकिरणन सङ्गा॥
चलि शिशुपाल प्राणहतकीजै। करैं धर्म्म मख आयसु दीजै॥
असकहि करनलगे मदपाना। उगिलत वमत वचन करिनाना॥
सुनि उद्धव ते सैन बुझाई। तुम कछु कहहु कहेउ यदुराई॥

सत्य सत्य यह बात, भाषे मूशलपाणि जो।
सुनत मन्त्र मम तात, उद्धव यदुनन्दनकहेउ॥

सहज जीति शिशुपाल न जैहै। भूप समूह सहायक ऐहै॥
रोग समूह राजयक्ष्मा जिमि। नृपसमूहशिशुपालप्रबलतिमि॥
समयपरे प्रभु मारिय ताही। सहसा कर्म्म उचित अस नाही॥
अपर न हितदायक जग तोसे। करत धर्म्म मख नाथ भरोसे॥
तुम बिहीन करिहै मख नासा। होइहै धर्म्म नरेश उदासा॥
अइहैं विपुल भूप मख माहीं। बांधि बांधि तब मारिय ताहीं॥
कारज युगल बनत अस कीन्हें। प्रथम ताहि तुमहीं वर दीन्हें॥
सहि शत अधिक एक अपराधा। करिहौं तव प्राणनके बाधा॥
इन्द्रप्रस्थ अइहैं सब राजा। खुलि जइहैं रिपु मित्र समाजा॥
उठे सुनत हरि उद्धव बानी। से पुनि शक्रप्रस्थ प्रस्थानी॥

हने निशान साजि बहु सेना। उठी धूरि जनु अर्क रहे ना॥
हलधर ऊधो सात्यकी, अपर लोग सब साथ।
निज नरेश के द्वारपर, जात भये यदुनाथ॥
उग्रसेन ते मांगि रजाई। इन्द्रप्रस्थकहँ चले गोसांई॥
हरिपुरते दल चले समूहा। चतुराननमुखजिमिश्रुतिजूहा॥
आवत सुन्यउ धर्म्म महराजा। मिलन चले सँगसुभटसमाजा॥
आवत देखि कृष्ण रथ त्यागा। हलधर सहित उमँगि अनुरागा॥
मिलत न प्रीति हृदय कहिजाती। पुनिपुनि भेंटिजुड़ावतछाती
रविनन्दिनि तट दल समुदाई। दीन नृपति विश्राम कराई॥
हरि बलदेव लोग कछु साथा। चले अवास धर्म्म नरनाथा॥
सकल बन्धु तेहि अवसर आये। हरिहिविलोकिनयनजलछाये॥
मिले वृकोदर विजयनर, युगल बन्धु हरषाय।
पूछी कुशल कृपालु तब, कहौ युधिष्ठिरराय॥
कुशल देखि तव चरण मुरारे। जो तुम दीन जानि पगुधारे॥
हलधर कीन्ह कृपा सब भाँती। अरु सात्यकि ऊधो संघाती॥
आये प्रभु मोहि कीन सनाथा। प्रणतारत भञ्जन यदुनाथा॥
सभा मध्य हरि हलधर गये। शुभ सिंहासन बैठत भये॥
धर्म्म महीप कहत मृदुवाणी। गे अन्तःपुर शारँगपाणी॥
मिलिरानिनकहँ सहित हुलासा। बहुरि गये कुन्ती के पासा॥
बन्दत चरण देखि अनुरागी। पुनि पुनि कण्ठ लगावनलागी॥
द्रुपदसुता पूछत कुशलाता। परमानन्द प्रफुल्लित गाता॥

कछुक मधुर पकवान मिठाई। द्वारे हलधर दीन पठाई ॥
राम सहित नृप भोजनकीन्हा। उद्धवसहित सात्यकी दीन्हा ॥
राम बहुरि अन्तःपुर आये। उद्धव सात्यकि सङ्ग लगाये ॥
कुन्ती रामहिं आवत जाना। आगे चलि कीन्हेउ सनमाना ॥
चरणन परे मातु उर लाये। भूप सहित पुनि द्वार सिधाये ॥

वहाँ द्रौपदी हर्षयुत, करत विविध सनमान।
भोजन करवायो हरिहि, बहुरि खवायो पान ॥

यदुपति कछुक घरीतहँ रहिकै। चलत भये रानिनतेकहिकै ॥
आये धर्म्म महीपति पासा। बिछी प्रयंङ्क सेज शुभबासा ॥
तहाँ पौढ़ि प्रभु सोवन लागे। रहा याम दिन यदुपति जागे ॥
जुरी सभा बहु गायन आये। सकलकलामहँ कुशल सोहाये ॥
जागि धर्म्मसुत राम जगाये। परम सुखद आसन बैठाये ॥
आसव पान राम तब कीन्हा। होय नृत्य अस आयसु दीन्हा ॥
राम वचन सुनि गायन गाये। बहु प्रकार करि नृत्य रिझाये ॥
यहिविधिदिनप्रति सहित सनेहा। कछुदिन कृष्ण रहे नृपगेहा ॥
अद्भुत यज्ञ दिवस नियराना। आवत तहाँ महीपति नाना ॥
जरासन्ध सुत प्रवल भुवारा। आइ तहाँ दल कीन्ह जोहारा ॥
भेंट देइ ऋतु शिबिर भुवाला। तेहि अवसर आये शिशुपाला ॥
धर्म्मराज तब नकुल बुलाये। मनभावत शुभ वास देवाये ॥
देश देशके भूपति आये। धर्म्मराज पद शीश नवाये ॥
भेंट अनेक भूप तब लावहिं। करहिं प्रणाम वास शुभ पावहिं ॥

परहिं ते चरण कृष्णके आई। पुनि पुनि धर्म्मसुतहि शिरनाई॥
वीर वृकोदर आदिक मिलिकै। बैठहिं भूप सभइ सब हिलिकै॥
भई भीर पाण्डव दरवारा। कोउ न पावत ओर दुवारा॥
तव वोले हँसि शारँगधारी। कुरुपति कहँ अब लेहु हँकारी॥

चरवर वोलि नरेश तव, दीन्हिओं तिनहि रजाइ।
लै आवहु कुरुनायकहँ, करहि-सभा मम आइ॥

वहुरि बुलाय एक चर लीन्हा। गङ्गासुतहि निमन्त्रणदीन्हा॥
वाहुलीक गृह एक पठावा। करि वहु भांति विनय समुझावा॥
द्रोण कृपा गृह मन्त्र पठाई। लिखि अनेक विधिविनय वड़ाई॥
विपुल दूत नरनाह बुलाई। दै पूगीफल न्टप समुझाई॥
जे सब विपुल नागपुरवासी। सचिव महाजन जे गुणरासी॥
पृथक पृथक कहि नाम नरेशा। पठये चर वहु करि उपदेशा॥
सुनत निदेश प्रजाजन आये। नैमन्त्रित अरु विनहिं बुलाये॥
आवहिं चले प्रजा वहुतेरे। ग्राम ग्राम प्रति यूथ घनेरे॥
उचित अवास दीन सब काहू। मखदरशनहित अतिउत्साहू॥
चरवर वहां नागपुर गये। सबकहँ देत निमन्त्रण भये॥
गयो दूत कुरुपति दरवारा। दीनपत्र वहुवार जोहारा॥
तब कुरुपति शकुनी हँकराये। बांचिपत्र सब भेद सुनाये॥
पूँछि मन्त्र आज्ञा न्टप कीन्ही। सजि निजसैन दुन्दुभीदीन्ही॥
भीषम द्रोण कर्ण सजि आये। कृपाचार्य सब साजवनाये॥
सजिदल चलत भयो कुरुराई। वाजत पटह भेरि सहनाई॥

गजअरूढ़ कुरुपति छविपाई । चहुँदिशि तुरंगरहे ठहनाई ॥
चरवर कहेउ कि कुरुपति आये । धर्म्मनरेश सुनत सुखपाये ॥
बन्धु बुलाइ सकल तिन लीन्हें । मिलहु जाय नृप आयसु दीन्हें ॥
बन्धु सकल अरु सुभट समाजू । चले भीम भेंटन कुरुराजू ॥
तब उठि साथ चले यदुनन्दन । जेहिमग आवत कौरवनन्दन ॥
प्रथमहिंमिले पितामह आगे । हरिहिं देखि रथ तजि अनुरागे ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा । बाहु ीक विकरण सरदारा ॥

अति आदर मिलि सबनकहँ, भीमसहित यदुराय ।
कियो नकुल सहदेवसँग, बास करावहु जाय ॥

नाना भांति करहु सेवकाई । असकहि अग्र चले यदुराई ॥
मिलहिं बरूथ सुभट मगमाहीं । करत जोहार चले सब जाहीं ॥
विदुर दीख यदुनन्दन आये । द्रोणसमेत त्यागि रथ धाये ॥
पुनि पुनि कृपासिन्धु भगवाना । मिलेबहुतविधि करिसन्माना ॥
तब पारथहि कहे यदुराई । सुथल शिविर करवावहु जाई ॥
विदुर समेत रम्य अस्थाना । पारथ गुरुसंग कीन पयाना ॥
भीम समेत चले यदुराई । आगे आवत लखि कुरुराई ॥
विविध भांति बाजत बहुबाजा । हय हींसत गर्ज्जत गजराजा ॥
कुरुपति भीमहि आवत देखा । सहित रमापति सुन्दर भेखा ॥
शकुनी करण सहित अनुरागे । तब कौरवपति कुञ्जरत्यागे ॥
तब कुरुपतिहि मिले यदुराई । विविध भांति पूछी कुशलाई ॥
आये भीमसेन अनरागे । कीन जोहार भेंटधरि आगे ॥

अतिहित मिलत भये कुरुराई । चले समेत समाज लिवाई ॥
जहँ यमुनातट निपट सुपासा । दीन तहां कुरुनायक बासा ॥
पटल वितान गड़े बहुतेरे । डेरा परे कुरुपतिहि केरे ॥
यदुपति बहुरि सभामहँ आये । समाचार सब नृपहि सुनाये ॥
सुनि नरेश तब अति सुखलहेऊ । तुरतबोलि मन्त्रिनसनकहेऊ ॥
मख समाज सब साजहु जाई । हय गज रथदल द्रव्य बनाई ॥
धर्मराज कर आयसु पाये । निज निज कारज सकल सिधाये ॥

　　इहां करण शकुनी सहित, नृप भय प्रातःकाल ।
　　शिविरशिविरमिलिभूपतिन, गयेजहांशिशुपाल ॥

तेकुरुनायहि आवत जाना । आगे मिले त्यागि अभिमाना ॥
तहँ कुरुनाथ रहे कछु काला । भये बिदा कहि सकल हवाला ॥
देखत धर्म प्रताप महाना । जात चले मनकृत अनुमाना ॥
राजत जहाँ पाण्डुकुलदीपा । उतरे चहुंदिशि विपुलमहीपा ॥
लै लै भेंट धरन ते आये । कुञ्जरपुर नरेश बहु छाये ॥
बहुत भेंट पाण्डव के आवत । हम राजा बिन हेतु कहावत ॥
कुरुपति यह देखत निज नैनन । शोचतमनमहँकहिकहिबैनन ॥
एक नगरमहँ द्वै अधिकारी । भयो बड़ो यह अनरथ भारी ॥
अबलग जगतविदित लघुभाई । ते अब भये तुल्य बलदाई ॥
जगती बहु पदवी यल थोरे । ते अब भये बरोबरि मोरे ॥
गजपुर चलिहि न एक दुहाई । करि हैं आज्ञा भङ्ग प्रजाई ॥
होत अवज्ञा जे नृप केरे । मरण नीक तेहि जीवन तेरे ॥

हमकहँ दण्ड न देहिं ते, देहिं धर्मजहि जाइ ।
छलबल करि वश कीजिये, अस कछु होइ उपाइ ॥

यहि विधि गे कुरुनाथवितानो । नित्य निमित्त करत अस्नाना ॥
इहाँ धर्मसुत संग सब भाई । हलधर उद्धव अरु यदुराई ॥
सुभट सकलदिशि शोभा पाये । प्रथमहिं बाहुलीक गृह आये ॥
करि नरनाह विनय कर जोरी । गये पितामह भवन बहोरी ॥
दूरिहिते अभिवादन कीन्हा । उठि गांगेय लाय उरलीन्हा ॥
मिलि हलधरहि प्रेमयुतहोते । कुशलप्रश्न पूछी सबहोते ॥
मांगि बिदा सुतधर्म सिधाये । द्रोणभवन अति आतुरआये ॥
कृपाचार्य अरु द्रोणकुमारा । विदुर ज्ञाननिधि परम उदारा ॥
सबहि यथोचित मिलि नरपालू । विनय सप्रेम कहेउ निजहालू
मांगी विदा चले नरनाथा । द्रोणकुमार भयो तब साथा ॥
चैद्य भवन कुरुनाथ चले जब । फिरे सहित हरि हलधर उद्धव ॥
भूपति कहेउ हेतु अस्नाना । है कछु भेद धर्मसुत जाना ॥
लखि हलधरकी भौंह तिरीछी । फैलि रही यह बात सुतीछी ॥
कहहिं परस्पर सबबिलखाहीं । विग्रहदेखि परत भलनाहीं ॥

सकलबन्धु अरु द्रोणसुत, सुभटसमाजविशाल ।
आवत देखे धर्मसुत, सपदि उठे शिशुपाल ॥

पुनि पुनिभेंटेउ नृपशिशुपाला । पूंछिकुशल कहिसकलहवाला
सब मिलकर भोरहिं मखकीजै । वेगि जाव मैं आयसु दीजै ॥
जरासन्ध सुत गृह नृप आये । यहि प्रकार सब भूप मँझाये ॥

आये बहुरि सभामहँ राजा। बोलि लीन सब सचिवसमाजा
मखशाला कहँ अब तुमजाहू। अद्भुत रचहु कहेउ सबकाहू॥
तिन पुनि शकट अनेक पठाये। कदलीखम्भ विपुल भरि आये॥
षोड़श सहस खम्भ कञ्चनके। चहुँ दिशि सोहत हैं मञ्चनके॥
हरित मणिनके पञ्च मँगाये। पद्मरागके पुष्प सोहाये॥
सोहत मध्य अनूप चँदोवा। कहि न जाय जानैं जिन जोवा॥
गजमुक्ताझालरि चहुँ पासा। रङ्ग रङ्ग रतनन की भासा॥
षोड़श सहस खम्भ कदलीके। रचि दीन्हें अस्तम्भन नीके॥
मखशाला अति चित्र बनाई। देखि विश्वकर्म्मा सकुचाई॥
बुध जन विपुल देखि अनुरागे। बहुविधि चक्र बनावन लागे॥
आये धौम्य घटज ऋषिव्यासा। शौनक नारद शुक दुर्वासा॥
शुक्राचार्य वृहस्पति आये। कश्यप विश्वामित्र सोहाये॥

यहि विधि अट्ठासी सहस, आय गये ऋषि जानि।
नृप प्रणाम कीन्हेउ सबहि, जोरि जोरि युग पानि॥
मखमण्डल महँ वास, दीन महीपति महिसुरन।
जहँसबभांति सुपास, थल बैठे आहुति चले॥

बहुरि नरेश सभा महँ आये। दुर्योधनपहँ दूत पठाये॥
लावहु सहित समाज लेवाई। चले दूत नृप आयसु पाई॥
जाय देखि कुरुपति दरबारा। आवहिं मिलन महीपअपारा॥
कीन्ह जोहार नृपहि तेहिकाला। कहेउ बोलावत धर्म्मभुवाला॥
सुनि मांगेउ नरनाह तुरङ्गा। शकुनी करण दुशासन सङ्गा॥

तजि हय द्वार तहाँ पग धारा । जहँ नृप धर्म्मराज दरबारा ॥
अर्ज्जुन भीमसेन दरवानी । लै आवहिं राजन सनमानी ॥
सभा भेद नहिं जान महीशा । जल तजि थलहिंचलेअवनीशा ॥
भीम कहा कुरुपतिहि सुनाई । दहिने पन्थ न आवहु भाई ॥
कपटी भूप क्रोध करि साना । पवनतनयकर कहा न माना ॥
जानेउ तर्क करत यहि बीचू । जलमग मोहिं बतावत नीचू ॥
चले सरोष अग्र नरनाहा । लागे बूड़न बारि अथाहा ॥
हाहाकार भीम करि धाये । चहुँदिशि लोग दौरि सब आये ॥
गहि कर धाय दुशासन लीन्हा । नृपहिं वारिते बाहेर कीन्हा ॥

करि अस्नान नरेश तब, पहिरे वसन नवीन ।
चहत चलन तेहि मग सँभरि, जहँ अर्ज्जुन आसीन ॥

ऊपर महल सुता पञ्चाला । तेहिं देखे ये सकल हवाला ॥
विहँसि कहेउ सब सुनहु सहेली । जानत हौ कुलरीति पहेली ॥
अन्धसुवन जिमि प्रगट भयेरे । मनहुँ शृङ्ग करशायल केरे ॥
असकहि वचन द्रुपदकी जाता । हँसी ठठाइ सुनी नृप बाता ॥
भीम दुशासन अरु कुरुराई । अपर न काहू सो सुनिपाई ॥
भा नरेश मन क्रोध अपारा । कहेउ न कछु आगे पगुधारा ॥
परन पाँवड़े बहु पट लागे । चलत नरेश भये पुनि आगे ॥
बिहँसिभीम कुरुनाथहि कहेऊ । कपट सनेह सदा तुम रहेऊ ॥
जो मग तुम कहँ दीन बताई । तहाँ न गयो कपट वश भाई ॥
असकहि भीम ठाढ़ ह्वै रहेऊ । कहतवचन आएसिमहँ भयऊ ॥

पिता अन्ध क्यों सूझौ पूता। हँसे भीम करि तर्क वहूता॥
कौरवनाथ सुनी सो वाता। क्रोध कृशानु जरे सब गाता॥
तब नरेश अस मन अनुमाना। हमहिं बुलाय कियो अपमाना
तेहिते अधिक पाण्डवन केरा। होय सफल तब जीवन मेरा॥
यहि विधिनृपनिजमनअनुमानी। गये जहाँ पारथ दरबानी॥

आवत नृपहि विलोकि तब, उठे पार्थ हरषाइ।
करि जोहार पुनि पाणि गहि, लै गये सभा लेवाइ॥

वहु लज्जा कछु क्रोधकि ज्वाला। गयो नरेश सभाकी शाला॥
उठे धर्म नृप आवत देखी। कृष्णसहित सबसभा विशेखी॥
लखिहलधरकहँ कुरुकुलदीपा। कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा।
मन वांछित वर आशिष पाई। मिले वहुरि धर्मज कुरुराई॥
लीन नरेश निकट वैठाई। नीके रहेउ सुयोधन भाई॥
रुच वचन तव कुरुपति कहेऊ। हम नीके तुम नीके रहेऊ॥
धर्मसुवन कह मधुरी भासा। कुशल हमारे सोहत पासा॥
वैठे कमलनयन यदुराई। अपर कुशल हम कौनि वताई॥
मनमहँ रोषविवश कुरुनाथा। भौंह मिरोरि मुच्छ धरि हाथा॥
राते नयन करत चहुँ ओरा। तव वोले वसुदेव किशोरा॥

कुरुपतिके गर्मी अधिक, देखिपरत मुख भूर।
असकहि बिहँसे मधुरहरि, सहितसभा भरि पूर॥

व्यङ्ग वचन सुनि यदुपतिकेरे। अरुणनयन कुरुनाथ तरेरे॥
हरि मुसकानि वारि सुधिकैकै। रहे कुरुपतिहि अहित चितैकै॥

देखि भूप रुख वचन खरारी । लागे किङ्कर करन बयारी ॥
नाना भाँति सुगन्ध सिंचावा । अतरगुलाब सकल छिड़कावा ॥
कह नृप तात सुनहु नरनाहा । आये पिता न कारण काहा ॥
हमसमस्त रनिवास बुलावा । कोऊ एक भूलि नहिं आवा ॥
जिनकरकाजसकलविधि भारी । आई कस न मातु गन्धारी ॥
बोले कुरुपति वचन सोहाये । हम नरेश सबको बदि आये ॥
कहेउ धर्मसुत तुम्हरे आये । हम नरनाह बहुत सुखपाये ॥
आये भीष्मादिक सरदारा । सबप्रकार भलभयो हमारा ॥
अबतुम मम आयसु उरधरहू । यज्ञकाज सब निजकर करहू ॥
तब बोले कुरुनाथ महीशा । आयसु होइ करौं धरि शीशा ॥
कहेउ धर्मसुत सकल खजाना । कञ्चन रौप्य रत्नमणिनाना ॥
धातु लोह ताम्रादिक जेते । अनुचर राखिदेहु निज तेते ॥
तुम्हरी सनदविना कोउ आवै । अपर कहा हमहूं नहिं पावै ॥
जहँ लागै जेहिभाँति विधाना । करेहु ताततहँनिज मनमाना ॥

धर्मायसु कुरुनाथ सुनि, बोलि सकल जन लीन ।
कञ्चन कोष विशालपर, राखि शकुनिकहँ दीन ॥

पुनि कुरुपतिगुरुसुतहि हँकारा । सौंपि रत्नमणि गण भण्डारा ॥
मम परतीति विना जन कोई । पावै धनद सुरेश कि सोई ॥
पुनि सौबल नरनाह बुलाये । रौप्य ताम्रके कोष सुहाये ॥
सकल सौंपि कुरुनाथहि दीन्हा । पुनि उल्का बुलाइ नृपलीन्हा
रहेउ जो धातु लोह सब भारी । कुरुपतिकीनताहि अधिकारी ॥

देखि धर्म्मसुत सकल बनावा। दुश्शासनहिं बहोरि बुलावा॥
मम हित तुमहि परिश्रम भाई। कहेउ दुशासन होई राई॥
सुनि असवचन भूपसुख माना। सौंपि दीन सब मोदीखाना॥
मोदी भवन दुशासन आये। थल प्रति शतशत वैश्य टिकाये॥
चिट्ठा सकल नरेशन केरे। आवहिं चले दुशासन नेरे॥
सनद पाइ पुनि मोदीखाना। जाइ तुलावहिं विविध विधाना॥

इहाँ धर्म्म नरनाह तब, विकरण लीन बुलाइ।

बसन कोष सौंपि सकल, कहि मृदु वचन बनाइ॥

बहुरि नरेश सुमंत बोलाये। सौंपि महिषि गोवृन्द सोहाये॥
द्विरदहि बहुरि बोलाइ नरेशा। सौंपि गयन्द यूथ उपदेशा॥
दुर्द्धर्षनहिं सो बहुरि बुलावा। सौंपि तुरङ्गम साज सोहावा॥
सहदेवहिं बोलि नरनाहू। भाजन भवन तात तुम जाहू॥
इन्धन धन गृह सकल जे भाई। राखि देहु तुम अनुचर जाई॥
शिविर शिविर प्रति शकट भराई। पठवहु जाइ न्टपनकहँ भाई
असकहि बहुरि धर्म्मधुर धीरा। जात भये रविनन्दन तीरा॥
कहेउ भ्रात यह काज तुम्हारा। कीजै कछु श्रम अङ्गीकारा॥
कह रविसुत मम कारज होई। माथे मानि करव हम सोई॥

धर्म्मनन्दकहँ यज्ञमहँ, दानकर्म्म वहु होइ।

तुम सबपर शिरताज हौ, करिय कृपा करि सोइ।

दुर्योधन आदिक जे करता। सबन बोलि कह पाण्डव भरता।

आयसु कर्ण करहिं जस जाहीं । फेरहु पल न करहु न नाहीं ॥
मांगहिं जो जब रविकुल केता । करब सकोच न सो तब देता ॥
रहिसुत कहेउ करन यह काजू । मख गृह गये धर्म्म महराजू ॥
जो यह बनी वस्तु विधि नाना । सेवा मधुर विपुल पकवाना ॥
नकुलहिं भूप कीन अधिकारी । लागे करन अनेक तयारी ॥
लिये चतुर विद्वान बुलाई । जिन देखे मख विपुल कराई ॥
जे सङ्कल्प ऋषिनके आगे । धरहिं ते बोलहिं चतुर सभागे ॥
आये मख ऋषि सहस अठासी । अपर विप्र जे गुणगणरासी ॥
तिनकर भोजनादि सेवकाई । सौंपि पार्थ कहँ धर्म्म जराई ॥
इहाँ कुलपतिहि सबहिं हँकारा । करण दुशासनादि सरदारा ॥

कहे दुर्वचन भीम बहु, द्रुपदसुता मम संग ।
कह नृप कीजे अवशि सोइ, यज्ञ होहि जेहि भंग ॥

ताते कर्ण अवशि शिर धरहू । दान प्रमाण त्यागि तुम करहू ॥
दुस्सासन हि कहेउ नरनाहू । विपुल सीध पठवहु सबकाहू ॥
विद्गा द्विगुण त्रिगुण करि दीजे । यश लीजे मख भङ्ग करीजे ॥
रहहि न देश कोष जब सोई । मखविध्वंस हँसी तब होई ॥
कहहिं न तब कोइ धर्म्महिराजा । चलहि न छल न बाजहिबाजा
यहिविधि भूपति आयसु दीन्हा । सादर सबनमानि शिरलीन्हा
विकरण कहेउ युगल करजोरी । सुनिये विनयकृपानिधि मोरी ॥
भीम द्रौपदी कृत अपराधा । नहिं न धर्म्मसुवनकृत बाधा ॥
यह अनर्थ सिर तासु विसाई । नाथलोक परलोक नसाई ॥

विहँसि नरेश कहो सुनु भ्राता। भीम समेत द्रुपदकी जाता॥
कीन्हेउ स्वल्प वचन अपराधा। धर्म्म नरेश प्रवल कृत बाधा॥
चाहत होन युधिष्ठिर राजा। होत भंग मम पद पति लाजा॥
वन्धु नीति अस कहति पुकारे। नहिं कल्याण शत्रु विन मारे॥
नीतिअधर्म्मनेकविचारिय। जेहिविधितेहिविधिशत्रुहिमारिय॥
जहँलगि चहिये करिये हानी। कहतपुकारिनीति असि वानी॥

सुनि भ्राता मुख वचन अस, विकरण रहे चुपाय।
नृप आयसु सव शीश धरि, चलत भयो शिरनाय॥

होतप्रात याचक गण जागे। जहँ तहँ वंश प्रशंसन लागे॥
आवहिं विप्र वृन्द वहुतेरे। चहुँ दिशि करत वितान घनेरे॥
सुनि अस शोर उठे तव जागे। देन दान रविनन्दन लागे॥
लेखक मन्त्री करण वुलाये। पत्र याचकन विप्रन पाये॥
कोउ तुरङ्ग गज कोउनिधिपावा। कोउ मणिहाटक भारसोहावा
भोजन वसन लहैं पुनि कोई। कोउ अतिरङ्क धनदसम होई॥
जहँ रविनन्दन चारि देवावहिं। याचक जाहिं वीस तहँ पावहिं
सवन दुशासन दीजे आना। वस्तु पठावत विन अनुमाना॥
चिद्वादिगुण त्रिगुण करि दीन्हे। देतकि वार वीसगुण कीन्हे॥
यहि विधि करहिं अधर्म्म अनेका। छूटन हेत धर्म्मसुत टेका॥

लखि अनरथ अति सात्यकी, हृदय परसदुख पाय।
सकल कथा विस्तारते, भीमहिं कह्यो वुझाय॥

भीम हृदय पुनि भो दुख भारा । आये देखि सकल व्यवहारा ॥
भयो रोष उर अति दुख पाये । सात्यकि सहित कृष्णपहँ आये ॥
कहेउ भीम हरि परम अकाजू । भयो नाथ युगलोक समाजू ॥
निपट यज्ञ यह अनरथमूला । हमपर भयो ईश प्रतिकूला ॥
असकहि कहेउ सकल इतिहासा । चलत न गद्‌गद विक्रमभासा
प्रभु यहि कृत्य योग जगमाहीं । सकत सुरेश धनद रहि नाहीं ॥
सुनि अस भीमहिं गह्वर जानी । धरहु धीर कह शारँगपानी ॥
कहत वृथा तुम हमहिं सन्देशा । कहहु जाइ जहँ धर्म्मनरेशा ॥
अब कीजै हम कौन उपाऊ । कीन्ह भूप करता कुरुराऊ ॥
कछु न होत अब कौन हमारा । करै भाग्य सब जो करतारा ॥
अब तुम कहहु नरेशहि जाई । मन भावत तस करैं उपाई ॥

बन्धु सकल अरु सचिवगण, बोलि भीम सब बात ।
कहत भयो गद्गद गिरा, सुनत गये जरि गात ॥

धर्म्मसुतहि सब दूषण देहीं । कौन कुसाज साज जिन जेहीं ॥
उठे भीम सँग सकल समाजा । चले जहाँ कुन्तीसुत राजा ॥
धर्म्मेन्द्रपहि कृत सकल प्रणामा । बहुरि एकान्त गये लै धामा ॥
लागे कहन भीम कर जोरी । सुनहु नाथ विनती इक मोरी ॥
कहेउ सात्यकी लखि अस रङ्गा । बहुरिकहेउ निजगमन प्रसङ्गा ॥
अनुचितसकलदेखिजिमिआये । सब प्रसङ्ग कहि सकलसुनाये ॥
पुनि जस वचन कहेउ भगवाना । कुरुपति केर कुकर्म बखाना ॥
सुनि अस सहमि भूमि नृप परेऊ । धीरधुरीण धीर पुनिधरेऊ

उठि बैठे नृप मञ्च विशाला। बोले भीम नाइ पद भाला॥
अब नरेश मोहिं देहु रजाई। कुरु अनुचर सब देउँ उठाई॥
जिनके कीरति जगत प्रशंशी। करिहैं काज सकल यदुवंशी॥

सांम्बसहित अनिरुद्ध, प्रद्युम्नादि कुमार जे।
ते सब विगत विरुद्ध, करिहैं कारज नाथ तव॥

जनि विचार कीजै नृप आना। इनकर उचित करब अपमाना॥
जो कदापि कर आयुध धरिहैं। तौ पुनि कठिनगदासम मरिहैं॥
मतिहग वंश वीर अस को है। रहै ठाढ़ मम सन्मुख जोहै॥
तुम नृप यज्ञकरो सजि साजा। मैं मदनाश करौं कुरुराजा॥
वेगि भूप मोहि देहु रजाई। देहुँ भगाइ कुरुपतिहि राई॥
यदुवंशिन प्रति यत्न एनिराखो। कीजै दूरि पाप अभिलाखो॥
सब विधि मूढ़ चहत उपहासा। मतिहगवंश करों सब नासा॥
कहेउ धर्मसुत चुप करि रहऊ। भूलि न बात बन्धु असकहऊ॥
जन्म प्रयन्त सदा निज जाना। करिय न काहूकर अपमाना॥
निज कृत कर्म मूढ़ फलपैहैं। हमहिं न रमारमण विसरैहैं॥
कहेउ भीम अबहींलग राजा। नहिं भारी कछुभयउ अकाजा॥
बड़ अकाज होई अब आगे। यह कुरुनाथ धर्मपथ त्यागे॥
आयसु देहु युधिष्ठिर राई। करौं वाद कुरुपतिसन जाई॥

कहउ भूप अनुचित न अब, बोलहु वश अज्ञान।
हम समेत कुरुनाथ कर, होत तात अपमान॥

निज मन माषहि कौरवराजू । ताते हम सौंपेउ सब काजू ॥
कहेउ न कछु यदुवंशिनपाहीं । गृहतजिअनतउचितअसनाहीं ॥
यहिविधिप्रिययदुवंशिनत्यागी । कौनआजु सो ममशिर लागी ॥
अब अपमान किये बड़ि हानी । रहहु चुपाइ तात असजानी ॥
परहितलागि होइ अपराधा । नहिं जग बुध करिहैं उपबाधा ॥
पर अपमान बचे निज होई । दोष न धरहिं विबुधगण कोई ॥
होइहि तात न हँसी हमारी । सदा सहायक गिरिवरधारी ॥
यह निश्चय आवत मन मोरे । तात तजहु परतीति न थोरे ॥
जे खल चहतु आन अपमाना । तिनकर सदा करत भगवाना ॥
अस जिय जानि शोक परिहरहू । यज्ञकाज सब प्रमुदित करहू ॥
होइहि सो जु करहिं भगवाना । तुमहिं हमारि शपथ पितुआना
अब नहिं प्रकट बात यह होई । राखहु सकल हृदयनिज गोई ॥
धर्मराजके वचन सोहाये । निजनिजकारज सकलसिधाये ॥

लखि अनरथ यदुवंशमणि, निज विचार मन कीन ।
आठौ सिद्धी निद्धि नव, बोलि सु आयसु दीन ॥

जे सब धर्मराज भण्डारा । होई तहाँ अब वास तुम्हारा ॥
निकसै कोटिन मग किन कोई । घटै न सो परिपूरण होई ॥
होइ भक्त मम काज न भंगा । करहिं न जग जेहिं अयशप्रसंगा ॥
ताते तुमहिं कहहुँ सिख एहू । धर्मज वास कोश अब लेहू ॥
करिहैं कुरुपति अति सेवकाई । निज यश हेतु द्रव्यपर जाई ॥
नहिं सनमानि सकै करिजासू । करेहु विविधतुम आदरतासू ॥

सो हमहूं तुमहूं मिलि कीजै। लेश कलेश न भक्तहि दीजै॥
कीन्ही विदा सौख दै भूरी। सब भण्डार भयो भरि पूरी॥
निकसतसकलवस्तुविधिकोटी। कोषप्रमाण होत नहिं छोटी॥
यह चरित्र कीन्हे भगवाना। मर्म न दूसर जानत आना॥

धर्मज भट निज यूथ सँग, गये देखि सब कोस।
सुमिरत यदुनन्दनचरण, पुनि पुनि करत भरोस॥
आयो दिन शुभ यज्ञकर, गहगह हने निशान।
मखमण्डलमहँ धर्मसुत, प्रातहि करि असनान॥

प्रथम विभूतिसुखदसबकाला। तापर डासि नागरिपुछाला॥
कुश आसन मृगचर्मसोहावा। चित्रगलीचा अतिसुखपावा॥
द्रुपदसुता अरु पति जगतीके। पहिरे यज्ञ विभूषण नीके॥
वेद मन्त्र द्विजकरहिं उचारा। आसन धर्मराज पगु धारा॥
जहँ तहँ विपुल बाजने बाजे। आसन धर्म नरेश विराजे॥
प्रथम भूप पूजे गणनायक। सोहत साथ आपु कुरुनायक॥
जहलागत मणि कञ्चन काजू। तहँ हर्षत बहु कौरव राजू॥
ऋषिगण देव पुजावन लागे। चक्र नवग्रह अति अनुरागे॥
यज्ञ क्रिया जस वेदन वरणी। धर्मनरेश करत तस करणी॥
श्रुति मारग जसपूजन कयऊ। यामचारि गत वासर भयऊ॥
हवनसमय अब अति नियराना। आवन लगे महीपति नाना॥
मख मण्डल देखन तेहिकाला। आये सहदेवहि शिशुपाला॥

यातुधान लखि सहित समाजा। कर गहि बैठारत कुरुराजा॥
बहु सनमान करत महिपाला। बैठारे जहं मञ्च विशाला॥
तेहि अवसर आवत भये, नरनाहनके वृन्द।
बैठारत शकुनी करण, कुरुपति सहित अनन्द॥
भीषम द्रोण विदुर तब आये। कर गहि दुश्शासन बैठाये॥
मगहराजके बान्धव आये। आसन परम सुहावन पाये॥
जिनकी कीरति जगत प्रशंशी। तेहि अवसर आये यदुवंशी॥
आसव पिय हल आयुध हाथा। तेहि पाछे आवत यदुनाथा॥
उद्धव सात्यकि सहित कुमारा। कर गहि भीम पार्थ बैठारा॥
लागेउ होन हुताशन काजा। ग्रन्थि निवन्धनकर महराजा॥
कृपाचार्य कुरुपतिहि बखाना। अब नृप समय आइ नियराना॥
नृप शिर तिलक करै अब कोई। राजसूय करता तव होई॥
तासु पखारि चरण नरनाहू। करै वहोरि वरण सबकाहू॥
सकल तिलक भूपति शिरकरई। तव नरनाह श्रुवा अनुसरई॥
कुरुपति वालमीकिसन, कहेउ वचन शिर नाइ।
नाथ तिलक करि यज्ञहित, लीजै चरण धुवाइ॥
कहेउ आदिकवि कश्यपहि, तिन घटसुतहि सुनाइ।
यहि विधि सब सबसों कहत, उठत न कोउ ऋषिराइ॥
कहेउव्याससवऋषिअसकहहीं। सकलभुवनपति सोहतअहहीं॥
तिनहिं विलोकत उठत न कोई। आवै जो सवविधि वड़होई॥
प्रथमहि उठैं रमापति आछे। सब ऋषिवृन्द आइहैं पाछे॥

कहे भीम अब वेगि खरारी। उठत न होत अकारजभारी॥
सुनि अस धर्म्मराज रुख पाई। ठाढ़ भये उठि सहज सुहाई॥
त्यागि मञ्च मन अति हर्षाई। मृगपति ठवनि चले यदुराई॥
लखिशिशुपालक्रोधअतिकीन्हा। चर्म कृपाण हाथ गहिलीन्हा॥
गरजि जलदइव गिरा गंभीरा। कहेउ नीच सुनु रे यदुवीरा॥
नहिंजानत निजजाति प्रभावा। सकलसभामहँ उठिशठ धावा

अब जनि पग आगे धरहु, नतु मम चलत कृपान।
तासु वचन अवलोकि तव, ठाढ़ रहे भगवान॥

कुरुपतिआदि कुटिल मनहरषे। मानभङ्ग लखि हलधर मरषे॥
चहत ताहि मूशलगहि मारन। पुनिपुनि उद्धव करतनिवारन॥
फरकत यदुवंशिनके बाहू। जहँ तहँ सब बरजैं सबकाहू॥
करत कोप शिशुपाल समाजा। वरजिवरजिराखत ऋषिराजा॥
थरथर कांपत सव नर नारी। कहहिं होत यह अनरथ भारी॥
विकल होत अति धर्मजराजा। सवविधिआपन जानिअकाजा॥
भीम कहेउ मृदु वचन सुनाई। दमघोषक सुत रहो चुपाई॥
जनि दुर्वचन कहिय अब भारी। होई अनरथ निपट पछारी॥

भीम वचन दमघोषसुत, सुनि कछु कान न कीन्ह।
कहेउ दुर्वचन बहु हरिहि, प्रभु कछु उतर न दीन्ह॥

रे शठ निपट जातिकरहीना। नागनगरते भये कुलीना॥
सनकादिक ऋषि वन्दन आगे। रच्छक कानि न कीनि अभागे

हम बैठे सब विपुल भुवारा। ज्येठ बन्धु कहँ लघु करि डारा॥
बड़ आश्चर्य्य द्विजनके आगे। चरण अहीर धुवावन लागे॥
अब द्विजवृन्द भये पुनि कैसे। शूद्र न मानत गुरुकहँ जैसे॥
प्रथम ग्वालगृह प्रकट अभागा। पुनि यदुवंश कहावन लागा॥
भयो वर्णसङ्कर जगजाना। सबकर मूढ़ करत अपमाना॥
सुनि कटु वचन उठे यदुवंशी। राखहिं उद्धव आदि प्रशंसी॥
पारथ भीम आदि सब योधा। कहत न कछुक जरत उरक्रोधा॥

निज मन्दिर लखि आगमन, कछु न कहत तेहि पास।
शोचविवश नृप धर्मसुत, लखि यदुनन्द उदास॥

हर्ष विवश कुरुनायक आदी। विस्मयवशसबऋषिसनकादी॥
सुनहु तात कह नृप मृदुबानी। रहहु चुपाइ काज निजजानी॥
मख विध्वंस होइ मम ताता। तुमकहँलाभ कवनि बड़िवाता॥
वचन न मानत धर्मजकेरे। कहत हरिहि बहुवचन करेरे॥
घूमि बैठु निज आसन जाई। नत ह्वै है मख भङ्ग लराई॥
धर्म्म नरेश बन्धु युत नीचू। धोवत ग्वालचरण मखबीचू॥
हरि उदास सुनि बचन तिरीछे। आगे चलत न घूमत पीछे॥
देखि दशा यदुनन्दन केरी। करुणा हृदय हलधरहि घेरी॥
सहि न सकत गहिउद्धव राखत। पुनिशिशुपालवचनअसभाषत

विप्रवृन्द की कानि तजि, चरण धुवावन जात।
वीरहीन जानै अवनि, मूढ़ न मन खिसियात॥

यहिविधि कहतविपुलदुर्ब्बादा । बिनघन होत गगनमहं नादा
भा दिग्दाह उलूक पुकारे । महि डगमगत उदित भे तारे ॥
यातुधान कटु कहत अनेका । कृत अपराध अधिक शत एका ॥
बोलन चहत अपर कटुवानी । कहेउ सदूषतब शारंगपानी ॥
अब रसना जनि चपल चलाई । नत जैहै शिरसहितउड़ाई ॥
कहिअसवचन नयन रतनारे । कालरूपकर चक्र सँभारे ॥
लागेउ घूमन चक्र कराला । कहेउ वचन गम्भीर कृपाला ॥
अब न वचन निकसै मुखतेरे । नत जैहौ यमसदन बसेरे ॥
सुनि कर गहेउ चर्मकरवाला । कहि दुर्वचन उठे शिशुपाला ॥
जातुधानभट उठेउ सरोषा । यदुजनअस्त्रगर्हाहिकरिरोषा ॥
पारथ कापटि धनुष गुणदीन्हा । गदा उठाइ पवनसुतलीन्हा ॥
मख दीक्षित नृप रक्षण हेतू । गये युगल भट पहुँचि सचेतू ॥
कापटि कार्पटिभटआयुध गहहीं । धरुधरु मारुमारु धरु कहहीं ॥

भीष्म द्रोण शकुनी करण, दुर्योधन नरनाह ।
ठाढ़ सजग जहँ धर्मसुत, जासु भङ्ग उत्साह ॥

विकल धर्मसुत धरै न धीरा । उमहे यातुधान यदुवीरा ॥
रक्षणमग्न समाज अपि धीरन । कुरुपति ठाढ़कियेनिजवीरन ॥
भीम दुशासनादि भट भारी । रक्षहिं यज्ञ समाज सुखारी ॥
अस मन चाहत कौरवराजू । होइ महामख भङ्ग समाजू ॥
गजपुर भयो कोलाहल भारी । मनहुँ प्रवेश कीन यमधारी ॥
विकल शोकवश भव अजाता । मोहिं दारुणदुख दीनविधाता ॥

कुन्ती आदि सकल नरनारी । विकल होहिं निजकर उरमारी ॥
व्यासआदि सब धर्मनरेशहि । समुझावत करि बहु उपदेशहि ॥
इहाँ होत बहु हाहाकारा । दामिनि सम दमकहि असिधारा ॥
विपुल सहायक जे भटभारी । आइ गये शिशुपाल पछारी ॥
बहु यदुवंश सहायक राजा । आये साजि बजावत बाजा ॥

हल मूसल निज पानि, गहेउ रेवतीरमण जब ।
परम रोषवश जानि, उद्धव करत प्रबोध बहु ॥

केवल एक छाँड़ि शिशुपाला । अपर न होइ जीव वशकाला ॥
जबलगि तुम नहिं करौ प्रहारा । चलौ न अपर मनुज हथियारा
ह्वै सरोष भय देहु देखाई । यातुधान जेहि जाइँ पराई ॥
जेहि विधि धर्म जाइ मखभङ्गा । होइ तात सोइ तजिय प्रसङ्गा
परम चतुर उद्धव मुख बानी । हलधर लीन्ह सकल शिरमानी ॥
उत शिशुपाल प्रचारत आवा । बार बार हरि चक्र फिरावा ॥
पाणि सुदर्शन भेष कराला । डरत न कटुक कहतशिशुपाला ॥
प्रलय समय जिमि शङ्कर केरे । तेहि प्रकार हरि नयन तरेरे ॥
त्यागेउ हरि बहुवार भ्रमाई । करत रमापति शत्रुदोहाई ॥
रवि सम तपत सुदर्शन धाये । दनुजन देखि महा भयपाये ॥

ताके कण्ठ सुदरशन, घूमेउ बार हजार ।
शीश काटि प्रभु रुख निरखि, गयो विष्णु आगार ॥

शीश विहीन रुण्ड महि परेऊ । देवन देखि सुमनझरि करेऊ ॥

यदुवंशिन असि चर्म उठाये। दनुजन देखि महाभय पाये॥
मूशल पाणि गहेउ हलधारी। दनुजन देखि भयो भय भारी॥
अति भयभीत निशाचर भागे। पीछे यदुवंशीगण लागे॥
चपरि सँभारि समरसमुहाहीं। चलत न अस्त्रभाजिजेहिजाहीं॥
यहिविधि निशिचरनिकर पराने। जहँ तहँ गये जात नहिं जाने
धावन धर्महिं खबर जनाई। नाथ विजय यदुनन्दन पाई॥
चक्रपाणि गहि रूप कराला। काटेउ दमघोषक सुत भाला॥
भयवश देखि अमित प्रभुताई। गये निशाचर सकल पराई॥
खण्डित शीश परेउ शिशुपाला। महाराज भूतल यहि काला॥

सुनत मर्षि कह धर्मसुत, हरि यह नीक न कीन्ह।
अपर कहहु केते सुभट, यमपुर शासन दीन्ह॥

एक चैद्य विन कह हलकारा। अपर न गयो युगल दिशिसारा॥
सुनि सरोष भय कुरु नरपाला। भ्रुकुटीकुटिलविलोचनलाला॥
फरकत अधर कहन अस लागे। द्रौणी द्रोण धर्मसुत आगे॥
उचित न मखमण्डलमहँ ऐसो। भई पितामह बात अनैसो॥
मखहित प्रथम निमन्त्रण दीन्हा। भवन बुलाइ तासु वध कीन्हा
यज्ञादिक कारज यश हेतू। अपयश पूरिरह्यो भरिखेतू॥
मख विध्वंस भयो सब भांती। निपट बन्धु ये वंश कुजाती॥
तात यत्न कीजै अब सोई। अपयश भंग जौन विधि होई॥
करिय साज सजि समर बहोरी। जेहि संसार धरै नहिं खोरी॥
नतु महि हीन होइ यदुवंशी। की जग रहैं न कुरु कुलवंशी॥

द्रोण पितामह सजग हैं, गहहु हाथ हथियार ।
होइ नाश यदुकुल सकल, नतु अब वंश हमार ॥
सन्मुख समर यदुन सन लेहू । जियत न जान द्वारकहि देहू ॥
महारथिन निज धनुष चढ़ाये । सजग भये नृप आयसु पाये ॥
निजदल नृप संदेश पठावा । करहु समरहित सकल बनावा ॥
धर्म्मराज रुख लखि सब भाई । सजग ठाढ़ भे धनुष चढ़ाई ॥
दीख विदुर भा अनरथ भारी । आयो धर्म्म नरेश पछारी ॥
कहउ गुप्त यह अनुचित ताता । उचित तुमहिं नहिं शत्रुअजाता
बिन शिशुपाल हेतु मखरच्छा । अपर वीर हरि वधे न इच्छा ॥
यदुपति सदा करत हित तोरा । करत शत्रुवत अन्धकिशोरा ॥
सब विधि चहत तुम्हार अकाजू । ताते सजत समरहित साजू ॥
हरि तब यज्ञ सफल करवैहैं । नृप निज चलत बिगार करैहैं ॥
सुनि असवचन भीम मनमाना । भूप विदुर सब सत्य बखाना ॥
दुष्टनृप कुरुनाथ स्वभाऊ । है हमरे सब कछु यदुराऊ ॥
पठै संदेश द्रौपदी रानी । हरिसनसमर किये बड़ि हानी ॥
धर्म्मराज सुनि सुनि वचन, निजमन करत विचार ।
हरि वियोग इत अयश उत, उरदुख दुसह अपार ॥
पुनि धीरजधरि धर्म्म नरेशा । कह्यउ विदुरमत भल उपदेशा ॥
कह सुतधर्म्म पितामह पासा । नाथ तुम्हार सदा हम दासा ॥
अब करि यतन करहु प्रभु सोई । मखरच्छा अबते कछु होई ॥
तुम कुरुपतिहि देउ समुझाई । जेहि न होइ हरिसंग लड़ाई ॥

कहेउ बात भलि जस मनमोरा। मैं समभावौं अंधकिशोरा॥
अस कहि भीष्म तहां पगुधारा। जहं कोपत कुरनाथ भुवारा॥
नृपहि पितामह बहु समुझाये। सहित समाज धर्म्मपहं आये॥
कहत काह पूंछत कुरुनायक। कहेउ नरेश होइन्यहि लायक॥
अब यह विमल पितामह बानी। हमतुम सकलकरिय शिरमानी॥
कह कुरुनाथ उचित मत एहा। समर सरोष त्यागि सन्देहा।
जिन नहिं नेकु कानि मममानी। दीन उतारि चरणकर्मे पानी॥

नीच होत तौ वध उचित, तुल्य समर अब योग्य।
अपर यतन करि अयशते, कबहुंन होव अरोग्य॥

बाहुलीक कह सुन नृप बानी। सत्य विवेक धर्म्मनयसानी॥
जेहि सब बधेउ दनुजकुल टीका। करब तासु असकहबननीका॥
जबते भा हरि जन्म पुनीता। बधत बली दुष्टन कहं बीता॥
को जग मिलहितुमहिं समयोधा। करत समरयदुपतिहिप्रबोधा॥
हरिसन जे भट रणकृत भारे। मानुहुं मरे प्रथमके मारे॥
तातसमुझि परिहरहु कुमतिही। सोह नसमर तुम्हें यदुपतिही॥
चलिहि न विक्रम सहित सहाई। नाहक प्राण गंवैहौ जाई॥
चलिहि चक्र हल मूशल नाना। हरि हलधर करिहैं घमसाना॥

तब कहिहौ पछिताइ हम, काह कुमारग कीन्ह।
तेहि अवसर हलधर सहित, यदुपति दर्शन दीन्ह॥

गहे राम हल मूशल हाथा। आगे तेहि पीछे यदुनाथा॥

चर्म्म कृपाण गहे कर माही। उग्ररूप छूटत रिस नाहीं॥
यादव सात्यकि दुहुंदिशि आवत। अस्त्रगहे बहु यदुपति धावत॥
कहेउ कृपालु धर्म्म श्रुति पांहीं। हम शिशुपाल वधे मखमाहीं॥
यदपि भई यह बात अयोगू। दोष तुम्हार न देहैं लोगू॥
अब तुम साजसाजि मख करहू। जनि विस्मयमन रञ्चक धरहू॥
नत कीजै हमहूं तुम सोई। कहहि वचन कुरुनायक जोई॥
जो दमघोष सुवनकर अंगू। होइ जो प्रकट करै रणरंगू॥
मृतक परेउ जो महि शिशुपाला। ताहि पठावहु भुवनभुवाला॥
सङ्ग करहु सेनापति जाई। आवहिं दण्ड वांधि वरि आई॥
जे नृप दण्ड चैद्य कहं देता। पठवहु निजचर सेन समेता॥
आवहिं दण्ड सवनप्रति वांधी। भूप भई महि त्रिगत उपाधी॥

धर्म्मराज सुनि हरि वचन, कह अस उचित न नाथ।
वध बुलाइ करि दण्डहित, पठइय निजजन साथ॥

तासु तनय वध समुझि दुखारी। पुनि यहदण्डविपतिबड़िभारी
कह प्रभु उचितजीति कहबाता। नृपकह दण्ड विचारन ताता
निज सेनापति भूप बुलावा। कहेउ यथा हरि आयसु पावा॥
आवहु दण्ड वांधि सव तेरे। नहिं शिशुपाल सुतनके नेरे॥
गुप्त कहेउ यह हरि नहिं जाना। चैद्य राखि रथ कौन पयाना॥
माहिष्मती नगर पहुंचाई। लीन्हें छांड़ि अपर भुवराई॥
कह शिशुपाल सुतनते एहू। हो अदण्ड तुम दण्ड न देहू॥
अपर नरेश करै कोउ भीरा। वेगि जनावत धर्म्मज तीरा॥

सब हम करब सहाय तुम्हारी। धर्म दोहाय नगर तव भारी॥
अस कहिबहु विधिधीरजदीन्हा। आपु गमन हस्तीपुर कीन्हा॥

इहां तुरत यदुवंश मणि, आयसु दीन कराय।
बाजे विविध निशान घन, सबन दीन बैठाय॥

याम निशागत यह सब भयऊ। पुनियदुनाथ महामख ठयऊ॥
जस मखमारग वेदन वरणा। कीन धर्मसुत तव आचरणा॥
भयो तिलक पूर्णाहुति कीन्हा। छत्र धराय राज्यपद दीन्हा॥
बाजे विपुल शङ्ख घरियारा। भेरि धेनु मुख पवंरि दुवारा॥
विपुल दान द्विजवृन्दन पाये। ऋषियन अशन पान करवाये॥
भे वकशीश याचकन भारी। शतयोजन नहिं रह्यो भिखारी॥
जहं जहं वारमुखी वहु नाची। नगर नगारेकी ध्वनि माची॥
कछुदिन सबहि राखि नरनाहा। करि सतकार समेत उछाहा॥
नृपन विदा हित आयसु मांगे। चलती वार निपट अनुरागे॥
साजि वाजि गज वाहन नाना। दुर्योधन दल कीन पयाना॥
फिरे पाण्डुनन्दन पहुँचाई। उद्धव राम सहित यदुराई॥
वाहुलीक पद पुनि शिरनावा। गङ्गसुतन ते आशिष पावा॥
विदुरहि मिलत नाय जगतीके। भेंटत राम कृष्ण अतिनीके॥
कीन्ह विदा अति पुलक शरीरा। गे सुतधर्म द्रोण गुरु तीरा॥

गुरुहि नाय शिर भेंटि पुनि, अति हित द्रोणकुमार।
मगमहँ मिलि रविनन्दनहिं, जात भये आगार॥

यदुवंशिन मिलि धर्म भुवारा। कीन्हेउ अशन अनेक प्रकारा॥
सकल बहोरि सभामहँ आये। कोउ विश्राम करत सुख पाये॥
कोउ खेलत बहु पंसासारी। खेलत कौतुकको बलभारी॥
देखत नृत्य गान सुन कोऊ। कोउ मृगयाहितसजतसजोऊ॥
हरि हलधरयुत धर्मनरेशा। लखि मन सकुचत कोटिसुरेशा॥
जेहिमारग निकसत कुरुचन्दा। देखिपरत बहु याचकवृन्दा॥
आवत लखि कुरुनाथ सवारी। कहहिं प्रशंसि प्रचारि प्रचारी॥
दुर्योधन आदिकन सुनाई। करैं धर्मसुत केरि बड़ाई॥
काहे न होहिं धर्मसुत भारी। जिनके तुम समान भण्डारी॥
दानकृपाण निपुण सब भाँती। भूप दशा कैसे कहि जाती॥
जासु किङ्करन के मन ऐसे। आपु नरेश होहिं धौं कैसे॥

रहे न जगमहँ रङ्क कोउ, सब नर धनपद पाव।
तासु कोशकीरति विमल, कहहु मनुज किमिगाव॥

कुरुपति धर्मसुयश सुनि कानन। विहरतहृदय मनहुँ पविवानन
अतिसकुचतजनुश्रवनिसमाई। यहिविधिकुरुपतिमन्दिरजाई॥
करत बनै नहिं काज नशाना। पुनिपुनिधृगनिजजीवनजाना॥
विभव विलोकि युधिष्ठिरकेरा। कुरुपति उर संशयकृत डेरा॥
प्रातहि उठे धर्मसुत राजा। हलधर कृष्ण समेत समाजा॥
बैठ सभा मन्दिर महँ जाई। दूतनकही खबरि असि आई॥
प्रभु अब नागनगर भल बसई। अमरावती जानि लघु हँसई॥
अब कोउ रङ्क न अस यहि ग्रामा। तुमते हीन जासु गृहसामा॥

सबके गृह मणि कञ्चन रासी । दास अनेक अनेकन दासी ॥
गज रथ चपल तुरङ्गम छाये । गृहगृहजनुहरि धनद बसाये ॥
प्रथम जयति तव जयकरण, जय कुरुनाथ भुवाल ।
कहहिं परस्पर रङ्क ते, जिन कीन्हों धनपाल ॥
धर्म्मराज तव दान पताका । विदित रसातल भूतल नाका ॥
दूतवचन सुनि अतिसुखमाना । बहुरि नरेश करत अनुमाना ॥
कहत दूत सब जो निधि मेरे । भे तस रङ्क नागपुर केरे ॥
यहि मन्दिरते जिमि मैं एका । प्रगट तथा धनवान अनेका ॥
नेक कोश मम भयो न खाली । दानदशा सुनि भूतल हाली ॥
सो यह द्रव्य कहाँते आई । पूंछेहु भीमहिं भूप बुलाई ॥
सुनि नृपवचन पवनसुत हाला । कहेउ भयो यदुनाथ दयाला ॥
सत्य तुम्हारि समुझि मनमाहीं । त्राता अपर दीख कोउ नाहीं
देखि अनाथ दया प्रभु कीन्ही । राखिलाजकरुणानिधिलीन्ही
कुरुपतिचहत भङ्गमख कीन्हा । कृपासिन्धु सोइ करै न दीन्हा
रही प्रीति उर छाइ, यदुपतिकी करणी समुझि ।
दशा न सो कहि जाइ, जोरि पाणि विनवत हरिहि ॥
जय राधावर हलधरसोदर । जयतिदयानिधि जय दामोदर ॥
जय जय जय वृन्दावन वासी । लक्ष्मीपति वैकुण्ठनिवासी ॥
निज जन हेतु सदा तुम त्राता । ममपतिराखिलीनतुमजाता ॥
हलधर सहित जयति जय जोरी । राखेउ लाज दयानिधिमोरी ॥
सुनत वचन कह दीनदयाला । रही तुम्हारि लाज सब काला ॥

तुम सरीख जे भूतल राजा। नहिं तिनकर नृप होत अकाजा ॥
कह नृप नाथ सुनौ गिरिधारी। एक हृदय मम संशय भारी ॥
चैद्य जाहि निजधाम पठावा। रोष मोहिं केहि कारण आवा ॥
विदुर बुझाइ कह्यउ ममपाहीं। तब सन्तोष भयो मनमाहीं ॥
हँसि बोल्यउ यदुवंशमणि, तुमहिं उचित यह भाव।
नीतिधर्म उर वसत है, कस न रोष उर आव ॥
जो नृप होत अज्ञ अविचारी। करत न रोष सभय लखिरारी ॥
आवत जहाँ निमन्त्रण दीन्हें। शत्रु मित्र तहँ उचित न चीन्हें
अनुचित खोरि धरत सबलोगू। समता तासु कहत वधयोगू ॥
यशहित भूप यज्ञ तुम ठयऊ। अयशविलोकि क्रोधउरभयऊ ॥
तदपि नीच असज्यहि थल पैये। करिय विनाश विचार न लैये
कौन क्षमा तुम अस जिय जानी। यह वधयोग अमङ्गलखानी
सुनि नृपधर्म परम सुखपाये। हलधर कृष्ण समेत नहाये ॥
उद्धव सात्यकि राम सोहाये। प्रथम कृष्ण कुन्ती गृह आये ॥
अशन पानकरि सहितसमूहा। माँगी विदा चले दल जूहा ॥
बहु प्रकार रानीन मिलि, कुन्ती पद शिर नाय।
प्रद्युम्नादि कुमार जे, माँगत सबहि रजाय ॥
चढ़े सकल निज निज रथन, चले निशान वजाय।
पुर वाहर लग धर्मसुत, फिरत भये पहुचाय ॥
गये द्वारकहि जब यदुराई। बैठे सभा धर्मसुत आई ॥
करहिं धर्मसुत राज्य सखारी। सुखरुख जोगवत बान्धव चारी ॥

अभिमनु आदि विलोकि कुमारा। लहत मोद मन धर्म भुवारा
यक दिन वाजि चढ़े नरनाथा। सुभट समाज चले वहु साथा॥
अश्ववाहु वन्धु वर चारी। धाये वन्दी विरद उचारी॥
अभिमनु आदिक साथ कुमारा। महिषमती नगरी पगुधारा॥
आगे मिल्यउ चैद्यसुत आई। कीन अनेक भाँति पहुनाई॥
अभय वाहँकरि ताहि वसाये। कहि अवण्ड नृप निज पुर आये॥
धर्म नरेश जानि सव लायक। दण्ड पठाइ देहिं नरनायक॥
यहिविधि विपुल प्रताप नृप, वसत नागपुरमाहिं।
सवशसिइ लखि जासु गति, धनद यक्ष सकुचाहिं॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

जनमेजय कह ऋषि कहहु, सकलकथा विस्तारि।
परमप्रीति कुरु पाण्डवन, नाथ भई किमि रारि॥
कह ऋषि सुनु नृप गजपुरवासी। कुरुपाण्डवचरित्र सुखरासी॥
सुनत होइ नर विनय प्रयासा। सिद्धि कामना सुरपुर वासा॥
आयो देखि धर्म मख जवते। निशि न नींद कुरुनाथहि तवते॥
वन्धु विभव लखि परम उदासा। यतन विचारतकेहिविधिनासा
गजपुर दूसरि फिरत दोहाई। सुनि जरिजात गात कुरुराई॥
यकदिनकुरुपतिसचिव वोलाये। शकुनी करण दुशासन आये॥
पूछत सवही कुरुकुलदीपा। होइ नाश जेहि धर्म महीपा॥

कीन्ह सबनमिलि यह मत ठीका। जोरि समूह समर अब नीका
कीजै सकल बन्धु अब घेरी। चहुँदिशि धर्मज भवन गरेरी॥

पितहि पूंछि अनुचित उचित, तस कीजै तब काज।
उचित मन्त्र शकुनी कह्यो, सबके मन म्हल भ्राज॥

कर्ण दुशासन नृपमन माना। बुद्धिचक्षु पहँ कीन पयाना॥
सञ्जय दीख कि कुरुपति आये। करि सतकार विविध बैठाये॥
मलिङ्ग चरण धरे सब शीशा। पावहिं मनभावती अशीशा॥
शकुनी कह्यो सुनौ महराजा। तुम्हरे सुतहि रोष बड़ लाजा॥
पाण्डव सभा प्रबल इन देखी। अति विस्मय बश रूपविशेखी॥
तहँ कछु भूप भयो अपमाना। तातें दुर्योधन दुख माना॥
होत अवज्ञा गजपुर माहीं। भीमकानि मानत कछु नाहीं॥
एक राज्य महँ मे दुइ राजा। कौन मन्त्र यह जानि अकाजा॥
दल बटोरि कीजै रणरीती। लीजै धर्म्म नरेशहि जीती॥

बन्धुमित्र अरु पुत्र सब, थल गरेरि करि नास।
देश कोष लीजै सकल, धर्म्महिं यमपुर वास॥

सुनिमलिङ्ग शकुनी मुखवानी। बोले वचन देखि बड़ि हानी॥
मन्त्र तुम्हार हमहिं नहिं भावत। ईशत्राम अस वचन कहावत
समर दक्ष जिनके मन ऐसे। जीते जाहिं पाण्डुसुत कैसे॥
जिनके साथ सदा बनवारी। करि न सकहिं रण शक्र प्रचारी॥
लरिकाई खेलत नहिं हारे। तासु न बिगरहि वात बिगारे॥
जीति सकहि को धर्म कमारा। जहँ जगदीश आपुरखवारा॥

उनते समर न पैहौ पारा। अब सुत जनि यह करहु विचारा॥
धर्मराज अपराधविहीना। करत तात तुम मन्त्र अलीना॥
सुनि शकुनी बोले बहुरि, भूप कही भलि बात।
हारि जीति कीन्हें समर, कुरुपति जानि न जात॥
दूरतकर्म्म हमनिपुणौ कुरुपति। पंसासार ख्याल अद्भुत गति॥
कपट अक्ष भावै मन जोई। सुनहु नरेश परै तब सोई॥
कपटभेंट पाण्डवन बुलाई। जीति लेब सब अक्ष खेलाई॥
ऐहैं धर्म्म महीपति आछे। युद्ध जुवां पग धरै न पाछे॥
देश कोष नृप सकल लगाइहि। जीति लेब सब रहिनहिं जाइहि॥
युद्ध किये पाण्डव नहिं हरिहैं। उनकर पक्ष कृष्ण तब धरिहैं॥
जीते ख्याल न बढ़िहि विरोधू। कही न कोउ अनुचितकर क्रोधू॥
भूप हमारि मानि सिख लीजै। अपर बात जनिचित्त धरीजै॥
कपट भेद करि पाण्डवन, जीतहु देहु निकारि।
एकछत्त महि भोग बहु, रहै न कण्टक धारि॥
सुनिकुरुपति मनभयो अनन्दा। जनु चकोर पायो निशि चन्दा॥
पुनिपुनि शकुनीकेरि बड़ाई। करै लाग कुरुपति हर्षाई॥
भलगुण तात शुभकरि राख्यो। ममहित हेत तानसोइ भाख्यो॥
नीक लाग मत अन्ध नरेशहि। पुनिपुनि शकुनीकह उपदेशहि॥
पूछहु तात विदुर पहँ जाई। परम भक्त गुणनिधि मम भाई॥
यादवकुल जिमि उद्धवज्ञानी। तिमि कुरुवंश विदुर सज्ञानी॥
तब कुरुनाथ विदुरगृह आये। शकुनि दुशासन सङ्ग सोहाये॥

देखि विदुर मन अति अनुरागा । आसन दीन रजायसु मांगा ॥
शकुनी वरणि कहेउ सब साजा । तुमहिं मन्त्र पूंछत कुरुराजा ॥

उनकहँ दीन्हेउ विभव विधि, तुम जनि करहु खंभार ।
निज सेवाते कौन वश, केशव जो करतार ॥

विदुरवचन कुरुपतिहि न भाये । तुरत पितामहके गृह आये ॥
करत प्रणाम धरणि धरि शीशा । देखि गंगसुत दीन अशीशा ॥
सत्यव्रत के बैठ समीपा । कही कथा कौरव कुलदीपा ॥
जो तुम सुत पूछहु मम हीका । कहब रहा अस कहब न नीका
नृपमुखवचन चहिय नयलीन्हें । राज्य न रहत ताहि तजि दीन्ह
भल न रिझाउब इन बातनते । जीत न उनके उतपातन ते ॥
जस उन सुभट समर महिजीते । मख कारज कीन्ह मन चीते ॥
अस मखयहिकुलकाहु न कीन्हा । जगउठिगयो याचकनचीन्हा
मरेउ न हरि हलधरके मारे । युग करि जरासन्ध ते फारे ॥
को अस सुभट भयो यहि वंशा । जासु करिय बहुवार प्रशंशा ॥

जे नर मानत जीति निज, हारि मानि तिमि लेत ।
विदित करहिं जय अजय तजि, तेहियमभलिसिखदेत ॥

तुम अब तात रहउ चुपसाधी । जनिकीजै करि यतन उपाधी ॥
यह मत नृपतुम अस ठहरायो । करिसोवत जिमिसिंहजगायो ॥
भीष्मवचनकुरुपतिसुनिलीन्हा । नाहिन कछुप्रतिउत्तरदीन्हा ॥
उठिपुनि शकुनीसहितनरेशा । विषसम लाग अमियउपदेशा
कीन्ह द्रोणकहँ दण्डप्रणामा । लहेउ अशीश होइ मनकामा ॥

कहि शकुनी सबहेतु सुनावा। द्रोण द्रोणसुत मनहिं न आवा॥
भरद्वाजसुत कह सुनु राजा। हमतुम्हार वांछित शुभकाजा॥
आयसु जासु रमापति करई। तासु पराजय समुझि न परई॥
करहु न सो दुर्योधन राजा। जेहि पीछे बड़ होइ अकाजा॥

गुरुमुख वचन नरेश सुनि, जानी जनकी बात।
शीश नाइ मांगी विदा, गये जहाँ रविजात॥

आदर वहुत तरणिसत कीन्हा। रत्न सिंहासन आसन दीन्हा॥
कहेउ रजायसु होइ नरेशा। प्रभु आगमन मोहिं अन्देशा॥
तेहिअवसर कुरुपति सुखपाई। शकुनी विधिवत कथा सुनाई॥
कह रविसुत नृपसनु मतमोरा। बोलि लेहु सब भूप किशोरा॥
यमघट कालनिशा नियराई। कार्त्तिक मास शरदऋतुपाई॥
खेलत द्यूत सकल संसारा। तबहिं बोलाइहि पाण्डुकुमारा॥
लखि नहिं परहि कपट चतुराई। यह सलाह रविसुत मनभाई
दुर्योधन सुनि अति सुखमाना। पुनिपुनि भेंटत करत वखाना

आतुर उठि शकुनी करण, मग कृत वाकविलास।
सबलसिंह कह तब गये, गंधारीके पास॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

कीन्ह प्रणाम मातुपद भूपति। दैअशीशआसनप्रमुदितअति॥
कहेउ मनोरथ निज नरनायक। करिय न तात बात वेलायक॥

दीन्हो देश तुमहिं ठकुराई। बैठ रहहु निज भवन चुपाई॥
सुतजगजन्म सफलकरिलीजै। बन्धु विरोध कदापि न कीजै॥
मातु वचननृप मनहिं न आये। भानुमती गृह आए सिधाये॥
शकुनी आदि भवन निज गये। भूप सेज पर शोभित भये॥
भानुमती ते सकल हवाला। कहिपूंछेउ कौरव कुलपाला॥
जोरि युगल कर कौरव रानी। कहेउ नाथ सुनिये ममवानी॥
करिय न बन्धु विरोध बलीते। सजग भये पुनि जाहिं न जीते॥

नहिं भाये रानी वचन, निज बल कहेउ भुवार॥
होत प्रात आये सभा, हने निशान अपार॥

आये कुरुपति निजमखशाला। बैठ चित्तसारी नरपाला॥
चरबर बहु कुरुनाथ पठाये। बोलि बोलि सब भाइन लाये॥
आये शकुनी करण दुशासन। करि जोहार बैठे निजआसन॥
सकल बन्धु आये तिहि तीरा। लच्छण कुंवर आदि भै भीरा॥
नाइ नाइ शिर नृपहिं जोहारी। जहँ तहँ सोहतहैं भट भारी॥
प्रतिपवँरिन दरवानि समाजा। विपुल विभव राजत कुरुराजा॥
पूछेहु सबहिं भरतकुलकेतू। कहि विस्तार कहेउ सब हेतू॥
निज निज मन्त्र न राखहु गोई। सब मिलि करहुकरबहम सोई॥
प्रथम मन्त्र जो शकुनि बखाना। ठीक नीक सबके मनमाना॥

एकछत्र कीजिय धरणि, दै पाण्डव वनवास।
सबन कह्यो मत ठीक यह, कुरुपति हृदयहुलास॥

विकरणकह्यउ जोरिकर दोऊ। नाथ अयशभाजनजनि होऊ॥

जिन कीन्हेउ वश त्रिभुवननाहा। जगदुर्लभ प्रभु ताकहँ काहा॥
रक्षक जासु रमापति राजै। तासु कहिय क्यहि भांति पराजै॥
कौरवनाथ कही असि बानी। सुनु ममवचन बन्धु सज्ञानी॥
पाण्डव जीति सकै किन कोई। कहहु शेष कीजै वश सोई॥
जाके शीश धरी सब धरणी। पाण्डवको केतिक है करणी॥
शेष दिनेश जाहि किन जीते। विजय न एक धर्मसुतहीते॥
सकलकहहिं सो वचन प्रमाना। एक कहहि कीजै जनि काना॥
अस कुरुनाथ कहेउ मुसक्याई। दुश्शासन बोल्यो शिरनाई॥

नाथ कीजिये बातयह, सत्यसत्य मतमोर।
मैं अनुचर करिहौं सकल, कुरुपति आयसु तोर॥

बन्धु वचन सुनि नृप सुखपाये। शिल्पकार वह तुरत बुलाये॥
जाय सजहु तुम सदसि सुहाई। देखत जाहि चकित सुरराई॥
तब लगि रचना रचहु सँवारी। द्यूतदिवस जब आव दिवारी॥
सब थवई नरनाह पठाये। अनुचर साथ विपुल तिन पाये॥
लोककाष्ठकरसुनिसुनिआवहिं। रचहिंसभान्टपआयसु पावहिं॥
सात मास महँ करि निपुणाई। दीन्हो मनहुँ नवीन बनाई॥
दुर्योधन नृप सभा निहारी। बैठहि दिन प्रति होहिं सुखारी॥
सुन्दर मास दमोदर आवा। कालनिशाथल अति नियरावा॥
शकुनी करणहि पूछि नरेशा। पत्र पठाइ दिये प्रतिदेशा॥

कालनिशा जागरणहित, आवहु सब भुवराइ।
द्यूतखेल खेलहु इहां, करहु सभा मम आइ॥

खेलव हम अरु धर्म्मकुमारा। देखहु आय सकल सरदारा॥
दुर्योधन कर आयसु पाई। गजपुर सब आये भुवराई॥
सुखद शिविर पाये सब काहू। बहु सतकार करत नरनाहू॥
कुरुनन्दन तब विदुर बुलाये। जाहु धर्म्मपहँ कहि पठवाये॥
धर्म्मराज गृह विदुर सिधाये। तुरँग सवार साथ शतधाये॥
चपल तुरङ्गम विदुर सवाँरा। जात चले पाण्डव दरबारा॥
विदुर आगमन सुनि सुख पाये। आगे मिलन धर्मसुत आये॥
बहुरि सभा लैगयो भुवारा। सादर सिंहासन बैठारा॥
पुनिपुनि भूप रजायसु माँगत। प्रीतिविलोकिविदुरअनुरागत॥

हृदयविचारत नख लिखत, कौरवकी मतिपोच।
हाथी हरहट मद गलित, नाहिं न शील सँकोच॥

सुनहुतात मम आगम काजा। तुमहिं बोलावत हैं कुरुराजा॥
अभिवादन करि कहेउ सँदेशा। आये मम गृह विपुल नरेशा॥
द्यूतहेतु हम साजि उछाहू। सो तुमहूं आवहु नरनाहू॥
इहै कालनिशि जागहु आई। देखहु मम समाज समुदाई॥
अपर नरेश गुप्त सुनु बाता। कुरुपतिके मनहै छल ताता॥
शकुनीकरणसहितदुःशासन। चाहत तुमकहँ देश निकासन॥
यहै मनोरथ जीतब यूपा। कहूं कहेउ यह भेद न भूपा॥
तुमहिं परमप्रिय जानिसुनावा। करउ भूप जो बनहि बनावा॥
कहत भये अस धर्म्मज राई। सुनहु सचिव भीमादिकभाई॥
कुरुपतिके दर्शा भै भारी। हमकहँ जीतन कहत हँकारी॥

युद्ध जुवाँवश होत नहिं, भ्राता करहु विचार।
होत तासुजय तात सुनु, जेहि सहाय करतार॥
यह कुरुपति भलिवात विचारी। मानत जीति न जानतहारी॥
विदुर विचारि कहो मोहि पाहीं। कासमुझतकुरुपतिमनमाहीं॥
बोले विदुर कही भलिवाता। हम यह भेद न जानत ताता॥
कहेउ भीम मतिभ्रम कुरुराऊ। सो किमिजानहिंभावकुभाऊ॥
चलहु भूप अव करहु तयारी। खेलिय न्टप गृह पंसासारी॥
उन श्रमकरि सव भूप वुलाये। कौतुक देखन ते न्टप आये॥
जो न नरेश चलो तुम कालो। कुरुपतिहोइ मनोरथ खालो॥
भीम वचन सबके मन भाये। भूप प्रात गज वाजि सजाये॥
गये वितान पटल लदि आगे। पटह धेनु मुख वाजन लागे॥
निकर नगारे वाज, वोले विरद पयानके।
गरजि उठे गजराज, हय हींसत गहरात रथ॥
विदुर समेत चढ़े नृप हाथी। चलत भये भीमादिक साथी॥
उठे निशान चले नरनायक। धाये विपुल चहूँ दिशि पायक॥
तुरँगारूढ़ नगिनि करवालहि। गहिकर घेरि चले नरपालहि॥
कुरुपति सुन्यो धर्मसुत आये। आतुर लक्ष्मण कुंवर पठाये॥
उलका द्विरद दुशासन साथा। नायो धर्मराज पद माथा॥
दै अशीश नृप धर्म समोदा। वैठारेउ कुरुपतिसुत गोदा॥
मुक्तामाल दीन्ह पहिराई। दियो विविध पकवान मिठाई॥
कीन्ह विदा कुरुनाथ कुमारा। आप वितान वीच पगुधारा॥

तेहि अवसर आवत भयो, धर्म्मराज रनिवास ।
त्यागि त्यागि पटपालको, भीतर गई अवास ॥
लक्ष्मण सहित विदुर द्रुत आई । सकलकथाकुरुपतिहिसुनाई ॥
कुरु रनिवास सकल सुधिपाई । मिलन द्रुपदतनया कहँ आई ॥
सुनि आवत दुर्य्योधन रानी । चलीं मिलन हित सकल सयानी ॥
तजि नरवाहन सब रनिवासा । मिलीं द्रौपदी सहित हुलासा ॥
करिसबविधि सबकहँ सतकारा । भाँति अनेक भई जेवनारा ॥
कुरुपति बन्धुनको सब नारी । निज निज भवनगमनकृतकारी ॥
चलन चहेउ दुर्य्योधन रानी । द्रुपदसुता राखेउ गहिपानी ॥
करन धर्म्मसुत कै पहुनाई । भूरि वस्तु कुरुनाथ पठाई ॥
अशन पानकरि धर्म्मज राजा । लीनबोलि द्विज साधु समाजा ॥
बैठ युधिष्ठिर भाइन लैकै । विप्रन सहित सुआसन दैकै ॥
द्रुपदसुता अरु पाण्डवरानी । सोहहिं पटल कपाट सयानी ॥
लग्यो पुराण सुनन तब भूपा । हरिको कथा रसाल अनूपा ॥
हरिको कथा रसाल, कहन लगे द्विज विदुषवर ।
सुनत धर्म महिपाल, जहँ तहँ दरवानी खड़े ॥
इहाँ राय दुर्य्योधन निरयस । सञ्जयते तब कहत भयो अस ॥
अब तुम जाहु पाण्डुसुत ठाँई । भा शकुनीकर मन्त्र सहाई ॥
कहेउ धर्म्मसुत ते समुझाई । प्रात द्यूत खेलहि द्रुत आई ॥
सुनि सञ्जयउठि तुरत सिधाये । आतुर धर्म्मरायपँह आये ॥
भूप समीप लीन बैठाई । तब सञ्जय बोलेउ रुखपाई ॥

तुमहिं प्रात कुरुनाथ बोलावा। दूरतकर्महित साज सजावा॥
कहेउ भूप सञ्जय सुनु बानी। मिलब प्रातसबकहँ हमआनी॥
सुनि सञ्जय उठि आतुर आये। धर्मवचन कुरुपतिहि सुनाये॥
सुनहु भूप सञ्जय कह्यो, यह कह धर्मज राइ।
स्वजन सहित कुरुपतिहि मैं, प्रात भेंटिहौं आइ॥
सबलसिंह सञ्जय वचन, सुनि कौरव कुलनाथ।
जात भयो विश्राम थल, युवती वृन्दन साथ॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

तेहि रातीकर भयो बिहाना। पाण्डवगये द्रोण अस्थाना॥
सङ्ग भूमिसुर साधु समाजा। नमत द्रोणपद पाण्डवराजा॥
परत दण्डवत धर्मज चीन्हा। द्रोण उठाय लाइ उर लीन्हा॥
पाइ अशीष भेंटि सब भाई। मिले द्रोणनन्दन पुनि आई॥
पूंछी कुशल प्रश्न नृप आछे। तब कुरु कही कुशल सब पाछे॥
कहहु कुशल सब धर्मकुमारा। बोले वचन भूप श्रुतिसारा॥
नाथकुशलसबविधि अनुगामी। तवअशीश मोरेशिर जामी॥
माँगी बिदा भूप शिर नायो। तुरत पितामहके गृह आयो॥
परशि चरण नृप द्वौकरजोरा। लखि हरषे मन गंगकिशोरा॥
पुत्र युधिष्ठिर भद्र तव, होइ सो आशिष दीन्ह।
करणी कुरुपतिकी समुझि, सजलनयन कछु कीन्ह॥

बहेउ युगल तनु प्रेमप्रवाहा। आयसु माँगि चले नरनाहा॥
बुद्धिचक्षुके मन्दिर आये। पितु भ्रातापद शीश नवाये॥
धर्म्म आगमन सुनि सुखपाये। परमप्रीति मतिदृग उरलाये॥
परत चरण लखि पाँचो भाई। वरवश भूप लिये उरलाई॥
रहे भूप तेहि थल धरि चारी। करत प्रीति मतिदृग वैठारी॥
उठि धर्म्मज नाये पद शीशा। विदा कीन नृप दिये अशीषा॥
चले समाज समेत भुवारा। कुरुपतिके मन्दिर पगु धारा॥
आवत देखि धर्म नरनाथा। उठे भूप भट यूथप साथा॥
मिलिअनेकविधिकरिसतकारा। कुशल पूंछि आसन वैठारा॥

भेंटि भलीविधि युगलनृप, बहु आदर बहुभाइ।
धर्मराज देखेउ वहुरि, रविनन्दन गृह आइ॥

रविसुत सुनेउ धर्मसुत आये। विसासेन कहँ तुरत पठाये॥
आगे मिलत चरणगहि रहेऊ। चिरञ्जीव अधरमअरि कहेऊ॥
सुत समेत रविसुतपहँ आये। मिलत परस्पर चखजलछाये॥
कुशल प्रश्न पूछत मृदु वानी। गये अँगारमती जहँ रानी॥
धर्महिं देखि रानि सुख भरेऊ। भीमादिक भ्रातन आदरेऊ॥
लखि सतकार विपुल सुखपाये। आतुर भूप विदुर गृह आये॥
मिले कृपहिं नृप अतिहि तरेरे। आवत भये वहुरिं नृप डेरे॥
खान पान करि पति जगतीके। पुनि सोहैं सिंहासन नीके॥
रहीं तँवूरनकी ध्वनि माची। वारवधू वहु वृन्दन नाची॥

करत हास्य भीमादि सब, लखि अप्सरा ललाम ।
यहि प्रकार आनन्दते, बिगत भई निशियाम ॥

तेहि अवसर सञ्जय तहँ आये । लै सँदेश कुरुनाथ पठाये ॥
खेलन अक्ष चतुरङ्ग न आजू । तुमहिं बुलावत कौरवराजू ॥
सञ्जय वचन भूप सुनि लीन्हा । नहिं ताकर प्रतिउत्तर दीन्हा ॥
विप्रवृन्द तेहि अवसर आये । प्रथम भूप उठि शीश नवाये ॥
दीन्हें सबन यथोचित आसन । बहुरि आप बैठे सिंहासन ॥
गायक नर्तक बहुत बुलाई । रहे रिझाइ भूप सुख पाई ॥
वेदऋचा द्विज वृन्दन गाये । सुनि बहु प्रेम सभा मनभाये ॥
गावहिं विदुष सकल गुण पूरे । विविध प्रकार बजाइ तँबूरे ॥
होतहिं प्रात धर्म के जाये । गन्धारी गृह आतुर आये ॥
कीन्ह प्रणाम भूप सब भाई । दीन्ह अशीश मातु सुखदाई ॥

दासी वृन्द विशाल, दीन्हें मञ्च अनेक धरि ।
बैठे धर्मनृपाल, सचिव सखा भाइन सहित ॥

कनक पयङ्क विराजत रानी । जनु सोहत कैलास भवानी ॥
उठि भरताइ रजायसु मांगा । वन्दि मातुपद अति अनुरागा ॥
अति बल कुरुनन्दन के भाई । सबके भवन धर्मसुत जाई ॥
अटत सबहि गये दिन चारी । आई कालनिशा भयकारी ॥
दीपक आइ धर्मसुत कीन्हा । विपुलद्रव्य महिदेवन दीन्हा ॥
कीन्हेउ आइ चूड़िदग एका । धरि दीन्हें मणिदीप अनेका ॥
राजपुर प्रकटि रह्यो उजियारी । भयो विनाश निशा तम भारी ॥

जात भयो ताही समय, सभा भवन कुरुनाथ।
विकरण दुश्शासनकरण, सौवल शकुनी साथ॥
दियो किङ्करन डारि गलीचा। अद्भुत वसन परे विचवीचा॥
बैठि गयो कुरुनायक जाई। आवन लगे नृपति समुदाई॥
वाहलीक गङ्गासुत आये। भूरिश्रवा कृपसेन सोहाये॥
युद्धामन्यु, अलम्बु, उलूका। मगहय बन्धु चतुर अहिभूका॥
सोमदत्त शशविन्दु सुवेशा। सैंधवपति अरु शल्य नरेशा॥
आइ गये नृप तीस हजारा। रहत सदा जे कुरु दरवारा॥
करहिं वकीलति निजमहिहेतू। अचवकरहिं कौरव कुलकेतू॥
आये सभा वकील घनेरे। जे हित करत नरेशन केरे॥
कौरव नायक के सब भाई। आये साथ सुभट समुदाई॥
तेहि अवसर गे आइ, वेतपाणिगण गुण निपुण।
दीनसवन बैठाइ, यथा उचित आसन सवन॥
द्रोण कृपा भीषम करण, आवत लखि कुरुनाथ।
सहित सभा संभ्रम उठे, बैठारे गहि हाथ॥
आये बहु स्वतन्त्र पुरवासी। सचिव महाजन जे गुणरासी।
सबहिं नरेश कीन्ह सतकारा। आवत देखे द्रोणकुमारा॥
करि आदर अनेक नरनाहू। कहेउ धर्मसुतपहँ तुमजाहू॥
वेतपाणि तब खबरि जनावत। सहित समाज युधिष्ठिरआवत॥
तबलग धर्मराज पगु धारा। जहँ तहँ नृप बहु करत जोहारा॥
मिले अग्र आतुर दुर्योधन। बैठारे करि विविध प्रवोधन॥

अति प्रताप कुन्ती के बालक। सोहत सभा प्रजापतिपालक॥
तेहि अवसर कुरुपति रुखपाये। पंसासारि दुश्शासन लाये॥
दीन्हो धरि अजातरिपु आगे। कर गहि भीम विलोकन लागे॥
सो कुरुपति निज हाथ डसाई। लिये धर्म्मसुत अक्ष उठाई॥
फरकेउ अशुभ नयन भुजबायें। उर थरहरेउ छींक भइ बायें॥

दिये धर्म्मसुत डारि, परेउ न पांसा जो कहेउ।
शकुनीलीन सँभारि, फेंकउ कहि नहिं पव परेउ॥

धर्म्मराज पांसा महि मारे। बोले वचन नयन रतनारे॥
खेल हमार अहै कुरुपतिते। शकुनीते खेलहिं केहि मतिते॥
कहहु कुमन्त्र लागि श्रुतिमाहीं। युद्ध जुवा लायक तुम नाहीं॥
शकुनी लज्जित निपट सभामा। कुरुपति हृदयरोषतरुजामा॥
हृदय रोष ऊपर छल कीन्हा। बिहँसि राइ प्रतिउत्तर दीन्हा॥
हम शकुनी कह नृप बैठारा। यामें कछु न अकाज तुम्हारा॥
शकुनी हारहि सो हम देहीं। अङ्गीकार जीति करि लेहीं॥
हम हारे शकुनीके हारे। बड़ि अनुचित नृप ज्ञान विचारे॥
जो निज हानि भूप तुम जानो। निज किंकर तुमहू कोउ आनो॥

हम खेलब तवसाथ, होइ नीच सब भांति जो॥
कह्यो वचन कुरुनाथ, शकुनी तो शिरमोर मम॥
धरहु भार निज शीश, बैठारहु किन साहनी।
हमहिं न ओछि महीश, मैं खेलब नृपसदसिमहँ॥

धर्म्मराजसन भीम तब, कहन लगे कर जोरि।
छल है जुवां न खेलिये, सुनिये विनती मोरि॥
चलि नरेश कीजै निज राजू। शकुनीते खेलिय केहि काजू॥
अतिहित भीमसेनकै बानी। युगल बन्धु पारथ मनमानी॥
बरजत सकल धर्म्ममहराजहि। भीष्मादिकसबसहितसमाजहि॥
जनि पांसा अब धर्म्म चलावहि। वाम विधाताकुछ नहिंभावहि॥
होनहार को सकत मिटाई। बोले धर्म्मराज सुनु भाई॥
जो यह बोलत कुरुपति बाता। छलविहीन लागत मोहिं ताता॥
छत्री धर्म्म कांछ हम कांछे। युद्ध युवां पग परइ न पाछे॥
यक दिशि काल प्रचारहि जवहूं। छत्तिधर्मधरि मुरिय न तवहूं
त्यहिमा फिरि आणुसिकर बीचू। पाछे पांव धरै सो नीचू॥
अस कहि धर्मनरेश तब, पांसा लीन उठाय।
दशा संकटा कठिन है, निपट रही नियराय॥
मन्द वर्षपति गतबल भयऊ। रवि कुदृष्टि मूरति थलगयऊ॥
सब ग्रह अशुभपरे थलहीथल। वर्षप वर्ष त्रयोदश निर्व्वल॥
कहहिं विदुषजन नृपहिं शरिष्टा। महाराज दिन तुमहिं अरिष्टा
जबअसवचनसुनहिं कुरुनायक। लागहिंहृदयकठिनजनुसायक॥
भावीवश नृप मनहिं न भाये। भाषि दावँ निजअच्छ चलाये॥
पुनि शकुनी कर लीन उठाई। कहेउ करण कुरुपतिरुखपाई॥
धर्मज वृथा न बड़ श्रम कीजै। पांसा में कछु होड़ बदीजै॥
काढ़ि कण्ठते गजमणिमाला। सो धरिदीन धर्म महिपाला॥

हरितमालमणि करुपतिराखी। पांसा चलन लगे बलभाखी॥
कपट अक्ष शकनी सम्भारे। कहत परत सोइ बिनहिंविचारे॥
होत जीत करुनायक केरी। हारे धर्मज वस्तु घनेरी॥

ताही समय बुलाइयो, निज कुरुनाथ दिवान।
आयो आयसु मानि सोइ, परम प्रपञ्चनिधान॥

हारि जीति जो होइ हमारी। सोतुमसकललिख्योसम्भारी॥
आयसु दीन्हेउ कुरुपति जोई। लागेउ करन शूद्रपति सोई॥
रहे जे धर्मकोश गम्भीरा। जीति लिये मुक्तामणिहीरा॥
मोती रतन जवाहर जेता। मूंगा कञ्चन कोष समेता॥
शकुनीकपट अक्षबल जीते। चितभ्रम धर्मज भे सुखबीते॥
जीतिवस्तु धर्मज गृह राखी। बोलहि विकलभूमिपतिसाखी॥
शकनी पुनिपुनि अक्षचलाये। जीति देखिकुरुगण सुखपाये॥
परहिं न धर्मराजके पांसे। चकित लोग सब देखि तमासे॥
आदि वरादि लोह अरु चांदी। रहेउ न शेष ताम्र कोशादी॥
द्रव्य जो होत धातु पट दोई। रहेउ न धर्मराज गृह कोई॥

शकुनी अक्ष सँभारिकै, फिरि लीन्हेउ निज हाथ।
कपट भेदमह दक्षअति, पक्ष धरे कुरुनाथ॥

अष्टधातु आयुध भयकारे। क्षणमह सकल धर्मसुतहारे॥
तरकस कवच धनुष दस्ताना। चर्म त्रिशूल कटार कृपाना॥
शक्ति कराल अस्त्र सब चीन्हें। पृथकपृथक धरि धर्मज दीन्हें॥
तजे अक्ष शकनीं छलकारी। यहिविधि गये धर्मसुत हारी॥

तब शकुनी छल अक्ष चलाये । कोरे कागज जीति लिखाये ॥
धरेउ धर्म महिषीगण गाई । जीते शकुनी अक्ष चलाई ॥
व्याघ्र कुरङ्ग शृगाल शशादी । कानन नर वानर चित्तादी ॥
पक्षी बहु विचित्र बहु भांती । रङ्ग रङ्गके अगणित जाती ॥
कनक पींजरा सोहहि पांती । लखि शोभा भारती भुलाती ॥

नृपआयसु अनुचर सकल, सेवहिं खगमृग वृन्द ।
प्रथम नाम कहि धर्मसुत, धरे विगत आनन्द ॥

करते शकुनि अक्ष जब डारै । धर्म हारि सब लोग पुकारैं ॥
वाहन रथ शिबिका सुखपाला । उष्टर महिषी शकटविशाला ॥
यक यक भिन्नभिन्न धरिदीन्हें । शकुनी जीति कपटवललीन्हें
धरेउ नरेश तुरङ्गम सामा । कहेउ पृथक शाला प्रति नामा ॥
यहिप्रकार धरि धर्मज बाजी । हारे सकल तुरङ्गम ताजी ॥
लखि आपन सबभांति बनाऊ । रोम रोम हरषे कुरुराऊ ॥
धर्मज नयन वामभुज फरके । भयवश अङ्ग धकाधक धरके ॥
रहेउ न चेत भयो मति भंगा । धरेउ धर्मसुत यूथ मतङ्गा ॥
देश देश जहँ मत्त समाजा । धरेउ दावँ प्रति धर्मजराजा ॥

पाँसा शकुनी पाणि गहि, देत भूमि जब डारि ।
करत कुलाहल लोग सब, निजनिज दाव पुकारि ॥

हारे धर्मराज गज सर्वा । शकुनी अक्ष लेइ सहगर्वा ॥
रहत सदा जे भूपति सङ्गा । शेष रहे ते सकल मतङ्गा ॥

पृथक पृथक कहि भूपतिनामा। धरेउ नरेश जिनहिं विधिवामा
छूट अक्ष शकुनी कर तेरे। भइ शिरहारि धर्मसुत केरे॥
चकित लोग सब देखि तमासा। कहैं न परत धर्मसुत पाँसा॥
पुनिपुनिपरतदावँ कुरुपतिको। को जाने परमेश्वर गतिको॥
सुनिकर सरुष धर्मसुत पाहीं। वाहुलीक आदिक पछिताहीं॥
शकुनी पाण्डवसुतहि प्रचारा। लीन जीति भाजन भण्डारा॥
कञ्चन आदिजड़ितमणिभाजन। हारे सकल धर्म महराजन॥

वसन कोश गये हारि, रङ्गरङ्गके अति सुभग।
दीन्हे पाँसा डारि, शकुनी साँचे कपटके॥
देश देशके पाण्डवन, देत भूप अवनीश।
सकलपत्रधरिदावँपर, दीन्हेउ धर्म्म महीश॥

शकुनी पासा तमकि चलाये। कुरुपतिजयतिनिशानदिवाये॥
बोलि लिये तब धावन चारी। द्विरज दुमत्त दुमुख दुर्द्धारी॥
कहेउ:कि हम जीते नृपभारी। जे नहिं मानत आनि हमारी।
एक विहीन धर्म महिपालहि। जे न डरत सपनेहुँ रण कालहि।
ते अब सहज जीति हमपाये। विनप्रयास विधि ताप बुझाये।
पठवहु बोलि सकल नरनाहू। आवहिं नहिं सेना सजि जाहू॥
देहिं दण्ड नत आनहु बाँधी। देश देश प्रति करहु उपाधी॥
दण्ड चतुरगुण दशगुण लेहू। मिलहि न तेहिं मम शासनदेहू।
दुर्योधन कर आयसु पाये। निजनिजकारजसकलसिधाये॥
अश्वारूढ़ अनेक बुलाये। देश देश लिखि पत्र पठाये॥

मिलहु आइ आतुर निपट, त्यागिसकल सन्देह।
देहु दण्ड कुरुभूपतिहि, नत जैहौ यमगेह॥
जहं कहुँवीर धीर नृपजाना। साजिविकटदल कौनपयाना॥
जिनते वैर भाव अधिकाई। करि उपाय तहं करैं लराई॥
सुपनेहुं पाण्डुसुवन वल पाई। कौन अवज्ञा जेहि सुधिआई॥
करहिं उपाधि तासु संग नाना। जेहि विधिहोयतासुअपमाना॥
दण्ड चतुरगुण शतगुण लेहीं। लखिबलहीन त्यागितवदेहीं॥
काहुहि बांधि लेहिं करि सङ्गा। काहुहि करहिं समरमहंभङ्गा॥
यहकुरुपतिअतिशय सुखपावा। दुर्दर्शनहिं वहोरि बुलावा॥
तात सजहु तुम दल चतुरङ्गा। लेहु धीर भट यूथप सङ्गा॥
महिषमती नगरी कहँ जाई। धरिआनहु निशिचर समुदाई॥
जहं शिशुपालसुवन विख्याता। किये दण्डविनु शत्रु अजाता॥
दण्ड बांधि लीजै उचित, कीजै अवशि पयान।
सजि दल दुर्दर्शन चले, वाजन लगे निशान॥
देखि युधिष्ठिर अति दुखपावा। दुर्योधनते वचन सुनावा॥
नीति नरेशन के असि होई। जो जस दण्ड उचित सो देई॥
यहअदण्डकृत सुतशिशुपाला। तुम पठये दलअतिविकराला॥
जो ह्वै है महि दीन हमारो। तुम ते ना पाई भिखियारो॥
मखमह गयो तासु पितु मारा। दियेदण्ड विनु युगलकुमारा॥
तुमहिं उचित यह हे मतिवन्ता। लेहु दण्ड जनि वर्षप्रयन्ता॥
यह प्रतिपालहु वात हमारो। मनभावहि तस करहु अगारो॥

तुमहि नरेश उचित यह बाता। बार बार कह भ्रत अजाता॥

धर्म्मराजके बैन, सुनि बोले कुरुनाथ तब।

हमैं उचित यह है न, करिय दण्डबिन चैवसुत॥

अवनी प्रति अदण्ड करिदेहौं। हम तजि राज्य कमण्डलु लेहौं॥
तवमुख कहत बनत यह बानी। गे जरि गात तेज बल हानी॥
भीमसेन फरके भुज दण्डा। अधर फरहरत रोष प्रचण्डा॥
पारथ भयो बिलोचन लाला। लखि आनर्थक धर्मभुवाला॥
नाहिन समय रोषकर भ्राता। किमि समुझै मूरख अज्ञाता॥
परम सुजान चतुर जे बीरा। समय विचारि धरैं मन धीरा॥
जाहि अभय हम दीन बसाई। अब तापर दारुण भय आई॥
सकल हारिकर मोहिं न शोचू। जस यह परेउ परम सङ्कोचू॥

निज नयन लखि न मोहिं, होत दुसहदुख निपट लखि।

तात न तेहि विधि सोहिं, समय जानि धीरज धरहु॥

शपथ हमारि हजार, आयसु बिन जनि करिय यह।

त्यागहु सकल विचार, तात भये अपमान कर॥

तब बोले सहदेव सभागे। का देखो देखिहो अब आगे॥
अबते भूप ख्याल तजि दीजै। रचत प्राण भवन मग लीजै॥
नत दुर्योधन नृप अति नीचू। मारहि सबहि बुलाय कुमीचू॥
नहिं सहदेव वचन मन भाये। धर्मराज कर अच्छ उठाये॥
भीम बहोरि कहेउ सुनु भ्राता। चारियाम यामिनि रहिजाता॥
याम सपाद दिवस चढ़ि जाई। अब अवसर नृप चलिय नहाई

भीमवचन सुनि कह कुरुराजा। शकुनीते भागे बड़ि लाजा॥
प्रथम हीन करि चहत न खेले। तासु सङ्ग बड़ि हास पछेले॥
कुन्तीसुत सुनि अति दुख पाये। राखि दाँव बड़ अक्षचलाये॥

परे न धर्मज अक्ष, शकुनी लीन उठाय कर।
कपट भेदमहँ दक्ष, पुनि पाँसा फेंको चहत॥
धर्मराज निजराज्यसब, धरि दीन्हें यक दाँय।
जीति लीन्ह शकुनी सकल, विन श्रम कपट उपाय॥
धरन लगे नरदेव, राज्यसकल चित भ्रम वसी।
कहि दीन्हेउ सहदेव, चारिवर्ण ब्राह्मणविना॥

ब्राह्मण कहहु जाहिं किमि हारे। सब प्रकार शिरमौर हमारे॥
लखि सहदेव केरि चतुराई। विहँसि रहे कुरुनाथ चुपाई॥
राज्य जीति कुरुनायकलीन्हो। गहगह जयति दुन्दुभी दीन्हो॥
कपट वितान शेष जे रहेऊ। सो धरि बहुरि धर्मसुत कहेऊ॥
सहित समाज धरे सहदेऊ। शकुनी जीते छल बल तेऊ॥
देश कोश समेत धरि दीन्हा। नकुलजीति कुरुनायकलीन्हा॥
पारथ धरेउ सहित सबसामा। हयगजवसन कोशधन ग्रामा॥
कुरुपति जीति धनञ्जय पाये। परमानन्द निशान दिवाये॥
धरेउ दाव नहिं रहेउ सँभारा। हारे भूप सकल परिवारा॥
बहुरि भूप युत सहन भण्डारा। हारे भूप सकल परिवारा॥
हारि गये कुरुनायक जीते। गयो रंक पद भागि महीते॥
दीन्हें द्विजन याचकन दाना। हयगजभूमि रतनमणि नाना॥

गजपुर रहेउ न रंक अभागो। केवल धर्म धुरन्धर त्यागो॥

चितभ्रम चकित अजातअरि, धरि शरीर निज दीन्ह।
धर्म धुरन्धर धीरधर, नहिं विचार कछु कीन्ह॥

दीन्हें शकुनी अक्ष उखारी। किङ्कर भये धर्मसुत हारी॥
छूटि राज्यपद दास कहाये। भये अचेत रहे शिर नाये॥
पुनिपुनि शकुनी कहेउ नृपाहीं। जो कछु शेष रहा गृह माहीं
उठतख्याल अब सो धरि दीजै। पाछे पगधरि अयश न लीजै॥
धर्म सुतहिं कुरुनाथ प्रचारा। गूढ़ गिरा करि वारहिं बारा॥
तुम नृप विदित सत्य व्रतधारी। परहिं न पद ये कर्म पछारी॥
अटपटि कुरुनन्दनके बानी। समुझि न परी तर्कछलसानी॥
उर वरि उठी रोष दुखज्वाला। धरेउ भूप तनया पञ्चाला॥
बान्धव प्रियजन अति दुख भरेऊ। मानहु अन्ध महानद परेऊ॥

शकुनीं सवन पुकारि, साखी करि नरनाह बहु।
दीन्हेउ पाँसाडारि, हारि गये नृपधर्म सुत॥
लखि अनरथकी वात, भीमादिक भाई सकल।
भस्म भये सब गात, मानहु विनु मारे मरे॥

धर्मराज तनु सुधि विसरावे। करते उठत न अक्ष उठाये॥
भयो शोकवश धर्म्मभुवारा। मनहु कमलवन परेउ तुषारा॥
भीषम विदुर निपट दुखपावा। द्रोण कृपा महि शीश नवावा॥
वाहलीक उर दुख अधिकाई। गये सभा तजि गृह अकुलाई॥
मनविस्मय वसि द्रोणकुमारा। का धौं कौन चहत करतारा॥

सचिव महाजन गजपुरवासी । विलपत विकल परी जनु फाँसी
समुझि समुझि कुरुनाथसुभाऊ । होत हृदय नहिं धीरज काऊ ॥
रविसुत शकुनी उर आनन्दा । मनहुँ उदधि लखि पूरणचन्दा ॥

दुःशासन आदिक अनुज, सकल प्रफुल्लित गात ।
रोम रोम कुरुनाथ के, हर्ष न हृदय समात ॥

हीर चीर गज वाजि लुटाये । द्विजन दान नानाविधि पाये ॥
भे याचक गण सकल अयाची । विजय नगारे की ध्वनिमाची॥
जीती कुरुपति पाण्डव रानी । कहेउ धर्म्मसुत ते यहवानी ॥
अनुचर भयो समेत समाजा । करहु मानि मम आयसु काजा ॥
कह्यउ युधिष्ठिर आयसु होई । माथे मानि करब हम सोई ॥
रुख वदन करि कह कुरुराई । द्रुपदसुता अब देहु मँगाई ॥
सदसि बीच सुनि निर्भय बानी । रोषज्वाल अति उर सरसानी॥
धरि धीरज रिस सो उर मारी । मूर्च्छि परेउ नृपअवनिदुखारी॥
रह्यउ न चेत कह्यउ कछुनाहीं । अटकि रहेउ मणिखम्भनमाहीं ॥

सबलसिंह धर्मजदशा, लखी न काहू आन ।
देखि अवज्ञा कुरुपतिहि, परम रोष सरसान ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ १ ॥

सुनिये नृप निज वंश के, पुनिचरित्त सुखदाय ।
बोले दुर्योधन बहुरि, कामीप्रात बुलाय ॥

सूत प्रातकामी ज्यहि नामा । करत सदा कौरवपति कामा ॥

अतिगम्भीर वचननृपकहेऊ। धर्म्मराज महराज न रहेऊ॥
भये आजुते दास हमारे। सब परिवार द्रौपदी हारे॥
सो न युधिष्ठिर देत मँगाई। द्रुपदसुता तुम आनहु जाई॥
ल्यावहु सभा द्रुपदकी जाता। तुम सबविधि प्रपञ्च मगज्ञाता॥
कहेउ सँदेश गये पति हारी। अब तुम सेवहु सेज हमारी॥
सुनत प्रातकामी उठि धावा। आतुर धर्म्म शिविरकहँ आवा॥
दुर्योधन कर सकल सँदेशा। कहेउ शील तजि सकल भदेशा॥
चलहु सभा बोलत कुरुनाथा। नतु धरि लै जै हैं निज नाथा॥

सुनत सूत मुखबात, भयवश काँपी द्रौपदी।
विकल भये सब गात, कौरवनाथ सुभाव लखि॥

धरि धीरज कह द्रुपदकुमारी। सुनहु सूतपति बात हमारी॥
कस यह वचन कहा कुरुराई। राजसभा तिय केहिविधि जाई॥
कह्यो सूत यह आयसु मोहीं। धरि लैजाहुँ सभामहँ तोही॥
सुनत निठुर सारथिमुख बानी। अति सरोष दुर्योधन रानी॥
कहेउ सूत ते वचन रिसाई। जाति परत तुम्हरे शिरआई॥
भूले कहे भूल कहि तेरे। गये बिसरि भुज पाण्डवकेरे॥
समुझि परत यह हेतु विशेखा। चहत नयन तव यमपुरदेखा॥
बोलेउ सूत सुनहु महरानी। आयउँ मैं नृप आयसु मानी॥
वचन तुम्हार शीश धरि जैहौं। दोष न मैं कुरुपतिपहँ पैहौं॥

सुनत सारथी के वचन, तुरत दीन दुरियाय।
रूख देखि रानी वदन, गयो भागि भय पाय॥

कहि सन्देश सकल तेहिदीन्हा। सुनिकुरुनाथक्रोधअतिकीन्हा॥
दुःशासनहिं बुलाय नरेशा। कह्यउ सरोष सूत सन्देशा॥
पुनिपुनिकहतरोष दारुणअति। केशपाणिधरिल्यावघसीटति॥
यह शठ पाण्डुसुवन भय पाई। कहेउ न मूढ़ द्रौपदील्याई॥
भीम बाहु लखिकम्पित गाता। अजहूँ गह्वर कहत न वाता॥
सबते प्रिय निज जीवन जानी। सकल मूढ़ नहि धीरज आनी॥
चलेउ दुशासन आयसु मानी। आयो द्रुपदसुता जहँ रानी॥
आवत सरुष दुशासन देखी। पाञ्चाली भय ग्रसित विशेखी॥
कहेउ दुशासन सरुष रिसाई। चलु बोलत दुर्योधन राई॥

दुःशासनके वचन सुनि, द्रुपदसुता अकुलानि।
हमरे तुम सहदेव सम, कहत जोरि युग पानि॥

तात नीति मग देखु बिचारी। कैसे जाय सभामहँ नारी॥
जबलगिहम शिरते न अन्हाहीं। पूरुषमुख देखन कहँ नाहीं॥
मैं रज श्रवत एक पटधारी। सभा गये पति जाय तुम्हारी॥
तात चलै कर अवसर नाहीं। नत जातिउँ मैं कुरुपतिपाहीं॥
भीष्मादिक चत्रिय बहु राजा। जात सभामहँ तियकहँलाजा॥
तात एकान्त बोलि कुरुराई। मैं सब विधि कहतिउँ समुझाई
मम दिशिते समुझाइ नरेशा। कहेउ तात अतिभल संदेशा॥
दुःशासन तब नैन तरेरे। सुनु री हारि गये पति तेरे॥
कस न विचार कीन तिन गूढ़ा। स्वहिं समुझावतिजिमिमैंमूढ़ा॥

चलति न तैं तिय सदसिकहँ, करति उतर प्रतिगात।
जोरि युगलकर द्रौपदी, कहति विकल अति बात॥
सुनहु तात तुम नीतिनिधाना। सो मगनहिंतुमजोनहिंजाना॥
तुम कहँ तात शपथ व्रत मोरी। कह्यउततातनहिं राखेउँ चोरी॥
कहहु सत्य तजि जीवन पापू।हारे न्टप मोहिं प्रथम कि आपू॥
हारे होहिं प्रथम निज रूपा। किङ्कर भये मिटग्रउ पद भूपा॥
दासन के गृह होइँ न रानी। नीतिविचारिसमुझुमसवानी॥
छूटि गये सब नात हमारे। न्टप हारे हम जाहिं न हारे॥
जो मोहिं प्रथम धरेउ नरनाथा। त्यागिलाजचलिहौंतवसाथा॥
है किङ्करी करौं सब काजू। जो कहिहैं कौरव शिरताजू॥
वेगि समुझि प्रतिउत्तर दीजै। आयसुहोयअवशिसोइकीजै॥
सुनि दुःशासन वचन अस, धायो नैन तरेरि।
हारि गयो अज्ञान पति, नीति विचारति चेरि॥
कहत कटुक दुर्वाद, रोष भरो धावत भयो।
देखि जात मर्याद, भयवश भागी द्रौपदी॥
जात पुकारत आरत वानी। देखिदुशासनअति रिसमानी॥
झपटि केश लीन्हेंउ गहिहाथा। चलेउवसीटतजहँ कुरुनाथा॥
देखि दशा दासिन्के वृन्दा। करहिंविलापविपतिपरिफन्दा॥
दुर्योधन कर सब रनिवासू। विलपतगिरतनयनमगआँसू॥
परो धर्म्मसुत शिविर तरापा। गजपुरसकल शोकवशकाँपा॥
गहे दुशासन द्रौपदि वारा। निकसत नागनगर गलियारा॥

देखि दशा विलपहि पुरवासी । जड़ जङ्गम खगमृगन्दपदासी ॥
जेहि मग निकसत अन्धकुमारा । देखि वज्र उरजात दरारा ॥
देखत सब जहँ तहँ बिलखाहीं । होत शोर जेहि मारग माहीं ॥

देखि झरोखन महल ते, दासी वृन्द हवाल ।
जायजायरनिवासप्रति, विदितकीन्हततकाल ॥

सनअसिगति कौरवगणरानी । विलपहिसकलहृदयहतिपानी ॥
दुर्गति सुनत द्रौपदी केरी । करुणाभवन भवनप्रतिघेरी ॥
नाघत पँवरि पँवरि प्रतिजाता । द्रुपदसुता परवश विलखाता ॥
मोहिं छुडावत मातु गंधारी । बार बार कह द्रुपदकुमारी ॥
भीतर दासिन खबरि जनाई । तजि पर्यङ्क जननि उठिधाई ॥
हा पुत्री हा धर्मज प्यारी । बलि बलि जाय मातु गन्धारी ॥
छूटे केश उघरि गयो चीरा । विलपति दासीगणसँग भीरा ॥
आवत जानि मातु गन्धारी । गयो दुशासन वेगि अगारीं ॥
जबलगि रानि द्वार पगु दयऊ । राजसभा दुःशासन गयऊ ॥
कोउ मुसक्यात द्रौपदी देखी । करत मूढ़ कोउ तर्क विशेखी ॥

करत दया कोउ धीर, कोउ धिक कह दुःशासनहि ।
तजत नयन कोउ नीर, कोउ निन्दत भीमादिकन ॥
द्रुपदसुताके केश, गहि खैंचत कुरुपति अनुज ।
बैठे सकल नरेश, मध्यसभा तहँ लै गयऊ ॥

सिंहासन सोहत कुरुराई । जाय समीप दीन ठढ़ियाई ॥
चहुँ दिशि चकितचितैपांचाली । राजसभा लखि थरथरहाली ॥

लज्जावश नहिं रहेउ सँभारा । श्रवत नयन मगते जलधारा ॥
अति सुन्दरि लखि द्रुपदकिशोरी । कामिन केरि भई मतिभोरी ॥
कहहिं जासुगृह द्रुपदकिकन्या । धन्यधन्य पाण्डवपति धन्या ॥
पुनि पुनि दुःशासनहिं सराहीं । है बड़ि भागि गही जेहि बाहीं ॥
धन्य आजु दुर्योधन राई । आयेसु जासु मानि धरि आई ॥
लोचनलाभ हमहिं जेहि दीन्हा । सफल जगतमहँ जीवन कीन्हा ॥
धर्मदशालखि कोउदुखपावहिं । कोउपछिताइशीशमहिनावहिं ॥

दुःशासन कह द्रौपदी, का रोवत बे काज ।
होत न आये सदसिमहँ, चेरिनको बड़ि लाज ॥

भीषम विदुर नाव महिशीशा । द्रोण कृपा उर शोच सरीशा ॥
सकल धर्मशीलन दुख पावा । नीचनके उर आनन्द छावा ॥
शकुनी करण अनन्द समीछे । दुर्योधन करि नयन तिरीछे ॥
दुःशासन ते कहेउ प्रचारी । वसनहीन करु द्रुपदकुमारी ॥
लै बैठारि देहि मम जानू । बान्धव वेगि कहा मम मानू ॥
उठे दुशासन आयसु मानी । विकरण कहत जोरि युग पानी ॥
तव मुख वचन न सोहत ऐसे । कुरुकुल तिलककहततुमजैसे ॥
वृद्धद्रोण गुरु भीषम आगे । तुम नृप कहत लाज भय त्यागे ॥
देश देशके भूपति राजत । तुम दुर्वचन कहत नहिं लाजत ॥
ज्येष्ठ बन्धुके जो तिय होई । मातुसमान कहत श्रुतिसोई ॥

चणमा तासु उतारि पति, तुम डारो कुरुराज ।
अब असकहत कि जो सुने, होत नीचउरलाज ॥

पूरण शशिमहँ कीरति तोरी। जनि महीश डारहु करियोरी॥
मानि विनय मम प्रभु अनुरागी। देहु द्रुपदतनया अब त्यागी॥
धर्म्मराज सँग बिन अपराधू। कौन नाथ तुम कर्म असाधू॥
विकरण वचन धर्मनय साने। सुनि सरोष रविनंद रिसाने॥
सुनु विकर्ण तवतनु शिशुताई। वृद्ध वचन नहिं शोभापाई॥
छोटे वदन कहेउ बड़ि बाता। सुनिकिमिसकैमहिपगुरुज्ञाता॥
है यह सभा सकल गुणखानी। तुमनिजजानिअधिक सज्ञानी॥
गाल फुलाय वचन कहिदीन्हा। चाहत है सबका लघु कीन्हा॥
वयस न भूपनके मत योगू। जानततुम न हँसत सबलोगू॥

खेलत सब मिलि बालकन, जाय शरासनवान।
सीखदेउ जनि भूपतिहि, हौं तुमशिशु अज्ञान॥

बालक इव गृह भोजन करहू। निजमनअहमित नेक न धरहू॥
दुर्योधन आयसु शिर धरहू। गृह कारज सबसादर करहू॥
कहविकर्णन्टप सुनु मत जीको। अब नहिं होनहार कछुनीको॥
जस न्टप तस मन्त्री बुधवाना। असकहि गृहनिज कीन्ह पयाना
बहुरि सकोप कहत कुरुराजा। द्रुपदसुता मम देख समाजा॥
नयनहीन सब सूझत नाहीं। बोलेउ तोहिं सभा महँ ताहीं॥
है यह सभा अन्धन्टप केरीं। केहि प्रकार सूझै री चेरी॥
हैं हम सुवन अन्धन्टपतीके। भीम सहिततुम जानत नीके॥
अन्ध तुम्हैं किमि देखै कोऊ। देखहु सबहि भीम तुम दोऊ॥

देखन हित अन्धौ सभा, तुम कहँ लीन्हबुलाय।
कीन्हेउ मम अपमान जिमि, तुम अपने गृहपाय॥

अब द्रौपदी वसन निज त्यागू। बैठि जांघ ममकुरु अनुरागू॥
अन्धी सभा न देखै कोई। जानव गति हमहीं तुम दोई॥
आये चतुर पाँच पति तेरे। भे बिन नयन सभा मिलि मेरे॥
सूझत तुम समेत वह भीमहिं। करहिं न रोष वृकोदर जीभहिं
बहुरि बिलोकि दुशासन ओरा। मानत तैं नहिं आयसु मोरा॥
वेगि द्रुपदतनया नँगियाई। लै मम जानु देह बैठाई॥
भूपवचन सुनि भीम कराला। निकसत रोमरोमप्रतिज्वाला॥
लपट नयनमग प्रकट विलोकी। लीनगदा रिसरहत न रोकी॥
बान्धव सकल भीम रुख पाई। भये सरोष सुभट समुदाई॥
पारथ पाणि गही असि मूठी। कह न्टपहोति सत्यममझूठी॥

धर्मज वदन निहारि, विकल सकल रिस मारि उर।
दीनगदामहिडारि, भीम विकलपारथ अतिहि॥

रहे पाण्डुसुत सब शिरनाई। वारिज नयन वारि सरसाई॥
चलेउ दुशासनरोष रिसाता। कह कुरुपतिहिविदुरअसिबाता॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै। पीछे अम्बरहरण करीजै॥
प्रथम कथा शुभ सुनहु नरेशा। अधिशर्म्माब्राह्मणइकदेशा॥
राचस इक प्रहर्ष अति भारी। कीन युगुल मिलि मिताचारी॥
इक इक पुत्र दुहन के होई। निर्भय सकल भांति भयसोई॥

गये काल मे युगुल सयाने। मिलाचार परस्पर माने॥
गये अहेर दोउ इक दाई। फिरत विपिन कन्या इक पाई॥

राक्षससुत तो यह कही, कन्याको हम लेह।
विप्र कहै दे मित्र मोहिं परी दुहुन अवरेह॥

युगुल परस्पर शोर मचावा। पुनि यह मन्त्र ठीक ठहरावा॥
जाकहँ चाहै अब यह कन्या। पावै सो यह त्रिभुवनधन्या॥
झगरत गे कन्याके पासा। करहु दया जापर विश्वासा॥
जासु हृदय डारहु जयमाला। पावै सोइ कहु वचन रसाला॥
कन्या कहेउ सुनौ मतिवन्ता। जो सरिष्ट सोई मम कन्ता॥
राक्षस कहेउ कि मैं गुणवाना। कह द्विज मैं सबविधि सज्ञाना
झगरत अग्निशर्म्मपह पाये। कहेउ वाद निज पद शिर नाये॥
दुइ मा को सरिष्ट को नामी। भाषह सत्यवचन तुम स्वामी॥

पुनि पुनि विनती करतहौं, कहिये करुणाऐन।
मित्र पुत्र निज पुत्रते, तब बोले द्विज वैन॥

हमते वाद विनाश न होऊ। जाउ प्रहर्ष तीर तुम दोऊ॥
चले विवाद करत स्वर ऊंचे। तुरत जाय तेहि भवन पहूँचे॥
तब प्रहर्ष पूंछत मन लाई। का झगरत हौ तुम दोउ भाई॥
तब वे कहन लगे निज स्वारथ। ज्यहि प्रकार जस भयो यथारथ
तुम प्रहर्ष करि कहौ विचारा। दुइसा कोन सरिष्ट कुमारा॥
राक्षस सुनत मौन होइ रहेऊ। तब विचारि दुर्लीसन कहेऊ॥

कश्यप ऋषिहि पूंछि मैं आवों। वेगि यथारथ तुम्हें सुनावों ॥
उठि प्रहर्ष ऋषिके गृह जाई। कीन प्रणाम चरण शिरनाई ॥

कीन्ह विनय कर जोरिकर, वैठेउ आयसु पाय।
ऋषि पूछेउ आये कहाँ, कहिये राचसराय ॥

ऋषे वचन सुनि प्रीति समेता। लाग्यो कहन प्रहर्ष सचेता ॥
अग्निशर्म सुत औ सुत मोरा। कीन विपिनमहँ झगरा झोरा ॥
झगरत आये द्वो मम रूवनहिं। कौन सरिष्ट कहौ हमगवनहिं ॥
कह कश्यप सुनु राचसराऊ। झूठ वचन तुम कहेउ न काऊ ॥
जो सुत होय तुम्हार सरिष्टा। तौ सव सत्य कहौ मतिनिष्ठा ॥
होय श्रेष्ठ जो विप्र कुमारा। कहेउ असत्य न त्यागि विचारा ॥
कहे असत्य अधोगति जाई। लचै वर्ष सो नरक रहाई ॥
ऐसे यल यह उचित न ताता। भूलि असत्य कहेउ जनि वाता ॥

कश्यपऋषिहिं प्रणाम करि, राचस निज घर जाय।
दुनहुनके आगे वचन, कहन लाग समुझाय ॥

कह राचस सुनु ब्राह्मणपूता। तव पितु हमते सरस वहूता ॥
मातु तोरि है वड़ी सयानी। हमरे सुतते तुम वड़ ज्ञानी ॥
सत्य कहा राचस जिउ वधिका। दुइसै वर्ष आयुमें अधिका ॥
अन्त न कष्टपरी यमफासी। भा कमलापति नगरनिवासी ॥
सत्य असत्यकेर अस वीचू। होत क्रपी जस सौंच असौंचू ॥
वीचु अनीति नीतिकर भारी। जनु रजनी अँधियारि उजारी ॥
कहौ विदुर नृप नीकि न रचना। जनि वोलहु अधर्म्म असवचना।

नागफाँसकर नहिं अंदेशा। जो तुम करत अधर्म्मनरेशा॥
सुनिअसवचनबिदुरदिशिताकी। भ्रुकुटिकीनकुरुपतिरिसबाँकी

भ्रुकुटिभंग कुरुनाथ लखि, बिदुर रहे चुप साधि।
थरथर कम्पति द्रौपदी, दृष्टि विलोकि उपाधि॥
परी विपतिवारीश, लखि दरकत उर बज्रको।
धीर न धरत महीश, निज समुझावत द्रौपदी॥

कपट द्यूतत शकुनीते हारे। विधि यहगतिलिखिदीनलिलारे
अहह दैव दिवसनकर फेरू। गिरिते रज रज होत सुमेरू
सभामध्य पति पाँच हमारे। महावीर रण टरत न टारे॥
मोहि उघारि होन कब देहैं। उठिकै भीम अवशि सुधि लेहैं॥
वहुरि सभा यहि भूप अनेका। समरथ शूर एकते एका॥
जाननहार धर्म्मपथकेरा। क्षत्रिय भीष्म आदि वड़ेरा॥
यदपि न भूपहि कहिनि निहोरी। तौ परन्तु लेहैं सुधि मोरी॥
गङ्गासुत चुपाइ किमि रहिहैं। आखिर उठि राजासन कहिहैं॥

अनुचित होन न पाइहै, लेहैं मोहि छुड़ाइ।
आजु पितामहते सरिस, धीर वीर को आइ॥

हैं गुरु द्रोण सभामहँ सोई। जिनते अस्त्र सिखे सब कोई॥
भारद्वाज तनय रण शूरा। लेहैं मोहिं छुड़ाय जरूरा॥
इत उत बहु भरोस ठहरावत। पुनि पुनिनिजमनकहं समुझावत
वहुरि कहत कुरुनाथ रिसाई। खैंचहु चीर दुशासन भाई॥
लेहु वसन सब आतुर छोरी। गहि वैठारु जाँघपर मोरी॥

होइ मोरि रुचि पूरण भ्राता। आलिङ्गन करि द्रुपदकि जाता॥
अतिशय विकल द्रौपदी कांपी। लेतराहु चन्द्रहिजिमिझांपी॥
इत उत दिशा दुखित मन हेरी। केहरि मनो मृगी वन घेरी॥
भीषम द्रोण करण दिशि चितई। निजपतिदेखि आशसबबितई॥

सकल सभा दिशि देखि पुनि, चितई पांडव ओर।
भीमहिं देखि सरोष पुनि, वरज्यो धर्मकिशोर॥

बहुरि कह्यो कुरुनाथ प्रचारी। उठ्यो दुशासन रिस करि भारी॥
आतुर कहत वचन कटु धावा। मनहुं कृतांतराज चलि आवा॥
एक पाणि लीन्हें गहि केशा। यक कर बसन गहे यसभेशा॥
सकल सभाजन लियगति हेरी। ग्राम ग्राम गज नगर बसेरी॥
बहु अवनीपति जे जन साधू। बूड़त वारिधि शोकअगाधू॥
धीरनके मुख जोवत अहई। चहत पितामह अब कछु कहई॥
निश्चय द्रोण चुपाइ न रहिहैं। अवशि वचन गंगासुतकहिहैं॥
कृपाचार्य्य गतिपतिलखि वामा। रहिहैं किमिचुप अश्वत्थामा
यहिविधिनिजमनकरतभरोसा। शील धीर जे मारग दोसा॥

जे शठ कायर कूर, मानभंग सब विधिचहत।
सकल सभा भरिपूर, करत मनोरथ पृथक पुनि॥

पकरिसि वसन दुशासन जाई। सरुष प्रचारत पुनि कुरुराई॥
वीर धुरीण रहे चुप साधी। शोगतभयेसकल अपराधी॥
लखि दुर्दशा द्रुपदतनयाकी। शोकजाल पाण्डवउर बांकी॥
वारिज नयन बहो जलधारा। रहे नाइशिर पाण्डुकुमारा॥

निपटविकललखिपाण्डुकिशोरा। नहिंविदरतउरकठिनकठोरा॥
तदपि दुष्ट अस तेहि थलमाहीं। जे हरषत मन धरषत नाहीं॥
दुर्य्योधनकर प्रबल प्रतापा। तपत मनहुँ रवि द्वादश तापा॥
अति करुणा सबके उर होई। प्रतिउत्तर करि सकत न कोई॥
भीष्म द्रोण कुरु विभव विलोकी। रहे चुपाइ सके नहिं रोकी॥

तीक्ष्ण भ्रूकुटि सरोष लखि, अति कुरुनाथ भुवार।
सकल सभा भयवश विकल, कांपहिं बारहिं बार॥

कृपाचार्य उर शोच अपारा। कहि न सकैं कछु द्रोणकुमारा॥
कोऊ शिर नाय रहे सकुचाई। अश्रुपात कोउ करत दुखदाई॥
जे नृप धीर वीर बल भारी। जानि सत्यलखिहोहिंदुखारी॥
सकहिं न कछुकहि काहुहि काऊ। दुर्योधनकर समुझि सुभाऊ॥
बारबार कह कौरव राजू। वेगि दुशासन करु यह काजू॥
खैंचन लाग बसन गहिपानी। द्रुपद सुतातब अति अकुलानी॥
तनया बिकल द्रुपद नृप केरी। छूटी आश सकल दिशि हेरी॥
काल रूप लखि कौरवनाथा। जाय रहेउ चित जहँ यदुनाथा॥
राधारमण वचन सुनु मेरे। कौन विलापकलाप करेरे॥
बूड़त विरह सिन्धु रघुनाथा। जिमि गहिलीन भरतकरहाथा॥
जिमि कपीश सुग्रीव उबारा। राखि विभीषण रावण मारा॥
ध्रुवहि निरादर किय पितुमाता। ताकहँ नाथ भयो तुमत्राता॥
तुम बिन नाथ सुनै को मेरी। करि विलाप दै हाँक करेरी॥

भुज उठाय हरिनगर दिशि, पाहि पाहि पुनि टेरि।
कृष्ण कृष्ण राधारमण, दीन्ही हाँक करेरि॥

दैत्यदलन प्रह्लाद उवारण। लागहु मम गोहारि जगतारण॥
मम अनाथ के नाथ गोसाईं। सो न होइ लज्जा जेहि जाई॥
तुम विन आरत पच्छ गही को। राख रमापति लाज गईको॥
पाण्डव त्यागी सुद्धि हमारी। तुम जनि त्यागहु गिरिवरधारी
वैठे सभा सकल अवधारी। कोउ न चहत छुड़ावन नारी॥
परवश लाज जात हरि मेरी। त्रिभुवन नाथ शरणमें तेरी॥
वीते काल दयानिधि ऐहौ। मोहिं उघारि देखि पछितैहौ॥
ग्राह ग्रसे गज कीन पुकारा। तव तुम नाथ न लायहु वारा॥

गोकुल वूड़त घेरि वन, जिमि रच्छा तुम कीन्ह।
नाश्यो मातलिसूतमद, गिरिवर कर धरि लीन्ह।

ते तुम नाथ कहाँ गिरिधारी। यह पापी खैंचत मम सारी॥
खैंचि वसन मम करिहि उघारी। का करिहौ तव आय खरारी॥
गये लाज प्रभु विरद न रहिहैं। तुमहिं कृपालुकाहकोउकहिहैं॥
सरवस हरेउ वचेउ इक वसना। सोऊ हरत वचावत कस ना॥
दवा जरत जिमि गोपन राखा। कौरव अग्नि दीन्ह गृहलाखा॥
तव तुमहीं यदुनाथ उवारा। दीनदयाल कहाँ यहि वारा॥
दारिद दहि द्विजके दुखकाटे। धनपतिसरिस सदनधन पाटे॥
जिमि गुरुसुत आनेउ यदुराई। राखि लेहु मम लाज न जाई॥

श्रीपति दीनदयाल अब, तुम पति राखहु मोरि ।
फिरि हरि कैसी करहुगे, जब पट लेहैं छोरि ॥
बीच सभा प्रभुम्बहिं नँगियावत । करुणासिन्धु धाय किन आवत
द्रुपदसुता लखिविकल पुकारा । प्रणतपाल हरि बिरद सँभारा ॥
द्वारावति तजि नाँगे पाँयन । आतुर आइ गये नारायन ॥
प्रथम पाहि मुखते जब काढ़ा । प्रकटे वसन रूप पट बाढ़ा ॥
वसन रूप धरि वसन समाने । धीरज द्रुपदसुता उर आने ॥
खैंचेउ प्रथम जोर भरि जेता । निकस्यो वसन वसन मग तेता ॥
देखि चरित्र क्रोधते पागा । परमरोष करि खैंचन लागा ॥
खैंचत वसन मूढ़ यहि भाँती । मथसागरसुरअसुरकिपाँती ॥
कढ़नी मनहुँ शेष भइ सारी । दुःशासन जनु देवसुरारी ॥
खैंचत सरुष दुशासन सारी । निज तनु पुरवत वसन खरारी ॥
देखि वसनकै बाढ़ि, भक्ति-प्रेमवश द्रौपदी ।
भइ रोमावलि ठाढ़ि, विनय करत गद्गद गिरा ॥
गयो शोच मन भयो अनन्दा । जनु चकोर पायो निशि चन्दा ॥
कृष्णचन्द्र मैं तव बलिहारी । जय गोपाल गुवर्द्धनधारी ॥
जय शारँगधर जय असुरारी । जय मनमोहन कुञ्जविहारी ॥
जय मुकुन्द माधव घनश्यामा । कमलनयन शोभा शतकामा ॥
पीताम्बरधर धरणीपालक । जय वसुदेव-देवकी-बालक ॥
जय तव कर सरोज यदुराया । कीन्ह्यों जेहि कर मोपर दाया ॥
जै पद सरसिज मम हित धाये । दुःशासन कर दर्प नशाये ॥

जय मधुसूदन यदुपति स्वामी। जयत्रिलोकपतिअन्तर्यामी॥
जय अघारि जयजय अविकारी। जय जय जय केशी-कंसारी॥
जय मम लज्जा राखनहारे। जयति यशोदा-नन्द-दुलारे॥

जय कृपाल करुणायतन, जयति कौशलानन्द।
मोरपच्छधर मुरलिधर, जय जय आनँदकन्द॥
जयति सच्चिदानन्द हरि, ईश्वर जगदाधार।
राखौ लज्जा जाति निज, जय मम नाथ उदार॥

निर्भय हर्ष विवश पञ्चाली। कहि चिग्घारति जयवनमाली॥
जय जयकार पूरि एनि रहेऊ। दुष्टन विना सवन जय कहेउ॥
देवन देखि सुमन झर कीन्हो। गहगह गगन दुन्दुभी दीन्हो॥
वाढ़त देखि वसन चहुँ फेरा। मन थिर भयो पाण्डवनकेरा॥
हरि प्रताप दिनकरसम भयऊ। कौरवसिसुकिकुमुदसमगयऊ॥
हरिहि पुकारति द्रुपदकुमारी। खैंचत सरुष दुशासन सारी॥
करत जोर वहुभांति दरेरा। वाढ़त वसन सकल चहुँफेरा॥
अरुण श्याम सित रङ्ग हरेरे। भांति भाँतिके वसन घनेरे॥
पीत रङ्गके वहुत निकारे। पीताम्वरके ओढ़न हारे॥

मिश्रित रँग के पट वढ़े, थके दुशासन हाथ॥
देवन ह देखे नहीं, ते एरये यदुनाथ॥

आए वसनतनु धरि भगवाना। वढ़ये विविध रङ्ग परिधाना॥
द्रुपदी चष पुतरी प्रभु कीन्हो। विरदावलिमूरति करिदीन्हो॥
खैंचत चीर दुशासन हारा। अम्वर मनहुँ देवसरिधारा॥

द्रुपदसुताके अम्बरते रे। हारे भुजा दुशासनकेरे॥
निकसे पट विचित्र बहुतेरे। नहिं समात मन्दिर नृपकेरे॥
दशसहस्र गजबल थकि गयऊ। दशगज अम्बरहरण न भयऊ॥
निपट होत लखि अनरथबाता। नाना भाँति होत उतपाता॥
शिवा यज्ञशालामें बोली। ढहे भवन धरणी जब डोली॥
अशुभ शब्द कृत रासभ श्वाना। मेघन बिना व्योम घहराना॥

हींसे सकल तुरङ्ग, हयशालामहँ बार इक।
चिघरे मत्त मतङ्ग, निज निज आश्रम विकल सब॥

भयो दाह दिग कररत कागा। तदपि न वसन दुशासन त्यागा॥
बढ़ति विलोकि तजै पुनि धरई। अनत गहै पुनि सो परिहरई॥
विदुर दीख भा अनरथ भारी। गे ज्यहिगृह विलपत गन्धारी॥
कहेउ रिसाइ मन्त्र सुनु मोहीं। होत अकाज न सूझत तोहीं॥
कृष्ण आजु द्रुपदी तनु व्यापे। वसन बढ़ाइ विरद अस्थापे॥
नहिं होइहि सुतधर्म्म अकाजू। जिनके यदुनन्दन महराजू॥
सदा दासकर करत सहाई। प्रणतारतभञ्जन यदुराई॥
जे हरि हन्यो निशाचरराजू। सहि दुख निज भक्तनके काजू॥
सो जानी सब बात तुम्हारी। नहिं अज्ञानग्रसित गन्धारी॥

जानि विकल प्रह्लाद जिमि, जो हरिभक्त अनन्य।
सहि श्रम निकस्यो खम्भते, कश्यप हन्यो हिरन्य॥
अब अनेक उतपात, देखि परत अनरथ निपट।
होन चहत सोइ बात, तुव तपबलते थपि रही॥

अब ते रानि कहा सुनु मोरा। भाग्य अभाग्य होत अब तोरा॥
वसन छुड़ाव दुशासन करसन। चलन चहत नतु चक्रसदरसन॥
गन्धारी सुनि अति दुख पाई। बिलपत बिदुरसङ्ग उठि धाई॥
मतिदृग सुत खैंचत दृत चीरा। थक्यो पराक्रम भयो अधीरा॥
भुज थकिगयो बढ़त नहिं जाना। वसनत्यागिमनअतिखिसियाना॥
निज आसन बैठेउ शिर नाई। मनहुँ रङ्क निधि पाइ गँवाई॥
दुर्योधन नृप बैठ उदासा। मानहुँ भयो राजपदनासा॥
औहत भयो सकल मदभङ्गा। निपट विकल अपमानतरङ्गा॥
सुनत शोर मारग श्रुतिकेरे। पूँछत मति दृग सञ्जयते रे॥
होत कहाँ यह हाहाकारा। सञ्जय कहै सहित विस्तारा॥

सुनत दशा दुख पाय, संजय कर गहि पाणि निज।
सभा विलोक्यो जाय, कुरुपतिको अनरथकथा॥

मध्यसभा कंचन सिंहासन। सो धृतराष्ट्र नृपतिकर आसन॥
बैठि गये तहँ मतिदृग जाई। परम रोष नहिं वरणि सेराई॥
दुःशासनकहँ नृप दुरिआई। शठ कुरुकुल तैं दीन लजाई॥
दुर्योधनपर क्रोध अपारा। कहि कटु बार बार धिक्कारा॥
त्यहि अवसर आई गंधारी। कहि दुर्वचन कीन्ह रिस भारी॥
कीन्हों दुष्टकर्म तुम नीचू। परिहो अधम नरकके बीचू॥
दीन्हेंउ सरूप शाप गंधारी। कह मतिदृग सुनु द्रुपदकुमारी॥
पुत्रवधू जे सकल हमारी। मन क्रम वचन अधिक तुम प्यारी॥
नव संग शठन कीन अपराधा। भौ मम वृद्धापनमहँ बाधा॥

पुत्रि तोहिं मम सपथ शत, मन वांछित वरमांगु।
दुष्टन कौन कुकर्म्म सो, मम दिशि ते सब त्यागु॥

अब तुम मम निहोर शिरमानी । करहु क्षमा अपराध भवानी
वेगि मांगु पुत्री वरदाना । तुमसम मोहिं न प्रिय कोउ आन
धर्मराज कुरुपति प्रिय मोरे । नाहिंन सुता तदपि सम तोरे
वारवार नृप कह वर मांगू । द्रुपदसुता मन सुनि अनुरागू ।
बोली वचन जोरि युग पाणी । सुनहु नरेश सत्य मम वाणी
मोहिं समेत सकल परिवारा । दासभाव भे पाण्डुकुमारा ॥
सो नरेश मांगे स्वहि दीजे । दासभाव विन सकल करीजै
वाहन अस्त्र देहु सब काहू । कीजै वेगि विदा नरनाहू ॥
मतिदृग कहेउ तोहिं मैं दीन्हा । मांगु अपर कछु आयसु की

सुनहु पिता कह द्रौपदी, मन वांछित वरदान ।
मैं पायो तुम्हरी कृपा, नाथ सपथ नृप आन ॥

तव प्रसाद अब कुरुकुलकेतू । फिरि होइहै सुखसम्पतिसे
उचित विप्र मांगैं वर चारी । कहत वेद अस नीति विचारी
क्षत्री तीनि वैश्य कुल दोई । मांगै एक शूद्र सुत होई ॥
म तो पुत्र वधू क्षत्रानी । लीन्हें मांगि तीनि वर जानी ॥
अब नहिं पिता मनोरथ मोरा । नरनायक मम मानि निहो
बुद्धिचक्षु चर चतुर बुलाये । सबके वाहन अस्त्र देवाये ॥
चढ़ि वाहन गहि आयुध हाथा । चले अवास धर्म्म नरनाथ

परसे चरण वृद्धिहगकेरे। बोले भूप युधिष्ठिरते रे॥
लज्जाविवश वचन सुनि तोरा। हे सुत होत विकल मन मोरा॥
वचन तोर सुनि तात, लज्जित अवनि समात मैं।
मोहि अछत यह बात, पुत्र परम अनुचित भई॥
होइ तुम्हारि परम कल्याणा। सुनु अशीष मम वचनप्रमाणा॥
जीति तुम्हारि राज्य सबलीन्ही। दुर्योधन अनीति बड़िकीन्हीं॥
सो मैं तुमहिं देत निज पानी। लीजै सुत प्रसाद मम मानी॥
मतिदृगआयसु शिरधर लीन्हा। शीश नवाय गमन गृह कीन्हा
प्रथम नरेश कीन्ह जहँ डेरा। दीन्ह त्यागि त्यहि ओर न हेरा॥
पटल वितान सेन चतुरङ्गा। चपल तुरङ्गम मत्त मतङ्गा॥
सकल धर्म्मनन्दन तजि दीन्हा। सहित कुटुम्बभवनमगलीन्हा॥
मिले विदुर मारगमहँ आई। जात भये निज भवन लेवाई॥
रानिनसहित नृपहि अन्हवाये। खान पान विश्राम कराये॥
त्यां उठि कुरुपति सभाते, गे सब निज निज धाम।
खान पान असनान करि, शेष दिवस रह याम॥
द्रोण करण भीषम शकुनि, निज निज गृह मग लीन।
खान पान विश्राम पुनि, सब भूपालन कीन॥
प्रथम करो असनान पुनि, भोजन करि कुरुनाथ।
सबलसिंह आयो सभा, दुरद दुशासन साथ॥
इति पञ्चम अध्याय॥ ५॥

सुन्दर कनक प्रयङ्कपर, शयन करी कुरुराय।
विदुर भवनहैं धर्म्मसुत, कही चरवरन आय॥
सुनि नरेश मन अति दुखपाये। सौवल शकुनी करण बुलाये॥
सहित दुशासन करत सलाहा। बोले दुर्योधन नरनाहा॥
जीत्यो राज धर्म्मसुतकेरी। दीन्हो वहुरि पिता सोइ फेरी॥
जीती अवनिपिता तजि दीन्हा। सो हमरेहित अतिभलकीन्हा
छूटे भूप दासगतिते रे। लेत भूमि असिधार गरेरे॥
त्यागन राज्य उचित मत ताते। किङ्करता विनु धर्म्मज जाते॥
अव तुम यतन वतावहु सोई। मृषा मनोरथ मोर न होई॥
परवश होत मनोरथ खाली। संशयविवश उठत मन हाली॥
कीन्हसकल कछुसरेउ न काजू। भयोजानि मम परमअकाजू॥
अवते कीजै यत्न कछु, विदुरभवन सुतधर्म।
हैं अवहीं सुनिये सचिव, कह कुरुनाथ कुकर्म॥
गुप्त शत्रुगति प्रकट भई सो। आपुस वीती प्रीति गई सो॥
यहै लाभ भा सचिव हमारा। मारत शत्रु गयो विन मारा॥
वड़ अनरथ अव सजग भयेते। वहु उतपात करैं हमते ते॥
सुनि कुरुनाथ वचन अनुरागे। सव मिलि मन्त्र विचारनलागे।
परेउ ठीक मत न्टप सुख पाये। वहुविधि सौवल सिखै पठावे
धर्म्मनरेश विदा उत मांगी। विदुर पठाइ फिरे अनुरागी॥
निज गृह जात युधिष्ठिर राई। सौवल मिल्यो वीच मग आई॥
कीन्ह जोहार माथ महि लाई। कहनलगेउ पुनि वचनवनाई॥

युक्ति सहित करि छल चतुराई । निज वश कीन युधिष्ठिर राई ॥
चलहु नरेश कुरुपतिहि जीती । लीजै वैर द्यूतकरि नीती ॥

यहि अनीति शकुनी करी, शठ समेत कुरुराज ।
होत दुसह दुख हृदय मम, गति तुम्हारि लखि लाज ॥

सोइ गति होइ कुरुपतिकेरी । हृदय वुताइ ज्वाल तव मेरी ॥
करि वहु यतन नृपहि पलटाई । कुरुसमाजकहँ गये लिवाई ॥
करि वहु प्रीति सभा वैठारी । मंगवाइ पुनि पँसासारी ॥
भावी प्रवल मेटि को सकई । वरजि वरजि सवप्रियजन थकई ॥
धर्म राज कर अत्त गहे जव । विहसि वचन यह कथ कहेतव ॥
का अव धरत युधिष्ठिर राऊ । कह नृप जो कहिये कुरुराऊ ॥
हारहि सो अस कुरुपति कहई । द्वादश वर्ष विपिन सो रहई ॥
कन्द मूल फल करै अहारा । उदासीन इव सव आचारा ॥
हारै सो निज भवन न जावै । आतुर कानन पन्थ सिधावै ॥

होइ वैठ जेहि थल यथा, तस कानन मग लेइ ।
अन्न अशन अरु राज्य सव, सो तजि तृणइव देइ ॥

अनुचर अपर लेइ नहिं सङ्गा । एक त्यागि निजवंशप्रसङ्गा ॥
तापस तनु धरि कानन जाई । देइ महीपति चिन्ह दुराई ॥
यहिविधि द्वादश वर्ष वितावै । नेम सहित तेरहीं जव आवै ॥
ग्राम निवास करै अज्ञाता । वर्षदिवसकहिजाय न जाता ॥
मिलै न खोज रहै यहि भाँती । वर्ष त्रयोदश‍इ जव जाती ॥
पावै राज्य चौदहीं आये । खोज त्रयोदशइ विन पाये ॥

जो कदाचि त्यरहीं सुधि पाई । द्वादश वर्ष वहुरि वन जाई ॥
जब जब खबरि तेरहीं पाई । तब तब सो कानन मग जाई ॥
मिलै न खबरि तेरहीं जासू । सो पुनि करै राज्य निज वासू ॥

भीष्मादिक सब थरहरे, सुनि कुरुपतिकी बात ।
कहि प्रमाण धरि दाउँ सोइ, दीन्हीं शत्रु अजात ॥

कह सौवल सुनु धर्म्मकिशोरा । होइ खेल शकुनी सँग मोरा ॥
मैं खेलौं तुम्हारी बदि राजा । देखौ शठ शकुनीकर काजा ॥
बोले कुरुजन धर्म्मज बाता । छल कहि भूलब शत्रुअजाता ॥
कर गहि अक्ष युधिष्ठिर राऊ । मानि प्रमाण धरौ सोइ दाऊ ॥
बरजत रहे सकल हितकारी । केहि विधि मिटै जो होनेहारी ॥
तमकि धर्म्मसुत अक्ष चलाई । परेउ दांव शकुनीकर आई ॥
खेल खेलार अचित शकुनीते । पुनि पुनि हारिगये नहिं जीते ॥

हारेउ दाउँ अधर्म्म-अरि, चुपकि रहे शिर नाय ।
विजयनगारे किंकरन, हने सो आयसु पाय ॥

छूटत सभा देश गृह कोशा । लखि उर शोक होत सहरोषा ॥
चितै शल्यदिशि धर्म्मज ज्ञानी । बोले श्रवत नयनजलपानी ॥
सुनु शठ तैं सब लाज गंवाई । भयसि वृथा माद्रीकर भाई ॥
मम दुर्गति देखहु मुसक्याई । धिक धिक त्वहिं जननीके भाई ॥
हम हारे शठतें नहिं हारे । लाज रोष कहँगये तुम्हारे ॥
जानत जगत तोहिं सब लायक । विक्रमथकेउदेखि कुरुनायक ॥
धिकधिकपाप बुद्धि शठतोरी । निजनयन न देखहु गतिमोरी ॥

धिकधिककितवकिहयअभिमानी। दीन्हेउमूढ़त्यागिममवानी॥
नहि कछु कुरुपतिकेर कुकर्मा। नहिंसकुनीकृत कर्म अधर्मा॥
समरथ भीष्म द्रोण संपाती। तिन्हेंदोष देइय क्यहिभांती॥
ए शठ भयसि पाप कर मूला होत न मूढ़ हृदय तव शूला॥

देखि दशा मम लाज तजि, रहे मूढ़ चुप साधि।
कहि न सकहि कोउ नीच कछु, कृत कुरुनाथ उपाधि॥

सुनु अधर्म निज काल बिताई। जो न विनाश करौं तवआई॥
तौ न गहौं शर चाप कृपाना। करौं त्याग चत्रीकुल बाना॥
अस कहि भूप अग्र पगु धारा। कहत रोषवश पवनकुमारा॥
गरजि जलदसम नयन तरेरे। बोले चितै दुशासनते रे॥
निपट नीच तवबुद्धि पिशाची। निश्चय मीच शीशपर नाची॥
ज्यहिकर वसन द्रौपदीकेरे। गहि खैंचेउ करि जोर दरेरे॥
सो उखारि डारौं भुज तेरे। दाह बुताय हृदय तव मेरे॥
ठोंकि जंघ बैठहु कहि चेरी। भइ मतिभ्रम कुरुनायककेरी॥
चहत कुशल करि सिंह जगाई। वैनतेय बलि वायस खाई।
होत यथा यह बात अयोगू। तेहिविधि हमहि हँसतसबलोगू॥

सुनत सभा अस कहत मैं, सब प्रतिवचन पुकारि।
तबलग धिक मोहि कुरुपतिहि, जब लग डारौं मारि॥

मल्लरभूमि गदा ले हाथा। जङ्घ भङ्ग करिहौं कुरुनाथा॥
कहे वचनकर फल देखरावौं। तौ मैं चत्रियवंश कहावौं॥
अवधि बिताइ कहा मम मानू। जो न विनाश करौं तव जानू॥

तौ हम होइँ निरयपथगामी। पन्नग-योनि जन्म परिनामी॥
बैठु जंघ मम द्रुपदसुताते। कहेउ सो दुर्योधन मुख जाते।
निज पदते मरदउँ मुख सोऊ। बन्धु हमार बोध तब होऊ॥
दिवस बिताय गदाधरि लरिहौं। अन्ध नरेश वंश संहरिहौं॥
तिय तजि पुरुष न राखौं एका। मति दृग वंश सत्य मम टेका॥
कृष्ण शपथ नृपचरण दोहाई। बीते दिवस करब सब आई॥

अस कहि निज कर गहि गदा, भीम चले नृप साथ।
बोले पारथ रोषवश, जो कुमार सुरनाथ॥

सुनु रविनन्द अधम मलरासी। कीन्हेउममविस्मयतजि हासी॥
धरणी सम करिहौं शरमारी। कर्णं प्रतिज्ञा सत्य हमारी॥
वृद्ध पितामह द्रोण हमारे। निज नैनन सुख देखन हारे॥
धन्य धन्य सब लायक केरे। निज निज नैन परम सुख हेरे॥
जन्म प्रयन्त सत्य ब्रत कीन्हा। अन्तकि वयस लाभ भल लीन्हा॥
शर सागर कौरव कुल बोरौं। भीष्मादिक क्षत्रिन शिरफोरौं॥
तौ मैं कुन्तीसुतशुचि साँचा। काटौं तव शिर कठिन नराचा॥
मोहिं अजातशत्रु कै आना। बीते दिवस करौं मन माना॥
अस कहि चले युधिष्ठिर सङ्गा। बोले नकुल रोष भरि अङ्गा॥
सुनु रे कर्ण पापकर अंशा। करौं विनाश सकलतव वंशा॥
विष्वक्सेन आदि सुत तोरे। होइहैं नाश सकल कर मोरे॥

सबलसिंह कहि नकुल अस, गये युधिष्ठिर पास
जो न करौं यह सत्य सब, होइ नरक मम वास ॥
इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

कह ऋषिराय सत्य सुनु राजा। मष्ट रहे कुरुनाथ समाजा ॥
तब सहदेव शकुनितन हेरी। भृकुटि भङ्ग करि नयन तरेरी ॥
शकुनी तव मति ईश भ्रमाई। नीच मीचु करि यत्न बोलाई ॥
द्यूत हराय कियो छल भारी। कीन सकल दुर्द्दशा हमारी ॥
जानेउ तुम इनके रिस नाहीं। ईर्षा लाज न कछु मन माहीं ॥
जनि भूलेउ यहि भूलि विशेखी। बीते दिवस परी सब देखी ॥
कुरुपतिनाश सहित परिवारा। होइ हैं ममकर मरण तुम्हारा ॥
बीते अवधि शरासन धरिहौं। रिपुकृतकर्मप्रकटसब करिहौं ॥
कृष्ण शपथ अरु धर्म महीशा। करौं समर तव खण्डित शीशा ॥
बीते दिवस प्रमाण निज, करौं सकल प्रण साँच।
मतिहगसुत कटि कटि गिरहिं, दाहनकरैं नराच ॥
अस कहि चलन भूपपहँ चखऊ। द्रुपदसुता तव रिसवश कखऊ
सुनहु दुशासन रुधिर तुम्हारा। जब मम शिर होइवहै पनारा ॥
बाँधव कच तव करि असनाना। कोटि भूप यदुपति के आना ॥
अस कहि केश दिये छिटकाई। दुःशासन के रुधिर नहाई ॥
जेहिविधि नाथलाज मम राखी। करेहुसत्यप्रण जनअभिलाखी
जब भङ्ग कुरुपति सुनिकाना। मैंसुखविपुललहब भगवाना ॥

बढ़त केश विगलित पञ्चाली। अति भयकार मनो कङ्काली॥
तनु सुन्दरता भय गति दूरी। रोष कराल रहा भरिपूरी॥
अस कहि द्रुपदकुमारि पुनि, चली युधिष्ठिर साथ।
वल्कल लाये दासगण, लखि रुख कौरव नाथ॥
ज्यहि मग जात युधिष्ठिरराई। अग्र दिये धरि भाजन जाई॥
दुर्योधन कर आयसु जोई। किङ्कर कहत जोरि कर दोई॥
नृप वल्कल अब धारण कीजे। गृहमग तजि काननमग लीजे॥
अससुनि भीम भयो मनरोषा। धिक कहि देत भुजनपर दोषा॥
रोष तरङ्ग विलोचन लाला। कहेउ नाथ धर्म्मज पद भाला॥
हम नृपदास भये अब नाहीं। आयसु नीच करत केहिपाहीं॥
राज्य त्यागि कानन मग जैहैं। तहं कुरुपतिका हमहिं सिखैहैं॥
प्रथम द्रुपदतनया निज धारे। का नृप वहुरि जन्म धरि हारे॥
जो न तजत मम नीच पछारी। चहतविलोकन शठ यमद्वारी
आयसु मोहिं नराधिप देहू। विक्रम बन्धु देखि करिलेहू॥
दुर्योधनहिं प्रकट देखरावों। जो तुम्हार अनुशासन पावों॥
तौ सौ भाई आजु सब, कुरुपति आदि बटोरि।
मारि पठावों यमपुरन, नृप तव शपथ करोरि॥
आजु सहायक हैं भगवाना। जीतब एक न पैहै जाना॥
निज करुणा करि चीर बढ़ावा। सो मम बाहु सहायक आवा॥
तदपि मरण जो यहि थलहोई। ध्रुक मम विस्मय कहै न कोई॥
भीष्मादिक बिन मारे मरिहैं। वृश्चिकराशि न एक उबरि हैं॥

विहँसि कहा सुनु भ्रात अजाता। तुमको द्रुपदसुता भइ त्राता॥
भ्रमरमध्य जिमि बोहित परई। गहि कर हाथ पार कोउ करई॥
त्राता नारि भली तुम पाई। कर्ण तर्क करि हँसे ठठाई॥
कछु नहिं कहा धर्म्म नरनाहू। बोले भीम भयो उर दाहू॥
सुनु रविनन्दन दूषण यामे। भेद न दम्पति श्रुति परिणामे॥
द्रुपदसुता है जीति हमारी। हँसी न देखहु हृदय विचारी॥
होउ न अज्ञ विवश परतीती। देखहु पूंछि विदुर सन नीती॥
निज तनु होत प्रकट यक देही। वाम अङ्ग तिय परम सनेही॥
नौमरि जाति पुत्र निज होई। कहे विदुर यह प्रकट न गोई॥

सुनि न कहेउ रविसुत कछु, चुपकि रहे अरगाइ।
बोले धर्म्म नरेश तब, आरत वचन सुनाइ॥

मोहि कर्ण अब मारग देहू। करि दुर्गति जनि जीवन लेहू॥
रविसुत कहेउ न आयसु मोहीं। दीजै पन्थ कवन विधि तोहीं
फिरे धर्मसुत सुनि असिवानी। श्रवत नयन वारिजमगपानी॥
जान पवँरि जेहिभ्रात अजाता। होत शोर तहँ जनु पविपाता॥
सुभट सरोप अस्त्रगहि धावहि। लखिसुतधर्म अपरमगजावहिं॥
यहिविधिन्टपचहुँदिशिफिरिआये। मारु मारु तजिपन्थनपाये
भे अति विकल धर्मसुत जीमा। शिरधुनिकहतशोकयुतभीमा॥
भूप तुम्हारि क्षमा दुखदाई। करत शोल उर वज्र किनाई॥
अवनहिं मिलिहै कुरुपति भागी। भै न्टप कुपथ कुमीचु हमारी

अहहदेव तुव गति अगम, मरे मीच विन आइ ।
मनकी मनहीमें रही; कहि विलपत सब भाइ ॥
होत सभामहँ भूप रजाई । जियत न जात भवन कुरुराई ॥
हमहि न रहत मरे कर शोचू । भा न्टपदुखद तुम्हार सकोचू ॥
इत नरहार भार तुव नाथा । उत रण सुभटन कौरव नाथा ॥
यह नरेश बड़ शोक समाजा । वीर वधे नहि होत अकाजा ॥
जाहि बन्धु जन प्रिय जन मारे । हृदय शोक दुख होत हमारे ॥
कह धरि धीर युधिष्ठिर राई । सुनहु तात तुम तजि कदराई ॥
सदा सहाय कहे करुणाकर । कस न खवरि लेहैं राधावर ॥
द्रुपदसुता की लाज वचाई । तिनहि न वात वड़ी यह भाई ॥
असकहि लोचन वारि विमोचैं । विदुर समेत वन्धु सव सोचैं

सकल कहैं आरत वचन; ताहि ताहि यदुनाथ ।
सजल नयन पुनि पुनि कहत, राधावर धुनि माथ ॥

जातविकललखि द्रुपदकिशोरी । कहतघटोत्कच दोउकरजोरी ॥
सुनो विनय मम धर्म्मकुमारा । विश्वम्भर रखवार तुम्हारा ॥
अब नरेश मोहि आयसु देहू । जिमिनिज किङ्कर इव कर नेहू ॥
तब नरेश निज पृष्टि चढ़ाई । सहित कुटुम्ब नाथ सवभाई ॥
करि दुर्योधन भवन उलंघा । जाउं भूप तव आयसु संघा ॥
नतो महीपति आयसु देहू । करौं महारण तजि सन्देहू ॥
न तु यहि अवसर जहं कुरुराई । जाइ समीप देहु पहुँचाई ॥
आयसु वेगि देहु मोहि राजा । तव पद सपथकरौं सोइ काजा ॥

कहेउ भीम कहँ हैं कुरुनाथा। तहँ मैं जाउँ गदा गहि हाथा॥

करु सुत सोइ उपाय, भूपति आयसु देहिं जो।
जियको जरनि बुताय, सन्मुख लखि दुर्योधनहिं॥
करौं प्रतिज्ञा सत्य, अबहीं जो कीन्हीं प्रथम।
होत शरीर असत्य, को जाने जीवन मरण

भीम वचन सबके मन भाये। आयसुमाँगिमाँगि शिरनाये॥
कहेउ धर्मसुत अबकी वारा। मानहु आयसु सकल हमारा॥
मारग यही विपिन कहँ लीजै। विग्रह बन्धु कदापि न कीजै॥
यहि प्रकार कहि धर्मकिशोरा चितै घटोत्कच ओरा॥
धन्य धन्य सुत भाग्य तुम्हारा। लीन उबारि सकल परिवारा॥
सब समेत अब सुत बड़भागी। काननपन्थ चलिय डर त्यागी॥
सपनेहुँ आन विचार न करहू। ममअनुशासन सुत उर धरहू॥
कहेउ सुभगशिष धर्मकुमारा। कीन सबन मिलि अङ्गीकारा॥
कुम्भोत्कच तनु धरेउ विशाला। छायोरूप श्याम कचलाला॥

होन लग्यो उतपात बहु, चले पवन उनचास।
अन्धकार माया प्रबल, दिवस नाथ उर त्रास॥

माया वश राक्षस को धारी। सब परिवार पृष्ठि बैठारी॥
सहित द्रौपदी धर्मज राई। दक्षिण भुजा लीन्ह बैठाई॥
वाम बाहुपर बान्धव चारी। भीमादिक लीन्हेउ बैठारी॥
पुनिपुनिगर्जिचलनजबभयऊ। नृपकरजोरिविदुरसनकहेऊ॥
तात पितासम आपु हमारे। शिशुपनतेसबविधिरखवारे॥

ममसुधिअब यादवपति लीन्ही । रक्षा आपु जन्म भरि कीन्ही ॥
हरिते अधिक हितू तुम मोरे । पितुमातासम हितन निहोरे ॥
अबते एक मोरि रखवारी । करेउ तात मम विनय विचारी ॥
जो गृह रहै देइ दुर्य्योधन । तात निहोरि किहेउ प्रवोधन ॥
तुम तहँ जात रहेउ कछुकाला । गयेदिवसदुखकटहिंविशाला ॥
जब जब सुरति करै मम माता । करेहुप्रवोध विकललखिगाता ॥
भोजन पान अधीन तुम्हारे । मातु प्राणधनके रखवारे ॥

विपिन महा दुखरूप, ताते उचित न मातुसँग
कही युधिष्ठिर भूप, गहवर उर व्याकुल निपट ॥
कहेउ प्रणाम हमार, तात मातुसन विविधविधि ।
अस कहि धर्म्मकुमार, चकित चितै रोवन लगे ॥

कहेउ विदुर नृप धीरज धरहू । आतुर गमन विपिनमग करहू ॥
हम कुन्ती बहु विधि समझैहैं । रञ्चक शोक न शीश विसैहैं ॥
हमहिं उचित विन कहे तुम्हारे । सब प्रकार पद सेवन हारे ॥
तदपिकहेउतबअतिभलकीन्हा । महाविपतितजिधीरजदीन्हा ॥
अवनहिं काम यहाँके ठाढ़े । कुरु आयसु आवतभट गाढ़े ॥
तुम कहँ करुणासिन्धु सहाई । दीन घटोत्कच कहँ पहुँचाई ॥
गमन कीजिये शत्रु अजाता । भये मरण नृपनीकि न बाता ॥
विदुर वचन सुनि धर्म्म नरेशा । कहेउ मातु कहँ पुनि सन्देशा ॥
मोर प्रणाम कहेउ जननी ते । मिलिहौं वर्ष त्रयोदश बीते ॥

मोहिं न होय लवलेशदुख, तव प्रसाद वन जात ।
बीते दिन पद देखिहौं, शोच परिहरिय मात ॥
भीम सँदेश विदुरसन कहेऊ । मम दिशि तात मातुसनकहेऊ ॥
कहेउ सहायक जो यदुराई । बीते दिवस गहौं पद आई ॥
भयो हमार कठिन अपमाना । अमर शरीर तजत नहिं प्राना ॥
होत न अब कछु कौन हमारा । का धौं अग्र करिय करतारा ॥
कुरुपति सदृश एक बिन रोरे । सब शठ देखि परत रिपु मोरे ॥
कोउ सज्जन परमारथवादी । पापी सकल भीष्म द्रोणादी ॥
तुम धर्मिष्ठ विदुर सब भाँती । गद्गदगिरा न पुनिकहिजाती ॥
कह पारथ सुनु तात सुजाना । तुम समर्थ विज्ञान निधाना ॥
कहब नविपति मातुसन भारी । जेहिसुख लहहिं नहोइँ दुखारी ॥
करेहु यत्न सोइ तात, मातु लहै सुख शोच तजि ।
करि कौरव कुलघात, दरशावों जननी वदन ॥
पृथक पृथक मातहि कहेउ, निज निज सबन सँदेश ।
तेहि अवसरकरुणा निपट, वरणि न जाइ नरेश ॥
बार बार कह द्रुपद किशोरी । सुरत करायहु मातहि मोरी ॥
पूजनीय तुम श्वशुर हमारे । नहिं सन्देश पठावन हारे ॥
अनुचितसमय कुअवसर जानी । कहेउ मातुते मम प्रियवानी ॥
पद सेवाकर अवसर आवा । भाग्यकठिनतवमोहिंभ्रमावा ॥
जो जीवत राखहि जगदीशा । धरिहौं आइ चरणतर शीशा ॥
तुव प्रसाद सब पुत्र तुम्हारे । रहिहैं मोहि समेत सुखारे ॥

असकहि विदुरचरणगहि रानी । बिलपत भाषत आरत बानी॥
पुनि पुनि मिलत धर्म्म नरनाहू । बहेउ विलोचन बारि प्रवाहू ॥
तेहि अवसर कुरु आयसु मानी । चहुँदिशि वीर धीर अररानी॥
गहे अनेक नग्न करवाला । रूप भयङ्कर धनुष विशाला ॥

धर्म्मसुतहि पारथ कहेउ, नाथ रजायसु होइ ।
चलत बार कौरव सुभट,कछुक दीजिये खोइ ॥
नहिं भायो पारथ वचन, नाय विदुरपद भाल ।
चलो घटोत्कच ते कहेउ, सत्य धर्म्म महिपाल ॥
लखि कुम्भोत्कच भूपरुख, आतुर बार न लागि ।
गर्जि तर्जि उच्चाट करि, गयो नागपुर त्यागि ॥
सबलिसिंह सुनि विदुरमुख, कौरवनाथ हवाल ।
ह्वै उदास शकुनी करण, बोलिलिये ततकाल ॥

इति सप्तम अध्यायः ॥ ७ ॥

इति सभापर्व समाप्त ।

महाभारत।

वन पर्व्व।

अब वनपर्व कथा यह, आगे सुनहु नरेश।
छाँड़ो देशहि धर्मसुत, कीन्हों वनहि प्रवेश॥

काम्यक विपिन रहे तहँ जाई। धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई॥
जहाँ विपिन है बहु विस्तारा। सिंह भालु वाराह अपारा॥
किर्मिर नाम दैत्य एक रहई। महा सो वीर पराक्रम अहई॥
ताके डर बहु तपी डराई। तेहिवन निशि वासर सोरहई॥
मानुष बास पाइकै धायो। धर्मराज सन पूँछन आयो॥
किवर नाम अहै वन मोरा। को तुम वीर अहौ बरजोरा॥
धर्मराज बोले यह बानी। पाण्डुपुत्र हैं सब जग जानी॥
भीम धनञ्जय नकुल कुमारा। सहदेव लघुहैं बन्धु हमारा॥
हमहीं राज युधिष्ठिर अहहीं। सत्य वचन तोसें सब कहहीं॥
यह द्रौपदी अहै पटरानी। हारि राज्य लियो वन आनी॥

सुनत दैत्य हँसि बोलेऊ, विधि मोहिं दीन्ह अहार।
भीम नाम सो दुष्ट बड़, वैरी अहै हमार॥
रहै बकासुर बन्धु हमारा। ताको भीमसेन संहारा॥
सखा हमार हिडम्बक रहई। मारो ताहि दैत्य अस कहई॥
सो विधि मोकहँ दीन्ह मिलाई। आजु मारिहौं पांचौ भाई॥
शोणित करौं भीमकर पाना। तब संतुष्ट होइ मम प्राना॥
यह कहि दैत्यरूप तब धारा। वृक्ष एक हँसि भीम उखारा॥
मार्‍यो भीमसेन करि क्रोधा। किर्मिर नाम दैत्य बड़ योधा॥
मारयो वृक्ष तासु के माथा। क्रोधित भयो दैत्यकर नाथा॥
एकै एक जीति नहिं पायो। दूनों वीर जूझ मन लायो॥
तब पर्वत इक दैत्य उपारा। भीमसेनके उरपर डारा॥
मारु मारु करिकै तब धावा। चन्द्रहि राहु ग्रसन जनु आवा॥
उठेउ भीम तब क्रोध करि, मल्लयुद्ध तब ठान।
जिमि सुग्रीवहि बालिसों, विविध भाँति मैदान॥
एक एकते वीर अपारा। महासमर जनु भौ सञ्चारा॥
हा कत दानव लरि लपटाहीं। है गो शब्द घोर वनमाहीं॥
ठोकत जांघ बजावत वारी। लपटि जात दोउ महा प्रहारी॥
मुष्टिक औरु चपेटक घाऊ। एकहिं एक वधो मन लाऊ॥
उड़त धूरि नभ जङ्गल जाई। जीवजन्तु वन छांड़ि पराई॥
क्रोधित भीम गह्यो तब ताहीं। दूनो हाथ दियो कटिमाहीं॥
बहुरि भीम पकरेउ शिरवारा। क्रोधवन्त होइ भूमि पछारा॥

आरत दानों कीन्ह चिकारा। मुखतें चली रुधिरकी धारा॥
भीम दैत्य को जवहिं संहारा। छाँड़ेउतव जव प्राण निकारा॥
वधेउ दैत्य कहँभीम जुझारा। हर्षित भे तव पवनकुमारा॥
मिलि सव वन्धु हर्ष उरछाये। दुर्वासा तहँ देखन आये॥
साठि सहस्र शिष्य लै साथा। वोलेउ वचन सुनहु नरनाथा॥
हम सवकहँ भोजन करवावौ। ना तरु ब्रह्म शापतुम पावो॥
ताश्रवन्त पाण्डव सव भयऊ। तव द्रौपदिहरि समिरनकरेऊ॥
सुमिरत श्रीहरि आये जवहीं। क्षुधावन्त भाषेउ तिन तवहीं॥
भोजन नेकु न कछु गृह अहई। श्रीपतिसों यह द्रौपदि कहई॥
भोजन भाजन लैकर आई। यकु रञ्चक भाजी तहँ पाई॥
यदुपति कछु न भेजत अहई। लीवो पात सो यदुपति कहई॥
पुनि कृष्णहि अस वचन सुनाये। तीनोंलोक तृपित होइजाये॥
मुनिगणकेर उदर भरि आये। श्रीहरि द्वारावती सिधाये॥
दुर्वासाकह भीम वुलाये। भोजन हेतु चलौ मुनिराये॥
दुर्वासा तव वचन प्रकाशा। कवहुँ न होइ भक्तकर हासा॥

यह कहि गे दुर्वास ऋषि, हर्षित धर्मकुमार।
सूर्य विनय करि द्रौपदी, पूजा करि विस्तार॥

ह्वै प्रसन्न तव रवि वर दीन्हों। मागु मागु यह कहि सो लीन्हों
कहा द्रौपदी धर्म्म उपाई। अन्नपूरणा देहु गुसांई॥
ह्वै प्रसन्न रवि तहँ अति दीन्हों। धर्मराज कहँ हर्षितकीन्हों॥
प्रतिदिन तहँब्राह्मणविधिनाना। भोजनकरैं वहुत सुखमाना॥

साठि सहस तहँ मुनिवर आये। नितप्रति तहँ भोजनकरवाये॥
ऐसे धर्मराज तहँ रहई। परम हर्ष वन भीतर अहई॥
ब्राह्मण भोजन प्रतिदिन, वनमें धर्म भुवार।
पाण्डव विजय रहस्यहै, सुने पाप सब चार॥
आगे सुनु जनमेजय राजा। धर्मराज कीन्हेउ जसकाजा॥
सरवर एक सुभग वन रहेउ। जलकारण सहदेवतहँ गयऊ॥
जलमें एक जन्तु तहँ रहई। पायो शब्द वचन सो कहई॥
को तुम जीव कहौ अब भाई। कहौ सो सब ममकथाबुझाई॥
प्रति उत्तर सहदेव न दीन्हों। तुरतहि ग्राह लीलि तब लीन्हों॥
यहि प्रकारतहँ चारिउ भाई। लीले ग्राह सरोवर जाई॥
धर्मराज तहँ करो विलापू। पाछे गये सरोवर आपू॥
जल भाजन देखेउ तवराई। तटमें चरण चिह्न है भाई॥
अरु बक चिह्न पाइ लखिराजा। तव चलिगयो सरोवरकाजा॥
लखि भाजन राजन तव गहई। पावन शब्द ग्राह तव कहई॥
को जीवत को जागता, कहौ भेद समुझाइ।
कहे विनाहिं सरोवर, कोउ न जल लैजाइ॥
धर्मराज तव मनमहँ जाना। यही जन्तु कछु करयो विधाना॥
धर्मराज तव कह समुझाई। जीव जौन सो सुनु मन लाई॥
दयाशील समता मन रहई। सत्य छोड़ि मिथ्या नहिं कहई॥
विष्णुभक्ति आनै करिज्ञाना। प्रेमभाव मनमें जो ठाना॥
जाके हृदय कपट है नाहीं। परसेवक सो है जग माहीं॥

जीवै सदा सो भक्त कृपाला । तू किमि जीवै सुनु चण्डाला ॥
कहे वचन अस धर्म्मभुआला । तब छोड़ेउ सहदेवै काला ॥
फेरि कह्यो को जीवत प्रानी । धर्म्मराज तब कहेउ बखानी ॥
सेवा मात पिताकी करई । सदा धर्म्म हिरदयमहँ धरई ॥
पाप कपट जिय कबहुँ न जाना । जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तू किमि जीवै जो निज चोरा । परो अधम काल के फेरा ॥
इतनी सुनेउ ग्राह पुनि जबहीं । नकुलहिकहँ छाँड़ेउपुनितबहीं
और सत्य अपने जिय माना । है यह धर्म्मराज जिय आना ॥

को जीवत है जगतमें, सुनिये धर्म्मकुमार ।

सुनुरे पापी पातकी, धर्म्मज वचन उचार ॥

अपनीदेह हाट करि जाना । करै योग विधि वेद प्रमाना ॥
ये षटचक्र विदारैं कोई । जीवै सदा भक्तजन सोई ॥
तूतो भक्ति धर्म्म नहिं जाना । सदा मृत्यु सुख सुनु अज्ञाना ॥
इतना सुनि त्यहि अर्ज्जुन वीरा । उगिलि ग्राह है हर्ष शरीरा ॥
पुनि तब ग्राह कही यहवानी । धर्म राज सुनि कह्यो बखानी ॥
जीवत योग देह मह होई । भावत कर्म्म धर्म्म नहिं सोई ॥
कामी क्रोध लोभ अहँकारा । कालरूप जाने संसारा ॥
जीवै जो यह भक्त सुजाना । जीवै सदा भक्त भगवाना ॥
तैं किमि जिये मूर्ख अज्ञानी । परौ नरक चौरासी खानी ॥
सुनत भीम उगिलेउ तिहिवारा । विनयकीन्ह तिहिं बारम्बारा ॥

सुनिये भूपति धर्म्मसुत, जानत सब संसार ।
छुवो जो चरण शरीर मम, तब होवै उद्धार ॥
परस्यो चरण भूप तेहिं जबहीं । दिव्य रूप राजा भे तबहीं ॥
धर्म्मराज पूंछेउ हरषाई । कौन कहौ गति कैसे पाई ॥
तबहिं राउसों कहेउ विचारी । सुनहु धर्म्मसुत विपति हमारी ॥
हमतौ यही शाप हित पाई । ताते तब लीलिउँ सब भाई ॥
सो जब तुमहिं चीह्नि हम पायो । तुमहीते उद्धार करायो ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

सुनु राजा यह कथा सुहाई । जौन हेतु हम यह गति पाई ॥
मैं यह बार अहेरे गयऊं । कर्म्महीन तबहीं सों भयऊं ॥
एक कहार मृतक ह्वै गयऊ । ममसँग अश्व न एकौ रहेऊ ॥
परेउँ भूलिकै सो वनमाहीं । विपिन सघन तह सूझेउ नाहीं ॥
कर्म्म हीनते दुख मैं लहेऊ । करत तपस्या ऋषि वन रहेऊ ॥
तौन महाऋषि जान न पाये । तिन्हैं कहार तहाँ धरि लाये ॥
आनि पालकी माहिं लगाये । निजपुरको फिरि तब हम आये ॥
द्वारे धरी पालकी आई । बैठ मुनीश्वर पुनि तेहि ठाई ॥
भोजन पान खबरि नहिं लयऊ । वासर गयउ राति पुनि भयऊ ॥
वासर बीते रैनिभै, कीन्हेउँ मैं उच्चार ।
प्रथम पहर मैं भाषेऊं, को जानत संसार ॥

तब मुनि कही तहाँ यह बाता। जन्ममृत्यु दुखसुख सँग ताता॥
क्षुधा तृषाते नित दुख सहई। करत बंध सो सुख नहि लहई॥
जानै यह जग दुःखसमाजा। सो जागै सब सोवत राजा॥
दूजे यहै चलाई बाता। जागै कौन कहौ सति ताता॥
पुनि बोल्यो मुनि बात प्रमाना। योगी योग करै नित ध्याना।
काम रु क्रोध लोभ अहँकारा। बसैं देहमें सब बटपारा॥
सदा ज्ञानते रहै सचेता। सोवत जागत रहै सो येता॥
तीजे पहर पूछ मैं आही। सो सुनि बोले पुनि मुनिपाही॥
जो कोइ ध्यान करै जगमाहीं। ताको संकट परै न काहीं॥
दिव्यज्ञान करि हरिको जानै। हिंसा कपट हृदय नहि आनै॥
जो दुःखी सो संशय भरई। परवश ह्वै प्रचार सो करई॥
सो जागै सब सोवैं राजा। सोवैं खोवैं आपन काजा॥
चौथे पहर कहेउ को जागे। क्रोधित मुनि बोले मो आगे॥
सुनु मूरख जागै जो ज्ञानी। तू किमि जागै गृह अभिमानी॥
ग्राह होय राजा तैं जाई। भूप शाप ऋषिको यह पाई॥

तब मैं विनती कीन्हेउं, भा बड़ दोष हमार।
कीजै दया महामुनि, अब हमार उद्धार॥

बोले मुनि तब सहित कृपारा। द्वापर युग उद्धार तुम्हारा॥
पाण्डुपुत्र अइहैं बन माहीं। धर्मपुत्र धर्म्मी मन चाहीं॥
परसै अङ्ग होब उद्धारा। पुनि दीन्ह्यो वर याहि प्रकारा॥
सो राजा तब दर्शन पाई। मम उद्धार भयो अब आई॥

यहि प्रकार ते पायउँ शापू। मेटेउ शाप कृपा करि आपू॥
अस्तुति करि राजा दिवि गयऊ। धर्म्मराज मन हर्षित भयऊ॥
भाइन सहित हर्ष हिय भयऊ। तेहि थल बसे धर्म्म सुख लहेऊ॥
सुनो भूप जनमेजय बाता। सो जड़भरत हतो मुनिताता॥
रहे हर्षि सो तेहि वन, परम मनोहर ठाय।
सहित द्रौपदी राजतहँ, अरु सब चारिउ भाय॥
तब सो द्रुपद राज भगवाना। धृष्टद्युम्न सँग करेउ पयाना॥
मिलन हेतु सो वनमहँ आये। बहुविधि उन्हें कृष्ण समुझाये॥
दुखसुख यह विधि कर तव राजा। हस्तिनपुर कर राज समाजा॥
यहि विधि मिले तिनहिं सो जाई। सहित द्रौपदी पाँचौं भाई॥
धौम्यऋषिहिंमिलिबहुसुखमाना। तवहिंद्रुपदगृह कियोपयाना॥
पांडव वसहिं जौन वनमाहीं। कामक वन उत्तम है जाहीं॥
बहु दिन रहे तौन वनमहहीं। चारिउ वन्धु धर्म्मसुत रहहीं॥
वहु दिन काम्यक वनहिंमें, रहे पांडु तहँ आइ।
ह्वै उदास पुनि धर्म्मसुत, छाँड़ो सो वन जाइ॥
तवहिं द्वैत वन पांडव गयऊ। मार्कण्डे मुनि दर्शन भयऊ॥
नारद आदि सुने यह तवहीं। पाण्डव गये द्वैत वन जवहीं॥
तहा वसहिं बहु ऋषय समाजा। पाण्डव शोक मिटैबवे काजा॥
सो सम्वाद वहुत विस्तारा। कछु संक्षेप सुनौ सुखसारा॥
वसे द्वैत वन पाण्डव आई। तहाँ द्रौपदी वात चलाई॥
कहे वचन तव धर्म्म नरेशहि। विपिन वास वहु सहे कलेशहि॥

पापी दुर्योधन जग जाना। शकुनी कर्ण दुशासन नाना॥
अन्ध नृपति कछु कहो न आई। सुनो धर्मसुत पाँचौ भाई॥
हमहिं सहित उन वनहिं पठाये। दुर्योधन छल ख्याल न लाये॥
नेकु दया हिरदै नहि लायो। कपट अक्ष करि वनहि पठायो॥

आपु सहेउ वहु दुःख वन, हमैं सहो नहि जाइ।
दुर्योधन अपकारि सो, रानी कह्यो बुझाइ॥

नाना यज्ञ धर्म बहु कीन्हा। ताकर बहुफल विधि यह दीन्हा॥
भीम वीर अर्ज्जुन धनुधारी। पलमा करैं सकल संहारी॥
ये तुम्हरे वाचा के कारन। सकैं न कौरव दल संहारन॥
आज्ञा देउ सुनो हो राऊ। मारैं शत्रु देश तव पाऊ॥
क्षमा केर अवसर अब नाहीं। छिपिके रहव कहाँ धौं जाहीं॥
क्षमाके समय क्षमा है भारी। युद्ध समय कीजै हठि रारी॥
राजधर्म क्षत्रीके कर्मा। मारु शत्रु जिन कीन कुकर्मा॥
द्रौपदि केर वचन ये सुनिकै। बोले वचन धर्म मन गुनिकै॥
कहे वचन राजा तिहि ठाईं। धर्महि सदा वेदमो आईं॥
बारह संवत निजसुख हारा। चित्त क्षमा तेहि हेतु हमारा॥

किये क्रोध सम पाप नहिं, राजा कह्यो बुझाइ॥
क्रोध किये पुनि धर्म नहिं, भाषेउ पाण्डवराइ॥

दान धर्म सब कालहिं करई। परै दुःख तेहि जनि परिहरई॥
है सब घटमें पुरुष प्रधाना। दुखसुख सब समान करिजाना॥

एक पुरुष है सुख दुख दाता। दूसर अहै न सुनु मम वाता ॥
सुनत भीम क्रोधित ह्वै गयऊ। धर्मराज सन बोलत भयऊ ॥
जोपै धर्म महासुख पाये। तौ वनको सहेत केहि आये ॥
कौन धर्म महँ बहु सुख पाये। देखत देखत राज्य गँवाये ॥
कौन धर्म दुर्योधन राऊ। राज्यको सुख सो सकल बनाऊ ॥
आज्ञा देउ वधौं सो भाई। फिरि पीछे लै जाउँ लेवाई ॥
तुम्हहिं राज्य बैठारहु राजा। ऐसो जाइ करौं सब काजा ॥
अर्जुन धनुष खैंचि शर धारैं। इक क्षणमें कुरुराज सँहारैं ॥

तुम्हैं हीन बल कौरवा, जानैं अपने जीव।
आज्ञा देवहु धर्मनृप, कह्यो कोप करि भीव ॥

भीम वचन सुनि राजा कहई। जुआं खेल हारे सब अहई ॥
वाचा हारि करो सत कर्मा। पीछे युद्ध कीजिये धर्मा ॥
धर्म न छाँड़ब जबतक प्राना। धर्मते राज्यऋद्धि जगजाना ॥
ताही समय व्यास तहँ आये। हर्ष हृदय पांडव समुझाये ॥
तब इक मंत्र व्यासमुनि कहेउ। सुनिकै धर्मराज सुखभयऊ ॥
पुनि यह मंत्र जपौ तुम जाई। पारथते तब कहेउ बुझाई ॥
देउ मंत्र जपतै वर पैहौ। युद्ध जीति पृथ्वीपति ह्वैहौ ॥
इन्द्र वरुण यम शंकर देवा। होत सबै परसन्नहि सेवा ॥
यह कहिकै ऋषिव्यास सिधाये। काम्यकवन पुनि पांडव आये ॥
कामवक पुनि भयउ प्रकाशा। पांचो बन्धु द्रौपदी पासा ॥

यहि प्रकारते वनहिंमहँ, रहे पाण्डुसुत आनि।
जनमेजय नृप आगेहू, वैशम्पानि वखानि॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

सुनु राजा रहें जौन प्रकारा। चारिउ बांधव धर्म्मकुमारा॥
केतिक दिवस रहे तिहि ठाहीं। इकदिन पारथ नृप सो काहीं॥
आज्ञा होइ जाउँ मैं तहँवाँ। गौरीपति के दर्शन जहँवाँ।
आज्ञा पाइ चरण छुइ राई। चढ़ो हिमाचल पर्वत जाई॥
व्यास मंत्र जो विद्या देऊ। तौन मंत्र जपि ध्यान लगेऊ॥
फल औ मूल भये तयमासा। पुनि दुइमास भयो उपवासा॥
शंकर तव प्रसन्न ह्वै आये। पारथसों इमि वचन सुनाये॥
काहे तप कठोर तनु त्रासा। मन इच्छा सों करौ प्रकाशा॥
जो वांछा उर अहै तुम्हारे। होइ सिद्धि सुनु वचन हमारे॥
भये शम्भु कहि अन्तर्धाना। तेहि वन पारथ पुनि तप ठाना॥
अन्तर्ध्यान महेश भे, अरु अर्जुन वर पाइ।
ह्वै प्रसन्न तप करत भे, शंकरसों मन लाइ॥
तप साधन बीते कछु काला। और चरित सो सुनौ भुवाला॥
रूप किरात धरो हर तहँवां। करत उग्र तप पारथ जहँवां॥
शंकर धनुषबाण करलीन्हों। रूप सुन्दरी गौरी कीन्हों॥
भूत कटक सब संग लेवाई। कोल भील कर वेष बनाई॥

अहै नाम शुक दैत्य कुमारा । शूकर रूप घोर पुनि धारा ॥
पारथ के आगे भे आई । रूप किरात महेश्वर जाई ॥
चला दैत्य तारकके काजा । करो विचार भूतके राजा ॥
गर्ज्यो शूकर पारथ आगे । ध्यान छांड़िके पारथ जागे ॥
धनुष बाण पारथ कर गहेऊ । तब किरात अर्जुनसन कहेऊ ॥
बहुत परिश्रम करि मैं आयों । बड़ो पराक्रम करि मै पायों ॥

तेहि चाहत है मारने, अरे मूढ़ अज्ञान ।
अर्ज्जुन कहो न मानि तब, हन्यो तासु शिर बान ॥

कोलरूप तजि दानव भयऊ । तब किरात मन क्रोधित भयऊ ॥
मारेसि कोल आपने हाथा । पठवों तोहिं कोलके साथा ॥
यमपुर अबहिं पठावों तोहीं । तैं अब वीर विरोधेसि मोहीं ।
जो शक्ती हैं तनु तुव हारो । ताते अस्त्र देहु परहारो ॥
सुनिकै क्रोध धनञ्जय ठाना । पुनि किरातपर वर्ष्यो बाना ॥
एकौ बाण न भेदेउ अङ्गा । विस्मय करि पारथ मनभङ्गा ॥
तब हसि शङ्कर वचन बखाना । और बाण तोहि करों निदाना॥
अर्ज्जुन धनुष हन्यो बरजोरा । टूट्यो अस्त्र तौन पुनि घोरा ॥
अर्ज्जुन कह्यो किरात न होई । होय विष्णुकी शङ्कर सोई ॥
माया वपु करि वञ्चेउ मोहीं । भयो चकित चिन्तामन सोही ॥

खड्गघाव जो मारेऊ, सो निष्फल ह्वै जाय ।
तबहिं वृक्ष यक लीन्हेऊ, पारथ क्रोधितधाय ॥

शङ्कर भूत बाण अस मारा । काटि वृक्ष भूतलमें डारा ॥

तब पारथ मुष्टिक अस मारा। पौरुष करि अर्जुनहिं प्रहारा ॥
सात दिवस ऐसे रण कीन्हा। दिन अरु राति सांस नहिं लीन्हा ॥
शङ्कर पुनि तहँ हाथ पसारा। अल्प तेजको पारथ मारा ॥
लागत भूमि परेउ मुरझाई। क्षणक एक पुनि चेत सो आई ॥
रहुरहु पुनिकहि उठ्यो प्रचारी। तब सो हृदय निहारि निहारी ॥
प्रथमहिं पूज्यो शङ्कर जोई। पारथ ताहि विलोक्यो सोई ॥
सो माला हर गरे निहारा। देखि चकित भो पाण्डुकुमारा ॥
निश्चय जान्यो शङ्कर होई। परेउ दौरि चरणनपर सोई ॥
क्षमा करौ यह चूक हमारी। बिन जाने कीन्ही मैं रारी ॥
तब शङ्कर प्रसन्न चित भयऊ। हितकरि चितै परम सुखदयऊ ॥
मैं प्रसन्न हरि हर कहि दीन्हा। तब अर्जुन प्रनाम सो कीन्हा ॥
शची फाल्गुन नाम जो दीन्हो। नैना दिव्य भाल जो कीन्हो ॥
औरो कहे वचन परमाना। अजय जगतमें हो निर्वाना ॥
तोसों रण न जीत मैदाना। ऐसी शक्ति काहिके प्राना ॥
देव दृष्ट गत पायेउ जाहा। सबै दुष्टको मारेउ ताहा ॥
नाना अस्त्र इन्द्रते पाये। देव सभामें हर्ष उठाये ॥
नाना देव अस्त्र वर ताहां। इन्द्रलोक मों पारथ जाहां ॥
इन्द्र वरुण यम देव हैं नाना। अस्त्र अनेक चहै मति माना ॥
यह स्वरूप पारथ तहं करई। वैशम्पायन राजहो कहई ॥

पशुपतास्त्र मन्त्रहि सहित, हर अर्जुन कहँ दीन्ह।
हर्षित गात धनञ्जय, चरणकमल गहि लीन्ह ॥

तुमसँग युद्ध पार को पाई । ऐसी शक्ति न काहू भाई ॥
अस्त्र देइकै पशुपति नाथा । अन्तर्द्धान भये गणसाथा ॥
हर्षवन्त कह पारथ वैना । मैं शङ्कर देख्यों भरि नैना ॥
धन जीवन जग आज हमारा । जो शङ्कर निज नैन निहारा ॥
पारथ बहुत हर्ष जिय पाये । तौने समय देव सब आये ॥
इन्द्रआदि सँग सब दिगपाला । पारथ ऊपर भयो दयाला ॥
नर नारायण सुरपति कहई । तुम नररूप जन्म सुत अहई ॥
भूमि सहै नहिं क्षत्री भारा । तेहि कारण अवतार तुम्हारा ॥
जेहिविधि अस्त्र जौन हैं जेते । सिखै देव हम तुमकहँ तेते ॥
यह कहि शक्र अस्त्र सब दीन्हें । मन्त्रन सहित समर्पण कीन्हें ॥

कालदण्ड यम दीन्हेऊ, वरुण दियो जलवान ।
वज्रदण्ड इन्द्रादिदे, हर्षित भो बलवान ॥

जब उपकार अग्निको कीन्हों । पावक अस्त्र तहाँ वहु दीन्हों ॥
सप्तअर्चि गाण्डिव धनु लीन्हों । नन्दिघोषरथ हुतभुक दीन्हों ॥
आपन अस्त्र यक्षपति दीन्हों । तवहीं इन्द्र कञ्चुकशिप दीन्हों ॥
मातलि साथ स्वर्ग कहँ ऐहौ । अस्त्र अनेक तहाँ तुम पैहौ ॥
यह कहिकै सुरपति तब गयऊ । रथसह सूत उपस्थित भयऊ ॥
देवसभा जब पारथ गयऊ । नाना अस्त्र इन्द्र तब दयऊ ॥
वहुविधि अस्त्र सिखाये ताही । इन्द्रलोक पारथ जहँ आही ॥
देव अस्त्रपढ़ि सब विधि जानी । सुरपति जिष्णु परमसुखमानी

सिखै अस्त्र वहु पारथहि, देवपुरीमहँ जाय ।
चिन्ता करत युधिष्ठिर, पारथ को हित पाय ॥

कौने देश धनञ्जय गयऊ । चारिउ वान्धव शोचत भयऊ ॥
कीन्ह्यो शोच द्रौपदी रानी । तवहिं धर्म्मसुत कह्यो वखानी ॥
विद्या महा व्यासते पायउ । तौने कारण वनहिं सिधायउ ॥
गौरीपति अवराधन गयऊ । कौन हेत जिय विस्मय भयऊ ॥
हर पूजाते संशय नाहीं । है कल्याण लोक तिहुँ माहीं ॥
होउ प्रसन्न शोच केहि काजा । इमि सवको समुझावत राजा ॥
तप कारण पारथ तहँ जाई । सुनत भीम तव कहो रिसाई ॥
जो वियोग पारथ सँग होई । प्राणत्याग करिवो सव कोई ॥
प्रथमहिं आज्ञा देतेउ राजा । सहतेउँ कत यह दुखहि समाजा ॥
क्षमा किये राजा कह पैये । दिनदिनदुखवहुविधिकिमिसहिये ॥

राज्य देश सव लूटेउ, राव तुम्हारे हेत ।
देहु रजायसु राज तुम, अवते होउ सचेत ॥

मरिये शत्रु देश तव पाई । वनको दुःख सहो नहिं जाई ॥
वारह वर्ष सहो दुख भारा । एक वर्ष अज्ञात भुवारा ॥
अर्ज्जुन वीर वड़ो धनुधारी । और सहायक श्रीवनवारी ॥
राव तुम्हारी आज्ञा पावों । दुर्योधन शतवंधु नशावों ॥
भीमके वचन श्रवण सुनि लीन्हें । धर्म्मराज उत्तर पुनि दीन्हें ॥
सुनो भीम जो वचन वखानी । दोष हमार सत्यकरि जानी ॥

सुनि मम वचन रहौ अरगाई । पीछै वन्धु करौ मनुसाई ॥
अब यहि समय रहौ चुपभाई । तबै अप्रवऋषितहँ चलिआई ॥
धर्म्मराज उर आनँद छाये । अर्घ्य देइ आसन बैठाये ॥
कहेउ आप सब वर्णि कलेशा । महादुखित होइ वरणि नरेशा ॥

तजेउ देश वहुदुख सहेउ, दुर्योधनके काज ।
आदि अन्त मुनि आगे, वर्णो दुख सब राज ॥

सुनिकै तब दुख कहो वखानी । मिटै न कर्म्म लिखा सुनुवानी ॥
तुमतो वड़ो दुःख नृप पाये । राज्य छोड़ि वनवासहि आये ॥
नल दुख सुनो मनहिं धरि राजा । घटै पाप वहु सुक्र समाजा ॥
पांसे खेलि हारि सब देशा । रानी सँग वन कीन्ह प्रवेशा ॥
एकवस्त्र दोनौं ढिग रहेऊ । सोऊ तजि राजा वन गयऊ ॥
पायउ सो दुख वहुवन जाई । छुटयो दुःख भे राजा आई ॥
ताको कहउँ सहित विस्तारा । सावधान होइ सुनो सुवारा ॥
तासु दुखहि सुनिहौ हो राऊ । सुनत प्राण धीरज ना राऊ ॥
पायउ पतिव्रता दुख जेता । तोपर कहो जाइ नहि तेता ॥

सुनत दुखहि वहुनृपतिके, पारथ वीर न होइ ।
धर्म्मराज के आगे, कहत अप्रव ऋषि सोइ ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

सुनु नृप है नैषध इक देशा। तहँ पुनीत नल नाम नरेशा॥
बहु विस्तार कह्यो नहिं जाई। लघुकरि ताहि कहौं समुझाई॥
इक दिन राव सरोवर जाई। पक्षीत हंस देखि बहु पाई॥
तबहीं हंस पकरि नृप जाई। रोइ हंस तब नृपहि सुनाई॥
राजा वेगि छाँड़िदे मोहीं। कन्या एक मिलावों तोही॥
देश विदर्भ भीम नृप रहई। कन्या एक तासु गृह अहई॥
दमयन्ती विधि रूप सँवारी। देखि गिरा रति रूप निहारी॥
सुननहि राज हर्ष मनलीन्हा। तुरतहि छाँड़ि हंसकहँ दीन्हा॥
राजा गे अन्तःपुर माहीं। देश विदर्भ हंस उड़ि जाहीं॥
उतरो जाइ हंस सो तहँवाँ। पारिजात फूले बहु जहँवाँ॥

उत्तम सरवर देखिके, उतरो हंस विचारि।
विधि रचना सबसखीसँग, आई राजकुमारि॥

देखि हंस कहँ राजकुमारी। गहन हेत तब बुद्धि विचारी॥
तब वह हंसरूप अति धारेउ। निजवश कन्याको मनकारेउ॥
सुनु दमयन्ती बात हमारी। नैषध देश महीपति भारी॥
नल राजा उपमा को कहई। देखत रूप मोहि जग रहई॥
तब यह सफल तोर है रूपा। जो पति पावो नलसो भूपा॥
सुनि दमयन्ती हृदय जुड़ाना। हंसवचन सुनि हरषित प्राना॥
कह दमयन्ती करहु उपाई। जाते होइ मोर पति राई॥
भये स्वयम्बर उनकहँ वरिहौं। अरु काहूको चित्त न धरिहौं॥
सुनत वचन यह कहेउ बुझाई। जात अबहि मैं कहौं उपाई॥

उड़ो हंस तब पंख पसारो । देखि रहो तब राजकुमारो ॥
हंस देश नैषधमहँ, राजहि कहा बुझाइ ।
कन्या मन तुमसों बसेउ, करहु हर्ष मनराइ ॥
राजा सुनत हर्ष मन कीन्हों । पूरबकथा कहन मनलीन्हों ॥
देखि सुताकर चितहि उदासा । रानी नृपसों वचन प्रकासा ॥
राजा सन रानी कह वाता । कन्या योग स्वयम्बर गाता ॥
सुनत वचन राजा मन भाये । देश देश तब विप्र पठाये ॥
राजा भीम स्वयम्बर कीन्हों । भूपन सबहि निमन्त्रण दीन्हों ॥
नल राजा कहँ नेवत पठावा । करि निज साज तुरङ्ग सिधावा ॥
नारद सुरपुर बात जनाये । चारों दिगपति सुनते धाये ॥
इन्द्र वरुण यम पावक अहई । चारिउ देव चले सुनि कहई ॥
मारग मांझ मिले नलराई । सुरपति वचन कहो समुझाई ॥
हम सब जात स्वयम्बर काजा । हँसिकै वचन कहो सुरराजा ॥
हमरे हेत दूत ह्वै जाहू । दमयन्ती हमसों करि व्याहू ॥
चारि जने हम इक मनमाना । सुनि नल राजा बहुत लजाना ॥
बोले नल नृप मन्दिरे, रहे बहुत रखवार ।
राजसुता पहँ कैसही, जाइ वचन उच्चार ॥
इन्द्र कहो मम आज्ञा होई । तुमहि जात देखि है ना कोई ॥
करि सन दुरित चले नृप तहँवाँ । राजकुँवरि अन्तःपुर जहँवाँ ॥
दूनों जन ते दरशन भयऊ । दुवो नृप मूर्छि तहँ गयऊ ॥
सखी धाइ तब शीतल नीरा । सींचेउ तब जल दुवो शरीरा ॥

दूनों चेत भये मन माहा । तब परचा दीन्हों नरनाहा ॥
जौन प्रकार इहाँको आये । आवत काहु न देखन पाये ॥
इन्द्र वरुण यम पावक आये । तेइ दूत करि मोहिं पठाये ॥
चारो जन कहँ मनमहँ धरहू । एक जनेकहँ स्वामी करहू ॥
लज्जित ह्वै दमयन्ती कहई । देव नाग नर चित्त न अहई ॥
देवलपति हम तुम कहँ जाना । देवनाग नहिं कोउ मनमाना ॥

जादिन हंसहि रूपकह, तादिन मैं पतिजान ।
देव नाग नर गंधरव, हृदय और नहिं आन ॥

राजा कहेउ दोष मोहिं होई । कहैं देव हमहीं सब कोई ॥
दूत ह्वै आपन काज सवाँरा । देव अवज्ञा दुख है भारा ॥
कह कन्या नृप देवन साथा । पठयहु तुमहिं होन नरनाथा ॥
जिय अपने मन तुमहीं आनो । तुम तजि कैसे दूसर जानो ॥
यह कहि कन्या नृपहि बुझाये । देवन पै नल राजा आये ॥
देव सबै तब पूछन लीन्हों । तबहीं नल यह उत्तर दीन्हों ॥
मोहिं छाँड़ि मन और न माना । मैं गुण रूप तुम्हार बखाना ॥
सुनत देव भे अन्तर्द्धाना । राजसभा नल करेउ पयाना ॥
देश देश के राजा आये । अद्भुत भूषण रूप बनाये ॥
चारिउ देव भये नल रूपा । लखि नहिं परै सो एक स्वरूपा ॥

बैठ जहाँ नलराजा, सब कीरे करि शृङ्गार ।
संगसहित करमालले, सभा मांझ पगुधार ॥

सोहित सब कर नाम बतावे । नल राजा कर नाम सुनाये ॥

कन्या देखि तहाँ यह रूपा । पांचो जने वैठ नल रूपा ॥
विनय करत तब राजदुलारी । हे देवहु मैं शरण तुम्हारी ॥
नैषधपति है स्वामी मोरा । करौ प्रकट पद वन्दत तोरा ॥
सुनिकै विनय दया सुर कीन्हें । आपन रूप वहुरि धरिलीन्हें ॥
चीन्हों नल तब राजदुलारी । जयमाला ताके उर डारी ॥
राजा सत्य वचन कह सोई । देव न तजि जनि हम मनमोई ॥
यहै प्रतिज्ञा सत्य हमारी । चण यक तुमहिं करव नहिं न्यारी ॥
दीन्ह देवपति यह वरदाना । इन्द्रकहे सम पवन पयाना ॥
सुमिरत तुम ढिग तुरतहिं ऐहौं । याते सदा सुक्ख तुम देहौं ॥

पावक अग्नि शक्तिदै, वरुण दिये जलवान ।
धर्म्मविषे रति यम दई, भे सब अन्तर्द्धान ॥

देव सबै वर देकर गयऊ । आशा भङ्ग सकलन्टप भयऊ ॥
यहि प्रकार दमयन्ति विवाही । देवमन्त्र करि जो विधि गाई ॥
दाइज भीम न्टपति वहुदीन्हों । है कैविदाचलनचित कीन्हों ॥
वाजन शब्द मनो घन गाजा । नगर आपने आयउ राजा ॥
ऐसे आइ बसे राजधानी । नल राजा दमयन्ती रानी ॥
केतिक दिवस बीति इमि गयऊ । नाना केलि रङ्ग रति भयऊ ॥
न्टपके पुत्र प्रकट इक भयऊ । इन्द्रसेन अस नाम सो कहेऊ ॥
कन्या एक भई पुनि-ताके । वहुतक हर्ष भई मन वाके ॥
ऐसे रँग रस राजा कीन्हों । इन्द्रसेरिन उपमाकहँ लीन्हों ॥
धर्म्मवन्त नैषध पति राजा । पालै प्रजा पुत्रके काजा ॥

राज्य करै नल राजहौ, करिवहु धर्म्म प्रकाश।
दमयन्ती अरु राजा, पूजेउ दूनों आश॥
आगे सुनो धर्म्म सुव राऊ। देवलोक कर करेउ उपाऊ॥
वैठे सभा देवता जाई। कलियुग वैठ तहाँ सुखपाई॥
इन्द्र तहाँ इक वात चलाई। दमयन्ती राजा नल पाई॥
देवन केर करेउ अपमाना। नलराजाको पति करि जाना॥
सुनि यह कलियुग उठा रिसाई। वोलेउ वचन क्रोधजिय लाई॥
नलके निकट जात सुरराई। राज छोड़ावउँ निज वरिआई॥
कलियुग द्वापर दोनों भाई। पहुँचे नगर नैषधहि आई॥
द्वापरते कलि कह मुसुकाता। होइ अच्छ यह सुनुमन वाता॥
हम अव विप्र रूप ह्वै जैये। चलिये अव पुष्करसों कहिये॥
पुष्करसों यह तव करिवाता। तुम अव जीतौ नल कहँ ताता॥
जीति लेहु नलराजहि, कह कलियुग समुझाइ।
वैल रूप तव कलियुग, कहेउ तासु ते आइ॥
धरि यह रूप उन्हैं समुझाई। नलपहँ जाउ स्वरूप वनाई॥
तहाँ पुनीत रहै नल राई। तिनके वदन प्रवेशहु जाई॥
एक समय वनमें नल राजा। तृषा लागि जल लीन्हेनि राजा॥
यहि प्रकार तव अवसर पाये। नल शरीरमहँ कलियुग आये॥
पुष्कर गे तव नलके पासा। जाइ करेउ यह वचन प्रकासा॥
जुआ हेतु आयउँ तुम पाई। आजु दुनो जन खेलिय भाई॥
नल राजाके मनमहँ आई। खेलन हेतु सो करेउ उपाई॥

दमयन्तीके वचन न भाये । नलराजा सब द्रव्य गँवाये ॥
सोन रूप जो लाव भुवारा । धरत दाउँ पलमहँ सबहारा ॥
गज तुरङ्ग हारे सब राऊ । एकौ बार न जीत उपाऊ ॥

बहुत दाँव जब लायऊ, हारेउ सब भण्डार ।
पुरजन मन्त्री सङ्ग लै, आये नल दरबार ॥

रानी अरु मन्त्री समुझाये । राज कछु मनहि न आये ॥
रानी कह सब हारे राजू । खेलु न उठि चलु नलराजू ॥
रोइ कही छूटत सब देशा । झूठ वचन नहिं मानु नरेश ॥
एक सखी बोली तेहि पासा । पठवो पुत्र सासु के पासा ॥
वह सो आइ यहाँ लै जैहै । सुत कन्या विदर्भ पहुँचैहै ॥
कहियो और बात कछु नाहीं । पढ़न हेतु पठये तुम पाहीं ॥
सुत कन्या तब रथ बैठावा । सारथि देश विदर्भ पठावा ॥
पहुँचे वेगि सारथी तहँवां । देश विदर्भ भीम नृप जहँवां ॥
दमयन्ती पठये ले साथा । सुत प्रतिपाल करौ नरनाथा ॥
खेलो जुआँ कहेउ सो गाथा । चिन्तावन्त भये नरनाथा ॥

यह कहि सारथि तब चलो, राजहि कियो जोहार ।
बहुत देश तहँ देखिकै, अवध नगर पगु धार ॥

है ऋतुपर्णभूप के नाऊं । हय सारथी रहे तेहि ठाऊं ॥
राज्य सकल तब पुष्कर जीता। यह कलियुग कीन्हेउ विपरीता।
पुष्कर कहो रहो कछु अहई । दमयन्ती लावहु यह कहई ॥
सुनतराउ भो क्रोध अपारा । रानीके आभरण उतारा ॥

हारे वस्त्र आभरण जेते। राजस्थान आदि पुर तेते॥
सर्व्वस हारि उठे नल राजा। पांसा खेले भयउ अकाजा॥
दमयन्ती जानो यह राजा। कियो चलन वनकेर समाजा॥
रोइ चली दमयन्ती रानी। सो करुणा किमि करौं बखानी॥
राज्य तजा वनवास सिधाये। ताकी करुणा जाति न गाये॥
दासी दास वहुत विलखाहीं। दमयन्ती न्टप पाछे जाहीं॥६

चले जात न्टप राजसो, पुरजन धीर धराय।
दमयन्ती न्टप ऊपमा, रामचन्द्र सो जाय॥

पुष्कर दूत फिरे सब गाऊं। नलराजा कर लेव न नाऊं॥
उनहिं कोउ जो भोजन देहीं। पकरि तासु काराग्टह देहीं॥
नगर लोग न्टप पाछे जाहीं। भयवश होइ वहुत विलखाहीं॥
बाहर नगर रहे दिन तीनी। भोजन खबरि न केहू लीनी॥
क्षुधावन्त तव राजा भयऊ। पच्छि एक तहँ देखत भयऊ॥
सुनु रानी यह वचन हमारा। यह पच्छी है आजु अहारा॥
आपन वसन तासु पर डारो। सो पच्छी लै गगन सिधारो॥
गा अकाश तब बोल्यो वयना। हमैं न अब तुम देखौ नयना॥
खेलि अक्ष सब राज्य गवांवा। वसन हीन तवहीं सुखपावा॥
राजासुनि यह चक्रित भयऊ। वसन लिये वह पच्छी गयऊ॥

राजा कह रानी सुनहु, क्षुधावन्त भे प्रान।
परमहंस यह देहते, चाहत कियो पयान॥

अर्द्ध वसन पहिर्‌यो नरनाहा। रानी सङ्ग चले गहिबाँहा॥

दमयन्ती धीरज धरि कहई । दुखसुख नारि पुरुष सव सहई ॥
चले राह राजा अरु रानी । द्वै राहैं तब आइ तुलानी ॥
दक्षिणादिशि इक मारग जाई । रानीसन बोले नलराई ॥
दूसर मारग सुनु मनलाई । देश विदर्भ सूध यह जाई
पाय पितागृह सुख तुम रहऊ । संग हमारे दुख किमि सहऊ ॥
रानी सुनत भरे जल नयना । रोदनकरति कहति असबयना ॥
कन्त चित्त है तुम थिर नाहीं । ऐसे वचन कहत मुख माहीं ॥
पतिके दुखलों तिय दुखहोई । पितुको राज्य काम केहि सोई ॥
जो तुम दुख वन सहौ अपारा । तौ पति सुख हमार सब छारा॥
कुण्डिनपुर कह चलौ नृप, जो मनमाने कन्त ।
तुमकहँ देखत भीमनृप, करि हैं प्रेम अनन्त ॥
बोले राव भीम नृप पाहीं । ऐसे रानि जाव हम नाहीं ॥
हमको पन्थ देखावत कन्ता । कौनकाज पितु राज्य अनन्ता ॥
चले जात वन गहन गँभीरा । रानी सहित धर्म नृप धीरा ॥
एक वृक्षतर वनहिं मँझारी । सोयउ राउ सङ्ग लै नारी ॥
देखि राउ उरमें वह सोगा । देखो विधि कीन्हों कस योगा ॥
रविशशिजिनकहँ देखेउ नाहीं । सो मम सङ्ग फिरत वनमाहीं ॥
मेरे सङ्ग विपिन दुख पैहैं । वह सन्ताप कहांलों सैहैं ॥
जाउँ याहि तजि जो वनमाहीं । आखिर पिता भवन सो जाहीं॥
यह विचार नृपके मन आये । कलियुग हृदय धर्म उपजाये ॥
वसन अर्द्ध लीन्हों पुनिराजा । दयाहीन कलिके वश साजा ॥

क्षण आवै नल निकटहो, क्षणक चले तजिमोह।
करै विचार अनेक विधि, कबहुँ करै मन छोह॥

भीमसुता तजि चलिये राजा। बहु रोदनकरि चले अकाजा॥
गये राव मन बहुदुख पागो। भीमसुता तहिअवसर जागो॥
चहुँदिशिचितैचकितचितभयऊ। हाहा करि बहु रोदन ठयऊ॥
हाहा स्वामी कन्त हमारे। तजिमोकहँ वन कहाँ सिधारे॥
प्रथमहि कहों न छाँड़व तोहीं। जबलगिघटविचजीवनमोहीं॥
यहि दुख जीवन जात हमारा। वचन झूंठ नृप भयउतुम्हारा॥
कीन्हओं सेवा सदा तुम्हारी। कौनि चूक भै कन्त हमारी॥
आज्ञाभङ्गकबहुँ नहिं कीन्हा। केहिहितत्यागिहमहिं दुखदीन्हा॥
धीरज आइ देउ जो नाहीं। कैसे प्राण रहैं वन माहीं॥
कहौ नाथ कैसे तुम रहऊ। हमहिंछोंड़िकिमिधीरजगहऊ॥

सघन विपिन महँ रोवती, दमयन्ती बिलखाइ।
कौने अवगुण कीन्हेउ, दीन कन्त दुख आइ॥

सर्प एक तब सन्मुख आवा। रानी पद मुख भीतर लावा॥
रानी विकल बहुत बिलखाई। हाय कन्त मोहिं राखौ आई॥
नैषध देश स्वामि जब जैहौ। कहो कन्त मोकहँ कहँ पैहो॥
व्याध एक तहँ देखेउ जाई। बधिक सर्पकहँ टारेहु आई॥
बधिक सर्प कहँ डारेउ मारी। पीडित काम कह्यो सुनु नारी॥
काम वश्य होइ बोलेउ बानी। केहिहित वनमें फिरो भुलानी॥
तब रानी कहँ चिन्ता आई। नलको मनमें पुनि पुनि ध्याई॥

रानीशाप वधिक कहँ दीन्हा। तुरतभस्मतेहिखलकहँकीन्हा॥
करत विलाप चली वनमाहीं। गिरि कंदर वन ढूढ़त जाहीं॥
कोई नलकी कहै न बाता। रोवत रानी अति विलखाता॥

भृगु वसिष्ठ मुनि अंगिरा, नारदमुनि जहँ आहिं।
करिविलापतबरानिसों, पहुँची तेहिथलमाहिं॥

जाइतिनहिं कीन्हेंउ परणामा। आपनदुःख कहो तव वामा॥
सबमुनिमिलियहआशिषदीन्हों।मिलिहैंनलमुनिजियसुखकीन्हों
अन्तर्द्धान भये मुनिराई। चिन्ता उर रानीके आई॥
सपनो सो मनमें यह जानी। मानुष जन्म कहा तवरानी॥
कर्म वश्य वन फिरौं भुलानी। ऐसे शोचि रानि अकुलानी॥
नलको खोजत बहु दुखपाये। आपनपतिकहँ देखि न पाये॥
नायक कहो नगर को जैये। खोजो जाइ कर्म गति पैये॥
बन महँ ढूँढ़ि बहुत दुख पाये। ग्राम नगर खोजो चितलाये॥

चली संग वनराजके, वसे एक वन आहि।
सिंधुर यूथप बहुत तहँ, निकसे त्यहि वनमाहिं॥

कचरि गये तहँ बहु बनिजारा। हाय हाय सब करैं पुकारा॥
दमयन्ती देखो तब ताहीं। बहुत लोग कचरे वन माहीं॥
दमयन्ती कह करत विलापा। मैं वचि गई कौन वश पापा॥
कीन्हों गमन बहुत दुख पाई। दिना आठ दश b्य सिराई॥
नाम सुबाहु सो राजा आही। उत्तम नगर चित्तवर जाही॥
तौन नगरमहँ पहुंची आई। लरिकनतहँदुखदीन्ह बनाई॥

मनमें दुःख अहै तेहि भारी। बावरिरूप फिरहि तहँ नारी॥
ऊपर महल भूप महतारी। देखोतिननिज नयन निहारी॥
तब रानी यक सखी पठाई। दमयन्ती कहँ सँग लै आई॥
तब पूछेउ राजा महतारी। आपनि व्यथा कहौ सुकुमारी॥

दमयन्ती यह भाष्यउ, हम मानुष अवतार।
करौं कहालगि बात बहु, विधि दुख लिखा लिलार॥

कह्यउ रावकी तब महतारी। रहौ गेह काहू सुकुमारी॥
दमयन्ती बोली यह बाता। रहै धर्म्म रहिबे तहँ माता॥
होइ जौन शुचि सेवौं चरणा। ऐसो होइ रहिहौं तेहि शरणा॥
ब्राह्मणसों पूछति मैं बाता। जाते सुख पावों मैं माता॥
सुनि राजकी मातु बखाना। पुत्री कह्यउ सो वचनप्रमाना॥
ममकन्या जो अहै सुनन्दा। रहै तासुसँग कहि आनन्दा॥
तहाँ जाइ दमयन्ती रहई। नलकी कथा सुनो जस अहई॥
इक वनमें दावानल लाग्यो। तहँ इक सर्प जरै दुख पाग्यो॥
ऊंचेस्वर तब कीन्ह पुकारा। हाविधि मोकहँ कौन उबारा॥
मैं नारदको हँसिकै लीन्ह्यों। अचलशापमोकहँ ऋषिदीन्ह्यौं॥

चलि नहि सकौं हेतुतेहि, वनमें लागी आगि।
कौन उबारै आनि अब, जरत सकौं नहि भागि॥

तबहि भूप मन दया जु आई। तुरत जाइ तेहि लियो उठाई॥
बोल्यो व्याल पैग दश जाहू। तब हमार होई निरवाहू॥
राजा चल्यो पैग गनि ताहू। दशौं पैग बोले नरनाहू॥

दशौपैग जब कह्यो भुवारा। काटओनलके मांझ लिलारा॥
श्याम स्वरूप भूप ह्वगयऊ। दै दूक वसन मन्त्रदुइ दयऊ॥
एक मन्त्र पैहौ निज रूपा। एक मन्त्रते ह्वै हौ भूपा॥
यहि विद्या भय तोहिं न होई। यह गति तोरि कौन्ह मैं जोई॥
हैं ऋतुपर्ण अवधपुर राई। ह्वै सारथी रहौ तहँ जाई॥
बाहुकनाम राखि तहँ दयऊ। यह तव कहि कर्कोटक गयऊ॥
आपहु ते सो भयऊ उबारा। गयउ भूप ऋतुपर्णके द्वारा॥

बाहुकनामा सारथी, रहो आपुके धाम।
होइ विकट हय जौन तुम, करौं शुद्ध ममकाम॥

ऐसे भूप हेतु तहँ जाई। भौम भूपमन चिन्ता आई॥
तबहीं विप्र समूह बोलाये। नल दमयन्ती खोज पठाये॥
बहुतक देश फिरे द्विज जाई। वीरवाहुपुर देखेउ आई॥
विप्र सुदेव देखि गो ताहीं। दमयन्ती मिलि जलकेपाहीं॥
ब्राह्मणको दमयन्ती चीन्हा। करि प्रणाम बहुरोदन कीन्हा॥
द्विजकोलै पुनि निज गृहआई। तवहिं सुनन्दा सव सुधिपाई॥
राजमातु तहँ दौरी आई। दमयन्ती कहँ चीन्हेउ जाई॥
भूपमातु पूंछी यह बाता। आपन देश नाम कहु ताता॥
भौम भूपके प्रोहित अहई। नाम सुदेव हमारो कहई॥
रोइ सुनंदा नृप महतारी अहोप्रथमनहिंकीन्ह चिन्हरी॥

सेवा कीन्हि हमारि वहु, नल राजाको वाम।
मैं अनचीन्हे तुमहिंसो, करवायों सव काम॥

भीमसों ब्राह्मण जाइ सुनायउ। राजा निज दल लोग पठायउ॥
कन्याको लै गयउ भुवारा। राजाभीम विदर्भ सिधारा॥
पाछे नल कर खोजन हेता। ब्राह्मण विदा किये न्टपजेता॥
नामपर्ण बोले द्विज पाहीं। तिनसों अब दमयन्ती काहीं॥
बारह मास दुःख भो जाता। जाइ कहेउ तब द्विज सब बाता॥
मोर स्वयम्बर कहियो जाई। सुनत दुःख जो औरो पाई॥
आधो वसन तजो मिथ्निनारी। वनविचदीखन अशनविचारी॥
यहै बात सुनि रोवै जोई। जानेउ नल राजा सो होई॥
ब्राह्मण चल्यो खोज तहँ पाई। ग्राम ग्राम देशन प्रतिजाई॥
अवध नगर राजा गृह गयऊ। तहाँ जाइके यह दुख कहेऊ॥

सुनि बाहुक तहँ रोयऊ, ब्राह्मण पायउ आस।
यहै देखिके ब्राह्मण, गे दमयन्ती पास॥

दमयन्ती पूछत विलखाई। कहो विप्र सब बात बुझाई॥
जननी पास गई तब नारी। ह्वै उदास तब वचन उचारी॥
नलको खबरि कहो समुझाई। मिलन केर सब करहु उपाई॥
मोर स्वयम्वर कहि समुझावो। विप्र सुदेवहि तुरत पठावो॥
अवध नगर ऋतुपर्ण नरेशा। कहै जाइ सम्मत उपदेशा॥
जो आजुहि न्टप पहुँचहु जाई। तौ दमयन्ती पावहु राई॥
को नल बिन पहुँचै यहि वारा। यही प्रतिज्ञा चित्त विचारा॥
माता सब विप्रन समझाई। तुरत अवध पुर दीन्ह पठाई॥

सब यह हाल सुनावहु जाई। है ऋतुपर्ण सभा जेहिठाई॥
तब राजा बाहुक हँकराई। एक दिवस महँ पहुँचउँ जाई॥
आजुहि पहुँचउँ तहाँ सो, वरहुँ भीमजहि जाहि।
आजु करों पुरुषारथ, देख विदर्भहि आहि॥
यह कहि विप्र तुरन्त पठाये। वाहुक रथहि साजिलै आये॥
राजा ते यह कहि समुभाई। आजु विदर्भ देउँ पहुँचाई॥
सुनतहि राव भयो असवारा। जोतेउ रथ सारथि तेहि बारा॥
छूटि वसन तब करते परेऊ। लेन हेतु राजा मन करेऊ॥
कहेउ सूत सत योजन राहा। लौटत पर लीन्हेउ नरनाहा॥
इन्द्र केर चेला नरनाहू। वृक्ष बहेर मिला तेहि ठाहू॥
देहु राव ऋतुपर्ण सो कहहो। फूल पत्र फल येते रहहो॥
एकोतरसै फल अरु आता। भूमी माहिं परे झरि पाता॥
इक संशय फल है तरु माहीं। पांचकोटि दल हैं तरु वाहीं॥
बाहुक कह्यो उतरि हम गनिहैं। फिरतवार जो ममसतिमनिहैं॥
बाहुक हठ करिकै गनै, पत्र फूल फल ताहि।
जो कछु भाषत राज भो, सो सब तरुमें आहि॥
बाहुक कह्यो कौन यह ज्ञाना। अक्ष विद्या यह राव बखाना॥
बाहुक अक्ष दुगुन गनि दीन्हेउ। गणितमन्त्र राजा सों लीन्हेउ
जब नल भूप मन्त्र यह पाये। तबसों कलियुग चले पराये॥
पूरुब विष ज्वाला तनु लागा। तौन तासते कलियुग भागा॥
स्थित सो भयऊ बहेरे माहीं। ताते पाप बहेरे आहीं॥

यह कौतुक तव पारग भयऊ। पाछे देश विदर्भहि गयेऊ॥
तव पूछो यह भीम भुवारा। कहो आपजू कहँ पगुधारा॥
ह्वै लज्जित नृपकहेउ बुझाई। मिलन आपुकहँ आयन भाई॥
राजा वहुविधि आदर कीन्हा। उत्तम सदन वास तव दीन्हा॥
दमयन्ती तव रची उपाई। नलको चीन्हीं मनमें आई॥

करन रसोई साज सव, वाहुक पास पठाय।
पावक अरु जल नहि दियो, कीन्हों ऐस उपाय॥

पवनते पावन आनेउ पानी। पावक ध्यान अगिनिपुनिआनी
दासी डरी देखि व्यौहारा। दमयन्ती सों करत विचारा॥
दमयन्ती दोउ वाल पठाये। दासी सँग रथशालहि आये॥
देखि सुनत कहँ जल भरि नैना। वाहुक ते दासी कह वैना॥
क्षुधावन्त वालक सुनि लेहू। भोजन आनि कछुक इन देहू॥
तव वाहुक वालक कहँ दयऊ। लै वालक अन्तःपुर गयऊ॥
यह प्रसाद है मिष्ट प्रमाना। निश्चय नल दमयन्तीजाना॥
तव दमयन्ती आई तहँई। रथशाला वाहुक है जहँई॥
पछिले दुखको कथा चलाई। सुनत रुदन कीन्हों नरराई।
रानी कहो कृपा अव करहू। माया तजो रूप सोधरहू॥

करकोटकको ध्यानधरि, जप्यो मन्त्र शतआन।
पूर्वरूप तव पायऊ, नलको तव पहिचान॥

तवऋतुपर्णचकितलखिभयऊ। वहुविनती राजा सन कियऊ॥
क्षमा करो सव दोष हमारा। मैं माया तव जानि न पारा॥

तब नर भीम अनुग्रह कीन्हाँ । नृपऋतुपर्णकोवहुसुखदीन्हों ॥
नलहि पाइ तब हर्षित राजा । आज्ञा भै तव बाजे बाजा ॥
सो ऋतपर्ण बिदा तहँभयऊ । अवधनगर तव राजा गयऊ ॥
तब नरवर भूपति पगुधारा । लैदल परिजन सङ्ग भुवारा ॥
जा ऋतुपर्ण सों विद्या पाये । तब पुष्करपर जुआ लगाये ॥
मन्त्र यन्त्र नल जेते जाई । हारो पुष्कार नृप को भाई ॥
देश कोश साहस भण्डारा । रथ गज द्रव्य जो हतो अपारा ॥
जीते नल पुष्कर जो हारा । फिरि क्रोधित ह्वै कहेउ भुवारा ॥

दमयन्ती के दास तुम, कुटुम्बसहित हो आन ।
कलि दुख हमकहँ दीन्हेऊ, तुमहिं कहै को जान ॥

पुनि नल भे नैषध के राजा । आज्ञा भइ बाजे तहँ बाजा ॥
अर्द्ध वसन रानी लै दीन्हें । अर्द्ध फारि जो नलनृप लीन्हें ॥
सबदेखि सो अतिदुख कियऊ । बैठे राजा दुख बिसरयऊ ॥
धार्मिक नल तब धर्म हि कीन्हों । एक ग्राम पुष्कारको दीन्हों ॥
ऐसे राजा दुख सो पाये । पुणत्र वीर राजा कहवाये ॥
बृहदश्व मुनि कह अनुसारा । सुनो युधिष्टिर धर्म्म कुमारा ॥
यहिके सुने पाप तनु भागे । व्याधिहोयसो तनु नहि लागे ॥
दुखी सुने सबदुख मिटिजाई । बन्दितहो त्यहि बन्दि छोड़ाई ॥
राज्यते हीन सो राज्यहि पावै । जेहि दुख बहुत सुने चयपावै ॥
होइहौ धर्म्मज तमहूँ भुवारा । जो यह कथा सुनेहु सुखसारा

वृहदश्वमुनि भाषेउ, धर्म्मराज सुख पाय।
नशै पाप तनु सुख बढ़ै, नल चरित्र जो गाय॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

वहुदिन राजा ते वन रहेऊ। इक दिन नारद मुनि तहँ गयऊ॥
नारद कहि सम्वाद अपारा। तीरथ वरत महामत सारा॥
तेहि अन्तर मुनिकै यह भयऊ। लोमशऋषिपुनितेहिथलगयऊ॥
राजा देखत पूजा कीन्हेउ। अर्घ्यपाद्यदै आसन दीन्हेऊ॥
लोमश कहेउ सुनहु भुवराई। मो कहँ तुम ढिग इन्द्र पठाई॥
इन्द्रलोक इकदिन पगुधारा। देखा अर्ज्जुन सभा मँझारा॥
सिखे शस्त्र अरु अस्त्र अपारा। परम अनिन्दित आहि कुमारा॥
पारथ हित चिन्ता तुम पाये। सुरपति ताते हमहिं पठाये॥
कहन कुशल पारथकी राजा। हम दूतको आये यहि काजा॥
सुनहु तहाँ हम जातहैं राऊ। राजा सुनत परम सुखपाऊ॥
सहित वन्धु नारी नरनाथा। तीर्थराजको चलि मुनि साथा॥
धौम्यनाम प्रोहित सँग लागे। चले जात मन अति अनुरागे॥
तीर्थराज के दर्शन कीन्हें। परमहर्ष भूपति मन लीन्हें॥
औरो पुनि तीरथ हैं जेते। परसे कहत न आवै तेते॥
नैमिष वन काशी अस्थाना गया सुरसरी आदि वखाना॥
सर्व तीर्थ परसे तव राजा। चित उद्वेग धनञ्जय काजा॥

गन्धमदन पर्व्वत भे पारा। बदरी-आश्रम गये भुवारा।
बिंदुत सर तीरथ तब देखा। नाना वन पर्व्वत बहु लेखा॥

पुनि बिन्दुत सर तीर्थ महँ, पाँचौ जने अन्हाइ।
पुष्प पत्र फल शोभित, देखत तरुवर जाइ॥

पूर्व्व ओरसे पवन उड़ाई। पुष्प एक तेहि सरमहँ आई॥
अहैं सहसदल पुनितेहि माहीं। सुन्दर बहुत सुगन्धित आहीं॥
जलते फूल द्रौपदी लीन्हा। भीमसेनके आगे कीन्हा॥
आइ सो फूल देवके लायक। सुनो वृकोदर हो मम नायक॥
वेगि अनुग्रह मोपर कीजै। यकशतपुष्प आनि मोहि दीजै॥
सुनिकै वचन वृकोदर कहई। देहौं आनि शोच जनि करई॥
धनुषबाण कर लै कर धाये। जौने दिशिसों पवन ते आये॥
चलो सिन्धुसम भीम रिसाई। गन्धमदन गिरि देखउ आई॥
सो पर्व्वत गहवर वन भारी। नाना सर्प रहत विषधारी॥
नाना मोर नृत्य तहँ करई। कोकिलकुहकिहरषिजियभरई॥

छैयो ऋतु तहँ प्रकट शुभ, करत भवँर गुन्जार।
अमृत सम फल लाग्यऊ, हरष्यो पवनकुमार॥

बहु बन भीतर हरषि अपारा। कुन्तीसुत जो पवनकुमारा॥
तेहिवनविहरत भीम सोफिरहीं। नादसिंहसम पुनिपुनिकरहीं॥
हने ग्राह मृग गैंड़ा भारी। क्रीड़ाकर इमिवनहिं मँझारी॥
भगे जन्तु पुनि वन के नाना। सिंह भालु मृग सबै पराना॥
गरजे भीम जन्तु सब भागे। कदलीवन देख्यउ यक आगे॥

महागम्भीर सो वह वन अहई । क्रीड़ित भीमसेन वन रहई ॥
तोरेउ वृक्ष तीन वन नाना । मिष्ट पाक फल करिसो पाना ॥
गरजे भीम करै फल पाना । जीव जन्तु सब शङ्का माना ॥
तेहि वन माहँ रहै हनुमाना । शब्द सुनत सो करेहु पयाना ॥
हनूमान तव देह वढ़ावा । उज्ज्वलरूप अनूप सोहावा ॥

बोले कुवचन भीमसों, वन तैं कियो उजार ।
मोरे हाथहि मरण तुव, भाषो पवनकुमार ॥

यह कुवेर वन सव जगजाना । करत भोग यह कह हनुमाना ॥
हनू सङ्ग जो वन रखवारा । दुओ वीर वल पुञ्ज जुझारा ॥
तिन सव आइ कहो यहवाता । भयोभीमसुनि क्रोधते ताता ॥
धनुष बाण पुनि करलै लीन्हेउ । युद्धवृकोदर वहुविधिकीन्हेउ ॥
हते भीम जे वन रखवारा । तव कुवेर पहँ जाइ पुकारा ॥
मानुष एक गहे धनुवाना । कदलीवन कीन्हेउ खरिहाना ॥
हनूमान तेहि वरजन ठाना । सुना कुवेर आपु जो काना ॥
आइ कुवेर हनू समुझाई । करो विरोध न तुम कपिराई ॥
देखो तुम यह मानुष नाहीं । मानुष वेष देव कोउ आहीं ॥
लेहु फूल खावो फल नाना । जेतिक मनमहँ होइ सुजाना ॥

हनूमान यह सुनतही, क्रोधहि वहुत वढ़ाइ ।
फूलकाज विधि भीमसों, कीन्हों ऐस उपाइ ॥

हनूमान वोले यह वानी । सुनिये भीम वचन असजानी ॥
रामकाज लगि मैं यकवारा । लङ्का वीर वहुत संहारा ॥

सागर नांधि लंक मैं जारा । महिरावण पाताल सँहारा ॥
यहै नेम मेरे मनमाहीं । मैं कछु प्रीति देखावत नाहीं
इतना प्रेम आप करिलेई । पाछे फूल जान लै देई ॥
यह हमार लंगूर जो आही । ताते वात कहत तोहिं पाहीं
भूमिते मम लंगूर उठावो । लै कै फूल जान तव पावो ॥
सुनतहि भीम कोप जिय गयऊ । टारनचित लँगूर सो करेऊ ॥
बायें हाथ गह्यउ तव ताहीं । नेक न डोला सो महिमाहीं ॥
फिरि बल कीन्हों भीम जुझारा । वज्र लँगूर टरत नहिं टारा ॥

गहेउ गदा कर भीम जो, धरो भूमि महँ ताहि ।
दोनों कर लँगूर सो, गहो भीम कर माहिं।

हारेउ भीम करेउ वहु करणी । कपि लंगूर न डोलत धरणी ॥
भीमसेन यह मन मैं जाना । महावीर येहैं हनुमाना ॥
हारो भीम ठाढ़ होइ रहऊ । हर्षि गात कपि वोलत भयऊ ॥
ह्वै प्रसन्न भाष्यो हनुमाना । मांगो वर जो तुम मनमाना ॥
यह सुनि भीम कहन अस लागे । अमृतवचन हनुमानके आगे॥
जब कौरव कहँ मारन जाई । तव कपि करियो मोर सहाई ॥
रामकाज कीन्हअउ जिमिभाई । तैसेइ होउ हमार सहाई ॥
हनुमान वोले यह बाता । भीमसेन सुनिये यह ताता ॥
पारथ के रथपर हम रहिहैं । रक्षा करत अस्त्र सव सहिहैं ॥
ऐसे बचन कहे हनुमाना । भीमसेन सुनि बहु सुख माना ॥

यह रहस्य राजा सुनो, हनू भीम व्यवहार।
दूनों पवनपुत्रवल, कह सुनि हृदय विचार॥

भयउ प्रसन्न कुवेर सुजाना। भीमसेन लखि बहु सुखमाना॥
लेहु फूल जेते मन भावे। यहै हनू तव बात सुनावै॥
सुनतहि भीम हर्ष युत भयऊ। अपने गृह कुवेर तब गयऊ॥
रक्षक कोउ वोलत कछु नाहीं। तोरत फूल जौन मन माहीं॥
विहरत भीम हरषि वन माहीं। सुमन सुगन्धित तोरेउ आहीं॥
भीमसेन वन में वहु गरजै। हांक सुनत पशु पच्छी लरजै॥
व्याघ्र सिंह अरु गज मतवारे। गैंड़ा महिष अनेकन मारे॥
भीमसेन के शंका भयऊ। भागि जन्तु तेहि वनते गयऊ॥
जनमेजय तव हर्षित भयऊ। वैशम्पायन कथा सो कह्यऊ॥

भीमसेन मन हर्षित, लीन्ह फूल करि हेत।
वैशम्पायन भाषत, सुनिये भूप सचेत॥

इति पंचम अध्याय॥ ५॥

धर्मराज मन चिन्ता भयऊ। कहँ ममवन्धु वृकोदर गयऊ॥
जिय अकुलाइ मनों उर दरकै। कुशकुन देखि वाम अँग फरकै॥
निशिस्वप्नलखि विस्मयराऊ। कुशलक्षेम विधि भीममिलाऊ॥
कहा धौम्य यह वचन विचारो। घटउत्कचसुमिरन अनुसारो॥
घटउत्कच आये नृप पासा। को आज्ञा यह वचन प्रकासा॥

जब राजा यह बोलत भयऊ। गन्धमदनगिरिभीमजोगयऊ॥
नाना कुशकुन देखियत भाई। ताते चित चिन्ता अधिकाई॥
तीनिउ बन्धु पुरोहित रानी। राजा कह यह वचन बखानी॥
सबको सुत लै चलिये तहँवां। गन्धमदनगिरि भीम है जहँवां॥
सुनत हरषि उठि करी प्रणामा। जो आज्ञा कहिये सो कामा॥

पांचो जनहि चढ़ाइ पुनि, पीठि आपने आन।
गन्धमदन पर भीम जहँ, कीन्हें तुरत पयान॥

नाना वन सब देखत जाई। घटउत्कचके ऊपर राई॥
वह इतिहास पन्थकर अहई। लिखे न जाइ सूक्ष्म सो कहई॥
गँधमादन पर्व्वत जेहिं ठाई। धर्म्मराज प्रविशे तहँ जाई॥
देखि धर्मसुत मन हरषाई। करमें धनुष भीमके आई॥
अगणित रणमहँ मारे वीरा। वीर वृकोदर अभय शरीरा॥
देखेउ राजहि पवनकुमारा। करि प्रणाम तव वचन उचारा॥
भीमहि देखेउ अद्भुत रचना। लिये धनुष शर बोलेउ वचना॥
देव समर सहाय कोउ नाहीं। अस साहस सुत तोंहिं न चाहीं॥
सुनत भीम बहु लज्जा पाये। घटउत्कच तब वचन सुनाये॥
आज्ञा कौन मोहिं यहि ठाऊँ। रहौं कि निज आश्रममें जाऊं॥
आज्ञा पाइ चरण शिर नायउ। अपने थल घटउत्कच आयउ॥

रहे युधिष्ठिर तीन थल, चारि बन्धु इकसाथ।
करतहर्ष बहुते वनहिं, धर्मराज नरनाथ॥

एक दिवस तहँ कौतुक भयऊ। मृगया हेतु वृकोदर गयऊ॥

धौम्यपुरोहित लोमश तहँवां। गे मज्जनहित सरवर जहँवां॥
दोनौ वन्धु द्रौपदी साथा। आसन पर वैठे नरनाथा॥
जटा नाम इक दैत्य सो अहई। मनहिं विचारि तेहिसन कहई॥
यह तीनों जन पीठि चढ़ाई। पवन वेग लै चला उड़ाई॥
धर्मराज बोले यह वानी। पाप कर्म कहकर अज्ञानी॥
हमकहं लिये जात केहिकाजा। वहुतहि ताहि बुझायउ राजा॥
धर्म कथा सुनि भूपति पाहीं। हँसेउ दुःख सुनि मानत नाहीं॥
चोर धर्म कह लम्पट नाना। निसरत काम न सब कोउ जाना॥

छोड़ै ताहि न दैत्य सो, लैकर चलो उठाइ।
पर्वत कन्दर घोर वन, दानव लीन्हें जाइ॥

जानि दुष्ट तेहि धर्म भुवारा। ऊंचे स्वर कहु करी पुकारा॥
येहो भीम गयो कहँ भाई। परो दुःख हम ऊपर आई॥
आरत नाद जबै सुनि पायो लैकर गदा वृकोदर धायो॥
दूरिहि ते तब भीम निहारा। लिये जात सो धर्मकुमारा॥
तब सहदेव भूमिपर आयो। कूदि हांक तब ताहि सुनायो॥
तबहि वृकोदर धावत आवा गदा हाथ करि गर्जि सुनावा॥
दैत्य अशङ्क मानि नहि शङ्का। हांकत वीर क्रोधकरि वङ्का॥
तबहि द्रौपदी धर्मकुमारा। पीछे नकुल वीर वरियारा॥
इनकहँ तुरत भूमि वैठावा। देकर हांक भीम पर धावा॥
भीम कहो निज मरणके काजा। पापी लै भाजे सुत राजा॥

आजु मारि तोहिं एक सर, पठवौं यमके पाहिं।
यह कहि गदा घाव तेहि, दीन्हयो मस्तकमाहिं॥
गदा घाव तब भीम सँभारा। तबहीं खल यक वृक्ष उपारा॥
मारो वृक्ष भीमपर जाई। मारो गदा भीम पलटाई॥
दोनों वृक्ष युद्ध परिहारा। मल्लयुद्ध तहं पुनि विस्तारा॥
दोनों वीर लरैं बरजोरा। करैं युद्ध मानो घन घोरा॥
कम्पमान धरणीमहँ होई। प्रलय काल आवै जनु सोई॥
मुष्टिक एक भीम तब मारा। छांड़यो दैत्य प्राण तेहि बारा॥
परम हर्ष भो धर्मकुमारा। और अनन्दित भे परिवारा॥
आशिर्वादहि देत मुनि, राजा सूंघत माथ।
भुज पूजत लोमशऋषिय, हरषि आपने हाथ॥
परम हर्ष राजा तब पावे। कहि संक्षेपहि भारत गावे॥
पुनि सब मिलकै कीन्ह विचारा। बदरिकआश्रम गे त्यहिबारा॥
नाना पुष्प रम्य अस्थाना। रहे हर्षि वन राव लोभाना॥
संवत चारि बीति इमि गयऊ। पञ्चम वर्ष उपस्थित भयऊ॥
यही प्रकार रहे बन राऊ। धौम्य आदि मुनि भोजन पाऊ॥
नाना ज्ञान कथा तहँ, राजा करहिं प्रकास।
चारि बन्धु हैं सङ्ग तहं और द्रौपदी पास॥
इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

कछु दिन राव बीति इमि गयऊ। धौम्य पुरोहितते नृप कह्यऊ॥
पारथ बिन देखे मुनि राई। मम चित चञ्चल रहे सदाई॥
पञ्चम वर्ष खोज अब करई। अर्जुन देखौं जल दृग ढरई॥
पूरब कह्यो पार्थ यह बानी। पंच वर्ष उपदेशी आनी॥
धवलाचलपर दरश हमारा। निश्चय पैहौ धर्मभुवारा॥
चलौ सो पर्वत देखो जाई। पारथ दरश हेत कहँ राई॥
प्रोहित सहित द्रौपदी रानी। तीनों बन्धुरु लोमश ज्ञानी॥
कीन्ह विचार चले सब तहँवाँ। पर्वतधवल आइ पुनि जहँवाँ॥
लोमश धौम्य सङ्ग सब भाई। ज्ञानकथा बहु वर्णत जाई॥
प्रथम गन्धमादन गिरि देखा। पूरण बारि राव अवरेखा॥
सोह मालर्ष्टि तेहि पासा। धवला पर्वत परम प्रकाशा॥
फटिकशिला तह देखत भयऊ। दानव घोर तहाँ पुनि रह्यऊ॥

रच्छ यच्छ दानव बहुत, सब कुबेरके दास।
सो पर्व्वत देखों तहाँ, पुरी कुबेर प्रकाश॥

देखि भीम तहँ राच्छस जेते। वेगिहि भीम संहारेउ तेते॥
तबहिं कुबेर मर्म तब पाये। युद्धहेतु तब आपु सिधाये॥
तब प्रणाम करि धर्म्मकुमारा। शुद्ध वचन कहि युद्ध निवारा॥
हर्षित ह्वै कुबेरपह गयऊ। धर्म्मराज तेहि पर्वत रह्यऊ॥
अर्जुन देवलोकमह रह्यऊ। अस्त्र अनेक सुरनते लह्यऊ॥
देवनकेर शत्रु जे पाये। मारि सकल यमलोक पठाये॥
जासों देव युद्धो हारा। सो मारे सब पाण्डुकुमारा॥

होइ सन्तुष्ट देव वर दयऊ। कीटअस्त्र तब वासव दयऊ ॥
समय एक तहँ सो सुर आई। बैठि सभामह सभा बनाई।
यम कुवेर जलपति बैश्वानर। बैठे और अनेक मुनिन्दर ॥
तब अर्जुन कहँ गोदलै, बैठे देव भुवार।
नृत्य करत तहँ नृत्यकी, हर्षित सभा मँझार ॥
नाम उर्वशी अप्सर नारी। नृत्य करत सो सभा मझारी ॥
वीणा ताल मृदङ्ग बजाये। नाना रूप नृत्य लय लाये ॥
इन्द्रगोद सोवत बलवाना। मानो दूसर इन्द्र समाना ॥
पारथ देखि उर्वशी नारी। पीड़ित काम स्वरूप निहारी ॥
कामभाव तेहि अवसर भयऊ। नृत्यगीत बहुविधि तेहिठयऊ ॥
प्रीतिसहित अर्जुन तेहि हेरा। सो सुरपति देखेउ तेहि वेरा ॥
जो उर्वशी तुमहिं वश करेऊ। तौनतियासुत तुमकह दयऊ ॥
अर्ज्जुन कहो जाइ जोहारा। इनते प्रकटो वंश हमारा ॥
उठ्यो अखारा नृत्य सेराना। अपने गृह सुर कियो पयाना ॥
सुरपति गे आपने अस्थाना। निज थल गे पारथ बलवाना ॥
अर्द्धनिशा बीती सो आई। तेही समय उर्वशी आई ॥
अर्ज्जुनके मन्दिर पगु धारा। देखे लगे कपाट दुवारा ॥
बहुत यत्नकरि खोलि किवारा। अर्ज्जुनकहं तैवार पुकारा ॥
चेत पाइ अर्ज्जुन तब, मनमें करै विचार।
अर्द्धराति किमि उर्वशी, आई निकट हमार ॥
कहै धनञ्जय वचन विचारी। मम ढिग केहि हित आई नारी॥

अर्द्धराति बीती पुनि गयऊ। निद्रावश्य देव सब भयऊ॥
जो कछु दुख है चित्त तुम्हारा। कहौ प्रात सो करों उधारा॥
राति जाउ अपने गृह नारी। पुरुष पियार एकको नारी॥
पारथ बात सुनी सो नारी। मोहिं मदन कर है अनुसारी॥
हृदय समाना रूप तुम्हारा। काम व्यथा तनु जरत हमारा॥
सुनत धनञ्जय विस्मय माना। त्राहि त्राहि करि मूं देउ काना॥
यक ब्राह्मणी दुजे सुरनारी।इन्द्र अप्सरा मातु हमारी॥
ऐसि बात अपने मुखमाहीं। भूलि बात जनिकहुमोहिंपाहीं॥
सुनत उर्व्वशी व्याकुल भयऊ। दुःखित ह्वै पारथते कह्यऊ॥

हम आई तुम आश करि, सो तौ भई निराश।
जानेउँ अहो नपुंसक, यह कहि वचन प्रकाश॥

तब यह शाप पार्थ कहँ दीन्हा।ह्वै उदास निजगृहमग लीन्हा॥
पारथ चित्त भयउ परितापा। पाप किये बिन पायउँ शापा॥
होतहि प्रात उदित भे भाना। बैठे सभा इन्द्र सुर नाना॥
प्रात होत पारथ तहँ जाई। हाथजोरि तब कह्यउ बुझाई॥
कालहि नृत्य जो नारी कीन्हा।निशिमें शाप हमें तेहि दीन्हा॥
होउ नपुंसक दीन्हों शापा। ताते मोँ मन भा सन्तापा॥
सुनिके इन्द्र महादुख पावा। तुरत सभामहँ ताहि बुलावा॥
इन्द्र कहै नारी कह कीन्हा। मो सुत कहा शाप तैं दीन्हा॥
सुनत उर्व्वशी लज्जा पाई। हाथ जोरि तब विनय सुनाई॥
मेरा शाप होय उपकारा। क्रोध न कीजै देव भुवारा॥

होइ इक वर्ष नपुंसक, न्टप विराटके देश ।
सम्वत बीते शापते, होइ हौ मुक्त सुवेश ॥
यह वर तब पारथक हँ दीन्हा । अपने भवन गमनतबकीन्हा ॥
तबहिं इन्द्र पुत्रहि समुझाई । देव अस्त्र दीन्हेउ बहु आई ॥
कुण्डल कवच इन्द्र तब दीन्हों । भाषेउ मुनि अर्ज्जुन शुभ कीन्हों
मिलि सब देव शंख शक दीना । जाके नाद शत्रु बलहीना ॥
पाँच वर्ष सुरपुर महँ भयऊ । पारथ तबहिं इन्द्रसों कह्यऊ ॥
आज्ञा दीजै इन्द्र उदारा । परशौं पद कह धर्म्मभुवारा ॥
सुनिकै इन्द्र तुरत वर दयऊ । तब रथ मातलि साजत भयऊ ॥
भेंटि सकल सुर चढ़े विमाना । मृत्यु लोककहँ कियो पयाना ॥
रथ प्रवेश करि आयउ तहँवाँ । धवल शिखरपर राजाजहँवाँ ॥
फटिकवरण अति अनुपम, अति उत्तुङ्ग पहार ।
चढ़ि विमान तहं पारथ, वहि परवत पगु धार ॥
देखा पर्व्वत तहवां जाई । रानीसङ्ग वन्धु अरु राई ॥
सङ्गपुरोहित अरु मुनि अहे । पारथ हेतु तो चितवत रहे ।
यहि अन्तर पारथतहं आई । देखत हर्ष भये सब भाई ॥
धर्म्मराज पारथकहं देखा । परम हर्ष हिरदयमहं लेखा ॥
पारथ जाय करै परनामा । औ भेटे भाई बलधामा ।
प्रोहितको कीन्हो परनामहि । परम हरष सबही मन मानहि ॥
द्रौपदिकहं कीन्हो सनमाना । सबकर हर्ष भयो मनमाना ॥
पारथ मिले बन्धुकहं जैसे । श्रोता सुनै होत फल जैसे ॥

बैठे तहं सब हर्षित होई। पारथ कहै अर्थ सब सोई॥
पांच वर्ष कीन्हे जो काजा। श्रवण करी सो धर्मके राजा॥

सर्वकथा वृत्तान्त जो, पारथ कहै बखान।
नृपहिं धनञ्जय भाखेउ, सबलसिंह चौहान॥

धर्मराज पारथकहँ देख्यउ। पुनिनिजजन्मसफलकरिलेख्यउ॥
पारथ जाय चरण नृप गह्यऊ। पूछौ कुशल हर्ष बहु भयऊ॥

सर्व्व कथा विस्तारसै, पारथ कियो बखान।
राजा आगे सहित विधि, वरण्यो बन्धु सुजान॥

जेहि विधि शङ्कर दरशन पाये। जिमि किरातह्वै हर तहँ आये
जैसो युद्ध भयो तेहि ठावा। सुरपति जैसे दर्शन पावा॥
जैसे रथ चढ़ि स्वर्गहि गयऊ। जैसे अस्त्र लाभ तहँ भयऊ॥
शाप उर्व्वशी जिमि वर दीन्हा। जैसे देव अस्त्र सब लीन्हा॥
धर्मराजकहँ सर्व्व जनायो। राजा धर्म्म हर्ष तब पायो॥
तेही समय इन्द्र तहँ आये। धर्म्मराजते कहि समुझाये॥
सर्व्वजीत वर जबहीं दीन्हा। अन्तर्द्धान इन्द्र तब कीन्हा॥
तबहीं मातलि रथ लै गयऊ। धर्म्मराज आनन्दित भयऊ॥
पुनि यह कथासोऋषिहिसुनाये। घटउत्कच तेहि अवसरआये॥
करिप्रणाम सबके पद वन्दे। कहे वचन तब परम अनन्दे॥

देश छोड़ि करि राजा, आये दूरि पयान।
चल्यो सबै काम्यकवनहिं, हर्षित भये सुजान॥

सुनत बात यह सब मन भावै। तब सब कहँ फिरिपीठिचढ़ाये॥

सबको लै काम्यक वन आये । रहे तहाँ आनद बहु पाये ॥
काम्यकवनहिं बहुत दिन गयऊ । परमअनन्दित सब जनरखऊ॥
तहाँ बहुरि आये यदुनाथा । मिले आइ पाण्डवसुत साथा ॥
मिले कृष्ण पुनि धीरज दीन्हा । द्वारावती गमन पुनि कीन्हा ॥
अभ्यन्तर तब कथा सुनाये । मार्कण्डेय महामुनि आये ॥
बहु सम्बाद तहां मुनि कीन्हों । सो संक्षेप कहन मैं लीन्हों ॥
ऐसे पाण्डव बन महँ रखऊ । कथा प्रसङ्ग धर्म्म तब कखऊ ॥

पञ्च बन्धु अरु द्रौपदी, रहे पाण्डुवनमांह ।
भारत पुण्य कथा यह, जनमेजय नरनाह ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

ऐसे पाण्डव बन दुख पाये । दूत जाय कुरुनाथ सुनाये ॥
काम्यक वनमहं पांचौ भाई । तबहिं विचार करैं शत भाई ॥
कर्ण दुशासन शकुनी राजा । मन्त्र कुमन्त्र करैं सब काजा ॥
वनोवास पाण्डव दुख नाना । वल्कलवसन करैं परिधाना ॥
माथे जटा तपीके भेशा । देखिय शत्रु कियो उपदेशा ॥
देखन जाइ द्रौपदी पासा । सब मिलिकै करिवे उपहासा ॥
दुखमैं शत्रु देखिये राई । याते आनंद और न भाई ॥
दुर्योधन दल साज करायो भीषम द्रोण भेद नहिं पायो ॥
और सबै रथ पैदर साजा । चले हर्षि दुर्योधन राजा ॥
काम्यक वनमैं पहुँचे जाई । देखत ताहि हर्ष बहु पाई ॥

काम्यक वन देखा तबै, एक सरोवर आहिं।
देव रु किन्नर गन्धरव, केलि करैं तेहि माहि॥
देव चरित्त सुनहु सज्ञाना। कुरुपतिको होइहै अपमाना
नाम चित्तरथ गन्ध्रवराऊ। इस्त्री सहित सरोवर आऊ॥
पत्निसहित सो क्रीड़त भयऊ। वाही थल दुर्योधन गयऊ॥
दुर्योधन लखि लज्जा पायो। क्रोधवन्त गन्धर्व सुनायो॥
अरे मूढ़ त्वंहि यह अहँकारा। ताकर फल तुम लखउ भुवारा॥
हाथ अस्त्र वह गंधरव नाना। दियो तिनहिं आज्ञा परमाना॥
मारु मारु यह आयसु दीन्हें। अस्त्र गहे सो धरि सव लीन्हें॥
भयउ युद्ध सो क्रोधित होई। गंधरव मानुष सम नहिं कोई॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा। यह लखिकर्णक्रोध अतिकीन्हा॥
हाथ अस्त्र लैके तव धाये। गन्ध्रव दलमें वाण चलाये॥
गँन्ध्रव दलमें वाण बहु, भयो भूमि अँधियार।
ऐसे मारे कर्ण बहु, क्रोधित वाण अपार॥
गंधरव सबै पराभव कीन्हें। चत लागे तव जात न चीन्हें॥
मारेउ कर्ण खैंचि कर तीरा। चल्यउ रुधिर गन्धर्व्व शरीरा।
अस्त्र अनेक करत परिहारा। रुण्ड मुण्ड गन्धर्व्व संहारा॥
काहू हाथ कटेउ अरु पांऊ। काहू केर हृदय महँ घाऊ॥
रुधिर नदी गंधरव रण भयऊ। भागे सबै मार्ग तव लयऊ॥
भागे सबकहं खोज न पाये। पाछे देखत कर्ण सिधाये॥
देखि पराभव इन्द्रकुमारा। हाथ धनुष शर तव परचारा॥

तब गन्धर्ब्ब दुशासन मारा। परो दुशासन भूमिमँझारा ॥
रथतें दुःशासन भुइं आये। लज्जावन्त महा भय पाये ॥
कर्णांके सङ्ग तबै रण ठाना। महावीर दोउ एक समाना ॥

क्रोधवन्त गन्धर्वपति, मारे वाण प्रचण्ड।
करण सँभारि सकउ नहीं, कटे छत्र अरु दण्ड ॥

मारे रथ सारथि संहारा। हाथ धनुष गहि करण भुवारा ॥
मारे तब गंधरव शर नाना। शरन तेज रज भयो निदाना ॥
कुरुदल सबै पराभव दीन्हा। दुर्योधनहिं बांधि पुनि लीन्हा ॥
पाण्डवकर वैरी मैं जाना। रहौ तोहिं दुख देहौं नाना ॥
कुरुपति कहं बांधे लिय जाई। देखेउ भीमसेन तब धाई ॥
देखि हर्षि मन आये तहँई। रहे धर्मसुत पुनि जेहि ठहँई ॥
जोरि हाथ राजासन कहई। ऐसो दुख दुर्योधन सहई ॥
दुर्योधनहिं बांधि लै जाई। चलिके राज्य करौ सब भाई ॥
महा अधर्मि शत्रु भो नाशा। मिलउ राज तुवत्रिनहिंप्रयासा ॥
तबहिं राव यह कहो वखानी। कसे नाश भयउ अज्ञानी ॥

कौन प्रकारहि हेतुकहु, कैसे शत्रु विनाश।
सो सब मम आगे कहौ, कीन्हों भीम प्रकाश ॥

कही भीम राजहि समुझाई। गा अखेट दुर्योधन राई ॥
विधि रचनाते गँधरव आयउ। युवतीसँग सर क्रीड़ा ठायउ ॥
देखा तहँ दुर्योधन राऊ। गँधरवगण रण तहाँ उपाऊ ॥
कर्ण आदि सेना सब भागी। छाँड़ेउ राजहि परम अभागी ॥

गन्धर्वराज महावल करेऊ। दुर्योधनहि बाँधि लै गयऊ ॥
सुनत धर्मसुत विस्मय भयऊ। भीमसेनते यहि विधि कहेऊ ॥
नीतिशास्त्र नहिं जानत अहहू। मूरखरूप सदा तुम रहहू ॥
तव पारथते यह कहि राजू। लेउ छुड़ाइ सुयोधन आजू ॥
बन्धु बन्धुसों कलह प्रमाना। बन्धु बन्धुको वल जगजाना ॥
तुमहीं तुरत लयावहु भाई। गन्धर्व कहँ तुम दे बिचलाई ॥

जो गन्धर्व छांड़ै नहीं, तौ तेहि करब सँहार।
मारि निपातौ धरणिपर, कुरुपति लेहु उबार ॥

आज्ञा सुनि पारथ तहँ जाई। हांक दई गन्धर्वहि आई ॥
देखत पारथ गन्धर्व नाना। शीघ्रवन्त तव करेउ पयाना ॥
तव विचार गन्धर्वन कीन्हा। दुर्योधनहिं डारि तव दीन्हा ॥
तव पारथ असवाण चलाये। भूमिस्वर्ग सोपान वनाये ॥
वाणनपर लै राजा आये। धर्मराजके दर्शन पाये ॥
धर्मराज यह कह सो लीन्हा। यह गति तुमहिं कहौक्यहिकीन्हा॥
ऐसो गर्व करिय जनि भाई। जाते अपनो मान गवाँई ॥
दुर्योधन सुनि लज्जा पाई। मरण हेतु कछु करेउ उपाई ॥
नवहीं राज वोध वहु कीन्हा। मर्मवचन कहि धीरज दीन्हा ॥
हम तुम भाई एक समाना। तोर मोर एकै अपमाना ॥

हम तुम एकै वन्धु हैं, ताते कहा विचार।
यह सुनि पायो सुख अमित, पापी कुरु भुवार ॥

राजा कह यह वचन सुनाई । मांगो वर पावउ तुम भाई ॥
धर्म्मराज बोले मुसुकाता । दुर्योधन नृपसों यह वाता ॥
अवसर पाइ सुनो नृप जवहीं । तुमते वर मांगव हम तवहीं ॥
कह्यउ सत्य राजा तव गयऊ । कुरुदल तेजहीन सब भयऊ ॥
राजा धर्म्म वही वनवासा । पूछहिं तपसिन सहित हुलासा ॥
केतक काल रहे सुख पाई । एक दिना जयद्रथ तहँ आई ॥
अर्ज्जुन भीम रावके संगा । माद्रीसुत द्वौ चले रणरंगा ॥
मज्जन हेतु सरोवर जाई । तेही समय दुष्ट सो आई ॥
देखि अकेलि द्रौपदी रानी । लइ हरिके भाग्यउ अज्ञानी ॥
तीन समय पारथ तहँ आये । देख्यो चरित क्रोध जिय पाये ॥

भीम सहित पारथ बली, भेंटयउ दुर्म्मति जाय ।
भीम पछारो तासु को, परा भूमि महँ आय ॥

दूनौ कर शिर केश उपारा । बाँधे बोझ समान भुवारा ॥
श्वासा हीन रह्यउ तनुमाहीं । ऐसे लाय धर्म्मसुत पाहीं ॥
राजा देखि दया मन भयऊ । छाँडिय यह आज्ञा नृप दयऊ ॥
जो कोइ पाप करै जगमाहीं । विन भुगते छूटत सो नाहीं ॥
धर्म्मकथा कहि ताहि सुनायो । दयाधर्म्म भाषै मनलायो ॥
पापकर्म्मको फल तब पावै । नरक माहिं परलोक नशावै ॥
ऐसे ज्ञान बोध समुझावा । करि प्रवोध अस्नान करावा ॥
तब आज्ञा दै धर्म्म नरेशा । गयउ द्रुमति सो अपने देशा ॥

धौम्य नाम प्रोहित तहां, धर्मराजके साथ।
बारह सम्वत पूर भे, कहो बात नरनाथ॥
अब अज्ञात वर्ष परमाना। कहां रहउँ सो करहु बखाना॥
कुरुके दूत फिरैं सब ठांऊ। कहां दुरौं सो कहो उपाऊ॥
जो कोउ लखै गुप्त दिनमाहीं। बारहवर्ष फेरि वन जाहीं॥
तौ हमार दुख छूटत नाहीं। रहिये गुप्त कौन वन मांहीं॥
यह विचारि मनरोदन कीन्हा। हमैं विधाता बहु दुख दीन्हा॥
धौम्य नाम प्रोहित तहँ आई। धर्मराजते कह समुझाई॥
तुम तौ धर्मरूप हौ राऊ। विपतिकाल कादर कस आऊ॥
सुख दुख व्यापक है संसारा। चित्त धीर्य्य करु पाण्डुकुमारा॥
माया विष्णु गुप्त है राजा। गुप्त रूप देवनकर काजा॥
बामनरूप छल्यउ बलिराऊ। देव काज कीन्ह्यउ परभाऊ॥
रामरूप माया धरि, रावण कीन्ह संहार।
चित चिन्ता केहि हेतुकर, सुनिये धर्मभुवार॥
यहि प्रकार प्रोहित समुझाये। तबहिं धीर राजा मन आये॥
पांच बन्धु अरु प्रोहित सङ्गा। करत तहां बहु कथा प्रसङ्गा॥
जयद्रथ बहु लज्जा जिय पावा। पार्थ भीम अपमान करावा॥
लाजवन्त हर सेवा ठाना। गङ्गाधर को कीन्हेंउ ध्याना॥
बहुत प्रकार तपस्या करेऊ। पाण्डव जीति हेतु मन धरेऊ॥
होइ प्रसन्न तब शङ्कर आयो। मांगु मागु वर वचन सुनायो॥
करि परणाम जयद्रथ कहई। जीता पांच पाण्डवन चहई॥

गङ्गाधर बोले यह बानी। पारथ तन मन शारँगपानी ॥
चारिहु बन्धु जीतिहौ राऊ। पारथकहँ जीते नहिं पाऊ ॥
यह वर तौ गङ्गाधर दीन्हों। जयद्रथ हृदय हर्ष बहुकीन्हों ॥
यह वनपर्व्व कही मैं गाई। रहे वनैमहं धर्मज राई ॥
जे फल तीरथ करि अरु दाना। सिन्धु आदि सरिता अस्नाना ॥
जो किदार बद्रिकाश्रम जाये। जगन्नाथके दर्शन पाये ॥
नाना दुख व्रतकरि जो सहई। सो वनपर्व्व सुने फल लहई ॥

कहि वनपर्व्वकथा यह, सुनु जनमेजय राय।
पुण्यकथा श्रीभारत, सबलसिंह कहि गाय ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

इति वनपर्व्व समाप्तः।

महाभारत।

विराट पर्व।

कहे सकल वनपर्वके, ऋषि नरेशको ठाट।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषत पर्व बिराट॥
धर्मराज तब विकलह्वै, सुमर्‌यो व्यास मुनीस।
नाशन दास कलेशहित, आये जिमि जगदीश॥

दण्डप्रणाम नृपति उठि कीन्हा। मुनिवरविहँसिलायउ
चारिउ बन्धु द्रौपदी रानी। परसेउ चरण व्यासके आनी
आय दीन मृग चर्म बिछाई। चरण धोय बैठायो आई
पाननको व्यजना कर लीन्हों। पवनकुमार पवन तब
भाजन तब लै आई रानी। नकुल दीन्ह जल भाजन आ
करि भोजन ऋषि शयन अनन्दे। सहदेव आय चरण तब
कह्यो राउ नयनन भरि वारी। भलेहि नाथ मम सुरति
कह्यो कलेश वरणि नहिं आवा। अन्धसुवन मोहिं वहुत
कपटरूप करि भूमि छुड़ाई। सबहिं बोलाय सुनाय क

द्वादशावर्ष जाइकै, विपिन बसेरो लेइँ ।
खोजनपावहिं तेरहीं नहीं राज्य हमदेइँ ॥

जो हम शोध तेरहीं पावैं । द्वादश वर्ष बहुरि बन जावैं ॥
मो हित दुरन बतावहु ठाऊं । कोहिवनकौनदेश ऋषिजाऊं ॥
खोजत वर्ष मध्य जो पैहै । बहुरि वनै कुरुनाथ पठै है ॥
आज्ञा देउ रहौं तह जाई । जह सुखहोइ दुःख कटिजाई ॥
जाउँ तहाँ जहँ मोहि छुपावै । कहुँ कुरुनाथ खोज नहिंपावै ॥
कहेउ व्यास नृप सुनहु विचारा। है नहिं अन्त छिपाव तुम्हारा॥
त्यागहु पकरि आड़ सेवकाई । नृप विराट गृह रहौ छपाई ॥
सत्य वचन सुनु भूप हमारा । तहँ कटि जैहै काल तुम्हारा ॥
करौ विचार नृपति अब सोई । भीतर वर्ष न जानै कोई ॥

जाइ रहो वैराट में, जहाँ न जाने कोई ।
काल कटै विपदा घटै, अधिक अधिक सुख होइ ॥

जैहै बीति विपति सुख पैहौ । नृपति फेरि धरणीपति ह्वै हौ ॥
जाइ रहो तुम देश पराये । रहिहौ सबसन शीश नवाये ॥
ओछी पूरी कहै जो कोई । सहियो विलग न मानव कोई ॥
मद साधे नृपताक दुराये । रखो जाति औ नाम छुपाये ॥
हीन रूप ह्वै रखौ भुवारा । यामें होइ छुपाव तुम्हारा ॥
बोलेउ राउ जोरि युग पानी । नाम सकल ऋषि कहौ बखानी ॥
आपसमें कहिये हम सोई । होइ दुराव न जाने कोई ।

(१७)

नृपके वचन सुनत सुखपाये। व्यास सबनके नाम बताये॥
कंक नाम भूपतिको भाखा। नाम जयन्त भीम को राखा॥
नाम धनञ्जयको कह्यो, बृहन्नड़ा ऋषि व्यास॥
सैनी सहदेवहि कह्यो, सकल गुणनकी रास॥
बाहुक नाम नकुलको फेरा। सैरन्ध्री द्रौपदी केरा॥
काटहु कलह जाय नर देवा। गर्व छाड़ि कीजै सब सेवा॥
छाँड़ि क्रोध रहियो तुम राजा। आयसुमानि करेहुनितकाजा॥
कबहुँ न करेहुगर्व अपकारा। सेयहुनृपति ससेत विचारा॥
रह्यो सदा सबको रुख राखे। परम अधीन दीन बच भाखे॥
निशिदिनकरेहुनयनलखिकाजा। जाते रहै प्रसन्नित राजा॥
भीम आदि बरजेउ सब भाई। जनिकाहू सन करहि लड़ाई॥
भये प्रकट जनिहै कुरुराजा। होइहै नृपति तुम्हार अकाजा॥
यहिविधितबबहु शिषदये, गये व्यास ऋषिराज।
सोई मन्त्रनमें धरयो, मनसा वाचा काज॥
पाइ परम सौख भूपाला। बसे कछुक दिन तेहि प्रणशाला॥
नितप्रतिसकलअहेरसिधावहिं। खगमृगअमितमारिलैं आवहिं॥
धौमसहितऋषिसहसअठासी। भोजनकरहिंसहजसुखरासी॥
एकदिवस नृप निकट बोलाये। कह्योव्याससोइवचनसुनाये॥
हम अज्ञात बास अब करि हैं। मिलै न सुधि तेहिदेशदौरिहैं॥
बंश पुरोहित ममहितकारी। करोकहो भलि चहौ हमारी
सम्वतबादि मिलेउ म्वहिंआई। महि पर्यटन करौ तुम जाई॥

यह कहि नयन नीर भरिआये । बिदाकरतन्टप अतिदुखपाये ॥
सकलऋषिनकरिदण्डप्रणामा । बिदाकिये कहिकहिसबनामा ॥
चलेसकलमिलिआशिषदीन्हा । नैमिषविपिनवासतिनकीन्हा ॥
करि अतिकष्ट करहिंजपयोगा । करुकासहितकरहिंप्रिययोगा॥
कथा विचित्र महामुनि कहेऊ । जनमेजयमुनिसुनिसुखलहेऊ ॥
मुनिसनप्रश्नबहुरि न्टपकीन्हा । किमिअज्ञात वासउनलीन्हा ॥

व्यास सीखता ऋषि कह्यो, भा मन भूप उचाट ।
पांच बन्धु सङ्ग द्रौपदी, आये नगर विराट ॥

सरवर निकट बैठ मत लीन्हा । कहेन छिपाइयतनकेचीन्हा ॥
पुरते कछुक दूरि वन रहेऊ । अन्धकूप ता भीतर रह्यऊ ॥
शमी वृक्षतामध्य विराजा। ताके निकट गयउचलिराजा ॥
अस्त्र सनाह वसन वर त्यागी शमीवृक्ष राखेउ बड़ भागी ॥
भीमसेन यक मृतक लै आई । वृक्षमध्य दीन्हों लटकाई ॥
अब तरु भयउ निकंटकसोई । याके निकट न अइहैं कोई ॥
यहकहि फिरि सरवर तटआये । न्टपतिआपु द्विज रूपबनाये ॥
सबहिं राखि तहं चलेउ नराटा । गयो प्रथम तवनगर विराटा ॥

दरवानी द्विज देखिकै, अद्भुत रूप विलोकि ।
करयो नगर पैसारन्टप, द्वारसके नहिं रोकि ॥

पैठत नगर शकुन न्टप भयऊ । भीमसेन सहदेव ते कहेऊ ॥
कैसे शकुन होत ये भाई । हमहिं गणितकरि देहुबताई ॥
ऐसे लक्षण मैं पहिंचाने । होइहै काज सकल मनमाने ॥

मिली बाल जालक मगलीन्हे। धेनुबाल प्यावत सुखकीन्हे
सुखमहँ दिवस बीतिहैं नीके। ह्वै हैं काज महीपति जीके।
अशकुन एक होतहै भीमा। यहै शोच आवत है जीमा॥
लीतै मूष वाम मंजारी। बीते कछुदिन कलह पछारी॥
सरवर बन्धव चारि ठयेऊ। राजसभाचलि भूपति गयऊ॥
द्विजको रूप महीपति कीन्हें। अचमाल शिर चन्दनदीन्हे
लकुटिपाणि पुस्तकी सोहाई। सभा मध्य पहुँचे सो जाई।

दीन्ह अशीश ऋषीश तब, भेंट्यो सहित सनेह॥
उठिविराट नृप विप्रलखि, शिरनायो युगनेह॥

कह नृप विप्र कहांते आयो। धर्मराज तुम पास पठायो॥
कहेउ वचन मो चलती बारा। करिहैं नृप प्रतिपालतुम्हारा
हम पर परम अवस्था आई। काटहु दिन विराट गृहजाई॥
मोसन वचन कहेउ यह सांचो। गिरिवर गुहा पैठिगयेपांचो
जाहु विराट महीपति पासा। उहां तुम्हें सबभांति सुपासा
ब्राह्मण नृपति युधिष्ठिर केरा। जानो सब गुण ज्ञान निबेरा
धर्मसुवन तुम पास पठावा। ताते निकट तुम्हारे आवा॥
सुनि महीप कीन्हों सनमाना। बैठारो गुण ज्ञान निधाना॥
कहो नाम निज भूपति पूंछा। कहेउ नरेश सकलछलछूंछा
कंकनाम म्वहिंव्यासबखाना। सुनिक्षितिपतिकीन्होंसनमाना
जान्यो ब्राह्मण परम अनूपा। अर्द्धासन बैठारेउ भूपा॥

प्रीति पुनीति भुवालको, परमस्वच्छ द्विजदेखि
रह्यो युधिष्ठिर की सभा, है गुणवान विशेखि ॥
पुनि आयो तहं पवनकुमारा । आनि भूप कहं कीन्ह जुहारा ॥
दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा । निरखत कौतुकभयोअखण्डा ॥
न्टपके निकट भीम जब गयऊ । देखि सभा सब चकृत भयऊ ॥
सकैं न बूझि सबैंभय पावा । कौतुक कौन देशते आवा ॥
है यह कौन परत नहिं चीन्हें । मल्लरूप दरवी कर लीन्हें ॥
चकित सभासद करहिं बिचारा । यह धौंकौनआहि करतारा ॥
आवत देखि विराट महीपा । बूझे वाहि बुलाय समीपा ॥
कित ते आये कौन तुम, कहा तुम्हारो नाम ।
कौनजाति केहि हेत कहि, आयो मेरे धाम ॥
सुनुन्टप नाम जयंत हमरा । राज युधिष्ठिर केर सुवारा ॥
करौं विविध विधिसे जेवनारा । व्यंजन अमित बनावन हारा ॥
अति सुगन्ध युत मिष्ट सलोने । करौं पाक औरे नहिं होने ॥
जेइ कृतज्ञ भूप भूपाला । वकसतनितपटमणिगणमाला ॥
सरबर भीमसेन को राखत । अमृतसरिस वचनन्टपभाषत ॥
भोजन करत भीम के सङ्गा । पालि न्टपति तनुकीन्हमतङ्गा ॥
सुनिविराटन्टपअतिहितकीन्हा । रहउ वंधुसम आदर दीन्हा ।
जिमि राखत तुव पाण्डुकुमारा । तेहिते हेतु हमार अपारा ॥
निरखे सरवरि भीमको, भूपति ताकी देह ।
तैसो वली विचारिके, ढिगराखे करि नेह ॥

निशा पाय अस पार्थ विचारा। केहि विधि नगरकरौं पैसारा॥
होय दुराय न जानै कोई। सहदेव यतन बतावहु सोई॥
सुधि भूली तुमको किन भाई। सुरपुर असुर बध्यो जब जाई॥
तब सुरनाथ कृपा अति कीन्हा। अस्त्रसिखाइमुकुटनिजदीन्हा॥
तब उन पुत्रभाव करि जाना। दीन्ह वास भीतर अस्थाना॥
देखि उर्व्वशी देह विसारी। भई कामवश सुरपति नारी॥
रति माँगी तुमते करि ईड़ा। पारथ करहु सङ्ग मम क्रीड़ा॥
पूरण करो मोरि अभिलाषा। त्राहि त्राहि माता तुम भाषा॥
तब उर्व्वशी क्रोध अति कीन्हा। होवहु हिज्ज शाप यह दीन्हा
प्रात होत सुरपति पहँ जाई। शापकथा तुम सकल सुनाई॥
कहेउ सुरेश उर्व्वशी बोली। शाप अनुग्रह करौ अमोली॥
सुनि सुरेश के वचन रसाला। कीन्हों शाप अनुग्रह बाला॥
जब चाहौ तब वर्ष प्रयन्ता। बृहन्नड़ा तनु होयहु सन्ता॥
सुरत्रियशाप आशिषा भयऊ। हिज्जरूप अर्ज्जुनह्वै गयऊ॥
भूषण वसन द्रौपदी केरा। तनु शृङ्गार कीन्ह बहुतेरा॥

तब बृहन्नड़ा ह्वै पार्थ, कीन्हों तियको रूप।
कंकन किंकिणि आदिदै, अभरण सजे अनूप॥
शिर सिन्दूर तमोल मुख, मेंहदी युत युगपानि।
जावक चरण मृदङ्गकी, ध्वनिकीन्ही तिन आनि॥

गयो द्वार नृप पाण्डुकुमारा। कहेउ जनावहु हे प्रतिहारा॥
गायन राज्य युधिष्ठिर केरा। आयों करि एहमौंको फेरा॥

सब न्टप द्वार देखिफिरि आयों । भोजन कहुँ न पेटभरि पायो
जब वन चले युधिष्ठिर राई । कहेउमोहिं तव निकटवुलाई ॥
जायो भवन विराट भुवारा । तहं ह्वै है प्रतिपाल तुम्हारा ॥
वेत पाणि राजा सन जाई । समाचार सब कहेउ वुझाई ॥
गायक द्वार एक प्रभु आवा । कहत युधिष्टिर मोहिं पठावा ॥

सुनि वोले भीतर न्टपति, सब वूझोप्रा व्यवहार ।
सकल गान सङ्गीत लखि, कला चौंसठी चार ॥

न्टपति युधिष्ठिर केर अखारा । करौं गान सङ्गीत प्रचारा ॥
गावहुँ मोहन राग रसाला । नाचि नाचि रिझवों महिपाला॥
अपनो गुण कहिवेनिज वानी । कहत भूप आवत गिल्यानी ॥
रहत रहे जे धर्म्म समाजा । मम गुण पूंछ कङ्कसन राजा ॥
विद्या पढ़ी सकल न्टप जेती । जानत सकल कङ्कऋषि तेती ॥
जब वन चल्यो युधिष्ठिर राई । कहेउमोहिंनिज निकटवुलाई ॥
सेवहु तुम विराट न्टप जाई । मिलेहुमोहिंनिजकाल विताई ॥
है समरत्थ विराट भुवाला । सो तुम्हार करिहै प्रतिपाला ॥

मैं पारथको सारथी, वृहन्नड़ा मम नाम ।
जीवन आयों आपुघर, लियो आइ विश्राम ॥

धर्म्मपुत्न करिकै वहु नेहू । पठयो इहाँ जानिकै गेहू ॥
इतनो भार हमारो लेहू । वस्तर अन्न वर्षभरि देहू ॥
लघु कन्या वालकन पढ़ाऊं । पूरणगति सङ्गीत सिखाऊं ॥
विद्याअमित वरणि नहिं जाई । अल्प दिवसमहं देउँ सिखाई ॥

भूप सुता उत्तरा कुमारी। सौंपी पढ़न योग सुकुमारी ॥
फिर सहदेव पहूंचे आई। नृपसों वचन कहत शिरनाई ॥
मैं तो धर्मपुत्त को ग्वाला। अतिशय कृपा करहिं महिपाला ॥
निकसि दूरि वन वीथिन गयऊ। दै उपदेश पठै म्वहिं दयऊ ॥
करि जानों गायनके साजू। अरु जानों नव विधि हथियारू ॥
मो देखत गोधन कोइ हरई। कोनर जुरि ममसमता करई ॥
वर्ष पक्ष इक धेनु चराई। सेवन करौं पञ्चशत गाई ॥
सत्य वचन यह सुनहु भुवारा। सेनि गोप है नाम हमारा ॥
मोहिं जयन्त कङ्कऋषि जानहिं। उन्हैं बूझि भूपति तवमानहिं ॥
सुनि तिन जानेउ बुद्धिविशाला। सौंपी सब सुरभी भूपाला ॥

फेरि नकुल आये तहां, लीन्हें ताजनहाथ।
देख रूपकी राशितव, चकित भये नरनाथ ॥
कौन देशको जाति कहु, कहातुम्हारो नाम।
केहि कारण वैराट कहि, देखो मेरा धाम ॥

बाहुक राय युधिष्ठिर केरा। राखत मान सवै विधि मेरा ॥
वे दुरिकै वन गयो भुवारा। दै सबते हम कहं दुखभारा ॥
काटर कूचर अश्व चलावों। योजन शत प्रमाण लै धावों ॥
बूझहु कङ्क ऋषिहि गुण मेरो। आयो नृपति नाम सुनितेरो ॥
मो कहं सौंपो साहन जेते। करौं बयान सूध सब तेते ॥
सुनि भूपाल अमित सुखपावा। पाण्डसवन ते हेतु वढ़ावा ॥
देखि भूक मुख तिन तेहिकाला। कहवाहुकतनचतुरभुवाला ॥

सौंपेउ साहन नकुलकहं, हे भूपाल उदार।
वहुरि सो आई द्रौपदी, भूपति भवन मँझार॥
नगी किधौं पन्नग की जाई। कमला किधौं देह धरि आई॥
रानिन सहित सखिनके वृन्दा। निरखैं मुखचकोर जिमिचन्दा॥
कह रानी निज नाम वतावो। केहिकुलकी कुलवधू कहावो॥
कहौ जाति आपनि गुण ग्रामा। केहिकारज आइउ मम धामा॥
पाण्डव सदन द्रोपदी रानी। दासी तासु लेहु स्वहिजानी॥
सनेहु श्रवण तुव अमित वड़ाई। देखेहु द्वार विपति वश आई॥
पतिसङ्ग चली विपिन जवरानी। मोसनकही विहंसियहवानी॥
तुम गृह जाहु विराट भुवाला। काटेहुकालकछुक दिनवाला
आइउं तुव सेवाकरन, सैरन्ध्री ममनाम।
आज्ञादेहु कृपालु ह्वै, करौं यहां विश्राम॥
बोली विहंसि वचन तव रानी। केहि सेवामें वह त सयानी॥
चन्द्रबदनि सोइ वेगि वताऊ। सौंपौंतुमहि सजितचितचाऊ॥
भोजन मैं करवावौं रानी। भूषण अङ्ग सजौं सुखदानी॥
चुनि चुनि नये वसन पहिराऊं। लै दर्पण मुखद्युति दरशाऊं॥
लै कुङ्कुम घनसार लगावौं। कुसुमावलि शुचिसेजवनावौं॥
अतर लाय तनु पान खवावौं। तुम्हरी आज्ञा सदा वजावौं॥
करिहौं दोय काज नहिं रानी। छुवहुं चरण नहिं जूठनिखानी
सैरन्ध्री वचन सुनि काना। रानी वहुत कीन्ह सनमाना॥
तनया सम मेरे गृह रहियो। मोसन मनकी वातैं कहियो॥

हलुको भारी कोइ न भाषहिं। सब कोई आदर तुव राखहिं ॥
तुम थोरहिं कीजै सन्तोषा। निशदिन करौं तुम्हारो पोषा ॥
सैरंधरी जोरि युग पानी। करत विनय सुनियो कङ्कु रानी ॥
रक्षक मोर पंच गन्धर्वा। निशिदिन मोहिं रखावत सर्वा ॥
अति बलवंत भयानक सोई। रहै संग देखै नहिं कोई ॥
सो वे अन्तरिक्ष के वासी। करैं प्रीति जानैं निज दासी ॥
पाप बुद्धि देखैं म्वहिं कोई। करैं निवर्त होय किन जोई ॥
जाको अन्न खाइये रानी। तापै रहिय सदा कुल हानी ॥
याते तुमकहँ प्रथम जनाई। पाछे जनि ठहैर कनि जाई ॥
सत्यवचन सुर मोर सहाई। लखै कुदृष्टि जियत नहि जाई ॥
राखी निकट परमहित मानी। निशिदिनप्रीतिकरतप्रतिरानी।
सजत शृङ्गार सिखावत जोई॥ सैरंधरी वचन सोइ होई ॥
काल पायकै पांडुकुमारा। मिलहिं समेत द्रौपदीदारा ॥
सकल अवस्थानिजनिज कहंई। फिरिविलगायमौनह्वै रहंई।
जब भूपतिहि जोहारन आवहिं। प्रथमकंकऋषिकोशिरनावहिं।

यहि विधि पांचौ पाण्डुसुत, और द्रौपदी वाम।
कालक्षेपणनिकरहिंजिमि, क्षुद्रसकलगुणग्राम ॥

इति प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

कछुदिन बीते नगरमो, गृहगृह प्रति उत्साह।
अपनीदुहिताको रच्यो, नृपतिविराट विवाह ॥

देशदेश कहँ दूत पठाये । सकल चितीशपुहुमिकेआये ॥
सभा विचित्र रची तहँ राजा । जनुअमरावति रच्योसमाजा ॥
आपु लसैं जैसे सुरसांइ । सब नरेश जनु सुर समुदाई ॥
सुरगुरुसम ऋषिकंक विराजा । अतिविचित्र तहवनीसमाजा ॥
कहूं न्टत्यकारी नचिगावैं । कहूं नाटकी स्वांगदिखावैं ॥
नाचहिं कहुँ विदूषकरिजाला । कूजहिंकाँख वजावहिंताला ॥
गाल फुलावहिं करहिं तमासा । नानाभांति करहिं परिहासा ॥
वारमुखी वहु नाचहिं गावहिं । वाणी वेणु मृदङ्ग वजावहिं ॥
वाजहिं आउझ झांझ तंवूरे । मुनिमन हरत राग अतिपूरे ॥
चन्द्रवदन उर्वशी लजाहीं । जिनहिं देखिरतिद्युतिकछुनाहीं ॥
काहूं मल्ल लरहिं अति भारे । कहूं मेष अति लरहिं सिंगारे ॥
मत्त दन्ति कहुं लरहिं दँतारे । श्यामवर्ण पर्वत से कारे ॥

शोभा राज समाजकी, मोपै कही न जाय ।
देश देशके भूप सव, जुरें सुवेष वनाय ॥

मल्ल एक तहँ आव प्रचण्डा । दीरघ तनु दीरघ भुज दण्डा ॥
औ द्वौ चरण कड़ा द्वौ पानी । पीतवसन शोभाकी खानी ॥
वड़ी भीर भूपन कै देखी । कही सभामहं वात परेखी ॥
अहङ्कार युत वचन वखाना । सुनहु महीप वचन दै काना ॥
जीति विदर्भ देश जे शृंगी । जीते मल्ल सरंग तिलंगी ॥
काश्मीर लाहौर चँदेरी । वन्दर सव करनाटक हेरी ॥
अङ्ग वङ्ग कामरू मंझाई । औरौ देश विलोकेउं जाई ॥

मोसे मल्ल जुरैनहीं, कोउ न कौनउ देश॥
है कोई मोसे जुरै, आज्ञा देहु नरेश।
सुनि सुनि सभा न बोलै कोई। मन साहस काहू नहिं होई॥
नृप विराट को सुधि ह्वै आई। तब जयन्त कहँ लीन्ह बुलाई॥
सुनि जयन्त ममआज्ञा मानो। मल्ल युद्ध तुम यासों ठानो॥
मैं अपने मन कीन्ह विचारा। तुम सुआर यह मल्लजुझारा॥
जो हारो तो हारि न होई। जीते द्रव्य देइ सब कोई।
धरि मारो जो मल्ल जुझारा। जगमहं होइहि सुयश तुम्हारा॥
सुनि जयन्त बोल्यो कछु नाहीं। रहे चुपाय कङ्क मुख चाहीं॥
कहेउ कङ्क किमि हृदय डेराना। करु जयन्त नृपवचन प्रमाना॥
तब जयन्त यह मल्लसों, कही बात अरगाय।
हम तुमरससों खेलिये, लीजै सभा रिझाय॥
तूजो आनें रोषमन, डारै भुजा उपारि।
हम परदेशी उदरहित, देहैं भूप निकारि॥
कहेउ मल्ल सुनु कौन विचारा। तैंकस कादर वचन उचारा॥
दीरघ भुजा वचन कह दीना। ऐसी कहै होय जो हीना॥
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये। तब जयन्त यह वचन सुनाये॥
करु अब जौन होय बल तोरा। जनिमानसिखलमोरनिहोरा॥
मल्ल युद्ध लागे दोउ करना। मुष्टिघात अरु घालहिं चरना॥
मल्ल युद्ध दोउयहि विधि करहीं। लपटहिंधरहिंझमिझुकिपरहीं
फिरिफिरिकरिबलउठहिसँभारी। समबलयुगल न मानहिंहारी

तब जयन्त भुजबल अतिकीन्हा । मल्ल उठायडारिमहि दीन्हा ॥
करि बड़ क्रोध धरणि पर डारा । जनु सुरवज्र गिरिन को मारा ॥
सम्भरिउठ्यो यह वचन सुनाये । अब मारौं खल तू कित जाये ॥
लै तब गुरज उठो अकुलाई । हनो जयन्त नासिका जाई ॥
विषम चोट थर हरेउ शरीरा । मूर्च्छि गिरेउमहि पाण्डववीरा
देखि कङ्क सैरंध्री जानी । हाइ हाइ करि अति अकुलानी ॥
चेति जयन्त उठो गल गाजी । जान न पाइहि अब खलभाजी॥
भूमिहिं सातवार धरि मारहुं । गहिरे गर्व दुष्टको गारहुं ॥
फेरिजुरेउ जिमि करि बलजोरी । कीन्ह प्राण विन मल्लमरोरी ॥

मृतक तासु तनु क्रोधकरि, दीन्हों दूरि पवांरि ।
देश देशके भूपसब, करत बड़ाई भारि ॥

देखत सभा सबै नर हर्षे । वसन कनकमणि मोलन वर्षे ॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राजा । कहौं सुनो अवभा जस काजा ॥
मत्त गयन्द न्टपतिको ऐसो । कज्जल गिरि भूधरहु जैसो ॥
कानि महावत की नहिं आवै । करै प्राण विन जो ढिपपावै ॥
सुन्दर महल दिये महि पारी । गये निकट नर डारै फारी ॥
शूंड़ि दावि बहु वृच्छ उखारै । नहिं कुन्तल ते रहै सम्भारै ॥

बांधहु जाय गयन्द कहं, पठये नर नरपाल ।
सकैनिकट नहिं जाय कोउ, देखि देव विकराल ॥

जायभूप सन कथा जनाई । कोऊ निकट सकै नहिं जाई ॥
कैसेहु हाथ न कुंजर आवै । अबसो करिय जो भूपबतावै ॥

तब ययंत ते कहेउ बोलाई। गजहि पकरि ले आवहु जाई॥
कै बांधहु कै डारहु मारी। पुरको कंटक देहु निकारी॥
जब नरेश की आज्ञा पाई। चल्यो वृकोदर अति हरषाई॥
सिंहनाद गरज्यो बलवीरा। तब गयन्द थरहरेउ शरीरा॥
पूंछ पकरि झकझोरेउ ऐसे। दावत मृग कर चीता जैसे॥
दशन पकरि लै पहुंचो थाना। ज्यों अजयालीजै गहिकाना॥
बांधि ताहि भूपहि शिरनायो। तब जयन्त बसनन पहिरायो॥

यहिविधि बीते मासदश, नृपविराटके तीर।
कालक्षेप निशिदिन करैं, पांडुपुत्त बलवीर॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

कीचकबली विशाल तनु, नृप तरुणीको बन्धु।
सहस द्विरदसमताहिबल, यौवनमद अतिअन्धु॥
शत बांधव कीचकके बली। बल अवगाहन नृपअस्थली॥
सोहत इक इक मातुके जाये। ऐसे सुभट महीपति भाये॥
एक दिवस कीचक हरषाई। निज भगिनीके मन्दिर जाई॥
रानी ढिग कीचक चलिजाई। कीन्ह प्रणाम चरण शिरनाई॥
बन्धु विलोकि हृदय हरषानी। दीन्ह अशीश मुदितमनरानी॥
भोजन करत कनकको थारी। द्रुपदसुता तहं करत बयारी॥
देखि चेरि कहं कीचक वीरा। काम विवश थरहरेउ शरीरा॥

इत भगिनी सन वचनबखाना। दासी वशहँ रह्यो पराना॥
तहँ कीचक तनु दशा विसारी। सैरिन्ध्री दिशि रहो निहारी॥
भयो कामवश बुद्धि भुलानी। छांड़िसिलोकलाजकुलकानी॥
सैरन्ध्री अपने मन जाना। कामविवश यह खल बौराना॥
ताहि सुनाय कहो सुनुरानी। अकथकथा कछु कहौंबखानी॥
गन्धरव पंच महाबल भारे। ते ममसङ्ग निशिदिनरखवारे॥
अन्तरिच्छ देखै नहि कोई। तुमकहँ प्रथम सुनायों सोई॥
मोहिं कुदृष्टि विलोकै जोई। सो नर कठिन कालवश होई॥

अवशि हनैं गन्धर्ब तेहि, मोहिंविलोकै जोइ।
बली होइको निर्बली, जीवत बचै न सोइ॥

यदपि सैरंध्री बिभवबखाना। कीचकमनहुँ सुन्योनहिं काना॥
कामअन्ध नहिं सूझत तेही। विषअस छहरिगयो सबदेही॥
भयो विकल सबदशा बिसारी। द्वौकर जौरि विनय अनुसारी॥
भगिनीसन बोला बिसवासी। मांगे देहु मोहिं निज दासी॥
मोकहँ मिलै मोहिं यह इच्छा। मांगौ लाज छांडि यह भिच्छा॥
मोहिं दया करिकै यह दीजै। याको बदि सहस्र तुम लीजै॥
लाज छांड़ि कै करौं ढिठाई। करौ वचन फुर हृदय जुड़ाई॥
होइ मोरि तौ जाउ लवाई। देउ बन्धु किमि वस्तु पराई॥

द्रुपदसुताकी अनुचरी, देत मोहिं अति छोभ।
यह मोरे जनु पूतरी, करौ बन्धु जनि लोभ॥

जादिनप्रथम भवनमम आई। कन्या कै राखेउँ मैं भाई॥

कह मुनि सुनु कुरुकेतु भुवारा। सुनै न काम विवश मतवार
रानी वचन कहे विधि नाना। कीचक सुन्यो न एकौ कान
बोली बहुरि वचन यह रानी। सुनहु बन्धु इक कथा पुरानी
द्रुपदसुता पति सङ्ग वनगयऊ। इनहिंपठाइ भवनसम दयउ
रहे जीविका हित गृह माहीं। दासी मोरि बन्धु यह नाहीं
जाइय भवन दई नहिं जाई। देउं कौनि विधि वस्तु पराई
यह सुनि नयन अरुण ह्वै आये। क्रोधवन्त ह्वै बचन सना

कहकैसे तू राखिये, दासी बलकरि लेहुं।
राज्यपाट सब छीनिकै, कोटि कोटि दुखदेहु॥

चेरी लागि नशावहु राजू। तोरे कहा सुधरि है काजू॥
अति बलवन्त बन्धुशत मोरे। राखि लेइ ऐसो को तोरे॥
सुन्यो कठोर वन्धु की वानी। बोली प्रेम क्रोध ह्वै रानी॥
पर तरुणीरत जे जग भयऊ। ते निजकरनीसों मिटिगऊ
जो चाहौ आपनि कुशलाता। फेरि कहौ जनि याकी बा
रावण कथा सुन्यो तुम भाई। रामचन्द्र की नारि चुराई
सियाहरत नहिं लागि विलम्बा। नशोदशानन सहितकुटुम्ब
गौतमतिय लखि शक्रलुभाने। भयो सहसभग जगसवजाने
बांधेउ असुर पाप वश सोई। भयो खण्ड जानत सबकोई।
ह्वै सकाम गिरिजा तनु हेरा। एक नयन बिन भये कुवेरा
शुम्भनिशुम्भअसुर अभिमानी। मोहा परमशक्ति जियजानी
कथा प्रसिद्ध सकलजगखानी। अपने पाप मिटा अभिमा

बन्धुवधूरत रघुपति जानी। मारेउ बालि हिये भरतानी॥
परत्रियरतहित शठ मनदीन्हा। पैहै फल खल आपनकीन्हा॥

भगिनी मुखके वचन सुनि, किय पयान निजधाम।
विकल महाजिय कल नहीं, घरी मुहूरत याम॥

कीचकको सुधिनहिं रहेऊ। सूनेमहल सैरन्ध्री लहेऊ॥
काम अन्ध अञ्चल देहि गहेऊ। आतुरह्वै यहि विधि तव कहेऊ॥
चित हमार तव रूपहि यागा। भयो आसक सुधीर जयागा॥
मेरे तरुणी शशि अनुहारी। सबपरहोय सोहागिलनारी॥
उत्तम भूषण बसन बनावो। अरु दासीको नाम मिटावो॥
वचन तुम्हार मेटि नहि जाई। रहो नारि मम हृदयसमाई॥
सुनत वचन मन शङ्का आई। कहेउ सैरन्ध्री वचन बनाई॥
तुमहिं देखि मोह्यो मन मोरा। कीन्हे प्रीति नाशहै तोरा॥
गन्धर्व पञ्च मोहिं रखवारी। दीरघ तनु मन विक्रम भारी॥
मोहि कुवत वे तुरते आवैं। सनु कीचक तुवप्राण नशावैं॥
तव मारे मम अपयश होई। मोकहं दोष देइ सब कोई॥
या महं उभय प्रकार बिगारा। मरण तोर मम देश निकारा॥
तुव भगिनी सुनि देइ निकारी। इहां जीविका उठी हमारी॥
यह सुनि कीचक अतिभयमानी। गई पराइ पाण्डु की रानी॥
निशिदिन ताकहं नींद न आवै। धन सम्पति घरबार न भावै॥
बोलि दूतिका यहि विधि कहेऊ। वहदासी ममचितबसि रहेऊ

मनसा वाचा कर्म्मणा, तुम अब करहु उपाउ।
मृगनयनी निशिकरवदनि, मोपर भुरै लआउ॥

भुरै लै आउ सैरन्ध्री आवै। निजइच्छा मांगो तुम पावै॥
गई दूतिका विविधि प्रकारा। लागी करन युक्ति उपचारा॥
बहुत भांति दूती समुझायो। चित्त सरन्ध्री एक न आयो॥
यहां विचार न बोलै सोई। आजुकालहि कछुकाज न होई॥
रही मास द्वै अवधि हमारी। नहि जानै कुरुपति अपकारी॥
कीचक आतुर ह्वै उठि धायो। जहां सैरिन्ध्री तहं चलिआयो॥

सूने घरमों पायकै, गहे केश कर धाय।
अबकह राखै तोहिं को, कौन छुड़ावै धाय॥

गन्धर्व महं गन्धर्व पति होई। सकै छुड़ाय तोहिं नहिं सोई॥
गन्धर्वके बल तू अभिमानी। बोलु छुड़ाय देइं अब आनी॥
यदपि बली रचक तू होई। मोरे तुल्य होइ नहिं सोई॥
व्याकुल भई नीच वश रानी। गई लाज अब हृदय हेरानी॥
हरे कृष्ण नाम यह भाषी। दुशासनते तुम पति राखी॥
सैरन्ध्री विनवै मृदुवाणी। विविध प्रकार जोरियुगपाणी॥
यदपि विनयकृत विविध प्रकारा। सुनै न काम विवश मतवारा॥
बोला कामवश्य रिसि आई। तजौं तोहिं करि निज मनमाई॥

दासी कम कराइकै, त्रास देखावहुँ तोहिं।
अपने मन भाई करौं, यही वाणि अब मोहिं॥

कैसेहु खल नहिं हठतज, अञ्चल डारोफारि।
करतेकेश न तजैसो, अति अकुलानी नारि॥
सरन्ध्री तव बुद्धि विचारी। विविध भांति कीन्हीमनुहारी॥
रसते प्रीति बढ़तिहै जोई। तसनहिं कछु अनरसते होई॥
दान मान युत आदर धरई। परतिय सो अपने वश करई॥
यथा बीजते द्रुम उठि जाई। तिमि रसकी प्रवीति सरसाई॥
निशिदिन लिये रहै मनहाथा। बढ़ैहेतु तव परतिय साथा॥
मिष्ट सुधा सम वचन सुनावै। इष्ट समान हिये विचलावै॥
कहत वचन पुरवै सब सोई। परपत्नी ताके वश होई॥
यह कीचकहु सुन्यो ना चीन्हा। परतियवरवशकेहिवशकीन्हा॥
जानत रसकी प्रीति नहिं, तैं खल एको वात।
परतरुणीको मनदयो, तव तव सुख सरसात॥
रहसिरहसि अब मनमिलै, तौलहि हँसि पर नारि।
वौरायो यह वचन कहि, गूढ़ उपाय विचारि।
तजे केश तव गृह अभिमानी। सैरन्ध्री गई जहँ रानी॥
कह ऋषि सुनु कुरुवंश भुवारा। गये बीति पुनि इक पखवारा॥
दीपमालिका के दिन रानी। बोली सैरन्ध्री सों बानी॥
भोजन मिष्ट कछुक हित भाई। सुरापात्र दै आवहु जाई॥
द्रुपदसुता सुनि अति अकुलानी। जाव मोर ह्यां नीक न रानी॥
लज्जा मोरि जीव वहि केरा। रानी जात न लागै वेरा॥
यदपि सैरन्ध्री कह्यो बखानी। वरशत ताहि पठायो रानी॥

पिये मत्त मद कनक प्रयङ्का। देखि सैरिन्ध्री भयो सशङ्का॥
अशन पान महि राखि परानी। धाय केश पकरे गहि पानी॥
सैरन्ध्री तब वचन उचारे। गहत केश केहि हेत हमारे॥
तुव मन वसेउ मोर मन सोई। दिनराति कीचक पशुगतिहोई॥
रैनिगये तुम आयऊ, नाच अखारे जाय।
शिथिलभयो यह बात सुनि, केश दिये मुकराय॥
योगभोग सूनेसदन, वननिशि कीचकराय।
जाउ तहाँ हौं आइहौं, यामय रौनि गवाँय॥
जहाँ उत्तराकी चटसारा। होइ मिलाप हमार तुम्हारा॥
खलते लाज वचन नहिं जानी। करि छल गई बहुरि जहँ रानी॥
कीचक यह सुनि अति सुख पावा। कह्यो सैरन्ध्री वचन सुहावा॥
जात भयो अपने गृहसोई। हेरत बाट निशा कब होई॥
गई दुखित तहँ द्रौपदि रानी। है पतिभूप जहा सुखदानी॥
कीचक कानि न एकौ राखी। सो गति वाम भूपसम भाखी॥
आयसु अर्ज्जुनको नृप दीजै। कीचक मारै सो नृप कीजै॥
यह कहिकै उपजी तनु तापा। ऊंचे स्वरकरि कीन्ह विलापा॥
रोवत वाम श्वास नहिं आवै। भूपति बहुत भाँति समुझावै॥
मास दिवस बीते लिया, सो व्रत पूरण होइ।
तौ लगि कालहि काटिये, लखै कछू नहिं कोइ॥
अवधि बीत कीचक संहारौं। तबतिय और विचार बिचारौं॥
कौ तब लगे रहौ मन मारी। कौ वनवास करावो नारी॥

सुनि नृपवचन विकल भै रानी । करत विलाप हिये अकुलानी ॥
उतर देत नहिं बनहिं बनावा । नयनन नीरगरे भरि आवा ॥
रोदन करत चली तब रानी । गै पति अवपति बात न मानी ॥
विलखि वदन तिय पहुँची तहाँ । हते वीर बल अर्ज्जुन जहाँ ॥
नयन सनीर कढ़त नहिं बानी । कथा समस्त बखानी रानी ॥
बरणी कीचक की अधिकाई । कह्यो भूपमन कछु नहिं आई ॥
दीन्ह जवाब धरणि के धरणा । आइउँ पार्थ तुम्हारी शरणा ॥
मेरो कहो गोसांई कीजै । हति कीचक जगमें यश लीजै ॥
तुमहिं अछत अस हाल हमारा । बल पौरष कहँ गयो तुम्हारा ॥

कह्यो पार्थ तब तियासों, करि अति क्रोध कराल ।
आज्ञा पावों भूपकी, शठहि बधौं उत्ताल ॥

जो भूपतिकी आज्ञा पावों । तौ कीचक यमलोक पठावों ॥
नृपकी कानि न तोरी जाई । तोरे कछु नहिं करौं उपाई ॥
सरवर तीर सबन के आगे । चलतीबार वचन नृप मांगे ॥
मम आयसु बिन कृत कठिनाई । कृष्णाचरण तेहि कोटि दुहाई ॥
नृपको वचन न मेटो जाई । मास दिवस तुम रहौ चुपाई ॥
सुनत सैरन्ध्री अति दुखमाना । पारथको कछु वचन बखाना ॥
छूटो तुमहिं चलि कुलवाना । तजेउ मानधरि वेष जनाना ॥
लाज हीन भयो पाण्डुकुमारा । तुमहिं जियत असहाल हमारा ॥
सो सुनि पार्थ रहो गिरनाई । माद्री सुतनतीर चलि आई ॥

गई नकुल सहदेव पहँ, बिलखि वदन बरनारि।
अधिकारी ता दुष्टको, सब विधि कही पुकारि॥
कीचक बाँह हमारी गही। तुममें कहौ कहांपति रही॥
मेरो कहो नहीं हँसि टारौ। क्यों न आपने अरिकहँ मारौ॥
सहदेव नकुल कही सुनु रानी। मेटि न जाइ भूपकी कानी॥
कह्यो नृपति म्वहि वारहिंवारा। भ्राता यह न करेउ अपकारा॥
कटुक कहेउ सुनि लेउ चुपाई। काहुहि उतरु न दीजै भाई॥
बिन आज्ञा कृत करम दुरन्ता। जानौ पाप मोर वपु हन्ता॥
तुव दुख देखि मोहि कठिनाई। नृप आयसु मेटी नहिं जाई॥
सहदेव नकुल बहुत दुखपावा। जोरिपाणि रानिहिं समुझावा॥
सुनिसुनि तेरे वचन अब, बाढ़त क्रोध अपार।
मेटाजाय न नृपवचन विनयो बारहिं बार॥
मारौं कीचक च्छणकमहँ, भूपति आयसु पाय।
करै अवज्ञा नारि अब, काकरि नरकहि जाय॥
मास एक तू और निवारौ। तव सकिहौं कीचक कहँ मारौ॥
इनहू ते तिय भई निरासा। पहुचौ भीमसेनके पासा॥
सजल नयन भरि आंशू ढारे। मोंजत नयन भये रतनारे॥
पवनपुत्र तब यहि विधि जानी। बिलखी ठाढ़ि द्वारपर रानी॥
आयो द्वार लखे तिय नयना। प्खात्तलेत कछु कहै न बयना॥
बोली बिलखि आजु गृहमाहीं। कीचक दुष्ट गही ममबाहीं॥
पाण्डसुवनपै फिरी पुकारी। वे गुहारि लाग्यो नहिं चारी॥

अब तुम स्वामी रहो चुपाई । गहि सो दुष्ट मोहिं लैजाई ॥
सुन्यो श्रवण जब सकल प्रसङ्गा । रोष बढ़ो विकसो तब अङ्गा ॥
लखि तियके मुखकै मलिनाई । दौरि गई दृगमें अरुणाई ॥
बूझत वचन उतर नहिं देतो । गहवर वयन नयन जल सेतो ॥
कीचकको सुनि तब मुख नामा । भयो सक्रोध भीम बलधामा ॥
देखत जो न वधौं च्चण जाई । कोटि युधिष्ठिर केरि दोहाई ।

लीन्हों मीच बुलायकै, नीच आपने हाथ ।
जीतो चाहत श्वाननर, सिंह बलीके साथ ॥

दादुर जुरा चहत हरि सङ्गा । चीतहि जीता चहै कुरङ्गा ॥
चहत कपोत बाज सन रारी । मूषक जीतन चहत मँजारी ॥
गर्दभ चहत मतङ्गहि ठेलो । चहत भुजङ्ग गरुड़सङ्ग खेलो ॥
तुमसन कही वचन कटुवाणी । अपने हाथ मीचु वहि मांगी ॥
कहेसि विलोम वचनतजि ज्ञाना ।यहिकर काल आय नियराना
सैरन्ध्री यहि विधि समुझाई । चल्यो भीम तियरूप बनाई ॥
नाच महल महँ वैठो भीमा । दौपदुभाय क्रोध करि जीमा ॥
तहाँ कामबश कीचक आवा । नारिजानि कुचपानि चलावा ।
गहे भीम तब द्वौ भुज दण्डा । मल्लयुद्ध तहँ भयो अखण्डा ॥
करिबल भीम ताहि महि डारा ।चला पराय अधम हियहारा ।
मोहि युधिष्ठिर भूप दुहाई । कीचकवधौं जियत नहिं जाई ॥

कालसर्पसों खेलेउ, कामलहरि अकुलाय ।
पूंछ मरोरी सिंहकी, अब जीवत नहिं जाय ॥

पकरो भीम क्रोध करि धाई। भिरो बहुरि शठ ताल बजाई ॥
द्वौ महँ हारि न कोई मानैं। कोपि अमितगति युद्धहि ठानैं ॥
अतिबल भीमसेन तव कीन्हा। पटक्यो भूमि कंठपग दीन्हा ॥
मारि दुष्ट प्राणन बिनकीन्हा। मूढ़ उठाय पुहुमि तव लीन्हा ॥
महा खोहड़े राखो जाई। जानैं पुरजन नहिं ब्यहि भाई ॥
डारेउ भीम तहाँ बलवाना। परेउ अधम तनु शृङ्ग समाना ॥
लरत ढहेउ गृह शब्द अघाता। सुनि नरेश जागो अधराता ॥
चाहेउ चलन खड़्ग गहि पानी। बरजेउ युगल जोरि कर रानी॥
नाम सैरन्ध्री तुव घर दासी। कीचक करी तासुसँग हांसी ॥
गँधरव पञ्च तासु रखवारे। जानि बरी कीचक उन मारे ॥
चुपकि रहेउ नृप तौ कुशलाई। सुनि तियवचन बैठ अरगाई ॥
कह मुनि सुनु जनमेजयराजा। कहेउसोभीम कीन्ह जसकाजा॥

मारि दुष्ट धरि खोहमें, मनको ब्यथा नशाय।
अर्द्धनिशा सुत पवनको, निजथलपहुँचोजाय ॥
जागे पुरजन सदनप्रति, प्रातभये नर नारि।
मृतकदेखि कीचक नहीं, कोउ नहिं सक्यो विचारि ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अन्तःपुर चरवर वदन, सुधि पाई नरपाल।
सचिव सभासद सुभटसँग, तहँ आयो तिहिकाल ॥

नृप विलोकि शङ्का उपजावा। सजलनयनमुखवचननआवा॥
शोकविवश तनु दशा बिसारी। करत विलाप ताप अतिभारी॥
अहियहिवध्यो जानिनहिं जाई। बारबार कहि नृप बिलखाई॥
करियउपायमिलैज्यहिशोधा। बिनअरिनिधनमिटिहिनहिंक्रोधा
बंधु वचन सुधि तात्क्षण पाई। भूपति की तरुणी तहँ आई॥
रोदन करत बहुत अकुलानी। देखत भूप व्यथा तनुजानी॥
अपने मनही महँ दुख माना। बारबार यह वचन बखाना॥
कीचक कौन शूर संहारो। जासों युद्ध जुरो सो हारो॥
अङ्ग नहीं चत और न आयो। भूलिरहेउ कछु साधन पायो॥
इमि महीप कह वचन बखानी। बोलीबिलखि वदन ह्वै रानी॥

रहै तुम्हारे धाममें, जहि सैरन्ध्री नाम।
गन्धरव रक्षक तासुकै, रक्षत आठो याम॥
कीचक अति आसक्तह्वै, गहि सैरन्ध्री बाल।
ताही दिनते मैं लख्यो, घेरो है यहि काल।

कीचक तिन गन्धर्व्वन मारे। नहिं काहूपर गयउ उबारे॥
अबचलि क्रिया तासुकी कीजै। लै लै कुश सब अञ्जली दीजै॥
रानी वचन श्रवण सुनि राजा। लागो करन क्रियाको साजा॥
तब कुतवालैं बोल्यो राऊ। प्रजालोग सब वेगि बोलाऊ
लै कीचकको घाटै जाऊ। विधिसों सर्व्व क्रिया करवाऊ॥
कह ऋषि कङ्कहि नीचो अङ्गा। कुवतै सुकृत होइ सो भङ्गा॥
उत्तम जाति होय नर कोई। छुवै अङ्ग कीचक कर सोई॥

गयो नृपति सुधि आय तुरन्ता। कहेउ लै आउ सुवारजयन्ता॥
वार वार तासन कह राऊ। कीचक मृतक घाट लै जाऊ॥
सुन्यो न वचन रहेउ चुपकाई। फेरि नृपति असकहेउ रिसाई॥
तै मेटो वल वचन हमारा। मूढ़ कहां तव होइ गुजारा॥
मरत्यउँ तोहिं मूढ़ अज्ञानी। मानत पाण्डु सुवनक आनी॥
धर्म्मराज पठयो तकि मोहीं। सरवरि गनौ वन्धुको तोहीं॥
नृपके वचनश्रवण सुनि भीमा। कहेउवचनक्रोधित ह्वै जीमा॥

मारो कीचक मैं कहां, कत कीजत है क्रोध।
मो दुख मानत वादिनृप, अन्तहि लीजे शोध॥
भोजन भाजन छाँड़िकै, मैं नहिं अन्तहि जाउँ।
मनसा वाचा कर्म्मणा, तुमकहं वहुत डेराउँ॥
करौ कृपा नरनाहु, यहि विधिकही जयन्तसों।
कीचकको लेजाहु, दूरि नगरते कृति करहु॥
वन्धु कुटुम्वी सोइ, मृत्यु कही सों काढ़िकै।
कहा परो है मोहिं, ऐसे कर्म्म न हैं करौं॥

वार वार इमि कह्यो भुवारा। कृति करवावहु जाय सुवारा॥
देखि कङ्क ऋषि केर इशारा। तव जयन्त इमि वचन उचारा॥
जो अव भोजनको कछु पावों। तौ कीचक लै घाटे जावों॥
भोजन अमित भूप मँगवावा। वैठि जयन्त तहां सव खावा॥
मेवा वहु पकवान मिठाई। खात जयन्त न होत अघाई॥
रोवैं कीचकके सव भाई। वरणि विविध वल शील वड़ाई॥

कह नरेश सुनु वचन जयन्ता । मृतढिग भोजन कर्म्मदुरन्ता ॥
लजा लोथ करत कतदेरा । क्रियाकरनहित होत अवेरा ॥

करि भोजन बलवन्ततव, कीचक लियो उठाय ।
दूरि नगर ते घाट पर, मृतक उतारो जाइ ॥
इत कीचक के बन्धुसब, पकरि सैरन्ध्री बाल ।
जारन चल्यो कुबन्धुसँग, लियोचल्योतेहि काल ॥

जेहि हित मारो बन्धु हमारो । पकरि पांय वाके सङ्ग जारो ॥
बरजत पुरजन सो नहि माने । काहू वचन चित्त नहिं आने ॥
करत विलाप द्रौपदी रानी । को राखै बिन शारङ्गपानी ॥
विविधभांतिसोंकरतविलापा । अतिशयकङ्कपिहिदुखव्यापा ॥
देखत रह्यो विराट भुवाला । सोउ न रोकि सक्यो तेहिकाला ॥
पकरि ताहि तहँवां लै आयो । कीचकमृतक जहां पौढ़ायो ॥
भरि भरि घृतघट केतिक आने । चन्दन अगर न जायँ बखाने ॥
तहं द्रौपदी अधिक सन्तापा । हा गन्धरव कहिकरतविलापा ॥
छुवत मोहिं तुव बरत दरेरा । तुवबल थकितभयो यहिवेरा ॥

रुदन करत लखि द्रौपदी, गृह तब चल्यो जयन्त ।
क्रोध बढ़ेउ सब अङ्ग में, देखत कर्म्म दुरन्त ॥
वसन उतारि धरेउ कहूं, भीम भीम ह्वै धाय ।
फूलिगात दूनो भयो, उपमा कही न जाय ॥

ह्वै गये अरुण नयन रतनारे । उठो क्रोध नहि रहत सम्भारे ।
भ्रुकुटि कुटिलअतिक्रोधप्रचण्डा । कालदण्ड सम द्वौ भुजदण्डा

भूधर समान कलेवर भयऊ। सरवरनिकटभीमचलिगयऊ॥
करै विचार करौं अब सोई। जेहितियबचैनिधनखलहोई॥
वेष छिपाय वन्यौं गन्धर्व्वा। कीचक बन्धु वधौं जेहि सर्व्वा॥
मरैं सकल सो करौं उपाई। जेहिखलएकजियतनहिं जाई॥
वसन उतारि खोह धरि दीन्हा। भीमरूप तब भीमहिकीन्हा॥
उग्ररूप तनु परम मतङ्गा। कीच चढ़ाइ लीन्ह सब अङ्गा॥

कीच चढ़ाइ सकल तनु, केश दिये मुकराय।
कर तरुवरलै वज्र सम, दै दिखराई आय॥

कीचक बन्धु भजे अकुलाई। कह गन्धर्व्व पहुँचि गा आई॥
भीम वटोरि वीर सब लयऊ। सुरजनु वज्र गिरिन को हयऊ॥
भीम लपेटि पङ्क तनु धायो। बड़े केश बहुधा मुकरायो॥
वेष भयानक लखि विकरारा। चहुँदिशिभागि चलेनरदारा॥
हने हांकि कीचक के भाई। वृक्ष घात दै गर्द मिलाई॥
ह्वै निशङ्क सब लोथ उठायो। चिता बनाइ सकेलि चढ़ायो॥
ताके हाथ कहा हथियारू। सोसब वरणौं ताको सारू॥
कह जयन्त कछु वरणि न जाई। जब गन्धर्व्व पहूँचो आई॥
प्रथम भजे नर देखत जोई। करत पुकार भूपसन सोई॥

गये शेष तहँ नर जिते, कहौ भूपसन जाय।
कर तरुवर गन्धर्व्वलै, तेहि थल पहुँचो आय॥

मानुष रूप गहे द्रुम पानी। कीचककुलकी घालिसिघानी॥
महाराज पठवहु सब योधा। लेयँ जाय तिन्हकरसव शोधा॥

जब यह वचन सुन्यो नृपकाना । भयो सशङ्क अचम्भव माना ॥
अङ्ग अङ्ग हालेउ सब गाता । मुखसे निकसिसकत नहिंबाता ॥
वह अब कीचक भीम जरायो । फिरिजहँ द्रुपदसुता तहँआयो ॥
खलबधि भीम निकट जब गयऊ । रानीअङ्गन अति सुखभयऊ ॥
बोली वचन हास करि रानी । राख्यो तुम पाण्डव की पानी ॥
हता सो अर्ज्जुन भयो जनाना । तुमलगिरख्यो वंशकोबाना ॥
जब द्रौपदी कही यह बाता । भयो प्रसन्न भीम सब गाता ॥

गृहतन पठई द्रौपदी, आपु गये सर पास ।
न्हायधोय पहिरे वसन, आयो आपु अवास ॥
सरवर तर द्रुम डारिके, आयो भूप निकेत ।
धाय धाय नर नारिसब, पूँछत करिकरि हेत ॥

पहुंचो भीम भूप दरबारा । समाचार कछु कहेउ भुवारा ॥
कहु जयन्त कैसी भै भाई । कैसे गन्धरव पहुंचो आई ॥
अरुण नैनन देखोयुतक्रोधा । ताकी सरवरि और न योधा ॥
हाथ तमाल मनहुं यम दण्डा । कालदण्ड सम बाहु प्रचण्डा ॥
अति विशालतनु वेषकराला । देखिय जनु कालहुके काला ॥
कीचक बन्धु हते बलभारे । सोतेहि मम देखत संहारे ॥
बड़े वीर मारे बलवाना । कोऊ भागि न पायो जाना ॥
तहँ नृप एक बुद्धि म्वोहि आई । गिरिकन्दरमहँ रह्यो लुकाई ॥
कृष्ण देव मम कीन्ह सहारा । भूप कृपा करि मोहिं उबारा ॥
निकरि न सक्योंतासुकीत्रासा । गिरि कन्दरमें देखि तमासा ॥

नीचे ऊपर काठ करि, कीचक दीन्हों डारि।
आयो वीर कराल तहँ, जहँ सैरन्ध्री नारि॥
ताके कान मांझ कछु कहेऊ। हौं सशङ्क बैठो तहँ रहेऊ॥
देखत सो उड़ि गयौ अकासा। डारि दियो द्रुम सरवर पासा॥
सुनत नरेश चित्त भयमानी। देवि रूप सैरन्ध्री जानी॥
अरु गन्धर्व भक्ति उर राख्यो। निशिदिनन्टपसेवाअभिलाख्यो॥
पाचौ बाधव कालहि पाई। भये एकथल सबजन आई॥
कहा द्रौपदी न्टपहि सुनाई। चारि बन्धु तुम लाजबिहाई॥
द्रुपदकुमारि वार बहु भाखौ। भीमलाज मेरी हठि राखौ॥
सुनत प्रसन्न भये सब भाई। कोउ सकै नहिं भेदहि पाई॥
रही राति कछु प्रात तुलाना। गये सकल निजनिज अस्थाना॥
यहिविधि बीते दिवस कछु, न्टपति विराट निकेत।
दुरे रहे पाण्डव सकल, कालक्षेपके हेत॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

वैशम्पायन सों कही, जन्मेजय यह बात।
कहौकथाममवंशकी सुनत न श्रवण अघात॥
कह ऋषि चितदै सुनहु भुवारा। कथाविचित्र अमियरससारा॥
दुर्योधन न्टप यह सुधि पाई। कीचक केहुँ मारे उग्रतभाई॥
शकुनि कर्ण ते पूछि नरेशा। कीचकवधबड़ मोहिं अँदेशा॥

सहसनागवल अति बरियारा। कहौं कर्ण केहिं कीचक मारा॥
सुनत कर्ण इमि कह्यो बखाना। कहौं सुनहु नृप मैं जसजाना॥
मो मन उपजत यह सन्देहू। भीम कर्यो है कारज येहू॥
पठवहु दूत तहाँ चलि जाई। सुधितैं खवरिजनावहि आई॥
भूपतिकी आज्ञा जब पाई। पठयहु शकुनि दूत समुदाई॥
चले दूत नहिं लागी बारा। पहुंचे देश विराट भुवारा॥
सकल भांति तिन कीन्ह ढिठाई। तहां न सुधि पाण्डव की पाई॥
भये थकित घूमे हलकारा। आय नृपतिकहँ कीन्ह जुहारा॥
जोरिपाणि तिन विनय सुनाई। पाण्डवकी कहुँ सुधि नहिंपाई॥
सकल विराटपुरी हम देखी। लेत शोध तहँ रहे विशेखी॥
केहि मारे कीचक सौ भाई। सो कछुभेद जानि नहि जाई॥
लखे न पाण्डुसुवन तेहिठावां। सुन्यो श्रवणनहि एकौ नावां॥
कह्यो दूत नृप सों वच येहू। सुनि नरेश मन भा सन्देहू॥

भूपति मन संदेहकरि, बोले भीषम द्रोन।
पुर विराट कीचक वधे, केहिधौं कारण कौन॥
कीचकको संहारिहै, भीम विना नहि और।
कह्यो द्रोण गजसहससम, सुभटनको शिर मौर॥

कह्यो सुशर्मा नृप सुनिलीजै। अब कछु और विचार न कीजै॥
सङ्ग चमू कछु देहु सहाई। घेरौं नृप विराटकी गाई॥
और यतनते वे नहि ऐहैं। धेनुहरण सुनि तुरते धैहैं॥
सुरभिहरण सुनि नहिं सहिहैं हैं। लागि गोहारि चले सब ऐहैं॥

होत युद्ध नहिं रहहि सँभारा । तहं खुलि जैहै शत्रु तुम्हारा ॥
भूपति अमित सैन सँगदीन्हों । विदावेगि तेहि अवसरकीन्हों ॥
गमनी सङ्ग चमू चतुरङ्गा । उठी धूरि छपि गयो पतङ्गा ॥
शकुनि बोलाय कह्यो कुमिराजा। अब सब करहु कटकको साजा ॥

चलीचमू चतुरङ्गिनी, गज तुरङ्गके यूथ ।
रथी महारथि अतिरथी, सुभटपदातिवरूथ ॥

चली सैन को वरणै पारा । बाजे गोमुख शंख नगारा ॥
झांझ ढोल अरु भेरि वजाई । मारू राग सहित सहनाई ॥
चलत नृपहि अतिहोत अतंका । टेर नकीब भये बहु डङ्का ॥
विरद बखानि वन्दिजन बोले । हाली धरा धराधर डोले ॥
दल कलिङ्ग भगदत्त महीपा । आये साजि नरेश समीपा ॥
द्विरद दुमत्त दुशासन अली । शकुनी कृतवर्मा से चली ॥
विकरण करण शल्य वलधामा । कृपाचार्य अरु अश्वत्थामा ॥
सिन्धुराज लच्चन वलवाना । सजिसजिनिजदलहनेनिशाना ॥
बाहुलीक गङ्गाधर राजा । नृपकाम्बोज कीन रणसाजा ॥
सौ बान्धव दुर्योधन केरे । औरौ सजे वीर बहुतेरे ॥
भीषम द्रोण अलम्बुष साजे । सोमदत्त भूरिश्रव गाजे ॥
दच्छिण दिशा सुशर्मा घेरा । उत्तर दिशि कुरुनाथ गरेरा ॥

वन वीथिन छाये सुभट, लियो देश सब घेरि
बाँध्यो ग्वालसमूह तहँ, लीन्हों धेनु खदेरि ॥

केतक ग्वाल लिय बाँधि सुशर्म्मा । केतिक भाजिगये वशभर्मा ॥
ते नरेशपहँ जाय पुकारे । धेनु वृन्द हरि गये तुम्हारे ॥
सेनापति पठवहु बलदाई । शत्रु जीति गो लेइ छोड़ाई ॥
गोधन हरो सुशर्मा आई । उठि नरेश चलि लेहु छोड़ाई ॥
जो न नरेश होहु असवारा । तौनहि गोधन मिलिहि तुम्हारा ॥
और न सकहि सुशर्महिं जीती । सुनु नरेश मन मान प्रतीती ॥
देखि सचिव दिशिनृपतिसुजाना । करिसुधिकीचककोपछिताना

कीचककहँ सुमिरे नृपति, यह कहि बारहि बार ।
वा बिन सुरभी बेढ़ियो, को कहि लखै पुकार ॥
हरुये बोल्यो भूप तब, सेनापाल बुलाय ।
धाइ सुशर्मा वीर जे, सुरभी लेहु छुड़ाय ॥

उत्तर शङ्ख नृपति सुत वीरा । औरौ सजे अमित रणधीरा ॥
चले नरेश साजिकै साजा । बाजे विपुल जुझाऊ बाजा ॥
गज रथ अरु पदाति बहु सङ्गा । बहु कुरङ्गगति चलं तुरङ्गा ॥
करि बहु यतन सुशर्मा हांकी । चलिनहिं सकत धेनुसबथाकी ॥
सहदेव खुरा व्याधि उपजावा । ताते धेनु सकत नहिं जावा ॥
तब लगि सुभट गये सब आई । बाजै पटह शङ्ख सहनाई ॥
पणव धेनु मुख भेरि समूहा । बाजे कटक भयो अति हूहा ॥
उभय कटकमहँ बाजन बाजे । करि करि नाद वीर सब साजे ॥
दुउ दिशि दल उमड़े घनघोरा । जहँ तहँ सुभट भिरे बरजोरा ॥
अन्धधुन्ध रण भयो असूझा । अपन बिरान परत नहिं सूझा ॥

विविध भाँति तनु अस्त्र प्रहारे। टरे न एक एकके टारे॥
उत्तर कुंवर आनि रण मण्डो। बाणनते रिपु सैन विहण्डो॥
देखि सुशर्मा क्रोध अपारा। करि सन्धान सारथी मारा॥
करि अति नाद सुशर्मा गाजे। चढ़ि तुरङ्ग उत्तर रण भाजे॥
गयो नगर तन अति भयमानी। ले धनु शङ्ख कीन्ह रण आनी॥

शङ्ख सुशर्मा वीरते, परो आनि जब जोर।
महा भयङ्कर युद्ध भो, विशिख चले चहुंओर॥
विजय वृहन्नल घर रहो, पाण्डुपुत्र तहँ चारि।
देखत कौतुक युद्धको, सकै न कोऊ हारि॥

पञ्चवाण तब शङ्ख प्रहारे। ते शर काटि सुशर्मा डारे॥
शरवहु त्यागि कीन्ह अतिजूझा। मूर्छित कुँवरनयननहिंसूझा॥
देखि सारथी रथी अचेता। दल पीछेगा यतन समेता॥
तब विराट नृप करि सन्धाना। एक बार मारे सौ बाना॥
तेशर विशिख सुशर्मा काटे। बाण पचीस क्रोध करि छाँटे॥
मूर्छित भयो विराट भुवारा। करिनिबन्ध निजरथपरडारा॥
वर्षन बाण सुशर्मा लागा। भयो अधीर कटक सब भागा॥
नृपहि बान्धि सब जीति सहाई। चल्यो धेनु लै शङ्ख बजाई॥

सहदेव वपुष गुवालके, कङ्क ऋषिहि शिरनाय।
टेरि सुशर्मा हाँकदे, भिरे ततक्षण जाय॥
मत्त करी दल तासुको, अंकुश टेर सुनाय।
फेरा बलकरि सिंह ज्यों, गहो कोपि धर धाय॥

भयो युद्ध कछु कहत बनै ना । देखतथकित भई सब सेना ॥
मल्लयुद्ध तहँ भयो अपारा । लात घात मुष्टिका प्रहारा ॥
भिरहिंगिरहिंउठिलरहिंसँभारी । अतिबलयुगल न मानैहारी ॥
तबहिं सुशर्मा बलकरि हारा । पाण्डुपुत्त गहि धरणि पछारा ॥
मल्लयुद्ध करि दल विचलायो । छोरिविराटहि दलपहँलायो ॥
भीमसेन गज यूथ सँहारे । पकरि तुरङ्ग तुरङ्गन मारे ॥
गहि पदातिके शीश उपारे । और सबै मल्लनको मारे ॥
बारहिं बार भीम रण गाजे । सुनि सुनि नाद शत्रु सब भाजे ॥
नकुल कीन्ह तब खड़्ग प्रहारा । कटी सेन बहि शोणितधारा ॥

बही सरित तहँ रक्तकी, गयो सुशर्मा भाजि ।
छोरि विराटहि लै चले, पाण्डपुत्त रणगाजि ॥

आय कङ्क कहँ नायो माथा । देखिसकलदल भयोसनाथा ॥
फिरी धेनु सुख भयो अपारा । गृहकहँ चल्यो विराट भुवारा ॥
उत्तर दिशि दुर्योधन राई । घेढ़ि लई सुरभी समुदाई ॥
द्रोण दुशासन अरु भगदन्ता । कितै यूहलै चले तुरन्ता ॥
धेनु वृन्द यक कर्ण विलोकी । रथ दौराय लीन्ह तहँरोकी ॥
मिथुना ग्वाल धेनु लै भाजा । तेहितहं खुराव्याधि उपराजा ॥
बहु विधि मारि ग्वालगण थाके । अचलभयोधनुचलत न हांके ॥
मिथना शाप कर्ण कहं दीन्हा । फलपैहो तुम आपन कीन्हा ॥
जैसे अचल कीन्ह धनु मोरा । भारतमें अटकै रथ तोरा ॥

अपर ग्वालगण आइकै, बहुविधि करी पुकार।
उत्तर उत्तरको दिशा, बेढ़ो धेनु तुम्हार ॥

सुरभी शत हरिगई तुम्हारी। बैठ सुचिन्त सदन महंभारी ॥
हरे एक दुर्योधन गाई। एक दुशासन लै हंकवाई ॥
करिवर एक कर्ण हरि लीन्हा। कृतबर्मा आगे धरि दीन्हा ॥
न्दप भगदत्त गाय बहु तेरी। हरे यूथ चहुं ओर गरेरी ॥
पीत श्याम सुरभी बहुचोरी। हरिलीन्हीं कपिला अरु धोरी ॥
लक्षन कुंवर हरे यक यूहा। लै कलिङ्ग यक धेनु समूहा ॥
कुंवर पुकार श्रवण सुनु मेरी। हरी द्रोण सुरभी बहुतेरी ॥
लिये जात धन अस्वत्थामा। उत्तर दिशि उत्तर बलधामा ॥

ग्वाल विलापकलाप करि, उत्तरते बहुभांति।
कही तुम्हारो धेनु हरि, लीन्हें कुरुपति जाति ॥

बाहुलीक गङ्गाधर गाई। हरि काम्बोज लीन्ह अगुवाई ॥
सोमदत्त भीषण रण गाढ़े। शकुनी शल्य रोकि मग ठाढ़े ॥
करतकुलाहल गिरिगिरिजाता। दीरघ दीरघ स्वर करिवाता ॥
कहतगोप करि विविधविलापा। धेनुहरण सुनि तोहिं न व्यापा
ऐसो धक जीवन जग तेरा। शालत उर न वचन सुनि मेरा ॥
उत्तर कहत सुनहु सब ग्वाला। सेनासहित न भवनभुवाला ॥
मेरे रथ नहिं सारथि भाई। होत लेत मैं धेनु छुड़ाई ॥
जो मेरो रथ हांकत कोई। कौरव जियत न छाँड़ों कोई ॥

द्रुपदसुता यह वचन सुनि, अर्ज्जुनते अकुलाय ।
कह्यो बृहन्नल कुंवरका, तुम रथ हांकौ जाय ॥

कह्यउ पार्थ तुव तिय बौरानी । रथ हांकनगति हमनहिंजानी ॥
कहै कुंवर मोसन नहि होई । देव निकारि देश ते सोई ॥
दासी भुरै कुंवर उरझावा । चहत जीविका मोरि छुड़ावा ॥
जानौं गाय सकल मैं गीता । विविध भांति नाचौं सङ्गीता ॥
और बजावहुँ मैं सब बाजा । करौं प्रसन्न उदर हित राजा ॥
चहत मोरि सब विधि उपहासी । मृषा कुंवर बोलन यहदासी ॥
यह कहि पार्थ रहे अरगाई । द्रुपदसुता रानीपहं आई ॥
तहां बठि उत्तरा कुमारी । कह सैरंध्री वचन उचारी ॥
वचन हमार सुनहु महरानी । धेनु बेढ़ि कुरुपति अभिमानी ॥
पठवहु कुँवर भवन नहिं राजा । धेनु गये लागौ कुल लाजा ॥

यह पारथको सारथी, बृहन्नला यहि नाम ।
जो यह हांकै कुंवर रथ, जीते सब संग्राम ॥

अब पठवहु उत्तरा कुमारी । प्राणनते वह अधिक पियारी ॥
जो यह कहहि हित्ते बानी । सो फुर करहि सत्यसुनु रानी ॥
कन्या सरस जानि मन ताको । विद्या सकल पढ़ाई याको ॥
हांक वरथ न कहा किनु कोई । याको हठ टारैं नहिं सोई ॥
सुनत श्रवण सैरंध्री बानी । कह्यउ उत्तराते यह रानी ॥
सङ्ग सरंध्रीके तुम जाऊ । विजय बृहन्नलको समुझाऊ ॥

हठकरि कह्यउ काज ज्यहिहोई। उत्तरको रथ हांकै सोई॥
सुनत वचन आतुरसो आई। सङ्ग सैरंध्री लीन्ह लेवाई॥

जाय पार्थपहँ रुदन करि, गई कण्ठ लपटाय।
मलिन वसन गुड़िया भई, खेल न मोहिं सोहाय॥
सुन्योश्रवण यहिपुर निकट, आयो है कुरुराय।
तिनको भूषणवसन गुरु, मोकहँ देउ छिनाय॥

जबलगि वचन करौ फुर मोरा। तबलगि कण्ठ न छाँड़ों तोरा॥
भूषण वसन कौरवनकेरा। विन आने नहिं होय निबेरा॥
अर्ज्जुनते उत्तरा कुमारी। बोली बहुरि नयन भरि बारी॥
भीष्म द्रोण कर्ण उरमाला। दुर्योधनको मुकुट बिशाला॥
देहु गुरु स्वहिं आनि छिनाई। यहिविधि बार बार रट लाई॥
कहत द्रौपदी श्रवणन बानी। सभाशुद्धि सब तौहिं भुलानी॥
बीती अवधि डरहु कहि काजा। लरहु निकटआयो कुरुराजा॥
क्षत्रिय युद्ध डरहिं जो पारथ। कर्म्म धर्म्म बहु ताहि अकारथ॥
का क्षत्रिय द्विज गाइन काजा। उठि न लरै कुल आवै लाजा॥
तुम सरमात प्रबल तिय नाहीं। जियडेरातजिमिपियपहँजाहीं॥

चित्तचाउ रत साहसी, महाबाहु बलधाम।
बृहन्नलाको रूपधरि, तुम छांड़उ वह नाम॥

ओहिठिरह्यउचुपकितुमपारथ। करौ युद्ध है उत्तर स्वारथ॥
कह द्रौपदी श्रवणलगि बाता। भयदृगअरुणफूलिसबगाता॥
कह्यो उत्तरा वचन रसाला। देहु मँगाय वसन मणिमाला॥

बार बार यह कहि बिलखाई। तजै न कण्ठ रही लपटाई ॥
समुझायो बिधि पार्थ अनेका । सुनि उत्तरा तजत नहि टेका ॥
अर्जुन देखि दया उपजाई। दृगजलपोंछि कुंवरि समुझाई ॥
कौरव जीति बसन मणि लेऊं। पुत्री तोहि क्षणकमहँ देऊं ॥
जो नहि भूषण बसनहिंलावों। आननफिरिनतोहिं दिखरावों ॥
करि प्रबोध उत्तरा पठाई। उत्तरते बोल्यो हरषहरव

उत्तरसों तबहीं कही, विजय बृहन्नल बात ।
साजौ कौरव युद्धको, ह्वै प्रसन्न सब गात ॥
पारथ सारथि मैं कियो, जानतहों रथ हांकि ।
जंहां होतहै सारथी, जीति सकै को ताकि ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

सुन्यो बचन यह राजकुमारा। हृदय मांझ सुख भयो अपारा ॥
टोप सनाह पार्थ के आगे। राखे वचन कहन इमि लागे ॥
कवच पहिरि पारथ परमाना। जाते अङ्ग न भेदै बाना ॥
जिमि कीचक पहिरै बर नारी। तिनिसनाहकृतसुवननगारी ॥
देखि लोग सब हँसे ठठाई। कैसे हिज्ज युद्ध समुहाई ॥
सिन्धु समान कटक कुरुराई। रथ ले भाग्यो युद्ध डराई ॥
सबके वचन हासरस पागे। सुनत द्रौपदी शरसम लागे ॥

कहत पार्थते द्रौपदी, बारावत क्यहि काज ।
रथ साजो अब कुंवरको, रण जीतौ कुरुराज ॥

वर्षदिवसको अवधि वदि, गये और दिनबीति ।
कीजै युद्ध निशङ्क ह्वै, रही कौनकी भीति ।
भयो बृहन्नल सारथी, रथ आरुह्यो कुमार ।
साजि कटक लीन्हों धनुष, कोपि गह्यो तलवार ॥
गन्धर्वन जे मन्त्र सिखाये । सो पढ़ि पार्थ तुरङ्ग उठाये ॥
ह्वै सारथी वेगि रथ हांको । औघट बाट न कानन ताको ॥
कौरवदल लखि सिन्धुसमाना । उत्तरके घट रह्यो न प्राना ॥
गाजत गज हिंसत हैं घोरा । दुन्दुभि भेरिनाद अतिघोरा ॥
शङ्खनाद पूरे सब कोई । मारु माह सब दलमहँ होई ॥
द्वन्द घराट ध्वनि अति ठहनाई । मारू राग सहित सहनाई ॥
रङ्ग रङ्ग बैरख फहराई । हरित पीत सित श्याम सोहाई ॥
बाजत सेन सेन पर डङ्का । वर्णि वन्दिजन कहत अतङ्का ॥
सारथि मन उत्तरकर जोरा । लै चलु भागि भवन रथमोरा ।
बार बार तेहि विनय बखानी । एकौ बात न सारथि मानी ॥
करत विनय सो नहिं सुनत, रथ त्याग्यौ अकुलाइ ।
भाजत लखि उत्तर कुंवर, गहो पार्थ तब धाइ ॥
बांधि धरो रथ ऊपर आई । सन्मुख चल्यो सेनपर धाई ॥
तब गुरु द्रोण पार्थ पहिचान्यो । सबहीतें यहिभांति बखान्यो ॥
बांधि रथी रथ ऊपर धारो । ह्वै निशङ्क रणको पगुधारो ॥
अवगाहन सागर संग्रामा । भुजबल पैज करी बलधामा ॥
शूर सजग ह्वै सब धनु बाणा । लेइ शूल अरु शक्ति कृपाणा ॥

पवन गवन सम अर्जुन आवत। वा विनको जगमें अस धावन॥
दुर्योधन ते द्रोण वखाना। अब सब सजग होहु बलवाना॥
भूप भलो कछु परत न दीसो। है आवनि यह अर्जुनकीसो॥
कह भीषम सुनु वचन हमारा। मृग सङ्ग धावत दीखसियारा॥
छुवत नितम्ब तासुपद धावत। सुनु नरेश यह पारथ आवन॥
धरो बांधि रथ राजदुलारा। त्रियस्वरूप यह पाण्डुकुमारा॥

मन्द दृष्टि भइ द्रोणको, भीषम गये बुढ़ाय।
कह्यो शकुनि यह कर्णसों, हंस्यो कर्ण हहराय॥

सुनि भीषम भा क्रोध अपारा। कह नरेश सुनुवचनहमारा॥
बन वन फिरत वहुत दुखपावा। परम क्रोधकरि पारथआवा॥
चलहि क्रोधकरितुमहि विलोकी। ये शठ एको सकहिं न रोकी॥
भीषम कह्यो कर्णसन वोलो। दलको तीनि वनावहु टोली॥
एक सेनले चलहु भुआला। एक करै गोधन प्रतिपाला॥
पारथ रोकि करौ संग्रामा। एक सेनते सब वलधामा।
यहि विधि भीषम मन्त्र दृढ़ाई। तीनि अन करि सेन वनाई॥

द्रोणी कृतवर्म्मा शकुनि, शत बन्धव वीरेश।
कृपाचार्य्य अरु कर्णसङ्ग, सो लै चल्यो नरेश॥

नृप भगदत्त शल्य बलदाई। चले सङ्ग लै धेनु लवाई॥
भीषम द्रोण आदि रणधीरा। मग रोके ठाढ़े सब वीरा॥
करैं शङ्खध्वनि औ गलगाजैं। मारू पटह भेरि वहु वाजैं॥
गोमुख ढाक ढोल पणवानक। वाजतसब ध्वनि होत भयानक।

द्विरद यूथ देखत अति भारौ । भादौं जलदघटा जनुकारौ ॥
रथके ठाट भूमि सब छाये । परै न भूपर तिल छिटकाये ॥
तुरंग पदाति विलोकि अपारा । भयो सशङ्क विराटकुमारा ॥

उत्तरसों सारथि कह्यौ, भय न करहु कछु यङ्क ।
सकल निपातौं अरिचमू, रहियो आपनिशङ्क ॥
अस कहि फेरो तुरङ्गरथ, सुनि पाण्डवकुलदीप ।
पलकनबीतो विपिनमहँ, लैगे नगर समीप ॥
अन्धकूप तरुवर शमी, तापर धनु अरु बाण ।
वेगि लै आवहु मो निकट, गञ्जौं अरिदल प्राण ॥

सुनत वचन उत्तर हरषाई । त्यहि द्रुमनिकट तुरत चलि जाई ॥
चढ़ेउ पार्थकी आज्ञा मानी । अस्त्र सनाह विलोक्यो आनी ॥
पार्थ सुनौ मणिश्वेत सनाहा । श्वेतै धनुष श्वेतगुण आहा ॥
आनौ वेगि छुवै मतिसोई । अस्त्रसनाह नृपतिकर होई ॥
फिरि देख्यो उत्तरा कुमारा । अर्जुनते यह वचन उचारा ॥
कनकरचितमणिखचितसोहाये । धनुषसनाह देखि युग पाये ॥
आयसु होइ डारि महि दीजै । कह पारथ यह कतमत कीजै ॥
यह सहदेव नकुल धनु गेरा । सहि न सकै मम खैंच दरेरा ॥
सो उत्तर छांड़ेउ अरगाई । और सनाह विलोक्यो जाई ॥
कोटि भांति उत्तर बल करेऊ । जब न उठयो तब सोपरिहरेऊ ॥
उठो न धनुष कवच हिय हारो । अर्जुनते इमि वचन उचारो ॥

उठयो न धनुषसनाहकर, कोटि भांति बलकीन्ह ।
लोहमयी जनु वज्रसम, केहि निमित्त कैं दीन्ह ॥
परी गदा गिरिवर समताई । है केहिको म्वहिं देव बताई ॥
कह अर्ज्जुन उत्तरा कुमारा । याको सुनहु सकल व्यवहारा ॥
लोहमयी धनु कवच कराला । भीमसेनको गदा विशाला ॥
लावहु और करिय रणजाई । मग हमार देखत कुरुराई ॥
लाव वेगि धनु कवच हमारा । पल लागत जनु कल्प अपारा ॥
जो गृह जाहिं भाजि कुरुराई । फिरि का करबयुद्ध महँ जाई ॥
अक्षय तूण जाइ तहँ देख्यो । संभ्रम भयो कुंवर यह लेख्यो ॥
छुवत पाणि उत्तरा कुमारा । अहि है विशिखकरत फुंकारा ॥
स्वै किरीट स्वै कवच विलोका । रविसमतेज धनुष अवलोका ॥
पारथते तब कह्यउ कुमारा । धनु जनु दिनकर तेज पसारा ॥
तव-आयुध हम छुवन न पावै । व्याल रूप शर काटन धावै ॥
सुनु सारथि मम वचन सुहाये । मोपर अस्त्र न जांय उठाये ॥
यह सुनिकै पारथ हरषाई । कवच अस्त्र सब लीन्ह उठाई ॥
निर्गुण धनु गुण करि सोई, सूधे कीन्हें बाण ।
काढी गङ्गा भूमिते, धाये सकल कृपाण ॥
पहिरि कवच शिर टोपदै, निज धनु करि टङ्कोर ।
हांक्योरथ बहुकोप करि, पहुँचो कटक बहोर ॥
वीर धनुर्द्धर धीरकै, मनमहँ कछु न हारि ।
भा दुर्घट सब घटनमहँ, कौरवदल अतिकारि ॥

बैठो आनि ध्वजा हनुमन्ता। जाके बलको नहिं कछु अन्ता॥
करि अति क्रोध धनुषशर लीन्हों। देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हों॥
चल्यो पार्थ निज रोष बढ़ाई। जीतन हित दुर्योधन राई॥
सारथिते उत्तर कर जोरी। कहै सुनहु विनती कछु मोरी॥
तुमते कहीं बृहन्नल बांचो। मोते कहौ बात सब सांची
कौन आप म्वहिं देउ बताई। मो मनको संशय मिटि जाई॥
कह अर्जुन भाषत सतिभाऊ। है ऋषि कङ्क युधिष्ठिर राऊ॥
हौं अर्जुन यह सुनहु कुमारा। भीम जयन्त तुम्हार सुवारा॥
मैनो सहदेव नामहिं जानो। बाहुक नकुल मैन है मानो॥

वह है रानी द्रौपदी, जेहि सैरन्ध्री नाम।
कछु न भय चित कीजिये, जीतौं सब संग्राम॥
तुम्हरी सुरभी सो हरी, लेत हमारो शोध॥
अब सुन बीते सो अवधि, तब मैं कीन्हों क्रोध॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

उत्तर फिरि लागो चरण, सुनु स्वामी सति भाय।
दशौ नाम अपने कहौ, तौ मो मन पतियाय॥
कौरव वंश जन्म हम लीन्हा। अर्जुननाम व्यासमुनिकीन्हा॥
बानपंथ सुर द्विरद उतारा। पार्थ नाम भो जगत हमारा॥
जीत्यो वातकवच संग्रामा। कीन्हों सुनासीरको कामा॥

भये प्रसन्न समेत समाजा । विजयी नाम धरो सुरराजा ॥
पुनि नरेश शिर मुकुट बँधावा । तहां किरीटी नाम कहावा ॥
द्रुपदनरेश सेन जब काटी । एक मिलाय मांस अरु माटी ॥
पुनि विभत्सरसकरि रणराखा । नाम विभत्स द्रोण यह भाखा ॥
धनपति जीति दण्ड लै आना । नाम धनञ्जय कृष्ण बखाना ॥
द्वौ कर जोरि करौं संग्रामा । परो सव्यसाची तब नामा ॥
श्वेत तुरङ्गम रथ मचि आऊं । भयो श्वेतवाजी तब नाऊं ॥

रथ साजत मैं युद्धहित, ध्वज बैठत हनुमान ।
नाम कपिध्वज जग विदित, याहीते तू जान ॥

शब्द होत रहे हमरो वाना । शब्द भेद जग नाम बखाना ॥
औरहु सुनो विराट कुमारा । हम तुम्हार कीन्हों अपकारा ॥
वार वार विनवों कर जोरी । सो सब चूक बकसिये मोरी ॥
भीमसेन शत कीचक मारे । ते अपराधी हते हमारे ॥
बरबस गह्यो द्रौपदी रानी । मारेउ भीम मानि गिल्यानी ॥
मारेउ मल्ल द्विरद गहिलायो । तेरे गृह हम अतिसुख पायो ॥
तुम्हरे आनि विपति सब डारी । वर्ष दिवसकी अवधि हमारी ॥
द्वादश वर्ष विपिन हे आये । तब छायामह अति सुखपाये ॥
सुनि यह श्रवण विराट कुमारा । जोरि युगलकर वचन उचारा ॥
हलुकी भारी जो हम कहेऊ । आप समर्थ श्रवणसुख लहेऊ ॥
जो कछु हमते भा अपराधू । सो सब क्षमा करो तुम साधू ॥

वीर धनञ्जय क्रोधकरि, चल्यो सबल रथहांकि।
अतिवलचले तुरङ्ग तव, रहे शिथिलह्वै थाकि॥
पाय तेज गन्धर्व्वको, अति वल भये तुरङ्ग।
कही द्रोण गुरु पार्थसों, कौनं करै रण रङ्ग॥

आय धनुर्द्धर भा रण काज्। सन्मुख करै युद्धको आज्॥
वीरवली नहिं धीरज धरिहै। कौन वीर अर्ज्जुन सन लरहै॥
दल जे है चहुं ओर पराई। युद्ध जुरै नहिं कोउ समु हाई॥
सुनहु सकल ममवचन सुहावा। याते अधिक शोच उर आवा॥
प्रलयकाल जेहि करै मशाना। कोधौं सहै पार्थकर बाना॥
कोटि उपाय करो सब सोई। अर्ज्जुन जीति सके नहिं कोई॥
यहिविधिकहि गुरु द्रोणबुझावा। भयो अपर नृपचरितसुहावा॥
प्रथम पार्थ युग बाण चलाये। ते गुरु द्रोण निकट चलि आये॥

एक गिरो गुरुचरणतर, एक श्रवणढिग आइ।
करि प्रणाम पारथ कही, परो भूमिपर जाइ॥
तजे पार्थ पुनि बाण युग, गयो पितामह पास॥
परो चरण यक श्रवण महँ, कीन्हों आय प्रकाश॥

प्रथम पितामह पार्थ प्रणामा। तुमते कहौं सुनहु बलधामा॥
पुनि अर्ज्जुन यह कह्यो सदेशा। तुम सम्मुख रणमोहिं अँदेशा॥
क्षमव नाथ अपराध हमारो। कुरुपति हमैं वैर है भारो॥
कपट द्यूत करि भूमि छुड़ाये। तेरह वर्ष महादुख पाये॥
करिहौं आज भयङ्कर रारो। अव न पितामह लागि हमारो॥

ह कहि वचन बाणमहिजाई । कह्यउ पितामह सबनसुनाई ॥
ह भीषम अब अर्ज्जुन आवा । करहुसकलमिलि रणको दावा ॥
कल सजगह्वै गहि हथियारा । करहु युद्ध जनि करहु अबारा ॥

कहेउ द्रोण गांगेय ते, सुनिये वचन प्रमाण ।
श्रवणलागि मोसे कह्यो, यह अर्ज्जुनको बाण ॥

तुम सन्मुखरण उचित न मोको । ताते विनय सुनायो तोको ॥
कपटद्यूत करि विपिन निकारा । तेरह वर्ष सह्यो दुख भारा ॥
अब न गुरु अपराध हमारा । करिहौं कटक सकल संहारा ॥
अस कहि बाण परो महिजाई । ह्वै सचेत सब करहु लराई ॥
तेहि अवसर अर्ज्जुन तहँ आई । देखैं सकल वीर समुदाई ॥
गर्जत जहँ तहँ धनुष चढ़ाये । तहँ कुरुनाथ देखि नहिपाये ॥
उत्तरते यह पार्थ बखाना । सुनु विराट सुत वचन प्रमाना ॥
अपरनिधननिसरहिनहिं काजा । चल रथहाकि जहाँ कुरुराजा
सुनि विराटसुत तुरँग उठाये । जेहिदलन्हपतितहँाचलिआये ॥
लीन्हों पार्थ भूपकहँ ताकी । लै गा वेगि कुँवर रथ हाँकी ॥
भीष्म द्रोण सेना सब धाई । पहुँचो निकट भूपके आई ॥
हाहा हूत सेन महँ भयऊ । दल तीनौ यक मिल ह्वै गयऊ ॥
कह नरेश सब वीर बोलाई । को रोकै अर्ज्जुनकहँ जाई ॥

जीतन पारथ वीर हित, बीटक लियो कलिंग ।
अचल मेरुसों रण रचो, कियो कोटिरणरंग ॥

नृप कलिंग अर्ज्जुन वल पाई। द्वौ दिशि वाणवृन्द झरिलाई॥
दश शर तव कलिग नृप छांटे। आवत पार्थ वीचही काटे॥
पुनि अर्ज्जुन इकवाण प्रहारा। कुन्तल नृप कलिंगको मारा॥
पुनिशर हन्यो कालके आंके। काटेउ गजके ध्वजा पताके॥
गजतजि चल्यो अपररथ आई। कीन्ह कलिग युद्ध अधिकाई॥
तव कलिंग कीन्हों अतिकोपा। शरन मारि पारथ रथ तोपा॥
अग्नि वाण तव पार्थ पँवांरा। सव शर भये निमिषमहँछारा॥
पुनि शतविशिखकलिंग चलाये। ते सव अर्ज्जुन मारि गिराये॥

पार्थ सहसदश वाण ते, हतो कोप करि वीर।
मूर्च्छित गिरो कलिङ्गरण, धरि न सकत दल धीर॥

इति सप्तम अध्यायः॥ ७

जव कलिङ्ग मूर्च्छितभयो, तव विकरण रणसाजि।
कोपि शरासन वाण ले, आयो सन्मुख गाजि॥
तव विकरण करि कोप चलाये। भूमि अकाश वाणते छाये॥
घोर युद्ध कीन्हों यहि भांती। व्है गै मनहुँ दिवसमहँ राती॥
अतिशय अन्धकारतह भयऊ। परै न लखिदिनकरछपिगयऊ॥
विकरण हनोक्रोधकरि जियमो। तीस वाण पारथके हियमो॥
पारथ वाण क्रोध करि छंड्यो। पलमहँ शर विकरणके खंड्यो
औरो वाण पांडुसुत छांटे। हय गय मरे अमित रथकाटे॥

।टिन अर्व खर्व शर मारा। काटिसेन वहि शोणितधारा॥
ौ लोथ धरणी पर पाटी। बूझि न परै शीश अरु माटी॥
हूँ जंघ कर शिर पद डारे। कहूँ कवन्ध परे महि भारे॥

तब विकरण चालीस शर, हन्यो कौशबलवन्त।
कोटि बाण पारथ हन्यो, संगर भयो अनन्त॥
तब विकरण साहसरहित, भूमि परो मुरछाय।
देखि कर्ण बलवीर तब, आयो धनुष चढ़ाय॥

धनुष चढ़ाय कर्ण ललकारे। कठिन बाण अर्ज्जुन पर मारे॥
ते शर सर्व जिष्णु रण खंड्यो। करि अति क्रोध सहसशरछंड्यो॥
ते सब विशिख कर्ण पुनि काटे। लाघव शर पारथपर छांटे॥
आवत देखे बाण अपारा। अर्ज्जुन अग्निबाण तब मारा॥
कर्ण बाण जारे सब आगी। लागी जरन सेन सब भागी॥
वरुण बाण तब कर्ण चलायो। क्षण भीतर सब अनल बुतायो॥
अर्ज्जुन शर बूड़त जब जाना। मारो तुरत पवन को बाना॥
तासु चलत गा नीर सुखाई। ध्वजा पताका छत्र उड़ाई॥
अहिशर करणत्याग तब कीन्हा। नागनसकलपवनभखिलीन्हा॥
तब अर्ज्जुन शिखिबाण चलाये। मोरन सकल सर्पसम खाये॥
रविसुत अन्धकार शरपाग्यो। देखत सब पचीगण भाग्यो॥
परै देखि नहिं नयन पसारा। व्याकुलभयो विराट कुमारा॥
अर्ज्जुन ते तब वचन उचारा। प्राण जात अब करहु उबारा॥
तब पारथ रवि बाण प्रहारा। तम भा दूरि भयो उजियारा॥

तब रविनन्दन कोप करि, मारे पर्वत बान।
पारथ रथपर शैलगण, चहुँ दिशि ते फहरान॥
वज्र वाण तब पार्थ प्रहारा। सबगिरिभयोनिमिष महँछारा॥
तब रविसुवन क्रोध उपजावा। पढ़ि सुमन्त्र यमबाण चलावा॥
पार्थ कठिन शर आवत जाना। मृत्युवाण कीन्हों सन्धाना॥
अस्त्र शस्त्र लड़ि शीतलभयऊ। रविसुतकोपिकठिनशरलयऊ॥
सो लै अर्ज्जुन के उर मारा। बही प्रवाह रुधिर कै धारा॥
रविनन्दन विराट सुत ताका। मारो कठिन बाण दै हाँका॥
अब अर्ज्जुन रण करहु सभारा। करौं निधन सारथी तुम्हारा॥
अर्ज्जुन लये वाण कर चोखे। कहो कर्ण भूल्यो जनिधोखे॥
यम अरु इन्द्र वरुण चलि आवैं। सारथि छाँह कुवन नहिपावैं॥
सुनु रविसुत केतिक बलतोरे। सन्मुख युद्ध करहि जो मोरे॥
यहकहिकै अर्ज्जुन शरछण्डित। कीन्होंविशिखकर्णकोखण्डित॥
पुन पारथकृत विशिखप्रहारा। भंज्यो तुरँग सारथी मारा॥
शतसहस्र शर भालक लीन्हें। रविनन्दन उर भेदन कीन्हे॥
अगणित वाण हृदयमहँलागे। सहि न सके रविनन्दन भागे॥
रण अर्ज्जुनको नेकहू, सहि न सको स्वइ वान।
रणमण्डित तजिकोभयो, रविसों तेज निधान॥
गयो पराय कुरुपति आगे। विह्वल वचन कर्णतहँ पागे॥
सुनु नरेशभा कठिन मशाना। सहि न सक्यों अर्ज्जुनके वाना॥
जब यह सुन्यो कर्ण मुखबाता। क्रोध कृशानु जरे सब गाता॥

बोल्यो नृपति कुटिलकरिभौंहैं । अरुण वर्ण भे नयनरिसौंहैं ॥
क्षत्रियकुल बालक रिस गारो । करत युद्ध पग परै पछारो ॥
आयो कर्ण युद्ध ते भागो । तुमहिं बिलोकिमोंहिरिसलागो ॥
तुम अर्ज्जुन कहँ पीठि देखाई । भे बड़िलाज बरणिनहिंजाई ॥
भूरिश्रवा मगहपति आगे । द्रोणहिं बोलि कहन नृपलागे ॥
तुम सब मैं पाले यहि कामहिं । पारथ जीतिसकै संग्रामहिं ॥

यह कहिकै कुरुनाथ तब, नेकु न मानी शङ्क ।
चल्यो निशान बजाइ रण, भयो महा आतङ्क ॥

भयोचलत अशकुन अतिभारी । रविके अछत फेकरिसि आरी ॥
विनुघन नभमण्डल घहराई । रहे गिद्ध दल ऊपर छाई ॥
बोल उलूक भयङ्कर बानी । विन बारिदनभ बरसतपानी ॥
करैं काक कङ्क नभ ठाटो । चलहिं जम्बुगण मारग काटो ॥
रासभ श्वान भयङ्कर बोलो । बोलत धरा आरबहु डोलो ॥
गिरि गिरि परत शरासवपाणी । परतम्यानतजिनिकरिकृपाणी ॥
खास दास कर छत्र विशाला । परोटूटि अरु नृप मणिमाला ॥
दिशा धूम्रि धरणी पर छाई । गये नृपति के चमर उड़ाई ॥
अशकुन और भयो यक बाँका । भूपति रथको टूट पताका ॥

भे शङ्का भूपाल तब, कह्यो द्रोण सन बोलि ।
अशकुन कारण सकलगुरु, हमहिं बतावहु खोलि ॥

कह्यो द्रोणगुरु सनु कुरुराई । कहतशकुन अतिविकटलराई ॥
ह्व है इहाँ कठिन संग्रामा । होहिंनिराश सकलबलधामा ॥

कह्यो वचन गुरुरह्योचुपाई। बोल्यो कर्ण नृपति सन आई
रण भाजे मोकहँ भै लाजा। अब मैं लरब पार्थसन राजा॥
यह कहि कर्ण हांकिरथ दीन्हा। बाण वृष्टि पारथ पर कीन्ह
देखि पार्थ लीन्हों शारङ्ग। पुनि रणरच्यो कर्णके सङ्ग॥
उभय वीर लागे शर मारन। सौते सहस हजार हजारन॥
तबरविसुवनक्रोध अति कीन्हों। बाण पचीश फेंकपर दीन्ह
हांक मारि रथ ऊपर छण्डयो। अर्जुनते शर बीचहि खण्डे
और पांच शर पार्थ चलाये। कर्ण बली ते काटि गिराये॥

कर्ण धनुर्द्धर क्रोधकरि, हन्यो नराच अचूक।
तेपारथ निज शरनते, काटि कियो दुइटूक॥

और सहसशरत्यागेउ पायल। ताते भयो तरणिसुत घायल
लक्ष बाण सेना पर मारे। हय गज रथ पदाति संहारे॥
पारथ करेउ युद्ध सरसाई। रणमहँ रक्त नदी वहि आई॥
मत्त मतङ्ग मरे जे भारे। भये सरिस दोउ ओर करारे॥
चमकत खड्ग मीनसम जाने। चर्म सेवार सरिस अरु ज्ञा
अहिसम रुधिर नदीमहँसाङ्गी। जहँतहँ परी धूप जनु नांगी
गिरविन कवच सहितउतराहीं। जहँतहँ सुभट ग्राहजनुआहीं
विन शिर सेन जात पहिचाने। मनहुँ सूस जलमें उतराने॥
रथके चक्र अमित उतराहीं। जनु आवर्त भ्रमत जलमाहीं॥
परी पत्र पुरइनि मनमानो। वहतढोल कच्छपसम जानो॥

भैरव भूत पिशाच सम, गावत करि करि हेत।
नाचत चौंसठि योगिनी, रुधिर पियत युत प्रेत॥
अन्ध धुन्ध रण भयो भयङ्कर। नाचत हँसत लेत शिरशङ्कर॥
कटकटाहि जम्बुकगणधावहि। पियहिंरुधिरमलखाहि अघावहि॥
गिद्ध आदि पक्षीगण धाये। रणमहँ भये तृपित मनभाये॥
उठहि कबन्ध सुण्डविन धावहिं। धरुधरुमारुमारुगोहरावहि॥
देखेउ कर्ण भिहावन खेता। लीन्होंधनुष कीन्हचितचेता॥
करि रिस शतसहस्र शर मारे। पाण्डु सुवन ते काटि निवारे॥
अर्ज्जुन कोपि वाणदश त्यागे। काटे तुरङ्ग स्वामि डरलागे॥
भयो विरथ तब तरणिकुमारा। भयो आन रथ पर असवारा॥
करि रिस कीन धनुष टङ्कोरा। अशनिसमान शिलीमुखजोरा॥
हांक मारिकै कर्णचलावा वीचहि अर्ज्जुन काटि गिरावा॥
समबल युगल कर्ण अरु पारथ। कीन्हों महाभयानक भारथ॥
सत सहस्र शर पार्थ निवारे। हय गज कटे सुभट वहुमारे॥
कीन्हों पार्थ कठिन संग्रामा। कोटिन सुभट गिरे वहुनामा॥
कर्ण धनुर्द्धर के हिये, एकवार सौ वान।
मारो अर्ज्जुनकोपकरि, कीन्ह्यों कठिनमशान॥
तरणितनय कहँ मूर्च्छा आई। रथ सारथी दीन्ह पहुँचाई॥
दुःशासन तव युद्ध सँभारो। देखा कर्ण महावल हारो॥
लै कर धनुष कोपि वलवाना। पारथ पर छाँड़े वहु वाना॥
ते शर जिष्णु काटि सव डारे। दश शर दुःशासन उर मारे॥

पार्थ बाण सारथिके अङ्गा। बीस बाण ते हने तुरङ्गा॥
चारि बाण काटे रथ चाका। सात बाणते ध्वजा पताका॥
पारथ कीन्ह कठिनशरजाला। करि फुंकारचले जनुव्याला॥
भये विरथ दुःशासन भाजे। शंखध्वनि करि पारथ गाजे॥
अर्जुन बाण वृन्द झरिलाई। कुरुसेन सब चली पराई॥

भारत अति पारथ कियो, मारी सेन अनन्त।
बाण शरासन साजिकै, तब आयो भगदन्त॥

आवत दल जब डोलत ताको। मत्त द्विरद आये नृप हाँको॥
दश सहस्र शर एकहि बारा। कीन्हों नृप भगदत्त प्रहारा।
ते शर पार्थ काटि महिडारे। लक्ष बाण करि क्रोधपवाँरे॥
पारथ बाण काटि भगदत्ता। आगे पेलि चल्यो मय मत्ता॥
निकट देखि अर्जुन धनुताना। मारो मगधराज उर बाना॥
चेत न रह्यो शिथिल अब अंगा। तब कुन्तल लै फिरेउ मतंगा
कोटिन अर्ब खर्ब शर छाँटे। भारत भूमि बाणते पाटे॥
रण सन्मुख जेतो दलपायो। मारि पार्थ यमलोक पठायो॥

अति सङ्कटभा कटक महं, सेना चली पराइ।
तब पारथ रणभूमिमें, गर्जो शंख बजाइ॥

इति अष्टम अध्याय॥ ८॥

पार्थबाण नहिं सहिसक्यो, कुरुदल चल्यो पराइ।
देखि द्रोणगुरु क्रोधकरि, आयो रथ दौराइ॥

हाँकमारि यह बचन सुनायो। पार्थ सँभ'रु द्रोण अब आयो॥
सुनि यह बचन पार्थ चलि आगे। करन प्रणाम गुरुसनलागे॥
देख्यो द्रोण नमित पद सोई। आशिष दयो मनोरथ होई॥
असकहि गुरु कोदण्ड चढ़ायो। होहु सजग कहि बाणचलायो॥
सुनि अर्ज्जुन कहिलीन्हपिनाका। शर सन्धानि दीन पुनिहाँका॥
सजग अहौ कहि बाण चलावा। गुरुप्रेरितशर काटि गिरावा॥
लघु सन्धानि द्रोण शर मारे। ते सब पार्थ काटि महिडारे॥

सहस बाण सन्धान करि, पार्थ कियो रणरङ्ग।
रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग॥

तब गुरु चढ्यो अपररथजाई। लै धनु बाण वृन्द झरिलाई॥
द्रोणविशिख यहभाँतिचलायो। भूमि अकाश बाणते छायो॥
ते शरपार्थ निमिष महँ काटे। दिशि अरुविदिशिबाणतेपाटे॥
कोपि द्रोण शर अनलप्रहारा। किये बाण अर्ज्जुनके छारा॥
सहस शिखा पारथ चहुँ ओरा। जारनचल्यो अनलकरिशोरा॥
वरुण बाण तब पार्थ चलायो। क्षण भीतर सब अनल बुझायो॥
कोपि द्रोण ब्रह्मास्त्र प्रहारा। नारायण शर पारथ मारा॥
अस्त्र अस्त्रतेभयोनिवारण। तबलागिनिशितविशिखअनिमारण॥
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा। वज्रबाण पुनि कीन्ह प्रहारा॥

तब अनु तानि द्रोणरणलायक। तड़प्यो सेनानी को सायक॥
ताते इन्द्र बाण चय कीन्हों। तब पारथ मृतुअस्त्रहिलीन्हों॥
मृत्यु अस्त्रलै द्रोणगुरु, कीन्हों तुरत प्रहार।
सबलसिंहचौहान कह, चल्यो करत फुंकार॥
संघट करि अकाश उड़िगयऊ। लड़त लड़तसोशीतलभयऊ॥
परे भूमि दोनों शर आई। कह्यो द्रोण अर्जुनहिं सुनाई॥
सुनहु पार्थ रण करहु सम्भारा। अब नहिं होय तुम्हारउबारा॥
असकहि महाकाल शर लीन्हा। पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा॥
जान्यो पार्थ भयो अब मरणा। सुमिरे कृष्णदेवके चरणा॥
छूटो जबहिं द्रोण को बाना। मुखपसारि लीन्हों हनुमाना॥
तब अर्ज्जुन यक बाण प्रहारा। रथ सारथी द्रोण कर मारा॥
सहस बाण मारे गुरु अङ्गा। चारि बाणते बध्यो तुरङ्गा॥
विरथहि भयो द्रोण जब जान्यो। भूरिश्रवा आनि अरुझान्यो॥
मारे अर्ज्जुन के दश बाना। बीस बाण मारे हनुमाना॥
द्वै द्वै शर तुरङ्गनके मारे। शिथिलभयो पग टरत न टारे॥
तब पारथ अति क्रोध करि, मारो बाण कराल।
मूर्च्छि गिरे भूरिश्रवा, सुधि न रही तेहि काल॥
तब सारथि स्यन्दन पलटावा। लै नरेश के आगे आवा॥
द्रोण अपर रथ के असवारी। सन्मुख पार्थ जुरे धनुधारी॥
लै सरोपगुरु बहुशर छांड़ेउ। आवत अर्ज्जुन बीचहि खाँड़ेउ॥
तबहीं पारथ क्रोध अपारा। गुरु उरकठिन बाणयकमारा॥

जबहिं द्रोण कहँ मूर्च्छा आई। फिरेउ सूत स्यन्दन पलटाई॥
अर्ज्जुनकोपि धनुषधरि हाथहिं। वधौसेन काटे बहु माथहिं॥
परीं लोथ धरणी पर छाई। रणमहँ रुधिर नदी बहिआई॥
सबयोगिनि तहँ करत विहारा। ताल बजाइ करत किलकारा॥
भच्छहिं मांस रुधिर पुनिपीवहिं। आशिषदेहिं पार्थ चिरजीवहिं
जीत्यो पार्थ द्रोण संग्रामा। सुनि आयो तहँ अश्वत्थामा॥

पवन गवनसम द्रोणसुत, गयो तुरत रथहांकि।
विशिखचलायो क्रोधकरि, पारथको दिशिताकि॥
सोशर काटे निमिषमहँ, कीन्हों पुनि शरजाल।
द्रोणतनयके उरहन्यो, अर्ज्जुन बाण कराल॥

लागत बाण भयो तनु पीरा। रुधिर धार गा भीजि शरीरा॥
धनुष चढ़ाय द्रोण सुत छांड़े। दिशिऔ विदिशिवाणसबमांड़े॥
ते शर अर्ज्जुन काटि निवारे। द्रोणी हृदय बाण दशमारे॥
भा अतिक्रोध द्रोणसुत जियमें। मारा शर अर्ज्जुनके हियमें॥
फूटि कवच निसरेउ शर पारा। बहत प्रवाह रुधिरके धारा॥
अर्ज्जुन अन्धकार शर मारा। कुरुदलमध्य भयो अँधियारा॥
व्याकुलकटक भागिसब गयऊ। प्रभा अस्त्र द्रोणीगुणदयऊ॥
ताते फैलि रह्यो उजियारा। अर्ज्जुन निशितविशिखबमारा॥

तब रण कोप्यो द्रोणसुत, खंड्यो अर्ज्जुन बान।
भाषापर्व विराट यह, सबलसिंह चौहान॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

वैशम्पायन से कहौ, जन्मेजय शिरनाय।
कौन्ह कृतारथमोहिं तुम, अद्‌भुत चरित सुनाय॥
कह मुनि सुनु जन्मेजय राई। कथा विचित्त श्रवण मनलाई॥
गुरु सुत दर्पण बाण चलायो। भूमि अकाश आरसौ छायो॥
देखि अनेक द्रोण सुत पायो। पारथके उरमें भ्रम छायो॥
परत देखि बहु अश्वत्थामा। काके सङ्ग करौं संग्रामा॥
यह कहि पार्थ चलायो बाना। कौन्हद्रोणसुत कठिनमशाना॥
लड़तलड़तद्रोदलमिलिगयऊ। द्रोणीकोपि खड्‌गकरलयऊ॥
कौन्ह प्रहार द्रोणसुत डाटा। धनु गुण पारथको तबकाटा॥
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा। निजअसिकाटि सारथीमारा॥
पुनि मारे द्रोणी के बाजी। भयवशगयोयुद्ध तजि भाजी॥
अर्ज्जुन धनुगुण साजिकै, कौन्ह विशिख संधान।
रोंक्योतव जयद्रथचलि, साजिशरासनबाण॥
सिन्धुराज दश विशिख चलाये। ते सब अर्ज्जुन काटि गिराये॥
पुनि मारेउ पारथ इक तीरा। कवच भेदिगा छेदि शरीरा॥
सिन्धु नृपति तब मूर्च्छा आयो। स्यन्दन डारि सूत लै जायो॥
तबकरिक्रोधशकुनिचलिआयो। अर्ज्जुनको बहुबाण चलायो॥
ते शर काटयो पाण्डु कुमारा। पुनियकबाण शकुनि उरमारा॥
बाण लगत तनु मोह जनावा। तबहिंसूत रथ फेरि चलावा॥
कोपिकियो संग्राम तब, पार्थ हन्योबहुतीर।
पारथके एकहु विशिख, सहि न सकत कोउ वीर॥

शकुनी गिरत शल्य चलिआये। पारथपर बहुविशिख चलाये॥
सो शर अर्ज्जुन काटि निवारे। बाण पचीस शल्य उर मारे॥
भयो विकल व्यापी बहुपीरा। गयोभागि उर रह्यो न धीरा॥
रथ आगे पुनि पार्थ चलावा। जीति युद्ध तब शंख बजावा॥
बाहलीक गङ्गाधर आये। नृप काम्बोज युद्धहित धाये॥
सोमदत्त करि क्रोध अपारा। लैकर धनुष सेन ललकारा॥
कीन्हसकल मिलियुद्धप्रचारा। चहुँदिशिग्रसिअर्ज्जुनकहँमारा॥
शूल सांगि कोऊ शर बरसा। कोउअसिघातहने कोउफरसा॥
देख्यो पार्थ घसे चहुँओरा। करि अतिक्रोधपार्थ शर जोरा॥
भये एकते विशिख हजारन। कौरवदल लाग्यो संहारन॥
कोपि पार्थ बहु बाण प्रहारे। सोमदत्त को दल सब मारे॥
कोटिन अर्ब खर्ब शर सारत। सन्मुख आनिजुरे सबमारत॥
लैरूपाण कर पार्थ उठोतब। मारिभगायदयो बलकरि सब॥
भजे शूरते नहिं फिर हेरत। रणमें पार्थ दौरिकै घेरत॥

पार्थ बाण नहिंसक्योसहि, कुरुदल चल्यो पराइ।
धनुटङ्कोरेउ क्रोधकरि, सोमदत्त तब आइ॥

लै सौ विशिख पार्थ पर छांड़े। शक्रसुवन तेहि बीचहिं खांड़े॥
कह अर्ज्जुन कुरुपति अनकाढ़ा। शकुनी कर्ण मन्त्र सुनिगाढ़ा॥
तुमहुँ कीन्ह नहिं न्याय हमारा। मारन हेतु धनुष कर धारा॥
अबनहिंबचहु बचनसुनुसांचा। असकहि पारथ हन्यो नराचा॥
लाग्यो विषम बाणउरजाई। सोमदत्त कहँ मूर्च्छा आई॥

वाहुलीक हांक्यो रथ आगे। करन युद्ध पारथ सन लागे॥
लैकर धनुष कीन्ह संधाना। अर्ज्जुन को त्याग्यो सौ वाना॥
तेशरपार्थ काटि सव दीन्हा। पाथ सहसशर त्यागनकीन्हा॥
वाहुलीक ते शर सव काटे। लघ वाण अर्ज्जुन रथ पाटे॥

आवत देखे वाण जव, पारथ गहि कोदण्ड।
पलमहँ खंड्यो सकलशर, कीन्होंयुद्ध अखण्ड॥

शतसहस्त्रशर एकहि वारा। वाहुलीक उर पारथ मारा॥
रथअचेतहै गिरत विलोका। गङ्गाधर पारथ कहँ रोका॥
वाण शरासन कृत सन्धाना। अर्ज्जुन पर छाँडे वहु वाना॥
ते शर खंडि पार्थशरत्याग्यो। सोमदत्त सुत उरसो लाग्यो॥
परेउ मूर्च्छि गंगाधर जवहीं। रणकाम्वोज कीन्ह पुनितवहीं॥
आवतही अर्ज्जुन वलवाना। हृदय माझ मारेउ यकवाना॥
लागत चेत न रह्यो शरीरा। रथ मुरझाइ गिरेउ रणधीरा॥
द्विरद मत्त क्रोध करि धाये लच्छन कुँवर अलंवुष आये॥
सङ्ग चमू चतुरङ्ग घनेरी। लीन्हीं पाण्डु सुवन कहँ घेरी॥

शङ्क न मानत पार्थ भट, यद्यपि असत अनेक।
डरत न गजसेना निरखि, सिंहवलीजिमिएक॥

घेरि पार्थ सव करहिं लड़ाई। सेन किधौं वर्षाऋतु आई॥
घोर घने गज दीरघ धाये। पावस जलदघटा जनु छाये॥
श्वेत वर्ण गजदन्त विभांती। सो जनुउड़त गगन वक पाँती॥
होत चमर जहँ तहँ दल माहीं। राजहंस जनु गगन उड़ाहीं॥

घन गजत वाजत जे डङ्का । असिप्रहारजनु विज्जु दमङ्का ॥
धनुजनु सुरपति धनुषविशाला । वुन्द मनहुँ वरषत शर जाला ॥
अर्ज्जुन मनहुँ वीर रस पागे । शर समूह पुनि मारन लागे ॥

प्रलय कालके पवनसम, पार्थ वाण हहराइ ।
आइ फँसे कुरुदल भजे, नीरदसे भहराइ ॥

द्विरद दुमत्त कीन्ह अति कोपा । शरन मारि पारथ रथतापा ॥
पारथ कीन्ह तुरत सन्धाना । अरिशर खण्डि हने वहुवाना ॥
पञ्च विशिख ते द्विरथ प्रहारो । दुइ शर लै दुमत्त उर मारो ॥
परे मूर्च्छि रण दूनौ भाई । लच्नन कुँवर जुरे तब आई ॥
अर्जुन उर मारे दश वाना । सत्तरि वाण हने हनुमाना ॥
रुधिर धार भीज्यो सव अङ्गा । पारथ कोपि लीन्ह शारङ्गा ॥
यहिविधिकीन्हेंविशिखप्रहारा । रथ सारथी कुँवरको मारा ॥
प्रेरेउ वहुरि वाण वहु साजी । कीन्हनिधनकुरुपतिसुतवाजी ॥
भये अरूढ़ कुँवर रथ आना । कीन्हों वहुरि विशिखसन्धाना ॥
तव पारथ करि क्रोध अपारा । अशनिसमान वाण उरमारा ॥

मूर्च्छि परा रणभूमि महँ, जव कुरुनाथ कुमार ।
साजि अलम्वुष धनुष शर, कीन्हों युद्ध अपार ॥

गहिकर धनुष अलंवुष धाये । पारथरथ सन्मुख चलिआये ॥
सात कोटि दानवगण साथहि । धाये सकल धनुषधरिहाथहि ॥
धरि वांधहु दानवपति टेरो । धरु धरु मारुमारु कहिघेरो ॥
कहुँ कीन्हों शर शक्ति प्रहारा । मुद्गर गदा शूल केहु मारा ॥

परशु कृपाण चले गहि मारन । कोउखञ्जरकोउपरि धकटारन
कोउ कर सुभटभुशुण्डीलीन्हें । महा मारु पारथ पर कीन्हें ॥
भिण्डिपाल कोउ वृक्ष उपारी । केहुँ गिरिशिला पार्थ परडारी
सातकोटि दलदैत्यको, करि करि क्रोधअपार ।
सबमिलिकीन्हों पार्थपर, निजनिज अस्त्रप्रहार ॥
कियोहस्तलाघवअतिहि, सबको बाणकृपाण ।
रोंक्योपारथ असुरबहु, मारिकियो विनप्राण ॥
मारि पार्थ घाल्यो दल घानी । असुर सेन भइराड़ परानी ॥
दनुज राज तब करि सन्धाना । पारथ पर प्रेरेउ शत बाना ॥
ते शर काटि पार्थ रण कोपा । बाणन मारि दैत्य रथ तोपा ॥
ते शर दैत्यराज सब काटे । बाणन मारि पार्थ रथ पाटे ॥
अर्जुन अग्निवाण फटकारा । सब शरकटे निमिष महँछारा ॥
स्यन्दन सूत तुरङ्ग जरिगयऊ । अन्तर्द्धान असुरपति भयऊ ॥
प्रकट गयो स्यन्दन असवारा । सम्मुख चला करत ललकारा ॥
बधौं पार्थ तोहिं एकै बाना । काल तुम्हार आय नियराना ॥
यहसुनि पारथतब कह्यो, दनुजराजसों बात ।
किये बड़ाई निजवदन, नहिंककुबलसरसात ॥
हम तुम करिय आजु संग्रामा । जोतै युद्ध होय बल धामा ॥
असकहि पार्थ लीन्ह शारंगा । दनुजराजके बधे तुरंगा ॥
अमितबाण करि क्रोध पबांरो । स्यन्दन भञ्जि सारथी मारो ॥
बहुरि असुर स्यन्दनचढ़िआयो । पारथ कह बहु बाण चलायो

पाण्ड पुत्र सब शायक खंड्यो । लक्षबाण दानवपति मंड्यो ॥
तेऊ विशिख काटि महि डारे । बहुरि धनञ्जय बाण पँवारे
आवत देखि पार्थ को बाना । दनुजराज कीन्हों संधाना ॥
आवत शर अर्जुन के काटे । खण्ड खण्ड करि बीचहि पाटे
देखि पार्थ करि क्रोध अपारा । तुरङ्ग सूत दानवको मारा ॥
यहिविधि पार्थ बीसरथ भञ्जेउ । अरु अनेक दलबादल गंजे
सके न जीति हारि हिय मानी । तबहिं अलस्वप माया ठानी

मारुमारुकहि दनुजपति, गयो अकाश उड़ाय ।
वर्षनलाग्यो गिरिशिखर, अन्धकार उपजाय ॥
सिंहनाद करि गगन महँ, गर्ज्जत बारहिंबार ।
विटपचलायोक्रोधकरि, विविधभाँतिहथियार ॥

इति दशमअध्याय ॥ १० ॥

दैत्य युद्धते विकलभे, तब उत्तराकुमार ।
पारथ राखहुप्राण अब, यहि विधि करत पुकार ॥
दीन वचन सुनि पाण्डुकुमारा । पढ़िरविमन्त्र बाण तब मार
सहसकिरणिशरकीन्ह प्रकाशा । भयोतुरत मायानिशि नाश
पुनि अर्ज्जुन कीन्हों सन्धाना । मारे दैत्यराज उर बाना ॥
परोधरणिखसि मूर्च्छितभयऊ । स्यन्दनघालि सुतलै गयऊ ॥
देखि युद्ध कृतवर्म्मा धाये । शङ्खध्वनिकरि हांक सुनाये ॥

मैं आयों पारथ रहु ठाढ़ो। सेनावधि तेरो मन बाढ़ो॥
असकहि कृतवर्म्मा रण कोपो। करिशरजाल दीन्ह रथतोपो।
कोटिन अर्व खर्व शर छाये। शर पञ्जर करि पार्थ दबाये॥
अर्ज्जुन अनल बाण तव मारे। विशिख असंख्यजारिसव डारे
कृतवर्म्मा करि क्रोध अपारा। कठिनबाण अर्ज्जुन उर मारा॥

लग्यो कठिन शर पार्थ उर, क्षतयुत भयो शरीर।
लीन्ह शरासन क्रोधकरि, पाण्डुपुत्र रणधीर॥

करि अतिक्रोधशिलीमुखछांटेउ। कृपकोधनुषशक्रसुत काटेउ
कटे धनुष कृत शूल प्रहारा। बीचहिपार्थउ काटिमहिडारा
करि रिस छाँड्यो शक्तिप्रचण्डा। शरनमारि अर्ज्जुन द्वै खण्ड
पुनि पारथ करि क्रोध कराला। कृतउरहन्योविशिखतेहिकाल
बाण लगत तनु मोह जनायो। तव कुन्तलगज फेरि चलाये
कृपाचार्य्य कीन्हों सन्धाना। अर्ज्जुन पर छाँड़े बहु बाना॥
आवत पार्थ काटि महि डारे। सहस बाण करि कोध पावाँ
ते नराच कृत बीचहि खाँड़े। लक्ष बाण पारथ पर छाँड़े॥
कठिनविशिखअर्ज्जुनगुणदीन्हों। आवतबाणसकलक्षयकीन्हे

पुनि किरीटि अति क्रोधकरि, मारेबाण अनन्त।
रथ तुरङ्ग पैदल गिरे, मतवारे मैमन्त॥

अर्ज्जुन बहु कुरुकटक निपाते। कृप तब भगा क्रोधते ताते
अर्ज्जुन उरमारे दश बानहिं। साठि बाण मारे हनुमानहिं॥
ले कर धनुष पार्थ रिसि आना। कृपके उर मारे दश बाना।

श शर हन्यो सारथी अङ्गा। बीस बाणते हन्यो तुरङ्गा॥
ारि बाण काटे रथ चाका। पांच बाणते ध्वजा पाताका॥
ये विरथ कृप चढ़ि रथ आना॥पुनि अर्ज्जुन तेहिं कीन्ह मशाना
ृपाचार्य बहु विशिख पवांरे। अर्ज्जुन सकल काटिमहि डारे॥
त्त बाण तब पार्थ चलाये। आवतही कृप काटि गिराये॥
ृपाचार्य्य तब धनु कर लीन्हों। महा मारु पारथपर कीन्हा॥
तब अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा। वज्र बाण कृपके उर मारा॥

जब कृप रण मूर्च्छित भयो, गयो कटक भहराइ।
तब उत्तर कुरुनाथ ढिग, पहुँचो रथ दौराइ॥

पार्थहि देखि नृपति ढिग आयो। तब भीषम कोदण्ड चढ़ायो
तब अर्ज्जुन भीषमढिग हेरा। कीन्हों चितहि शोच बहुतेरा॥
उत्तर सनहु पितामह जाये। परशुराम जिनयुद्ध हराये॥
अस कहि कीन्हों दण्ड प्रणामा। आशिष दयो होय मनकामा
पुनि अर्ज्जुन कुरुपति दिशिताका। उतर कुमार वेगि रथ हांका॥
नृपदिशि जात पार्थ अवलोका। शर सन्धानि गङ्गसुत रोका॥
जात कहा कहि बाण चलावा। सो शर अर्ज्जुन काटि गिरावा॥
पारथ दीन बाण गुण चोखा। भीषमपर छांड़्यो करि रोखा॥

आवत देख्यो युद्धमहँ, जब अर्ज्जुनको बान।
परम क्रोध करि गङ्गसुत, कीन्हों विशिख सँधान॥

हांक मारि शर कीन्ह प्रहारा। आवत बाण काटि महि डारा॥
पुनि भीषम निजतेज सम्भारो। पारथकहँ बहु बाण निशारो॥

ते शर कीन्ह पार्थ शत खण्डा। हन्योक्रोधकरिविशिखप्रचण्डा॥
लख्यो गङ्गसुत आवत बाना। शर सन्धानि शरासन ताना॥
शन्तनुसुत काटेउ करि रोखा। तज्यो बाण पारथपर चोखा॥
ते शर अर्ज्जुन काटि निवारे। भीषम ते यह वचन उचारे॥
धनुष संभारि पितामह लीजै। सावधान सोसन रण कीजै॥
यह कहि अर्ज्जुन बाण चलायो। कौरवदल बहु मारि गिरायो॥
द्विरद लच्छ मारे सतवारे। अश्वपदादि असंख्य सँहारे॥
दशसहस्र स्यन्दनवध कीन्हों। रुण्डमुण्ड कछु जात न चीन्हों॥
शोणित सरित बही विकरारा। काक कङ्क कृत मांस अहारा॥
पियहिं रुधिर जम्बुक पल खाहीं। कटकटाहिं फे करैं हुआहीं॥
गिद्ध खाहिं पल उड़हिं अकाशा। शङ्कर देखहिं युद्ध तमाशा॥
जहँ तहँ बहु कबन्ध उठि धाये। मारु मारु कहि शब्द सुनाये॥

भयो भयङ्कर खेत अति, अर्ज्जुन कीन्ह मशान।
नाचत चौंसठि योगिनी, करिकरि शोणित पान॥

भीषम देखि क्रोध जिय आना। कीन्हों कठिन बाण सन्धाना।
होय सक्रोध नराच प्रहारो। रथकहँ तीन पेगपै टारो॥
पुनि भीषम कीन्हों सन्धाना। पारथके मारे सौ बाना॥
लच्छ बाण हनुमानहिं मारे। अष्ट विशिखते तुरंग प्रहारे॥
तब भीषम यह मन्त्र विचारा। करौं निपात विराटकुमारा॥
मृत्यु बाण कीन्हों सन्धाना। छूट्यो विशिख पार्थ तब जाना॥
... सरोष शिवसायक लीन्हों। ताते मृत्यु अस्त्र क्षय कीन्हों॥

हन्यो शिलीमुख तानि धनु, ह्वै सरोष पारत्य ।
सहस पैग पीछे टरो, शन्तनु सुतको रत्थ ॥
पुनि रथ हाँकि गङ्गसुत आयो । पारथपर वहुविशिख चलायो ॥
तव पारथ कीन्हों रिस भारी । ध्वजा खण्डि भीषमकी डारी ॥
कोटि वाण सेनापर मारे । हय गज रथ पदाति संहारे ॥
मारि विछाय दियो दल ऐसो । प्रलयपवन कदलीवन जैसो ॥
क्रोध सहित पारथ-शर छूटे । शीश सेन केतिकके टूटे ॥
कटे जानु जंघा यक वाहीं । चले भाजि रणते नहिं चाहीं ॥
करि अतिक्रोधधनुषशरसाँध्यो । नागफाँस केते भट वाँध्यो ॥
पारथ वाण वृष्टि जव ठानी । भयो विकल कुरुसेन परानी ॥
तव भीषम अति क्रोध करि, मारे तीक्ष्ण वान ।
शतलागे पारथ हिये, शतसहस्र हनुमान ॥
तव अर्ज्जुन करि क्रोध अपारा । तुरंग सूत भीषम को मारा ॥
भयो विरथ गङ्गासुत जवहीं । पूरो शङ्ख पार्थ रण तवहीं ॥
भीषम आय चढ़ो रथ आना । अर्ज्जुनपर पुनि शर सन्धाना ॥
दुर्योधन सव वांधव आये । चहुँ दिशि ओर पार्थके धाये ॥
मूर्च्छाविगत द्रोणगुरु जागे । तानि शरासन सायक त्यागे ॥
कर्ण आदि जागे सव वीरा । लै लै पाणि शरासन तीरा ॥
चहुँदिशि गाँसि पार्थकहँ लीन्हा । वाणवृष्टि क्रोधित ह्वै कीन्हा ॥
मुद्गर गदा शूल कोउ मारेउ । साँगि शेल कोउ खड्ग प्रहारेउ ॥
लग्यो चक्र फरसा कोउ मारा । केहुँ मारेउ कोतह हथियारा ॥

कोटिन सुभट भुशुण्डी लीन्हें। महा मारु पारथपहँ कीन्हें ॥
तदपि पार्थ मन नेकु न मुरई। शर सन्धानि प्रबल रण करई ॥

जब जान्यो रथग्रसितभो, कीन्ह विशिखसन्धान।
पारथ छाड्यो क्रोध करि, रण महँ मोहनवान ॥

पारथ मोहन वाण चलावा। जो शर कृष्णदेव सिखरावा ॥
मोहे सब कौरव वल वीरा। परे मूर्च्छि नहि चेत शरीरा ॥
भयो गङ्गको आशिष सांचा। नहिं मोहेउ भीषम रण बांचा ॥
उत्तर पठयो पार्थ प्रचारी। पट भूषण सब लेहु उतारी ॥
चल्यो पार्थकी आज्ञा मानी। पहुंचो निकट भूपके आनी ॥
कुरुपति और वीर बहुतेरे। भूषण वसन मुकुट सबकेरे ॥
लेत कुँवर एकहु नहिं जागे। रथ लै धरे पार्थके आगे ॥
दुर्योधनकी मूर्च्छा जागी। निज दिशि देखि लाज अति लागी ॥
पार्थविजय लखि रिस उपजायो। लैकर धनुष युद्ध हित आयो ॥
जाग्यो सकल सुभट समुदाई। चले युद्ध हित धनुष चढ़ाई ॥
भीषम आइ वरजि दल राख्यो। अरु यह वचन भूपते भाख्यो ॥
लरे एक ह्वै सब मिलि धायो। अर्ज्जुन ते रणजय नहिंपायो ॥

चुप ह्वै रहहु गृह चलौ, पारथ अति बलधाम।
लज्जा ह्वै है भूप सुनु, तजि भागे संग्राम ॥

विकलभयो नृप अति दुखपावा। क्रोधविवशमुखवचननआवा ॥
दीरघ श्वास व्याल जिमि लेई। लगे वज्रवत उतर न देई ॥
भीषमते बोल्यो बिलखाई। गई पितामह बिगरि लराई ॥

कह भीषम अबलगि नहिं लाजा। भाज्यो कटक भूप नहिं भाजा ॥
ताते नृप वर्तत मैं तोहीं। कारण समुझि परो सब मोहीं ॥
अर्ज्जुनपर दयालु भगवाना। तुमते सहि न जाइ नृपवाना ॥
रण भागे तुव जगत हँसाई। ताते भवन चलो कुरुराई ॥
जीते पारथ सकल समाजा। तबलगि विजय न भागेराजा ॥
भाजै सकल सेन किमि झारी। विनु नरेश भागे नहिं हारी ॥
भीषम वचन सुनत कुरुराई। फिरे भवनसँग भट समुदाई ॥

भीषम आयसु मानिकै, दल लै चल्यो अवास।
धावन धाय गयौ तबहिं, नृप विराटके पास ॥
जीति उत्तरैं अरिचमू, कौरव गयो पराइ।
सुत सपूत कीन्हो विजय, भाग्य तिहारे राइ ॥

भूपति खेलत पंसा सारी। सङ्ग कङ्क ऋषि लै सुखकारी ॥
सब जन सुतकी कीरति गावैं। हर्ष नृपति आनन्द बढ़ावैं ॥
बारबार नृप निज मुख वरणी। उत्तर कीन्हि अमानुषकरणी ॥
रथ चढ़ि एक न सङ्ग समाजा। सेन सहित जीत्यो कुरुराजा ॥
भीषम द्रोण कर्ण कृप हारे। और कहाँ जग जीव विचारे ॥
उत्तरसम जग कोउ न जुझारा। भयो कबहुँ नहिं होनेहारा ॥
बार बार नृप कीन्ह बड़ाई। कह्यो कंक ऋषि तब मुसुकाई ॥
विजय वृहन्नल जेहि कटक, सो कत जीतो जाइ।
जुरै युद्ध संग्राम थल, कालहु देइ भगाइ ॥

इतनी सुनत भूप उर जरेऊ। राते दृग करि बहु रिस भरेऊ॥
तत्छणही नरनाह विराटा। हन्यो कङ्कऋषिपांस लिलाटा॥
छूटे रुधिर द्रौपदी धाई। अंजलिमें लै लीन्हों आई॥
निरखि भूप मन चिन्ता मानी। कह्यो सैरंध्री भेद बखानी॥
बिन जाने चित होत अँदेशा। कह्यो सैरंध्री सुनहु नरेशा॥
भूतल रुधिरपरै जो एहू। द्वादश वर्ष न वरसै मेहू॥
यह कहिकै भूपति समुझायो। भीमसेनके उर दुख आयो॥
फरकत अधर नयन भे राता। चाहत भीम कियो उतपाता॥

महाक्रोध लखि भीम उर, धर्म्मपुत्र दै सैन।
वरजो केहरि क्षुधित ह्वै, युक्तकहूँ यह है न॥

उत्तर कुँवर भवन चलि आयो। भूपतिसों यह वचन सुनायो॥
आजु वृहन्नल सब दल जीतो। कौरव गयो युद्धते रीतो॥
मारि शूर सबदीन्ह भगाई। प्रवल पवन जिमि मेघ उड़ाई॥
भयो मोज नृप धाम सिधावा। भीतर उत्तर बोलि पठावा॥
युद्धकथा सिगरी कहि दीनी। सारथिकी शरजाल प्रवीनी॥
है अर्ज्जुन जिन कौरव मारे। दिवस इते यहि ठौर निवारे॥
यहि प्रकार सुतकहि समुझाये। सुनि विराट तब अतिसुख पाये॥
कह मुनि सुनु जनमेजय राई। कथा विचित्रश्रवण सुखदाई॥

धर्म्मपुत्र नरनाहसों, अर्ज्जुन बोल्यो बैन।
जाने हम सब कौरवन, अब कछु चिन्ता है न॥

तेरह वर्ष दिवसदश, वीतिगये यहिभाव ।
अब बैठो शिर छत्र धरि, शुभ्र करत कत नाव ॥
कीन्ह त्रास कुरुनाथ निकारा । वसि वनवास सहे दुखभारा ॥
छूटे अशन वसन घर नासा । अन्नहीन कीन्हों उपवासा ॥
भूख प्यासते भयो वियोगी । उदासीन जैसे रह योगी ॥
बलविहीन तुमको नृप जानी । अन्यसुवन कछुकानि न मानी ॥
आयसु होइ जीति अपराधी । भुजवल जीति लेउ महि आधी ॥
करि सन्धान बाण शर धारा । बोरौं कुरुप सहित परिवारा ॥
देहु निदेश धनुष संधानौं । भूप मरे कौरव सब जानौं ॥
यहि विधि कहत परस्पर बाता । बीति रैनि गे भयो प्रभाता ॥
प्रातहोत शिर छत्र धरि, धर्म्म पुत्र सुख पाय ।
दान दियो बहु याचकन, विप्रसमूह बोलाय ॥
बान्धव चारिउ जोरि कर, ठाढ़े भये सुजान ।
करनहार सब राजके, करत भूप सन्मान ॥
नहिं वाहन पदत्राण नहिं, उत्तरसहित विराट ।
नृपतियुधिष्ठिरचरणटठि, राख्यो आनि लिलाट ॥
भई ढिठाई होइ जो, सो क्षमियो अपराधु ।
चूक न मानत दासकी, भूप बड़े जे साधु ॥
विन जाने करवाई सेवा । क्षमहु चूक बड़ि भइ नरदेवा ॥
ओछी पूरी चित मत धरियो । भूप अनुग्रह हमपर करियो ॥
मम गृह रही द्रौपदी रानी । दासी भाव आज लग जानी ॥

वहु प्रकारते टहल कराई। सो सब छमा करहु तुम राई॥
अस कहि परो चरण करजोरी। कीन्ह विनय बहुभांतिनिहोरी॥
मन वच कर्म दास तव स्वामी। कीजै कृपा जानि अनुगामी॥
कह्यो भूपसन वारहिंवारा। सविनय वचनविराटभुवारा॥
सुनत युधिष्ठिर आनन्द पाये। करि सन्मान विराट बुझाये॥

विपति हमारी सब हरी, राख्यो पुत्र समान।
तोसों तोहिं न दूसरो, महिमण्डल नृप आन॥

तुव पटतरि को दीजे आना। उऋण होउँ नहिं अपने जाना॥
तुम सबको दीनी सब भलि है।तुव कीरति जगमें नृप चलिहै॥
नित नित नेति वढ़ै अतिभारी। भयो भूप तुव सुजा हमारी॥
जीत समर सुरभी जे आनी। ज्यतनी त्यतनी जाको जानी॥
ते सब सबको ताको दीन्हीं। सबको विदा महीपति कीन्हीं॥
पहुँचो जाइ नगर कुरुराजा। सन्ध्यासमय समेत समाजा॥
वैठ्यो भवन मानि गिल्यानी। भये स्वप्न व्रत अन्न न पानी॥
कुश विछाय कृत सैन भुआला। हरि दानव लै गयो पताला॥
दानवराज वहुत समुझावा। तुम लगि भूप हमारो दावा॥
जो तुम प्राण त्याग करि दीन्हा।जग मिटि गयो दानवीचीन्हा
तुव भटतनु करि सकल प्रवेशा। करव युद्ध जनि करव अँदेशा॥

करहु युद्ध कदराइ तजि, छाँड़हु सब सन्देह।
प्रविशहिं सबको देहमें, दैत्य आइ करि नेह॥

यहि प्रकार कुरुपति समुझाये । दैत्य सङ्ग मृतलोक पठाये ॥
जेहि थल सैन कियो तो राई । कुश साथरी गयो पौढ़ाई ॥
गयो दनुज पुनि असुर समाजा । प्रात होत जाग्यो कुरुराजा ॥
द्रोणी कर्ण तहां चलि आये । कहि निज भेद भूपसमुझाये ॥
नरकासुर द्रोणी के अङ्गा । भा प्रवेश नृप सुनहु प्रसङ्गा ॥
लोहकर्ण तनु कर्ण समानो । यहि प्रकार सब दानव जानो ॥
तेहि अवसर आये सब योधा । दनुज नाम कहि नृपति प्रबोधा ॥
यहिविधिकह्योनृपतिवलधामा । मारि पार्थ जीतव संग्रामा ॥
कृत दानवतनु सकल प्रवेशा । करहु युद्ध नृप तजहु अन्देशा ॥
सुनि नरेश अतिशय सुखपाये । शकुनी बोलि मन्त्र ठहराये ॥
जाय दूत जहँ धर्म्मनरेशा । उनते यहिविधि कह्यो सन्देशा ॥
अवधि साधि तुम कीन्ह प्रकाशा। द्वादश वर्ष करहु वनवासा ॥
यहि विधि भूपति दूत पठावा ।नृपति युधिष्ठिर पै चलिआवा
सहित द्रौपदी पांचो भाई । बैठ देखि यह बात सुनाई ॥

प्रकटे भीतर अवधिमें, फेरि करहु वनवास ।
मिति सो पूरण कीजिये, तव तुम करहु अवास ॥
कहि सब विधि मलमासकौ, समुझायो सो दूत ।
समुझि ताप बैठो तहां, जिमि सुरपुर सुरदूत ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

उत्तरसों कीन्हों मतो, नृप विराट तेहिवार।
दुहिता दीजै अर्ज्जुनहिं, करि विवाहशुभ चार॥
अर्ज्जुन ताहि नृत्य सिखरायो। निशि वासर गुण गान बतायो
सो दुहिता ताको अब दीजै। अब कछु और विचार न कीजै॥
यह कहि भूपति दूत पठायो। अर्ज्जुनते यह वात सुनायो॥
तोहिं सुता नृप अपनी दीन्हीं। हेतु विवाह करन चित लीन्हीं
सुनत पार्थ यह वचन सुनावा। मैं दुहिता सम जानि पढ़ावा॥
वात कहत तोहि लाज न आई। मिथ्या वचन कह्यो दूत आई॥
मो सुतको दुहिता यह दीजै। आनन्दसों यह कारज कीजै॥
यह कहि पार्थ दूत पलटाई। तेहि विराटसों कह्यो बुझाई॥
सो सुनिकै भूपति सुखपायो। बूझि मुहूरत मङ्गल गायो॥
गावत आनन्दसों नर नारी। भूप युधिष्ठिरको दै गारी॥
नैमिषवासिन अवधि विताये। ताही समय धौम्य ऋषि आये॥
करि प्रणाम पाण्डव सब भाई। पकरे चरण द्रौपदी आई॥
समाचार कहि भूप सुनाये। सुनत धौम्यऋषि अतिसुख पाये॥
दूत द्वारका नगरको, पठवहु अति सुखपाय।
वार न लागो वाटमें, कही कृष्णसों जाय॥
दीनानाथ दयालु गुसाईं। कह्यो प्रणाम भूप सब भाई॥
कृपासिन्धु कृत दास सहाई। द्रुपद सुताकी लाज वचाई॥
करी आश प्रहलाद पुकारे। हरी त्रास हरणाकुश मारे॥
कही भूप यह त्रिभुवन राई। सदा रहत तुम मोर सहाई॥

तुम्हरी कृपा विपति भै दूरी। ह्वै दयालु कीन्हीं सुख भूरी॥
अभिमनु व्याह रचो है राजा। आइय यहां समेत समाजा॥
अभिमनुमातु सहित यदुराया। बोलेउ भूप चलिय करि दाया॥
ह्वै दयालु दीन्हीं सुख भारी। करी दूरि प्रभु विपति हमारी॥

करि आये हौ करतहौ, करिहौ सदा सहाइ।
सहितमातु अभिमन्यु लै,आएहि पहुँचौ आइ॥
गये कृष्णभगिनीसहित, लै अभिमनुकहं साथ।
उठे देखि सुख पायकै, धर्म्मसुवन नरनाथ॥
मिलिकै शारङ्गपाणिको, लैआये निज गेह।
अस्तुतिबन्धुनयुतकरत, मनवचक्रम करि नेह॥

द्वौ कर जोरि कृष्णके आगे। करन विनय कुन्तीसुत लागे॥
श्री यदुनन्दन मुनिजनवन्दन। कल्मषहर सबदुष्ट निकन्दन॥
जगतारण खलवदनविदारण। दुखतारण गजराजउधारण॥
जग पावन सन्तनमन भावन। ब्रजछावन गिरिवरनखतावन॥
जनमन रञ्जन भवभयभञ्जन। दनुजनिमर्द्दन भवधनुगञ्जन॥
कंस विनाशन प्रभु गरुड़ासन। यदुवंशी अवतंसप्रकाशन॥
असुरनिवारण मुनिजनपारण। कुञ्जविहारण गणिकातारण॥
जगधर नगधर पीताम्बरधर। हरि दामोदर हलधरसोदर॥
सिन्धु सुतावर श्रीराधाधर। सर्व्वनिवारण सर्व्वदैत्रपर॥
जनकसुताभूषण भवभूषण। सुररिपुदूषण तलतलपूषण॥
भक्तन हितकर हर निशिचारी। शुभगतिकारी भवभयहारी॥

करि अस्तुति श्रीकृष्णकौ. भूपति अतिसुखपाय।
नगर कम्पिला द्रुपदगण, दीन्हों दूत पठाय॥
सुनि सन्देश फूलि हिय गयऊ। द्रुपदनरेश पयानहि कियऊ॥
गजरथ साहन तुरी तुषारा। सबदलयुत वाहन भण्डारा॥
पांचाली सुत पांचौ साथा। पहुंचो पुर विराट नरनाथा॥
विदुर गेहते कुन्ती आई। मिली सुतन अति आनन्द पाई॥
द्रुपदसुता ताके पद वन्दे। सब मिलिकै सब जन आनन्दे॥
वनते वली घटोत्कच आये। निज माताकहं सङ्ग लगाये॥
नगरराज गिरिते चलि आयो। काशिराज भूपति मन भायो॥
जरासन्ध पटनाको राजा। आयो सुतन समेत समाजा॥
शूरसेनकहं दूत पठाये। सुनत सन्देश वेगितहं आये॥
धर्म्मपुत्र तव राजसमाना। विविध अनुज सब बुद्धिनिधाना॥
शुभघटिका शुभ लग्न गणि, शुभ वारहि सो पाइ।
रच्यो व्याह अभिमन्यु को, मङ्गलचार कराइ॥
भावँरि पारथ देखि कृत, पांचौ भाय हुलास।
कर्यो व्याहविधिवतसकल, धौम्यसहितऋषिव्यास॥
दोऊ कुलकी रीतिसों, करि विवाह सुखदानि।
वाजी गज रथ हेममणि, दीन्हों नृप सुखखानि।
भाट भले विरदावलि गावत। सिन्धुर वाजि घने नग पावत॥
नृत्यत गुणी राग वहु साजत। ताल पखाउज आउज वाजत॥
को वरणै सब आनन्द संयुत। वासरहू निशि कौतुक अद्भुत॥

भँवरि परतीं वेदन उच्चरि। दोऊ कुलकी रीति सवै करि॥
तेहि औसर विराट नरनाथा। दयो राखि कुश कन्या हाथा॥
व्यास आदि वेदध्वनि कीन्हीं। स्वस्ति वोलि अर्ज्जुनसुत लीन्हीं॥
विविधभांतिवाजध्वनि माची। जहं तहं वारमुखी वहु नाची॥

अभिमन्यु कहं दीन्हीं सुता, हरषे भूप विराट।
धर्म्मपुत्रसुख पायकै, लसत अनन्दित पाट॥
वोलि मयासुरको रच्यो, सुन्दर सहस वनाय।
नृपतियुधिष्ठिर यों कही, अर्ज्जुन निकट वुलाय॥
सुनि अर्जुन गुणग्राम, मयदानव वोलो तुरत।
धवल सवाँरोधाम, खचि खचि रचि रचि जन्म निज॥

मय दानवकहं पार्थ वुलायो। रचहु धाम यह कहि समुझायो॥
रचहु भवन यहि भांति वनाई। चित विचित्र वरणिनहिं जाई॥
रङ्ग रङ्ग रचि सदन वनाये। हरित पीत मणिश्वेत सुहाये॥
दीसत उज्जल श्वेत अटारी। नील छ्त कमल घटा जनु कारी॥
भूमि त कतहुँ प्रसाद सतुङ्गा। खचितअरुणमणिरचितउतुङ्गा॥
को कवि उपमा तासु वखाने। देखत कौतुक देव भुलाने॥
पद्ममणिन रचि जाल वनाये। भूप रहनहित भवन सुहाये॥
मय दानव यह रचना ठानी। जहँ तह थलह जहातहँपानी॥
लखिय द्वार मन मानि प्रतीती। करत प्रवेश मिलत तहँ भीती॥
देखिय तहां उतङ्ग देवाला। रच्यो तहां शुभद्वार विशाला॥

बैठत नित्य सभा जहँ राजा । तेहि देखत ऐरावत लाजा ॥
पुर अन्तर विरच्यो शुचिधामा । तहँ रनिवास केर विश्रामा ॥
वहुत भीर युत नृप दरवारा । को कहि तासु बखानै पारा ॥
हय हींसत सिन्धुर वहु गाजत । निशिवासरदुन्दुभितहँबाजत ॥
बैठे तहँ नृप साज बनाई । कहत वन्दिजन विरद सुनाई ॥

भीम पार्थ सहदेव नकुल, बैठे कृष्ण सुजान ।
पण्डितगण मण्डित रहत, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

सोमवंश नृपधर्म सुत, शोभित शक्र समान ।
चारि वन्धु सरि देवकी, दुष्ट दलन बलवान ॥

अञ्जलि जोरि जोरि युग पानी । कृष्णादेवते विनय बखानी ॥
जहं जहं परी विपति जब भारी । करि सुधि हरी तुरत बनवारी ॥
दया सिन्धु सोइ करिय विचारा । मिलैं वेगि जेहि देश हमारा ॥
अह हरि हरहु अशेष कलेशा । करहुदूरि प्रभु मोर अन्देशा ॥
अन्धपुत्र कीन्हों अपकारा । कपट द्यूत करि मोहिं निकारा ॥
धाम धाम गज वाजि छिनाई । लहि सम्पदा सबै कुरुराई ॥
खैंचो चीर दुशासन आनी । कीन्ह न कानि विकल भै रानी ॥
दीनवन्धु कहि द्रुपदकुमारी । राखु राखु वहु वार पुकारी ॥
हम सब बैठि रहे शिर नाई । करि सहाय तुम लाज बचाई ॥

करि आयेहौ करतहौ, सेवक सदा सहाय
करौ वन्दना कृष्णको, धर्मपुत्र भुवराय ॥
द्वौ करजोरि भूप अनुरागे। करत विनय कमलापति आगे ॥
कच्छप वपुधरि सागर थाहन । मत्स्यरूप शङ्खासुर दाहन ॥
वन्दन मुनिजन सनक सनन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
शूकररूप रदनधरणीधर । खल हिरण्याक्षहि पतितप्राणहर ॥
भूतल खल दल दुष्ट निकन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
नरहिततनु प्रहलाद उबारण । हिरण्यकशिपुनखउदरविदारण ॥
सेवक कष्ट हरण जगवन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
छलि बलि बान्धि पतालपठावन । वामन वपुधरि भूतल आवन
काटत सब माया दुख द्वन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
परशुपाणि क्षत्री मद नाशन । रघुकुलकमलदिनेशप्रकाशन ॥
रामचन्द्र दशरथ कुलनन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
कंस कुटिल असुरन भयकारी । केशीमर्दन अजिर विहारी ॥
पीत वसन तनु चर्चितचन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
बोधरूप धरणीपर धरिहौ । कलकी ह्वै दुष्टन संहरिहौ ॥
यह कहि नृपति कीन्ह पदवन्दन । जयजयजयतुमजययदुनन्दन ॥
विनय मानिके करि कृपा, दुर्योधनपहंजाव ।
समुझायो बहु विधि उन्हे, बचै गो तनुको दाव ॥
बिहंसि कृष्ण तबहीं उठिधाये । नगर हस्तिनापुर चलि आये ॥
सुनि कुरुनन्दन अनुज पठाये । सभामध्य लै कृष्णहि आये ॥

कह नरेश कित चरण चलायो। विहंसि कृष्ण तब वचन सुनायो
धर्म्मराज तुम पास पठाये। गोतविरोधन मेटन आये॥
भूपति जगमें यह यश लीजै। आधौ देश बांटिकै दीजै॥
आपन कुलहि कलङ्क लगावहु। कलह गोतको भूप बचावहु॥
दुर्योधन बोल्यो अकुलाई। कैसे सकहुं कलेश बचाई॥
देश बांटि जो उनको देहैं। योगी ह्वै कपाल हम लेहैं॥
भूप बांटि कृत मोपै पावैं। जो वे नभ भूतल फिरि आवैं॥
कृष्ण कह्यो सुनि मोर निहोरा। मानहु वचन होहि यश तोरा॥
और भूमि जनि भूपति देहू। पांच ग्राम दीजै करि नेहू॥

अर्कस्थल नरकस्थली, एकचक्र पुनि देहु।
नगरवरुण अरु हस्तिपुर, और देश तुमलेहु॥
सुई अग्र जितनी उठै, सोकहि कबहुं न देइं।
पुनि पीछे भुव भाव करि, प्रथमयुद्धकरि लेइं॥

तुमहिं कहत यह कैसो आवत। जियत मोहिंधरणी को पावत॥
सुनि हरिवचन जरत सबगाता॥ जियत सुनी यह अद्भुतबाता॥
दुर्योधन मुख वचन अलीका। सुनि बोल्यो यादवकुलटीका॥
ऐसी बात कहौ जनि सपने। कुरुपतिव्याधि लेत शिर अपने॥
पाण्डव से तुम नहिं बरिऐहौ। फिरि नरेश पाछे पछितैहौ॥
भूपति देखु हियेमहं बूझौ। तुमकहं अबहिं परत नहिंसूझौ॥
मिटि जैहै तुम्हार यह तेहौ। भूप भूमि देहौ तुम देहौ॥

वचन सुनायो
इहि कोपि गदा जब पानी । गाजिहि भीमसेन रण आनी ॥
क सुनत कुरुदल भहराई । जिमि विग देखि भेड़ समुदाई ॥
र्जुन कोपि धनुष जब धरिहैं । कौरव मारि प्रलय करि डरिहैं ॥
ार्थ वाण सहि सकै न कोई । नरकिन देव दैत्य जिन होई ॥
लेकर खड़्ग नकुल बलधामा । अवगाहहि सागर संग्रामा ॥
सहदेव युद्ध जुरे कर क्रोधा । तुव दल रोकि सकैको योधा ॥
कुलको कलहन त्यागिहि कोही । ऐसो भाव तजै अव तोही ॥
छांड़त मान न बात अनैसी । है तुम्हरे मनमहं न्टप कैसी ॥

पार्थध्वजापर बैठिकै, गरजै पवनकुमार ।
धर्म्मराजके धर्म्मते, होइहि नाश तुम्हार ॥
रुष्ण उठे यह वचन कहि, तिनको यह समुझाय ।
भावी सो कैसे मिटै, को करि सकै वचाय ॥
नगर हस्तिनापुर तबै, कुन्ती पहुंची जाय ।
समाचार श्रीकृष्णजू, सकल कह्यो समुझाय ॥
दुर्योधन मति परिहरो, देत न पाँचौ ग्राम ॥
देवेको कहु का चलो, श्रवण सुनत नहि नाम ॥

दुर्योधन उर वाढ़ो गर्वा । कहत जीतिहौं भारत सर्वा ॥
सो सुनि कुन्ती अति दुखपावा।हरिढ़िग देखिनयन जलछावा॥
मो सम जगत दुखी नहि कोई । भयो न है आगे नहि होई ॥
कुन्ती दुखित देखि यदुराई । कहि हरिचन्द्रकथा समुझाई ॥
भे हरिचन्द्र अवध रजधानी । धर्म्मरूप मदनावति रानी ॥

रोहिताश्व सुत भयो कुमारा । जनु ऋतुराज लीन्ह अवतारा ॥
एकछत्र वसुधा नृप केरी । ऋधिसिधि रहै भवन जिमिचेरी ॥
निन्नानवे यज्ञ नृप कीन्हा । सवई करन हेतु चित दीन्हा ॥
यह नरेश मन मनसा आई । करि शत यज्ञ होहुँ सुरराई ॥
सो सुधि सुनासीर कहुँ पाई । भै शङ्का मुख गा कुम्हिलाई ॥
उर न चैन अति भयो अँदेशा । गाधिसुवनपहं गयो सुरेशा ॥

विश्वामित्रहि सो कही, सुरपति विपति सुनाय ।
राखो चहो जो इन्द्रपद, तौ कछु करौ उपाय ॥

करै जो यज्ञ सिद्धि हरिचन्दा । लेइ इन्द्रपद सुनहु मुनिन्दा ॥
करिय उपाय महामुनि सोई । जाते यज्ञ सिद्धि नहिं होई ॥
क्रतु अवधेश उपद्रव दावा । जो मुनीश तुम चहौ बचावा ॥
सत्य हीन हरिचन्द्र नरेशा । करहु मोर तब मिटै अन्देशा ॥
सो सुनि गाधिसुवन सुखपायो । हँसि सुरेश ने वचन सुनायो॥
यदपि न हमहिं उचित सुन राजा ।करिय अकारणहिंपरअपकाजा
तुम आगमन परो स्वहिं भारा । करव शक्र हम काज तुम्हारा ॥
सो उपाय हम करव सुरेशा । जाते नशै तुम्हार कलेशा ॥

सत्यहीन हरिचन्द्र करि, करौं तुम्हारो काज ।
इन्द्रपुरी का अवधको, तुरत छुड़ावों राज ॥

यहि प्रकार शक्रहि मुनि वोधा । विदा कीन्ह बहुभांति प्रबोधा॥
पुनि वराह वपु आपु वनाये । कौशिक अवधपुरी चलि आये॥
गयो वराह नृपति फुलवारी । दल फलफूल अशन कलमारी ॥

दशन घात सब वृक्ष ढहाये । सरवर पैठि जलज सब खाये ॥
पुरइनि तोरि मिलायो कीचा । अति रव करि गर्जा सरवोचा॥
मालाकार भूप सन जाई । समाचार सब कहेउ बुझाई ॥
महाराज यक आव वराहू । मूरतिवन्त सोह जनु राहू ॥
त्यहि सब उपवनकीन्ह उजारी । खनि तड़ाग काँदो करिडारी
सुनि महीप पुनि रिस उपजाई । चल्यो तुरंगचढ़ि दल अधिकाई
लै नरेश संग सुभट अनेका । चहुं दिशि जाय वाटिका छेका॥
तव नरेश कह भुजा उठाई । सुनहु श्रवण दै भटसमुदाई ॥
ज्यहिदिशिजाइ निकरि वाराहा । त्यहि जारौं तनु तेज कराहा॥
पुनि वराह मन विस्मय आई । निकस्यो निकट भूपके जाई ॥

जाको दिशि ह्वै मैं कढ़ौं, करैं भूप तेहि दाह ।
यह विचारकैन्टप निकट, निकरो आइ वराह ॥

मारन चल्यौ भूप शर साजी । चल्यौ वराह मरुतगति भाजी ॥
तव नरेश करि चपल तुरङ्गा । गयो अकेल न दूसर सङ्गा ॥
परस गहन द्विज रूप वनाई । दीन अशीष मुनीश्वर आई ॥
न्टपति विलोकि अचम्भव माना।करि प्रणाम यह वचन वखाना
पूरण मोरि भाग्य मुनिराया । दीन्हों दरश कीन्ह वड़ि दाया ॥
यह सुनि मुनि वोल्योमुसक्याता ।आयों तुमहि श्रवण सुनि दाता॥
पूरण करहु मनोरथ मोरा । वाढ़ै सुयश जगत न्टप तोरा ॥
कह न्टप अस भाषौ जनि भोरे । तुमकहँ कछु अदेय नहि मोरे॥
वार वार मुनि वचन दृढ़ाई । न्टपसन विप्रशपथ करवाई ॥

मांगो राजपाट भण्डारा। तापर और कनक सौ भारा॥
देन कह्यो नृप पुर जब आये। गाधिराज सुत सङ्ग लगाये॥

दीन्ह नरेश मुनीशकहं, राज पाट भण्डार।
विहँसि गाधिसुत तब कही, स्वर्ण देहु सौभार॥

जो नहिं राय देहु तुम मोरा। नाशै सकल सत्य नृप तोरा॥
कह नरेश मैं सर्व्वसु दयऊ। रानी तनय मोर तनु रह्यऊ॥
कह हरिचन्द्रवचन कुल हानी। लीजै वेंचि मुनीश्वर ज्ञानी॥
गाधिसुवन सुनि अतिसुखपाये। लै निज सङ्ग बनारस आये॥
सात दिवस मग अन्न न पानी। कीन्हीं नृप न नेक अरु रानी॥
अठयें दिवस गङ्गके तीरा। चहत पान जलविकल शरीरा॥
तब द्विज कहेउ नरेश सुनाई। विना कनक जो तू जल खाई॥
होइहि सत्य धर्म्म तुव छारा। फिर न प्रतिग्रह करब तुम्हारा॥
सुनि नरेश मन अतिदुख पाये। बैठि गङ्गतट शीश नवाये॥

रोहिताश्व अति तृषित है, तब थरहरो शरीर।
मूर्च्छि परे तनु विकल अति, जन्हसुताके तीर॥

करत विलाप विकल अति रानी। अञ्जल बोरि लिआई पानी॥
तब द्विज इमि रानीते बोल्यो। जाना सत्य धर्म्म तुव डोल्यो॥
स्वर्ण दिये विन जल सुखदारा। कुँवर वदन गा धर्म्म तुम्हारा॥
सुनि रानी मन अति दुख व्यापा। बैठि गङ्ग तट करत विलापा॥
रवित्राकर्ष जप्यो मुनि राई। बारह कला तपे रवि आई॥
भयो तेज कछु वरणि न जाई। रानी नृपति गिरेउ मुरझाई॥

विनय कीन्ह नृप बारहिंबारा। तुमते प्रकटयो वंश हमारा॥
सो तुम दया छाड़ि प्रभु दयऊ।सुनि नरेश प्रभु शीतल भयऊ॥
कृपादृष्टि,देख्यो नृप रानी। सहित कुँवर तनु ताप बुझानी॥
रविप्रसाद तनु अतिबल भयऊ।क्षुधा पियास तास मिटि गयऊ॥
तब मुनि संग नरेश लवाई। बैठि राजमारगमहँ आई॥
बोलि सवनते वचन सुनाये। विक्रय हेतु मनुज हम लाये॥

सबहिं सुनाय मुनीश पुनि, कहि इमि बारहि बार।
तीनि मनुजको मोल हम, स्वर्ण लेहिं सै भार॥

रानिहि निरखि रूप अधिकाई। सुनि माता वेश्या तहं आई॥
मोल करनको कीन्ह प्रचारा। कह ऋषि कनक अर्द्ध सौ भारा॥
भार पचास स्वर्ण म्वहि दीजै। बालक सहित बाम यह लीजै॥
दीन्ह हिरण्य अर्द्ध सौ भारा। रानि सहित लै चली कुमारा॥
वेश्या ते कर जोरि सयानी। बोली वचन दीन ह्वै रानी॥
लीन मोल तुम जीव-हमारा। कौन काज हम करब तुम्हारा॥
गणिकै कह्यो रानि ते बानी। कारज सुनहु हमार सयानी॥
नाचि गाय जग पुरुष रिझाई। दान पाइ जीविका चलाई॥

पर पुरुषनते प्रीति करि, द्रव्य लाइये धाम।
हावभावकरि मनहरिय, कौन होय दुग काम॥

सुनि रानी मन भयो अन्देशा। मनमा सुमिरेउ देव दिनेशा॥
तुव कुलकी कुलवधू कहाई। गई लाग मैं जगत हसाई॥
रहै धर्म्म स्वइ करिय उपाई। हे दयालु प्रभु करिय सहाई॥

रवि मण्डलते वहु कपि आये। वारमुखिनकहँ त्रास दिखाये॥
गणिकन विकल विप्रसन जाई। कथा अलौकिक सकल सुनाई॥
त्यागो जो लिय द्रव्य हमारा। तुम यह लेहु पुत्र अरु दारा॥
वारमुखी इमि वचन सुनाये। सत्यकेतु द्विजतहं चलि आये॥
तिन तव बूझेउ सकल प्रसङ्गा। सुनि दुख लह्यो महामुनि अङ्गा॥
कनक मँगाय दीन्ह मुनि ज्ञानी। वेश्यनते लीन्हों सुत रानी॥

कन्या करि राखी भवन, करि सनेह मुनिराय।
द्विजपत्नीकहँ प्रीति करि, अधिक अधिक सरसाय॥

नृपकहं लीन्हों मोल चण्डारा। दीन्हों कनक अर्द्ध सो भारा॥
कालसेनरह त्यहि का नाऊं। लै हरिचन्द्रहिं गा निज ठाऊं॥
कही दानवी सकल कहानी। सौंप्यो नृपकहं घाट मशानी॥
तहां मृतक जो नर लै आवै। विनादण्ड क्रतिकरन न पावै॥
मुद्रा पञ्च वसन युग देई। मरन देइ क्रति जव लै लेई॥
मिलै दण्ड सो लै नृप धीरा। घट भरि लेइ गङ्गको नीरा॥
नित प्रति कालसेनके आगे। धरैं जाय नृप अति अनुरागे॥
कह्यो नाम नृपसन त्यहि वागा।सुनि सुमहीपति पाँयन लागा॥
सुनु स्वामी हरि याम मनाऊं। मोरे कतहुँ गाँव नहिं ठाऊं॥
यहि विधि ताहि भूप समुझाई। पहुँचो प्रात घाट सो आई॥

यहि विधि वीते कछु दिवस, सुनि है सर्प कराल।
डस्यो आनि पुनि नृप तनय, प्राण तजे ततकाल॥

सत्यकेतु कुश समिध हित, वनकहँ कीन्ह पयान ।
द्विज तरुणी ता त्तण गई, करन गङ्ग असनान ॥

रानी निरखि शोच उपजावा । करत विलाप दुसह दुखपावा ॥
अर्द्ध वसनते कुँवर ओढ़ाये । अर्द्ध वसन निजदेह छिपाये ॥
लैगइ तुरत गङ्गके तीरा । रुदन करत अति विकल शरीरा ॥
चाहत जल डारौं त्यहि काला । आयो भूप रूप चण्डाला ॥
लखि मृदु कुँवर नयनजल मोचे।भयो दुसहदुख न्टप अतिशोचे
स्वामिभक्ति सुधि भूपहि आई । तव रानीकहँ कह्यो रिसाई ॥

निठुर वचन बोल्यो तवहिं, रानीसों नरनाह ।
दण्ड दिये विनु जनि मृतक, कीजै सरित प्रवाह ॥

कह रानी गे भूलि भुवारा । रोहिताश्व यह तनय तुम्हारा ॥
अस कहि कीन विलाप कलापा। बोल्यो न्टपति सहित परितापा॥
मैं हौं कालसेनको दासा । छांड़ि देहु मनते यह आसा ॥
मुद्रा पञ्च वसन विनु लीन्हें । मानौं मैं न कोटि विधि कीन्हें॥
विप्र पाणि तुम वेंचि वहाई । अब न्टप द्रव्य कहां हम पाई ॥
वसन कुँवरको लेहु उतारी । लेहु वेंचि मम आज्ञिप मारी ॥
सुनि नरेश कहं क्रोध न दुखा । पकरि केश बांध्यो लै खम्भा ॥
मारन चल्यो खड्ग गहि पाणी । तव यह भई गगनकहँ वाणी ॥

सत राख्यो [illegible], [illegible] ।
क्लेश तजो [illegible] हरिचन्द ॥

अस कहि प्रकट [illegible] प अस वचन बखाना॥

परे चरण नृप कण्ठ लगाये । रानीके बन्धन छुटवाये ॥
ह्वै प्रसन्न तव श्रीभगवाना । भूपति कहँ दीन्हों वरदाना ॥
अव नृप करहु अवधपुरवासा । अन्तकाल आयहु ममपासा ॥
करी कृपा हरि कुँवर जियाई । अन्तर आप भये सुरराई ॥
प्रभुकी कृपा नगर निज आये । अचल राज्य माता उन पाये ॥
नहिं उनके दुखको कछु छोरा । तिन देखत केतिक दुख तोरा ॥
शिव प्रसाद मिटि जैहै सोई । धीरज धरहु नीक अव होई ॥
यहि प्रकार कुन्ती समुझाई । विदुर भवन गे सङ्ग लिवाई ॥
करि भोजन तहँ शारंगपानी । कीन्ह शयन सब राति सेरानी ॥

प्रात होत श्रीकृष्णजू, दुर्योधन के पास ।
गये फेरि हितसों सुबुधि, कीन्हें वचन प्रकास ॥
कहो हमारो कीजिये, पांच ग्राम दै देहु ।
वन्धु एकसो पांचसों, निशि दिन बढ़ै सनेहु ॥
दुर्योधन नृप कृष्णके, वचन सुने तेहि काल ।
प्रतिउत्तर हरिसों कह्यो, भये विलोचन लाल ॥
नित हरि शालै शाल हरि, कितहि शलावत आनि ।
करौं अपाण्डव भूमि सब, धरौं न कुलकी कानि ॥

सो सुनि वचन कृष्ण नहिं भाये । ह्वै सक्रोध यहि भाँति सुनाये
कोपि भीम रणमें दल गाजहिं । सुनत नाद कौरवदल भाजहिं ॥
देखि गदायुत पवनकुमारा । को तापर डारै हथियारा ॥
सहदेव नकुल रु पाण्डुकुमारा । तासम सकल कौन संसारा ॥

जब कोपहि लै पाणि पिनाका । धीर न रहै सुनत रण हांका ॥
समुझत नहीं वचन सुनि मूढ़ा । परत सूझि नहिं गर्व्व अरूढ़ा ॥
अबहिं न आवत चेत अभागे । समुझहि नीच मूढ़महँ लागे ॥

बोले शकुनि सरोष ह्वे, कही नृपति सों जाय ।
कौन कानि याकी करौ, बाँधिलेहु सुख पाय ॥
दुख पायो भीषम विदुर, विकल भये सब गात ।
चहत कियो अपमान सब, बनै नहीं कछु बात ॥

भीषम विदुर विकल प्रभु जानी । वदन पसारेउ शारंगपानी ॥
मुख भीतर देखो ब्रह्मण्डा । सम्भ्रम छायो चित्त अखण्डा ॥
देख्यो गगन सूर्य्य शशि तारा । देख्यो भूमि अकाशपतारा ॥
भूधर सरित सिन्धु अरु कानन । देख्यो सुर सुरेश सहसानन ॥
देख्यो शम्भु विरञ्चि मुनीशा । दानव दनुज सृष्टि सब दीशा ॥
कुरु पाण्डव देखे संग्रामा । जहँ तहँ मरेपरे बलधामा ॥
कृप कृतवर्म्मा अश्वत्थामा । कुरुदलमध्य बचो यह सामा ॥
सात्यकि पञ्चबन्धु सुखाता । पाण्डव मध्य बचे ये साता ॥
यहि विधिचरित कृष्णदरशाये । भीषम विदुर चरण शिरनाये ॥

यहि विधि दरशायो चरित, भीषमको जगदीश ।
वचन प्रकाश्यो विदुरसों, हरिपद नायो शीश ॥

खल दुर्योधन मर्म्म न जानत । शिवत्रिभुवनपतिकोनहिंमानत ॥
भूल्यो मूरख नृपता गर्वा । कुलके धर्म्म तजे यहि सर्वा ॥
ह्वै है सोइ जो लिखा करतारा । कह भीषम यह वारहिंवारा ॥

कह मुनि सुनहु मुकुटवरधारी। शोच हरण व सन्तनहितकारी॥
चले कृष्ण नृपको समुझाई। पहुंच्यो धर्मपु मम त्र पहं आई॥
पञ्च बन्धु पद शीश नवाये। बैठि कृष्ण यह बरराच वचन सुनाये॥
सूक्ष्म महि तुमको नहिं देता। उद्यम कीन्हों भ्रडन पा भारत हेता॥
विना युद्ध महि कबहुं न देहै। जो जीतै सोई सख तोरा॥ त्र लैहै॥
वार वार कह बात कन्हाई। विना युद्ध कौने महि पाई॥

वीरभोग है जीति रण, क्रूर तजें कदराय।
अस्त्र गहौ भारत रचो, लीजै सबै बचाय॥
कृष्ण कही सबके मते, मनमानी यह बात।
धर्मराज बन्धुन सहित, भये प्रसन्नित गात॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

इति विराटपर्व्व समाप्त।

उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदा, सौप्तिक, ऐषिक, स्त्री, शान्ति, अश्वमेध, आश्रमवासिक, मूषल और स्वर्गारोहण पर्व्व ।

सबलसिंह चौहान विरचित ।

कलकत्ता ।

३८।२ भवानीचरण दत्त ष्ट्रीट, वङ्गवासी ष्टीम-मेशिन प्रेसमें,
श्रीचरणोदय राय द्वारा मुद्रित और प्रकाशित

शकाब्दा १८२१ ।

मूल्य २॥) रुपया ।

सूचीपत्र।

उद्योग पर्व्व।

भीष्म पर्व्व।

द्रोणपर्व ।

कर्णपर्व ।

शल्यपर्व ।

गदापर्व ।

सौप्तिक पर्व।

ऐषिक पर्व।

स्त्रीपर्व।

शान्तिपर्व।

अश्वमेध पर्व।

सूचीपत्र समाप्त।

सबलसिंह चरित्र।

तुलसीदासके रामायणकी तरह (चाहे भाषा वैसी ललित न हो ।) महाभारतको चौपाई और दोहाबद्ध करनेवाले सबलसिंह चौहान कौन थे? शिवसिंहसरोज देखनेसे दो कवि सबलसिंहका पता लगता है। इनमें एक केवल सबलसिंहके नामसे परिचित थे। इनके बनाये हुए षड्ऋतु बरवै और कालिदास-कृत संस्कृत ऋतुसंहार काव्यका हिन्दी पद्यानुवाद, ये दो ग्रन्थ विद्यमान हैं। इन कवीश्वरके कुल जाति ग्राम और समयका कुछ पता नहीं चलता है। सम्भव है, कि यह भी हिन्दी-कवि-जननी सतरहवीं या अठारहवीं विक्रमशताब्दीमें रहे हों; सम्भव है, कि ये हमारे महाभारतकारके समसामयिक रहे हों। और यह सबलसिंह महाभारतकार सबलसिंहसे भिन्न थे, इसीका क्या प्रमाण है?

इनके बनाये ऋतुसंहारको हमने नहीं देखा है। पर षड्ऋतु-बरवै देखे हैं, उसके दो चार पद्य नीचे लिखते हैं;—

"भावै चन्द न चन्दन सुरभि समीर। भावै सेज सुहावनि बालसतीर। १।

"ऋतु कुसुमाकर आकर विरह विशेखि। ललित लतान सितान बितानहि देखि।

"का बड़ भयेउ सेमरवा! फूलेउ फूल। जो पै श्याम भंवर लखि! नहिं अनुकूल।३।

"जेठ मास सखि! शीतल बरके छांह। करहुं नींद उसिसवां पियके बांह।८।

"पियकर परम सरस अति चन्दन-पङ्क। भावक रजनि सुहावन दरस मयङ्क।१।

"टूटि खाट घर टपकत टटियो टूटि। पियके बांह सिरहनियां सुखके लूटि।९।

जो हो, महाभारतकार सबलसिंहका समय निश्चित होगया है। शिवसिंह सरोजमें इनका रहना संवत् १८२७ के लगभग लिखा है। सभापर्वमें यह स्वयं लिखते हैं;—

"सत्रह सौ सताइस, संवत शुभ मधुमास। नवमी वार गुरु पक्ष सित, भइ यह

कथा प्रकाश।

प्राय: प्रत्येक पर्वमें आपने अपना दिल्लीश्वर औरङ्गजेबके समकालीन होना

लिखा है। हरेक पर्व आपने न्यारे न्यारे समयमें लिखे हैं, सो पढ़नेसेही जान पड़ेगा, कि आप मित्रसेनके वंशधर थे।

यह सबलसिंह क्षत्रिय थे। जिन दिनों भारतमें विधर्म्मियोंके उत्पातसे क्षत्रिय लुप्त होना चाहते थे, उन दिनों अर्बुद गिरिपर एकत्र होकर वसिष्ठादि चार ब्रह्मर्षियोंने होम किया था। उसी अग्निकुण्डमेंसे प्रतिहारी वा परिहार, प्रमार वा पंवार; शुभलङ्क वा सोलङ्की और चतुर्बाहुमान वा चौहान,—ये चार तेजोमय पुरुष उत्पन्न हुए। अग्निवंशी क्षत्रिय सब इन्हीकी सन्तति है। कालक्रमसे ये चार क्षत्रियवंश अगणित शाखाओंमें विभक्त होगये हैं। इनकी कीर्त्ति हिन्दु-इतिहाससे कभी लुप्त होनेकी नहीं। हमारे सबलसिंह कौन चौहान थे,—और कहां रहते थे, सो कुछ मालम नहीं।

कोई कोई कहते हैं, ये चन्द्रगढ़के राजा थे। पर इस भारतवर्षमें चन्द्रगढ़ कई हैं,—कौनसे चन्द्रगढ़के राजसिंहासनको आपने भूषित किया था, तिसका पता कुछ नहीं। कतिपय लोगोंका मत है, आप सबलगढ़के नरेश थे। पर सबलगढ़ भी कई हैं। अनेक लोग कहते हैं, कि गवालियर-अन्तर्गत सबलगढ़ आपहीका बसाया हुआ है बहुतेरे अनुसन्धित्सु लोग कहते हैं, कि आपके वंशधर लोग अवध-हरदोई जिलेमें अबतक विद्यमान हैं; लेकिन उन अनुसन्धानकारियोंने अबतक इसका कुछ प्रमाण नहीं दिया हैं। शिवसिंह-सरोजकार स्वयं लिखते हैं, कि इन सब लोगोंकी बात झूठी है; सबलसिंह इटावे जिलेके किसी गांवके जमीन्दार थे। दुःखका विषय है, कि शिवसिंह सरोजकारने इसको किसी प्रमाणसे पक्का नहीं किया।

एक प्रश्न और विद्वन्मण्डलीमें उठ रहा है,—सबलसिंह जीने सम्पूर्ण महाभारतका मर्मानुवाद किया वा केवल कुछ पर्वोंका? शिवसिंहसरोजकार लिखते हैं, आपने महाभारतके २४ हजार श्लोकोंका उल्था किया। ये २४ हजार श्लोक स्थूल विषयमें चुन वा आदिसे लेकर जहांतक २४ हजार श्लोक हों वहांतक छायानुवाद करते गये अथवा अपने उल्थेकी संख्याका परिमाण २४ हजार श्लोक

बांधा ? "शिवसिंहसरोज" कार आगे चलकर लिखते हैं, कि सबलसिंहने महाभारतके सिर्फ दश पर्वोंको हिन्दीमें लिखा "शिवसिंहसरोज" कार ही कहते हैं, कि सबल सिंह जीने एक सूचीपत्र भी लिखा है। अगर यह सूचीपत्र मिल जाता, तो आज सबल सिंहकी कवितापर इतना झगड़ा न रहता।

सबल सिंहकी कविता पढ़ने हीसे मालूम होता है, उन्होंने बिलकुल तुलसीदासजीकी नकल की है। मानो भाषाके वाल्मीकिने हिन्दीभाषाके वाल्मीकिका अनुसरण किया है। यहांतक, कि कहीं कहीं दोनोंकी चौपाइयां मिल गई हैं। भाषामें पूर्वीपन ज्यादा रहनेसे हम इन्हें पूर्वका ही समझ लेते, पर जब देखते हैं, कि तुलसीदासका अनुसरणकारी चाहे पश्चिमका भी हो—तोभी उसे वहीं भाषा लिखनी पड़ती है! इसी लिये हम कुछ निर्णय नहीं कर सके। अबतक सबलसिंहके महाभारत दो जगह छप चुके हैं। एक लखनऊके नवलकिशोर प्रेसमें और दूसरा श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेसमें। वे दोनो "मक्षिका स्थाने मक्षिका" हैं। इस लिपिप्रमादको दूर करनेके लिये हमने नाना स्थानोंसे नाना हस्तलिखित पुस्तकें मंगाई। बहुतेरे लोगोंने अपनी पुस्तकें भेजते समय यह भी कहा, "हमारी पोथी ठीक सबलसिंहकी लिखी वा लिखाई हुई है।" पर लिपिका मिलान करनेसे यह बात बिलकुल कच्ची निकली। एकाध सज्जनकी पोथी दो सौ वर्षसे ऊपरकी है, पर लिपिप्रमादसे यह भी खाली नहीं है। इन सब बातोंके अतिरिक्त—एक और बड़ा झंझट है। किसी पुस्तकमें कुछ कथा है, किसीमें कुछ; किसी पुस्तकमें भिन्न चौपाई दोहे है; किसीमें भिन्न। हमलोगोंने इन सब बातोंका मिलान करके ठौर ठौरपर नई नई कथायें सन्निवेशित की हैं। हमारा उद्देश्य यही है, कि कविकुल चूड़ामणि सबलसिंहने हिन्दी-पाठकोंका जो उपकार किया है, उसको सहजमें सबकी समझमें आ जाये। ठौर ठौरपर हमने पाठ भेद दे कर अनेक पाठोंको शुद्ध भी किया है। आशा है, पाठकगण इससे सन्तुष्ट होंगे। यदि कविवर सबल सिंह चौहानके जीवनचरित विषयमें कोई महाशय अधिक कुछ जानते हों, तो कृपा कर लिखें। हम बहुत अनुगृहीत होंगे।

हिडम्ब वध ।

अर्जुनका पशुपत अस्त्र दान।

अर्जुन और उर्वसी।
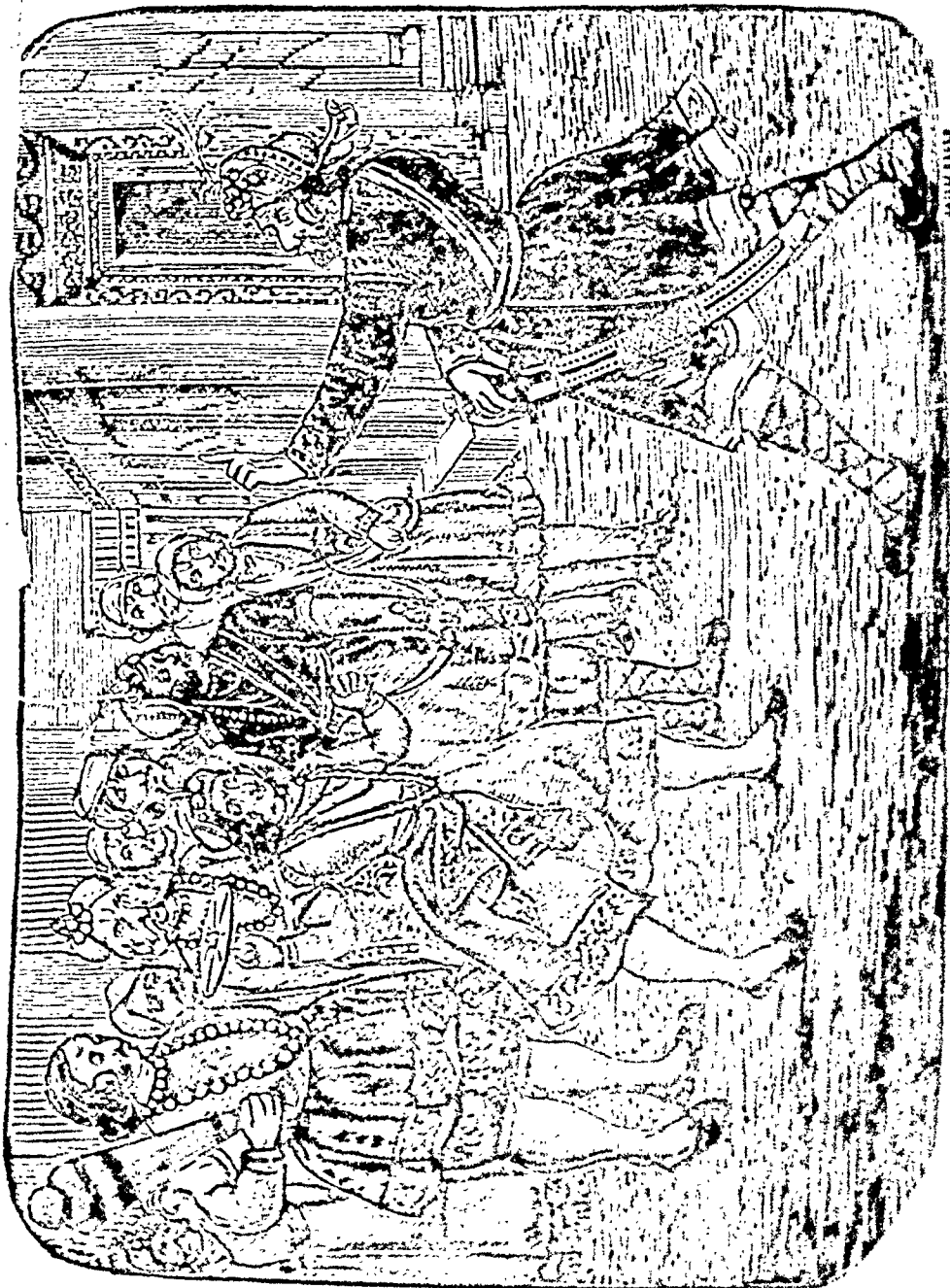
भीष्मपर भगवानका चक्र।

एकलव्य की गुरुदक्षिणा

द्रौपदीका केशाकर्षण। १७१

गीताका उपदेश।

दुःशासनका रक्तपान। ७०१
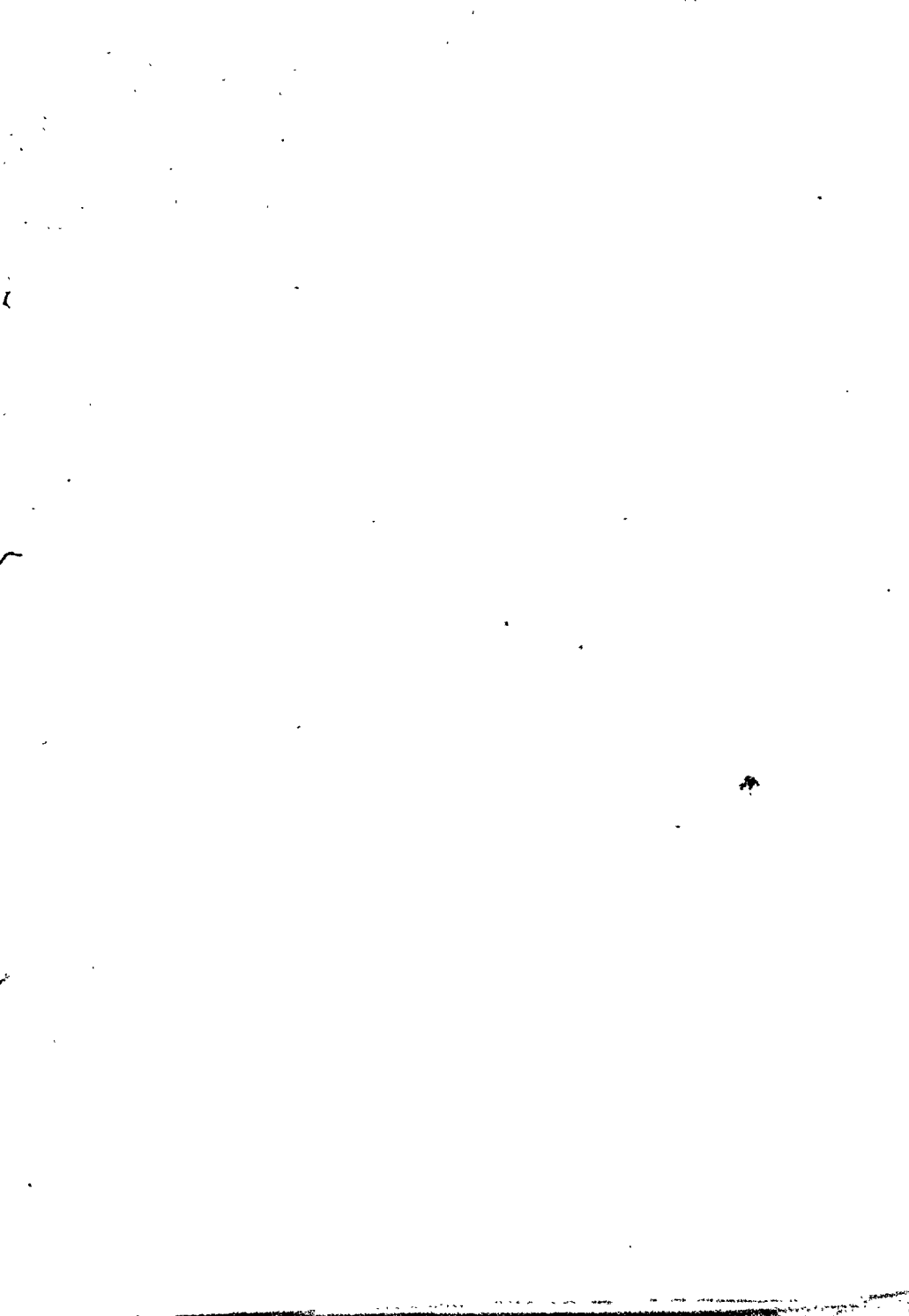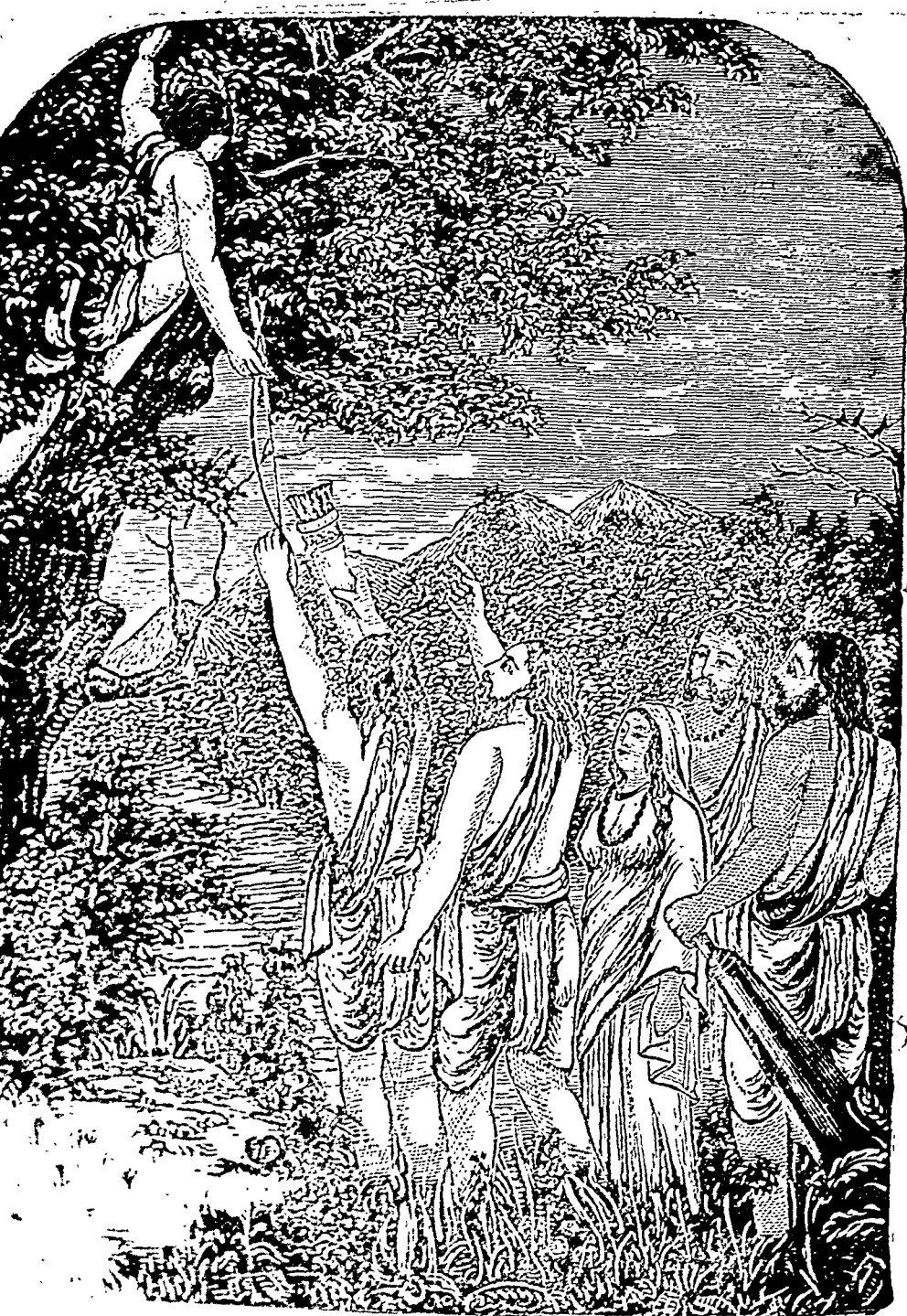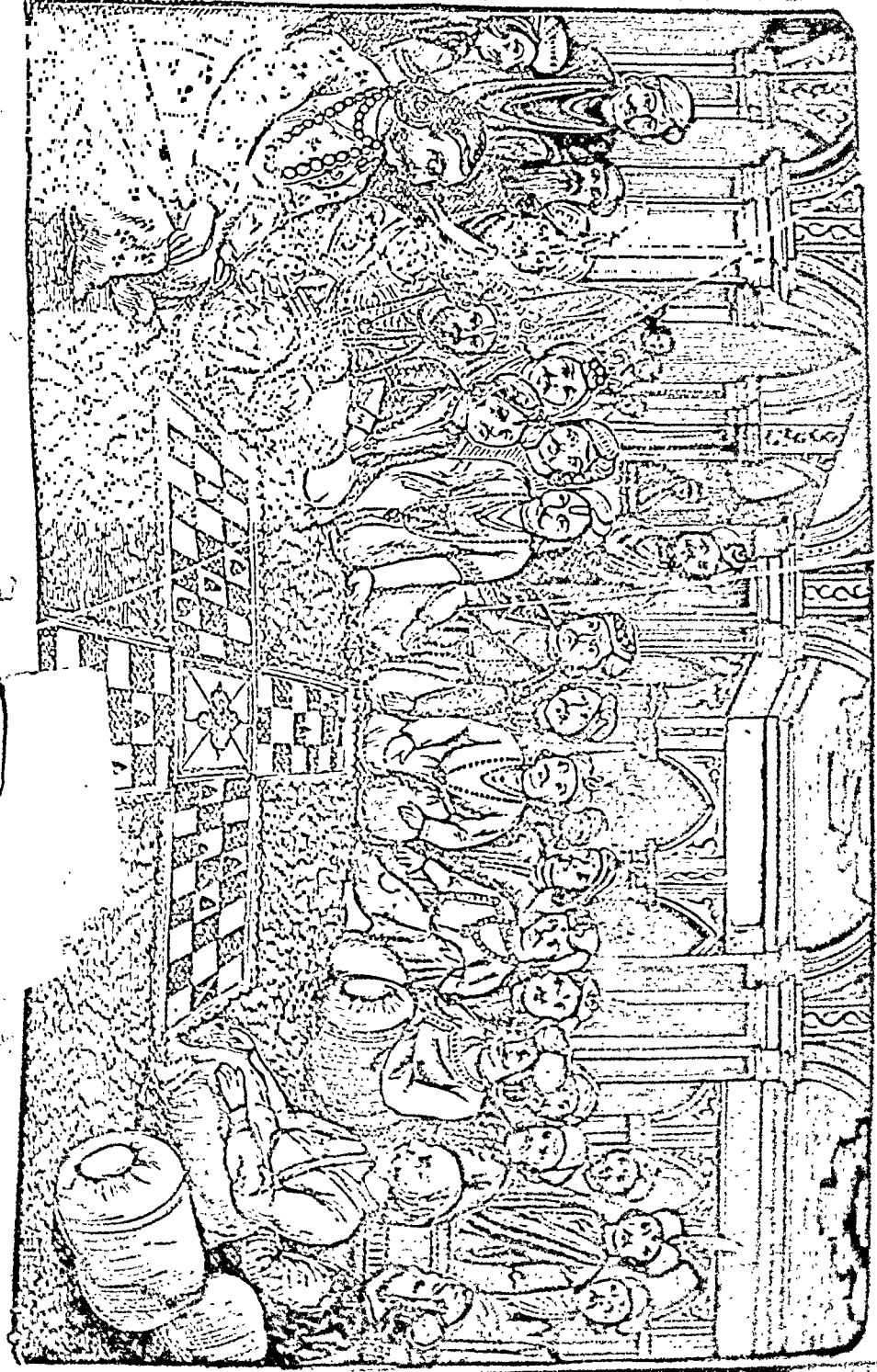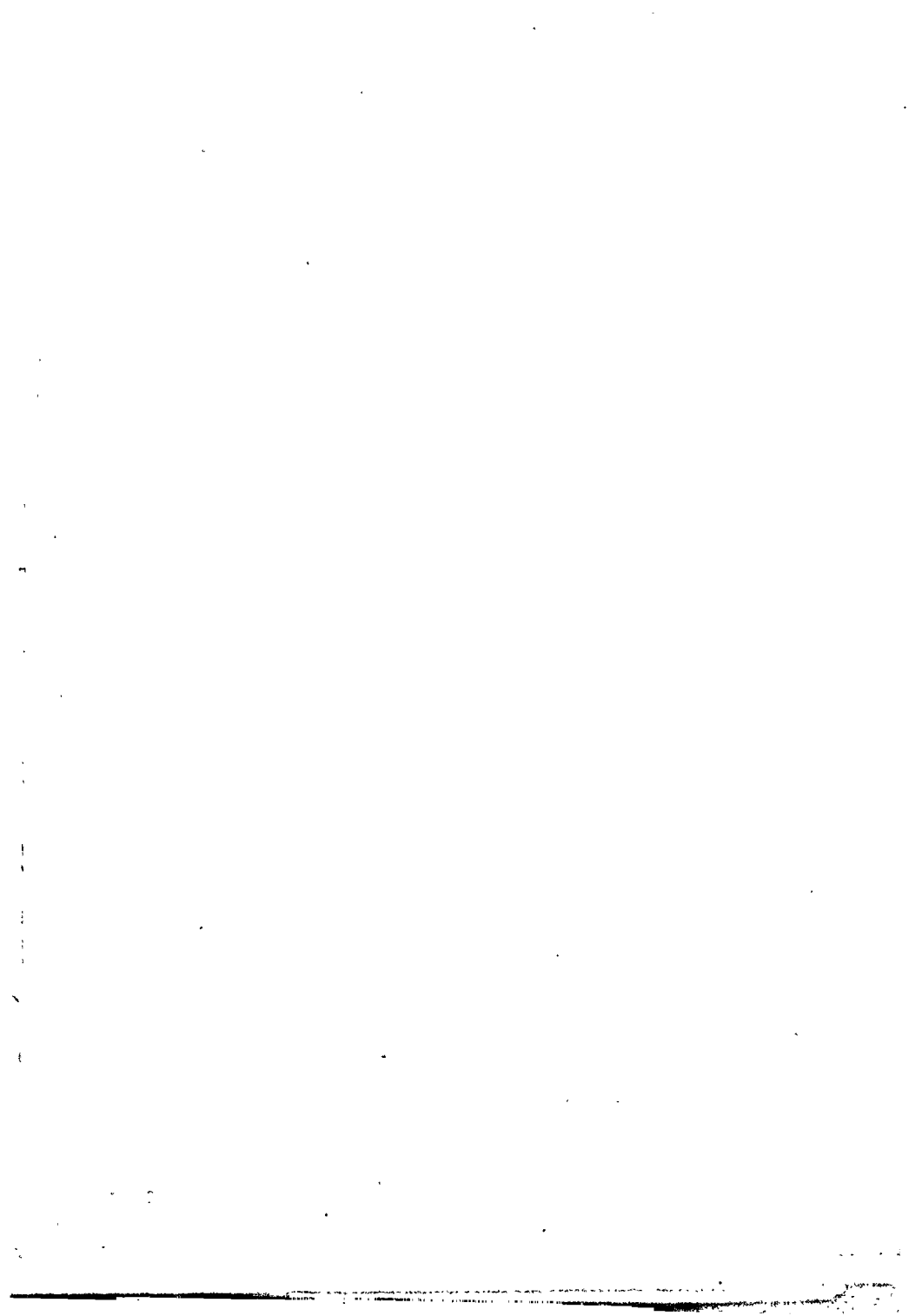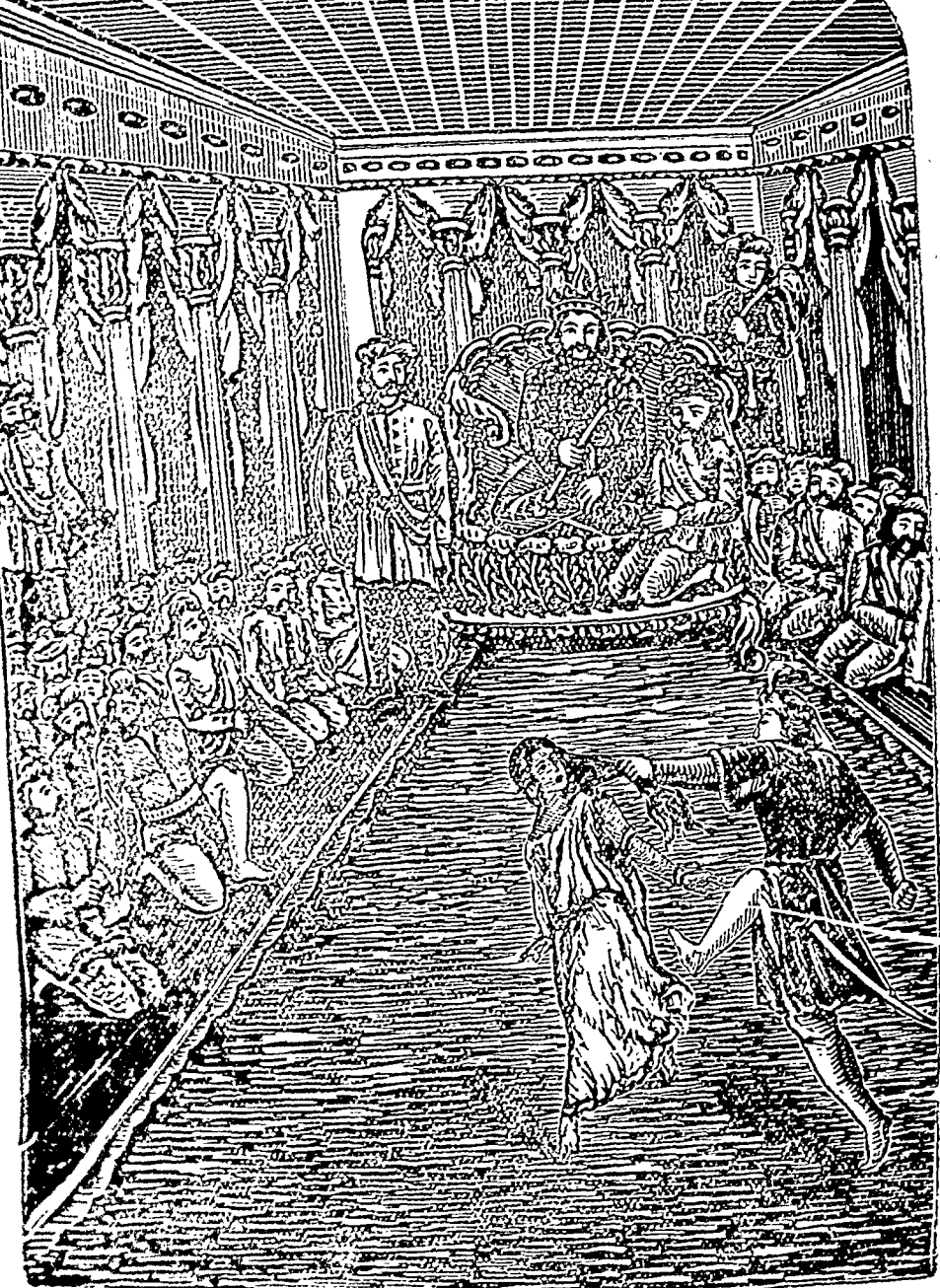
महाभारत।

उद्योग पर्व्व।

विधि हरि हर गणपति गिरा, सुरमुख पाइ नियोग।
सबलसिंह चौहान कहि, भणत पर्व्व उद्योग॥

ह ऋषिराइ सुनहु कुरुकेतू। कथा सुभग सुद मङ्गल हेतू॥
व हरि धर्म्मराज पहँ आये। मिलत हृदय अति आनंद छाये॥
हे चरण भीमादिक भाई। बैठे अति प्रसन्न यदुराई॥
व सुधि पाइ विराट भुवारा। आये सभा सहित परिवारा॥
त्तर सखा कुँवर दोउ साथा। आइ चरण परशे यदुनाथा॥
ठे भूप मिलि भये सुखारे। गहि भुज निज समीप बैठारे॥
तन समेत द्रुपद महाराजा। धृष्टकेतु त्यहि सभा विराजा॥

काशिराज बैठे सभा, शूरसेन नरनाह।
जरासन्धसुतसात्यकी, नृप सब सहितउछाह॥

ञ्चाली सुत पांचौ वीरा। घटोत्कच्छ अभिमन्यु रणधीरा॥
रि समीप बैठे नरनाथा। अर्जुन भीम यमल युगसाथा॥

प्रद्य म्नरु अनिरुद्ध कुमारा । जाम्ववती सुत साम्ब जुझारा ॥
बैठे यादव द्वादश जाती । सव परिवार पुत्र अरु नाती ।
बैठे सत्र नृप सखा सुखारी । भोज वृष्णि अन्धकगण भारी ॥
हरि समीप हल मूशलवारे । आसव पिये नयन रतनारे ॥
नील निचोल अभूषण साजे । प्रभुके दक्षिण ओर विराजे ॥
जाकहँ शेष कहै संसारा । सो वलभद्र सहै जगभारा ॥
औरो देश देशके राजा । जुरे आनि तहँ सकल समाजा ॥

भूपवामदिशि द्रौपदी, भूषण वसन उदोत ।
मनहु प्रभाकरको सभा, जगर मगर द्युति होत ॥

केहरिकटि मृगशावकनयनी । वोली विहँसि वचनपिकवयनी ॥
दूर्योधन गृह भूप पठाये । कारज सकल नाथ करि आये ॥
कह हरि वह एकोनहि मानहि ।तृणसमानतिहु लोकहि जानहि
कहे वचन हँसि शारंपानी । विनायुद्धमहि मिलिहि न रानी॥
सो सुनि धर्मराज दुख पायउ । वासुदेवते विनय सुनायउ ॥
मानत सो न कुमारगगामी । अव उपाय कीजे का स्वामी ॥
कही विहँसि तव शारंगपानी । सुनहु नरेश प्रेम सज्ञानी ॥
वैठे द्रुपद विराट भुवारा । पूंछि मन्त्र तस करहु प्रचारा ॥
जस कछु मतो कहैं सव लोगा । कहेउ कृष्ण तस करियनियोगा॥

वुद्धि वहिक्रम वृद्ध शुचि, ज्ञानवान पञ्चाल ।
धर्मेश नवलनृप कहै, करिय यतन ततकाल ॥

श्रेष्ठ वरिष्ठ भूप सब लायक। पितु समान तुम्हरे हितदायक॥
इनहिं पूंछि करिहौ जो काजा। होइहि सकल मनोरथ राजा॥
पूंछो बैठि विराट भुवारा। इनते को हित चहत तुम्हारा॥
द्रुपद विराट कही यह बानी। सब जानत प्रभु अन्तरय्यांमी॥
अब प्रभु और न करहु विचारा। आयुध बांधि होहु असवारा॥
कोटिन विधि प्रभु यतन विचारै। मिले न महि कौरव विन मारै
सुनि यह वचन सात्यकी बोला। कहे नाथ इन वचन अमोला॥
मन हमार सुनि पावन वारी। जले जियत कुरुपति अपकारी॥

तवलगकुशल न पाण्डुसुत, सुनिये दीनदयाल।
जवलग दुर्योधन जियत, ग्रसत न वाकहँ काल॥

आज्ञा नाथ मोहिं अब दीजै। मरे सकल कौरव सुनि लीजै॥
पारथते धनुविद्या पाई। कीन्ह निपुन सब अस्त्र पढ़ाई॥
यहि विधि रण जीतौं यदुनायक। कौरव निधन करनके लायक॥
सुनत वचन हलधरहि न भाये। क्रोधित नयन अरुण होइ आये॥
मोहिं न भावत मन्त्र तुम्हारो। चहत सकल मिलि खेल विगारो
धृतराष्ट्रके छोटे भ्राता। जानहु पाण्डु जगत विख्याता॥
वेद पुराण विदित सब काहू। होइ परन्तु जेठ नरनाहू॥
है जेठको राजकुमारा। दुर्योधनहि राज्य अधिकारा॥
पहुंचत नहिं पाण्डवको दावा। नाहक सब मिलि वैर करावा॥

सुने श्रवण बलदेवके, मन्त्र जबै यदुनाथ।
लागे करन विवाद तब, निज भ्राताके साथ॥

दूर प्रकट भये का वासा। मेटि को सकै पाण्डुसुत आसा॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा।सुनत वचन हलधरहि न भावा॥
वाह्लीक कछु कौन न दावा। प्रथम पितामह अंश न पावा॥
राज्ययोग नहिं होत कनिष्ठा। करवावत तुम कान्ह अरिष्टा॥
हँसि बोले तब शारङ्गपानी। सुनहु तात यक कथा पुरानी॥
भे शन्तनुते प्रथम देवापी। वाह्लीक भे मध्य प्रतापी॥
देवेउ ज्येष्ट कुष्ठ तनु चीन्हा। ताते राज्य पितहि नहिं दीन्हा॥
वाह्लीक मातुलपहँ गयऊ। शन्तनुनाम नृपति सो भयऊ॥
प्रथम व्याह गङ्गाते कीन्हा। ताके जन्म पितामह लीन्हा॥
राज्य विचित्रवीर्य्यकहँ दयऊ। भीष्म ज्येष्ठ राजा नहिं भयऊ॥
पूंछत द्रुपद सुनहु जगतारण। अंशहीन भीषम केहि कारण॥
महारथी सन और न पूजा। जेहिं समान जग भयउ न दूजा॥
बलते कवन छुड़ावत दावा। केहि कारण उन राज्य न पावा॥

प्रकटे शन्तनु गङ्गते, महावाहु बलखानि।
अंश न पायो वंशको, कारण कहौ वखानि॥

सुनि श्रीहरि आये इन वातन। सुनहु पृषदसुत कथा पुरातन॥
भागीरथी व्याहि सुख पाये। करि करार भवनहिं नृप लाये॥
बालक सप्त प्रथम उपजाये। तेइ नृप लै प्रवाह पहुँचाये॥
भीष्म जन्म जगत जब लीन्हा। वाल विलोकि मोह नृप कीन्हा
कहेउ भूप गङ्गा सुनि लीजै। अबकी सुत माँगे मोहिं दीजै॥
कह सुरसरि नृप कीन्ह करारा। पहुँचावों बालक तुव धारा॥

तुमहिं भूप अब सुत प्रिय लागे । यह करार कीन्हों मैं आगे ॥
अब तुम पुत्रलोभ जिय आना । निज प्रवाह हम करब पयाना ।
अपनो पुत्र प्रीति करि लीजै । जाहुँ भूप मोहिं आज्ञा दीजै ॥
करहु नृपति अब तजि सन्देहा । राखहु हमहिं कि बालक देहा ।
कह नरेशमोहिंशिशुप्रियलागत । जोरि पाणि तुमतें यह मांगत ।
सुरसरि सुनि महीप सुखवानी । निज प्रवाह तत्काल समानी ।
नारि विरह दुख भूपहि व्यापा । विकल रैनि दिन कीन्ह विलाप
राज्य योग बीते कछु काला । भयो कुँवर दुख तजे भुवाला ॥
परशुराम धनुविद्या दीन्हों । आपु समान महारथ कीन्हों ॥
करहि गङ्गसुत राज्य प्रचारा । भूपबोसप्रतिरमन शिकारा ॥

> घूमत भूप अखण्ड वन, गयउ नदी के तीर ।
> देखि तहां कन्या नवल, पहिरे भूषण चीर ॥
> कीधौं रति सम मेनका, रम्भा रूप समान ।
> विज्जुलतासी देखि छवि, सम्भ्रम भूप भुलान ॥

ठाढ़ नरेश नदीके तीरा । कामविवश अति विकल शरीरा ॥
हांकि अश्व चलि गे नृप आगे । पूंछन वचन प्रेम सों लागे ।
केहि सुकृतीकी सुता सोहाई । कारण कवन नदीतट आई ॥
तुमहिं देखि लोभेउ मन मोरा । को तुव पिता नाम का तोरा ।
सुता निषादराजकी राजा । निशि दिन सोर नदीतट काजा ॥
मीन राज व्योहार हमारा । मत्स्योदरी नाम द्विज सारा ॥

आवत मम तनु कठिन कुवासा। देखि लोग दावैं निज नासा॥
यहि प्रकार कछु दिवस बिताये। यहि मग ऋषय पराशर आये॥

सरित तीर ठाढ़े भये, तपोमूर्त्ति अभिराम।
मोहिं बिलोक्यो तरणिपर, विकल भयो वशकाम॥

म्वहिं बिलोकि ऋषिप्रेम अधीरा। भयो कामवश विकलशरीरा॥
मांगी रति मुनि करि बहु ड़ीड़ा। बोली मैं न भूपवश व्रीड़ा॥
कह मुनि हमहिं देव ऋतुदाना। लेहु शाप की वज्र समाना॥
क्रोधवन्त ऋषिको जब देखा। प्रतिउत्तर मैं दीन्ह विशेखा॥
म तुम्हारि पुत्री ऋषिराई। मलिन रूप अरु देह गँवाई॥
नीच जाति कृत अशन कुभोगा। नाहिंन नाथ तुम्हारे योगा॥
वरै पुरुष पितु शिष विन जोई। कुलटा नाम कहावै सोई॥
मैं मुनीश तुव हाथ विकानी। छोड्यो लोकलाज कुलकानी॥
तुमहिं बिलोकि राज अनुकूला। देखहु नाथ लोग दोउ कूला॥
अति कलङ्क लागी मुनि हमको। दिन रति नाथ उचितनहिंतुमको

ह्वै प्रसन्न तब ऋषि कहेउ, त्यागहु तरुणि विषाद।
तुव तन गन्ध कपूर को, होइहि मोर प्रसाद॥

ऋषि आशिष प्रसन्नचित भयऊ। छुटि विषाद शोकसब गयऊ॥
शशि समान तनु भयो प्रकाशा। योजन भरि पूरेउ पुनिवासा॥
योजन भरि तनु वहेउ सुगन्धा। कह्यो नाम पुनि योजनगन्धा॥
सत्यचरित भाषेउ निज स्वामा। ताते सत्यवती तुव नामा॥
यह करि कीन्हें ऋषय चरित्ता। भयउ दिवस महँ राति विचित्ता॥

परेउ कुहिर दिनकर द्युतिनासा । रमितभयेमुनिसहितहुलासा
योजन भरि पूर्यो पुनि वासा । तनु सुगन्ध दुर्गन्ध विनासा
निशिते सरिसभयो अँधियारा । सूझ न आपन हाथ पसारा
होइ प्रसन्न तब आशिष दीन्हों । कन्यारूप सदा तेहि कीन्हा
यहि प्रकार मोहिं दै वरदाना । ह्वै प्रसन्न मुनि कीन्ह पयाना
जब ऋषीश निज मारग गयऊ । भये प्रकाश कुहिर मिटि गयऊ
तनते भये व्यास ते जाना । प्रगटत वनको कीन्ह पयाना ।

सत्यवती भूपालते, कह निज कथा प्रमान ।
भणित पर्व्व उद्योग यह, सवलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

काम विवश न्टप वचन उचारे । सत्यवती चलु भवन हमारे
सब प्रकार तुव मम सुखदानी । तुमकहँ लै करिहों पटरानी ।
करहु कवल न्टप चलहुं तुम्हारे । होइ महीपति पुत्र हमारे ।
तुव करार आवहि केहि काजा । करहि कवल भीषम सुनु राजा
सुनि नरेश वहु दूत पठाये । गङ्गासुतहि वोलि लै आये ॥
सत्यवती सुनि सकल प्रसङ्गा । कीन प्रणाम प्रमन्वित अङ्गा ॥
चलहु पिता सङ्ग मातु उदारा । सब प्रकार मैं दास तुम्हारा
सत्यवती सुनि आयसु दयऊ । धनि पितुभक्त जगत तुम भयऊ
करहु कवल हमते युवराजा । तनय हमार करै तव राजा ॥
चलौं भवन तव पितुके सङ्गा । देहु वीच जग पावनि गङ्गा ॥

धर्म्म धुरन्धर धोर धर, देव अंश अवतार।
तुम समसत्यप्रतिज्ञ जग, भये न होनेहार॥

वचन पालि तुम राज्य न लेहो। निश्चय मम पुत्रनको दैहो॥
तुम्हरे वंश प्रवल सुत होई। लेइ छिनाय राज्य पुनि सोई॥
तव शन्तनु भीषम प्रति बोले। हे सुत वैन नारि यह बोले॥
कीन्हे विन उपकार तुम्हारे। नहिं चलिहै पुनि भवन हमारे॥
यहि विन मैं न जियउँ सुनु शावक। जारत मोहिं मदनबिनपावक॥
शन्तनु वचन शोक मम खोले। सुनतहि तव गङ्गासुत बोले॥
सुनहु पिता तुम मोर करारा। निरखहुं मैं न नयन भरि दारा॥
किमि ह्वै है सन्ततिको साजा। करिहौं सत्यवतीसुत राजा॥
मात पिता श्रीहरि गुरु आना। सत्यवती सुनु वचन प्रमाना॥
जैसे हम गङ्गा कहँ जानव। त्यहिते सरिस मातु तुहिं मानव॥
करि करार शुभ यान चढ़ाये। नगर हस्तिनापुर लै आये॥
सब प्रकार निज लायक जानी। शन्तनुन्टप कीन्हेउ पटरानी॥
चित्राङ्गद विचित्र सुत जाके। भये देव सरिवर नहिं ताके॥
तनु तजि न्टप सुरपुर जब गयऊ। चित्राङ्गदहि राज्य पुनि भयऊ॥
गिरिकन्दरमहँ फिरत शिकारा। प्रवल सिंह ताको वन मारा॥
भये दुखित भीषम सुनि बाता। अतिशय विकल भई पुनि माता
सहित धरा धन सैन समाजू। दीन्ह विचित्रवीर्य्यकहँ राजू॥

आज्ञा लीन्हौं मातुको, भीषम अति हरषाय।
काशिराजको लै सुता, भ्राता व्याहिनि आय॥

याते राज्य न भीषम लीन्हा। राज्य विचित्रवीर्यकहँ दीन्हा॥
रानिन विवस भयउ नरनाहा। रमित रैनि दिन सहित उछाहा॥
राजकाज नृपको सब भूला। प्रतिदिन रहै नारि अनुकूला॥
द्वादश वर्ष भवनते राजा। कढ़ेउ न जान्यो दूसर काजा॥
गङ्गासुत कृत राज्य प्रचारा। भूपदिवसनिशि रमित विहारा॥
वल न रहेउ तनु नारि प्रसङ्गा। भयउ राजयक्ष्मा नृप अङ्गा॥
त्यागेउ प्राण राज तेहि रोगा। भये विकल जन त्यहिके शोगा॥
सत्यवती अतिकीन्ह विलापा। भीषम उर उपज्यो परितापा॥

धरि धीरज बैठे भवन, दुखित नयन जल रोकि।
माता सों कीन्हों मतो, वंश विहीन विलोकि॥

माता सुनहु व्यास जो आवैं। कह भीषम वे वंश चलावैं॥
सुमिरत तुरत व्यासमुनि आये। अक्षमाल तनु भस्म चढ़ाये॥
जटाकलाप वाल अति भूरे। शोभित नयन अरुण पुनि रूरे॥
उठि भीषम चरणन शिर नाये। सत्यवती पुनि कण्ठ लगाये॥
सादर सिंहासन बैठारे। विनय कीन्ह दुख हरो हमारे॥
वंश विहीन बन्धु तुव भयऊ। भयो राजयक्ष्मा मरि गयऊ॥
अब करि कृपा ऋषिय अवतंशा। करिय प्रकट रानिनते वंशा॥
व्यास मातु की आज्ञा जानी। अन्तःपुर बैठे सुख मानी॥
कालहिहि कहेउ अम्बिका वोली। मुनिशय्या तुम जाहुअमोली॥
इनते सुत प्रगटो तुम जाई। वाढ़ै वंश राज्य अधिकाई॥

कहो अम्बिका मातु यह, बात न मोते होय।
कुलटा कहिहैं लोगजग, जाय धर्म्म सब खोय॥

येहैं व्यास विष्णु अवतारा। व्यापि रहो सगरे संसारा॥
तासु परश कीन्हें नहिं पापा। अस मन समुझि तजौ परितापा॥
सत्यवतीको आज्ञा मानो। ऋषि ढिग गयई अम्बिका रानी॥
व्यास तेजते तनु थहराई। बैठि सकुचवश शीश नवाई॥
जिमि हिमगतकमलीकुम्हिलानी। थके वचन मुखआव न बानी॥
भयवश अङ्ग अङ्ग सब काँपो। सुरत करत लीन्हे मुख झाँपो॥
गये व्यास माताके पासा। निकट बैठि यह वचन प्रकासा॥

सहि न सकी मम तेज तिय, लिये ढाँकि दृगबार।
ह्वैहै याके मातु सुनु, अक्षविहीन कुमार॥

सत्यवती सुनि अति दुख लहेऊ। पुनि पुनि वचन पुत्रसों कहेऊ॥
नयन विना राजा अधिकारी। होत नहीं सुत देख विचारी॥
करहु प्रकट अम्बाते बालक। सो कुरुवंश होइ प्रतिपालक॥
व्यास मातुकी आज्ञा मानी। अन्तःपुर बैठे पुनि आनी॥
कह अम्बाते योजनगन्धा। होइ अम्बिकाके सुत अन्धा॥
मुनि शय्याकहँ अब तुम जाहू। उपजै पुत्र होइ नरनाहू॥
आयसु माँगि गई मुनि तीरा। देखि तेज भयो पीत शरीरा॥
नव मुनीश आलिङ्गन कीन्हा। होय भूपसुत आशिषदीन्हा॥
यह कहि सत्यवतीपहँ आये। समाचार सब कहि समुझाये॥

सकल सुलच्छण होय सुत, महाराजके योग।
पीत भई तिय देखि मोहिं, होयपीत तनु रोग॥
यह कहि वचन मातुके आगे। सुमिरन करन ब्रह्मको लागे॥
कह्यो मातु अब सुत सुनिलीजै। अपने मन विचार यह कीजै॥
यहिते अधिक न दूसर भोगा। अन्ध एक सुत यक युतरोगा॥
देहु एक सुत अबको वारा। विष्णु भक्त जानै संसारा॥
कहेउ व्यास माता सुनि लीजै। शय्या पठै अम्बिका दीजै॥
सत्यवती सुनि ताहि बुलाई। सुनत अंबिका शीश डोलाई॥

एक वार माता करौं, वचन तुम्हार प्रमान।
वारमुखी सम सो तिया, वार वार ऋतुदान॥

सत्यवती कह वालक काजा। तुम ऋतु करौ छोड़िकै लाजा॥
सासुहि निकट भली कहि आई। मुनि समीप परिचरी पठाई॥
भये रमित जानेउ मुनि रानी। निलज देखि दासी पहिचानी॥
आये मुनि माताके आगे। कथा समस्त कहन पुनि लागे॥
याते होइहि प्रकट कुमारा। परमभक्त जानहि संसारा॥
माता सत्य कहौं मैं तोहीं। पुनि छल कीन्ह अम्बिका मोहीं॥
मोहिं विलोकि परम भयपाई। पठई और आप नहिं आई॥
निपट निलज्ज देख मैं सोई। काशिराजकी सुता न होई॥
मातासों यह कहि चले, मुनि वनको सुखपाइ।
भये अम्बिकाके तनय, धृतराष्ट्रक तनु आइ॥

रे अम्बाके पाण्डुकुमारा। वंश विभूषण जग प्रतिपारा ॥
दासी योनि विदुर अवतारा। विष्णु भक्त अरु परम उदारा ॥
प्रथम अम्बिकाके सुत भयऊ। अन्ध जानिकै राज्य न दयऊ ॥
भीष्म वाहुलीक मत कीन्हा। अम्बासुतहि राज्य नहिं दीन्हा
पाण्डुहि सिंहासन वैठायो। तिलक कियो शिरछत्र धरायो ॥
राज्ययोग पुनि राजकुमारा। नाहिंन भ्रातजात अधिकारा ॥
यहि प्रकार हरि कहि समुझावा। द्रुपद नरेश सुनत सुख पावा॥
सुनि वलदेव कही यह वानी। सुनहु वात यह शारंगपानी ॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी। दुर्योधनके आज्ञा कारी ॥
विना युद्ध देइहि महि नाहीं। जीति को सकै कृष्ण उन पाहीं॥
कर्ण समान वली संसारा। नाहिंन प्रकट कौन करतारा ॥
हम अपने मनमें करि वूझा। को हरि करिहि कर्णते जूझा ॥
सुननहि वचन नयन रतनारे। भये क्रोध नहिं रहत सँभारे ॥

बोले हरि वलदेव ते, भ्राता करहु बिचार ॥
धर्मराजके अंशको, कौन छुड़ावनहार ॥
करौं नाश कौरव सकल, जो न देइ नृप अंश।
हतौं द्रोण भीषम करण, वाहुलीकयुत वंश ॥

यदपि वली कुरु युध संसारा। मोते रण नहिं तासु उवारा ॥
चक्र पाणि गहि मस्तक फारौं। राज युधिष्ठिरको वैठारौं ॥
यह करतूति न करि दिखरावौं। नहिं वसुदेवको तनय कहावौं॥
मिटै जु अंश धर्म नृपकेरा। गावै अयश जगत सव मेरा ॥

बल देखि सुनौ बलभाई । करत कर्णको आप बड़ाई ॥
अर्ज्जुन भीमसेन बलदाई । नहिं त्रिभुवन इनकी समताई ॥
अति हठ हनूमानते कीन्हा । सके न जीति सखा करि लीन्हा ॥
ह्वै किरात गिरिपर रण कीता । वनोवास जिन शङ्कर जीता ।
असुर सेवन्त कवच बलवाना । जाके रण सुरपति भय माना ॥
सो अर्ज्जुन पलमहं संहार्य्यो । इन्द्रहि इन्द्रासन बैठार्य्यो ॥
जिन बांधे शरसों सोपाना । ऐरावत धरणी जिन आना ॥

बाणन कीन्हौ बाट नभ, हाथी लियो उतारि ।
कुन्तीसो पूजन कियो, सजल भई गन्धारि ॥
धनपति छांड़ो दण्ड लै, जीते सब भूपाल ।
पारथसों बल वान जग, भयहु न कवने काल ॥

जब बिराटपुर कौरव घेरा । वेढ़ी गाय अहीरन टेरा ॥
भीषम द्रोण कर्ण सब आये । अर्ज्जुन एक सबन बिचलाये ॥
एक एक सब मिलि मिलि लरेऊ । तब उन पारथको का करेऊ ॥
बाणन मारि सकल बिचलाये । फेरी धेनु नगर फिरि आये ।
देव दैत्य दानव बलभारी । जहँलगि रचे सृष्टिविधि भारी ॥
तीनों लोक अस्त्र गहि आवैं । पारथ सो रणजय नहिं पावैं ॥
सहदेव दक्षिणकी जय कीन्हा । लङ्का दण्ड बिभीषण लीन्हा ॥
नकुल वारुणी दिशि बलभारी । जीत्यो सिन्धु तटी लघुभारी ॥
भीमसेन सब पूरब ओरा । निजभुजबल जीत्यो बरजोरा ॥
एकचक्र नगर बकासुर मारा । जरासन्ध कीन्हों दुइ फारा ॥

मारि हिडम्ब हिडम्बौ व्याही। बन्धु को जीति सकै रणमाही॥
जिन मारो कीचक सौ भाई। सकै बन्धुको अँथ छुड़ाई॥
धर्मराज सरि को संसारा। तजेउ न धर्म सहेउ दुखभारा॥
भीम पार्थ करि हैं सकल, कौरवकुल संहार।
धर्मराजके शत्रुको, मरत न लागी बार॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

प्रश्न बहुरि कुरुवंशमणि, कीन्हो पद शिर नाइ।
कह ऋषि जनमेजय सुनौ, कथा श्रवण मन लाइ॥
बलदिशि देखि बहुरि हरि बोले। भ्राता सुनौ कहत मैं खोले॥
जनहित चहत धर्मसुतकेरा। जान्दहु परम शत्रु सो मेरा॥
कह बलदेव सुनहु हरि भ्राता। रचि राख्यो यह कलह विधाता॥
तुम कहँ धर्मराज प्रिय जैसे। मम प्रिय दुर्योधन नृप तैसे॥
जो सात्यिकी वीरवर होई। मम संग्राम करै शठ सोई॥
है यह बात मतेकी भाई। कुरु पाण्डवकी प्रीति निकाई॥
कहि यह वचन विदा पुनि भयऊ।बल चलि नगर द्वारकै गयऊ॥
तब नृप कह्यउ सुनहु बनवारी। कहेउ राम मत नीक विचारी॥
करत युद्ध कटिहैं परिवारा। मोकहँ जग कहिहै धिक्कारा॥
जे हैं बन्धु बन्धु सन मारे। कलह नीक नहिं मन्त्र हमारे॥
मिलै भूमि अरु मिटै लड़ाई। सोई अब कीजै यदुराई॥

कहेउ विहँसि तब बाल कन्हाई । अग्रिपर दया परम कदराई ॥
बैठि सबै सबको मन लीजै । मिलै भूप महि सो अब कीजै ॥
कहेउ नकुल यह मन्त्र हमारा। सुनहु सकल मिलि करहु विचारा॥
सत्य वचन नृप सुनु हम पाहीं विना युद्ध मिलिहै महि नाहीं
भीमसेन अर्ज्जुन मन भायउ । कहेउ बन्धु भल मन्त्र दिखायउ ॥
द्रुपद विराट कहे मन नीका । तब बोलेउ यादवकुलटीका ॥

कही कृष्ण भूपालतें, सुनिये मन्त्र हमार ।
विन दलसों कछु बल नहीं, विदित सकल संसार ॥
जहँलग तुम्हरे अंशके, भूमिभूप भुवराइ ।
सजि निज दल आवै सकल, दीजै पत्र पठाइ ॥

कह मुनि सुनहु वचन कुरुराई । कथा विचित्र श्रवण मन लाई
सुनिहरि वचननृपति मन भायो । देश देशकहं पत्र पठायो ॥
पुनि हरि द्वारावती सिधायो । द्रुपद सेन हित निजपुर आयो ॥
सजि दल देश देशके राजा । नृप विराटपुर जुरो समाजा ॥
नगर चन्देरीके भूपाला । धृष्टकेतु आये तेहि काला ॥
अक्षौहिणी चमू यक सङ्गा । हय गज रथ पदचर बहुरङ्गा ॥
सब कवची खड़गी धनुधारी । सर्व्व शूर महाबल भारी ॥
उत्तर पुर विराट नृपकेरा । कीन्हे धर्म्मराय कहि डेरा ॥
अक्षौहिणी धर्म्म नृप केरी । भई नृपनकी भीर घनेरी ॥
ताही समय द्रुपद नृप आये । अक्षौहिणी सङ्ग निज लाये ॥
धृष्टद्युम्न पुत्र रण रङ्गी । चौंसठि नृपति द्रुपदके सङ्गी ॥

दूसर नृपति शिखण्डी आये । भीष्मवधहित विधि उपजाये ॥
चारि बन्धु भट सुत दश नाती । आयो अयुत द्रुपदके जाती ॥
सबही महारथी बल भारी । सन्नाही खड्गी धनु धारी ॥

शूरसेन आये तबै, लै निज सेन गम्भीर ।
कवची खड्गी कुण्डली, धनुधारी सब वीर ॥

जरासन्ध सुत नृप सहदेऊ । सेन सहित आये नृप तेऊ ॥
अक्षौहिणी एक सङ्ग लीन्हे । धर्मराज हित रण मन दीन्हे ॥
काशिराजकी सेना आई । अरु आये नृपगण समुदाई ॥
बाहर निकसि विराट भुवारा । उतरे शंख सहित परिवारा ॥
अक्षौहिणी सङ्ग निज लीन्हे । डेरा धर्मराजढिग कीन्हे ॥
गज रथ औ असवार पदाता । अक्षौहिणी जुरेउ दल साता ॥
घटउत्कच निज साथ सिधायो । पांच कोटि राक्षस सग लायो ॥
भूप पञ्चनद के जे वासी । आये सेन सहितबलरासी ॥
श्रङ्गी सिन्धुकच्छके राई । आये सकल समेत सहाई ॥
चालिस सहस जुरे तहँराजा । को वरणै नृप सेन समाजा ॥

बन्धुन युत बैठे सभा, धर्मराजके रूप ।
जुरे आइ त्यहि थल सबै, देश देशके भूप ॥

इति तृतीय अध्यायः ॥ ३ ॥

जनमेजय मुनिते कह्यो, कहौ कथा मनलाइ ।
सुधि पाई कुरुनाथ जब, तब कस कीन्ह उपाइ ॥

खरमुख कुरुपति सुधि पाई । जोर्‌यो कटक युधिष्ठिर राई ॥
व नरेश मन शंका आई । शकुनि कर्ण कहँ लीन्ह बोलाई ॥
र्ण और दुशासन आये । बैठि सकल मिलि मन्तदृढ़ाये ॥
र्योधन कहि श्रवण सुनाई । दूत वचन मुखपहँ सुधिपाई ॥
सुनत अजात शत्रु दल जोरा । अक्षौहिणी सप्त घनघोरा ॥
सुनहु सचिव कीजे केहिभांती । भयवश परी नींद नहिं राती ॥
सुनि यह उतर कर्ण तब दीन्हा । नृपतुमशोचअकारथकीन्हा ॥
नञ्ज बन्धु सात्विक यदुराई । अरु नरेश सब शत्रु सहाई ॥
द्रुपद विराट सेन सजि आवै । मारौं सकल जान नहिं पावै ॥

यम कुवेर वरुणेन्द्र सैं, जीति सकौं दिगपाल ।
मानुष मोते को जुरै, अभय होहु भूपाल ॥

सुनि यह वचन भूप सुख पायो । साधु साधकरि हृदयलगायो ॥
कर्ण समान धर्म्म व्रतधारी । नहिं त्रिभुवन हमार हितकारी ॥
तन मन वचन न जानै आना । मम कारज नहिं दुर्लभ माना ॥
मिलै न हितदायक जग तोसे । रहत सदा मैं कर्ण भरोसे ॥
जा दिन युद्ध परै कठिनाई । मित्र मित्रसुत करहिं सहाई ॥
पाण्डव निधन कर्णके लाधक । बंधु सरिस मेरे हितदायक ॥
जब यहि भाँति प्रशंस्यो ताहीं । बोल्यो करि विचार मनमाहीं ॥

कियो रङ्कते राउ तुम, राखत मान हमार।
तिल तिल तनु कटि कटि गिरहि, ताके प्रति उपकार ॥
स्वामिकाज लगि भीष्म समर्प्यो। जुरे काल रण ताहिनडर्प्यो ॥
जुरे युद्ध करणो न्रप मेरो। देख्यो कहौं कहा बहुतेरो ॥
करि अति क्रोध शिलीमुखजोरों। शर सागरमाण्डवदलबोरों ॥
भूप न करिय शोक कछुजीमा। सकैं जीतिनहिं अर्जुन भीमा ॥
रणमहँ बाँधि युधिष्ठिर राई। जयति पत्र देहौं लिखवाई ॥
मेरे वल समान नहि पारथ। सके न जीति थकै पुरुषारथ ॥
सुनत तबै द्रोणो रिस बाढ़ो। तीक्षण वचन वदनते काढ़ो ॥
पारथको सरि भट संसारा। भयो जगत नहि होनेउहारा ॥

कह्यो द्रोणसुत भूप सुनु, ऐसो को संसार।
पारथशर अति कठिन है, सहै युद्धको भार ॥

सुनहु भूप अब कथा पुरानी। पार्थ-चरित मैं कहब बखानी ॥
प्रथम द्रोण अरु द्रुपद मिताई। सो प्रसङ्ग न्रप सुनुचितलाई ॥
जब विराट गणनाथ छिनावा। हारिसमर न्रप कानन आवा ॥
मिले पिता न्रप यमुना तीरा। देखियुगल दृग भयो सनीरा ॥
गहिपद न्रप प्रणाम तबकीन्हेउ। होहुअभयमुनिआशिषदीन्हेउ
भरद्वाज अरु प्रसद मिताई। अतिशय नहीं सुनहु कुरुराई ॥
द्रोण द्रुपद खेलैं इक सङ्गा। बढ़ी परस्पर प्रीति अभंगा ॥
कथा समस्त द्रुपद जब कह्यऊ। भये क्रोधसुनि द्रोण न सह्यऊ ॥

कहेउ द्रोण सनिये द्रुपद, वधि विराटगण आज।
सकल देश पञ्चालको, तुमहि करावों राजु॥

वधि विराट तोहिं राज करावों। द्रोण नाम तव विप्र कहावों॥
हतौं शत्रु मैं एकै वाना। तौ ग्वहिपरशुरामकी आना॥
जेन मित्र दुख होहिं दुखारी। पाप मूल दुर्गति अधिकारी॥
अस कहि लीन्ह शरासन वाणा। द्रुपद सङ्ग लै कीन्ह पयाना॥
कहेउ भूप यह चलती वारा। करो निधन जो शत्रु हमारा॥
आधो राज्य विप्र सुनु तोरा। पुनि मानव भरि जन्म निहोरा॥
असकहिनगरनिकटचलिआये। पाणि शिलीमुखधनुषचढ़ाये॥
सो सुनि सकल शत्रुगण धाये। ब्रह्म अस्त्रते द्रोण जराये॥
द्रुपदहि सिंहासन वैठारा। काढ़ेउ छत्रतिलक शिरकाढ़ा॥
द्वादश वर्ष द्रोण सनु राई। वसे कम्पिला सखअधिकाई॥
हमरे हेतु धेनु मुनि यांची। दयो नृपति करिबुद्धिपशाची॥
मित्र जानिकर शाप न दीन्हा। करेउ निधननगरेतजिदीन्हा॥

गजपुरको तव द्रोण मुनि, कीन्हो तुरत पयान।
पहुँचे वासर सातमहँ, सवलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

गदखेल खेलतसवै, जुरे वालकन साथ।
तुमफेंकेउतव रोंकेउ, भीम ओड़िकैहाथ॥

छांड़ेउ गेंद कूपमें गयऊ। तुमसबमिलिविस्मयवशभयऊ॥
ताही समय द्रोण तहँ आयउ। बालक रुदत देखिचुपकायउ॥
सींक धनुष शर द्रोण सँधानी। गेंद काढ़ि दीन्हे तू आनी॥
लिये तुरत भीषमपहँ आये। सकल चरित बालकन सुनाये॥
देखि पितामह मन अनुसानेउ। आये द्रोण सत्य जियजानेउ॥
चलिकै मिले गङ्गसुत आई। सभा मध्य लै गयऊ लेवाई॥
अर्घ्यपाद्य सिंहासन दीन्हा। चरण धोय चरणोदक लीन्हा॥
लक्ष धेनु पुनि दीन्ह दिआऊ। दीन्हेउ बहुरि पञ्चशतगांऊ॥

जोरि पाणि कीन्ही विनय, भीषम पद सिरनाय।
बालकसौंपे बोलि सब, कीजै निपुण पढ़ाय॥

अस्त्रसिखायनिपुणजबकीन्हा। तुमसबमिलिगुरुदक्षिणदीन्हा॥
अर्जुन दीन्हेउ जीति बढ़ाऊ। सहस एकदश संयुत गाऊ॥
पहुगहि वचन कह्यो यह साँचो। आयसु करा चहौं जो याँचो॥
कह अर्जुन आयसु जो दीजै। आज्ञा होइ नाथ सो कीजै॥
कह गुरु द्रव्य लेउँ नहिं तोरा। कीजै सफल मनोरथ मोरा॥
द्रुपद मित्र कीन्हों अपमाना। ताते माँगत हौं यह दाना॥
बांधि चरणतर दाबो आई। चुकेउ तात अभिमत मैं पाई॥
कुरु पाण्डवको मिली सहाई। घेर्यो नगर कम्पिला गाई॥
सुनेउ द्रुपद अरिसेना आई। निकरेउ तुरत निशान बजाई॥

चारि चमू द्वै मिलिगई, भयो घोर संग्राम।
हय गज रथ लाखन परे, सुभट कटे बहुनाम।

द्रुपद कर्णते सरस लड़ाई। महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई॥
शोणित बाण द्रुपद उर लागा। क्रोध अनल हर अन्तर जागा॥
हन्यो कर्णके चारिउ ओरा। असिनिकारि सारथिफिर फोरा॥
विरथ देखि तव गे कुरुनायक। धनुष तानि छाँड़े वहु सायक॥
देखत युद्ध द्रुपद शर छांड़त। करते धनुष भूप तव डारत॥
करि अतिक्रोधविशिखवहुत्यागयो। भई विकल सेनासवभाग्यो॥
भीमसेन लज्जा जिय आयो। अर्ज्जुनते यह वचन सुनायो॥
करि प्रण देन कहेउ तुम दाना। अवकर गुरुहित पार्थ नशाना॥
भा पारथ उर क्रोध कराला। रिसवसभयेविलोचन लाला॥
अर्ज्जुन कहन सूतते लागे। ले चलु हांकि वेगि रथ आगे॥
सुनि सारथी हांकि रथ दीन्हा॥ देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हा॥
गाण्डिव धनुष वहुरि टङ्कोरा। चौदहभुवन भयो रववोरा॥
पुनि पारथ दीन्हो शरजाला। लीन्हवांधि रणद्रुपद विहाला॥
पकरि द्रोण चरणनपर डारा। मित्र जानि मुनि नाहिन मारा॥
दीन्ह छुड़ाय द्रोण पाञ्चाला। सुनु अर्ज्जुन करणी भूपाला॥

शरसों वारिधि वांधि जिन, जीतेउ पवनकुमार।
भयो न होनेहार कोउ, अर्ज्जुन सरि संसार॥

पारथ कीन्ह अमानुष करणी। चित दै सुनहु कहवहस वरणी॥
इन्द्रकील गिरिपर तपहेतू। गयो मन्त्र साधन वृषकेतू॥
तेहिथल धनुष वाणधरि दीन्हा। करि आचमन देहशुचिकीन्हा॥
धरि उर ध्यान पार्थ तपसाधत। करि व्रतमौन शम्भु आराधत॥

एक चरण द्वै भुजा उठाये । शिव शिव रटत परम हित लाये ॥
तप साधत बीते बहु काला । भयउ चरित यक सुनहु भुवाला ॥
प्रथमहिं भीम बकासुर मारा । तासु बन्धु अतिशय बरिआरा ॥
पूर्व्वके बैर रोष बढ़ि आवा । धरि बराह तनु मारन धावा ॥
जब पारथ समीप नियराना । सो चरित शङ्कर सब जाना ॥
गङ्गाधर पिनाकधर आये । गणगणपति सब सङ्ग लगाये ॥

धरि किरात तनु हर चले, लिये हाथ हथियार ।
रक्षा हित हरि मित्रकी, करन असुर संहार ॥

अर्ज्जुन ढिग शूकर नियराना । शिव शर जोरि शरासन ताना ॥
करि अतिक्रोध अधम तनु मारा । आधोनिकसि रहो शरपारा ॥
घुरघुरात पुनि पारथ ओरा । चला असुर मारन करि शोरा ॥
परेउ श्रवण शूकरवर बोला । सुनि रव दृग किरीटशिरखोला ॥
आवत यक बराह अति तीछे । आयुध धृत किरातगण पीछे ॥
झोड़ सरोष लीन्हों तब चापा । शर सन्धान कीन्ह करि दापा ॥
यहि विधि अर्ज्जुन बाण प्रहारेउ । निज प्रवेश हरशरहिनिकारेउ
कह शङ्कर यह मोर शिकारा । मारेउ अधम न कीन्ह विचारा ॥

अरुणनयन भृकुटी कुटिल, बोले पार्थ रिसात ।
समुझि कहत तुव बात नहिं, रे रे अधम किरात ॥

नीच जाति अति अधम किराता । मूरखसमुझिन बोलत बाता ॥
मोते वचन कहत कटुबानी । अब तुव मृत्यु आइ नियरानी ॥
अति बलहीन न बल तनुमाहीं । मानत अधम निहोरा नाहीं ॥

यह सुनि गण क्रोधित होइ धाये । बाणनमारि पार्थ विचलाये॥
षण्मुख द्विरद वदन नहिं जीते । चले पराइ सकल भयभीते ॥
विकल संकलतनुशुण्ड हलावत । भागतशिवदिशि वचनसुनावत
भागे सब किरातगण भारी । विन किरातपति भंग न हारी ॥
सुनि यह वचन शम्भुहँसि दीन्हा । गहि पिनाकसायककरलीन्हा
धूरजटी बहु बाण पँवारे । अर्ज्जुन कोटि काटिमहि डारे ॥
पारथ शर काटै शूलीधर । भयो युद्ध अति विकल परस्पर ॥
विजय वृहन्नलके संग्रामा । लरत न करत शम्भु विश्रामा ॥
तब चरित्र गौरीपति कीन्हो । अक्षय तूणके शर हरि लीन्हो ॥
गाण्डिवधनुष विजय तब लीन्हा । करि अतिरोषप्रहारगणकीन्हा॥
गङ्गाधर कीन्हेउ हुंकारा । फाटो धनुष भयो दुइ फारा ॥

तबै किरीटी क्रोध करि, कीन्हेउ खड्ग प्रहार ।
तिल भरि कटयो न शंभुतनु, विफल भयो असिधार ॥

अर्ज्जुन मही डारि तरवारी । मल्लयुद्ध पुनि कीन्ह प्रचारी ॥
लरि विलगाहिं बहुरिपुनिलरहीं । नानाभांति दावँ दोउकरहीं ॥
अर्ज्जुन पदकहँ हाथ चलावा । चहत उमापति भूमि गिरावा ॥
चरण परस कीन्हे जब हाथा । बरंब्रूहि बोल्यो गिरि नाथा ॥
अबमोहिं अतिप्रसन्न जियजानू । मांगु तात अभिमत बरदानू ॥
असकहि शिवनिजरूपदेखावा । पञ्चवदन शशि अर्द्धसोहावा ॥
जटा कलाप शीश पुनि गङ्गा । चढ़ीसकलतनुभस्म अभंगा ॥
हृदय कपाल माल विकराला । उठत त्रिपञ्चनयनमहँ ज्वाला

भुजङ्ग भूषण दिग्पट धारी। अर्द्धअङ्ग गिरिराज कुमारी॥
अभय एक कर यक वरदाना। एक पाणिमहँ शूल महाना॥

　　एक पाणि डमरू लिये, नीलकण्ठ भगवान।
　　वार वार कह पार्थते, मांगु मांगु वरदान॥

जीते विना युद्ध गिरिजापति। मैं वरदान न तुमते मांगति॥
विन जीते रण मौलि मयंका। वर मांगों वड़ कुलहि कलंका॥
प्रथमहि विजयपत्र लिखि दीजे। पुनि वर देहु कृपा प्रभुकीजे॥
तुव पद सपथ कोटि हरिआना। ऐसे नहिं मांगौ वरदाना॥
हम हारे सुत सङ्ग तुम्हारे। होइ हौ विजय प्रसाद हमारे॥
सुनि यह वचन पार्थ अनुरागे। अस्तुति करन जोरि करलागे॥
जयगिरिजापति जय कामारी। चतुर वदन सेवित भुजचारी॥
शारद शेष चरित तुव गावत। निगम नेति कहि पार नपावत॥
वारहिंवार शक्र सुत भाखा। निज प्रण टारि मोर प्रण राखा॥
अस कहि परे चरण अकुलाई। पाहिपाहि प्रभु जन सुखदाई॥
गङ्गाधर त्रिशूलधर शङ्कर। दुष्ट दलन पालन निजकिङ्कर॥
नीलकण्ठ सितकण्ठ शम्भुहर। महाकाल कङ्काल कृपाकर॥

　　शृङ्गी शूली धूरजटि, कुण्डलीश त्रिपुरारि।
　　वृषीकपर्दी मानकर, मृत्युञ्जय कामारि॥

जयति सदाशिव सव गुणरासी। काशीपति कैलास निवासी॥
सुनि यह गिरा मगन हर भयऊ। पारथको या विधि वरदयऊ॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे। नाश होयँ सव शत्रु तुम्हारे॥

होइहैं सफल सकल जे काजू । मिलि है तुमहिं अकण्टकराजू ॥
यह कहि हर सब अस्त्रसिखायो । पुनि पशुपतिको भेदबतायो ॥
परे पार्थ जब कठिन मशाना । तादिन शर कीजै सन्धाना ॥
छूटत प्रलय शत्रु दल होई । त्रिभुवन रोकि सकै नहिं कोई ॥
यहि बिधि अर्जुनको वर दयऊ । अन्तर्द्धान उमापति भयऊ ॥
यक्ष बलिष्ठ पुनि शिव वरदाना । कहहु भूपको पार्थ समाना ॥
कहेउ वचन इमि द्रोण कुमारा । समुझाये बहुभांति भुवारा ॥

गुरु बांधव सुख वचन सुनि, मौन भयो महिपाल ।
पुनि शकुनी बोलेउ बहुरि, सबलसिंह उत्ताल ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

मन्त्र हमार विचारि करि, सुनु मणि समुझि भुवार ।
सबल शत्रु तुव धर्म्मसुत, जोरेउ सेन अपार ॥

जोरेउ धर्म्मराज निज पच्छी । तुम दलहीन बात नहिं अच्छी ॥
अबलग भूप चेत नहिं कीन्हा । देशकाल कछु परत न चीन्हा
पठवो पत्र करहु चित चेता । आवहिं नृप सब सैन समेता ॥
तुम जानतहौ भीम सुभाऊ । अवसर परे न चूकत दांऊ ॥
अरिदलयुक्त आपु दलहीना । करि बैठे कछु कर्म्म अलीना ॥
सुनहु सकल मैं कहत पुकारे । फिरि संभरिहि नहिं नायसँभारे
बोलहु सकल भूप अब राई । अब विलम्ब महँ कौन उपाई ॥

वरपर चढ़े खेलमहँ भीमा। डारेउ अवनि क्रोध करिजीमा।
राखत सदा वैर जिय माने। लखि प्रताप तुव रहत डराने॥
जो दलहीन भीम करि पावै। भूप तुमहिं यमलोक पठावै
निज करणी नरपाल तुम, देखहु चितहि विचारि।
कसेहु जञ्जीरन सकल तनु, दियो गङ्गमहँ डारि॥
सो सुधि भूपहियेमहँ भूली। अजहूं उठत हियेमहँ शूली।
पठवहु पत्र न करहु विलम्बा। क्षितिपति आवैं सहित कुटु
है जेहिके जितनो नृप सामा। आवै साजि करन संग्रामा
खोलि पत्र सबको लिखि दीजे। अबककुभूप विलम्ब न कीजै
सुनत नरेश परम सुख पाये। देश देशकहँ पत्र पठाये॥
श्रीपत्रिका दीन्ह सहिदानी। चलेउ राजकर आयसु मानी
सुनि निदेश पुहुमीपति राजा। आये सकल समेत समाजा
आये मगधराज भगदत्ता। असी लक्ष जाके मदमत्ता॥
रथनपती अरु वाजि अनेका। अक्षौहिणी सङ्ग दल एका॥
गदा चर्म्म असि तूण सोहाये। महापिनाक रूप दरशाये॥
रङ्ग रङ्गके सङ्ग पताका। अति उतङ्ग जनु चुम्बति नाका॥
बाजत बाजन विविध प्रकारा। पणव वेणु मुख शङ्ख नगारा
ऐरावत गजको तनय, दीन्हों तेहि सुरपाल।
मन्दर ते उन्नत कछुक, देह विशाल कराल॥
चारिउ चरण स्रवत मद धारा। जनु झरना जल वहत पहा
दन्त विशाल श्वेत सुर भङ्गा। मानहुँ रजत शैलके शृङ्गा॥

कञ्चन मणिमय रुचिर अँवारी। गजमुक्ता झालरि शुभकारी॥
तापर मगधराज असवारी। देखि स्वरूप शत्रु भयकारी॥
निन्नानवे सङ्ग लै राजा। चलेउ साजि निज सेन समाजा॥
युद्ध हेत सब साज वनाये। यहि प्रकार गजपुर कहँ आये॥
पुनि आयो कलिङ्गदल साजी। अगणित रथ पदाति अरुवाजी॥
सौ वान्धव अतिशय वलभारे। द्विरद लच्च वहु सङ्ग मतवारे॥
द्वादश नृपति सङ्ग वलदाई। सेन विचित्र वरणिनहिं जाई॥
टोप सनाह पानि दस्ताना। असी लच्च लीन्हे धनुवाना॥

पटह भेरि करि शङ्खध्वनि, घुर्मतलाल निशान।
आयो सजि गजपुर कटक, नृप कलिङ्ग वलवान॥

नगर हस्तिनापुरी समीपा। निज निज रुचिकृत शिविरमहीपा
आयो यमनराज त्यहि काला। एकविंश लीन्हें महिपाला॥
महाबली सब तेज तुरङ्गा। अचौहिणी अनी इक सङ्गा॥
वड़े धनुष अरु कवच विशाला। नील वसन तनु वेष कराला॥
हैं सब एक जाति के काछी। अस्त्र शस्त्र युत सेना आछी॥
नील रंगके श्याम पताके। पवन लगे निर्तत नभ वांके॥
बाजत विपुल अरब्बी वाजा। चढ़ि आयो लै सेन समाजा॥

अचौहिणी कलिङ्गकी, परी गङ्गके तीर।
तासु निकट कीन्हे शिविर, यमनाधिप रणधीर॥

सुनि आयो तहँ सुरथ कुमारा। सिन्धु नरेश वीर वरियारा॥
वड़े धनुर्द्धर अति वलखानी। नाम जयद्रथ शिव वरदानी॥

त्रिभुवन विदित जान सब कोई। नृप दुर्योधन कर बहनोई॥
गज रथ वाजि पदाति अपारा। बाजत गोमुख शङ्ख नगारा॥
जाके दलहि ध्वजा पँचरङ्गा। अक्षौहिणी एक पुनि सङ्गा॥
कुण्ड वर्म तूणी धनु वाणा। धरे वीर सब चर्म कृपाणा॥
हस्ती रथ कोउ तुरँग सवारी। सप्त सहस्र भूप बल भारी॥
नगर हस्तिनापुर चलि आये। किये शिविर निज निजमनभाये

निज निज रुचि डेरा करत, प्रमुदित हिये भुवार।
दुर्योधन आदर किये, किये विविध सतकार॥

सजि सजि सैन नरेश अनेका। आये शूर एकते एका॥
यहि प्रकार आये सब भूपा। कीन्ह शिविर सब निजअनुरूपा॥
प्रथम दूत कुरुपति पठाये। सुनि सुधि दनुजराज चलिआये॥
नाम अलंबुष वीर अभंगा। सात कोटि दानव दल संगा॥
नाना वाहन आयुधधारी। मेचकवरण घटा जनु कारी॥
नाना विधि माया सब जानैं। तृणसमान तिहुँ लोकहि मानैं॥
दानवराज द्विरद असवारी। गर्जत पुनि पुनि अतिबलभारी॥
पितुक्रमधुज विदितजग जासू। वलिसुतबानि पितामहतासू॥
निजभुजबल सुरगण सबजीते। रहत सुरेश जासु भयभीते॥
कह मुनि सुनहु कथा कुरुराई। दल न होइ जनु पावस आई॥
श्यामघटासम निशिचर धारी। विज्जुछटा असि पाणि उधारी
सघन घटाविच पांति बलाकी। गर्जतरव सोहत अति बाँकी॥

गजघण्टा भेरी पटह, गर्जत अति मनुजाद।
नगर हस्तिनापुर निकट, भयो भयङ्कर नाद॥
कौतुक हेतु विबुध गण आये। देखनको विमान नभ छाये॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सुधि पाई। बाहर मिलेउ नगरके आई॥
कीन्हेउ युगल परस्पर भेंटा। कुशल पूँछि मन संशय मेटा॥
करि सन्मान अलंबुषकेरा। पुनि महीप करवायो डेरा॥
सभामध्य फिरि गयउ कुमारा। भइ बड़ि भीर राज्यदरबारा॥
ताही समय शल्य नृप आये। अक्षौहिणी संग इकलाये॥
सभामध्य कुरुपति सुधि पाई। कीन्ह मन्त्र सबसचिव बुलाई॥
बोले शकुनि भरतकुलटीका। सोते सुनिय मन्त्र यह नीका॥
मिलिय सपदि आगे निसरि, करि बहु आदरभाय।
देइ निमन्त्रण युद्ध को, शल्य लेउ अपनाय॥
सबमिलि यहै मन्त्र दृढ़कीन्हा। आगे चलिकौरवपति लीन्हा॥
मिलतउभयअभिवादनकीन्हों। तब कुरुनाथ निमन्त्रण दीन्हों॥
मातुल चलहु हमारे धामा। आये लेन हेतु संग्रामा॥
उनके कृष्ण सहायक एहैं। ताको सरि हम काह लगैहैं॥
मातुल सुनु प्रसादविन तोरे। होइ न सफल मनोरथ मोरे॥
सुनिकै शल्य कही मृदुबानी। सुनहु नरेश परम सज्ञानी॥
धर्मराज नहिं मोहिं बोलाये। हम सुधि पाइ आपुते आये॥
तुम चलि प्रथम निमन्त्रणदीन्हा। मोहिंमहीपअपनकरिलीन्हा॥
हम छांड़ो भैनेनकर सङ्गा। सबते लखब भूप तुव सङ्गा॥

भीम पार्थ सहदेव पुनि, नकुल सबनकर मोह।
त्यागे तुम्हरे हेतु नृप, धर्मराजते छोह॥
तजि नातेको नेह विचारा। अब दीन्हे हम सङ्ग तुम्हारा॥
अब नृप धर्मराजपहँ जाइब। आतुरभेंटिसपदिपुनिआइब॥
यहाँ राखि सब सेन समाजा। आवहु देखि युधिष्ठिर राजा॥
गजपुर राखि सेन सब बाँकी। चला भूप चढ़ियान इकाकी॥
घुरघुरात रथचक्र कराला। मृदुरव करत किङ्किणीजाला॥
श्वेत सङ्ग फहरात पताके। पवन लगे नितत नभ बाँके॥
मिले न वर्ष त्रयोदश बीती। दरश लालसाकी अति प्रीती॥
पुलकित गात नयन जल छाये। यहि प्रकार विराटपुर आये।

दरश लालसा उरअधिक, को करिसकै बखान।
यहि विधि आयो शल्य नृप, सबलसिंहचौहान॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

धर्मनरेश सभा सुधि पाई। द्वारपाल इमि जाइ जनाई॥
शल्य आगमनसुनि सुखपाये। लेन हेतु नृप भीम पठाये॥
द्वारजाय अभिवादन कीन्हों। मातुल निरखिआमिषहिदीन्हों॥
रथतजि चले प्रथम अनुरागे। भेंटेउ भीमसेन बढ़ि आगे॥
पुलकित गात नयनजल छाये। कुसलपूंछि तनु ताप बुझाये॥
युगल प्रसन्नभये मिल जीमा। आये सभा शल्य अरु भीमा॥

आवत निकट धर्मसुत देखी । मिले प्रेमयुत हर्ष विशेखी ॥
कुसलपूंछि तनु आनन्द छाये । पुलकित नयन सजलह्वै आये ॥
करत प्रणाम नकुल सहदेऊ । मिलेउ वहोरि सजल दृग तेऊ ॥
तेहि अवसर पारथ तहँ आये । मातुल देखि चषन जलछाये ॥
कीन्हप्रणाम निकट भये ठाढ़े । मिले वहुरि अति आनन्दबाढ़े ॥
अभिवादन तब करत नराटा । मिलेपार्थसुत द्रुपद विराटा ॥
पुनि आयो द्रौपदी कुमारा । भेंटत पुनि पुनि करतजुहारा ॥

सभामध्य नृप शल्यकहँ, तब लैगयो सुवार ।
बहु प्रकार आदरकियो, खान पान अधिकार ॥

शल्य नरेश कुशल बहुभाँती । पूछत नृपहिं जुड़ावत छाती ॥
अहह तात विधिगति बलवाना । वनवसिसहेउदुसहदुखनाना ॥
तेरह वर्ष विपिन महँ बीती । कुरुनन्दन यह कीन्ह अनीती ॥
तात कीन्ह छल सभा बुलाई । कपट-द्यूत करि भूमि छुड़ाई ॥
वहअतिकीन्हशकुनिछलकारी । धर्म्म नरेश धर्म व्रत धारी ॥
जबते तुमकहँ देस छुड़ावा । तबते हम दारुण दुखपावा ॥
तुम्हरे विरह दिवस अरु राती । तलफतरह्योंजरतनितछाती ॥
गत तेरह संवत सुधि पाई । तुम्हें देखि गये नयन जुड़ाई ॥

आयो तुम्हरे मिलनको, छल कीन्हें कुरुनाथ ।
दयो निमन्त्रणयुद्धको, करि लीन्हों निज हाथ ॥

यामहँ धर्म अधर्म विचारी । कहौ करौं सिखमानि तुम्हारी ॥
वहाँ गये बिन धर्म नसाई । छाँड़न तुमहिं परम कठिनाई ॥

तुमते नहिं दूसर संसारा। जाननहार धर्म व्यवहारा॥
तज्यो न धर्म सकलतजिदीन्हा। त्यागेउ ना बचनै अग लीन्हा॥
तुम भगिनीसुत पाँचो भाई। मोरे प्राणनते अधिकाई॥
कहो विचारि करौं अब सोई। जाते धर्म लोप नहिं होई॥
सुनतहि धर्मराज हँसि बोले। मातुल सुनहु कहत मैं खोले॥
क्षत्रियधर्म कठिन नृप एहा। ताते त्यागहु तुम सन्देहा॥

दियो निमन्त्रण युद्धको, उन लीन्हों अपनाय।
कीन्हें और विचार अब, क्षत्रिय धर्म नसाय॥

तुम अब दुर्योधनके ओका। मातुल जाउ तजो सब शोका॥
तुम कौरवको कीन्ह गोहारी। अर्जुन कर्ण वैर है भारी॥
समरभूमि दोनों बलधामा। जब जुरि करहिं कठिनसंग्रामा॥
आपु कर्णको निन्दा कीजै। मांगत हौं मांगे यह दीजै॥
कहेउ शल्य सुनिये भुवराई। कारण सकल कहो समुझाई॥
निन्दा किये कर्णको राजा। यामें सफल बनत दुवकाजा॥
सो सुनि धर्मराज हँसि दीन्हा। ते उत्तर मातुलकहँ दीन्हा॥
निज निन्दा सुनि शत्रु प्रशंसा। घटिहै शल्य कर्णको अंसा॥

निज हीनी अरु शत्रुकी, सुनत बड़ाई कान।
रिसवश ह्वैहै कर्ण तब, सूधे लगि है बान॥

यह कहि धर्मराज समुझाये। एवमस्तु कहि शल्य सिधाये॥
बाहर नगर भीम पहुँचाये। विदा भये पुनि शीस नवाये॥
दै असीम नृप शल्य सुजाना। पुनि मतङ्गपुरगत बलवाना॥

लीन्हा ।न आदर करि लीन्हा । प्रीतिसहित अभिवादन कीन्हा ॥
॥ सदन शिविर करवाये । सुनहु भूप अब चरित सुहाये ॥
॥ कौशिलाको महिपाला । वृहदवली आयो तिहिंकाला ॥
ले ॥ दल चलत धरा पुनि हाली । सूर्य्यवंशकी धरे प्रणाली ॥
कुरुनन्दन अनुज पठायो । आदरते सब शिविर करायो ॥
बहु प्रकार सतकार करि, खान पान सन्मान ।
मिलत शिविर नित प्रति अधिक, सबलसिंह चौहान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

हरिपद पङ्कज ध्यान धरि, ऋषय नयन जलपूरि ।
कह मुनि जनमेजय सुनहु, कथा अमियरसभूरि ॥
गर अवन्तीते चलि आयो । भूप विन्द अनुविन्द सुहायो ॥
ीन्हें संग चमू चतुरंगा । रथ पदाति गज वाजि अभंगा ॥
ुधामन्यु अरु वीर तमोजा । आये सेन सहित कांबोजा ॥
ाजा राजपुत्र बलवाना । आये अमित कटक विधि नाना ॥
सेना सहित उलूक नरेशा । पुनि गजपुरमहँ कीन्ह प्रवेशा ॥
जुरेउ हस्तिनापुरी समाजा । साठि सहस्र छत्रधर राजा ॥
इहां युधिष्ठिर पार्थ बुलाये । भ्राता सुनहु कृष्ण नहिं आवे ॥
ताते तुम लै आवहु जाई । दरश पाइ गत विपति बुझाई ॥
अर्ज्जुन नृपकी आज्ञा पाई । चले तुरंग चरण शिर नाई ॥

वेगवन्त जोते रथ वाजी । लायहु तुरत सारथी साजी ॥
चले किरीटी अति हरषाई । चले जोवत मग वार न लाई ॥
सतयें दिवस गोमती तीरा । उतरि अन्हाये निर्म्मल नीरा ॥
जल निर्म्मल गम्भीर अति, वनज विपुल बहुरंग ।
मधुपमत्त गुञ्जत भ्रमत, कलरव करत विहंग ॥
आगे चलि द्वारावति देखी । मनमें भवन विचित्र विशेखी ॥
कनक रचित मणिखचितदेवाला । अष्टद्वार पुर तोरण विशाला॥
अति गभीर जलयुत पद्वाना । उठत तरंग पयोधि समाना ॥
श्वेत रक्त मणि हरित वधावा । परम अनूपम रूप सोहावा ॥
दच्छिण ओर समुद्र विराजा । पश्चिम दिशि रैवत गिरिराजा ॥
कोटिन पुरमहँ उड़त पतंगा । हंस मयूर कपोत विहंगा ॥
निर्त्तत कोटिन केतु पताका । अति उतंग जनु चुम्बत नाका ॥
कोटिन गज कुन्तल लै आवैं । सरित घाट महं नीर पियावैं ॥
करत विहार द्विरद मतवारे । गिरिसम वपुष झूलते कारे ॥
कोटिन वाजि साहनी आवें । नीर पियाइ नदी अन्हवावैं ॥
अति उतंग पुरद्वारशुभ, मणिमय मंजु किवाँर ॥
कोटिन दरवानी खड़े, लिये हाथ हथियार ॥
कोटिन मणिमय रुचिर कँगूरा । अति उतंग नभ परस तजूरा ॥
जम्बूनद मणिगणयुत नाना । शोभित सभग सुरेशसमाना ॥
रंग रंग रतन की भासा । रविकर परसत करत प्रकासा ॥
पुर शोभा कुन्तीसुत देखत । जीवन जन्म सफलकरि लेखत ॥

बिधि पवँरि द्वार चलि आये । दरवानिनलखि शीशनवाये
बचन सुधि करत तुम्हारो । संध्या समय रहे वनवारी ॥
नगि मन्दिरते कढ़ि आई । सत्यकिसों इमि वचन सुनाई
युगल मास सुनु भाई । अर्ज्जुनकी कछु सुधि नहिं पाई ॥
वेगि विलम्ब न कीजै । लोचनलाहु निरखि चलि लीजै ॥
कहि शयन भवनमनदीन्हा । अर्ज्जुन सुनत हर्ष मन कीन्हा
अवसर दुर्योधन आये । शयन किये यदुनन्दन पाये ॥
के हृदय गर्व नहिं थोरा । वैठेउ जाइ शिरहने ओरा ॥
पार्थ सोवत यदुनाथा । ठाढ़भये सन्मुख करि माथा ॥

परशि चरण ठाढ़े भये, हरि पाँयनकी ओर ।
हिये प्रीति अति मन विमल. श्रीसुरराजकिशोर ॥

हो समय जगतपति जागे । देखेउ पारथ पाँयन आगे ॥
सप्रेम देखि बनवारी । मिलन हेतु द्वौ भुजा पसारी ॥
र्ज्जुन गहे चरण लपटाई । भुज गहि हरि लीन्हे उर लाई ॥
शल प्रश्न पूँछेउ बहुभाँती । पुनि पुनिमिलतजुड़ावतछाती ॥
हि अवसर कुरुनन्दन आये । अभिवादन कहि आप जनाये ॥
दुपति कुरुनाथहि पहिचाना । मिलेवहुतविधि करिसन्माना ॥
हि भुज लै समीप वैठाये । पूँछेहु नृप केहि कारण आये ॥
हँसि बोले दुर्योधन राजा । सुनहु कृष्णआयहुँजेहिकाजा ॥

करो सहाय हमार तुम, जो कीन्हों वहु बोध ।
वहुत कहा तुमते कहैं, जानत वंशविरोध ॥

ताते तजि अब पाण्डव सङ्गा। तुम हरि होहु हमारे अङ्गा॥
क्षत्रिय धर्म्म सुनहु यदुराई। जाके भवन प्रथम जा जाई॥
सो ताहीको होइ सहायक। करहु विचार होइ जो लायक॥
आयउँ भवन प्रथम मैं तुम्हरे। हे हरि होहु सहायक हमरे॥
सुनि यदुपति बोले मुसुकाई। दल बल हीन युधिष्ठिर राई॥
निज आगम कह आप विशेखा। हम प्रथमहि पारथको देखा॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै। करहु विचार बेगि सो कीजै॥
यह कहिकै हरि माया प्रेरी। बरबस जाय तासु मति फेरी॥

चारि लक्ष गोपालगण, वाहन अश्व समेत।
एक ओर हम शस्त्र बिन, कहो भूप को लेत॥

होन प्रथम छोटे को ऊरा। पाछे लेइ जेठ को पूरा॥
यह कहि विहँसे शारँगपानी। मुख देखत माया लपटानी॥
ज्ञानभङ्ग दुर्योधन भयऊ। हरिमुखनिरखिवचनयहकहेऊ॥
हे हरि नटवर वेष तुम्हारा। नाचत गावत लै परदारा॥
गजपुर सनि आये सब राजा। तिनमहँ कौन तुम्हारो काजा॥
ताते हरि सेना हम लीन्हेउ। तुमकहँ हम अर्जुनको दीन्हेउ॥

कह्यो किरीटी विहँसि तब, सुनिये यादवराइ।
आपु हमारे पग धरिय, दल कोऊ लै जाइ॥

सुनि हरि गण गोपाल बोलाये। मणिमयकुण्डलमुकुटसोहाये॥
मणिमय भूषणहार विराजत। जटितवसन तनुशोभाछाजत॥
मणिमय कवच बड़े धनुधारी। शोभित मनहुँ बरात सुधारी॥

कञ्चन मणिमय स्यन्दन भारी। गजमुक्ता झालरि छविभारी॥
सो दल दुर्योधनकहँ दीन्हा। करिसन्मानविदाप्रभुकीन्हा॥
भयो प्रसन्न हिये महिपाला। चलेउ संग लै गणगोपाला॥
गयो बहोरि जहां बलदेवा। चरण परशि विनयौ बहुसेवा॥
अर्ज्जुन साथ जात यदुनाथा। चलहुसंग स्वहिकरहुसनाथा॥
उन पाण्डवको कीन्ह सहारा। सब प्रकार मैं दास तुम्हारा॥

भये युधिष्ठिर ओर हरि, सो जानत सब भेव।
मनसा वाचा कर्म्मणा, मैं तुम्हार बलदेव॥

अस कहिपरेउचरण कुरुनायक। नाथकृपाकरि होहुसहायक॥
राखत सदा भरोस तुम्हारा। तुम बिन कौन मोर रखवारा॥
हलधर सुनेउ भूपकी वानी। बोले वचन दीन अति जानी॥
हम इत हरि उत बात न नीकी। सुनहु कहौं तुम्हरे हितहीकी
लेहु सेन संग मन्त्र हमारा। होई सोइ जो लिखा करतारा॥
अस कहि लच्छ दीन्ह सँग योधा। विदा कीन्ह बहु भांतिप्रबोधा
दुर्योधन लै सँग सिधाये। कृतवर्म्माके मन्दिर आये॥
देखत कृप नृप आसन दीन्हा। बहु प्रकारते आदर कीन्हा॥

बैठारे आसन विमल, करि बहुविधि सतकार।
कुशल प्रश्न पूछत नृपहि, अति हित बारहिंबार॥

अहो भूप कछु आज्ञा दीजै। करि अनुकम्प काज सोइ कीजै॥
अतिशय कृपा करी कुरुनाथा। तुव आगम मैं भयों सनाथा॥
सुनि दुर्योधन वचन सुनाये। सुनहु भूप जेहि कारण आये॥

सो जानो सब बात तुम्हारी। पाण्डव हमैं बैर है भारी॥
उनके साथ आपु बनवारी। तुम नृप करहु सहाय हमारी॥
सो सुनि कृतवर्म्मा तब बोले। धीरवीर अरु समर अडोले॥
भूप तुम्हार साथ हम दीन्हा। यह प्रण मैं निश्चय करि कीन्हा॥
यह सुनिकै सेना हँकराई। भयउ अरूढ़ निशान बजाई॥
लीन्हें साथ चमू चतुरङ्गा। अक्षौहिणी एक नृप सङ्गा॥
कीन्ह हस्तिनापुरी प्रवेशा। करवायो तेहि शिविर नरेशा॥
सैन विचित्र देखि सुख माना। जीते युद्ध शकुनि मन जाना॥
कर्ण दुशासन बहुत अनन्दे। पुनि पुनि कुरुनन्दन पद बन्दे॥
यह सुधि धृतराष्ट्रक सुनि पाई। बहु अनन्द नहिं हृदय समाई॥
यहाँ कृष्ण अर्ज्जुन सँग लीन्हें। अन्तःपुर प्रवेश प्रभु कीन्हें॥
रुक्मिणि सतभामादिक नारी। आईं सुनि अर्ज्जुनकहँ भारी॥
बैठे पार्थ सहित बनवारी। सतभामा तब चरण पखारी॥
जाम्बवती जल भाजन लाई। पानदान लक्ष्मणा लयाई॥
कालिन्दि अतर दान कर लीन्हें। सतभामा भोजन हित कीन्हे॥
यहि प्रकार आठौ पटरानी। अति हितकरत कृष्ण प्रिय जानी॥

हरि समेत भोजन किये, दियो रुक्मिणी पान।
सतभामादिक नारि सब, करत विविध सन्मान॥
कुशल प्रश्न पूछो सबन, अति हित वारम्बार।
है अभिमनु नीके तहाँ, सबके प्राण अधार॥

सो सुधि पाइ देवकी आई। देखि युगल तनु आनन्द छाई॥

हरि अर्ज्जुन उठि कीन्ह प्रणामा। दीन्ह अशीष होइ मनकामा
माता पुनि पुनि कण्ठ लगाई। बोली वचन नयन जल छाई॥
तुम बिन रहेउ हिये अति शोका। तेरह वर्ष वादि अवलोका॥
सुनहु कृष्ण जो मन्त्र हमारा। प्राणहुते मोहिं अधिक पियारा॥
तुमहिं त्यागि कहिं और न जाना। रक्षा तुम कीजै भगवाना॥
कहि अस वचन देवकी रानी। अर्ज्जुन कहँ सौंप्यो गहि पानी॥
हरि अर्ज्जुन उठि बार न लाये। निज पितुके मन्दिर चलि आये

करि प्रणाम अर्ज्जुनसहित, कहेउ कृष्ण सब भेव।
दइ अशीष आनन्दसों, बिदा किये वसुदेव॥

निकरि पवँरिते बाहर आयो। तब श्रीहरि सात्यकी बुलायो॥
होहु तयार सेन सजि भाई। हेरत बाट युधिष्ठिर राई॥
सुनि सात्यकि निज सेन हँकारी। आयुध बाँधि लीन्ह असवारी
दारुक नाम सारथी साजी। स्यंदनभानु जानु लखिलाजी॥
सुग्रीवादिक हय मचि आई। भे अरूढ़ हरि शङ्ख बजाई॥
भुज गहि अर्ज्जुन सङ्ग चढ़ाये। पवन-वेग रथ हाँकि चलाये॥
गमनी सङ्ग चमू चतुरङ्गा। उठी धूरि छपि गयउ पतङ्गा॥
पारथ पूँछत विविध कहानी। कहत जात मग शारङ्गपानी॥

पारथपूँछेउ जोरि कर, कहिये श्रीभगवान।
शत्रुविजय अरु मोर हित, सबलसिंह चोहान॥

इति अष्टम अध्याय॥ ८॥

कहेउ कृष्ण अब सुनु मतमोरा। यामें है अर्ज्जुन हित तोरा॥
होइहै सकल शत्रुको नासा। मिलिहिराज्यतोहिंबिनहिंप्रयासा॥
जाके अंश मोर अवतारा। पालत सृजत हरत संसारा॥
सुमिरण करत शक्ति तुम सोई। पूरण सकल मनोरथ होई॥
सुमिरण कीन्ह शक्र फल पावा। जेहि प्रसाद सुरनाथ कहावा॥
विधि कर्ता अरु हर संहर्ता। जासु प्रसाद विष्णु जगभर्ता॥
पारथ करै तासुको ध्याना। सब प्रकार होइहि कल्याना॥
सो जानहु सब मोर स्वरूपा। प्रकृति पुरुष है एक स्वरूपा॥
करहिं भेद जे नर अज्ञाना। परहिं नरक पावहिं दुख नाना॥

भयउ बोध अर्ज्जुन कहेउ, कहिये श्रीभगवान।
जेहि प्रकार ते कीजिये, परमशक्तिको ध्यान॥

प्रेमातुर जानेहु भगवाना। लागे कहन शक्तिको ध्याना॥
दिशा वसन अरु शक्ति कराला। पहिरे उर मुण्डनकी माला॥
अंग अंग अहि भूषण नाना। शिवारूढ़ अरु बसत मशाना॥
मुक्तकेश अरु वदन पसारे। जिह्वा ललन दशन भयकारे॥
निकसत अरुण नयनतें ज्वाला। अष्टबाहु तनु श्याम तमाला॥
घुरघुर शब्द सहित घनघोरा। शिवानाद पूरित चहुँ ओरा॥
मुण्ड एक कर एक कृपाना। एक कर अभय एक वर दाना॥
एक पाणि मदिरा कर भाजन। एक पाणि श्टङ्गीहितु बाजन॥

एक हाथ में खड्ग धर, इक शूली वर धार।
उठत प्रभा नभतेजकी, रवि शत कोटि अपार॥

यहि प्रकार हरि भेद बतायो । अर्जुन नयन मूदि तब ध्यायो ॥
कीन्ह ध्यान क्षण एक बहोरी । अस्तुति करत दोउ करजोरी ॥
जयगिरिजा जयप्रणतपालिका । असुर राज मृगयुद्ध जालिका ॥
महिषमर्दिनी मातुकालिका । नितभक्तनकी विपति घालिका ॥
जयजयजय महिषासुर मर्दिनि । अजाकुजा जयमातुकपर्दिनि ॥
शिवा शम्भु घरणी शिव दूती । जेहि सुमिरे जग सकल विभूति
चण्डमुण्डदलनी अरु चण्डी । ललिता ललितरूपखल खण्डी ॥
धूमावती सती तुव सीता । होहिं काम सब अरिगण जीता ॥
रिपुखण्डन तुव नाम पुनीता । शीशहि जटाकण्ठ शुभगीता ॥
तारा तरणि तारनी गङ्गा । त्रैपुरकी त्रयताप विभंगा ॥
कुला कुरू कुरु कुलमहरानी । गिरा हरा जय जय श्रीवानी ॥

छिन्ना तू बगलामुखी, वाराही जगमाय ।
चरण शरण जगदम्बिका, कीजे वेगि सहाय ॥
करौ राजराजेश्वरी, मातंगी दुखहानि ।
दँड दै दुष्ट विपतिकै, राखि लेहु जन जानि ॥

साँची दुख दलनी जय बाला । करहु कृपा अब होहु दयाला ॥
प्रकटयो एक गगनथल ज्वाला । अस्तुति करैं देव दिगपाला ॥
व्योम गिरा यह भयो महाना । माँगु माँगु अर्जुन बरदाना ॥
गगन गिरा सुनि मन हर्षाई । बोलेउ पार्थ चरण शिरनाई ॥
शत्रु विजय अरु नृपकल्याना । मांगत मातु देहु बरदाना ॥

है प्रसन्न सुनि अर्जुन वानी। एवमस्तु कहि गई भवानी ॥
तब दारुक हय हांकि चलायो। चले मरुत गति बार न लायो॥
सात्यकि चले कृष्ण रथ सङ्गा। लीन्हें साथ चमू चतुरंगा ॥
गयउ युधिष्ठिर कटक समीपा। किये शिविर तब सकल महीपा
जहँ जहँ कोटिन तनिन विताना। जहँ तहँ बाजैं नौवतिखाना॥
गर्जन गज हींसत बहु घोरा। हाहाकार शब्द चहुँ ओरा ॥
पर विराट दल जुरेउ अपारा। नहिं कोउ काहू जाननहारा ॥
होत नाद घरियार घनेरा। ध्वजा देखि परखिय नृप डेरा ॥

अन्ध धुंध दल नृपनके, परत न कतहूं जानि ॥
रंग रंग झंडा गड़े, भूपतिको पहिचानि ॥

तब दारुक हरि रथहि चलावा। पवँरि अजात शत्रु की लावा॥
द्वारपाल तब जाहि जनाये। महाराज हरि अर्जुन आये ॥
बहुत अनन्द भूप मन कीन्हों। बाहर निकसि पँवरिते लीन्हों ॥
कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा। रथते उतरि मिलेउ यदुनाथा
अर्जुन मिलेउ चरण गहि धाई। दीन्ह अशीश युधिष्ठिर राई ॥
कृष्ण समेत सभा पुनि आई। बैठे अति प्रसन्न सुख पाई ॥
प्रभुकहँ सिंहासन बैठारा। बहु विधि नृप कीन्हों सतकारा ॥
चरण धोइ चरणोदक लीन्हा। पावन भवन सींचि जल कीन्हा
तेहि अनन्तर भीमादिक भाई। परसे चरण कृष्णके आई ॥

प्रीति सहित यदुवंश मणि, भेटि हृदय लगाय ।
बैठारे सन्मान करि, हर्ष सहित सुख पाय ॥
दुइ कर जोरि कृष्णके आगे । विनती करन धर्म्मसुत लागे ॥
हे प्रभु तुव करतूति महाना । थके चारि श्रुति अन्त न जाना ॥
महिमा अमित वेद जो गावत । नेति नेति कहि नेति सुनावत ॥
सहस वदन सो शेष वखानत । पुनि सोउकहत पारनहिंजानत ॥
शारद सनकादिक सुर नाना । विधि नारद केहु पार न जाना ॥
शिव सामर्थ जानि सब पावा । बहु प्रकार कहि नेति सुनावा ॥
यद्यपि निर्गुण वेद बखाना । जनहित सगुणहेत भगवाना ॥
मत्सरूप धरि वेद उधार्यो । हे प्रभु तुम शङ्खासुर मार्यो ॥
हाटकदृग धरणी हरी, सो लै गयो पताल ।
कीन्ह विनय सुर वोसनिशि, भयोप्रकट ततकाल ॥
धरि वराह वपु श्रीभगवाना । पैठि सिन्धुमहँ धरे विषाना ॥
अधम कनकलोचन तुम मारा । कीन्हेउ वहुरि धरणिविस्तारा ॥
व्याकुल जन प्रह्लादहि जानी । होइ नरहरि मार्यो अभिमानी
हिरण्याक्ष निज लोक पठावा । हरीविपति हरिदास वचावा ॥
कमठ रूप धरि मन्दर लीन्हों । मथ्यो पयोधि सुरन सुखदीन्हों ॥
मधु हे नाथ असुर वौरायो । किये असुरसुर सुधा पिआयो ॥
ह्वै वामन अमरेश वचायो । वलिछलि वांधि पतालपठायो ॥
पुनि प्रभु परशुराम वपुधारेउ । अधमनरेश नाश करि डारेउ ॥
सकल भूमिको भार उतारा । कीन्हों वहुरि धर्म विस्तारा ॥

देखि देखि महिदेव दुख, धरणि विलोकिअनाथ ।
कीन्ह दयाप्रभु अवधपुर, प्रगट भये रघुनाथ ॥

रावण कुम्भकर्ण खल मारा । करि सनाथ महिभार उतारा ॥
कृष्ण रूप अब मम हितकारण । कीन्हे उनाथ धरणिपरधारण ॥
जयमधुसुर अघनरक विनाशन । चक्रपाणि जय श्रीगरुड़ासन ॥
केशी कंस हने चाणूरा । मुष्टिक असुर शकट अघ क्रूरा ॥
जय वृन्दावनविपिन विहारी । महिमा अगम अपार तुम्हारी ॥
होतहि प्रगट पूतना मारी । हरी ताप यशुदाकी भारी ॥
तृणावर्त्त वौंडर ह्वै आवा । कण्ठ चापि प्रभु मारि गिरावा ॥
मारेउ अधम भूप शिशुपाला । काटेउ सकल भूमिको शाला ॥
विप्र सुदामा दारिद नाशा । पूजौ सब प्रकार प्रभु आशा ॥
जहँ तहँ परे दास तुव गाढ़े । करि सहाय सङ्कट ते काढ़े ॥
गहेउ ग्राह गज कीन्ह पुकारा । आवत नाथ न लागीबारा ॥
ग्राह मारि निज धाम पठावा । मिटीविपतिगजविनयसुनावा ॥
परी विपति प्रहलाद पुकारा । पवित्ते प्रकट न लागी वारा ॥
असुरमारि पठयो निज लोका । निजसेवककहँ कीन विशोका ॥
दशमुख हनि बैकुण्ठ पठायो । भयविशोकसुरमुनिसुखपायो ॥
मैंमैहि कृपादृष्टि अवलोकौ । हरहुविपतिस्बहिकरहुविशोकौ ॥

असकहि भूपति पदगहै, पाहि पाहि यादौन ।
काटहु सङ्कट विकट अब, ह्वै दयाल दुखदौन ॥

ह्वै प्रसन्न यदुवंश मणि, तब बोले हरराय ।
गई विपति धीरज धरहु, धर्मपुत्र भुवराय ।
शरणागतपालक बिरद, विदित भार संसार ।
ताते अब तन मन वचन, करब सहाय तुम्हार ॥
इति नवम अध्याय ॥ ९ ॥

अस नृप सुनहु कथा मनलाई । हरि सुधि पाइ द्रौपदी आई ॥
परशे चरण प्रेमयुत आनी । नयन नीर मुख कहत न बानी ॥
हरिहि देखिकै रोवन लागी । विह्वल वचन शोकते पागी ॥
हे प्रभु जब तुम यज्ञ कराई । द्वारावती गये यदुराई ॥
तब जो भई अवस्था मेरी । सो अब सुनहु जानि निजचेरी ॥
विभव देखि कुरुपतिहिन भावा । ह्वै उदास निज मन्दिर आवा ।
शकुनी कर्ण दुशासन आये । बैठि सबन मिलि मन्त्र दृढ़ाये ॥
दल बटोरि करि युद्ध दरेरा । लीजै राज्य पाण्डवन केरा ॥
करि मत बुद्धिचक्षु यह आई । सकल कथा तिन कहि समुझाई ॥
बिन समझे अज्ञानतै, तुम मानत मन रोष ।
अब सुत करहु विरोध जनि, उनकर कछु नहिं दोष ॥
उनते युद्ध न तुम बरिऐहौ । बिना काज कत बैर बढ़ैहौ ॥
कह्यो भूप तुम कहत बिलोका । हमरे मते मन्त्र नहिं नीका ॥
उन कहँ दीन विभव करतारा । तुमहिं उचितनहिं करब बिगारा ॥
बोले शकुनि तेज छलकारी । सुनहु भूप यह बात हमारी ॥

युद्ध करव जनि नृप अज्ञानी। हारि जीति कछु परत न जानी॥
मोहि अक्षविद्या निपुणाई। लेइय जीति खेलि प्रभुताई॥
जीते ख्याल विरोध न होई। काढ़िय द्रव्यहीन करि सोई॥
सुनि मत धृतराष्ट्रक मनभायो। द्यूतहेत उन नृपति बुलायो॥
गये नरेश सहित परिवारा। सभा द्यूतको वरणै पारा॥
धरत दाँव शकुनी यह भाखै। जीतौं जीति लेउ नृप राखै॥
जीतौं राज्य पाट भण्डारा। हय गज रथ ससेत परिवारा॥
नहि कछु भूपति धर्म्म विचारौ। चारिउ वन्धु अपनपौ हारौ॥
कह्यो शकुनि अव जो कछु होई। धरहु भूप हम जीतैं सोई॥
कह नृप धरहु द्रौपदी रानी। जीतव तेह कही यह वानी॥
यह कहि शकुनी पाँसा डारे। जीतेउ कुरू धर्म्मसुत हारे॥

भये दुखित भीषम विदुर, द्रोण रहे शिर नाय।
गये सभातें उठि तुरत, वाहुलीक अकुलाय॥

शकुनी कर्ण वहुत हरषाना। अतिशयसुख दुर्योधन माना॥
कहेउ भ्रातकासोते वोली। मैं जीती नृप नारि अमोली॥
द्रुपदसुता पाण्डवकी रानी। ताकहँ मोहि मिलावहु आनी॥
कहेउ संदेश धर्म्मसुत हारी। अव तुम दासी भइउ हमारी॥
मैं अभिमत्त नृप पर तोरे। वैठहु आनि जंघपर मोरे॥
सकल नरेश आनि त्यहि कहेऊ। पाण्डवनाथ क्रोध उर दहेऊ॥
भिम करि कहेउ धीरधरि गाढ़ा। येरे अधम दूरि रहु ठाढ़ा॥
हम कौरवपतिके रिपु सोहूं। नीच सँभारि न वोलत तोहूं॥

तू शठ मोर प्रभाव न जाना । बोलतवचन सहित अभिमाना ॥
यह सुनि भानुमती रिसवाई । जानत नीच मृत्यु तव आई ।
सुनि अस वचन वहुत भय पावा । सूत बहुरि कुरुपतिपहँ आवा॥
सुनत सँदेश वहुत दुख मानी । नहिं आवत कौरवपति रानी ॥

दुःशासनते बोलिकै, कहेउ भूप रिसवाय ।
गहिकै केश घसीटिकै, तुम लै आवहु जाय ॥

यहि की वात सकल मैं जानी । लावा सो न भीम भयमानी ॥
सुनत वचन दुःशासन आवा । चलहु वेगि तोहिं भूप वोलावा ॥
यहि विधि वचन दुशासन कीन्हा ।सुनु यदुनाथ उतरु हम दीन्हा
पूछति सत्य दुशासन चौंको । हारे प्रथम भूप की मोको ॥
जो नृप प्रथम अपनपौ हारा । भये दास नहिं नाम हमारा ॥
हारो होय प्रथम मोहिं राजा । दासी होत न मोको लाजा ॥
सुनत दुशासन अति रिसमानी । गहिकै केश सभामहँ आनी ॥
तव यदुनाथ मोहिं रिसलागी । कहेउ छोड़ मम केश अभागी ॥
रजस्वला मैं यक पट धारी । मुंच मुंच रे शठ अपकारी ॥

सभामध्य वैठे सवै, कौरव कुलसरदार ।
लिये जात मोकहँ निलज, करत अधम अपकार ॥

कस रिस करत पति न तुहि हारी । अब तुम दासी भई हमारी
चेरिनकेरि कवन वड़ि लाजा । चलु बोलत दुर्योधन राजा ॥
मम गति देखि सकल रनिवासू । करत विलाप दरत दृगआँसू ॥
सो सुधि गान्धारी सुनि पाई । करि विलाप पाछे उठि धाई ॥

छूटे बार न चीर संभारा। हा पुत्री कहि करत पुकारा॥
जब लगि कही भवनते रानी। तबलग नीच सभामहँ आनी॥
भीषम विदुर नाइ शिर लीन्हा।कृप अरु द्रोण शोच जियकीन्हा।
शकुनी कर्ण बहुत सुख पावा। दुर्योधन यहि भाँति सुनावा॥

दुःशासन तें तब कह्यो, दुर्योधन मुसक्याय॥
वस्त्रहीन करि जंघपर, बैठारो तिय आय॥

सुनि यह वचन शकुनिहँसिदीन्हा॥ विकरणदेखि क्रोधजियकीन्हा॥
दुर्योधन न लहिं कौरवकुलराजा। कहत विलोकिवचनतजिलाजा
ज्येष्ठ बन्धु तिय मातु समाना। वर्णन आगम निगम पुराना॥
तात मानि अब विनय हमारी। छाँड़ि देहु अब द्रुपद कुमारी॥
यश कीरति जग पूर्ण मयंका। जनि लावहु नृपकुलहिकलङ्का॥
जब विकर्ण यहि भांति बखाना। सुनत वचन तब कर्ण रिसाना॥
बालहि न ऐस नारि मनलायक। जाहु भवन खेलहु धनु सायक॥
सुनि यह वचन मौन ह्वै रहेऊ। दुःशासनते तब नृप कहेऊ॥

नग्न करौ तुम द्रौपदी, निजकर वसन उतारि।
बैठारौ लै जंघपर, यह रुचि बन्धु हमारि॥

भीषम द्रोण रहे चुप साधी। पकरेसि वसन अधम अपराधी॥
लागेउ खैंचन चीर अभागो। भई विकल मैं रोवन लागी।
सब भाँति देखि पतिन दुख पावा। अश्रुपात करि महिशिरनावा
हरो नाथ भयउ दुख भारी। दीनबन्धु मैं तुम्हैं पुकारी॥
हा यादवपति हा दामोदर। हे माधव हे हलधरसोदर।

हे गोविन्द गिरिधर वनवारी । कृष्णकृष्ण कहि शरण पुकारी ॥
हे मुरलीधर राधानायक । वासुदेव अब होहु सहायक ॥
खेंचत वसन कुमारगगामी । राखहु लाज दया करि स्वामी ॥
नाथ वसनमहँ आपु समाने । रही लाज कौरव खिसियाने ॥
खेंचत वस्त्र दुशासन हारा । अम्बरके लाग अम्बारा ॥
यह चरित्र देखा सब काहू । हाली धरा भयो दिग्दाहू ॥
विन घन आसमान घहराना । कौरव सभा सबहि भय माना ॥
भूप यज्ञशालामहँ आई । शिवा शब्द कीन्हीं अधिकाई ॥
बोलत रासभ श्वान कुमारा । गगन दुष्ट पक्षी गण तारा ॥
खेंचत थकेउ दुशासन वासन । वसन छोड़ि बैठ्यो निज आसन ॥
शीश नाय नृप बैठ उदासा । चकित भये सब देखि तमासा ॥

अम्बरहीन विलोकि नृप, बोल सकेउ नहि वयन ।
रक्षा कीन्ही करि कृपा, तुम प्रभु पङ्कजनयन ॥
तजी लाज अर्ज्जुन नकुल, धर्म्मराज भय मानि ।
सहदेवा बोले कछुक, भीमसेन बलखानि ॥

कहत द्रौपदी करि करि रोसा । मोहिं न कुन्तिहिसुतन भरोसा ॥
इन पति नाकछु पति न हमारी । तुम रक्षा कीन्ही वनवारी ॥
पूँछेउ धृतराष्ट्रक सञ्जयसों । होत कहा कहिये सो मोसों ॥
अक्षहीन कछु परत न जानी । सुनि सञ्जय कछु कथा बखानी ॥
दुःशासनहिं दीन्ह दुरि आई । करि प्रबोध म्वहिं निकट बोलाई ॥
कीन्ह कुत्ति मैं नहिं कछुजाना । मांगु मांगु एती वरदाना ॥

बुद्धिचक्षु करि क्रोध अपारा । बार बार पुत्रन धिक्कारा ॥
तेहि अवसर गान्धारी आई । देखि अनीति सुतन रिसि आई ॥
करेउ विलोक कर्म्मभ्रमत्यागी । परिहौ नरक असाधु अभागी ॥

धृतराष्ट्रक अति प्रीतितें, कहे मांगु वरदान ।
दासभाव निज पाण्डुसुत, मैं मांग्यो भगवान ॥

वाहन अस्त्र पतिनके देहू । बिदा करिय अब करि नृप नेहू ॥
कहो भूप दीन्हों मैं तोहीं । प्राण समान सुता तुव मोहीं ॥
बुद्धिहीन इन कीन्ह कुकर्म्मा । छाँड़िनि लोकलाज कुलधर्म्मा ॥
धर्मराय दुर्योधन पोच न । कहत सत्य मोरे द्वै लोचन ॥
यह सकोच जानो जिय भोरे । प्राणन अतिशय हैं प्रिय मोरे ॥
द्रुपदनन्दना मम वचन प्रमाना । अब तुम माँगि लेहु वर आना ॥
अब न मनोरथ पूजा आशा । यहि अन्तर पुनि वचन प्रकाशा ॥
अभिमत मिलो कृपा भव तोरे । तव प्रसाद होइहि सब मोरे ।
क्षत्रिय लेइ तीन वरदाना । विप्र चारि माँगे नहि आना ॥
द्वै वैश्यन्ह शूद्र कहि एका । माँगे अवर होइ अविवेका ॥

वाहन अस्त्र देवाइकै, बिदा कीन्ह महिपाल ।
परसि चरण निज चढ़ि रथन, चले भवन तेहि काल ॥

सौबल नाम शकुनि को भाई । मिल्यो पन्थमहँ गयउ लेवाई ॥
कौरन संमत सभा बैठायहु । पंसासार बहुरि मँगवा यहु ॥
अर्जुन जीतेउ सकल परिवारा । मिटै न जो प्रभु होनेहारा ॥
जीत्यो अब बड़ो यह काजू । द्वादश वर्ष तजै सो राजू ॥

विपिन वास करि वर्ष बिताई। करै न अन्न अशन फल खाई॥
वर्ष दिवस करि पुर अज्ञाता। करै निवास जानि नहिं जाता।
लीन्हें खोज वहुरि वन जावै। काल विताइ राज्य पुनि पावै॥
रहेउ न कछुक भूपहिं ज्ञाना। धरो दाँव कहि वचन प्रमाना॥
लीन्हों अच शकुनि छलकारी। दीन्हों डारि गये नृप हारी॥

होइ उदास भूपाल तव, वनकहँ कीन्ह पयान।
कीन्ह प्रतिज्ञा क्रोध करि, भीमसेन वलवान॥

निन्दा कीन्ह अधम तैं मोरी। आइ मीचु दुशासन तोरी॥
जेहि कर केश गहे अभिमानी। गहे वसन नँगिआवन रानी॥
सभामाँझ खल कानि न मानी। सो उखारि डारौं तुव पानी॥
वहुरि जंघ ठोंकी कुरुनाथा। तोरौं जंघ गदा गहि हाथा॥
सुनहु सकल निज काल विताई। कृष्ण शपथ करिहौं सव आई॥
सत्य वचन हरि सत्य हमारा। करिहौं सव कौरव संहारा॥
अर्ज्जुन कह्यो कर्णके आगे। हँस्यो मोहिं सवते भ्रम त्यागे॥
शरण मारि जर्जर तनु तोरा। करिहौं कृष्ण शपथ प्रणमोरा॥
सहदेवहु शकुनीसन वोले। विषधर मनहुँ विषरस खोले॥

द्यूत हराये नीच तोहिं, करि छलको अधिकार।
होइहि मोरे करनते, शकुनी मरण तुम्हार॥

वधौं तोहिं नहिं अवधि विताई। मोहिं युधिष्ठिर भूप दोहाई॥
येही भाँति नकुल वनवारी। सभामध्य कीन्हों प्रण भारी॥
सहदेव कह्यो शकुनिते जैसे। कह्यो शल्यते राजा तैसे॥

हँसेउ मोहि कछु कानि न मानी।करि बहुवार कितव अभिमानी॥
बीते काल न तोकहँ मारौं। तौ नहिं धनुषवाण कर धारौं॥
मोरे उर उपजा अति रोसा। प्रणकीन्हों कहिनाथ भरोसा॥
करि अस्नान रुधिर तुव धारा। बांधौं तव दुःशासन वारा॥
तुव बल प्रण ठानेउँ यदुराई। उचित होइ तस करिय उपाई॥
पुनि हम पांच पाण्डुसुत रानी।श्रीमुख भगिनी कहत वखानी॥
तेइ तुम साक्षात भगवाना। पाण्डव हैं अतिशय बलवाना॥
तिनहिं अछत यह हाल हमारा। यथा अनाथ नाथ बिनदारा॥
तेरह वर्ष न बाँधे केशा। फिरत अजहुँ विधवाके भेशा॥

सुन्यो द्रौपदीके वचन, लोचन मोचत वारि।
कहौ प्रतिज्ञा कीन्ह सो, होइहि सत्य तुम्हारि॥
सबलसिंह चौहान कहि, भक्तिवश्य भगवान।
बैठारा पुनि द्रौपदी, करि बहुविधि सनमान॥

इति दशम अध्याय॥ १०॥

पूँछेउ सुनि जनमेजय राई। कथा विचित्र कहो मुनि गाई॥
सुनत श्रवण नहिं तृप्ति हमारा। कहिये नाथ सहित विस्तारा॥
भयो प्रसन्न सुनत नृप बानी। लागे कहन कथा मुनि ज्ञानी॥
तेहि अवसर आये सब राजा। कन्यासहित जहँ भूपति राजा॥
नाइ नाइ शिर हरिहि जोहारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥

ताही समय द्रुपद नृप आये । सुतन सहित हरिपद शिर नाये ॥
देखि नृपहि वसुदेव कुमारा । मिले वहुरि आसन बैठारा ॥
परसे चरण विराट भुवाला । सनमाने तब दीनदयाला ॥
कह्यो भूप सुनिये यदुराई । अब करिये प्रभु कौन उपाई ॥
हे हरि यतन बतावहु सोई । जामहँ मोहि परम हित होई ॥
मोसम को जग और सभागी।अति दुख सह्यो बन्धु जेहि लागी॥
मोसम दुखी सुनहु भगवाना । भयो न भूपर भूपति आना ॥
जान्यो कृष्ण भूप दुख पावा । कहि सुरराज कथा समुझावा ॥

वृत्तासुरको वधन करि, भये मुदित सुरराज ।
घेर्यो हत्या आनि तब, छूट्यो राजसमाज ॥

विप्रवंश ताको अवतारा । सुनत कथा दुख मिटा अपारा ॥
भाग्यो अमरनाथ दुख पाई । कमलनालमहँ रह्यो छिपाई ॥
फिरि शतयज्ञ नहुष महिपाला । लह्यो इन्द्रपुर सुनहु भुवाला ॥
सेवहिं सब सुर सहित समाजा । सिंहासन बैठे नहुराजा ॥
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा । सेवहिं मनुज देव मुनि सर्वा ॥
रम्भादिक सुरतिय सब आवैं । करैं गान अरु नृत्य दिखावैं ॥
आवैं सुरतिय करि शृङ्गारा । रमित रहैं नृप करत विहारा ॥

यहि विधि राजसमाजते, बीति गये कछु काल ।
अति प्रमोदते नृप सुनहु, कथा कहौं भूपाल ॥

सो सुधि पाइ सभीत परानी । गुरुगृह गई भागि इन्द्रानी ॥
मार्ग जीव यह विपति सुनाई ।मैं प्रभु चरण शरण अब आई

बहु प्रकार मुनि धीरज दीन्हा । कीन्ही कृपा अभय पुनि कीन्हा ॥
तब मुनगण गुरु सकल बुलाये । बांटि लेहु अब कहि समुझाये ॥
सबपर छिटिकि जाइ सब पापू । मिटै सुरेशकेर परितापू ॥
कीन्हों सब मिलि अङ्गीकारा । सबपर गयो पापको भारा ॥
ऊसर भयो धरा जो लयऊ । प्रथम ज्वालहुत भुकमहँ भयऊ ॥
लीन्हेंउ वरुण भई जल काई । यहि प्रकार सब सुर समुदाई ॥

भयो पाप विन पाकरी, पूरि रह्यो सुख भूरि ॥
पठये ढूंढ़न पाय कहि, गयो विलोकन दूरि ॥

पायक ढूंढ़ि फिरे सब देशा । मिले इन्द्र नहिं भयो अँदेशा ॥
सर्व कथा सुरगुरहि सुनाई । मिलैं कतहुँ तब शची पठाई ॥
ढूंढ़त फिरत विकल इन्द्रानी । मगमहँ मिले देव ऋषि आनी ॥
कीन्ह कृपा तब दीन्ह बताई । कमलनालमहँ रह्यो छिपाई ॥
इन्द्र भाग गिरिपर भय माने । मानसरोवर इन्द्र छिपाने ॥
मुनि नारदके वचन प्रमाना । गई शची तहँ रोदन ठाना ॥
कीन्ह विलाप ताप तनु भारी । बार बार कहि नाम पुकारी ॥
सुनि सुरेश मन दुख अधिकाई । निकरि कमलते दीन देखाई ॥
सुन्दर गुरु कीन्हों अनुरागा । दीन शाप करि सुरन विभागा ॥
रहा न तब शिर अघ लवलेशा । बोलें सुरगुरु चलिय सदेशा ॥

मोकहँ पठयो देवगुरु, लावहु वेगि बुलाइ ।
वचन मानि फुर गुरु वचन, गये इन्द्र हर्षाइ ॥

करि प्रणाम कीन्ह सुरराई । भे प्रसन्नमन आशिष पाई ॥

बैठि इन्द्र पद नहुष नरेशा । मिलै राज तब मिटै अँदेशा ॥
मिलि राजा कहि गुरु सनमाने । दिवस पञ्चदश रहे छिपाने ॥
धर्म्म हीन करि नहुषहि राजा । तब पावहु तुम राजसमाजा ॥
यहि प्रकार सुरपति समुझाये । करि प्रबोध निज भवन छिपाये
कह्यो कथा अब सुनहु भुवाला । भयो कामवश नहुमहिपाला ॥
पठये दूत बुलावहु जाई । बड़ अभिमान शची नहिं आई ॥
कह्यो जाइ नृप बोल्यो रानी । सुनत उत्तर दीन्हों इन्द्रानी ॥

जब चाहत सुरराज मोहिं, वाहन चढ़त नवीन ।
जाइ लवाइ सो मानते, होइ मोर आधीन ॥

तेहि गद्दी नहु आइ विराजा । जाइ लवाइ जहां सुरराजा ॥
दूत जाय यह वचन उचारा । नहु नरेश मन करत विचारा ॥
कहि नवीन चढ़ि यान सिधावहु ।शची बुलाइ भवनकहँ लावहु
तब देवन शारदा बुलाई । बैठि जीभ मति भूप भ्रमाई ॥
शिविका पकरि विप्रगण लाये । ह्वै अरूढ़ तब भूप सिधाये ॥
द्विजन शाप दीन्हों करि शोका ।परै धरणिखल तजि सुरलोका
पुण्यक्षीण होइ नहु महिपाला । पर्‌यो धरापर सो ततकाला ॥
अमरनाथ निज पायउ राजा । भयउ बहुरि सब साज समाजा॥
तैसे तुम पैहौ महिपाला । धरहु धीर बीते कछु काला ॥

सबलसिंह धीरज दियो, करि प्रबोध महिपाल ।
लीन्हें बोलि नरेश तब, मन्त्रहेत त्यहि काल ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

कहेउ भूप अब सकल नरेशा। निज निज मत कीजिय उपदेशा
नृप विराट कह यह मत मोरा। जबलग जिये भ्रन्‌ जग तोरा॥
मिलिहि राज्य नहिं कोटि उपाई। करिय भूपजस तुमहिंसोहाई
सुनत वचन कह द्रुपदकुमारा। सुनहु सकल मिलि मन्त्र हमारा
पहुंचत दूत तुरत अब कोई। समुझावै कुरुपति नृप सोई॥
सुनत वचन हरिके मनभावा। द्रुपद पुरोहित बोलि पठावा॥
अब तुम दुर्योधन पहँ जाई। नाना भांति कहेउ समुझाई॥
करि उपाय कीजै बुधि सोई। जामहँ विप्र भूपहित होई॥
पृथक् पृथक् कहि सबन संदेशा।विदा कीन्ह हरि करि उपदेशा॥

अति प्रसन्न द्विजराज मन, ह्वै शिविका असवार।
नगर हस्तिनापुर तबै, जात न लागी बार॥

पहुँचे विप्र भूपके द्वारे। बोले वचन बोलि प्रतिहारे॥
धर्मराज हरि मोहि पठायो। कहन संदेश भूपते आयो॥
बेतपाणि सुनि जाइ जनावा। बुद्धिचक्षु तब बोलि पठावा॥
गयो सभामहँ द्रुपद-पुरोधा। त्रिकालज्ञ पूरण बुधि बोधा॥
कीन्ह प्रणाम सप्रेम महीपा। बैठारो निज बोलि समीपा॥
आशिर्वाद विप्र तब दीन्हा। नृपसन्मान विविधविधिकीन्हा॥
द्रोण कर्ण तब बैठि समाजा। भीषम बाह्लीक महराजा॥
कृप अरु शल्य जयद्रथ भूपा। बैठे जहँ कौरव कुलदीपा॥
धृतराष्ट्रक नन्दन सौ भाई। बैठे सभा सभेप बनाई॥
सोमदत्त नृप बैठ सुजाना। द्रोणपुत्र गुणज्ञाननिधाना॥

भूरिश्रवा कलिङ्ग अरु, मकरध्वजौ महान ।
बैठि सुवालकुमार तहँ, अरु उलूक बलवान ॥
विप्र सुनाइ कहा सब आगे । कहन सँदेश भूपते लागे ॥
मोहिं पठायो धर्म्मनरेशा । चित दै सुनहु महीप सँदेशा ॥
निकट बुलाइ धर्म्मसुत हमको । प्रथम कहेउ अभिवादन तुमको ॥
कहेउ बहोरि कृपा नृप कीजै । बीती अवधि राज्य अब दीजै ॥
किङ्कर जानि करिय अब दाया । हम तुम्हरे छाँडो मति माया ॥
तेरह वर्ष सहे दुख नाना । सो हरि कियेउ विपति अवसाना ॥
दुर्योधन कीन्ही अनरीती । तुम्हरी कृपा विपति अब बीती ॥
मिटै कलह सो करिय उपाई । यहि विधि कही युधिष्ठिर राई ॥
चलती बार पार्थ मोहिं जाना । कहेउ प्रणाम नरेश सुजाना ॥
मोते कहेउ सँदेश जो, सो सुनिये दै कान ।
मेटो कुलको कलह अब, तुम्हरे सब बुधिमान ॥
कह्यो भीम मोहिं चलतीबारा । कहों जो आयसु होइ तुम्हारा ॥
कही बात जो राखौं गोई । ताते पाप अधिकई होई ॥
कहे न होइ दूत शिर दोषा । ताते सुनिय भूप तजि रोषा ॥
हम तुम्हार अपराध न कीन्हा । करि छल तुम दारुणदुखदीन्हा ॥
बीते कछु दिन तुम फल पैहो । समुझत अबनहिं मनपछितैहो ॥
लैकै गदा युद्ध जब करिहौं । सौ बांधव दुर्योधन मरिहौं ॥
कटैं बन्धु जब विधवा-भेशा । तब करिहौ चित चेत नरेशा ॥
करहुँ निपात सेन तुव काटी देहुँ मिलाइ मांस अरु माटी ॥

रक्त नदी तब बहिहिं महाना। कर्ण आदि कटिहैं भट नाना॥
उठैं कबन्ध गिद्ध पल खैहैं। तब नरेश आधो हम पैहैं॥

अबते चेतहु भूप तुम, सुनिकै वचन हमार।
समुझावो दुर्योधनहिं, वचन सबै परिवार॥

नकुल सँदेश सुनहु दै काना। बुद्धिचक्षु तुम अति अज्ञाना॥
अंश हमार समुझि नृप दीजै। अपने जियत कलङ्क न लीजै॥
जो न देउ नृप अंश हमारा। होइहि युद्ध न लागी बारा॥
चलती बार भूप सहदेवा। करि प्रणाम विनयौ बहु सेवा॥
छाड़ो पिता हमारो मोहा। करि बहु दुर्योधनपर छोहा॥
अब यह समुझि परो मनमाहीं। उनके दुर्योधन हम नाहीं॥
मरे बालपन पाण्डु न देखे। तुम पितु हते हमारे लेखे॥
तुम्हरे देखत हम दुख पावा। करि छल शकुनी देश छुड़ावा॥

परो विपति वनवन फिरे, सहे अशेष कलेश।
समुझावहु दुर्योधनहिं, मेटहु सकल नरेश॥

मोहिं बोलि बसुदेवकुमारा तुमते कहेउ नरेश जोहारा॥
जो कछु दीनबन्धु भगवाना। कहेउ सँदेश सुनिय दै काना॥
तुमतें काह कहिय बहुतेरा। दीजै अंश युधिष्ठिर केरा॥
प्रथमहिं बहु प्रकार समुझावा। दुर्योधन के मनहिं न आवा॥
मानत सो न बहुत अभिमाना। कालविवश सब ज्ञान भुलाना॥
नश्यो विवेक पाप प्रिय लागा। उपज्यो हंसवंश जिमि कागा॥

लीन्हें अयश सकल यश खोई । वांस वंश महँ भयो घमोई ॥
कौरव कुल यश पूर्ण मयंका । भा दुर्योधन तिनहिं कलंका ॥

समुझावत तुम अवहिं नहिं, सब जानत अज्ञान ।
वहुरि कह्यो सन्देश सब, सुनहु भूप दै कान ॥

चलत वार कह द्रुपद सन्देशा । सुनहु कृपा करि कहत नरेशा ॥
अपने जियत कलङ्क न लावहु । कलह गोतको भूप वचावहु ॥
धृष्टद्युम्न ममसुत अरिखण्डी । अवलगु राखो वर्जि शिखण्डी ॥
कीजै सन्धि मिटै उतपाता । वढ़ै भूपकी कीरति दाता ॥
मैं सिख देत जानि सम्बन्धी । चक्षुहीन कछु बुद्धि न अन्धी ॥
वेगि उपाइ करहु नृप सोई । संधि होइ जेहि कलह न होई ॥
दुर्योधन अरु पाण्डुकुमारा । जानहु हेतु समान हमारा ॥
हम चाहत हैं तुम्हरे हितकी । करहु विचार होइ जो नीकी ॥

चलति विलोकि बुलाइ मोहिं, कह्यो विराट संदेश ।
सावधान होइ लाइ मन, सो अब सुनहु नरेश ॥

दुर्योधन कीन्हों अपकारा । धर्म्मराजकहँ देश निकारा ॥
तुम्हरे योग न वात अलीका । देखहु समुझि भरतकुल टीका ॥
करहु होइ जो नीक विचारा । यह नृप कहेउ विराट भुवारा ॥
विप्र वचन सुनि भा उरदाहू । विहँसि वचन वोला नरनाहू ॥
कहुत विप्र कत वाद वढ़ावहु । पाण्डुसुतनकी कुशल सुनावहु ॥
प्राण समान परमप्रिय जीके । हैं सव भ्रात जान मम नीके ॥
दुर्योधन उनते छल कीन्हा । द्यूत खेलाइ राज्य हरि लीन्हा ॥

करि कुबुद्धि यदि कौन निकारी ।बनबसिसहेउविपतिअतिभारी
द्रुपदसुता अतिशय सुकुमारी। देखे रूप न इन्दु तमारी ॥
बनबसि फिरी लाजसबत्यागी। कौन कुमति मम पुत्र अभागी

अजहूं तजत कुचाल नहिं, कालविवश कुरुनाथ।
अक्षहीन अरु ज्येष्टतन, मैं तनु भयो अनाथ ॥

सुनत विप्र नहिं मोर सिखावन भयोएलस्तप्रवंशजिमिरावन ॥
जैसे उग्रसेनसुत कंसू। प्रकट्यो कालनेमिकर अंसू ॥
पितहि पकरि कारागृह डारे। तैसे यह कछु वश न हमारे ॥
जबते धर्मराज बन गयऊ। तबते हमहिं दुसह दुख भयऊ ॥
इनके विरह दिवस अरु राती। तलफत रहत जरत नित छाती
दुर्योधनहि बहुत समुझावत। पै वाके कछु मनहिं न आवत ॥
अबहौं बहुत भांति समुझैहौं। अपने चलत मिलाप करैहौं ॥
असकहि बुद्धिचक्षु समुझाये। द्विज प्रबोधि अन्तःपुर आये ॥
सञ्जय सङ्ग पाणि पकराई। भूप भवन कहँ गयउ लवाई ॥

बैठारे सुनि सेजपर, गन्धारी दै पान।
सबलसिंह चौहान कहि, करत विविध सन्मान ॥

इति द्वादश अध्याय ॥ १२

भीषम ओर हरिद्विज रखऊ कह्यो प्रणाम धर्मसुत कखऊ ॥
अब तुमते कछु कहउ सन्देशा सुनहु पितामह तजहु अन्देशा

कुरुनन्दन कीन्हों अपकारा। सुनि शकुनी शिख देशनिकारा॥
रहे विपिनवसि जाय उदासी॥ तुम्हरी कृपा विपति सब नासी॥
मुये पाण्डु हम सबते बालक।तबतो तुमहि कीन्ह प्रतिपालक॥
रहत सदा तुव चख अनुकूले। भलेहि नाथ हमरी सुधिभूले॥
हैं हम नाथ कृपा अभिलाखी।अनुचर जानि न फेरिय आँखी॥
सुनत वचन छाये जल कोये। करि सुधिविकल पितामह रोये॥

पुलकि गात गद्गदगिरा, भरि आये जल नैन।
हैं नीके सब पाण्डुसुत, तब बोलेउ द्विज बैन॥

तुम्हरी कृपा सहित परिवारा। कुशल अबहिलग पाण्डुकुमारा॥
सुनि भीषम यह वचन उचारा। उनहीं कुल राखै करतारा॥
धर्म्मराज निज राज्यहि पैहैं निश्चय सब कौरव मिटि जैहैं॥
दुर्योधनहिं गर्व अति भारी धर्म्मनरेश धर्म्मव्रत धारी॥
सदा विप्रवश्यर गर्व प्रहारी। धर्म्मक्षेमकर श्रीवनवारी॥
पाण्डव क्षेम मानु विप्रवाशू। द्विज जानहु कौरवकुलनाशू॥
यहिविधि वचन विप्रते खोले। गङ्गासुत कुरुपतिसे बोले॥
मानि वचन मम कलहवहावहु। करहु सन्धिसबमिलिसुखपावहु
सुने वचन लागे जिमि सायक। ह्वै सक्रोध बोले कुरुनायक॥
तुमहिं न उचित पितामह ऐसी। कही सभा सत बात अनैसी॥

तुमहिं त्यागि मन वचन करि, हम नहिं जानैं और॥
उचित न कटु वाणी कहत, कौरवकुल शिरमौर॥

अस कहि दुर्योधन दुख माना। उठि अपने गृह कीन पयाना॥

अपने भवन पितामह आयो। विप्र द्रोणते वचन सुनायो॥
कहे प्रणाम तुमहिं कुरुभूपा। कौन विनय कछु मति अनुरूपा॥
चतुर्वेद धनुर्वेद निधाना। आचारज नहिं तुमहिं समाना॥
हो समर्थ प्रभु सबहि प्रकारा। शाप देन अरु बाण प्रहारा॥
देव अदेव जगत भय मानत। तवतपतेज सकल डर आनत॥
शशिसमकोटिनदिशन प्रकाशा। कुरु पाण्डव तुम्हरे सबदाशा॥
सब प्रकार जानत बुधिबोधन। तुमहीं समुझावत दुर्योधन॥

तपबल बुधिबल अस्त्रबल, विद्याबल बलवाह।
कर्म्म धर्म्म अरु ब्रह्मबल, विदित जगत सबकाह॥

तुव बलको भरोस उर मोरे। कौ हरि और न जानत भोरे॥
यह संदेश अरु पुनि पद वन्दन। तुमते कहेउ पाण्डुके नन्दन॥
सुनत वचन भे द्रोण सशोके। कमल नयन जल रहतन रोके॥
पुलकित गात कृपा अधिकाई। विविधभांति पूछी कुशलाई॥
शिष्यवर्ग हैं सकल हमारे। द्विज द्रोणहु ते अधिक पियारे॥
धर्मशीलनिधि पांचो भाई। मोरे प्राणनतें अधिकाई॥
तातें उनको कुशल बतावहु। मोरे जियको ताप बुतावहु॥
कह द्विज हैं पाण्डव सब नीके। नाथ तुम्हार दास जगतीके॥

दुर्योधन काढ़ेउ विपिन, देखरायो अति त्रास।
रहत पाण्डुसुत कुशल हैं, तव चरणनकी आस॥
मनसा वाचा कर्म्मणा, नाथ तुम्हारो दास।
मानत ज्यों हरिको तुमहिं, धर्म्म सहित विश्वास॥

कहि यह वचन मौन द्विज भयऊ।उठि गुरुद्रोण भवनते गयऊ॥
विप्र सङ्ग लै अश्वत्थामा। करवायो गृह निज विश्रामा॥
बहु विधि खान पान करवाई। शयन हेतु शय्या बिछवाई॥
कीन्ह द्रोणसुत प्रीति घनेरी। पूंछी कुशल पाण्डवनकेरी॥
अर्ज्जुन भीम नकुल हैं नीके। प्राण अधार बन्धु ममहीके॥
अभिमन्यु सहित सकल परिवारा।अरु आयो द्रौपदीकुमारा॥
सबकी मोकहँ कुशल बतावहु।भिन्न भिन्न कहि बरणि सुनावहु
उन हमको कछु कहेउ सन्देशा। सो द्विजकहन्वपसहितकलेशा॥

बड़ी विपति तेरह बरष, सही भूप कुन्तेव।
सो बीती हरिकी कृपा, है नीके सहदेव॥

यह कहि भूप नयन जल छाये।गद्गद कण्ठ वचन नहिं आये॥
देखी बहुत प्रीति अधिकाई। कुशल प्रश्न कहि विप्र सुनाई॥
पाण्डव सकल सहित सुतदारा। कुशल आजुलग सब परिवारा
करहु यत्न कछु कहत पुकारे। यथा कुशल अब होय तुम्हारे॥
अबते तुम भूपहि समुझावहु। कलह मेटिकै सन्धि करावहु॥
कहेउ प्रणाम तुमहिं कुन्तेवा। सुनत सँदेश कह्यो महिदेवा॥
हम जानत जिमि अर्ज्जुन भीमा। तैसे तुमहि आजुलग जीमा॥
इन भ्रातन वर विपति बँटाई। गुरु बांधव तुम सुधि बिसराई॥
जानत सो कौरव जो कीन्हा। तुमहिंनउचितकृपा तजिदीन्हा॥
कहेउ द्रोणसुत द्विज सुनि लीजै। अपने मन विचार तुम कीजै॥

खान पान सन्मान दै, सब प्रकार कुरुनाथ ।
दासभाव मोते रहत, करि लीन्हों निजहाथ ॥
चित महं उनमन प्रीति घनेरी । परवश भयो लागि नहिं मेरी
अनभल चहत पाण्डवनकेरा । कौरव वश मम फिरत न फेरा ॥
अस कहि शयनकरन ढ़उलागे । अब नृपसुनहु चरितजसआगे॥
यहां भूप मन शोच अपारा । कह सञ्जयते बारहिं बारा ॥
देखि परत मोहिं बात न नीका । दुर्योधनको चलो अलीका ॥
सुनत श्रवण नहिं कछु उतपाती॥ परी न नींद शोकवश राती॥
भीम स्वभाव विदित सब काहू । अस कहि विकल भयोनरनाहू
तब नृप कहा सुनहु गन्धारी । समुझावहुनिजसुत अपकारी ॥
सुनि सञ्जय पुनि तुरत पठाये । दुर्योधनहिं बोलि लै आये ॥
रावण कुम्भकर्ण जिन मारा । सुरविजयी जानत संसारा ॥
हयहयराज प्रचारि प्रचारी । काटेउ सहसबाहु बलभारी ॥
केशी कंस अघा बका, मुष्टिक औ चाणूर ।
धेनुक हति वृष पूतना, तृणावर्त्त खलकूर ॥
मारयो बालि वत्ससुर नीचा । सुभट ताड़का अरु मारीचा ॥
खरदूषण त्रिशिरादि कबन्धा । विपिनविराध असुरकृत बन्धा॥
शङ्खचूड़ भस्मासुर मारा । राख्यो शम्भु विदित संसारा ॥
ते पाण्डवके भये सहायक । जीति को सके तात रघुनायक ॥
तिनते बैर किये भल नाहीं । संधिनीकि समुझो मनमाहीं ॥
पनि तुम्हरे हैं बन्धु न जीको । दीजै अंश बात यह नीको ॥

तुव पितुके लघु वन्धु भुवारा। भये पाण्डु जानत संसारा॥
धर्म्मराज कछु पाप न कीन्हा। छल करि राज तात तुम लीन्हा॥
उन नहिं कीन्ह विरोध सुत, ना कछु लियो तुम्हार।
छल करि अक्ष खेलाइकै, तैं कीन्हों अपकार॥
अजहूँ कह्यो हमारो कीजै। मिटै विरोध अंश दै दीजै॥
अतिहित गन्धारीकी वानी। सुनी न श्रवण नेकु अभिमानी॥
धृतराष्ट्रक बहुविधि समुझावा। कालविवश कछुमनहिंनआवा॥
मातु पिताका वचन न माना। जस भावी तस उपज्यो ज्ञाना॥
भावीवश जानहु सब लोगा। भावीवश न होइ सब योगा॥
भावी सुमति कुमति उपराजै। हानि लाभ अरु विजयपराजै॥
कह वैशम्पायन सुनु राजा सुनि कुरुनाथ क्रोध उपराजा॥
हरि कहि परशुराम जग जाये। जीति पितामह वनहि पठाये॥
दानव देव मनुज वल भारी। भीषम पद कोऊ नहिं टारी॥
जीति सकल रण वन्धु विवाही। वानर ऋक्ष विदितसवकाही॥
गुरू द्रोण दशहू दिशि जीते। सुर अरु असुर जासु भयभीते॥
जो हठि कर्ण करै संग्रामा। करि नहि सकै विजय घनश्यामा॥
कह्यो मातुसे जोरि कर, चुप करि रहु अरगाइ।
तिल भरि देउँ न जियत महि, सकै को टेक छुड़ाइ॥
अस कहि अपने भवन भुवाला। जात भयो राजा ततकाला॥
होतहि प्रात सभामहँ आयो। वुद्धिचक्षु द्विज वोलि पठायो॥
स्वर्ण पञ्चशत दीन्ह्यों दाना। कीन्ह दान नृप करि सन्माना॥

आजु कालहि महँ सञ्जय ऐहैं। सत्य सन्देश यहाँको लहैं ॥
करि बहु यतन सुतन समुझाई। देहौं तात मिलाप कराई ॥
कहि द्विजते यहि भाँति सन्देशा कीन्हविदा यहि भातिनरेशा
कहत प्रात सञ्जय को आवन। तिनके हाथ सन्देश पठावन ॥

धृतराष्ट्रक आशिष कह्यो, लै पाण्डवको नाम।
नृपमण्डली जोहार करि, हरिको कह्यो प्रणाम ॥

यहि प्रकार कहि द्विजवर वाणी। भूपसहित मुनि शारँगपाणी
गूढ़ गिरा समुझत मनमाहीं। और विचार कही कछुनाहीं ॥
इन सगरो सञ्जय पर राखी। हरिते कहत धर्म्मसुत भाखी ॥
तव हरि कहत चुपो दिनचारी। आवैं जो न करिय पुनि रारी
बुद्धिवान पाञ्चाल पुरोहित। इनते को चाहत तुम्हरो हित ॥
येऊ गये न कछु करि आये। कारज रह्यो सन्देश न लाये ॥
इनते को जाई अब ज्ञानी। विहँसि विहँसिकह शारंगपानी ॥
सुनत वचन नृप द्रुपद लजाने। करी कृपा श्रीहरि सनमाने ॥

हरिपदपङ्कज नाइ शिर, निज निज शिविर भुवाल।
गये सकल प्रमुदित अधिक, हिये राखि गोपाल ॥

इहाँ प्रात मतिहग जब जागे। सञ्जय बोलि कहन असलागे ॥
धर्म्मराज हरि पहँ तुम जाई। कह्यो वचन निजमति निपुणाई॥
कलह बटै न्यहि सम्मति होई। बुद्धि विचारि कह्यो तुमसोई॥
मम दिशिते पूछेउ कुशलाता। प्रीति समेत मनोहर वाता ॥
बुद्धिमान कह तुमहिं सिखैये। करहु गहरु जनि तुम अवजैये ॥

मुनि सञ्जय नायो पद शीशा । विदाकीन्ह नृपदीन्ह अशीशा॥
रथ आरूढ़ ह्वै तुरत सिधाये । प्रमुदित धर्मराजपहँ आये ॥
देखि पाण्डुसुत सैन महाना । सुरपति सरिस अचम्भी माना ॥
घण्टानाद मनुज रव नाना । होत कुलाहल सिन्धु समाना ॥
पँवरि द्वार सञ्जय चलि आये । शयन किये हरि अर्ज्जुन पाये ॥

द्वारपाल भीतर भवन, देखि सरोरुह नयन ।
कनक पलँग अर्ज्जुन सहित, करत कृपानिधिशयन ॥

दोऊ कर पुनि दोऊ पानी । चापत चरण द्रौपदी रानी ॥
सञ्जय को आगमन सुनावा । द्रुपदसुता हँसि बोलि पठावा ॥
सुनि सन्देश अन्तःपुर आये । प्रीति सहित पुनि पद शिर नाये॥
हरुये चरण धरहु कह रानी । परें जागि जनि शारँगपानी ॥
चाप पाय प्रभु नयन उनींदे । अर्ज्जुन सहित उठे रविनींदे ॥
जीवबन्धुको रंग लजाये । दृग विलोकि सञ्जय भयपाये ॥
उग्ररूप देखत घनश्यामा । कम्पित तनु पुनिकरत प्रणामा ॥
सञ्जय दिशि देखा यदुवीरा । बोले घनद्दव गिरा गँभीरा ॥

कह सञ्जय दुर्योधनहिं, समुझावत तुम नाहिं ।
मरो चहत सब मिलि शठहि, समुझि परी मनमाहिं ॥

धर्मराजको देत न हीसा । अपने विभव करत बल खीसा ॥
मस्तक काटि सहित परिवारा । लेहौं अंश बांटि दृढ़ फारा ॥
भूलो अधम कर्ण बल पाई । वहि पायो सब कुमति सिखाई ॥
सकै न जीति पार्थके आगे । मरिहै नीच एक शर लागे ॥

जा कदापि अर्ज्जुन कदराई। हनहुँ चक्र गहि शम्भु दोहाई॥
सुनत वचन सञ्जय भय माना। करि प्रवोध अर्ज्जुन सन्माना॥
यदुनाथ कृपा अब कीजै। अभयदान सञ्जयकहँ दीजै॥
पारथ वचन मानि भगवाना। निज सेवक सञ्जयकहँ जाना॥
प्रीति समेत लीन्ह वैंठारी। वोले मधुर गिरा वनवारी॥

हरि अर्ज्जुन सञ्जय सहित, चले युधिष्ठिर पास।
सवलसिंह हतसों करत, मगमें वागविलास॥

इति त्रयोदश अध्याय॥ १३॥

कह मुनि जनमेजय सुनि लीजै। कथा अमियसम पानहिकीजै
धर्म्मसभा हरि पारथ आये। सञ्जय सहित मोदमन छाये॥
धर्म्मराज आगे चलि लीन्हा। हरिहि समेत दण्डवत कीन्हा॥
अर्ज्जुन धर्म्मराज पद वन्दे। वैठि सभा हरिसहित अनन्दे॥
तेहि अवसर सञ्जय तहँ आये। करि विनती वहुपद शिरनाये॥
धर्म्मराज निज निकट वुलाई। वूझत कुशल सनेह वढ़ाई॥
कुशलप्रश्न कहि कहत सन्देशा। ज्यहि प्रकार कहि दीन नरेशा
मानत अवहिं नाहिं दुर्योधन। समुझैहौं करिकै वुधि वोधन॥
तुम सुत चुपकि रहौदिन चारी। होई मन भावती तुम्हारी॥
होइ न कलह मिलाप कराई। देव तात तुव अंश देवाई॥
आशिष कहौ कुशल पुनि वूझौ। है न्टपकीरति तुमहिं अवूझौ

जबते तुम कीन्हों वनवासा। उर न चैन नृप रहत उदासा ॥
नितप्रति दुर्योधनकी निन्दा। करत कहत यहहै मतिमन्दा ॥
तुमपै कृपा रहत अधिकाई । चलन कहेउ निज निकटबुलाई ॥
आवहु तात देखि निज आंखिन । मानत मैं न औरहीं साखिन

भ्रात जात मम प्राण सम, जानत सब संसार ।
सुनि शकुनी सिख नीच यहि, काढ़े विन अपकार ॥
दुर्योधन मति परिहरी, वैठि अलीकन वीच ।
दृगविहीन मैं जरठ तनु, मानत वात न नीच ॥

यदपि न मानत वश कुटिलाई। करवैहों मिलाप वरिआई ॥
गन्धारी आशिष कहि दीन्हा । कहिहौ सुतन कृपा पुनि कीन्हा
विनकलंक नहिं दोषतुम्हारा । करि कुवुद्धिवहिविपिननिकारा ॥
तुमपर कृपा करत वनवारी। सकै तात को वात विगारी ॥
सबविधि सुत तुम्हार कल्याना। करिहैं कृपासिन्धु भगवाना ॥
गान्धारी आशिष सुनि काना। कीन्ह प्रणाम भूप सुखमाना ॥
पतिव्रता पुनि मातु हमारी। गन्धारी जानत श्रुतिचारी ॥
आशिष दीन्ह कृपाकरि भारी। सवप्रकार विधि वातसुधारी ॥

गन्धारी आशिषदियो, विविध भाँति सनमान ।
सुनु सञ्जय कह धर्मसुत, हो हमार कल्यान ॥

पूछो भीमसेन सञ्जयसे । कहेउ सँदेश पिता कछु हमसे ॥
पापवुद्धि देखत को सोधे। सुतन नेह ममता महँ वौधे ॥
विधिवत नृप जानत सव साधू। लीजै मौन न कछु अपराधू ॥

तैसे मौन रहत दिन राती। है पुनि अंध सकलकुलघाती॥
सिखै कुचालि वचनमृदुभाखी। पापमूलविधि दीन्ह न आँखी
है अति क्रूर सुभाव प्रपंची। भुलवत तुमहिं भूप अब वंची॥
आँधर आपु अक्ष विन जाना। वहुपापी अब सकल जहाना॥
क्रूर वचन सुनि भूपति लरजे। रहउ चुपाइ भीम कहँ वरजे॥
हीन न कहिय वड़ेनकहँ भीमा। पातक वढ़त विचारहु जीमा
पिता समान पिताको भाई। कहउ न कछुतुमरहउचुपाई॥
उनकहँ पुत्र लोभ अति जीते। मोह हमार तज्यो कवहीते॥
भूप वचन सुनि भीम चुपाने। बोले नकुल वीररस साने॥

सुनु सञ्जय वह शठ अजहुँ, देत न अंश हमार।
दुर्योधन होइ कालवश, करत क्रूर अपकार॥

नहिंकछुकोउ वाकहँसमुझावत। नाहक सवमिलिवैरवढ़ावत॥
फिरि पाछे सब तुम पछितैहौ। मरे युद्ध ते फेरि न लहिहौ॥
भीषम विदित सत्यव्रतधारी। त्यागउ राज्यलोभ अरु नारी॥
विदुरभक्त विज्ञान निधाना। गतविलोकिकहै सकलजहाना॥
सोमदत्त गङ्गाधर दोऊ। सवलायक जानत सवकोऊ॥
भूरिश्रवा वीरता माते। सकै न युद्ध जीति सुर ताते॥
बाह्लीकको वड़ि प्रभुताई। जीतिधरा जिन बाँह पुजाई॥
सभा मांझ शठ द्रुपदकुमारी। केशपकरिचहकीन्ह उघारी॥
दुर्योधनको विभव विलोकी। कुरुपाण्डवकोउसक्योनरोकी॥
कृप अरु द्रोण बड़े वलधामा। रह चुपकै तहँ अश्वत्थामा॥

समुझिपरी सम्मति सबहीकी। कर्णहुकही बात नहिं नीकी॥
एक एक जीतहिं संसारा। उनहिं निदरि पावत को पारा॥
एकौ कोऊ भये न सङ्गी। समुझिपरे सब पाप प्रसङ्गी॥
जस उनके तस सकल हमारे। पाप बुद्धि करि केहुन निवारे॥
सुनि सहदेव कहत सुन भ्राता। हैं हमरे रक्षक सुरत्राता॥

नग्नकरन हित द्रौपदी, कीन्हों सबन उपाय।
रही लाज पटना घटयो कृत सहाय यदुराय॥

हैं यदुनाथ हमारि सहायक। कहौ कवन उत इनके लायक॥
सुनि सहदेव ओर प्रभु हेरी। कह सञ्जय ते नयन तरेरी॥
नीचनके बल खल बौराना। धर्म्मराजकहँ तृण सम जाना॥
याही भूल मीचु शठकेरी। सञ्जय सत्य प्रतिज्ञा मेरी॥
पाण्डुसुतनको काज सुधरिहौं। वंश नाश कौरव को करिहौं॥
जो नहिं देइ युधिष्ठिर अंशू। रहै न धृतराष्ट्रकको वंशू॥
ताते तुम सञ्जय समुझावहु। धर्म्मराजको अंश देवावहु॥
सुनि सञ्जय विनवै करजोरी। सुनहुनाथ इक विनती मोरी।

अरुण नयन भृकुटी कुटिल, लखि हरिरूप कराल।
सञ्जय शोच सङ्कोच वश, विनवत श्रीगोपाल॥

दूत कर्म्म ते वचन बखाना। मैं तुम्हार अनुचर भगवाना॥
दै सन्देश नरेश पठायो। सत्य वचन बलि तुमहिं सुनायो॥
अबजस कहब कहौं तस जाई। दोष हमार कवन यदुराई॥
करब न करब भूप के हाथा। अस कहि प्रभुपद नायो माथा

परम चतुर सञ्जयकहँ जाना। बिहँसे कृपासिन्धु भगवाना ॥
बुद्धिसराहि करी अतिदाया। प्रीतिसहित निजनिकट बुलाया॥
मोर संदेश तात कहि दीजो। निज नरेशते भय मति कीजो ॥
राज्य युधिष्ठिरको तुम देहू। तजि अभिमान कलह किन लेहू ॥
जो न सुनहु यह वचन हमारा। करहुँ निपात सकलपरिवारा॥

अंश युधिष्ठिरको तजहु, मानहु वचन हमार।
अनहित होइ न तोर नृप, बचै सकल परिवार ॥

अस कहि पुनि राजीवविलोचन। रहे चुपाइ दास दुखमोचन॥
भीमसेन सञ्जयके आगे। कहन सन्देश क्रोध करि लागे ॥
बैठि सभामहँ मारि चपेटा। फारौं गाल विदारौं पेटा ॥
दुर्योधन जगामहँ संहारौं। दुःशासनके भुजा उखारौं ॥
कौरव जियत जान नहिं देहौं। एकौ युद्ध भूमि जब ऐहौं ॥
अबहीं नीक अंश मम दीन्हें। तबलगकुशलगदाकरलीन्हें ॥
कह्यो पार्थ मत यहै हमारा। भीमसेन जो वचन उचारा ॥
दीन्हें अंश मिटै सब रारी। समुझा दिशिते कहेउ हमारी ॥

समुझावहु निज तनय अब, देइ अंश नरनाह।
तात तुमहिं हित होइगो, अनहित तजु मनमाह ॥

यह सन्देश कह्यो तुम मोरा। यामें भूप होत हित तोरा ॥
भ्रात तात अरु तनय तुम्हारे। जै हैं भूप उभय दिशि मारे ॥
ताते तात सो करिय उपाई। होइ सन्धि जेहि मिटै लड़ाई ॥
धर्मराज कहि दीन्ह सन्देशा। भल जानेहु तस कहेहु नरेशा ॥

देउ भूमि तब मिटै लड़ाई । बाढ़ै भूप कीर्त्ति सुखदाई ॥
असकहि सञ्जय फेरि पठाई । रहो कृष्ण पद शीश नवाई ॥
धर्म्मराजते विदा कराये । तब अरूढ़ होइ गजपुर आये ॥
अन्तःपुर जहँ बैठ नरेशा । गावलगणि तहँ कीन्ह प्रवेशा ॥
करि प्रणाम पुनि आप जनाये । सुनि महीप निजनिकटबुलाये
कुशलप्रश्न मोहिं सकल बतावहु । जो उनकह्यो सन्देशसुनावहु॥

गात कम्प गद्गद भये, कहि न सकत कछुबैन ।
जो कछु कह्यो सन्देश नृप, पीतम पङ्कज नैन ॥

धरि धीरज सञ्जय अस भाषत । सुनहु भूप कछु गोइ न राखत॥
अब उनके नृप सेन अपारा गजरथ अरुपदादि असवारा ॥
चालिस सहस भूप जिन जोरा । अक्षोहिणी सप्त घनघोरा ॥
नृपति विराट द्रव्य समुदाई । दीन्हों द्रुपद राज्य यदुराई ॥
विभव विलोकि धनेश लजाहीं । केहि पटतर दीजै कोउ नाहीं
है अब सरिस इन्द्र प्रभुताई । देखे बनै न वरणि सिराई ॥
दीन्हों एक द्विरद भगवन्ता । शङ्ख वर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
तापर भूप करत असवारी । मन्दरसे उन्नत है भारी ॥
गन्धर्व्वन जे दीन्ह तुरङ्गा । चित्र विचित्र मनोहर अङ्गा ॥
तेइ तुरङ्ग नकुलके घोरे । धावत चपल चपल शिर मोरे ॥
अरुण वाजि सहदेव सोहाये । जीवबन्धुको रङ्ग लजाये ॥

भीमसेनके हय सुनहु, चञ्चल चपल तुरङ्ग ।
वायुवेग मग अति चपल, हरित सुआके रङ्ग ॥

श्वेत वर्ण अर्ज्जुन हय राजत। उच्चश्रवहु देखि मन लाजत॥
मुकुट समेत अमोलिक माला। करि अति कृपादीन सुरपाला॥
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई। पहिराये जेहि मृत्यु न होई॥
अछै तृणा दीन्ह्यो जलनायक। घटैं न शर साधे जेहि सायक॥
तस पञ्चकर्म धनुष गाण्डीवा। दीन्हों अनल जगतकी सीवा॥
देवदत्त दीन्हे भगवाना। शङ्ख अनूपम सब जग जाना॥
जासु महारव घोर प्रचण्डा। पूरित शब्द भेद ब्रह्मण्डा॥
वृषपर्वा की गदा विशाला। दीन्ह्यों भीम कही नन्दलाला॥
नकुलहिको वर्णत तरवारी। दीन्ही अति प्रचण्ड बनवारी॥
शङ्कर नन्दिघोष रथ दीन्हा। अर्ज्जुनकहँ निर्भय पुनि कीन्हा॥

धर्म्मराज अब इन्द्रसम, विभव को सकै बखानि।
सुनहु भूप सन्देह नहिं, जहँ श्रीपति सुखदानि॥

अर्ज्जुन कौन सखा हनुमाना लङ्का विजय सकल जग जाना॥
सावधान होइ सुनहु नरेशा। अब पाण्डवको सुनौ सन्देशा॥
छल करि दीन्ह्यों विपिन निकारी। दीजै अंश न कीजै रारी॥
इहमा भूप भलो जो जानौ। अब न विलम्ब वेगि सो ठानौ॥
याही भांति कह्यो यदुराई। तजहु अंश नहिं रचहु लराई॥
रणमहँ पकरि सुदर्शन पाणी। कौरव कुलको घालों छानी॥
करत अनीति कर्ण बलसेती। तेहिको बात नीच कहु केती॥
जगमहँ सब कौरवदल मरिहौं। राज्य युधिष्ठिरको वैठरिहौं॥
इनको अंश छांड़ि तुम देहू। तजि अभिमान अभयपद लेहू॥

सत्य सत्य तुमते कहौं, मैं उनकर सन्देश।
सुनि उपदेश जो चित चहै, सो अब करहु नरेश॥
सञ्जय वचन सुनत उर दहेउ। विकल विशेष भूप असकहेउ॥
मातु पिता को करि अपमाना। कालविवश सिख सुनतनकाना॥
सञ्जय मैं उठाय नहिं राखौ। समुझावहुँ सब विधि तुमसाखौ॥
बल विहीनते जरठ न आंखौ। सुनत न वचन पापअभिलाखौ॥
तृण समान मोको शठ जानत। सुनत श्रवण एकौनहिं मानत॥
सुनि सञ्जय बोले मुसुकाई। सत्य नाथ कहि पद शिरनाई॥
सब जानत तुम ज्ञान अरूढ़ा। पुनि कहि गयो गिरा यहगूढ़ा॥
हमहूं नाथ तुम्हार सिखाये। सब प्रकार कहि भेद बताये॥
भयो द्यूत तब तुमहिं न जाना। लक्ष भवन विनमत निर्माना॥
तजि मनकी अवरेब अब, समुझावहु कुरुनाथ।
रहत रैनि दिनमैं सदा, नाथ तुम्हारे साथ॥
मेटहु कलह भूप सज्ञाना। जगभल कहै लहैं कल्याना॥
होइ सुयश कीरति उजियारी। मिटै कलङ्क होइ सुखभारी॥
होइ प्रसन्न त्यागि नृप रञ्जय। असकहि भवनगयेपुनिसञ्जय॥
श्रीधृतराष्ट्र सबहिके आगे। सुतकी करन धर्षणा लागे॥
कपट द्यूत रचि नीच निकारा। कर्ण सीखते करि अपकारा॥
सौवल शकुनी कुमत सिखावा। उन यह बन्धुविरोध करावा।
सञ्जय वचन कहत हैं सांचो। समप्रिय पुत्र एकसौ पांचो॥
जो सब सम कल बैर करावत। सन्धि कराइ न कलह बढ़ावत॥

यह सम्भव तब बात अरूठी । तात न समुझि परत कछु झूठी ॥
दीन्ह धरा धन साज समाजा । तुम कीन्हें दुर्योधन राजा ॥
भीषम विदुर तुम्हारेउ अज्ञा । कृप अरुबाहुलीक तुम सज्ञा ॥
द्रोणी द्रोण तुम्हारि सहायक । त्रिभुवन विजयकरनके लायक ॥
धरि कारागृह देहु वँधाई । दुर्योधनहिं निविड़ पहिराई ॥
निन्नानवे पुत्र बल भारी । तेइ नरेश तव आज्ञाकारी ॥
औरे सुतहि राज्य नृप दीजे । फिरि मन चहै बात सो कीजे ॥
सुनिनिठुर सञ्जयमुख भासा । गयो जानि नृप भयो उदासा॥

सबलसिंह चौहान कह, वाक्यविनाश बनाइ ।
बोलेउ बिहँसि नरेशतब, सञ्जयको बहलाइ ॥

इति चतुर्दश अध्याय ॥ १४ ॥

जनमेजय सुनि मन अनुरागे । पूछै बहुरि ऋषै सौं लागे ॥
कथा सुधा रस मोहिं सुनाई । होत न तृप्ति श्रवण मुनिराई ॥
अब प्रभु कहौ सहित विस्तारा । मिटै नाथ सन्देह हमारा ॥
कह मुनि समुझि परै भ्रमत्यागे । चित्तविचित्रचरितजस आगे ॥
धृतराष्ट्रहि मन अति सन्देहा । कहत वचन सञ्जय से एहा ॥
उर अतिदाह नींद नहिं आवत । कलहदेखि मनशोच जनावत ॥
पाण्डुतनय मम सुत अपकारी । कुलमहँ होत मिटतनहिं रारी॥

चुपकै देन मिलै नहिं शीशा । यह नहि देनकहत अवनीशा ॥
अस विचारि असमंजस मोही । दुर्योधनखल अतिकुलद्रोही ॥
सञ्जयते बोले बिलखि, करि चितचेत भुवार ।
भ्रात जनाउत तनै दूत, बाढ्यो कलह अपार ॥
यामें उभय प्रकार बिगारा । ताते मन कछु थिर न हमारा ॥
तुम सुत जाहु बिलम्ब न लावहु । विदुर बुलाइ इहाँ लै आवहु ॥
सुनि सञ्जय उठि तुरत सिधाये । पलमहँ विदुर भवनकहँ आये॥
कुशआशन पर ज्ञान अरूढ़ा । साधत योग बैठि गति गूढ़ा ॥
कुण्डलनी तजि मूल उठाये । निरखत परम ज्योति सुखपाये॥
सहस पत्रको कमल जो फूला । तापर पुनि हरिध्यान अमूला॥
इड़ा पिङ्गला दूनो श्वासा । साधत करत सुषुम्नावासा ॥
नासा ऊपर करि अनुरूपा । निरखत निर्गुण ब्रह्मस्वरूपा ॥
रसना उलटि कण्ठ अवरोधी । सुधा कीन्ह कमल तनु शोधी ॥
मेरुदण्डसम आसन लीन्हें । पुनि षटचक्र विदारण कीन्हें ॥
पापिनि साँपिनि दुःखगति, करि रसना पुनिरोक ।
पियत सुधारस यतनयत, जेहि तन रहत विशोक ॥
अङ्गन सहित योगगति साधी । करत ज्ञान पुनिलाइ समाधी ॥
तब सञ्जय करि यतन जगावा । चलहु वेगि अब भूप बुलावा॥
अर्द्धनिशा सुनि आयसु पाये । विदुर वेगि पुनि मन्दिर आये ॥
गान्धारी अरु भूप अकंता । अभिवादन पुनि कीन्ह तुरन्ता ॥
कहेउ नरेश विदुर द्रुत आवहु । ममसमीपचितनपनिवुतावहु॥

सञ्जय कह्यो सन्देशो जबते । मोकहँ नींद न आवत तबते ॥
अब उपाय कहिये कछु भाई । बुधि विचारि ज्यहिबचै लराई॥
सञ्जयसों सन्देश नृप पाये । सो नरेश सब वरणि सुनाये ॥

कहेउ विदुर तब भूपते, तुव सुत वश अभिमान ।
जो सिखवत मन मानि हित, करत न सो कछु कान ॥
देइ अमिय कोउ प्रीति करि, त्यागि करत विषपान ।
दुर्योधन मति परिहरी, विधिगति अतिबलवान ॥

कुरु नरेश को सब परिवारा । करहि नाश यह तोर कुमारा ॥
देखहु शठ हठ शील अभागी । प्रगटो यथा दारुते आगी ॥
हस्तो कुलहि न लागी वारा । एकहिसाथ करहि सब छारा ॥
शत कुमार गान्धारी जाये । वैश्या पुनि युयुत्सु उपजाये ॥
जब भये तनय एकशतएका । गर्दभ शब्द भयो अरु एका ॥
श्वान श्रृगाल भयङ्कर बोला । कररत काग धरा गइ डोला ॥
भूप यज्ञथल आनि श्रृगाली । करत फेकार क्रूर भयवाली ॥
सुरज्ञानिन इमि वचन उचारा । कुलनाशक नृप तनयतुम्हारा ॥
उपजेउ कह्यो हमारो कीजै । गढ़ा खोदाय गाड़ि अब दीजै ॥

पुत्रलोभते नहिं सुनेउ, तब सब रहेउ चुपाइ ।
होनी होइ सो होइ नृप, को करि सकै मिटाइ ॥

कुलघालक नृप तनय तुम्हारा । जगमहँ प्रकट कीन्ह करतारा ॥
अरजन दान करत चतुराई । अन्तर भूप अनीति सिखाई ॥
कपट निपुण अरु परसन्तापी । हो तुम नाथ जन्मके पापी ॥

तुम्हरे मनकी जानन हारा । है नरेश सब दास तुम्हारा ॥
तुवभल चहत कहत अस बानी । स्वहिनरेश कछुलाभ न हानी ॥
बिन पूछे मैं यहहूं कहहूं । सहिदुखदुसहचुप्पपुनि रहहूं ॥

जो पूछा तो करो अब, तजि मनकी अवरेब ।
अंश युधिष्ठिरको तजहु, करि करुणा नरदेव ॥

जानेउ राव मर्म सब जाना । विदुरभक्त विज्ञान निधाना ॥
सो बहराइ कहत अस राजा । भ्राता सुनहु हिये जस भाजा ॥
अब उपाय कछु बन्धु बतावत । शोच विवश कछुनींदनआवत ॥
पाण्डुतनय ममतनय कुचाली । करत विरोधसुनहुगुणशाली ॥
सो मेटहु कछु यतन विचारी । सुनतविदुर मृदुगिरा उचारी ॥
पाण्डसुतनकी कछु न अनीती । उन अपनेबल जो महिजीती ॥
सोऊ देत न तनय तुम्हारा । मिटैकलहक्यहिभाँतिभुवारा ॥
पितृ पितामह अंश न देहू । जीति देहु करिये नृप नेहू ॥

लेहु सुयश मेटहु कलह, करि करुणा तुम राइ ।
ऐसे होने पांडुसुत, जो वै रहें चुपाइ ॥

वे नहि कालहुको भय मानत । तृणसमान तुव पुत्रन जानत ॥
हैं सहाय यदुनायक जाके । कस न होइँ निर्भयमन ताके ॥
कृष्ण भरोस मानि मनमाहीं । जीतत समर डरत कछु नाहीं ॥
अबलग सोहनिशा तुम शोचत । मननीके उनकहँ हम जानत ॥
वर्जत प्रभू युधिष्ठिर भाई । त्यहि कारण नृप रह्यो लराई ॥
जब जब भीमसेन मन माखत । तबतबवरजिवरजिनृपराखत ॥

दुर्योधनकहँ नृप समुझाई। मिटै कलह सो करहु उपाई॥
है महिपाल बात यह नीकी। तुम्हरे कहत परम हितहीकी॥

मनसा वाचा कर्मणा, करि चित चेत भुवार।
समुझावहु दुर्योधनहि, अनहित बचै तुम्हार॥

जबलगि भीमसेन बलदाई। रचत युद्धनहिं तलहिं भलाई॥
क्रूर कर्म अति कुटिल सुभाऊ। है साहसी विदित सबकाऊ॥
कालहुको भय नेकु न मानत। सो नरेश नीके तुम जानत॥
यक्षराज अर्जुनते हारे। सो जाने सब भेट तुम्हारे॥
लंका पुर दौड़ेउ सहदेऊ। सो तुम्हार जाना है भेऊ॥
शङ्कर शत्रु धनञ्जय जीते। देव अदेव जासु भयभीते॥
सके जीति नहिं पवनकुमारा। कीन्हें सखा विदित संसारा॥
त्रिभुवनपति वैकुण्ठ विहारी। हैं तिनके सहाय गिरिधारी॥
है अनन्य हरिभक्त अतीवा। जीतै को पाण्डव बलसीवा॥
पश्चिम देश नकुल सब झारी। जीते यवनजाल बल भारी॥
ते सब धर्मराज अनुगामी। दीजे अंश बात सुनुस्वामी॥
कह भूपाल सत्य सुनुभाई। देत नीच नहिं मोरि देवाई॥
यह मुनिविदुर उतरपुनिदीन्हा। वर्जत रह्यों भूप जब कीन्हा॥
तब कस लखि मैं रहउँ चुपाई। कहउँ नाथ तुम सबै सुनाई॥
दुर्योधन तुम कहँ दुखदाई। सुनहु नाथ नहिं मोरि सिखाई॥
राज्य योगनहिं लक्षण चीन्हों। नीकर्म त्यागि हम दीन्हों॥

राज छोड़ि नरनाह सुन, कबहुँ न होइ उछाहु।
करहि अवज्ञा पुत्र जब, तब नित नित पछिताहु॥
राज दियो दुर्योधनहि, पुत्रप्रीति ह्वै लीन।
तुम्हरो भोजनपान अब, नृप इनके आधीन॥

दुर्योधनकहँ कीन्हेउ नाथा। सर्व्वस भूप तजेउ निज हाथा॥
अब शोचत नहिं प्रथम सँभारे। अस कहि विदुर नयनजल ढारे॥
सुनौ भूप विधि रेख लिलारा। लिखौ ताहि को मेटनहारा॥
दासी योनि जन्म जहँ पावा। ताते तात न बनै बनावा॥
हमहुँ विचित्रवीर्य के बेटा। मगमहँ चलत भई नहिं भेटा॥
धनुविद्या भीषम जो दयऊ। सो मोहिनाथ बिसरि नहिंगयऊ॥
तुम अरु पाण्डव सखा हमारे। पातक होइ दोउके मारे॥
पाण्डु पुत्र तुव पुत्र अभागे। कलह विलोकि अस्त्र हम त्यागे॥
करि नहिं सकैं ओर कोऊको। समगति हम न भूप दोउको॥

दुर्योधन अति मानते, श्रवण सुनत नहि बात।
परमचतुर गुणनिधि विदुर, समुझिसमुझि पछितात॥

अहो देव तुम मति हर लीन्हौ। अतिकुबुद्धिकुरुनाथहिदीन्हौ॥
हानि लाभ तुव वश मैं जाने। अस कहिविदुरबहुतपछिताने॥
धृतराष्ट्रक मन शोच अपारा। कहत विदुरते बारहि बारा॥
दुर्योधन अति कीन अनीती। सो मैं भलीभाँति सब कीती॥
सञ्जय गिरा मानि विश्वासू। जानेउ बन्धु भरत कुलनाशू॥
धनमदमत्त अधम अपकारी। कीन नगिनि शठ द्रुपदकुमा

सोसुधिउनहिं बिसरिकिमिजैहै। दुर्योधनके आगे ऐहै ॥
अबहुँ न शठसमुझनसमुझावा। बिन कारणको बैर बढ़ावा ॥
अबम्बहिंसमुझिपरतमनमाहीं। बाढ़ग्रो कलह बार कछु नाहीं ॥
दुर्योधनके मन बढ़ेउ, सुनहु विदुर अभिमान।
सिखवत मैं विधि कोटिते, सो कछु करत न कान ॥
बीति गई यामिनि युग यामा। आवत नींद न मन विश्रामा ॥
करहु विचार यतन अब सोई। जाते बन्धु बोध मन होई ॥
भये विकल लखि मन दुखपावा। कीनबोध पुनिपद शिरनावा ॥
आवाहन करि विदुर बुलाये। सनकादिकविधिसुतचलिआये ॥
नृप प्रबोधि मनमोद बढ़ाये। पुनि मुनि सत्यलोककहँ आये ॥
सञ्जय पठवो बोलि सुयोधन। लागे भूप करन सब बोधन ॥
गान्धारी अरु विदुर बुझावा। कालविवशकछुमनहिंनआवा ॥
सबकहँ प्रतिउत्तर पुनि दीन्हा।गयो भवनशिष कान न कीन्हा ॥
भानुमती तब हँसि कह्यो, कहिये नाथ हवाल।
गये बेगि पितु भवनते, आये बहुरि भुवाल ॥
अन्ध बधिर हठ शील अनामी। क्रूर कुबुद्धि कृपण अरु कामी ॥
मत्त प्रमत्त जरठवश औरे। नीचप्रसङ्गी अरु मति भोरे ॥
ऐसे पितुको कहा न कीजै। पकरि ताहि कारागृह दीजै ॥
नीचप्रसङ्गी पिता हमारा। दासीसुतहि दीन्ह अधिकारा ॥
कहत भूप जो विदुर सिखावत। ताते कछु मोमन नहिं आवत॥
दो कर जोरि कहत तब रानी। करि करुणा करिये मम बानी ॥

देखहु समुझि भरतकुलटीका । पितुनिदेश परिहरब न नीका ॥
सो सुनि अधम बहुत रिसवाई । कहिकटुवचनदीन्ह दुरियाई ॥
भइ मनत्रासग्रसित तव रानी । गई पराइ भवन भयमानी ॥
भ्रातहि यहाँ धर्मसुत जागे । हरिहि समोद जगावन लागे ॥

अस्ताचल हरनी रुचिर, शृङ्ग शृङ्ग उतमङ्ग ।
खञ्ज आवत सुखले सुखी, चूं चूं करत विहङ्ग ॥
करतप्रकटपुनिप्रातरवि, बालक सहितउछाहु ।
कूककपोतनको मनहुँ, प्राचीदिशिको राहु ॥

अरुणचूड़ वर बोलन लागे । फूले कमल भ्रमर अनुरागे ॥
चहत पच्छिगण तजन बसेरा । करत मधुर स्वरनाद घनेरा ॥
चरन मानसर हंस सिधाये । उड़त हलावत परन सोहाये ॥
सकुचे कुमुद उलूकनिवासा । अन्ध कूप लीन्हे मन त्रासा ॥
यथा अनीति सुराज नशाने । वञ्चक चोर सभीत लुपाने ॥
शशिवधु तिरछोचरणगिरि आधो ।जिमिनिर्बल न्टपविगत उपाधो ॥
रविभयमानि शरणतकि आवा।मनहुँप्रतीची शशिहि छिपावा॥
तरुवरवास शिखण्डिन त्यागे । करि मृदुरव निचंत सुख पागे ॥

भयो प्रात अब करि कृपा, जागो राजिवनैन ।
उचकि उठे सुनि श्रवणपुट, धर्म्मराजके बैन ॥

तेहि अवसर वन्दीगण वागे । पुनि यदुवंश प्रशंसन लागे ॥
धर्म्मराय हरिपद शिरनाये । पुलकित गात नयन जल छाये ॥
परमानन्द प्रेम उर आवा । प्रभुछवि देखि निमेष न लावा ॥

श्यामसजलघन सरिस शरीरा। दृग राजीव हरण जन पीरा॥
आनन इन्दु सहित मृदुहासा। लोल कपोल मनोहर नासा॥
खुलतदशन अतिद्युति दरशाई। तड़ितप्रभा जेहि देखि लजाई॥
उन्नतभालभृकुटिश्रुति कुण्डल। जनुयुगरविग्रहिगहिशशिमण्डल॥
करत विचार सुयश यह लीजै। अमि अँचवाइ अमरपददीजै॥
रवि रथ वन्धन कहि कर गाये। प्रतिउपकार करण जनु लाये॥
वृषभ कन्ध अरु कम्बुक ग्रीवा। अति विचित्र शोभाको सीवा॥
क्रीट मुकुट शिर सोहविशाला। नवतुलसीदलगजमणिमाला॥

भुजप्रलम्ब पुनिकरकमल, सुख उदार केयूर।
उर विशाल रेखा उदर, रिपुमर्दन जनशूर॥

कटि केहरी उदर त्रयरेखा। कहि न सकैं छविकविशतशेषा॥
नाभि गँभीर देखि मति घुमरी। मानहुँ तरणितनयजलभुमरी॥
पीत वसन शोभित शुचि फेटा। सजलजलदजनुजटितलपेटा॥
जंघपीड़नी नयन निहारे। उपमा कहि न सकत कवि हारे॥
हरिपदते प्रकटी पुनि गङ्गा। धरी शीश पर वैरि अनङ्गा॥
तापदकी उपमा का दीजै। जोकछु कहिय सो अल्प गनीजै॥
शापशिला गौतम की नारी। जे पद परशि पलकमें तारी॥
जे पदपद्म पखारि निषादू। भयो विदितजगविदितविषादू॥
जे पद पद्म चारि श्रुति गाये। चापत सिन्धुसुता उर लाये॥
ते पद निरखि युधिष्ठिर राई। अति आनन्द न हृदय समाई॥
अस्तुति करतभरतजललोचन। जय रुक्मिणीरमण अघमोचन॥

जयजय श्रीवृन्दाविपिन-वासी नाशी पाय ।
अविनाशी गति देततुम, दासन देव दुराय ॥
चरणशरण कहि नाम पुकारत । ताके नहिं गुण दोष विचारत॥
चरणशरण कहिद्विरद सुनायो । त्याग्यो गरुड़गगनपथ धायो ॥
कहुँ पट पीत गिरी कहुँ माला । हरीविपति पुनिदीनदयाला॥
ग्राहनिधनकरिशुभगतिदीन्ही । तहँ गजराज विनयबहुकीन्ही॥
शापकथा कहि दोष मिटावा । पुनि गजेन्द्र निजलोक पठावा॥
शवरी नाम अपावन नारी । परी चरण कहि शरणपुकारी ॥
कृपा दृष्टि देखी बनवारी । चढ़ि विमान वैकुण्ठ सिधारी ॥
कृपा निषादराजपर कीन्हा । भालुकीश निज सम करिलीन्हा
रावण बन्धु विभीषण नामा । कीन्ह कृतारथ श्रीसुखधामा ॥
करि करुणा हरिलीन्ह विषादा । भक्त शिरोमणि भे प्रहलादा
अगजगनाथ अनुग्रह कीन्हा । अविचलपदवी ध्रुव कहँदीन्हा ॥
केशीहर कल्याणकर, कृपासिन्धु भगवान ।
क्रूर कुपूतनको सुगति, कवन देय बिन कान ॥
बाल्मीकि उलटा जपे, कह्यो आधही मान ।
सबलसिंह चौहानकहि, कीन्हों आपु समान ॥
इति पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

गणिकागीध अजामिलतारण । गोपीपति गोत्रास निवारण ॥
श्रीकमला कुच कुंकुममण्डन । जनकसुतादुखदूमहविखण्डन ॥

हरिजनहृदयपयोधि मराला। रहत विहार करत सबकाला॥
गिरिवरधारी नाथ छबीला। नारायण श्रीकन्त रँगीला॥
माखनचोर चतुर्भुज स्वामी। पद्म गदाधर अन्तर्यामी॥
नाते विनय मानि प्रभु मोरी। दुर्योधन गृह जाहु बहोरी॥
मानहिं सो न विवश अभिमाना। पुनरागमन करिय भगवाना॥
करि बहु यतन ताहि समुझावहु। अपनी दिशिते चूक न लावहु॥

समुझावहु प्रभु विविधविधि, जाइय अबती बार।
होइहि होनेहार पुनि, जो बिधि लिखा लिलार॥

सुनियहवचन कृष्ण हँसिदीन्हा। नीक विचार भूप तुमकीन्हा॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेऊ। बोलिय सकल भूप अब तेऊ॥
सब मिलि करहिं मन्त्र उपदेशा। कहेउ कृष्ण तसकरिय नरेशा॥
सुनि नरेश सोइ बेगि बुलाये। भीमादिक भ्राता चलि आये॥
द्रुपद विराट और सब राजा। धर्मराजपहँ जुरेउ समाजा॥
पुत्रन सहित द्रौपदी रानी। चलि आई जहं शारंगपानी॥
कह हरि सुनहु सकलमनलाई। पठवत हमहिं युधिष्ठिरराई॥
सन्धिहेतु दुर्योधन भवनहिं। कहिये मन्त्र रहौ जनि मौनहिं॥
निजनिजमति जनिराखौ गोई। सब मिलिकहौ करिय अबसोई॥

धर्मराज सुनि हरिवचन, कही सबनते बात।
कहिये मन्त्र बिचारिकै, कृष्णदेव उत जात॥

बुद्धि बिचारि सकलमिलि भाखौ। अबनिजमन्त्र गोइनहिंराखौ॥
करियमिलाप कि कीजिय रारी। तौन बात अब कहौ बिचारी॥

कहेउ भीम वहिं कीन्ह कुकर्मा । त्यागेउ लोकलाज कुलधर्मा
केशपाणि धरि द्रुपदकुमारी । सभामध्य यह कीन्ह उघारी ॥
सुमिरण तुमहिं दीन ह्वै कीन्हों । दीनदयालु राखि तव लीन्हो
लच सदन चलि हमहिं पठायो । अर्द्धरातिमहँ अनल लगायो
लीन्हेउ राखि तहाँते बाचे । हरिकीकृपा अलनहिं आँचे ॥
विषमोदक वहि नीच खवायो । रह्यउ न चेत जँजीर मँगायो

कसेउ लोह गुण सकल तनु, डारि दियो ततकाल ॥
परेउँ गङ्गकी धारमहँ, तत्क्षण गयों पताल ॥

गयों भूमितल कछु सुधि नाहीं । छहरि गयो विषसवतनुमाहीं
सर्प लोक पहुँचो यदुराई । सुनि सुधि नागसुता तहँ आई ॥
यसिनि आइकरि मोहिं तमासा । नाना भाँति करैं परिहासा
विषतनु भरे खुलत नहिं नयना । कछुकछु सुनों श्रवणपुट वयना
अस्तुति करै मोहिं लखि मोही । नागकुमारि कामवश भोही
आप सहित मम सुन्दर ताई । वर्णत प्रीति करत अधिकाई ॥
करै कष्ट तनु हरि हर ध्यावै । बड़े भाग ऐसे पति पावै ॥
देवसुता जाको ललचाहीं । नर नारी क्यहि लेखे माहीं ॥
कर्कोटक-तनया सुनि वाता । आई मम समीप हरषाता ॥
अमिय सींचि मुखमोहिं जियायउ । जानिविषयतनतापवुझाय

सहरावत पदपाणिगहि, करत प्रीति अधिकारि ।
अमित देखि मोतन करत, वारहिं वार वयारि ॥

मृगनयनी हिमकरवदनि, पहिरे भूषण चीर।
तनु नवीन कटिछीन अति, व्याप्यो काम शरीर॥
म्वहिं विलोकि तनुदशा विसारी। चित्र पुत्तिकाकी अनुहारी॥
मम गति लीन्ह बढ़ो अनुरागा। त्यागे लाज मनोभव जागा॥
देख्यो नागसुता गति लोगन। जाइ जनायो तिनपुनिभोगन॥
नागसुता मानुष तनु रांची। भये सक्रोध बात सुनिसांची॥
गुणमञ्जरी मनुजपति लीन्हों। केहुँ कर्कोटकसे कहि दीन्हों॥
समुझि हिये यह बात अयोगी। चलासकोपिअकणदृगभोगी॥
यहां कामवश छांड़ि विचारा। वरहु मोहिं कह बारहिंबारा॥
मैं समुझाय कहौ तेहि पाहीं। गुणमञ्जरी उचित अस नाहीं॥
सुनि यह तोहिं निन्द सब लोगा। नागसुता नहिं मानुष योगा
योगमनुजवर तुमहि नहिं, देवयोनिमहँ व्याल।
काम विवश वरवसहिये, पहिरायो जयमाल॥
क्रोधित व्यथा सप समुदाई। ग्रसनमोहिं तेहिथलमहँ आई॥
कोउफणएक उभय तयचारी। चपलजिह्व चखअतिरतनारी॥
पञ्च सप्त पट फणको सर्पा। कोउ फण अष्टकरत अतिदर्पा॥
दशफण नाग पञ्चदश सोऊ। कोउ फणबीस तीसहै कोऊ॥
चालिस कोउ पचास फणयोगी। सत्तरि साठि असीफण भोगी॥
शत फण एक पञ्चशत एका। नाना विधि फण सर्प अनेका॥
उगिलत विष अरु दृग रतनारे। आशीविष भारे तनु कारे॥
धूसर लाल श्वेत रँग नागा।हरित पीत अरु विविध विभागा॥

ग्रसिनि आइ मोहिं रिस करि भारी। देखि विकल भै नागकुमारी
त्यहि अवसर कर्कोटक आये। चञ्चलजिह्व वदन फैलाये॥

श्यामवर्ण जनु जलद सम, रसना चलत निहारि।
खुले दशन अवलोकि पुनि, उपमा कहत विचारि॥

चपलजिह्वमुखबिच अभिरामिनि। चमकतथिरनरहतजिमिदामिनि
श्यामवर्ण सित दशन विभांती। संघट घटामहँ जनु वगपांती॥
हरी मनहिं मन नागकुमारी। विनय कहै विधि विष्णु पुरारी॥
उमा रमा हे शारद माता। विनय करत राख्यो अहिवाता॥
तब सुमिरेउ भयहरण कृपाला। आयो गरुड़ सर्पकुलकाला॥
ताहि देखि सब उरग पराने। जहँ तहँ गये जात नहिं जाने॥
कर्कोटक खगनाथ निहारी। वल भा थकित करत मनहारी॥
प्राणदान दै प्रथम वचाये। अव सक्रोध क्यहि कारण आये॥

पच्छिराज बोले विहँसि, सुनहु सर्प शिरताज।
पाण्डवके सन्देह नहिं, रच्छक श्रीव्रजराज॥

सो यदुनाथ चराचरस्वामी। जगतविदित मैं त्यहि अनुगामी॥
जो कुलकुशल चहौ अहिराई। मिलि पाण्डव कहँ वैर विहाई॥
वचन हमार मानि तुम लेहू। दुहिता भीमसेन कहँ देहू॥
गरुड़ वचन सुनि तजि सन्देहू। सुता विवाहि दीन्ह करि नेहू॥
गुणमञ्जरी सहित भगवन्ता। रह्यो शेषपुर वर्ष प्रयन्ता॥
सर्प दया करितहँ पहुँचाये। गजपुर धर्म्मराजपहँ आये॥

समाचार सुनि परम अनन्दा। रचा तुम कीन्हो ब्रजचन्दा ॥
मन्त्र हमार सुनिय यदुनायक। कुरुपति निधन करनके लायक ॥

बिन कारण काढ़े विपिन, कीन्हेसि शठ अपकार।
ताते कीजिय अवशि रण, यह मत नाथ हमार ॥

भीम वचन सुनि पुनि सहदेवा। कह्यो नाथ सुनिये जगदेवा ॥
उन हमार कीन्हों अपमाना। नाथ तुम्हार भेद सब जाना ॥
केशाकर्षण शठ अपकारी। सभा मध्य करि द्रुपदकुमारी ॥
भीषम द्रोण कर्णके आगे। रञ्चक कानि न कीन्ह अभागे ॥
सो सुधि यदुनन्दन नहिं भूलत।सुमिरि सुमिरि अजहूं उरशूलत
भूप वचन गजपुरकहँ जैये। हे हरि युद्ध अवशि ठहरैये ॥
सोवत जागत शरण तुम्हारी। बनै सो करिय उचित बनवारी ॥
अतिकौरति सो धाम सतायो। सान्तनीकमिलिवचनसुनायो ॥
युत प्रतिविम्ब कृष्णके आगे। क्रोधित वचन कहन सब लागे ॥
द्रुपदसुता यहि खल अभिमानी। नाथ तुम्हारि बात तब जानी॥
ताते और विचार न करहू। अब प्रभु दुर्योधनते लरहू ॥
द्रुपद नरेश यहै मत राख्यो। सहित विराट शिखण्डी भाख्यो ॥
सात्यकि धृष्टद्युम्न बलवाना। अभिमन्युकाशिराजमनमाना ॥

धृष्टकेतु पटनेश मिलि, सबन करो मत ठीक।
शूरसेन यहि विधि कह्यो, और विचार न नीक ॥

मैं हरि कहत आपने जीकी। है बिन युद्ध बात नहिं नीकी ॥
धर्मराज नहि शठ अपमाने। तुम समेत निर्बल करि जाने ॥

और बात सब तजि घनश्यामा । ताते करिय अवशि संग्रामा ॥
कहत नाइ शिर वचन घटूका । सुनिये नाथ क्षमा करि चूका ॥
पाण्डव सहित अछत गोपाला । द्रुपदसुता पुनि फिरत विहाला॥

छल करि दुर्योधन अधम, काढ़ेसि हमहिं विदेश ।
बांधे अजहुँ न द्रौपदी, गहे दुशासन केश ॥

तेरह वर्ष गये हरि वीती । सुधि न लई केहुँ निपट अनीती ॥
पाण्डव सबल जान संसारा । तुमं ईश्वर वसुदेव कुमारा ॥
तिनते कछु निसरेउ नहि काजा ।भै वड़ि लाज सुनहु व्रजराजा॥
अब प्रभु दुर्योधन कहँ मारौ । द्रुपदसुताको शोग निवारौ ॥
कोटिहु यत्न रहौ जनि वरजे । गर्जत देखि चराचर लरजे ॥
धर्म्मराज तब क्रोध निवारो । कहि प्रिय वचन निकट वैठारो ॥
सब लायक तुमको हम जानत । है वड़ पाप गोतके मारत ॥
हे हरि सम्मत कहत पुकारे । होइ नाथ भल मन्त्र हमारे ॥

सुने वचन नरपालके, द्रुपदसुता अकुलाइ ।
वोली हरिसों जोरि कर, चरणकमल शिर नाइ ॥

क्रूर शूर नहि भूप हमारा । जानत तुम यदुवंश कुमारा ॥
गहिके केश सभा शठ आनी । मानतसो न कछुक गिलानी ॥
इनते होत भली सो नारी । रोदन करत पुकारि पुकारी ॥
तौ कछु वोध हिये हरि होई । सभामध्य वहि खल निहोई ॥
पुरुषाकार पाण्डुसुत नारी । इनके वल रोपत महि रारी ॥

अभिमन्यु आदि सप्तसुत मोरे। करिहैं विजय दास प्रभु तोरे,
मम गति देखि लाज पञ्चालहिं। हरैं न कछु निडरैं रण कालहिं
वान्धव धृष्टद्युम्न वल भारे। भये कुण्डते सङ्ग हमारे॥
रणमहं लरैं टरैं नहिं टारे। करिहैं विजय प्रसाद तुम्हारे॥
युधामन्यु मम वन्धु तमोजा। नाम शिखण्डी नयन सरोजा॥

मम गति देखि सलज्ज सव, करिहैं कठिन मशान।
अस कहिके पुनि द्रौपदी, सवलसिंह चौहान॥

इति षोड़श अध्याय॥ १६॥

कहेउ धनञ्जय सुनिये श्रीहरि। काढ़ेसि धर्म्मराज हीने करि॥
सव प्रकार जानत जगवन्दन। वलीछली अधमी कुरुनन्दन॥
कपट अक्ष शकुनी निर्मायो। करि छल कीन्हें जूप हरायो॥
औरौ छल कीन्हेसि भगवाना। सो चरित्र सुनिये दै काना॥
कुरु पाण्डव वालक सव भीरा। खेलत रहे गङ्गके तीरा॥
विषमोदक भीमहिंतहँ दीन्हों। तवते हम प्रतीति तजि दीन्हों॥
धर्म्मराज वन गयउ शिकारा। श्वानसङ्गयुत तुरँग सवारा॥
परम अकिञ्चन विप्र वुलायो। विषमोदक तेहि हाथ पठायो॥
स्वर्ण नमद्दश दीन अकोरा। पठयहु करहु परम हित तोरा॥
मोदक धर्म्मराजकहँ दीजै। पठये हैं कुन्ती कह दीजै।

अशन करायो यतन करि, कह्यो न नाम हमार।
करि विनती पठये द्विजहिं, जहँ नृप फिरत शिकार॥

जान्यो भेद न द्विज तहँ आयो । धर्म्मराजते आनि सुनायो ॥
पठयउ मोहिं पाण्डुसुत रानी । मोदक तुमहिं दियो निजपानी॥
क्षुधित जानिके मोहिं पठायो । करहु अशन असकहिसमुझायो॥
परम गहन बाँधेउ नृप घोरा । बैठे विटपछाहँ घन घोरा ॥
क्षुधित तृषाते विकल शरीरा । जानि निवास जलाश्रयतीरा ॥
भोजन तुरत करत नृप लागा । विषमहंछहरि देखि द्विज भागा ॥
त्राहि त्राहि करि हृदय डराना । छलकीन्हेसि शठ मैंनहिंजाना
तृषावन्त नृप विषको पीरा । परे मूर्च्छि नहिं चेत शरीरा ॥
विकलविलोकि कृपाप्रभुकीन्हों । उदक पिआइ त्रासहरिलीन्हों॥

निकसि ततक्षण भूमिते, जल भाजन युत हाथ ।
पान करायो हरि तृषा, करी कृपा यदुनाथ ॥

जल पियाइ फेरे तनु पानी । मिटी तृषा तनु ताप बुझानी ॥
छल करणी मैं तुमहिं सुनाई । वनकी सुनहु बात यदुराई ॥
वन काढ़ेसि शठ करि अपकारा । निधनहेतु नितकरै विचारा ॥
दूत आय यह बात जनाई । वनमहँ निकट युधिष्ठिर राई ॥
परम दीन द्विज वेष बनाई । बसहिं विपिन पर्णशालाछाई ॥
भोजन कबहुँ मिलै कहुं नाहीं । वसन मलिन जीरणतनुमाहीं ॥
तेजहीन तनुविकल विशेखी । आयोनाथ आजु मैं देखी ॥
दूतवचन सुनि अतिसुखपाये । विहँसिसचिवसबनिकट बुलाये॥

चरबर आयो सुनु सचिव, धर्म्मराजकहँ देखि ।
कह्यो सेन ह्वै कै चलो, भोजनहीन विशेखि ॥

कबहुँ खातहैं मूल फल, कबहुँक अँचवत नीर।
निर्बल भयो शरीर सब, टूटी पर्णकुटीर॥
सबमिलिचलो सेन सजिजाइय। मानभंग उनको करि आइय॥
असकहिचलेउतुरतकुरुनायक। सेन साजि कर्णादि सहायक॥
पर्णकुटीढिग खल चलिआयो। सुनत चित्तरथ इन्द्र पठायो॥
देखि अनीति सुरेश रिसाना। चलेउ चित्तरथ साजिविमाना॥
शरनमारिदलव्याकुलकीन्हत्रसि। दुर्योधनहिं बांधिपुनिलीन्हत्रसि
करि निबन्ध लै गयो अकासा। आरत शब्द करत मन त्रासा॥
नृपति धनञ्जय आनि छुड़ायो। शरन मारि गन्धर्व भगायो॥
दीन्ह पठाइ बहुरि रजधानी। बलकी बात नाथ सब जानी॥
सहि न सकत प्रभु एकक्षण, रोवत द्रुपदकुमारि।
करौ नाथ कुरुनायकहँ, बाण शरासन धारि॥
अस कहि भयो विलोचन राते। मोचतखुलत मनहुँ मदमाते॥
जीभनिकारि अधरपुनिचाटत। फरकतगात दशानन काटत॥
मुख अति अरुणकुटिलभइ भौंहैं। श्वासलेतजिमिव्यालरिसौंहैं
क्रोधविवश अर्जुनकहँ जानी। बर्जत भूप कहत मृदु बानी॥
अपनी दिशिते चूक न करहू। मानै जब न बन्धु तब लरहू॥
ताते अब श्रीकृष्ण पठाई। जाय उनहिं देवैं समुझाई॥
जो वह देइँ गाउँ दुइ चारी। रहउ चुपाइ नीकि नहिं रारी॥
सुनत वचन द्रौपदी रिसानी। हे नृप फेरि कही यह बानी॥
ममगति देखिन आवति लाजा। निपट अनीति सुनहु व्रजराजा॥

विकल विलोक्यो द्रौपदी, करि प्रवोध यदुराय।
जो तुम्हरे मन भावना, सो हम करव उपाय॥
यहिविधिकहि यदुनाथ बुझाई। करि प्रवोध पुनि भवनपठाई॥
नृपसन विदामाँगि भगवाना। सात्यकिसहितचले चढ़ि याना॥
पठवन चले नकुल हरिसाथा। स्यन्दनकी पटिका गहि हाथा॥
विनयकरतनिजविपतिसुनावत। पुनिपुनिचरणकमलशिरनावत
फिरेउतात हरिमुख सुनिवानी। वोले नकुल ढरत दृगपानी॥
गद्गद कण्ठ गरे भरि आवा। ऊर्द्ध्वश्वासले वचन सुनावा॥
कौरवपति अति कीन्ह अनीती। वर्ष त्रयोदश वनमहँ वीती॥
केश पकरिकै शठ अभिमानी। द्रुपदसुता मन्दिरते आनी॥
मारन कह्यो भीम मन रूठी। हे हरि भई प्रतिज्ञा झूठी॥

क्षत्रिय ह्वै प्रण भाषई, फिरि न करे व्रजराज।
विदित सकल संसारमहँ, याते अधिक न लाज॥

सभामध्य सुनिये भगवाना। करि रिस द्रुपदसुता प्रणठाना॥
दुःशासनके रक्त नहाई। वांधव कच तव कृष्ण दोहाई॥
मृषा न प्रण करिहैं निजरानी। सो दुखसमुझि सुदर्शनपानी॥
रहत नाथ मन मोर मलीना। धर्मराज पुनि राजविहीना॥
तेहि दुखते दुख अति भगवाना। सो अव कहौ सुनिय देकाना॥
वृद्ध मातु परघर प्रतिपालक। यथा अनाथ होत विन वालक॥
पञ्च पुत्र जेहि सव परिवारा। भ्रातजात तुम हरि अवतारा॥

सो कुन्ती ऐसो दुख पावत। हे हरि नेकु लाज नहिं आवत॥
अर्जुन कहेउ कर्णकहँ मारण। तेहि प्रणके रक्षक जगतारण॥
मन्त्र हमार सुनिय यदुराई। मिटै कलङ्क सो करिय उपाई॥

हम देखत शठ द्रौपदी, आनी सभा निशङ्क।
खण्डिय अरि रण मण्डिकरि, तब यह मिटै कलङ्क॥

असकहि नकुल चरण शिरनावा। करि प्रबोध हरि कण्ठ लगावा
विहँसि वचन भाष्यो बनवारी। पूजी मन कामना तुम्हारी॥
मिटिहैं सब सामर्थ्य कलेशा। धरहुधीर तजि सकल अँदेशा॥
धर्म्मशीलको कबहुँ अकाजा। होय न नकुल कहत ब्रजराजा॥
पापिनको सुख स्वप्न समाना। जानहु तात न ठीकठिकाना॥
वह अनीतिरत नीति न जानत। तृण समान त्रैलोकहि मानत
धर्म्मशील हैं भूप तुम्हारा। गति अलीक जानत संसारा॥
नीति निपुण ममभक्त प्रवीना। सुमरहि सुरगुरुपदमतिलीना॥
ऐसेन को नहि होत अकाजा। यहिविधिकरिप्रबोधब्रजराजा॥
अब विलम्बनहिं दिन दश बीते। करिहौं काज तात मनचीते॥
भयेमुदित सुनि श्रीपति बानी। प्रीति प्रतीति न जाय बखानी

भयो विदा मन हर्ष अति, पद गहि गोकुलचन्द।
करि प्रबोध फेरे नकुल, सबलसिंह नंदनन्द॥

इति सप्तदश अध्याय॥ १७॥

फिरे नकुल प्रभु आयसु पाई। सात्यकि सहित चले यदुराई॥
नगर वारुणावर्त्त बसेरा। कीन्ह जाइ हरि जाइ अवेरा॥
हरि सुधि पाइ सकल पुरवासी। आये मिलन ज्ञान गुणरासी॥
विविधप्रकार कीन्ह सतकारा। जोरिजोरिकरहरिहि जोहारा॥
बहुत भांति कीन्हें पहुनाई। अति आनन्द न हृदय समाई॥
तेहिनिशितहँा शीलगुणधामा। सात्यकिसहितकीन्हविश्रामा
अरुणचूड़ अरुणोदय बोले। कमलविलोचनलोचनखोले॥
तब श्रीहरि सात्यकी जगायो। दारुक वाजि साजि रथलायो॥
पुरजन सकल विदा हरि कीन्हों। भोरभये पुनि मारग लीन्हों॥
नाना भँाति कहत इतिहासा। चलेजातमग सहित हुलासा॥

पूछेउ सात्यकि जोरिकर, सुनहु रुक्मिणीरौन।
भारतपद कुरुवंशको, कहौ सो कारण कौन॥

बोले विहँसि वचन यदुराई। पूरब कथा सुनहु तुम भाई॥
यहि कुल भयो भूप दुष्यंतू। शील स ह सत्यनिधि संतू॥
सो शकुन्तला विदित न काही। भूप विपिनमहँ ताहि विवाही
भरत नाम तिन सुत उपजायो। भारत सब शशिवंश कहायो॥
हँसि बोले सैवेश कुमारा। कहिये नाथ सहित विस्तारा॥
स्वल्प कहे मन बोध न होई। गुप्त कथा जनि राखौ गोई॥
तब हरि चित्रविचित्र कहानी। लगेकहनसुनिसात्यकिवानी॥
सावधान मन थिर करि भाई। अब तुम सुनहु कथा सुखदाई

चन्द्रवंश महँ आदुन्टप, प्रकट भयो दुष्यन्त ।
तिनके गुण वर्णन करत, कवि पण्डित शुचि सन्त ॥
जनु रचना निज विश्व सँवारी । रचि विरञ्चि तेहि दै करतारी
काम कला अवला मन जानहिं । काल समान शत्रुको मानहिं॥
प्रजाजानि मन पूरण लाहू । सदा उछाह करत सब काहू ॥
द्विजगण धर्म केर अवतारा । जानहि हृदय अनन्द अपारा ॥
कुलके वृद्ध स्वच्छ सुजाने । सेवक सेवहिं न्टपहिं डराने ॥
जाके राज्य अनीति न होई । प्रजा प्रसन्न जानि सब कोई ॥
साम दान पुनि दण्ड विभेदा । करैं भूप जिमि वरणै वेदा ॥
अतिथि सुधारतकी सुधिलेई । यथायोग याचककहँ देई ॥
सुनिसमवुधिविवेक जिमिहंसा । सुर सिहातकरि भूप प्रशंसा ॥
कल्पवृक्ष समदानकहँ, कीरति शशि अवदात ।
भानु समान प्रताप जग, अधिक अधिक सरसात ॥
राजसूय आदिक विधि नाना । कीन्हें भूप दये बहु दाना ॥
करे अमित निज यज्ञ अरम्भन । पूरि रहे एहुमी महँ खम्भन ॥
तासु तेज रवि उदय विलोके । न्टपकिरीट सब कुमुद सशोके ॥
रहत मौन कछु कहत सो नाहीं । तनु समीप जिमितनुपरछाहीं
वञ्चक चोर उलूक समाना । हेरत मिले न ठीक ठिकाना ॥
सुजन कमल फूले बहुभांती । खल मलीन जिमि उडुगणपांती
भये कोकनद वनिक विशोका । सुरपूरणविलसहिंनिजलोका ॥
मीत चन्दु सम मिल सुखारे । फूलि रहे जहँ तहँ रतनारे ॥

नृप कीरति पारद किधौं, शारद मुक्ताहार।
हिमगिरिकी कैलासकी, किधौं देवसरिधार॥
शारद-चन्द्रकि चन्द्रिका, मानहुँ करत प्रकास।
धवलध्वजासी देवपुरि, ऊपर करत विलास॥

कुन्द कलीसी कुमुद कलीसी। हाटक सी बगपांति भलीसी॥
क्षीरफेनु सी गङ्ग रेनुसी। वासुकिसी सुरपतिकि धेनुसी॥
कामधेनुसी फटिकशिलासी। वेलासी करपूर-विलासी॥
गणपतिसी हरसी गिरिजासी। कीरतिविशद नदीविरिजासी॥
शान्ति सत्यसी सन्तवसनसी। उदधिउदधसीद्विरदशनसी॥
की तुषार की तरणि तरङ्गा। किधौंविष्णुतनु विशदकुरङ्गा॥
नृपतिकीर्ति जनु श्वेतविताना। भरतखण्ड मण्डलमहँताना॥
दान ज्ञान द्वौ खम्ब विभागे। नानासुत सिरसाकलिलागे॥
बुधि कनात हरिभक्त चँदोवा। हिंसायुत परदा तहँ जोवा॥
युद्ध शूर नृप बुद्धि उदारा। गुण अनेक को बरनैं पारा॥
अपर कथा अब कहौं बुझाई। चितदै सुनहु श्रवणसुखदाई॥

कथा सूप दुष्यन्तकी, भाषौ चित्त विचित्त।
ज्यहिविधिभई शकुन्तला, सो अवसुनहुचरित्त॥

विश्वामित्त महामुनि आये। करत विपिन तन ध्यान लगाये॥
तहँ मेनका रूप गुण रासी। जात गगनपथ देव विलासी॥
भूषण वसन विभूषित अङ्गन। गावत राग बसन्त तरङ्गन॥

बीणा बजावत ताल अभङ्गन । निर्त्तत गति सङ्गीत उमङ्गन ॥
फूलनको गजरा जु तरङ्गन । उठत सुगन्ध समीर प्रसङ्गन ॥
नुखतांबूल कपूर लवङ्गन । अलिगुञ्जत सँग अपसरसङ्गन ॥
मुनि समीप उतरी सो आई । करी कलान समाधि जगाई ॥
देखि मेनकहि विकल शरीरा । मुनिमनभयो मनोभवपीरा ॥
बहुत बारलगि रह्यो निहारी । सुधिनरहीतनुसुरति बिसारी ॥
बीणा बजाइ मधुरस्वर गावत । खेलत फाग गुलाल उड़ावत ॥

मुनिलिय ऋषितिय गाधिसुत, निरखत बारहिं बार ।
विकल युगल तनु कामवश, भूलो सब आचार ॥

विश्वामित्र मनोभव जीता । वर्ष एक सम वासर बीता ॥
भई निशा सो मुनि ढिग आनी । करि ढिठाइ तनुमहँ लपटानी
जंघ जंघसों कटि कटि जोरी । उरसेउर मुनि मति भइ थोरी ॥
अधराधर ऊपर रद दीन्हा । करि चुम्बन आलिङ्गन कीन्हा ॥
करिविपरीति सुरति बहुभांती । द्वादश मास गये जनुराती ॥
भयेविकल तब मन सुधि आई । खोयो तप बहु कीन भोगाई ॥
रति करिकै मुनिवर पछिताने । त्यहिवनते कहुँ अनत पराने ॥
भई सुता बीते नौ मासा । गई डारि सो सुरपति पासा ॥
एक बार नहिं छीर पियाये । रोदन करत छुधा तनु छाये ॥
रोनशब्द सुनि मुनिवर आये । तृणशाला लै जाइ जियाये ॥
मुनि उतङ्क कीन्हौ प्रतिपाला । भई तरुणि बीते कछु काला ॥

सबलसिंह चौहान कह, हृदय परम आनन्द ।
दिन दिन द्युतिबाढ़ी अधिक, जिमि द्वितियाको चन्द ॥

इति अष्टादश अध्याय ॥ १८ ॥

तनुसे निकसि ज्योतिद्युतिभारी । फैलिरहीचहुँदिशिउजियारी
लाजसहितचष अरुणानुकीली । करुणामय सबभांति छबीली ॥
अंजन दै दृग रञ्जित कीन्हें । खञ्जनकी उपमा हरिलीन्हें ॥
मृगनिजदृगपटतर नहिं जाने । लाजमानिमन विपिन छिपाने ॥
तियदृगकरतकमल करिकोऊ । मम मनमें भासित नहिंसोऊ ॥
कमलज फल तज्यो तनु ताहू । ऐसि ज्योति मोहत सबकाहू ॥
नासा सुभग अनूप सज्योती । जगमगात नथबेसरि मोती ॥
नाक समीप मोद अधिकाई । गुरुकवि मन्त्रकरत मनलाई ॥
आनन सुभग चन्द्र मदहारी । अधर प्रवाललाल सुखकारी ॥
भ्रुकुटी बाम श्याम अहिछौना । शशिसमीपजनुरचेखिलौना ॥
कच मेचक तल श्रुति ताटङ्का । घनघमण्ड दामिनी दमङ्का ॥
अधरबीचद्युतिदशन बिभांती । जनु विद्रुम मुक्ताहल पांती ॥
करि न सकतकवि कल्पनाई । फिरिनरच्योविधिकरिनिपुणाई
भुज मृणाल भूषण सब अङ्गा । देखि अनङ्ग नारि मन भङ्गा ॥
अति उन्नति कठोर बक्षोजा । गेंद खेल जनु रच्यो मनोजा ॥
कटिसूक्ष्म कच अँगुली परना । नखअतिअरुणलालद्युतिहरना ॥

अतिसूक्षम मृदु उदर पुनि, पुनि अमोल अभिराम ॥
उपमा कहत विचारि जनु, रच्यो दुलौची काम ॥
जंघथम्भ सम कदलिके, उन्नत सुभग नितम्ब।
अतिसुन्दर पिडुरी लखत, करत मदन आलम्ब ॥

अम्बुज सम कर पद अरुणारे। थिर न बुद्धि मोरवान निहारे
तनमन काम सरिस उजियारा। मनहुँ दीपते दीपक वारा ॥
एक समय यदुवन्त नरेशा। देखि चकित भे अद्भुतभेशा ॥
मृगया फिरत विलोकत राजा। विहरत विपिन करततनुसाजा
भयो कामवश ताहि विलोकी। चितवतचकितनयनजलरोकी ॥
देखि स्वरूप नराधिप फूले। जनु मन्मथहि डोलकढ़िझूले ॥
प्रेम सो डोरि डोलावत खींचे। कवहुँ उरध मन कवहूँ नीचे ॥
करत विचार नरेश सुजाना। प्रियवशभयो हरे विधिज्ञाना ॥
रम्य अरन्य जानि नहिं जाई। समुझिसमुझिन्टपमनपछिताई
द्विज कुमारिको भूप किशोरी। मन्मथविवश करी मति भोरी॥
विप्रसुता तव बात अयोगा। सुनि परन्तु हँसिहैं सव लोगा ॥

भूपसुता जो होइ तव, वनि आई सव बात।
होइअगम्य तव नीकनहिं, समुझिसमुझि पछितात ॥

विस्मय हर्ष विवश नरनाहू। धरि धीरज मनकरत उछाहू ॥
मैं अपने मनकी गति जानत। कवहुँ असतपथपदनहिंआनत ॥
इन विधि रच्यउ मोर सयोगा। योगत्यागि नहिंहोइ अयोगा ॥
मन्मथ विवश भूपकहँ जानी। तव यह भई गगनपथ वानी ॥

विश्वामित्र मेनका नारी । भा विहार भइ प्रकट कुमारी ॥
सो शकुन्तला सब गुणखानी । तुव नरेश होइ यह रानी ॥
गाधिसुवन क्षत्रियकुल माहीं । जानत सब अयोग कछुनाहीं ॥
मुनि उतङ्ग कीन्हा प्रतिपाला । गगनगिरासुनिमगन भुवाला ॥
निकट गये नृप विवश अनङ्गा । प्रेम सहित करिचपल तुरंगा ॥

पूछेउ नृप कित वन फिरत, का पुनि नाम तुम्हार ।
सुता अलौकिक कौनकी, मन वश करै हमार ॥
बोली विहँसि शकुन्तला, सुनियं भूप प्रसङ्ग ।
तुम क्षत्रिय हम विप्रकी, सुता मनोहर अङ्ग ॥

मुनि उत्तङ्ग विदित सुखरासी । तासु सुता मैं विपिनविलासी ॥
अगम सदा क्षत्रियकुल माहीं । बात अयोग उचित नृपनाहीं ॥
तासु गिरा सुनि कहउ नरेशा । जनि बोलहु असवचनभदेशा ॥
विधिसुत अत्रि विदित संसारा । भयो चन्द्र सुत बुद्धि उदारा ॥
शशिसुतबुधबुधसुतजगजाना । इला पुरूरव नाम बखाना ॥
त्यहि कुल भयो मोर अवतारा । सम संयोग हमार तुम्हारा ॥
जिमिरतिकाम शचीसुरनायक । जलदयथादामिनिसुखदायक
तिमि संयोग हमार तुम्हारा । बुद्धि विचार रचेउ करतारा ॥
तव स्वरूप सुन्दर जलरासी । मगनहोत कुरुपार विलासी ॥

तुमहिं विलोकत कुसुम धनु, लिये कुसुम शरहाथ ।
तिलतिल तनु जर्जर करेउ, ह्वै सकोप रतिनाथ ॥

तव त्रिय रूप ठगोरी डारी । मन्दहास जनु फाँसि पसारी ॥

असिपुत्रिका कटाक्ष अमोला। कर्षत प्राण मन्त्र मिठबोला॥
विष-मोदक कपोल युग तोरे। निरखत छहरि गयो तनु मोरे।
अधर सुधारस मोहिं पियावउ। करि करुणा अबवेगि जिआवउ
तुम बिन मैंन जियउँ घटिकाहू। समुझतअबनबहुरिपछिताहू
मूरि विशल्यकरन कुच तोरे। परसत मिटै व्यथा तब मोरे॥
सञ्जीवनी तोर सम्भोगा। रहै न काम जौ नितमहँ भोगा॥
है यह योग अवर कोउ नाहीं। तातै विनय करत तुमपाहीं॥

नयन बयन तनु मिलि रहो, रहौ मिलनकहँ देह।
सो मिलाइ अस नेहते, त्यागहु सब सन्देह॥

कहेउ उतङ्कसुता सुनु राजा। धीरज धरे सरै सब काजा॥
पितुआयसु बिन यह बड़ि हाँसी। रहौ चुपाइ जानि निजदासी
कह नृप और विचार न कीजै। अङ्गदान हितकरि मोहिंदीजै
नैन बैन मिलि मिलेउ सनेहा। यह अभिलाष मिलै सब देहा
सुनि सालज्ज उतङ्क किशोरी। बोली मधुर गिरा करजोरी॥
तन इत मन तुम्हरे मन साथा। करि सङ्कल्प रहत नरनाथा॥
कछु दिनमें करि हैं जयमाला। बोलि पिता मुनिदेव भुवाला
डारब सुमन लाल तव ग्रीवा। होइ विवाह रहै गृति सीवा॥
तुमकहँ देह देइ हम राखी। तजौ शोचनृप सबसुर साखी॥

रचेउ विरञ्चि विचारिकै, मोर तुम्हार विवाह।
तुम तजि करहुँ न आन पति, धरहु धीर नरनाह॥

श्रीहरि हर गिरिजापति आना। वरहुँ तुमहिं की त्यागउँ प्राना
भजौं न आन पुरुष तनु छूटै। पितु निदेश तजि पीकलकूटै॥
वूड़ौं वारि अनल तनु जारी। वरौं तुमहिं की रहौं कुमारी॥
सुनिप्रियवचन तुरँगतजिदीन्हा। तहँ गन्धर्वव्याह करिलीन्हा॥
काम विवश न्टपज्ञान भुलाना। आलिङ्गन कीन्हों विधिनाना॥
शकुन्तला निज नाम वतावा। पुनि न्टपगमनभवनकहँ आवा॥
तव शकुन्तला मन्दिर आई। दोहत भयो शोच अधिकाई॥
सो चरित मुनिनायक जाना। जो कछु भयो सकलकरि ध्याना
पूंछेउ ऋषै सर्व कहि दीन्हा। जिमि गन्धर्व्वव्याह न्टप कीन्हा॥

धीरज दियो शकुन्तलै, उत्तमकुल नरनाह।
यामें सुता कलङ्क नहिं, करिलीन्हों तुम व्याह॥

ताके भयो भरत महिपाला। धर्म्मशील वलबुद्धिविशाला॥
षोड़श वर्ष भयो नरपालक। खेलहिं विपिन व्यालसँगवालक॥
महिषश्टङ्ग धरि कवहुँक उखारैं। कवहुं अंगुलि व्यालमुखडारैं॥
सिंह लूमधरि कवहं भ्रमावै। द्विरद मतङ्गहि दशन न लावैं॥
अदिति कुमार पुरन्दर जैसे। सुत शकुन्तला जायो तैसे॥
अनसूयाके यथा निशाकर। कश्यपके जिमि भये प्रभाकर॥
रविके मनु मनुतनय प्रियव्रत। तिमि शकुन्तला तनय धर्म्मव्रत॥
तरणि समान तेज तनुमाहीं। वल पटतरिय वली कोउ नाहीं॥
धनुर्वेद मुनि ज्ञान पढ़ाई। अस्त्रशस्त्रसिखि करि निपुणाई॥
राज्यनीति वहुभांति पढ़ायो। हयगजरथहि सो युद्ध सिखायो॥

पढ़ो कि पुनि चटसारमहँ, खेलन जाइ शिकार।
सबलसिंह चौहान कहि, सुनिमनमोद अपार॥
इति ऊनविंश अध्याय॥ १६॥

राज्य योग सब लच्छण जानी। निकट बुलाय कहत मुनिज्ञानी॥
पितु तुम्हार शशिवंश नरेशा। नृप दुष्यन्त सब जानत देशा॥
अति बलिष्ठ दुहिता सुत मोरा। सकल धरामण्डल है तोरा॥
भूपति रहैं कृपा अभिलाखे। रहैं सुरेश जासु रुख राखे॥
तुमपितु सभा अलौकिक लीला। बसैं दिगीशन केर दकीला॥
सोमवंश महँ जन्म तुम्हारा। अति गोत्र जानै संसारा॥
इला पुरूरव पितुमह नामा। तेज निधान शूर बलधामा॥
पितुगृह चलहु करहु निजराजू। सहित धराधन सेन समाजू॥
पुनः वहिक्रम भूप बुढ़ाना। और न सुत तुमकहँ नहिं जाना॥
चिन्ता विवश भयो नृप अङ्गा। प्रातहि तात चलहु मम सङ्गा॥
तुमहिं विलोकि भूप सुख पाइहि। राज्यदेइ पुनि कानन जाइहि॥
तपचर्याको करत विचारा। सुतहित विपिन न जाइं भुवारा॥
तुमहिं विलोकि त्यागिसबशूला। नृपतपकरहिं सहितअनुकूला॥
प्रातहि सहित शकुन्तला, चलहु हमारे साथ।
सुखी करहु दुष्यन्तकहँ, होहु पुत्र नरनाथ॥
अस कहि पुनि मुनि सेवन लागे। उदित होत उदयकर जागे॥

सुत शकुन्तला सहित पयाना । कीन्ह कहा मुनि ज्ञाननिधाना॥
आये चन्द्र वंश रजधानी । दरशन दीन्ह सभामहँ आनी ॥
देखि महीपति कीन्ह प्रणामा। दीन्ह अशीश मुनीश अकामा ॥
अर्घ्य देत आसन बैठारे । ह्वै प्रसन्न तब वचन उचारे ॥
सुनहु भूप यह भरतकुमारा । तनय तुम्हार विदित संसारा ॥
अस कहिपुनि प्रणाम करवावा। प्रीतिसहित निजढिग बैठावा॥
देखत भूप भरत की ओरा । अति सुन्दर तनु वयस किशोरा ॥

वृषभकन्ध दीरघभुजा, दीरघ वक्षविशाल ।
चन्द्रवदन कटिकेहरी, कमलविलोचनलाल ॥

कछु शिशुता कछु तनुतरुणाई । सहित वीरता कढ़त लोनाई ॥
तब शकुन्तला सभा मँझारी । आई तुरत दिशा तम हारी ॥
नृपहि देखि मनहींमन माहीं । कीन्हप्रणाम प्रकटकछुनाहीं ॥
देखत चकित सभा सब कोई । शची किधौं रम्भा रति होई ॥
मंजुघोष मेनका घृतासी । विश्वमोहनी कुलकी रासी ॥
प्रभा सरस शोभा तनु जाके । नहिं त्रिलोक पटतरमहँ ताके॥
जा तनु की सुन्दरता ताकी । सजल होत उरवशी वराकी ॥
की रोहिणी किधौं अनुसैया । अरुन्धती की उदितजोन्हैया ॥

रहे मौन नहि कहत कछु, शोभाविपुल निहारि ।
देखी भूप शकुन्तला, पहिंचानी निज नारि ॥

कह नृप कौन कहांते आई । बोली मधुर गिरा शिरनाई ॥
करत हँसी की विन पहिंचाने । पूंछत नाथ कि हमहिं भुलाने

भूलो सुरति भई मति भोरी। मैं शकुन्तला अनुचरि तोरी॥
दृग नीचे करि कहत सलाजा। वनमहँ मिलो सभुक्रमनराजा।
जहां उतङ्ककेर पर्णशाला। परम गहन सुधि करहु भुवाला॥
नदी पुनीत तरणितनया तट। सुन्दर सुखद छाँह शीतलवट॥
नाम बताय भवन तुम आयो। करि प्रबोधमोहिं भवनपठायो॥
भरत-जन्म को कथा सुनाई। तुम्हरे दर्शहेत दूत आई॥
यह लालसा न दूसर काजा। छांड़ो विपिन भूल सुधि राजा॥

देखो सुनो न मैं कछु, विहँसि कहो महिपाल।
सुनहु सभासद मिलि सकल, मृषा कहत यह बाल॥

यह तिय रत्न पुरुषके लोभा। सानत मोहिं चहत निज शोभा॥
वारवधूको गति पहिचानौ। है कुलटा मनमें मैं जानी॥
सुनि शकुन्तला कह मन माखी। तब नरेश दीन्हीं सुरसाखी॥
पतिव्रत जो छांड़ो मैं नाथा। तौ तुम करो खण्ड शतमाथा॥
अस कहि पतिव्रता रिसवाई। कहत सुरनते भुजा उठाई॥
सुनत श्रवण तुमदेत न साखी। ह्वैहै तेज हीन विन आँखी॥
सुनि यह पतिव्रता भय माना। भई गगन सुर गिराप्रमाना॥
सम संयोग कलङ्क विहीना। अति पुनीत नृपनारि प्रवीना॥
भरतनाम यह तनय तुम्हारा। करहु भूप तुम अङ्गीकारा॥

सुनहु नरेश शकुन्तला, सवविधि सम संयोग।
भइ सुरगिरा प्रमाण नभ, सुनि हर्षे सब लोग॥

सकल सभासद निकट बुलाई। अति आनन्द न हृदय समाई॥

कहत सुनाइ सवनते राजा। गगन गिरा सब सुनहु समाजा ॥
है शकुन्तला मम पटरानी। निश्चय भरत पुत्र सुखदानी ॥
लोक वेदते नारि कुमारा। कीन्ह प्रथम नहिं अङ्गीकारा ॥
हँसिहैं लोग नरेश लोभाने। तरुणतिया अरु सुत विन जाने ॥
राख्यो गृह वड़ि कीन्ह ढिठाई। अस विचारि सुरगिरा सुनाई॥
प्रथमहिं भई विपिन नभवानी। करि विवाह तव कीन्ही रानी

अस कहि भूप शकुन्तला, दीन्ही भवन पठाइ।
वेठारे पुनि मोदते, भरत समीप वुलाइ ॥

कह नरेश तव सुनहु उतङ्का। कहिये नाथ मिटै आशङ्का ॥
देवन सम संयोग वखाना। कहि प्रकारते मैं नहिं जाना ॥
मुनि उतङ्ग मोदक अधिकाई। कथा प्रथम सुनि वरणि सनाई॥
तुम शकुन्तलहि मुनिवर भाखी। सुनहु भूप विधितें पटसाखी
एकै भांति प्रकट भय दोऊ। कथा विचित्र सुनहु नृप सोऊ ॥
विधियुत कुश जानत संसारा। प्रकट करे कुश नाम कुमारा ॥
तिनके गाधिराज वलखानी। अङ्गदेश कीन्ही रजधानी ॥
कौशिकतनय कौशिकी नामा। तनया विदित शीलगुणधामा
काम विपिन तप कीन्ह महाना। भई पुनीत नदी जगजाना ॥
कौशिक मुनितनुजनित अनङ्गा। भई सुता मेनका प्रसङ्गा ॥

सो जग विदित शकुन्तला, सव विधिसम संयोग।
भये तुम्हारे भूप अव, अर्ध सिंहासन योग ॥

सनहु कथा चित लाइ नरेशा। निजकुलको सव त्यागि अँदेशा

कीन्ह विरञ्चि अतिसत नामा। तपमूरति मुनिवर गुणधामा॥
भे जग विदित चन्द्रसुत ताके। निशि तम रहत कण्ठतरजाके॥
अमियमयो अरु सुरपति मीता। धरो शीश शिवजानि पुनीता॥
सप्तविंश तिय जग उजियारी। अति प्रिय तिनहिं रोहिणीनारी
तिनके सुत बुध बुद्धि निधाना। भये सौम्यग्रह सब जगजाना॥
इला पुरुरवा भय बुध बालक। अतिबलिष्ठ श्रुतिपथ प्रतिपालक
भयो कामवश चेत न आवा। विपिन फिरत उरवशी भ्रमावा॥
देखि स्वरूप ज्ञान सब गयऊ। बिसरी देह कामवश भयऊ॥
हँसि दृगशाइ विलोचन तीछे। चली पराइ चला नृप पीछे॥
नग्नि शरीर नगिन तरवारी। हा उरवशी पुकारि पुकारी॥

प्रकट होइ कहुँ निकट होइ, कवहुं जाइ द्रुम ओट।
कवहुं दिखावत हासमृदु, कवहुं करत दृगचोट॥

कवहुंक प्रकट होत तिय आगे। चले जात नृप पाछे लागे॥
निकट विलोकि गगन उड़ि जाई। दूरि देखि पुनि देइ दिखाई॥
कवहुं वाम दच्छिण दिशि पूरा। राग अलाप बजाइ तँबूरा॥
यहि विधि गगन बीच लै जाई। अमितनिहारि प्रीतिअधिकाई
निजवश जानि दया अति बाढ़ी। भूप समीप जाइ भइ ठाढ़ी॥
करि विनती नृप भवन लवाये। करि प्रसङ्ग तुमको उपजाये॥
भया एकत्र तुम तिनि वहुदारा। सब विधिसम संयोग तुम्हारा॥
कहि यहि विधि मुनिवरउत्तङ्गा। गये मण्डली मेटि असङ्गा॥

वानप्रस्थ विचारि अब, विपिन गये ततकाल।
लै निज हाथ शकुन्तला, भरत भये महिपाल॥
जिनको सुयश पयोनिधि पारा। गये उलंघि पहाड़ अपारा॥
तिन पुरु नाम तनय उपराजा। भयो सकल पुहुमीपतिराजा॥
नहुष नृपति तिनके बलदाई। लीन्ह इन्द्रपद इन्द्र भगाई॥
तिनके सुत पुनि भयो ययाती। तेज प्रताप विदित सब भांती॥
अरजा पुनि दूसरी कनिष्ठा। नृपकी नारि नाम शरमिष्ठा॥
शुक्रसुता ज्येष्ठी देवयन्या। लघुतिय वृषपर्वाकी कन्या॥
युग पत्नी दश सुत उपजाये। तिनके भारत सकल कहाये॥
कथाविचित्र सुनत सुख पावा। पुनि सात्यकि हरिपद शिरनावा
आगे चलि हस्तिनपुर देखी। चित्रितचित्र विचित्र विशेखी॥
अति उतङ्ग सोहत पुर फाटक। रचितकिवारद्वारमणि हाटक॥
वसत लसत पुर द्युति अधिकाई। जनु सुरनगर वास तहं आई॥
वसत तहां दुर्योधन पोचा। कहत इन्द्र सन मन सङ्कोचा॥
पुरजन देवी देव से, पाण्डव गये विदेश।
करत नहुष जनु इन्द्रपथ, भोगि निकारि सुरेश॥
नन्दनवन निन्दित वन बागा। रुचिर वापिका कूप तड़ागा॥
मन्दाकिनि सम सोहत गङ्गा। उपमा उठत अनूप तरङ्गा॥
वर्ण वर्ण पच्छी रव घोरा। वेद पढ़त जनु सुर दुहुँ ओरा॥
शङ्करगिरि जनु रुचिर अटारी। चातुर चारु सहित गचढारी॥
रङ्ग रङ्ग ध्वजपांति विभाती। मनहुँ सपच्छ शैल उतपाती॥

सोहत जहँ तहँ रुचिर कँगूरा। विय नगरी शिरसुन्दर जूरा ॥
खुले द्वार सोहत सुखरासी। सुरपुर सरिस करत जनु हासी ॥
कोटि न गुड़ि उड़ि उड़ि रँगराची। नगर नगारनकी ध्वनिमाची ॥
पुरशोभा हर्षत निरखि, गये निकट भगवान।
सबलसिंह चौहान कह, को करि सकै बखान ॥

इति विंश अध्याय ॥ २० ॥

दारुक हांक्यो अश्व रथ, सुमिरि महेश गणेश।
नगर हस्तिनापुर तबै, कीन्हों तुरत प्रवेश ॥
वनित मनोहर रूप विलोके। यकटक लखै नयन पल रोके ॥
हरि शोभासागर सुखसारा। तिवलोचन झखकरत विहारा ॥
गली बजार छतीसौ कोसा। निरखत मुख चकोर जिमि शोभा
सात्यकि सहित अलौकिक वेखा। चले जात पुरवासिन देखा ॥
नरगिनमोसकिनरगिकिशोरी। की मधु मदन मनोहर जोरी ॥
हरि हर कहि वर्णत हैं कोऊ। नर नारायण हैं की दोऊ ॥
सात्यकि सहित सोह भगवन्ता। इन्द्र सहित जनु जात जयन्ता
मारगमहँ शोभा अधिकाई। मनहुं राम लक्ष्मण दोउ भाई ॥
पीतवसन सुन्दर ललित, कलित विभूषण गात।
फलित मनोरथ सबनके, निरखत सुख सरसात ॥
प्रभु शोभा वर्णत नर नारी। निरखि निरखि तनु दशा विसारी

छवि अभिराम कामशतकोटी। हरि पटतरिय बात यह छोटी॥
प्रभु शोभासागर अवगाहा। सुर नर मुनि कोउ पाव न थाहा॥
इकटक चितै परस्पर कहइं। इनकी सरि येई जग अहईं॥
उपमा काहि देइको योगा। कहत परस्पर सब पुरलोगा॥
सरि सात्यकि करि उभय विभागा। कोऊ कहत ज्ञान वैरागा॥
तहँ प्रभु मोहन तन देखरायउ। मोहे सब तन सुधि विसरायउ॥
प्रभुशोभा निरखत कोउ ठाढ़े। वर्णत कोउ नयनजल बाढ़े॥

मन हरिवश सरवस सहित, विसरि गई सुधि देह।
प्रभु तनुद्युति वर्णन करत, पुरजन सहित सनेह॥

कमलनयनकुण्डलद्वै कानन। अति कमनीय कलानिधि आनन॥
भृकुटी कुटिल नासिका कीरा। उर बनमाल मनोहर हीरा॥
कीट मुकुट शिर ऊपर धारे। दाड़िमदशन अधर अरुणारे॥
उन्नतभाल सुजन मनभावन। सुन्दरलोल कपोल सुहावन॥
वृषभकन्ध अरु दीरघ बाहू। वच्चविशाल सुखद सबकाहू॥
पानपीठि उर भृगुपद रेखा। कटि केहरि उदर त्रयरेखा॥
पीताम्बर तापर कसि बांधे। श्यामजलद तनु यज्ञप कांधे॥
पद्मपाणि पद पद्म अनूपा। अति विशाल दोउ यदुकुल भूपा॥
हरिहि विलोकि नागपुर नारी। कामविवश तनु दृगननिसारी॥
भूषण हीन न चीर सँभारा। निरखैं आइ लाज तजि दारा॥

दधि दूर्व्वा अक्षत अमल, एलादिक भरिलाय।
करैं सुमङ्गल विविध विधि, मोहनराग सुनाय॥

जात राजमारग प्रभु सोहे । एरनरनारि देखि छवि मोहे ॥
तिन मोहनी रूप प्रभु देखा । कहि न सकैं कविशारदशेषा ॥
शारद शम्भु गणेश षड़ानन । वर्णत वृद्ध भये चतुरानन ॥
नारदादि केहु पार न पाये । विविध भांति कहि नेति सुनाये ॥
सुर सुरेश कहि पार न पावा । अबरूपसुनहु व्यासजसगावा ॥
प्रभु छवि वारिधिकोटि महाना । सीकरसमत्रिभुवनछबि नाना॥
तदपि तासु उपमा सम नाहीं । तुमते कहत सुनौ गुरुपाहीं ॥
सुनिये गिरा अमियरस बोरी । कौन प्रश्न पुनि नृप करजोरी ॥
सुनत श्रवण नहिं कथा अघाई । कहिय कृपाकरि अब ऋषिराई॥
सुनि नृप वचन प्रीतिरस पागे । कथा विचित्र कहनमुनिलागे॥

दोषहरणि सबसुखकरणि, भारत-कथा रसाल ।
जनमेजय चित दै सुनहु, मिटै मोह जगजाल ॥

भीषम बिदुर सुनी यह बाता । नगर प्रवेश कीन्ह जनत्राता ॥
कृप अरु द्रोण सहित अनुरागे । करत प्रणाम लीन्ह चलिआगे॥
भीषम द्रोण देखि हरि आये । पुरजन सहित प्रेमउर छाये ॥
उतरे कृपासिन्धु भगवाना । मिले बहुत कीन्हें सनमाना ॥
भेंटत कृपहि प्रीति अधिकाई । कुशल प्रश्न पूंछत यदुराई ॥
नाथ कुशल देखत अब तुमको । हृदय लाय भेटब प्रभु हमको ॥
पतितउधारण विरद सँभारा । भयो सकल अघ दूरि हमारा ॥
ताही समय बिदुर चलिआये । परे चरण नहिं उठत उठाये ॥
गहिभुज कृपासिन्धु भगवाना । लीन्ह लाय उरकरि सन्माना ॥

सुनहु विदुर तुम अतिविज्ञानी । जिनको सुख देखत अवहानी॥
ज्ञान विराग योगगति आनत । धर्म्म स्वरूप भक्ति रसजानत ॥
जीतेउ काम क्रोध मद लोभा । करि न सके माया मन चोभा ॥
हरिसेवक प्रह्लाद समाना । विधिसमबुद्धि विवेकनिधाना ॥
रविनन्दन सम नीतिविचारा । योगिनमहँ जिमिसनतकुमारा॥
भक्त अनन्य यथा हनुमन्ता । अम्बरीषन्टपसम शुचिसन्ता ॥
करि सन्मान कृष्ण बहुभाँती । पुनि पुनि मिलतलगावतछाती ।
बोलेउ विदुर अकिञ्चन मीता । नामतुम्हार विदितजनहीता ॥
विरद तुम्हार निगम कहिगाई । निज दासनकहँ देत बड़ाई ॥

मोते को संसार महँ, महा अधम यदुवीर ।
अधम उधारण नाम तुव, सुनत होत उरधीर ॥
भक्तवत्सल तुव नाम सुनि, तव मन बड़ो डराय ।
सुने पतितपावन विरद, हर्ष न हृदय समाय ॥

पूरब नाथ पाप हम कीन्हा । दासीयोनि जन्म विधिदीन्हा ॥
अघभाजन नहिं भजन तुम्हारा । केहि विधि नाथमोरनिस्तारा॥
परम अधीन विदुर मुखवानी । सुनि श्रीकृष्ण भक्तिरससानी ॥
कीन्ह प्रबोध नाथ विधिनाना । हृदय लाय कीन्हों सन्माना ॥
तुमहौ विदुर धर्म्म-अवतारा । परमभक्त अरु ज्ञानउदारा ॥
पुरवासिन अभिनन्दनकीन्हा । सौम्यरूप प्रभु दर्शन दीन्हा ॥
श्वेत कमल लीन्हें गोपाला । पहिरे श्वेत द्विरद मणिमाला ॥
अङ्ग अङ्ग महँ भूषणभूरी । मृदुमुसक्यानिविलोकनिरूरी ॥

पीत वसन कलकुण्डल कानन । अतिकमनीयसुधाधरआनन ॥
सात्यकिरूप लखे वनवारी । निरखिनिरखिछविहोतसुखारी ॥
भीषम द्रोण सहित यदुराई । भूपभवन कहँ चलेउ लवाई ॥

सुनी श्रवण आयो निकट, पँवरिद्वार यदुराय ।
लेन हेत कुरुनाथ तब, दीन्हें अनुज पठाय ॥

विकरण दुःशासन वलधामा । दुर्मुख दुमुत द्विरद पुनि नामा ॥
निपट निकट जब आनिनिहारा । मदसमेत तिनकीन्हजोहारा
दुर्योधनके वान्धव आये । तहँ प्रभु उग्र रूप दरशाये ॥
चक्र एक कर शारँग पाणी । एकपाणिमहँ निशितकपाणी ॥
जैसे प्रलयकाल महँ शङ्कर । अरुण नयन अरु वेष भयङ्कर ॥
रूप त्रिविक्रम समर महाना । कुरुगण देखि अचम्भव माना ॥
डरपे दुर्योधनके भाई । हरिहि देखि मुख गे कुम्हिलाई ॥
तमगुण उनहिं कृष्णदेखरावा । भूप भेद केहु जानि न पावा ॥
मोहन रूप देखि नर नारी । लोकलाज तजि चली पछारी ॥
सात्यकि रूप विदुर तहँ देखा । कहत नाइ मन हर्ष विशेखा ॥
राजा देखि प्रजा सुख पाये । भये मुदित निज निज गृह आये ॥
यह चरित्र कीन्हों भगवाना । औरको भेद और नहिं जाना ॥

जैसी जाकी भावना, तेहि तैसो भगवान ।
पलमह दरशायो चरित, मर्म न काहू जान ॥

पँवरि दुआर गये यदुनाथा । भीषम द्रोण विदुर कृपसाथा ॥

द्विरज दुमत्त दुश्शासन सङ्गा। दुर्मुख विकरण वीर अभङ्गा॥
दुर्योधनको विभव निहारा। इन्द्र सरिस को वरणै पारा॥
प्रथम पँवरि कोटिन धनुधारी। रक्षक तरुण पुरुष बलभारी॥
दूसर दुर्योधनकर चेला। उमड़ेउ मनहुं सिन्धु तजि वेला॥
ते सब शक्ति भुशुण्डी लीन्हें। रक्षहिं द्वार सजगचित दीन्हें॥
तिसरे द्वार करहिं बहु हूहा। कुन्तपाणि तहँ मनुज समूहा॥
गये कृष्ण चलि चौथी कक्षा। रक्षक महामल्ल बहु दक्षा॥
मुद्गर भिण्डिपाल कोउ साँगी। गहे सचेत खड्ग कोउ नांगी॥
पञ्चम पँवरि द्वार हरि आये। विविध भांति तहँ यन्त्र लगाये॥
तीनि लक्ष भट मत्त सरावी। लीन्हें पाणि ज्वलित [illegible]॥

द्रोण कर्ण सम लूलके, अयुत वीर बरियार।
गर्जि गदा गहि गर्व्वते, ठाढ़े षष्ठम द्वार॥

सप्तम द्वार खड़े बहु खोजा। केहरि से किरात कम्बोजा॥
विविधिन भांति अस्त्रकर माहीं। जिनहिं देखिसुरअसुरसकाहीं॥
वर्णत विरद वन्दिजन यूहा। वेतपाणि दरवानि समूहा॥
वेतपाणि तहँ जाय जनाये। मिलन हेत यदुनन्दन आये॥
लावहु कहि नृप आयसु दीन्हा। तेहि अवसर हरि दर्शन दीन्हा॥
प्रभुहि विलोकि उठ्यो कुरुनाथा। सौबल शकुनि कर्ण लै साथा॥
ताके हृदय गर्व अति भारी। गयो निकट चलि हरिहि जोहारी॥
धनमदअन्ध अधम अभिमानी। ज्ञानहीन कछु कानि न मानी॥

उत्पति थिति नाशन करण, विश्वभरण भगवान।
नर करि जानत ताहि खल, सबलसिंह चौहान॥

इति एकविंश अध्याय॥ २१॥

कृष्ण समेत चलो कुरु राजा। धृतराष्ट्रक यह सकल समाजा॥
भीषम द्रोण कर्ण सँग लीन्हें। बान्धव सब परिवारित कीन्हें॥
गथउ भूपपहँ विदुर अगारी। कह्यो जाय आवत बनवारी॥
कहत भूप कोउ मोहिं उठावहु। चलहुवेगिलै हरिहि मिलावहु॥
सञ्जय गहिकर नृपहि उठायो। कृष्ण समीप तुरत पहुंचायो॥
भेंटो कृपासिन्धु उरलाई। नृप आनँद अति उर न समाई॥
कुशल प्रश्न पूंछत ब्रजराजहिं। गयो भूप लै सहित समाजहिं॥
निज समीप हरिकहं बैठारा। बैठे जहँ तहँ सकल भुवारा॥

वाह्लीक भीषम करण, द्रोणी द्रोण समेत।
सोमदत्त सैन्धव शकुनि, बैठे सभा निकेत।

कृप अरु शल्य जान सब कोऊ। भूरिश्रवा अलम्बुष दोऊ॥
पुत्र पौत्र भूपतिके जेते। बैठे दुर्योधन ढिग ते ते॥
विन्द निविन्द अवन्ती राजा। मगहराजतेहि सभा विराजा॥
भूप कलिङ्ग और कृतवर्मा। नृपति बृहद्बल सहित सुशर्मा॥
जयनरान शशिबंद नरेशा। नृपति सुलूक बनाइ सुवेशा॥
पौरो देश देशके नायक। दुर्योधनके सकल सहायक॥

हरि आगमन सुनत सजि साजा । धृतराष्ट्रकगृह जुरो समाजा ॥
यथा योग्य बैठे नृप भारी । विदुरसभा विधिवत बैठारी ॥
बैठे भूप सहित बनवारी । सञ्जय नृपके बैठ पछारी ।

सुस्थित अति आनन्दते, नृप समीप घनश्याम ।
हरिदच्छिणदिशि सात्यकी, लखै विलोकनि वाम ॥

यदुनन्दन दिशि वारहिं बारा । निरखत विदुर अनन्द अपारा॥
परत निमेष न यकटक ठाढ़े । मानहुं चित्रमांझ लिखि काढ़े ॥
हरि छवि देखत चष अनुकूली । जनित सनेह देह सुधिभूली ॥
च्चण च्चण प्रभुपद सञ्ज कपोला ।भ्रमत विदुर चित प्रेमहिंडोला
देखत होत न मस सन्तोखा । यथा अडोल खेलको धोखा ॥
विदुर दशा जब कृष्ण निहारी । करहिं निकट लीन्ह बैठारी ॥
कृप अरु द्रोण विदुर दिशिदोऊ । देखि सप्रेम सराहत सोऊ ॥
धन्य विदुर विज्ञान निधाना । नरतनु पाइ भक्त रस जाना ॥
काम क्रोध तजि सब संसारी । भजत सदा अघहरण मुरारी ॥

विषरस इव त्यागी विषय, चरणकमल लवलाय ।
रहत शरण यदुनाथकी, नाते नेह विहाय ॥

कृपादृष्टि प्रभु विदुर विलोकी । भए मोद मन कहँट विशोकी ॥
हरिकी देखि प्रीति अधिकाई । अति अनन्द नहिं हिये समाई
गालवगण मन मोद अपारा । पुलकावली नयन जलधारा ॥
देखत रूप चच्च पल रोके । सुरसिहाततेहि भाग विलोके ॥
कह मुनीश यह कथा सुहाई । तुव हित हेतु भूप मैं गाई ॥

अब मैं कहब विचित्र कहानी। सावधान सुनु नृप सज्ञानी॥
सुनत रहत नहिं अघ लवलेशा। शोक मोह भ्रम मिटै नरेशा॥
धृतराष्ट्रक अति आदर कीन्हा। भोजन हेतु उत्तर हरि दीन्हा॥

प्रीति न रञ्चक तुम विषे, नहिं हमरे आपाँति।
कौन हेतु कीजै अशन, सुनहु भूपता पाँति॥

कहेउ भूप सुनिये जगतारण। तुम तापाँति कहौ केहि कारण॥
सुनि नृप वचन कहत हँसिकेशो। सुनहु भूप तब मिटै अन्देशो॥
हस्ती नाम भरत कुल जायो। नगर हस्तिनापुरी वसायो॥
तरणि सुताते भयउ विवाहू। तापव नाम विदित सबकाहू॥
तिन यह कौरववंश चलायो। ताते तुम तापती कहायो॥
सुनि हरिवचन भेद सबजाना। धृतराष्ट्रक मनमहँ सुखमाना॥
कथा अपर तब श्रीमुख गाई। सुनि सुख लहौ सभाससुदाई॥
अमृत सरस कृष्णमुख बानी। भीषम विदुर सुनत सुख मानी॥
कह वैशम्पायन सुनु राई। कथा विचित्र श्रवण सुखदाई॥

बुद्धिचक्षु बोले विहँसि, कहिये दीनदयाल।
केहि विधिते तपती वरी, सुनिहस्ती महिपाल॥

केहि विधिते भा भूप मिलापू। किमिउतपतिकहिये अबआपू॥
सुनि नृप वचन कृष्ण अनुरागे। कथा विचित्र कहन असलागे
रविमण्डल होइ जात वराको। भये दिनेश कामवश ताको॥
कामवाण ताहके लागा। रविदिशि देखिभयो अनुरागा॥
सो चरित्र सुरनायक जाना। दीन्हो शाप क्रोध उर आना॥

धरि मानुषतनु ह्वै व्यभिचारिणि । वर्ष प्रयन्त रही अपकारिणि ॥
ह्वै मानुषी रूप सोइ दारा । रविमण्डलमहँ करत विहारा ॥
मोच्यो शाप काल जब बीता । तहाँ गर्भ पुनि सुरपति मीता ॥
भई सुता कर्दम ऋषि जानी । सो उठाय निज आश्रम आनी ॥
गई सुरेश भवन पुनि बाला । कीन्हीं मुनि कन्या प्रतिपाला ॥
शशिसम बढ़त कढ़तद्युतितनकी । जगरमगरजिमिदासिनिघनकी
थिर न रहत लखिमतिमुनिजनकी । होतलाजवशनारिअतनकी ॥

तरणिप्रभातनु शशिवदनि, मृगनयनी कटिखीन ।
पीन पयोधर मधु अधर, षोड़श वर्ष नवीन ॥

तेहि पटतर रम्भादिक नाहीं । सुरी किन्नरी देखि लजाहीं ॥
तप्त स्वर्ण आभा तनु जानी । तपती नाम धरो मुनि ज्ञानी ॥
हस्ती भूपति फिरत शिकारा । रविनन्दनि गइ विपिन विहारा ॥
औचक मिले पन्थमहँ सोऊ । देखि परस्पर बरबस दोऊ ॥
राजकुवर रविजा अवलोकी । देखत रूप दृगञ्चल रोकी ॥
तरुणवहिक्रम तरुणिकिशोरी । दामिनि वर्ण देह अति गोरी ॥
पहिरे तनु शुचि वसन सुरङ्गा । मणिगणखचित विभूषणअङ्गा ॥
इन्दु वदनि मृगशावक नयनी । भृकुटीकुटिलविलोकि शवीनी ॥
लोल कपोल हँसनि मृदु बङ्का । दमकत श्रवण तड़ित ताटङ्का ॥
अधर प्रवाल लाल अरुणारे । अहि उपमा लम्बित कच कारे ॥
दाड़िम दशन नासिका नीकी । देखत कीरतुण्ड मनि फीकी ॥
कम्बु कण्ठ अरु बाहु मृणाला । कोमल कलित कमलकर लाला ॥

श्रीफलसे कठोर वक्षोजा । गेंद खेल जनु रच्यउ मनोजा ॥
सूक्षम कटि अरु रूप अपारा । लचकत पुनि पुनि कचघुंघुवारा
शुभनितम्ब पुनि नाभिगँभीरा । देखि भूप मन मनसिज पीरा॥
मनो मनोज कुसुम शरलीन्हा । वाणनमारिलक्षि लखिकीन्हा॥

सघर पेँडुरी पद कमल, सम अँगुली वीश ।
कदलिपत्रसमपीठि पुनि विरच्यौ जगदीश ॥
वीस अङ्गुली कमलकर, लसत वीसनखलाल ।
वीसकला जनु शीमधरि, करत प्रकाश विशाल ।

राजकुँवर तनु शोभा भारी । देखि कामवश तरणिकुमारी ॥
वय किशोर तनु सुन्दरताई । वरणि न जाइ देखि मनभाई ॥
कीट मुकुट शिर ऊपर धारा । जगमगात मणिगण उजियारा॥
आनन मनहुँशरदशशिमण्डल ।झलझलात कानन दोउकुण्डल
भृकुटी कुटिललसत यहिताका । विनगुणमनहुँ मनोज पिनाका
नासाकी उपमा कवि गावत । अति विचित्रशुकतुण्डलजावत॥
दृगकञ्जश्यामकञ्जुक अरुणारे । सोहत जनु वन्धुक अतिकारे ॥
सोहत कच मेचक मुखनेरे । अतिहि हेतु जनु शशि अहि घेरे॥
वृषभ कन्ध युगवाहु विशाला । कंबुकण्ठ द्विरदै मणिमाला ॥
वक्ष विशाल नाभि गम्भीरा । कटि केहरि जंघा विस्तीरा ॥
अरुणचरण कर अरुण सोहावें । अमल कमल शोभा दर्शावें ॥

मनमिज सरिसमहीपसुत, रूपशील गुणगेह ।
नख शिख देखि अशेष छवि, तपती भई विदेह ॥

देखि भूपसुत तरणि किशोरी । जनित सनेह देह भै भोरी ॥
शीश फूल कानन ताटङ्का । अति प्रकाशजनु विज्जु दमंका ॥
मुक्तमाल उर मणिगण हारा । जनुकर निकर निशेप पसारा ॥
अङ्गनजटित ललितकरभूषण । करत प्रकाश कमलपर भूषण ॥
दशौ अंगुलिन महँ दशमुद्रा । चलत हलत बाजत कटिक्षुद्रा ॥
आस पास बिछिया टोरवारे । पायँ पैजनी नेवर न्यारे ॥
बसन विभूषण वैस नवेली । पूंछत भूप विलोकि अकेली ॥
को तुम राजसता सुरकन्या । कवन हेतुकेहिफिरत अरन्या ॥
तुववश भयो प्राण अवसेरा । कवनेउयतनफिरतनहिं फेरा ॥
ताते कहो हमारो कीजै । अब गन्धर्व्वव्याह करि लीजै ॥
तुमहिंविलोकि मदनधनुलीन्हों । शरनमारि जर्जर तनु कीन्हों ॥
भूरि विशल्यकरन तुम देही । परसत मिटै व्यथा तनु येही ॥

सुन्दर सरल शरीर तव, जिमि मनसिजको पास ॥
फँसो जाइ ता बीच मन, देखि मनोहरहास ॥

तरणिसुता नृपसुतवशकीन्हा । नृपकिशोरतेहिचितहरिलीन्हा
निजवश रहो न कछु ताहू को । फेरे फिरत न मन वाहू को ॥
दूनौं तनु मनोज वश भयऊ । तहँ गन्धर्व्वव्याह करि लयऊ ॥
यह करतव कर्दम ऋषि जानो । दीन्हो सौंपि नृपहि गहिपानो
हर्षि भूप तेहि निज गृह आनो । ढोल बजाइ कीन्ह पटरानी ॥

हस्ती नृपके तनय कुरु, पतिनीते उपतीय ।
तिनके सुत शन्तनु नृपति, तेहिते तुम तपनीय ॥

शन्तनु सागर को अवतारा । भयो बड़ो तेजसी भुवारा ॥
गङ्गा सागरको भा सङ्गम । तेहिते भीषम अविचल जङ्गम ॥
पीछे नृप मत्स्योदरि आनी । जब सुरसरि निज धार समानी ॥
ताको सत्यवती अस नामा । चित्राङ्गद सुत बलके धामा ॥
चित्रवीर्य पुनि दूसर बेटा । भयो भूप संग्राम अपेटा ॥

चित्रवीर्यके पाण्डु नृप, चित्राङ्गदके आप ।
हो एकै कछु भेद नहिं, ताते करहु मिलाप ॥

विग्रह आपुसको नहिं नीका । छांड़हु अब सब बात अलीका ॥
कलह तुम्हार न काहुहि भावत । ताते बार बार हम आवत ॥
हरिमुख हेरि कहत दुर्योधन । तुम आये इत कवन प्रयोजन ॥
कह हरि हमैं युधिष्ठिर राजा । पठयनि तुम्हरे ढिग यहिकाजा ॥
कहिनिकि हमकहँ जुवां हरायो । छलबलकरिकै वनहि पठायो ॥
ते ग वर्ष त्रयोदश बीतो । अबहूं तौ तजि देहि अनीती ॥
सो अब कहा हमारो कीजै । आधी भूमि बांटि नृप दीजै ॥
उन वन बसि बहु सहे कलेशू । तेहिते तुम कहँ उचित नरेशू ॥
यह जो नाहि तुमहिं समि आई । तौ हम कहैं करौ तुम राई ॥
पञ्च ग्राम पाण्डवकहँ देहू । कलह निवारण होइ सनेहू ॥
इन्द्रप्रस्थ तिलस्थ वरुणागर । वाराणसि हस्तीपुर आगर ॥
इनके दिये मिटन है रारी । नातरु होइहि अनरथ भारी ॥
सुनि दुर्योधन राउ रिसाना । नारायण मैं कौरव जाना ॥
तेंव कह देउं सब देशू । हम जो कहैं करिय सो भेशू ॥

मुर्ह अग्र महि उठो जो जेती । विना युद्ध हों देउ न तेती ॥
ग्वालवंश हौ जातिके नीचा । परत आय राजनके वीचा ॥
यह कहि कह्यो दुशासन भाई । करगहि याहि देहु दुरिआई ॥
कितौ पकरि कारागृह दीजे । मिटै प्रपञ्च वात यह कीजै ॥
वे हमते सरवरि कब करते । जो पै उनकर पक्ष न धरते ॥
इनहीं के वल वे वरिआरा । यहु अहीर है वड़ा गवाँरा ॥
नृप रुख लखि हरि अन्तर्य्यामी । भे अति उग्र उरगअरिगामी ॥
उठे तुरत तव शारँगपानी । कहि तुव मृत्यु नकट नियरानी ॥

हरिसँग भारद्वाज सुत, गङ्गासुत गाङ्गेय ।
वाहुलीक विकरण करण, चले सङ्ग उठि तेय ॥
करत बतकही सबनते, चलेजात घनश्याम ।
राखि लोग सब द्वारपर, गयो विदुरके धाम ॥
श्वेत केश शिर शोभिते, ओढ़े श्वेता दुकूल ।
देखो कुन्ती जाय हरि, सादरके समतूल ॥

पितास्वसा कहँ कीन्ह प्रणामा । आशिष दियो होय मनकामा
हरिहि विलोकि नयन जलछाये । माथ सूंघि हरि कण्ठ लगाये
कुशल रहे वसुदेव कुमारा । मैं अनाथके प्राण अधारा ॥
वोले कमल नयन यह वाता । तुम्हरी कृपा परम कुशलाता ॥
धर्म्मनरेश समेत कुटुम्बा । कह्यहु प्रणाम सुनहु अव अम्बा ॥
सुनि यह वचन भयो परितापा । लागी कुन्ती करन विलापा ॥
उर दुख दुसह वरत ज्वर होली । पुनि कुन्ती श्रीपतिसों वोली ॥

सबकोउ कहत पञ्चसुत शूरा। हमरे जान भये अब क्रूरा॥
लाख तजो सुत काम न आये। विदुर अन्न दै हमहिं जिआये॥
अब तुमते कहियत बनवारी। तुमहू छाँड़ी सुरति हमारी॥
पालन योग्य तिहूँ पुर दारा। बाल पिता तरुणी भरतारा॥

वृद्ध बैस सुत चाहिये, करहि मातु प्रतिपाल।
अपनो काटो कृष्ण हम, विदुर अन्नते काल॥

धर्मराज छाँड़ो सब शर्महि। त्याग कीन्ह क्षत्तिनके धर्महि॥
नृप विराटको करि सेवकाई। राज्य तजो अरु लाज विहाई॥
उदर पालि सुत दिवसवितावहिं। दुर्योधन भयमानि न आवहिं
सुनहु कथा इक कहत बखाना। यद्यपि सब जानत भगवाना॥
विंदुल नाम एक क्षत्रानी। राजा शक्तिकेतुकी रानी॥
सोहति नगर अवन्तीवासी। सब चरित हम कहत प्रकासी॥
माहिषमती भूप बलधामा। ताको चन्द्रसेन असनामा॥
निज दल साजि निशान बजाई। घेरो नगर अवन्ती आई॥
सत्यकेतु निसरे भूपाला। भयो युद्ध जूझे तेहि काला॥
लूट्यो नगर लगायो आगी। गर्भवती विन्दुल उठि भागी॥
चली पराइ दक्षिण अधिकाई। द्वारानाम नगर चलिआई॥
ब्राह्मन नहँ रह्यो भुवाला। सब प्रकार कीन्हों प्रतिपाला॥

यद्यपि जानत सकल तुम, तदपि कहौं गोपाल।
नृपतरुणीकहँ त्यहि नगर, बीति गये कछुकाल॥

उपज ताके सुत अभिरामा। ताको कृष्ण युद्धजित नामा॥

प्रौढ़ विलोकि मातु सुखपावा । शशिसमबढ़तबारनहिंलावा ॥
दिनप्रति नगर बालकन सङ्गा । खेलत रहत विहङ्ग पतङ्गा ॥
मातु पढ़ायो पुनि धनुवेदा । समरथदेखि तज्यो मन खेदा ॥
सुतहि बुलाइ मातु उपदेशा । तुम पितु रह्यो उजैन नरेशा ॥
माहिषमती भूप वध कीन्हा । राजतुम्हारछीनि तेहिलीन्हा ॥
अब सुत और न वाद विचारहु । लेहु भूमि निजअरिकहं मारहु ॥
जबलगि मरत न तुवपितु घाती । तबलगि पुत्र जुड़ात न छाती
शत्रु तुम्हार जियत संसारा । नाहक क्षत्रि वंश अवतारा ।

कह्यउ भूपसुत मातुते, सुनिये वचन प्रमान ।
मैं दल बल अरु द्रव्यविन, अरि सँग सेनमहान ॥

तासु मातु हरि कहत रिसानी । बालक ते बोली मृदुबानी ॥
जानत सुनत क्षत्रिकुल धर्मा । ताते मन मानत तुम भर्मा ॥
लड़े अकेल न मनभ्रम आनै । कीट समान कोटिदल मानै ॥
ताते तात तजो सब शोका । जीते सुयश मरे सुरलोका ॥
मातुवचनते उठि रणकीन्हा । करिअरिनिधनराज्यनिजलीन्हा ॥
करिसाहस सोइ भयउ भुवाला । और कथा सुनु दीनदयाला ॥
जसे धर्म्मराज अवतारा । सो हरि सुनहु सकल व्यवहारा ॥
भयो हमार भूप नरनाहू । दीन्हों दण्ड धरा सबकाहू ॥

शशिसमकीरति लिखिरही, भानु समान प्रताप ।
देवविटप सम दान कहँ, वलिसुरेश जनु आप ॥

राज्यकरहिं नृपसुख अधिकाई । बुद्धिचचुकी फिरी दोहाई ॥

सचिवविदुरअति भयउसुजाना। धर्म शील विज्ञान निधाना॥
बाह्लीक गङ्गासुत दोऊ। अरिबालक जानै सब कोऊ॥
आज्ञा भङ्ग जवन दिशि होई। आनै बांधि होइ किन कोई॥
एकदिवस निजसहित समाजा। सभामध्य नृप पांडुविराजा॥
भीपम ते तब वचन उचारा। सुनहु मनोरथ सुभग हमारा॥
महिपर्यटन होत मन मोरा होइ पिता जो आयसु तोरा॥

हँसि बोले गांगेय तब, जो इच्छा मनमाह।
सेन लेहु चतुरङ्गिनी, शुभ कीजै नरनाह॥

भीपमकी आज्ञा जब पाई। चल्यो भूप सँग दलसमुदाई॥
माद्रीसङ्ग सहित स्वहिं लीन्हा। पटह बजाइ गमनपुनिकीन्हा॥
पूरब दच्छिण पश्चिम देशा। जीति जीति लिय दण्डनरेशा॥
जो कछुवस्तु जीति नृप पायो। बुद्धिचक्षुकहँ सकल पठायो॥
सैन समेत बजाइ निशाना। उत्तरदिशि नृप कीन्ह पयाना॥
लैलै दण्ड भूप सब आये। द्वैपायनके शीश नवाये॥
यथायोग्य सबते नृप लीन्हा। तिनकहँ अभयदानपुनिदीन्हा॥
लीन्हें सङ्ग चमू चतुरङ्गा। चढ़्यो भूमिगिरि शृङ्गउतङ्गा॥
करि दर्शन नारायणकेरा। शैल हिमालय कीन्हें डेरा॥
तहँ सबनृप परवतिया आये। दोऊ पायन शीश नवाये॥

जलसुन्दर अरु फल सुभग, फूले कुसुमसुवास।
गिरिपर्छवि सुपास अति, कीन्ह नरेश निवास॥

एक दिवस मृगयाकहँ राजा। गयो भूपसँग सुभटसमाजा॥

तहँ ऋषि परमगहन इकरहई । कामविवशनिजतियसनकहई ॥
ज्ञानध्यानतनु सकल भुलाना । वासर महँ मांग्यो रतिदाना ॥
सुनिद्विजवचन कहत तियसोई । रति दिन नाथ पशुनकी होई ॥
कह द्विज नारि मृगातनुलीजै । हम मृगह्वै तुमते रतिकीजै ॥
काम वाण तुम्हरे उर लागा । ज्ञान विवेक सकल तुव त्यागा ॥
असकहि तुरत मृगीतनुधारा । ह्वैमृगतवद्विज करत विहारा ॥
पतिको वचन तजै जो नारी । परै नरक पावै दुख भारी ।

यहि विचार द्विजत्रिय कियो, पियको वचन प्रमान ।
गयो पाण्डु तत्क्षण तहां, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वाविंश अध्याय ॥ २२ ॥

कह कुन्ती गोपालते, सुनिये दीनदयाल ।
मृगविलोकि भूपालतव, तज्यो वाण ततकाल ॥

लागत वाण विकल ह्वै घूमी । मानुषरूप परयो द्विज भूमी ॥
गिरतहि तुरत प्राणतजि दीन्हा । ऋषि तरुणी अतिरोदनकीन्हा ॥
कह्यो वचन करि क्रोध अपारा । लै मम शाप भूप चण्डारा ॥
सो रतिकरत मरयो पति जैसे । तजो नरेश प्राण तुम तैसे ॥
आयो शिविर मानि गिलानी । करै न सुरति भूप भयमानी ॥
ज्यहि विधिशाप विप्रतियदीन्हा । सो नरेश मोते कहि दीन्हा ॥
भयो भूप उर नाथ वियोगा । विदाकिये घरकहँ सब लोगा ॥

दोउ तिय सङ्ग भये वनवासी। उदासीन जिमि फिरें उदासी॥
परम गहनगिरि देखत फिरहीं। जप तप योग नेम व्रत करहीं॥

चन्द्रभाग पर्व्वतगयो, लै युवती युगसाथ।
विरची पर्णकुटी तहां, कीन्हवास नरनाथ॥

पावन मान सरोवर तीरा। करहिं महातप सुनु यदुवीरा॥
मास नन्दिनी करि असनाना। ऋषि समाज नितसुनहिपुराना॥
श्रुतिपथ सतमारग आचरहीं। होत अस्त रवि अशन न करहीं॥
एक दिवस पर्णशालहि आये। मोहिं विलोकिनयनजल छाये॥
मैं पूछा क्यहि हेतु उदासा। तव नरेश इमि वचन प्रकासा॥
सन्ततिहीन भयो मैं रानी। करहुँ न रतिहिशापभयमानी॥
तव श्रीपति मैं धीरज कीन्ह्यों। सिखयेमन्त्रऋषयकहिदीन्ह्यों॥
सुर आकर्षण विद्या जानी। सुनत नरेश धीर तव आनी॥
आज्ञा दीन्ह करो सुर जापू। तव मैं कह्यो भूप यह पापू॥
पतिव्रता परपति मन देई। सुकृत जाइ जग अपयश लेई॥
वेद पुराण विदित कह राजा। होइ दोष नहिं सन्ततिकाजा॥
तनुसुख हेतु नारि जो करही। सुकृत नशाइ नरकसो परही॥

सुर आकर्षण जपहु तुम, मम अनुशासन मानि।
करहु वंशउद्धार अव, तजि मनकी गिल्लानि॥

पति निदेश मेटो नहिं जाता। धर्माकर्ष जप्यो सुरताता॥
आवत धर्म्म न लागी वारा। दोहद भयो विदित संसारा॥
जादिन जन्म युधिष्ठिर लीन्हों। अति उतसाह पाण्डुनृप कीन्हों

छाये नभ पथ गगन विमाना। सुरसुन्दरी करहिं कलगाना॥
शङ्ख बजाइ दुन्दुभी दीन्हों। पुहुपमयी वसुधा सब कीन्हों॥
तब यह भयो गगन महँ बानी। तुम सुतभयो भागवत रानी॥
धर्म्म स्वरूप भूप अति भारी। एकछत्र वसुधा अधिकारी॥
होई बालक बलिसम दानी। नारद सम होई विज्ञानी॥
हरि सेवक प्रहलाद समाना। सुरपति सम होई बलवाना॥

रविसुत सम जगनाथ कह, तेज तरणिको रूप।
जाके सम तिहुँ लोक महँ, होइ न औरो भूप॥

धर्म्मशील अतिकुल उजियारा। होइ अजीत शत्रु संसारा॥
याके राज अकाज न होइहि। ह्वै निश्चिन्त प्रजा सुखभोगिहि॥
कहि मृदुगिरा बोधकरि मोका। गयेविबुध सब निजनिजलोका
जूप व्यसन करि कर्म्म अलीना। भये धर्म्मसुत राज्य विहीना॥
यह हरि अद्भुत बात अनूठी। ह्वै गइ गिरा सुरनकी झूठी॥
यहि प्रकार बहुकाल बितायो। नृप समीद पर्णागलहि आयो॥
मोते विहँसि कही नरपालक। अब तुम प्रगटकरहु इक बालक॥
विना सहायक राज न होई। ताते चहिय भूप सत दोई॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ उभय जग भाषा। पूरणकरहु मोरि अभिलाषा॥
यहि विधि नृप सम्भाषण कीन्हा। सुनिय नाथ उत्तर मैं दीन्हा

मैं नहिं आज्ञा करि सकौं, मानतहौं मन भीति।
उचित सिखावन नाथतुम, यह कुलटनकी रीति॥

सुनि नरेश बोल्यो तब आपू । देवपरस कीन्हें नहिं पापू ॥
देवाकर्षण सब तुम जानहु । करि जप तप देवनको आनहु ॥
पवनमन्त्र मैं सुमिरण कीन्हा । आइ प्रभञ्जन दर्शन दीन्हा ॥
भये रमित आनँद अति जीमा । दोहद उभय प्रगटभय भीमा ॥
भयो गगन सुर गिरा प्रमाना । होइहि बालक अति बलवाना ॥
महावीर जानिहिं संसारा । याते सब अरिकुल संहारा ॥
कौरव सहित कुशल ना उनके । हरि भे वचन झूठ देवनके ॥
यहि विधि वर्षबीति यक गयऊ । तादिन नाथ चरित यहभयऊ॥
पर्णकुटी ते उठेउ समोदा । लीन्हीं भीमसेन कहँ गोदा ॥

जाइ विलोक्यउ रुचिर यक, चन्द्रभागकी शृङ्ग ।
तापर भई अरूढ़ मैं, बालक लियो उछंग ॥

तहँ बालवो सिंह फटकारे । गर्जत सन्मुख चला हमारे ॥
मैं सभीत तनु सुधि बिसराई । परा भीम गिरिगोद विहाई ॥
होइ सरोष केहरि की ओरा । चला निशंक करत रव घोरा ॥
हालो धरा शिला गे फूटी । जहँ तहँ परे वृक्ष बहु टूटी ॥
गर्जन भीम भयउ अति शोरा । गिरेउ सिंह महि रहेउ न जोरा
देखि समीप वार नहिं लाग्यो ।अति सभीतपुनिसों उठिभाग्यो
लाख भवन महँ खम्भ उपारा । जरत बचाइ लीन परिवारा ॥
एक चक्र बकवदन विदारा । दैत्यहि एक विपिन महँ मारा ॥
तासु सुता कीन्हेउ निज दारा । असबल विदित भीम संसारा॥
सो सुधि भीमसेन कहं भूली । की हरि भई बाँहयुग लूली ॥

अब सुनियत कीचक सो भाई। मारेउ भीम बार नहिं लाई॥
जरासन्ध कीन्हों द्वइ फारा। अति बलवान न लागी बारा॥

अति निलज्जभे पाण्डुसुत, भई टेककी हानि।
अब आवत नहिं युद्धकहँ, दुर्योधन भय मानि॥

पकरेउ केश दुःशासन आनी। भई विकल पाण्डवकी रानी॥
सकेउ न देखि भयो मनमाखा। तादिन भीमसेन प्रणभाखा॥
तुव शोणित अस्नान करावों। तादिन सुनु तिय केश बँधावों॥
चली करै न प्रण प्रतिपाला। कहौनिलज त्यहिदीनदयाला॥
जियत दुःशासन अरु कुरुराजा। बहुअतिअधम न आवत लाजा॥
अबलगि सुनत रही सुत शूरा। बसुधा मध्य शब्द बहु पूरा॥
अब सुनियत अक्रूर अमानी। पूरि रही जग महँ यह बानी।
त्याग्यो प्रण मन लाज न आई। भई कान्ह अब जगत हँसाई॥

यद्यपि जानत नाथ तुम, नीतिकाल व्यवहार।
तदपि कहत जेहि विधिभयो, पारथको अवतार॥

मोते कही भूप यह बानी। बचन हमार सुनहु सुखदानी॥
ज्येष्ठ कनिष्ठ भयो सुत दोई। अब सो करिय मध्यसुत होई॥
सुनि नृप गिरा शीशधरि लीन्हा। सुनासीर आकर्षण कीन्हा॥
आवत शक्र न लागी बारा। दोहद भयो विदित संसारा॥
शुभदिन शुभघटिका जब भयऊ। तादिन जन्मपार्थ जगत्रयऊ॥
सुरन सहित सुरनायक आवा। देखनको विमान नभ छावा॥

विश्वावसु घटसुत गन्धर्बा। गावत विविध राग सुर सर्बा॥
मंजुघोष मेनका घृताची। तोरहिं ताल तान गति नाची॥
बाजहिं पटह शङ्ख करनाला। वर्षहिं विबुध कल्पतरुमाला॥

विबुध नटी आईं सकल, करत सुमङ्गल गान।
पूरिरह्यो आनन्द जग, सबलसिंह चौहान॥

इति त्रयोविंश अध्याय॥ २३॥

यहि विधि वौति यामयकगयऊ। मधुरगिरा नभमग[illegible]॥
होइहि बालक अति धनुधारी। परमधर्म्म श्रीहरि हितकारी॥
व्रज महँ होइ कृष्ण अवतारा। सो याको होइहै रखवारा॥
हम सब देवनके तारायण। ते दोऊ हैं नर नारायण॥
नर अर्ज्जुन नारायण यदुपति। ये दोऊ जानौ एकै गति॥
कह्यो कर्ण शूली यह नामा। गये अमर सब निजनिज धामा॥
तुव बललीन जगत महँ पारथ। यह सँदेसन और अकारथ॥
भयो न अमर वचन कछु साँचा। मरेउ न कर्ण आजुलगबाँचा॥
दियो काढ़ि दुर्योधन राई। वनवन फिरत लाज नहिं आई॥
ऐसी सहै होइ जो हीना। हे वशिष्ठ अरु अस्त्र प्रवीना

गर्ब कियो हनुमान से, बांध्यो सागर वारि।
वानन कीन्हों बाटनभ, हाथी लियो उतारि॥

असुर निवातकवच वध कीन्हा। धनपतिजीति दण्डलै लीन्हा॥

...के वन खाण्डीव गरेरा । नाश्यो गर्व पुरन्दर केरा ॥
...पद नरेश स्वयम्वर माहीं । भेदि मत्स्य द्रौपदी विवाही ॥
...कौल रण शम्भु रिझायो । ह्वै प्रसन्न सब अस्त्र सिखायो ॥
...धरा निजबल वश कीन्हा । द्रुपद जीति गुरुदक्षिणदीन्हा ॥
देव दैत्य मानव बल भारी । तुव प्रसाद जीते बनवारी ॥
...साजि कौरवदल भारी । भीषम द्रोण कर्ण बलभारी ॥
...अर्जुन विराट पर जीते । अब क्यहि काज होत भयभीते ॥
केहि कारण अब बार लगाई । मिलि रणभूमि करे कदराई ॥
...कुन्ती सुनिये यदुराई । पारथ ते कहिये समुझाई ॥
दुर्योधन भय मनहि न आवत । अपने कुलहि कलङ्क लगावत ॥
...वंश महँ भयो सियारा । देखत तुमहि नग्न भै दारा ॥
...दीन्हों सब खोई । बांस वंश महँ भयो घमोई ॥
तुम अति निलज लाज सब त्यागा । उपजे हंसवंश जिमि कागा ॥
...कुठार शीशपर गाजत । देखत नयन नेक नहिं लाजत ॥
की तुम मरहु सकल विष खाई । की आयुध धरि लेहु लराई ॥
...दुयहि दुर्योधन राजा । तुम अति निलज न आवत लाजा ॥

की यदुनायक जाय तुम, उनहिं कहो समुझाय ।
करैं युद्ध नत नाथ मैं, मरौं हलाहल खाय ॥
यहि प्रकार कहि कृष्णते, हृदय बहुत सन्ताप ।
सुधिकरि कुन्ती सुतनकी, लागी करण विलाप ॥

...कृष्ण माता सुनिलीजे । दिन दश पांच धीरमन कीजै ॥

वन्धुन सहित धर्म्म नरपालक। आवतहैं कौरवकुल वालक॥
करिहैं युद्ध विजय सव होते। होइहैं काज सकल मन चीते॥
सुनि हरि वचन धीर मन आनी। लगीकहन निज प्रथमकहानी
ममसुत देखि हृदय अकुलाई। माद्री निकट भूपके आई॥
सुत न भये दारुण दुख व्यापा। नृपसमीप अतिकीन्ह विलापा
कारण पूंछि भूप दुखपावा। निकट वोलिम्बहिं वचन सुनावा॥
विप्रवधू की शाप सयानी। तुम कहँकह्यो वात सव जानी॥
मोते कछु निसरो नहिं काजा। अस कहि गये सकलदिगराजा।
करहु उपाय तोरि यह दासी। उपजै सुत पाव सुखरासी॥
तव हरि दुखित भये मैं जाना। धीरज दीन कीन सनमाना॥
आगम करि अश्विनीकुमारा। आये धरणि न लागी वारा॥
विवुधवयद्मिलिव्योमसिधायो। भयो गर्भ माद्री सुख पायो॥

भे अनन्द भूपाल मन, सुनहु देवके देव।
अति विचित्र तव माद्रिसुत, भये नकुल सहदेव॥

एकदिन भयो चरित भगवाना। सुनि समाज नृप सुने पुराना॥
भोजनको मैं साज वनावा। रह्यो शेष दिन भूप न आवा॥
गहवर भई नाथ मोहीते। करते अशन भूप दिन वीते॥
माद्री करि शृङ्गार गिरि ठाढ़ी। तनुते निकसि ज्योति अतिवाढ़ी
लखि स्वरूप दिननायक मोहे। भये न अस्त जान पर सोहे॥
भोजन कीन्ह भूप सुख पाई। मद्रसुता प्रणशालहि आई॥

होतहि अस्त ओट रवि भयऊ। दीख नरेश शयननिशि गयऊ॥
कारण हमहिं महीपति पूछा। मैं कहिदीन्हसकल छल छूछा॥
भावी कौनिउ यतनते, मिटि न सकैं यदुवीर।
कामविवश नरनाह ह्वै, सके न मनधरिधीर॥
मोते कहेउ भूप वहु वेरा। माद्री विवश भयो मन मेरा॥
शाप सुरति मैं नाथ दिवाई। सुनी श्रवण कछुमन नहिं आई॥
मद्रसुताते करि अनुरागा। परसत देह भूप तनु त्यागा॥
माद्री सहित मोहिं दुखव्यापा। उच्चस्वरकरि कीन्ह विलापा॥
रोदन सुनत महामुनि आये। कोल किरात भील सवधाये॥
रोवहिं कहि नृप कीरति रूरी। आरत शब्द रहा तहँ पूरी॥
जेमुनि नृपके परम सनेहीं। ज्ञानकथा कहिधीरज देहीं॥
स्वहिं प्रवोधकरि चेत वहोरी। चिताबनायसि काठ वटोरी॥
जरनचली मैं भूपसँग, पाछिलि प्रीति दृढ़ाय।
मद्रसुता तव विकलह्वै, गहेचरण लपटाय॥
हमरे हेत भूप तनु त्यागा। भा कलंक अरु पातक लागा॥
तुम्हरे पञ्च सुनत सम प्रीती। तसिहमरे नहिं निपटअनीती॥
जो तुमरहौ करो प्रतिपालक। जौलगि पुष्टहोयँ सवबालक॥
स्वहिं प्रवोधि लैकरि नृपअंगा। चढ़ी चिताले शीश उछंगा॥
त्यहिछणधन्यभूपकी भामिनि। प्रियके संगभई सहगामिनि॥
चढ़ि विमानपतिसँग सुरलोका। गई भई सो परमविशोका॥
जीवत रहिउ छाड़िनिज नेता। हम तजिलाज दुसहदुखदेता॥

सुतन लागि कृतजन्म खुवारी। तिनहरितजी वृद्ध महतारी॥
धर्मराज ते कह्यो सँदेशा। करतयुद्ध नहिं मानिअँदेशा॥
क्षत्री धर्म दूरि है याते। विरद सँभारि लरौ सुतताते॥
नाहिंन हीन वंश अवतारा। भे कादर सुत मनहिं विचारा॥
कुरुवंशिन कर अनुचर होई। अवलगयुद्ध सकात न सोई॥
तुम शन्तनु नृपके कुलमाहीं। जासु युद्ध सुरअसुर सकाहीं॥
मातु पक्ष नहिं हीन तुम्हारा। है यदुवंश विदित संसारा॥
शूरसेन के हौ तुम नाती। तिनकोसुयशविदितसबभाँती॥
पुहुमी के राजा वहुजीते। बचे रहत अजहूँ भय भीते॥

मातुपक्ष पितु पक्ष अब, विदित सकल संसार।
शूरवीर अरु धीरधर, तुम सुत भयो लेड़ार॥
कहा कृष्णसमुझायतुम, यहसिख मानिहमारि।
करहु राज्य तुमआपनौ, अवनिज वैरिनमारि॥

जो चुपरहौ साधिनिज मौनहि। मिलिहिन राज्यकरहुवनगमनहि
अस्त्र सनाह त्यागिकर देहू। भिक्षा करहु कमण्डलु लेहू॥
कितौ करहु तुम मोरि सिखाई। मारहु शत्रु सरौ मनुसाई॥
जो न लरहु कौरवसन आई। तौ मैं मरहुँ हलाहल खाई॥
भीमहि कहेउ सँदेश हमारा। कस कादरभा जीव तुम्हारा॥
शूरवीर तुम्हरौ जगलीका। लरतनसुततुमकरपननीका॥
सबते मोहिं भरोस तुम्हारा। वलपौरुषकितगयउतुम्हारा॥
तुम विराट पुर वैठि लुकाने। मिलिहि भूमिनहि पलडेराने॥

करत तपस्या चारियुग, सब नरेश जेहिलागि।
दूरि बैठि सुतनारिइव, राज्य दियो तुमत्यागि॥
रहे बैठि चुप लाज अकाजन। सिखीधनुषविद्याकेहिकाजन॥
गदा युद्ध केहि काजन सीखा। सो प्रभावकछु नयन न दीखा॥
कहेउ सँदेश भूप के आगे। करहू युद्ध आनि भ्रम त्यागे॥
जो नहिं लरहु मानिडर हारेहु। नारिवचनकरिवनहिं सिधारेहु
हमनहिं जियवपुत्त यहि लाजा। हँसत तुमहिं दुर्योधन राजा॥
पुरविराट हारेउ कुरुनायक। अवसुतनिफलभयेतुवसायक॥
कीन्हप्रथमप्रण सो विसरावा। भूली वृद्ध मातु रण दावा॥
सवते वहुत तुम्हारी आसा। आवतसो न मानि अरित्रासा॥
देव दैत्य गंधर्व वलभारी। तुवशर सहि न सकैं धनुधारी॥
यक्षराज निज युद्ध हरायो। करि मद भंग दण्डलै आयो॥
दुर्योधनहि तुम्हारी सरिके। करहुयुद्धनिजप्रणसुधि करिके॥
सोपौरुष भूलेउ नहीं, करत युद्ध नहिं आय।
क्षत्रिधर्म खोयो सकल, दुर्योधन भय पाय॥
जो नहिं लरत देखि दुखमोरा। अर्जुन धनुष वाण छुगनोरा॥
जीवन आश पुत्र कदराने। कर्णवाण भय मानि छिपाने॥
अरितियहँसहिंश्रवणसुनिवाता। मरै लाजवश कायर माता॥
क्षत्री धर्म नहीं तनु माहीं। तुमअतिनिलजलाजमननाहीं॥
कह्यो सँदेश नकुलसन जाई। जीरण मातु तात विषखाई॥
तुम ते सुत न और वरजोरा। जीत्यउन्टप सवपश्चिमओरा॥

वलपौरुष तव नाहिं न जानत। तुमहूँ दुर्योधन भय मानत॥
धनुपकरे धरती थहराई। लाज तजी अरु भूमि गँवाई॥
धर्मशील अतिशय वलदाई। सो तुम वृद्ध मातु विसराई॥
मोकहँ हरि अतिप्रिय सहदेऊ। भूले हमहिं विपति महँ तेऊ॥
तुम हरि कह्यो हमार सदेशा। करहु युद्धतजिसकल अँदेशा॥
मिलिहै राज्य सत्यमत येहा। ह्वै है विजय न कछु संदेहा॥

वहुअधर्म तुम धर्मरत, गत विलोक मदमान।
ह्वै है जय संशय नहीं, सवलसिंह चौहान॥

इति चतुर्विंश अध्याय॥ २४॥

यह तुम कह्यो द्रौपदीते हरि। कछु दिनरहौहिये धीरज धरि॥
पैहौ राज्य साज तुम येहू। प्रभुकी कृपा न कछु संदेहू॥
तम प्रभु धर्मराज समुझाई। करहुयतन ज्यहिहोइ लड़ाई॥
सव जगकहत सुनतकहँ खोटी। है विन युद्धवात अव छोटी॥
अस कहि कुन्ती रोदन कीन्हा। कृपासिन्धु तव धीरज दीन्हा॥
दिनदश धरौ धरौ मन अम्वा। मरिहैंकुरुपतिसहितकुटुम्वा॥
अस कहिकृष्णविदापुनिकीन्हा। करतप्रणाम आशिषादीन्हा॥
दै असीश कुन्ती सुखपाये। वाहर भवन दयानिधिआये॥

पँवरि द्वारभे आयके, रथ अरूढ़ यदुनाथ।
पुर वाहर लग लोगसव, गये पठावन साथ।

भीषम द्रोण विदा हरि कीन्हें। करिप्रणामनिजगृहमगलीन्हें ॥
वाहलीक विकरनपुर लोगा। फिरे सकलहरिदीन्ह नियोगा ॥
करत प्रणाम कर्णकहँ जानी। रथ बैठारि लीन्ह गहिपानी ॥
हँसिके कृष्ण कही यह भासा। सुनहु कर्ण पूरव इतिहासा ॥
शूरसेन नृप अति बल भारे। भये पितामह विदित हमारे ॥
कुन्ती नाम सुता उपजाई। सो तप हेतु नदी तट आई ॥
तहँवां दुर्वासा ऋषि आये। देव अकर्षण मन्त्र सिखाये ॥
एक दिवस सुखता अधिकाई। मन्त्र परीक्षा की मति आई ॥

बालभावके व्याजते, नहिं कामना विचारि।
जपेउ अकर्षणमन्त्रतब, दीन्हेउ दरश तमारि ॥

सहस किरणि तनुतेज अपारा। भईविकलनहिं रह्यो संभारा ॥
मून्द्यो नैन बैन नहिं आवा। कीन्हप्रभाकर निजमनभावा ॥
मूर्च्छा विगत नैन जब खोली। तब कुन्ती लज्जित ह्वै बोली ॥
यह सुरकीन्ह नीकि नहिंबाता। भाकलंकयहि अबपितुमाता ॥
रहहि गुप्त जानहि नहिं कोई। यातेतुमहिं कलंक न होई ॥
अङ्ग भङ्ग नहिं होइ तुम्हारा। ले तिय आशिर्वाद हमारा ॥
भये दिवाकर अन्तर्द्धाना। यह चरित्त काहू नहिंजाना ॥
चढ़िविमान रवि गगन सिधाये। दोहद भयउ गर्भ तुमआये ॥
लज्जित मातु पिता भयमानी। भवन कोन महँ रहेलुकानी ॥
चोरवत तुम कहँ कुन्ती जायो। डारि मँजूषा सहित बहायो ॥

प्रकट भये तुम गर्भते, तनु द्युति पुञ्ज अपार।
धनुषंबाण कुण्डलकवच, सहितलीन्ह अवतार॥
देखि तरणि सम तेज अपारा। दीन्हबहाइ सरितकी धारा॥
वहत नदी तनुतेज विराजा। जलते प्रकटमनहुँ दिनराजा॥
तहँ कुरुनाथ सारथी आवा। वहतप्रवाहदेखि तेहिं पावा॥
ताकी तरुणिरही विनबालक। लै गा भवन कीन्हप्रतिपालक॥
तुमहौ धर्मराजके भाई। तजहु शत्रु सँग करहुसहाई॥
वचन हमार समुझि मन अपने। और विचार करहुजनिसपने॥
सुनेउश्रवण श्रीपति सुख दाता। बोले वचन कर्ण मुसक्याता॥
सुनी श्रवण तुमते जब बानी। निश्चयमातु प्रथमहमजानी॥
जानेउ धर्मराज हम भाई। भयो वहुतसुख कहा न जाई॥
चलौधर्म नाथ यह नाई। कौरव तजि पांडवपहँ जाई॥
सहित विवेक कहौ हरिजोई। तुवशिषमानि करव हमसोई॥
चहौ नाथ जो सत्य छुड़ाई। सोहम करव न कोटि उपाई॥
यहकहि कर्ण मौनगहि रह्यउ तवयदुनाथविहँसिइमिकह्यऊ।
राज्य पाट तुम लेहु घनेरा। षष्ठम अंश द्रोपदी केरा॥
पांचबन्धु सेवाकरहिं, तुम्हरी सहित समाज।
चलहुकर्णजहँ धर्मसुत, अब हूजिय महराज॥
सुनि हरिवचन कर्ण हँसिदीन्हा। नीकविचार नाथ तुमकीन्हा
जानहिं मोहि युधिष्ठिर भाई। करैं राज्य नहिं धर्म विहाई॥
वे हमको देहैं सब जबहीं। हमदेइब कुरुपतिकहँ तबहीं॥

ग्रामें होइहि परम अकाजू । रहेउ न नाथ पांडु कुलराजू ॥
और विचार करौ जनि स्वामी । रहे चुपाइ जानि अनुगामी ॥
कह हरि कहेउ परमहित तोरा । चलहुकर्णसुनि मोरनिहोरा ॥
तुम कुन्ती के जेठे बालक । करहुराज्यअरुकुलप्रतिपालक ॥
तुम हरि कही साँचसब सोई । ऐसे समय उचित नहिहोई ॥
कुरु पाण्डवन वैर है भारी । मोरे बल रोपी उन रारी ॥
मोहिं कुरुनाथ बन्धुकरि भाषा । अशनवसन कछुसोच न राखा
सहित धरा धन सेन समाजा । कीन्हेउ अङ्गकोशको राजा ॥

पाल्यो उन लघु पुत्र ज्यों, माने करि गुरुदेह ।
शीश समर्पण स्वामि सँग, पूरुवमानि सनेह ॥

औरो कृष्ण सुनौ मतमोरा । सो अब करिय दास मैं तोरा ॥
लक्ष भूप दोउ ओर प्रतापी । तिन महँ प्राणरवानको पापी ॥
समर कराय करिय प्रभुसोई । सुख गवाँ पावै सब कोई ॥
अबतुमजाहु विलम्ब न लावहु । पाण्डवकटकसाजिलैआवहु ॥
श्रीहरि और न करहु विचारा । अब रणहोय हमार तुम्हारा ॥
असकहि कर्ण विदापुनिमाँगी । प्रभुपद परसिचलेउअनुरागी ॥
तनुउतचल मन हरिके साथा । पहुँचे कर्ण जहां कुरुनाथा ॥
साम दाम भय भेद दिखाई । कही कर्णके मनहि न आई ॥

दारुक हाँकेउ अश्वपुनि, चले वेगि भगवान ।
जाय युधिष्ठिर कटकमहँ, सबलसिंह चौहान ॥

इति पञ्चविंश अध्याय ॥ २५ ॥

कथासकलमुनिवरणि सुनायो। जनमेजयन्टप सुनिसुखपायो।
पाछे वहुरि सहित अनुरागा। लगेकहनद्दमिसकल विभागा॥
कटक समीप कृष्ण जब आये। धर्मराज सुनि आतुर धाये॥
सब बन्धुन मिलिकीन्हप्रणामा। लइगे जहाँ भूप विश्रामा॥
अर्घ्य देत आसन बैठारे। शीतलजल लै चरण पखारे॥
पूछेउ भूप कहा करि आये। वासुदेव हँसि वचन सुनाये॥
कहहरि तेहि एको नहिंमानो। देन न कहत भूप अभिमानो॥
मिलिहि न और यतनते राजा। करहु युद्ध कीजै दल साजा॥

सुनतश्रवण नहिं वात कछु, देवेको नहिंचाह।
विनायुद्धनहिंमहिंमिलौ, कोटि यतननरनाह॥

मन्त्र हमार भूप सुनि लीजे। साजो सेन विलम्ब न कीजे॥
होइ निशंक अब करहु तयारी। ह्वै है विजय कहत गिरिधारी॥
समुझत कृष्णवचन कछुहीमा। लरहु नरेश कही यह भीमा॥
अर्जुन कही भूप सुनि लीजै। सजिनिजकटकदुन्दुभी दीजै॥
करहुयुद्ध यह मन्त्र हमारा। होई सो जो लिखो करतारा॥
बोले वचन नकुल मुसकाता। अब न्टपलरौ न दूसरि बाता॥
जानत हमहिं दीन प्रतिपच्छी। रहौं चुपाय वात नहिं अच्छी॥
अब जनि डरिय लरिय नरदेवा। बोले वचन नकुल सहदेवा॥

नहिं मानत हरिके कहे, भूलि देखि समाज।
लरहु न करहु विलम्ब अब, कही द्रुपदमहराज॥

कही सात्यकी सुन्दरि बानी। विनसंग्राम क्षत्रियन हानी॥

तातें अवशि युद्ध अब कीजे। रिपु रण जीति देश सब लीजै॥
धृष्टद्युम्न यही मत राख्यो। सहितविराटशिखण्डी भाख्यो॥
धर्म्मराज हरि मिलि ठहरावा। करब युद्ध यह मन्त्र ढढ़ावा॥
तेहि अवसर तिन साज बनाये। भीष्मकपुत्र रुक्म तहँ आये॥
कुण्डिनपुर नरेश बरिआरा। सो नृप वासुदेवको सारा॥
है लघु बन्धु रुक्मिणी केरा। लीन्हें साथ कटक बहुतेरा॥
गजरथ पदचर विपुल तुरङ्गा। अचौहिणी एक पुनि सङ्गा॥

तेहि अवसर प्रापत भयो, भूपति सभामँझार।
बैठारे पारथ निकट, सबहि जोहारि जोहार॥

देखेउ धर्मराजकी ओरा। बोले वचन गुमान न थोरा॥
जो आरत है राखो मोही। भूप अशत्रु करों मैं तोही॥
बुद्धिचक्षुको नाम मिटावों। एकछत्र महिराज करावों॥
हमते होउ भूप आधीना। करौं भूमि सब शत्रु विहीना॥
सुनत वचन मन भीम न भायो।है सरोष यहि भांति सुनायो॥
रहत सदा हम कान्ह-भरोसे। कीट समान गनें नर तोसे॥
फिरि ऐसी जो बात विचारी। तौ डारौं पुनि जीभ निकारी॥
मारों त्वहि न अधम अभिमानी। मानत कृष्णदेवकी कानी॥
औ रुक्मिणिकी कानि न थोरी। तातें बची मृत्यु सुनु तोरी॥
जस तैं वचन भूपते बागे। अस जो कहत हमारे आगे।
रुक्मिणि-बन्धु जो न तुम होते। मारि तुरत यमलोक पठोते॥
छांड़त कृष्ण देवके नाते। मुहँ मसि लाय जात उठि ताते॥

अस कहि भीमसेन रिस वाई। भुजा पकरिकै दीन्ह उठाई॥
चला तुरत जिय लज्जा पायो। दुर्योधनके भवन सिधायो॥

गये हस्तिनापुर सबै, निज सेना लै साथ।
अति आदरते उठि मिले, बैठारे कुरुनाथ॥

बैठतही इमि वचन बखाने। जो कुरुपति तुम होउ डराने॥
तौ हम होई तुम्हरे सङ्गा। पाण्डव रण जीतौं रणरङ्गा॥
जो तुम होउ अधीन हमारे। करौं काज कुरुनाथ तुम्हारे॥
सुनि कुरुनाथ क्रोध अधिकाई। कहि कटुवचनदीन्हदुरिआई॥
द्रोणी कर्ण सहायक मोरे। जीति सकै जगमहँ अस को रे॥
गुरु द्रोण जो अस्त्र सँभारै। देव अदेव सकल रण हारै॥
वृद्ध पितामह विदित हमारे। जिनसे परशुराम रण हारे॥
ते भृगुनाथ विष्णु-अवतारा। और को जीति सकै संसारा॥
मोरा बल कोउ थाह न पावत। ताहि मूढ़ तैं भर्म देखावत॥
बल तुम्हार हमरो सब जाना। जा दिन कृष्ण बाँधिकै आना॥
शीश मुण्डि कीन्हें अपमाना। बल छुड़ाइ दीन्हें जग जाना॥
हरिपाण्डवके भयउ सहायक। तेऊ नहिं मोरे रण-लायक॥

होइ सक्रोध कुरुनाथ तब, दीन्हेउ ताहि उठाइ।
अतिलज्जित होइ नाइ शिर, गयो भवन सकुचाइ॥

होइ प्रसन्न बोले मुनिराई। अब नृप सुनहु कथा मन लाई॥
गये कृष्ण पाण्डव घर जबते। भाअतिविकलकुरुपतितबते॥
तेजहीन मन अति दुचिताई। शोचविवश निशि नींद न आई।

प्रातहि होत द्रोण गृह आये । करि प्रणाम इमिवचनसुनाये ॥
पाण्डव हमहिं वैर सरसाना । शरण तुम्हार भरोस न आना ॥
होइय आप सहायक मोरे । अव मैं चरण शरण गुरु तोरे ॥
असकहि नयननीर भरिलीन्हा । सुनिकै द्रोणउतरतेहिदीन्हा ॥
भरत-वंशमें जन्म तुम्हारा । सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥
राज्यनीतिमहँ वहुत प्रवीना । करत भूप तुम कर्म्म मलीना ॥
कपट यूप कछु सत्य न हारे । तुम पाण्डव केहि हेतु निकारे ॥
शकुनी मन्त्र मानि छल कीन्हा । आप कृष्ण कह अंश न दीन्हा॥

आप वली हैं पाण्डुसुत, अरु सहाय भगवान ।
करहु भूप विधि कोटि तुम, जीति न सकहुमशान ॥
उनको कछुअ न दोष नृप, तम अति कीन्ह अनीति ।
जहाँ धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति ॥

वासुदेव हैं हरि अवतारा । उनहिको जीति सकै संसारा ॥
ते दयालु पाण्डवके जानौ । ह्वै है विजय सत्य करि मानौ ॥
भीषम आदि सकलरणधीरा । रण-तीरथ महँ तजैं शरीरा ॥
जानौ सव कौरव संहारे । हमहूं करौं जाव रण मारे ॥
होइहि सुनि सवकोमदभङ्गा । हम नृप करव तुम्हारो सङ्गा ॥
हम मानत मनमें नहिं त्रासा । भये वृद्ध नहिं जीवन आसा ॥
होय निचिन्त वैठु अव राजा । हम तन तजव तुम्हारे काजा ॥
छोड़ तुङ्ग वहुत कठिनाई । जुरै काल तौ करौं लराई ॥

युद्ध जुरे पांडव सहित, मैं रोकौं घनश्याम ।
कोटि शपथ भृगुरामको, करौं घोर संग्राम ॥
धीरज दीन्ह द्रोण गहि बाहा । अब तुम अभय होहु नरनाहा ॥
द्रोणी कही बन्धु सुनिलीजे । भयत्यागहु मनधीरज कीजे ॥
तीनों लोक अस्त्रगहि आवे । मारौं सकल जान नहिं पावे ॥
मनबच कर्म सुतोर सहाई । अब तुम अभयहोहुकुरुराई ॥
भीषम भवन गयउ तब राजा । द्रोण कर्ण लै सकलसमाजा ॥
जाइ भूप जब दरशन कीन्हा । गङ्गासुत आदर करि लीन्हा ॥
करि प्रणाम कौरव कुलदीपा । सत्यव्रत के बैठ समीपा ॥
कह भीषम केहि कारण आये । सुनि महीप तब वचनसुनाये ॥
बन्धु-बैर शालत उर मोरे । आयों शरण पितामह तोरे ॥
एक सबल तौ पांडुसुत, औ सहाय भगवान ।
कहेउ भूप भीषम सुनहु, तुम जानत बुधिवान ॥
अब उनके दल जुरे अपारा । शूर एकते एक जुझारा ॥
नृपकोवचनश्रवणसुनि लीन्हा । हँसि गांगेय उतर तब दीन्हा ॥
उन न करेउ अपराध हमारा । तुम छल करि परदेशनिसारा ॥
शकुनी कर्ण कुबुद्धि सिखाई । सोयहु तुमहि सुनहु कुरुराई ॥
पुनि यदुनाथ बसीठी आये । मांगे पांच ग्राम नहिपाये ॥
हम सब तुमहि रहे समुझाई । सुनत नहीं धौं कुमतिसिखाई ॥
कर्ण भरोस मानि मन राजा । करत अनीतिनशावतकाजा ॥
कहा हमार श्रवण सुनि कीजे । नीच जातिको मन्त्र न लीजै ॥

यह हैं कर्ण जातिको हीना । तुमहिंसिखावत मन्त्रअलीना ॥
जाति अहीर अधम अभिमानी । सुनि कुरुनाथ रहे चुपमानी ॥
उचित न कछुउत्तरपुनिजानी । उठिगा भवन मानि गलानी ॥

होइ सक्रोध बोले करण, सुनहु बात कुरुनाथ ।
जियत पितामह जब लगे, तौ न छुवौं धनु हाथ ॥

यह कहि वचन कर्ण उठि गयऊ । दुर्योधन मन विस्मय भयऊ ॥
मुख मलीन कुरुनायक कीन्हा । देखि पितामह धीरजदीन्हा ॥
पाण्डवसहित आप वनश्यामा । जीति न सकहिं भूप संग्रामा
करि मन कोप धनुष कर धारौं । सकलक्षितीशधरणिके मारौं ॥
को नरेश मोरे रण लायक । करौं निपात साधि धनुसायक ॥
चौबिस दिनभृगुपतिरणकीन्हा । तिनते जयतिपत्र मैं लीन्हा ॥
काशी नृपति स्वयम्बर ठाना । आये भूप भूमिके नाना ॥
देव दैत्य नर तनु धरि आये । जीति युद्धमें सकल हराये ॥

धीर धरो चिन्ता तजे, कीजै मन विश्राम ।
अभय होउ भूपाल अब, जो जीतै संग्राम ॥
राउ तुम्हारी ओर जो, देखै नयन उघारि ।
शत्रुभाव करि ताहिकी, डारैं आंखि निकारि ॥

सुनि यह वचन धीरता आनी । कृपके भवन चला अभिमानी ॥
कृपाचार्य्य पद परशन कीन्हा । ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हा ॥
पूछेउ मुनि केहि कारण आये । समाचार कहि भूप सुनाये ॥
कुरु पाण्डवको कलह महाना । सो चरित्र तुम्हरो सब जाना ॥

हम उनपर साजी अवधारी। भये सहायक श्रीवनवारी॥
बूझि परत नहिं मोहिं उवारा। अब मुनि एक भरोस तुम्हारा॥
अस कहि लोचन वारि विमोचे। सुनतवचनमुनिमनमहँसोचे॥
वचन हमार भूप सुनि लीजै। शोक त्यागि करि धीरज कीजै॥
तजब देह भारत रण एहा। तजब न तुमहिं तजौ संदेहा॥

यहि प्रकार सन्मान करि, कीन्हें विदा भुवार।
सबलसिंह चौहान कह, गये कर्णके द्वार॥

इति षड्विंश अध्याय॥ २६॥

कर्ण कुरुपतिकेर मत, वर्णत वरहि विभाग।
कह मुनि जनमेजय सुनहु, कथासहित अनुराग॥

पवँरि दुवार भूप जब आये। समाचार प्रतिहार सुनाये॥
सुनत कर्ण मनअतिअनुरागू। करतप्रणामलीन्ह चलिआगू॥
देइ उपायन भवन लै आये। अति अनूप आसन बैठाये॥
जोरि पाणि पुनि आयसु मांगा। बोलेउराउ सहित अनुरागा॥
अनल सहाय पवन कब याँचे। करैं सहाय सखा ये साँचे॥
तुम ते और मित्रको मोरे। मैं रण रच्यउ बाँहवल तोरे॥
जानत तुम गाङ्गेय रुठाने। तासुवचनसुनि मित्र रिसाने॥
बालक जरठ वचन परतीती। तातनकरियकहतअसिनीती॥
बालापन महँ बहु बुधि होई। जरा जनित हारै सब खोई॥
ताते मित्र क्रोध नहिं दीजे। उनिके युद्ध यत्नते कीजे॥

लरहु शत्रुसन क्रोध करि, लेहु धनुष शर हाथ।
तुववलते मैं रचेउँ रण, विहँसि कह्यो कुरुनाथ॥
सुनिकै कर्ण चित्त सुख माना। वार वार यह वचन वखाना॥
भूपति सत्य कहौं प्रण कीन्हें। तुमते उऋण न प्राणहुँ दीन्हें॥
अब निशंक होइय भूपाला। तव हित मैं करिहौं शरजाला॥
वरुण कुवेर इन्द्र यम आवैं। ते मोते जयपत्र न पावैं॥
द्रुपद विराट भूप वहुतेरे। पाण्डव नहिं हमरीसरि केरे॥
उनकहँ कृष्णदेव उपजावा। चहत वरावर युद्ध करावा॥
जबते भवन कूबरो डारो। बुद्धि-विहीन भये वनवारी॥
मम वल जानत भूप कन्हाई। गई भूलि सुधि कुमतिसिखाई॥
नाथ पठाइय दूत कोउ, धर्म्मराजपहँ जाइ।
करैं युद्धको जाइँ वन, उनहिं कहै समुझाई॥
कर्णवचन सुनि नृप सुखपाये। वोलि उलूक वकील पठाये॥
पृथक पृथक कहि सवन सँदेशा। करहु युद्ध की छाँड़हु देशा॥
सुनतसँदेश जो तुम नहिं आये। अब नहिं वचो जीव द्रवराये॥
की अब वेगि आनि तुम लरहू। की वन जाहु अस्त्र परिहरहू॥
जो तुम मान भये भय पावत। तौ अब हम विराटपुर आवत॥
लै सन्देश उलूक सिधाये। धर्म्मराजको सेनहि आये॥
पवँरि दुवार वेगि लै आये। द्वारपाल तब जाइ जनाये॥
नृप कुरुनाथ वकील पठाये। कहन सन्देश स्वामि पहँ आये॥
तब उलूक इमि वचन सुनावा। धर्म्मराज सुनि निकट वोलावा

कहत सन्देश भूपको याँचो। सो अब सुनहु बात सब साँचो ॥
दूतनकेरि रीति असि होई। कहैं सन्देश सत्य सब सोई ॥
अब नृप और विचार न कीजै। कौ उठिलड़हु कि बनमगलीजै॥

कह्यो भूप सन्देश तुम, सुनहु भूप दै कान ।
कौरव पाण्डव भूमि सब, छाड़ दशों दिशिबान ॥

पाहि पुकारि शरण जब एहौ। तौ तुम जीवदान नृप पैहौ ॥
जो भूलत हौ कृष्ण भरोसे। तुम न बचहु दुर्योधनरोसे ॥
जो कुबुद्धि पदवी रिसिआई। त्यहि त्यागहु जो चहहु भलाई ॥
जो उठिलरहु बात नहिमानहु। कृष्ण समेत मरे सब जानहु ॥
सो सुनि भीम हिये रिसव्यापी। कहत सँभारिवचननहिपापी ॥
भे दृगअरुण खड्गकरलीन्हा। बरजेउ कृष्णपाणिगहिलीन्हा ॥
अब जयविजय सुनो सबबाता। करइ न भूप दूतकर घाता ॥
यद्दपि कहै कटु वचन वकीला। करै न क्रोध नरेश सुशीला ॥
बरजेउ भीमहिं शारँगपानी। गयो उलूक भागि भय मानी ॥

बोलि निकट नृप धर्मसुत, कह्यो वचन समुझाइ ।
दुर्योधनते यह कहौ, अब हम पहुँचे आइ ॥

अब तुम कृपा न जानहु बाता। कृष्ण शपथ ऐहौं सुनु भ्राता ॥
निज पौरुष तुम करहु सँभारा। कोटियत्न नहि होइ उबारा ॥
अस कहि पठयो फेरि उलूका। चला हृदय उपजी अति हूका ॥
रथचढ़ि होइ तुरत सिधाये। नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
पवरि दुवार तज्यो असवारी। गा दुर्योधन सभा मँझारी ॥

भीषम द्रोण कर्ण सब राजा । सभामध्य कुरुनाथ विराजा ॥
देखी राज मण्डली भारी । बैठेउ सबहिं जोहारि जोहारी ॥
कह नृप कहन सन्देश पठाये । समाचार उनके कछु लाये ॥
हँसि बोले तब वचन उलूका । कही युधिष्ठिर नृप दुइ टूका ॥
हम आवत तुम होहु तयारा । करहु युद्ध नहिं और विचारा ॥
सकलसभामहँ तुमहिं सुनावत । होहुसचेत धर्म्मसुत आवत ॥

शपथ कीन्ह भगवानको, यह उन कह्यो सन्देश ।
प्रात होत अब आइहौं, अब न विलम्ब नरेश ॥

सुनहु सन्देश न राखो गोई । करो भूप अब जो रुचि होई ॥
बोलेउ सुनत कर्ण रिसवाई । कहे वचन पुनि सबहि सुनाई ॥
अब नृप धर्म्मराज मम नेरे । आवत कठिन कालके प्रेरे ॥
रण सन्मुख हरि अर्ज्जुन पावों । मारि सकल यमलोक पठावों ॥
शरपञ्जर करि भीम दवावों । मारि सकल पाण्डवविचलावों ॥
बाँधि युधिष्ठिर करि रुनुसाई । जयतिपत्र देहौं लिखवाई ॥
सहि न सकें पाण्डव मम सायक । अवतुम अभय होहु नरनायक ॥
कौरव चरित कहेउँ मैं गाई । अब सुनु अपर कथा कुरुराई ॥

होत प्रात उठि धर्म्मसुत, गये जहां यदुराय ।
करहिं वन्दना जोरि कर, चरण-कमल शिर नाय ॥

कही युधिष्ठिर अब बनवारी । साजि कटक अबकरहुतयारी ॥
चलत उलूक सुनहु भगवाना । प्रात होत कहि दीन पयाना ॥
कृष्ण तुम्हारि शपथ हमखाई । सर्वविदितसमहहु अतिकठिनाई ॥

पठै दिये चरवर बनवारी । कहेउ नृपनसनकरहु तयारी ॥
निजनिज सेन नरेशन साजी । उठे निशान दुन्दुभी बाजी ॥
पलट वितान लदायो चारू । और लदायो सकल बजारू ॥
अगणित ऊँट वृषभ शकटादी । खच्चर महिष चले लै लादी ॥
सकल वस्तु कारीगर नाना । लै लै लादि चले निज बाना ॥
गज रथवाजिसाजिशिविकाली । भये अरूढ़ मेदिनी हाली ॥

सहनाई अरु पवन वन, ढोल ठोंकि भनकार ।
पटह भेरि अरु धेनुमुख, बाजे त्रिविध प्रकार ॥
बन्दीगण बोले विरद, रही शङ्खध्वनि पूरि ।
द्विरद-घराट बाजत घने, भयो शब्द तहँ पूरि ॥

इति सप्तविंश अध्याय ॥ २७ ॥

द्रुपद नरेश साजि सब याना । भयो अरूढ़ बजाय निशाना ॥
धृष्टद्युम्न शिखण्डी आवत । रथ अरूढ़ ह्वै शङ्ख बजावत ॥
युद्ध मान सेना सब साजे । पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे ॥
द्विरद अरूढ़ वीर बरिआरा । चल्यो तमौजा द्रुपद-कुमारा ॥
पणव मृदङ्ग भेरि बहु बाजे । भे असवार नृपति दल गाजे ॥
पुनि रथसाजि सात्यकी आयो । सेन सङ्ग निज शंख बजायो ॥
सुतन समेत विराट भुवारा । लै निज कटक चले सिरदारा ॥
काशिराज सेना सँग लीन्हो । रथ अरूढ़ ह्वै दुन्दुभि दीन्हो ॥

शूरसेन अपनो दल साजे । पहिर सनाह सिंहसम गाजे ॥
जरासन्धसुत न्टप सहदेऊ । लै निज कटक चलो पुनि तेऊ ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा । भे अरूढ़ बाजे पुनि बाजा ॥
साजे सकल नरेश पुनि, गज रथ तुरंग पदात ।
रथी महारथ गजरथी, कटक छोहिणी सात ॥
मिलिज्जुरिपवँरि द्वार जबआवा । धर्मराज निज द्विरद मँगावा ॥
कुन्तल सजि लायो मय मत्ता । शंखवर्ण सुन्दर चौदन्ता ॥
देखत रूप परम विकरारा । चारिउचरण बहत मदधारा ॥
कनकरचितमणिखचितअँबारी । गजमुक्तामालरि छबिकारी ॥
धर्मराज हरिपद शिर नाई । भे अरूढ़ प्रभु आयसु पाई ॥
बाजत दुन्दुभि शंख घनेरे । करि अतिनाद नकीबन टेरे ॥
भयो शोर बहु दिग्गज डोले । करिउदवाद वन्दिजन बोले ॥
गोमुख भेरि शब्द अतिभारे । जहँ तहँ विपुल नकीब पुकारे ॥
होत महारव भयो अतंका । बाजि उठे दलमें बहु डङ्का ॥
भीमसेन अपनो रथ साजे । भये अरूढ़ बार बहु गाजे ॥
पुनि पांचो द्रौपदी कुमारा । शंख बजाय भये असवारा ॥
मणिमय चित्र विचित्र रथ, भये नकुल असवार ।
पांच कोटि यकसठ लिये, साज्यो भीम कुमार ॥
तब सहदेव कीन असवारी । अर्ज्जुन लै साजे बनवारी ॥
लै शंकर सनाह पहिरायो । इन्द्रदत्त शिर मुकुट बँधायो ।
अदिति श्रवणके कुण्डल दोई । पहिरायो जेहि मृत्यु न होई ॥

अक्षय तृण वरुण जो दीन्हा। सोई लै हरि पार्हि दिगकीन्हा॥
हुतभुक दीन्हेउ धनुष महाना। गाण्डिवनाम सकलजगजाना॥
सप्त पञ्चलागी हैं जामें। विद्युत्कोटि प्रभा है तामें॥
सो लै हरि अर्जुनकहँ दीन्हों। धरिशिरहाथअभयपुनिकीन्हों॥
अर्जुन सुनहु प्रसाद हमारे। रणमहँ शत्रु जायँ तुम मारे॥
पुनि दीन्हों प्रभु आशिष येहा। निश्चय विजय न कछुसन्देहा॥
अस कहि नन्दिघोषरथ आना। सारथि रूप धरेउ भगवाना॥
श्वेत वर्ण लै चारों घोरे। ते हरि आनि यानमहँ जोरे॥
करि अतिकृपा बारनहि लायउ। पाणिपकरिहरिपार्थ चढ़ायउ॥
करि सारथी वेष वनवारी। जोती गहे पितांबर धारी॥
शीशमुकुट जनु तरनि अभंगा। चन्दन ते चर्चित सब अंगा॥
पीतवसन तनु श्याम सोहावन। मणियुतपीत विराजतपावन॥
कौस्तुभ कण्ठ रुचिरवनमाला। अंगद युत द्वौ बाहु विशाला॥

कमलनयन कुण्डल कलित, ललित मधुरमुसकान।
कच कारे कटि केहरी, कोटिकाम हरमान॥
पाणिकल्पतरु पद कमल, कमल वदन कमनीय।
केशी कंस कलेशहर, कीन्ह कृपाकरि जीय॥
करयो सारथी वेष जब, रथ हांक्यो भगवान।
पार्थ ध्वजापर बैठिकै, तब गर्ज्यो हनुमान॥

[illegible] प्रसन्न बोले भगवाना। सुनहु युधिष्ठिर वचनप्रमाना॥
[illegible]न्त हमार भूप सुनि लीजै। व्यूहबनाय गमन पुनिकीजै॥

विरंचि पिपीलव्यूह भगवाना । कीन्ह बजाय निशान पयाना ॥
अर्जुन रथ हाँकेउ वनवारी । सकल सेनके भयो अगारी ॥
युधामन्यु पुनि दक्षिण ओरा । चले सङ्ग लै दल अनघोरा ॥
सैन सहित दिशिवाम तमोजा । रथ अरूढ़ मनु अपर मनोजा ॥
धृष्टद्युम्न अतिवल धनुधारी । अर्जुन रथके चलेउ पछारी ॥
नाना वस्तु लादि लै चारू । ता पीछे सब लोग बजारू ॥
ताके दक्षिण भाग शिखण्डी । लिये साथ निज सेन अखण्डी ॥
दल चतुरङ्ग सङ्ग पुनि साजे । धृष्टकेतु दिशि वाम विराजे ॥
लिये धनुष कर सायक तीछे । सैन समेत सात्यकी पीछे ॥

चलत कटक हाली धरा, लागी रेणु अकास ।
चले नकुल सहदेव सँग, लिये सङ्ग रनिवास ॥

दक्षिण दिशि द्रौपदी-कुमारा । चले सङ्ग लै कटक अपारा ॥
घटउत्कच दल लै दिशिवामा । पांचकोटि राक्षस दल धामा ॥
अभिमन्यु रथपाछे पुनि आवत । लिये धनुष कर बाण फिरावत ॥
अभिमन्यु सँग वीर वरियारा । उत्तर शंख विराट कुमारा ॥
लीन्हें साथ सैन समुदाई । कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
धर्म्मराज पुनि कीन्ह पयाना । बाजे दल गहगहे निशाना ॥
पवन धेनु मुख भेरि मसृङ्गा । बाजे शंख चले दल भृङ्गा ॥
चालिस सहस छत्रधर राजा । चले सङ्ग लै सैन समाजा ॥
द्रुपद नरेश चलेउ दल साजी । भयउ अरूढ़ दुन्दुभी बाजी ॥
उठी धूरि गो छाय अकाशा । रवि अलोप पुनि भव नाशा ॥

लेकर धनुष चले पुनि गाजत । नृपके दच्छिण भाग विराजत ॥
बायें ओर विराट भुवारा । कीन्ह पयान बजाय नगारा ॥
काशिराज नृप गजके पाछे । सेन समेत विराजत आछे ॥

रथ अरूढ़ कर धनुषधरि, शूरसेन महराज ।
नृपगजके आगेचले, लै निज साज समाज ॥

पीछे अनी वृकोदर आवत । करत घोर रव गदा फिरावत ॥
वाम पाणि लीन्हें करवाली । भीमहिं चलत धरा सब हाली ॥
क्षोभित सिन्धु धराधर डोले । कमलनाल अहि दिग्गज बोले ॥
कौतुक देखि चकित सुर डीठी । परेउ भार कच्छपकी पीठी ॥
कर रव भीम बार बहु गाजे । रवि तुरङ्ग तजि मारग भाजे ॥
सुरपुर भेदि भीमकी हांका । परी जाय ध्रुवलोकप हांका ॥
चलीजात मग सेन अपारा । बाजत शंख मृदङ्ग नगारा ॥
भाट भरतकुलविरदबखानत । सुनिसुनिशब्दशत्रुभयमानत ॥
दल विलोकि मग होत अतङ्का । रघुवर प्रथम गये जिमिलङ्का ॥

गोमुख शंख निशान रव, भेरि भूरि करनाल ।
गजघटा गाजत सुभट, सुरपुर शब्द कराल ॥

कम्पत शेष विकल भुजगेशा । उठी धूलि छपि गयो दिनेशा ॥
सुर विमान नभ ऊपर छायउ । सुमनवर्षिशुभशकुनजनायउ ॥
कह नृप तुम हरि अन्तर्यामी । विजयउपायकहो अवस्वामी ॥
बोले विहसि वचन भगवाना । करहु नरेश शक्तिको ध्याना ॥
तासु प्रसाद विजय नृप होई । यह तजि और उपाय न कोई ॥

सुनि हरि वचन भूप अनुरागे । करन ध्यान अम्बाको लागे ॥
करि आचमन मूंदि दृग लीन्हें । प्राणायाम वेदविधि कीन्हें ॥
करि अष्टाङ्ग सकल सुरसाधी । करत ध्यान नृप लागि समाधी॥

मुक्त केश कर खड़्गधर, मुण्डमाल दृग लाल ।
को सहाय मेरो करै, बिन काली यहि काल ॥
उरग किङ्किणी कटि लसै, शवारूढ़ भुज चारि ।
हरन हमारे दुसह दुख, हे त्रिपुरारि-पियारि ॥

यहिविधिविनयभूपजबकीन्हा । ह्वै प्रसन्न तब दर्शन दीन्हा ॥
सानुकूल तब भई भवानी । वरंब्रूहि बोली हँसि बानी ॥
हे नरेश तुम हरिहि पियारे । मांगहु जो अभिलाष तुम्हारे ॥
सुनि प्रिय गिरा अमियरससानी । बोलेउ राउ जोरि युगपानी ॥
मिटे कलेश सुनी तव भाषा । दरश देखि पूजी अभिलाषा ॥
जानहु मातु मनोरथ मोरा । मैं का कहौं दास मैं तोरा ॥
तब यह कही अनुग्रह मोरे । ह्वै हैं सफल मनोरथ तोरे ॥
धर्म्मराजकहँ दै वरदाना । भई शक्ति पुनि अन्तर्द्धाना ॥
हरि नरेश मन सुख अधिकाई । कीन्ह पयान निशान बजाई ॥
मग सर सरित सूखि गा पानी । पङ्क रेणु ह्वै गगन उड़ानी ॥

चले जात मग धर्म्मसुत, लीन्हें दल निज साथ ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीव्रजनाथ ॥

करत शिविर पुनि करतपयाना । तब कुरुदेश आय नियराना ॥
बीच बीच मग करत बसेरा । कबहुँ पयान होय कहुँ डेरा ॥

नगर वारणावर्त्त समीपा । कीन्ह्यों शिविर पाण्डुकुलदीपा ॥
जागे सकल निशा अवसाना । प्रात होत पुनि कीन्ह पयाना ॥
सुमिरि गौरि हर कृष्ण गणेशा । गज आरूढ़ ह्वै चले नरेशा ॥
कुरुक्षेत्र के पश्चिम ओरा । कीन्हें धर्मराज तहँ डेरा ॥
अमल अमोल वितान तनाये । पटलकनातसहितछबिछाये ॥
राजत दल यरिधार घनेरे । जहँ तहँ परे नृपनके डेरे ॥
परो धर्मसुत सैन अखण्डा । परखहिंशिविरदेखिनिजखण्डा ॥

धर्मराजको पाइ सुधि, कुन्ती पहुँची आय ।
देखि पुत्र अरु पुत्रतिय, आनन्द उर न समाय ॥

धर्मराज पदवन्दन कीन्हा । होइ प्रसन्न तब आशिषदीन्हा ॥
वन्दत चरण नकुल सहदेऊ । पाइअशीष मुदितमनभयऊ ॥
अर्जुन भीम आइ पद वन्दे । अभिमनु आशिषपाइअनन्दे ॥
परसे चरण द्रौपदी रानी । उर लपटाइ लीन्ह गहि पानी ॥
प्रीति सहित यदुनन्दन भेटी । भीतर पलटि गई दुख मेटी ॥
सुनि सब पुत्र वधू उठि धाईं । परीचरण अति आनन्दछाईं ॥
कुशल पूछिकै कण्ठ लगाई । दीन्ह अशीश निकट बैठाई ॥
अभिमनआदि परे पगनाती । हृदय लगाइ जुड़ावत छाती ॥

कुन्ती गोद समोद तब, बैठारे सुत नन्द ।
सबलसिंह चौहान कह, पूरि रह्यो आनन्द ॥

इति अष्टाविंश अध्याय ॥ २८ ॥

कह ऋषि सुनु जनमेजयराई। कथा विचित्र श्रवणसुखदाई॥
यह सुधि दुर्य्योधन नृप पाई। भयउ अरूढ़ निशान बजाई॥
भीषम कर्ण द्रोण धनुधारी। साजी सेन भयङ्कर भारी॥
कृपाचार्य्य द्रोणी रण रङ्गा। लीन्हे सङ्ग चमू चतुरङ्गा॥
वाह्लीक लै कटक अपारा। भये अरूढ़ बजाइ नगारा॥
सोमदत्त सँग दल समुदाई। बाजत पटह शंख सहनाई॥
भूरिश्रवा सेन सब साजे। गङ्गाधर काम्बोज बिराजे॥
रथन अरूढ़ बजाइ निशाना। दुर्य्योधन सँग कीन्ह पयाना॥
शल्य नरेश अलंबुष साजे। पवन निशान शंख बहु बाजे॥
साज्यो पुनि कलिङ्ग नरनाथा। लै नवलाख द्विरदपुनिसाथा॥

रथ तुरङ्ग बहुरङ्गके, सेना साथ अनन्त।
असी लक्ष गज लै चले, महाराज भगदन्त॥

सिन्धु नरेश जयद्रथ नामा। अति रणधीर वीरवलधामा॥
लैकर धनुष बजाइ नगारा। कौरव सङ्ग भयो असवारा॥
शकुनी औ विकरण रणरङ्गा। द्विरद दुमत्त दृगासन सङ्गा॥
सौ बान्धव दुर्य्योधन केरे। भ्रातजात अरु तनय घनेरे॥
निजनिजरथन भये असवारा। बाजत गोमुख शंख नगारा॥
सेन समेत त्यागि सब धर्म्मा। द्विरदअरूढ़ चल्यउकृतवर्म्मा॥
नृप उलूक वृषसेन भुवाला। चले सङ्ग लै कटक विशाला॥
नृप शशिविन्दु चले दलसाजे। तुरँग अरूढ़ दमामे बाजे।
विन्दु निविन्दु अवन्ती राजा। चले साथ लै सैन समाजा॥

अस्त्रनिपुण अरु अतिवलदाई। ज्येष्ठ मित्रविन्दा के भाई॥
कह हरि कथा भूप तुव जानी। अति प्रियकृष्णदेवकी रानी॥
तासु वन्धु द्वौ अतिवलदाई। दुर्योधनके भये सहाई॥

साठिसहस न्टप छत्त धर, दै गहगहे निशान।
निज निजदल सँगलै चले, गर्द लोपिगये भान॥

एकादश चोहिणि दल साथा। करतअकूतचल्यो कुरुनाथा॥
वाजे वाजन भाँति अनेका। उठी धूरि रविमण्डल छेका॥
भा अँधियार जानिनिशि घोरा। विछुरे चक्रवाकके जोरा॥
वाजत विपुल न्टपन के डङ्का। हाली धरा परम आतङ्का॥
दलके भार धराधर डोले। विरदावली भाट बहु बोले॥
सुनि सुनि नाद नकोवन केरा। खग मृग त्यागो भागि बसेरा॥
गर्जत विपुल सुभट मग जाहीं। अति आतंक होतदलमाहीं॥
पीत ध्वजा रथ पीत विराजे। पीत धनुष पीतै गुण साजे॥
पीत वर्ण चारोहँ घोरे। वसन विचित्र पीत रँग वोरे॥
धनुष चिह्न ध्वज ऊपर राजत। पीत वर्ण दल कर्ण विराजत॥

श्वेत वर्ण तनु वसन पुनि, श्वेत धनुष अरु बान।
श्वेत केश रथ वाजिहैं, श्वेत ध्वजा फहरान॥

ताल चिह्न ध्वज शोभापावत। लैदलश्वेत पितामह आवत॥
श्यामवर्णरथ अधिक सोहावत। श्यामवर्ण घोड़े छवि पावत॥
नील कलङ्कित धनु कर लीन्हें। नीलवर्ण तामें गुण दीन्हें॥
नील रङ्ग फहरात पताका। खड्गचिह्न तामें अति बाँका॥

नील निचोल विभूषण साजे। नील वर्ण दल द्रोण विराजे॥
अरुणवर्ण दल साजि सुशर्म्मा। अरुणवर्ण शोभितधनुकर्म्मा॥
अरुण चमर शोभित रथकेतू। चलेउसाजिकुरुपतिजयहेतू॥
सिन्धुराजके तुरै हरैवा। अतिलाघवगतिमनहुँ परैवा॥
हरित केतु सोहत रथ ऊपर। हरित वसन छायो दल भूपर॥
कौरव सब कुरुनायक सङ्गा। तिनके रथन ध्वजा पँचरङ्गा॥
द्विरदचिह्न नृपस्यन्दन सोहत। अतिविचित्ररणकोमनमोहत॥

निज निज रथन अरूढ़ नृप, सोह ध्वजा बहुरंग।
हरित पीत कोउ श्यामसित, राजतसुधर सुरंग॥

यहि प्रकार कौरवपति सेना। चलीजात उपमा कछु हैना॥
अति अगाध कछु अन्त न जाना। प्रलयसिन्धु कहिव्यासबखाना
कुरुक्षेत्र के पूरब ओरा। कौरव कटक टिका घनघोरा॥
तनवायो तहँ विपुल विताना। बजत घोर रव नौवतखाना॥
गड़े केतु दस नाना कारा। बाजत पँवरि पँवरि घरियारा॥
शिबिरशिबिरप्रतिरुवबलधामा। कीन्हेउ खानपान विश्रामा॥
दोउ नरेश बहुखनक पठायउ। ऊंच नीच महि सुढबनायउ॥
करि सब भूमिगये यहि ताका। अटकै जहां न स्यन्दन चाका॥

ऊंच नीच खनि खनकगण, कीन्हो भूमिसमान।
सबलसिंहचौहान कहि, योजन सप्त प्रमान॥

इति एकोनत्रिंश अध्यायः॥ २९॥

जनमेजय पूछत अनुरागे। पुनि मुनिकथा कहन सो लागे॥
करन हेतु कुलको संबोधन। आये व्यास जहां दुर्योधन॥
उठि प्रणाम कीन्हों तब राजा। आशिष दीन्ह रहै नृपलाजा॥
चलो धर्म बड़े तनु भारी। जीवत छुटै न बानि तुम्हारी॥
असकहि व्यास बहुत समुझावा। वंशवैर क्यहि काज बढ़ावा॥
सो अब भूप त्यागिकरि दीजै। कलह नीकनहिं सम्मतकीजै॥
देहु अंश सुनि शोष हमारी। पाण्डव सबल होइ बड़ि रारी॥
बिनकारण कीन्हों अपकारा। लै कलङ्क तुमविपिननिकारा॥
समुझि परस्पर करहु मिताई। देहु अंश नृप मिटै लड़ाई॥
व्यासकह्यो कछुचित्त न आनो।सुनतविहँसिबोला अभिमानी॥

द्रोण कर्ण भीषम प्रबल, मोहित ये धनु धारि।
देहुँ न भूमि सुनीश मैं, करौं भयङ्कर रारि॥

जो कोटिन पाण्डव दल आवैं। सब गुरु द्रोण मारि बिचलावैं॥
करैं पितामह जो करि क्रोधा। सकै रोकि रणको जगयोधा॥
अर्जुनहिं सरोष कर्ण धनुतानी। को रण बचहि महामुनिज्ञानी॥
सुनि नृप वचन जानि अभिमानी।कह्यो व्यासमुनिप्रथमकहानी
पूरब दक्षिण देश पञ्चाला। पृषद्नाम तहँ भयो भुवाला॥
बल प्रताप करि राज्य बढ़ावा। द्रुपदनाम त्यहि सुत उपजावा॥
विद्या कारण भूप पठाये। अग्निवेशके आश्रम आये॥
ऋषिके भवन बड़ो चटशारा। द्विजकुमार अरु राजकुमारा॥
भाखत देव बचनको भाखा। ताते दूरि किये नहिं राखा॥

भरद्वाज ऋषिकेर कुमारा। पढ़हिं द्रोण तहँ बुद्धि उदारा ॥
पृषद् पुत्रते परी मिताई। एकहि संग पढ़े मन लाई ॥
रखउ न बीच प्रीति अति बाढ़ी। न्रुपसुत कीन्ह प्रतिज्ञा गाढ़ी
जब पाइब हम साज समाजू। आधा बाटि देहुँ तोहि राजू ॥
यहि प्रकार बीते कछु काला। मरे पृषद भे द्रुपद भुवाला ॥
विद्या सकल द्रोण पढ़ि लीन्हा। जाइ महावन पुनि तपकीन्हा
गौतमसुता द्रोण पुनि व्याही। कृपभगिनी जानत जगताही ॥
ताके सुत भो अश्वत्थामा। जगतविदित गुण सब अभिरामा ॥

द्रोण द्रुपद भूपाल ते, सुत हित मांगी गाइ।
नहिं दीन्हो अपमानकरि, दियो तुरत दुरिआइ ॥
जानत जग समरथ हते, मुनिवर उभय प्रकार।
दियो शाप नहिं क्रोधकरि, कियो न अस्त्रप्रहार ॥

लज्जा भई द्रोण दुख पाये। नगर हस्तिनापुर चलि आये ॥
गेंद काढ़ि बालकन देखावा। सुनि भीषम निज निकट बुलावा॥
चरण परस कीन्हों सनमाना। दीन्हों धेनु धरा मणि नाना ॥
सौंपो पुनि कौरवकुल केतू। बालक सब धनु विद्या हेतू ।
अर्जुनते मानत अति प्रीती। अस्त्र सिखायो अद्भुत रीती ॥
अस्त्र सिखाय निपुण पुनि कीन्हों। भीषम जाय परीक्षा लीन्हों
वृक्ष विशाल एक वट भूपर। कृतमा भार धरा ता ऊपर ॥
पक्षि रूप करि लक्ष बनायो। भेद हेत सब शिष्य बुलायो ॥

गुरु अनुशासन मानि तब, जुरे सब इक साथ।
कटि निषङ्ग करवालकसि, चले धनुष धरि हाथ ॥

भीषम द्रोण विदुर तहँ ठाढ़े। द्रोण समीप मोद मनबाढ़े ॥
जाय प्रणाम सबन मिलि कीन्हा। चिरञ्जीवकहि आशिषदीन्ह॥
पङ्क्ति बांधि ठाढ़ गुरु कीन्हा। हनहु लक्ष यह आज्ञा दीन्हा॥
कह्यो द्रोण दुर्योधन भूपहि। देखत पुत्र पक्षिके रूपहि॥
देखत वृक्ष मोह की नाहीं। सुनियहवचनकह्योगुरु पाहीं॥
सब देखत बोले कुरुराजा। कहि ऋषि तुमते सरहि न काजा॥
पुनि मुनि धर्मराज तै पूंछा। उनकहिदीन सकलछलछूंछा॥
सब देखतहों सुनि यह बानी। सरिहि न काम महामुनिज्ञानी॥
सकल शिष्य पूंछे यहि भांती। कह्यो बातनहिंगुरुहि सोहाती॥
पुनि पूंछी मुनि अर्ज्जुन पाहीं। देखत हमहिं कहेउ उनयाहीं॥
पक्षि वृक्ष हम कछुहि न लेखत। दृष्टिलगाय तुण्डकहँ देखत॥

पार्थ वचन सुनि द्रोण गुरु, बोले गिरा प्रमान।
तुमते निसरी काज सुत, करहु विशिख सन्धान॥

सुनि अर्ज्जुन छाड़े तब बाना। कटी तुण्ड सबही सुखमाना॥
अति अनन्द भीषम उरछायो। साधुसाधु कहि कण्ठ लगायो॥
तुम सब मिलिगुरुदक्षिणादीन्हेउ। अर्ज्जुनद्रव्य द्रोणनहिंलीन्हेउ॥
द्रुपद मित्र कीन्हेउ अपमाना। लावहु बांधि देहु यह दाना॥
गुरुशासन अपने शिर धारा। नृपहि जीति चरनतर डारा॥

देखि द्रोण तब दीन छुड़ाई। गयो नरेश भवन खिसि आई॥
श्रीहत भयो तेज तनु नाहीं। नृपप्रणकीन्हों यह मनमाहीं॥
मोते वैर द्रोण उपजावा। शिष्य हाथ अपमान करावा॥
करि उत्पत्ति पुत्र बलवाना। करवावों ताको अपमाना॥
बोलि लीन बहु विप्र समाजा। कीन अरम्भ यज्ञकर राजा॥
वेद ऋचा चढ़ि विप्र अनन्ता। कीन यज्ञ पुनि वर्ष प्रयन्ता॥
ह्वै प्रसन्न सुरनायक आये। सिद्धकाज कहि भवन सिधाये॥

प्रथम प्रकट भई द्रौपदी, उपमा कहत बनै न।
धृष्टद्युम्न पुनि कुण्डते, कढ़ो पुत्र जनु मैन॥
शीश मुकुट कुण्डल कवच, लिये धनुष शरहाथ।
द्रोणनिधन हित निर्मयो, कमलयोनि कुरुनाथ॥

भीषम निधन हेतु संसारा। भयो शिखण्डीको अवतारा॥
काशिराज लै सुता सयानी। भीषम जीति स्वयम्वर आनी॥
नाम अम्बिका सब गुणरासी। अम्बानाम रूप कमलासी॥
युगल विचित्रवीर्यकहँ ब्याही। अम्बालिका न ब्याह्योताही॥
नयन सनीर गरे भरिआवा। बोली वचन शोच उपजावा॥
गङ्गासुत तुमहीं हरि आनी। मोको अब लीजै गहि पानी॥
सुनि भीषम बोले यह बानी। राजसुता तुम बात न जानी॥
मातु पिता सन कीन करारा। देखौं मैं न नयन भरि दारा॥
परशुराम जहँ पुरुष अनादी। भा मनशोक गई फिरिआदी॥

कही कथा पुनि रोदन कीन्हा। ह्वै दयालु तिन धीरज दीन्हा॥

आज्ञा भङ्ग न करि सकै, भीषम शिष्य हमार।
तोको सौंपौं पाणि गहि, यह मुनि कीन करार॥

प्रात होत मन परम अनन्दन। लै नृपसुता चले भृगुनन्दन॥
पुरी हस्तिना को चलि आये। भीषम देखि चरण शिर नाये॥
आदर ते पुनि भवन लवाये। अति पुनीत आसन वैठाये॥
अवतही ऋषि वचन सुनायो। सुनहु पुत्र जा कारण आयो॥
की याको लीजै गहि पानी। की रण रचिय कही यह वानी॥
मो सम कौन भयो जग क्षत्री। इक इस बार हने सब क्षत्री॥
कोउ कोउ बचे नारिकै बोले। सुनि सक्रोध गङ्गासुत बोले॥
क्षत्री वंश वैर भरि लैहौं। समर हराय जान तव दैहौं॥
अस्त्र शस्त्र लै रथ चढ़ि आई। कुरुक्षेत्र दोउ रचेउ लड़ाई॥

द्वन्द्वयुद्ध तहँ अति भयो, शर छूटे पुनि वास।
गुरु शिष्य सम मिलि करयो, तेइस दिन संग्राम॥

तब भीषम करि क्रोध अपारा। कठिन बाण धनु तानि प्रहारा॥
वाम पार्श्व लागेउ जब सायक। रथते विकल गिरेउ भृगुनायक॥
उठे सँभारि कीन सन्धाना। भीषमके मारे बहु बाना॥
दक्षिण पार्श्व शक्ति पुनिमारी। परेउ गङ्गसुत भूमि दुखारी॥
शक्ति घात लागी अति पीरा। सुधि न रही कछु विकलशरीरा॥
ताही समय सकल वसु आये। पाणि पकरि गांगेय उठाये॥

हौ अष्टम वसु को अवतारा। तुम पीड़ित नहिं करहु सँभारा॥
अस कहि गयो सगनसु जवहीं। रथ अरूढ़ गङ्गासुत तवहीं॥

ब्रह्म अस्त्र सन्धानि करि, कीन्हों तुरत प्रहार।
छिटको ज्योति अकाशमहँ, चले करत हुङ्कार॥

भृगुनन्दन ब्रह्मास्त्र प्रहारा। चलेउ अकाश भयो उजियारा॥
भये शिथिल आयो द्वौ धरणी। युद्धकियो करि अद्भुत करणी॥
जामदग्नि निजशक्ति प्रहारी। भयो अपार शब्द अतिभारी॥
छिटकी ज्योति चली नभ कैसे। ग्रीषम के प्रचण्ड रवि जैसे॥
लागी हृदय परत तहिं सूझी। सहि गिरिपरो सारथी जूझी॥
जोती छूटि स्ववश ह्वै वाजी। चले पलटि स्यन्दनलै भाजी॥
रथ अरूढ़ ह्वै रूप करि गङ्गा। गही वांह लै फिरे तुरंगा॥
होइहि विजय पुत्र सुनि लीजै। ह्वै निश्चिन्त युद्ध अब कीजै॥
यह कहिकै स्यंदन पलटाई। भृगुनन्दनके सन्मुख लाई॥
चतुर्विंश दिन युद्ध महाना। अब नृप कहौं सुनौ दै काना॥
देव अस्त्र दोउ करैं प्रहारा। करहिं निवारण विविध प्रकारा॥
नारायण शर भीषम लीन्हा। पढ़िकै मन्त्र फोंकपर दीन्हा॥
तब सकोप भृगुराम होइ, लीन्हों पशुपति वान।
अति लाघव द्रग अरुणकरि, कीन्हों धनुष सँधान॥
छिटकी ज्योति भयो उजियारा। नभ पथ चलैं करत फुंकारा॥
अस्त्र अस्त्रते भयो निवारण। तब लागेउ तीक्ष्णशर मारण॥

नील बाण भीषम फटकारा। भृगुपतिके मस्तकमहँ मारा॥
रहेउ न धीर भई अतिपीरा। गिरे भूमि नहिं चेत शरीरा॥
भीषम देखि बहुत पछिताने। धाये उतरि छत्र फिर ताने॥
कहत न बनै नयन जलबाढ़े। मुखपर छत्र छाहँ किय ठाढ़े॥
उठहु न नाथ गङ्गसुत बोले। सुनि भृगुराम युगल दृगखोले॥
देखि भयो भृगुकुल अवतंसा। भीषम कहँ बहुवार प्रशंसा॥
तुम सम कोउ गुरुभक्त न आना। अब सुत मांगि लेहु वरदाना॥
माँगत हौं माँगे यह दीजै। रथ चढ़ि लड़हु कृपापुनि कीजै॥

परशुराम अरु गङ्गसुत, चढ़े रथन पर जाइ।
धनुषबाण पुनि करगहे, निज निज शङ्ख बजाइ॥

त्यहि अवसर मरीचि ऋषि आये। गहि कर परशुराम समुझाये॥
अब तुम तात तजो यह काजै। शिष्य पुत्र ते नीक पराजै॥
भीषमते बोले ऋषि राजा। गुरुते रण जीते बड़ि लाजा॥
तातें युद्ध त्याग करि दीजै। है मत नीक भवनमग लीजै॥
सुनि शुभ गिरा गङ्गसुत बोले। कहे नाथ तुम वचन अमोले॥
क्षत्री समर विमुख होजाई। लोक अयश परलोक नशाई॥
तातें मैं प्रभु प्रथम न जैहौं। अपने कुलहि कलङ्क न लैहौं॥
परशराम हैं हरि अवतारा। जीते भूमि भूप बहु बारा॥
अर्जुन भुज गहि पाणि कुठारा। काटे सुयश विदित संसारा॥
यकइसबार भूप बिन कीन्हो। धरा सकल विप्रनकहँ दीन्हो॥

तातै प्रथमहिं नाथ तुम, उनहिं देउ पलटाय ।
तबलगि मैं नहिं रण तजों, कीन्हें कोटि उपाय ॥
असकहि मौन गङ्गसुत भयऊ । पुनिमुनिपरशुरामपहँ गयऊ ॥
गहि जोतीकर वाजि फिरायो । बहुतुभाय स्यन्दन पलटायो ॥
चले निरखि भृगुनन्दन जाना । हर्षि गङ्गसुत कीन्ह पयाना ॥
विनय वचन बहुभांति सुनाये । करिप्रणाम अपने थल आये ॥
ह्वै निराश तब राजकिशोरी । चिता बनायो काठ बटोरी ॥
सुरसरिनिकट माँगिवर लीन्हा । भीषम निधनहेतु प्रणकीन्हा ॥
जरी नारि करि बुद्धि प्रचण्डी । द्रुपदपुत्त सोइ भयोशिखण्डी ॥
कर्ण निधनहित सुनहु भुवारा । है जग पारथ को अवतारा ॥
तुम्हरी मीचु भीमके हाथा । है निश्चय जानहु कुरुनाथा ॥

मृषा होय नहिं तुव वचन, जानि परी अब सोय ।
भावी कीन्यउ यतनतै, मेटि सकै नहिं कोय ॥
तुम जानत भवितव्यता, कह नृप बारहिं बार ।
करब युद्ध होइहि सोई, जोविधि लिखा लिलार ॥

सुनत व्यास उठि कीन्ह पयाना । भावी चित्तप्रबल हम जाना ॥
सुमिरत मन हरि ध्यानलगाये । नगर हस्तिनापुर चलिआये ॥
धृतराष्ट्रक आदर करि लीन्हा । दण्डप्रणाम बार बहु कीन्हा ॥
गहि पद भूप व्यास तै बूझा । होइहि सम्मतिको अब जूझा ॥
कह मुनि होइहि विकल लराई । बोल्यो राउ बहुरि शिरनाई ॥

मैं जानौ जेहि सब संग्रामा। करि उपायसोइ सेव्य अकामा॥
दिव्य दृष्टि सञ्जय कहँ दीन्हा। ये कहिहैं तुमते रण चीन्हा॥
जो होइ संग्राम तमासा। असकहि गये विपिन ऋषिव्यासा॥

वैशम्पायन कर चरित, समझायो सब भूप।
सबलसिंह चौहानकह, निज बलके अनुरूप॥

इति त्रिंश अध्याय॥ ३०॥

कह मुनि जनमेजय सुनहु, निज कुलके गुणगाथ।
बोलि सकल मन्त्री निकट, करत मन्त्र कुरुनाथ॥
कहहु सचिव का करिय विचारा। वैरी धर्मराज बरिआरा॥
लागत हमें सकलमत फीका। शकुनी कह्यो मन्त्र अवनीका॥
देहु मन्त्र कर्ण पुनि दीन्हा। चहिये शत्रु सङ्ग रणकीन्हा॥
भूरिश्रवा द्रोण मन भायउ। सबन बैठि दृढ़ मन्त्र ठहायउ॥
उहां कृष्ण लै सकल समाजा। अर्ज्जुन भीम धर्मसुत राजा॥
द्रुपद विराट आदि भट भारी। पूंछत सबहि मन्त्र बनवारी॥
बुद्धिमान हो तुम सब भूपा। कहोमन्त्र निज निज अनुरूपा॥
तब उमि कहेउ विराट भुआरा। सुनहु मन्त्र वसुदेव कुमारा॥
और विचार कौन यहि नाहीं। विना युद्ध मिलिहै महि नाहीं॥
कहो द्रुपद नरनाह तब, सुनिये यौव्रजराज।
और विचार न कीजिये, करहु युद्धकर साज॥

कहौ सात्यकौसुनियै सोमति । मिलिहिनभूमिसुद्धविनुयदुपति॥
ताते कौजै अवशि लराई । शत्रु जीति महिलेव छुड़ाई॥
नौक मन्त्र सात्यकौ विचारा । कह्यो नकुल यह वारहिं वारा॥
कुन्तौ कह्यो मन्त्र सुनि लीजै । करिअरिनिधनराज्यनिजकीजै॥
हैं यदुनाथ सहायक तोरे । ह्वै है विजय पुत्र मत मोरे॥
सहदेवहु दीन्हों मत एहा । कीजै रण त्यागो सन्देहा॥
धर्म्मराज कीन्हैं रण करणी । जीतौ शत्रु मिलै निजधरणी॥
दुर्योधन कीन्हों अभिमाना । समुझायों हरि वात न माना॥
बिना युद्ध कैसे महि देहै । अब न्रृप त्याग करौ सन्देहै॥

भीमसेन यहि विधि कहेउ, विहँसि कृष्णते वैन ।
बिना युद्ध नहिं महि मिलै, पीतम पङ्कज नैन॥

अब देख्यो पुरुषारथ मोरा । करिहौं वहुत कहतहौं घोरा॥
सम्मुख दुर्योधन सन लड़ऊं । रुण्डमुण्डमय मेदिनि करऊं॥
सुनहु भूप कौरव बिन मारे । नहिं आवहि सन्तोष हमारे॥
दुर्योधन जीतौं रण माहीं । कृष्णकृपा कछु निजवल नाहीं॥
ताते और विचार न करहू । अब भय त्यागि भूप तुम लरहू॥
कह्यउ शिखण्डी सुनहु नरेशा । करहुयुद्ध सब छांड़ि अँदेशा॥
भीषम युद्ध भयउ शिर हमरे । करिहौं निधनविजयहिततुम्हरे॥
धृष्टद्युम्न बोले त्यहि काला । करहुयुद्ध जनि डरहु भुवाला॥
मैं आड़ौं अब द्रोण लड़ाई । मारौं करौं महा प्रभुताई॥

काशिराज दीन्ह मंत येहा। लड़हु नरेश तजहु सन्देहा ॥
भये सहायक श्री वनवारी। निश्चय विजय न हारि तुम्हारी ॥

धर्म्मराज बोले विहँसि, सुनिये दीनदयाल।
जाके शिर तुव करकमल, ताहि न जीते काल ॥

दुर्योधन प्रभु कीन्ह कुकर्म्मा। छाँड़े लोकलाज अरु धर्म्मा ॥
तृण समान तिहुँ लोकहि जानी। कीन्हेसि नग्न द्रौपदी रानी ॥
बढ़हि पाप मारे रण भाई। मत मोरे नहि नीकि लड़ाई ॥
मन्त्र हमार नाथ सुनि लीजै। कीजै सन्धि युद्ध जनि कीजै ॥
कीजै निधन यदपि अपराधी। जो नहि बांटि देय महि आधी॥
फाकत अधर द्रौपदी बोली। हे हरि धर्म्मराज मति डोली ॥
क्षत्रिधर्म्म सब दीन्ह गँवाई। है नृप निलज लाज नहिं आई ॥
कहिबे को हमरे पति पांचा। पति न रही सुनिये प्रभु सांचा॥
विधवा भली विना पति नारी। पतिन जियत गइ लाज हमारी
येइ पति पतित रहे शिरनाई। पकरेउ केश दुःशासन धाई ॥
बार बार तुव नाम पुकारी। वसन पैठि प्रभु लाज उबारी ॥
अस कहि तुरत द्रौपदी रानी। बहेउ नीर दृग अति अकुलानी ॥

बोले पारथ रोष करि, तुव प्रसाद यदुनाथ।
करौं अकौरव भूमि नहिं, तौन छुवौं धनुहाथ ॥

प्रभुपद शपथ धनुष जब धरिहौं। कौर समान कर्णकह मरिहौं॥
सुनि के वचन वीरता आनी। रही चुपाय द्रौपदी रानीं ॥

तब हरि धर्म्मराज सन बोले। मधुर हास श्रुति कुण्डल डोले ॥
मैं सहाय प्रभु धीर न आनत। अजहूं दुर्योधन भय मानत ॥
तजहु नृपति सब संशय शोका। हौरण अजय को जीतैं तोका ॥
है नरेश कादर मन तोरा। होत न धीर वचन सुनु मोरा ॥
कुरुदल देखत चित्त डराने। तौ कत प्रथम युद्ध तुम ठाने ॥
करहु चित्त दृढ़ रहहु पोढ़ाने। मिलहि न भूमि भूप कदराने ॥
मांगे भीख धरा जो पावहि। तौ दीनहुँ भूपाल कहावहि ॥
अब ह्वै निडर अस्त्र कर लीजे। करि अरिनाश राज्य नृप कीजै

क्षत्री समर सकाइ तौ, जगत हँसाई होइ।
ह्वै निशङ्क अरिते लड़े, शूर कहावै सोइ ॥

क्षत्री समर पराभव पावै। लोक अयश परलोक नशावै ॥
सन्मुख लड़हु छाँड़ि सब लोभा। तनु परिहरे होत कुलशोभा ॥
तुम नृप क्षत्री धर्म्म न जानत। ताते युद्ध करत भय मानत ॥
भोगी वीर धरा को नामा। करिहिं भोग जे नृप दलधामा ॥
जे नृप क्रूर तजहिं कदराई। छिलहिन महि तेहि आनदपाई ॥
ताते नृपति त्यागि सन्देहू। ह्वै निशङ्क कर आयुध लेहू ॥
सम्मुख दुर्योधन सँग लड़हू। क्षत्रीधर्म्म प्रकट अब करहू ॥
पुनि हँसि कह्यो द्रौपदी रानी। हे नृप सुनहु कृष्ण की बानी ॥
भय छाँड़हु अब रचहु लड़ाई। सुनि मम वचन तजहु कदराई
भरत वंश भये भूप अनेका। शूर समर्थ एकते एका ।

होइ जो मेरु समान अरि, कृष्ण अवलोकित दीठि।
महावीर अरु धीर धर, कालहु देत न पीठि॥

की अब बुद्धिभ्रष्ट तुव भयऊ। की वह विजय पलट होइ गयऊ॥
जो न करहु तुम युद्ध नरेशा। आयुध छोड़ि धरहु लियभेशा॥
धर्मराज पुनि लज्जा पायो। अरुननयन करि वचन सुनायो॥
बोलत नारि न वचन सँभारे। लड़हुँ शत्रुसन टरहुँ न टारे॥
मेरे श्री व्रजराज सहायक। सकै न जीति युद्ध कुरुनायक॥
धीरज धरहु आजु निशिवीते। करिहौं युद्ध नारि सब हीते॥
अपनो करो नीच फल पैहै। है पापी कौरव मरि जैहै॥
कृष्ण देवकी सीख न मानी। उनकी मृत्यु आइ नियरानी॥

दुर्योधनके उर बढ़ेउ, द्रुपदसुता अभिमान।
गर्वप्रहारी हरि विदित, मरे सकल अरि जान॥

प्रभु की कृपा परिश्रम थोरे। ह्वैहैं निधन सकल रिपु मोरे॥
कहत असत्य वचन नहिं तोसे। सदा रहत मैं कृष्ण भरोसे॥
हरिकी कृपा सफल सब काजा। अस कहि भयो मौनमुख राजा॥
हँसत वचन बोल्यउ वनवारी। सुनहु बात भूपाल हमारी॥
अब नरेश छाँड़हु सन्देहा। कीजै युद्ध सत्य मत एहा॥
वचन हमार मृषा जनि मानहु। होइहै विजय सत्य नृप जानहु॥
करिहौं मैं होई यश तोरा। शरणागत पालक प्रण मोरा॥
हो नरेश अब शरण हमारे। करहुँ सफल सब काज तुम्हारे॥

मनसा वाचा कर्म्मणा, करहुँ तुम्हारो काज ।
अभय होहु नरनाह अब, तुमहिं देहुँ सबराज ॥
उचित सकल सामर्थकहँ, शरणागत प्रतिपाल ।
तदपि मोरि वाणी विदित, धर्म्मराज तिहुँकाल ॥
करौं अकौरव भूमि सब, छत्र धरौं तव शीश ।
बचै न खल शङ्कर शपथ, शपथशिवा अज ईश ॥
भयो मुदितमन धर्म्मसुत, सुनि हरि गिरा प्रमान ।
भणितपर्व्व उद्योग इमि, सबलसिंह चौहान ॥

इति एकत्रिंश अध्याय ॥ ३१ ॥

इति उद्योग पर्व्व समाप्त ।

महाभारत।

भीष्म पर्व्व।

गुरु गोविन्दके चरण मनैये। ज्यहि प्रसाद उत्तमगति पैये॥
कै प्रणाम रघुपतिके पाँयन। चारिवेद जाके गुण गायन॥
अवधनाथ सीतापति सुन्दर। दीनबन्धु रघुवंश पुरन्दर॥
शिव सनकादिक अन्त न पावैं। नरमुखते केहिविधि यशगावैं॥
शुक शारद नारदसे पाठक। हनूमान गावैं गुण नाटक॥
वाल्मीकि रामायण करता। राम चरित्त पापको हरता॥
अष्टादश पुराण औ भारथ। भाष्यो व्यास ज्ञान पुरुषारथ॥

पाराशरते जन्म है, व्यासदेव ऋषिराज।
या मुख भारत प्रकट भो, कविकुलको शिरताज॥

गरु गणेश शारदके पाँयन। करौं प्रणाम होहु सुखदायन॥
महिमा निगम कहत नहिं आवै। शेष सहसमुखते गुणगावै॥
संवत सत्रह सै अट्ठारहि। पूनोतिथि मंगलके वारहि॥

माघ मास में कथा विचारी। औरंगशाह दिलीपति भारी॥
सब पुराण पारायण भारथ। यामहँ कुरुपाण्डव पुरुषारथ॥
व्यासदेव भुविभार निवारण। भारत रच्यो जगतके तारण॥

योग युद्ध रस मन्त्रणा, भारतमांह है सर्व।
सबलसिंहचौहान कह, भाषा भीषमपर्व॥

वैशम्पायन बोले बानी। अपरकथा सुनु नृप सज्ञानी॥
नृपति युधिष्ठिर कृष्ण पठाये। पाँच ग्राम माँगन प्रभु आये॥
दुर्योधन सुनिकै हठ गहेऊ। सूजी अग्र देन नहिं कहेऊ॥
कहि हरि चले छौनि सब लेहैं। अर्ज्जुन भीम शाक तब देहैं॥
गयो आपु जहँ धर्म नरेशौ। दूतकी कथा कही सब केशौ॥
माँगे पाँच ग्राम नहिं पाये। गर्व वचन कुरुनाथ सुनाये॥
हितकी बात छाड़ि सब दीजै। पहिरि सनाह युद्ध अब कीजै॥
सुनत युधिष्ठिर शंका मान्यो। विग्रह भयो अवशि मैं जान्यो॥
अहो कृष्ण संतन सुखदायक। हम नहिं युद्धकरनके लायक॥

भीषम द्रोणरु कर्ण कृप, लक्ष छत्रधर साथ।
तासों संगर खेत चढ़ि, किमि जीतहिं यदुनाथ॥

कह्यो कृष्ण पाण्डवसुत आगे। अपनो राज देत को माँगे॥
साहस कै रणको मन लैये। मारिहि रिपुहि देश तब पैये॥
द्रुपद विराट आदि क्षत्रियगन। हम सारथि पारथके स्यन्दन॥
अर्ज्जुन भीम देहु रणको मन। जीतहु युद्ध कही जगवन्दन॥
अर्ज्जुन कही युधिष्ठिर राजहि। अब विलंब कीजै केहि काजहि॥

भीमसेन यहि भाँति वखानेउ। कृष्ण कही मेरे मन मानेउ॥
कीजै युद्ध भयानक भारथ। अब देखौ मेरो पुरुषारथ॥
दुर्योधन सौ बन्धु सँहारौं। भीषम कर्ण खेत चढ़ि मारौं॥
आपु सहाय जगतके तारण। शोच नरेश करौ केहि कारण॥

सभा मध्य रच्छाकरी, द्रुपदसुताकी लाज।
कौरवदल तृणसम गनौ, जो सहाय व्रजराज॥

नृपति युधिष्ठिर आनन्दितमन। साजहु सैन कहेउ माधवसन॥
नृपकी आज्ञा श्रीहरि पायो। साजत सैन बिलम्ब न लायो॥
द्रुपद विराट शंख रथ साजे। पहिरि सनाह सिंहसम गाजे॥
धृष्टद्युम्न रथपर चढ़ि आयो। जाकेशिर हरि मुकुट बँधायो॥
कञ्चन रथ सहदेव सुहाये। तेज तुरङ्ग नकुल चढ़ि आये॥
लोह चक्र जो हरि निर्मायो। भीमसेन चढ़ि शोभा पायो॥
पहिरि सनाह खड़ग कटि बाँधे। गदा लिये कर शारँगकाँधे॥
कालरूप सम भीम भयङ्कर। प्रलयकालमहँ जैसे शङ्कर॥
चढ़े सात्यकी उत्तम स्यन्दन। अभिमनु चढ़े सुभद्रानन्दन॥
शूरसेन चढ़ि नृपति छत्रधर। जरासन्धसुत चल्यो धनुर्द्धर॥
धृष्टकेतु कीन्हीं असवारी। काशीराज महाबल भारी॥
पञ्चकुमार द्रौपदी जाये। हर्षित चले सुवेष बनाये॥
चले शिखण्डी रणके शूरा। साजे सैन महाबल पूरा॥

हीरामणि चामर लगे, श्वेत वरण गजराज।
दण्डछत्रधरि शीशपर, कियो युधिष्ठिर साज॥

कञ्चन मणिमय बनी अमारी। तेहिपरन्तपतिकीन्ह असवारी॥
पारथकहँ यदुनाथ बनायो। निज कर ले सनाह पहिरायो॥
मणिमयकुण्डलमुकुटविराजत। बाँधे अस्त्र मनोहर छाजत॥
करगहि धनुष बाण बहु साजैं। अच्चय तोण देखि रिपुभाजैं॥
नन्दिघोषरथकीन्हेउमखण्डित। शोभानिरखिहोतरिपुखण्डित॥
औ अनेक कुञ्जर हैं माते। दन्त विशाल क्रोधते ताते॥
तिनके नयन परी अँधियारी। ठाढ़े जो हालत बल भारी॥
लीला चारि तुरङ्ग लगायो। जाको वेग पवन नहिं पायो॥
हनूमान ध्वज ऊपर आयो। ज्यहि बलसे सबलंक छुड़ायो॥
कृष्णचरणकीन्हेउ तब बन्दन। पारथ जाइ चढ़े निजस्यन्दन॥
श्रीहरि निरखिबहुत सुखपायो। आपु सारथी वेष बनायो॥

आपु कृष्ण जोती गहेउ, अर्ज्जुन पुलकित गात।
हाँकत हय हिय हर्ष ते, पीताम्बर फहरात॥

पाँचौ बन्धु करी असवारी। कुन्ती तब आरती उतारी॥
भाँतिअनेकशकुनशुभकीन्हेउ। सुतनसौंपि हरिके करदीन्हेउ॥
मम अनाथके पांचौ बालक। प्रभुरणमें कीन्हेउ प्रतिपालक॥
कही कृष्ण तुम भवनसिधारहु। जयहोइहिजियशोच निवारहु॥
यह कहि गमनआएहरिकीन्हों। आनन्दित शंखध्वनि कीन्हों॥
गजपर सरस दमामें बोलत। शब्दअघात शेषशिर डोलत॥
ढाक ढोल औ भेरी बाजत। सहनाईमें माङ्ग राजत॥
करिकै वस्त्र चले तब राजन। अरु अघात बाजे बहुबाजन।

सप्त चौहिणी सन सँवारी। चालिससहस छत्रके धारी॥
तीनि कोटि कुञ्जर मतवारे। पञ्च कोटि रथ सरस सँवारे॥
बीस कोटि असवार महाबल। तीसकोटि सब लेखौ पैदल॥

कुरुक्षेत्र आये सकल, जहाँ युद्ध को ठाट।
विप्र वेद ध्वनि पढ़त हैं, बोलत मागध भाट॥

कब यह कथा चली शुभ आगे। कुरुपति साजकरन दललागे॥
भीषम द्रोण कर्ण कृप आये। भूरिश्रवा वृषसेन सुहाये॥
सोमदत्त कृतवर्मा अली। बाहुलीक अश्वथामा चली॥
है भगदत्त नृपतिको साथी। योजन पांच तासुको हाथी॥
चले अलम्बुष दानवराज़न। शकुनी शल्य कियो रणकोमन॥
औ शशिबिन्दु नरेश महाबल। चले कलिंगलिये कुंजरदल॥
हैं नवलाख महाबल हाथी। सौ बान्धव कलिंगके साथी॥
आये मगन महाबल भारी। तेज तुरङ्ग करी असवारी॥
तब सारथि नृप रथ लैआये। कञ्चनके चाके निर्माये॥
गजमुक्ता को झालरि सोहै। मानुष कह शंकर मन मोहै॥
लाल प्रवाल जड़ित बहु मणी। जगमगात हीरनकी कणी॥
आनि तुरङ्ग तेज रथ जोरे। पवन वेग रङ्ग चारिउ बोरे॥
चढ़े साजि दुर्योधन नीके। सम्पति देखि इन्द्र मन फीके॥

दुःशासन रथ साजियो, सौ भाइन लै साथ।
साठिसहसनृप छत्रधर, चढ़े साजि कुरुनाथ॥

औ अनेक कुञ्जर हैं माते। दन्त विशाल क्रोध ते ताते॥
तिनके नयन परीं अँधियारी। ठाढ़े जो हालत बल भारी॥
कञ्चनरथ अति दिव्य अनूपा। जाहि देखि मोहत सुर भूपा॥
दिव्य अनूपम झालर सोहै। गजमुक्ता देखन मन मोहै॥
उन्नत ध्वजा अनूपम सुन्दर। देखत शोचनलाग पुरन्दर॥
रथको ठाट भूमि सबमण्डित। हयपदाति धाये रणपण्डित॥
कुरुसागरकै व्यास बखानेउ। अतिअघातकोउअंतनजानेउ॥
भानुमती आरति लै आयो। कियोशकुनशुभमङ्गलगायो॥
भयो बम्ब बैरख फहराने। प्रलयकाल जनु घनघहराने॥
धूरिधुन्धि महँ रवि नहिं सूझैं। ध्वजघनसघन पवन आरूझैं॥
डोली अनी शेष शिर धाकेउ। भूमि चली पर्वत सब कांपेउ॥

दशन वराहन दृढ़ रहे, दबी कमठकी पीठि।
दिग्गजकरहिंचिकारसब, दिगपतिचकितदीठि॥

कुरुक्षेत्र कौरवपति आये। तब भीषम कछु वचन सुनाये॥
द्रोण आपु शारँग कर गहिये। सावधान होइ रणमें रहिये॥
भीषम द्रोण युधिष्ठिर देखेउ। सबआगे अचरजकरि लेखेउ॥
नृप मनमहँ तब मन्त्रविचारी। तुरत तजी गजकी असवारी॥
आपु पयादे चले नरेशू। अर्जुनकह देखिय हृषिकेशू॥
शत्रुसेन मों कीन्हेउ गमनहि। आनन्दित जैसे चल भवनहिं॥
जो कुरुनाथ बांधि कै राखै। कीजै कहा भीम यह भाखै॥

जौन बुद्धि के पांसा खेले। वहै बुद्धि कै चले अकेले ॥
बिन आज्ञा कैसे सग जैये। बिना गये पाछे पछितैये ॥
कही कृष्ण अब चुपकरि रहिये। नृपकोकठिनकथानहिंकहिये ॥
धर्मराज धर्म हित जानत। शत्रु मित्र समताकरि मानत ॥
यामों यहै मन्त्र को कारण। कहौआपु यह त्रासनिवारण ॥
सब सेनामिलि थिरह्वै रहिये। देखहु खड़े कछु नहिं कहिये ॥

कुरुदल सब चकित भये, कहैं परस्पर बैन।
मिलो बिचारो दीन ह्वै देखिभयानकसैन ॥

आपु युधिष्ठिर भीषम दरषो। छाँड़ो रथ गंगासुत हरषो ॥
आतुर चरण बन्द तब कीन्हों। हसिभीषमअंकमभरिलीन्हों ॥
सदा होहि कल्याण तुम्हारो। जीतहु युद्ध शत्रु संहारो ॥
धर्मराज यहि भाँति बखानत। हम तो तुमहिं पाण्डुकै मानत ॥
पूर्व जबहिं हम थे सब बालक। तबतुमहीं कीन्हों प्रतिपालक ॥
कपटपांस करि बनहिं पठाये। तेरह वर्ष महा दुख पाये ॥
राज लियो दुर्य्योधन भाई। पंच ग्राम मागे नहिं पाई ॥
आपु युद्ध करिबे चित दीन्हों। तौ सब ठाट वृथा हम कीन्हों ॥
तुमते परशुराम रण हारे। तेहि समान हम कहा बिचारे ॥
एक भरोसो मन में आयो। जयहोइहै तुव आशिष पायो ॥
हँसि गांगेय कहन असलागे। बड़े साधु तुम परम सभागे ॥
जहाँ धर्म्म तहँ कृष्ण बिराजै। जहाँ कृष्ण तहँई जय छाजै ॥

धर्म भरोसे धर्म्म बल, धर्म भोगियो राज ।
सबलसिंहचौहानकहि, धर्महितेशुभकाज ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

आइ द्रोण पद परशन कीन्हों । आनन्दित ह्वै आशिषदीन्हों ॥
नृपति होइ कल्याण तुम्हारो । अपनो शत्रु खेत मों मारो ॥
नृपति युधिष्ठिर आपु बखाने । तुमगुरुद्रोण जगत सब जाने ॥
जो आपन शारँग कर धरिये । तीन लोक च्नणमें वशकरिये ॥
जो तुम युद्ध विषे मन लाउब । तब कैसे कै हम जय पाउब ॥
हँसिकह द्रोण युधिष्ठिर आगे । मधुर वचनकहिबे कछुलागे ॥
अहो नृपति सन्तन हितकारी । तोरे सदा सहाय मुरारी ॥
कोटिन द्रोण अस्त्र गहि आवैं । चक्रपाणिसों,जय नहिं पावैं ॥
जाके सदा सहायक केशौ । ताके जयको कौन अँदेशौ ॥

जय ह्वै है तुव सर्वदा, सुनहु पांडुके नन्द ।
जाके पारथसे रथी, औ सारथि जगवन्द ॥

कृपाचार्य्य पद वन्दन कीन्हों । जयतिपत्रको आशिष दीन्हों ॥
भीषम द्रोण कही यह बानी । जीते युद्ध युधिष्टिर जानी ॥
कीन्ह प्रणाम चले पुनि आगे । धर्म पुकार पुकारन लागे ॥
यहि दल में जेहि जीवन भावै । तुरत कृष्ण शरणागत आवै ॥
सुनि युयुत्सु, चलिआयो आगे । नृपसों वचन कहन असलागे ॥
अहो धर्म्मसुत शरण तुम्हारी । चलो जाइ दरशों बनवारी ।

न्टप युयुत्सु रथ चढ़िके लीन्हों । तुरत आपनो दलशुभ कीन्हों॥
गयो युयुत्सु पाण्डसुत संगहि । सुनि कुरुनाथ भयोमनभंगहि॥
रथते उतरि तुरत चलिआयो । भीषमते यहि भाँति सुनायो ॥
हो सेनापति सबके रक्षक । गयो युयुत्सु तुम्हैं परतक्षक ॥

धर्म्मपुत्त दूत आइकै, कीन्हों कहा विचार ।
लक्ष सैन सग लै गयो, तुम दलके सरदार ॥

भीषम कहो सुनहु हो राजन । आये हमहिं वन्दिवे काजन ॥
कादर है युयुत्सु शरणागत । हम मारैं नहिं देखत भागत ॥
अब यह शोच चित्तनहिं कीजै । सावधान रणको मन दीजै ॥
भृगुपति सप्तदिवस रणकीन्हों । तिनते जयतिपत्र हम लीन्हों॥
सुरअरुअसुरन्टपतिरणमारयो । जीति स्वयम्बर बन्धु विवाह्यो ॥
पाण्डवसुतके कृष्णसहायक । तेऊ नहिं मेरे रण लायक ॥
प्रण राखों हरिको प्रण टारों । नितक्रम दशसहस्ररथि मारों ॥
सुनि दुर्योधन आनन्दित मन । हर्षि वचन भाष्यो भीषमसन ॥
अष्टादश चौहिणि दल दोऊ । एकै रथ चढ़ि जीतै कोऊ ॥
कह भीषम जो तेज सँभारों । एक दिवस दोऊ दल मारों ॥
द्रोण कोपि जो शर संधान । तीनि दिवसमें करै निदानै ॥
कर्ण पांच दिन जो रण रचै । दोऊ दल में कोउ न वचै ॥

द्रोणी तीनै दण्डमें, दोउदल करै निदान ।
पल लागन अर्ज्जुन वधै, कुवै न दूजो वान ॥

दुर्योधन सुनि मौनहिं गहेऊ। विस्मय भयो मान नहिं रहेऊ ॥
जो तुम अर्ज्जुन जानत ऐसे। रणमें जय तुम करिहौ कैसे ॥
भीषम कह कौरवदलनाथहि। दशदिनकेर भार ममसाथहि ॥
अपनो कटक करों सब रक्षक। पाण्डव दल मारौं परतक्षक ॥
सुनि दुर्योधन आनँद पायो। अपने दलहि युधिष्ठिर आयो ॥
लै युयुत्सु हरि पायन डारे। अहो कृष्ण यह शरण तुम्हारे ॥
जैसे हमहैं पांचौ भाई। तेहि समान जानो यदुराई ॥
कहो कृष्ण शुभहोहि तुम्हारो। सावधान ह्वै युद्ध विचारो ॥
धर्मराज कीन्हों असवारी। श्वेत गयन्द महावल धारी ॥

सिंहनाद वीरन करयो, भयो भयानक शोर।
दशौ दिशा पूरित भई, ज्यों घमरे घन घोर ॥

पारथकही सुनहु जगवन्दन। द्वौदल मध्य राखिये स्यन्दन ॥
सुनिकै कृष्ण हांकि रथदीन्हों। मध्य भूमिलै ठाढ़ो कीन्हों ॥
पारथ आनि सबहिदिशि देखेउ। सबके अग्र पितामह लेखेउ ॥
श्वेत वर्ण रथ सरस सुहायो। श्वेत वर्ण तनु शोभापायो ॥
श्वेत धनुष श्वेतै गुण जोरे। श्वेत वर्ण हैं चारिउ घोरे ॥
गुरू द्रोण रथ श्याम सुहायो। श्याम वर्ण घोड़े छविपायो ॥
कृपाचार्यको अर्ज्जुन देख्यो। मनमहँ अतिविस्मयकरिलेख्यो ॥
देख्यो दुर्योधन सौ भाई। धवल छत्र शिर शोभापाई ॥
सिन्धुराज देख्यो वहनोई। मामा शल्य जान सब कोई ॥

गुरू पितामह बन्धु सुत, देख्यो सब परिवार।
इन्हें मारि जय का करौं, दीन्हो धनु शर डार॥
कहो कृष्ण पारथ सुनि लीजै। क्षत्रियधर्म त्याग नहिं कीजै॥
रण देखे क्षत्रिय जो डरहीं। अन्तकाल सो नरकहि परहीं॥
प्रथम क्रोधकरि रणमें आयहु। अब यह ज्ञान कहांते पायहु॥
गहहु अस्त्र कर युद्ध सवाँरहु। छाँड़हु शोच शत्रु संहारहु॥
बालक युवा वृद्धता आवै। अन्त मृत्यु सब प्राणी पावै॥
यामें कोउ नहिं काहुहि मारहि जो सिरजै सोई संहारहि॥
कालवश्यहै सब संसारा। यामें कछुनहिं दोष तुम्हारा॥
क्षत्रियको साहस ते कामहिं। कीजै युद्ध होइ यश जामहिं॥
दान मरण रण शूरता, क्षत्रिय धर्म प्रमान।
पारथ अस्त्रहि गहो कहि, सबलसिंह चौहान॥
इति द्वितीय अध्याय॥२॥

अर्जुन कहेउ सुनहु जगतारण। गोत्र वधन कीजे केहिकारण॥
वाढ़ै पाप पुण्य सब नाशहि। पावों अन्त अधोगति वासहि॥
गुरु परिवार वधौं केहि काजहि। जैहौं वनहिं छाड़िकै राजहि॥
अर्जुन को माधव समुझायो। चारि वेद को सार सुनायो॥
मातु पिता सुत बन्धु कहावै। अन्तकाल नहिं साथ सिधावै॥
अपनो धर्म कर्म पै साथी। सुख सम्पति झूठो सबसाथी॥
जो वन जाय तपस्या करिहो। अन्त भये जगमें अवतरिहो॥

दान अनेक यज्ञ जो करहीं। स्वर्ग भोगकरि महिअवतरहीं॥
ताते जन्म मरण नहिं छूटै। अचल न होहिं कोटि शतकूटै॥
पुण्य पाप दोऊ जब नाशहि। तब पावहि मेरे पुर वासहि॥

पुण्य पाप बांधो जगत, को काटन समरत्थ।
निर्मल ज्ञान विवेकता, कै मन अपने हत्थ॥

मन भो भुक्ति मुक्ति नर पावै। मनके चले कर्म गति आवै॥
सब इन्द्रिन मोहै मननायक। बंधन मुक्ति देन के लायक॥
जाके हृदय दयाको वासहि। ताके धर्म्म सदा परकाशहि॥
जहं लगि जीव जगतमें अहई। सबके हृदय वास मम रहई॥
नदिन मध्य गङ्गा कहं जानहु। तरुन मध्य अश्वत्थ बखानहु॥
ब्रह्मऋषिनमें नारद जानहु। कपिलदेव सिद्धन मो मानहु॥
गजन माहिं ऐरावत देखौ। उच्चैःश्रव हयमध्य विशेखौ॥
सामवेद वेदन महं गनई। साधुनमें शङ्कर सब भनई॥
नरन माहिं राजाकै राखित। देवन माहिं इन्द्र मम भाषित॥
सर्पन मध्य वासुकी कहिये। नागनमहं अनन्त मों रहिये॥

ग्रहन माहिं रवि हम अहैं, तेज अग्नि मो जान।
नारिन महं रम्भा अहैं, गुण सात्यकी प्रमान॥

चारिवर्ण महं जो अवतरिहौ। जो कुलधर्म्म सोई सब करिहौ॥
ताते कर्म्म लागि सब करिये। केवल नाम हमारे धरिये॥
कहौ कहां लगि ज्ञान बुझावैं। मृतक नैन सब नैन दिखावैं॥
पारथ कहौ सुनहु हो केशौ। नयनलखौं तौ मिटै अंदेशौ॥

दिव्य दृष्टि अर्ज्जुन तब पायो । मुखमें सब ब्रह्माण्ड दिखायो ॥
मेघावर्ण शीश आकाशहि । रविशशि नयन किये परकाशहि ॥
मुख भो अग्नि शारदा रसना । कन्ध रुद्र तारागण दशना ॥
इन्द्रबाहु ब्रह्मा हिय सोहेउ । नाभी सिंधु देखि मन मोहेउ ॥
पृष्ठ अष्ट वसु शोभा पायो । जंघदशो दिशिपाल सुहायो ॥
चरण विष्णु रोमावलि तरुगन । अस्थि पहार वेदश्रुति है मन ॥
धरणी मांस नदी नख लेखेउ । महा विराट रूप यह देखेउ ॥

मुख विस्तारेउ कृष्ण तब, पारथ देखेउ नैन ।
जूझे सब सैना मृतक, रणमें कीन्हें शैन ॥

सर्व मृतक पारथ जब देखेउ । अपने जिय अचरजकरि लेखेउ ॥
त्रसित भयो तनु कम्प जनायो । मूंदेउ नैन वचन नहिं आयो ॥
अर्ज्जुन कह त्रासित करि जाना । कठिन रूप छांडेउ भगवाना ॥
अर्ज्जुन अब युग नैन उघारौ । सखा रूप मम त्रास निवारौ ॥
तब पारथ देखेउ बनवारी । जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
अर्ज्जुन तब कमलापति आगे । अस्तुति करन जोरि कर लागे ॥
तुम प्रभु तीनि लोकके करता । दाता जन्म प्राणके हरता ॥
अब संशय प्रभु मिटी हमारी । करिहौं युद्ध सुनहु गिरिधारी ॥
यह कहि धनुष हाथकरि लीन्हेउ । देवदत्त शङ्खध्वनि कीन्हेउ ॥
दोउदल सिंहनाद करिआयो । युद्ध भूमिमें शोभा पायो ॥

दोऊ दल बाजन बजे, गर्जे सिंह समान ।
क्षत्रियगण रण हांक दै, साधे शारँग बान ॥

भयो कुलाहल दलमें भारी। आगे भये महा धनुधारी॥
भीषम द्रोण कर्ण नृप आये।शङ्खध्वनि करि नाद सुनाये॥
सुनि कै भीमसेन तब धायो। मानहुं काल देह धरि आयो॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन रण करिये। भीषमके सन्मुख ह्वै लरिये॥
तबहिं धनञ्जय धनुकर गहेऊ। आगे ह्वै भीषम सन कहेउ॥
करि प्रणाम सायक दश छांड़ेउ। गङ्गासुत बीचहिंशर खंडेउ॥
भीषम कहेउ सुनहु जग तारण। सारथि भयो भक्तके कारण॥
पांडव धन्य धन्य ये पारथ। जाके रथ पर श्रीपति सारथ॥
यह कहिकै रणको मन लायो। महारथी सब युद्ध मचायो॥
भीमसेन दुःशासन चलौ। दोऊ जुरे महाबल अलौ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण के आगे। क्रोधितबाण चलावन लागे॥
नकुल और जयदर्थ सुहावैं। क्रोधवन्त दोउ युद्ध मचावैं॥

शकुनी अरु सहदेव रण, भिरे प्रचारि प्रचारि।
नृपति युधिष्ठिर शल्यसों, कियो भयङ्कर मारि॥

भूरिश्रवा सात्यकी सङ्गहि। कृतवर्मा विराट रण रङ्गहि॥
भगदत्तहि क्रोधित जब जान्यो। द्रुपद नरेश आए रण ठान्यो॥
सोमदत्त उत्तर रण मंड्यो। बाणन तें रिपुसैन बिहंड्यो॥
कृपाचार्य्य सन्मुख ह्वै धाये। तिनसों काशिराज रणपाये॥
घटउत्कच कीन्हो सन्धानहिं। जुरे अलम्बुष ते रणधामहिं॥
नृप शशिबिन्दु शङ्ख संग्रामहिं। क्रोधित लगे चलावनबाणहिं॥
तब द्रोणी निजकरधनुशर गहि। जुरे शिखण्डी तें रण रङ्गहि॥

कुरुदल में वृषसेन सुहाये । तिनते चेति करण रणलाये ॥
जुरे वीर सब लै शारँग शर । होन लगी अति मारु परस्पर ॥
दोऊ दल कीन्हेउ सन्धानहिं । क्रोधित लगे चलावन वानहिं ॥
शततेसहस सहस ते लाखन । वरषैं वाण सकै को भाखन ॥

दोउ दल वीरन रणरचे, जलद वुन्द सम वान ।
महा भयानक युद्ध कह, सवलसिंह चौहान ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

अर्ज्जुन सों भीषम पुरुषारथ । कीन्हो प्रलय भयानक भारथ ॥
क्रुद्धित चले चलावत वानहिं । विंशति शर मार्यो हनुमानहिं ॥
महावीर रण दोउ समानहिं । कृष्ण शरीर हन्यो दशवानहिं ॥
सहस वाण भीष्म कर लीन्ह्यो । ताते मारु पारथहि,दीन्ह्यो ॥
अष्ट विशिख क्रुद्धित ह्वै जोरे । घायलकिय रथचारिउ घोरे ॥
और लक्ष शर क्रोधित मारा । वहै प्रवाह रुधिरकै धारा ॥
सप्त वाणते ध्वजा निशानहिं । वाणन ते सैना घमसानहिं ॥
कृपाअङ्गदश विशिखसुमार्यो । तव अर्ज्जुन शरधनुष सुधार्यो ॥
षष्टि वाण भीषम उर मारा । मानहु वज्रपात फटकारा ॥
सप्तवाण हनि ध्वजानिशानहिं । सारथि उरमार्यो दशवानहिं ॥
चञ्चल अश्व रहे रथ जोरे । घायल भे रथ चारिउ घोरे ॥
अर्ज्जुन वाण चमू पर मार्यो । हय गज रथ पदाति संहार्यो ॥

क्रोधवन्त अर्ज्जुन भयो, कीन्हो लघु सन्धान।
जलथल भारतभूमि सब, शर छायो असमान॥
एकै शर पारथ सन्धानहिं। गुणमें धरत होहिं दशवानहिं॥
चलत होहिं शत लगे सहस्रन। यहिप्रकार कियो सैननिकन्दन॥
जब पारथ बहु कटक सँहार्‌यो। भीषम अपनो तेज सँभार्‌यो॥
लघ सन्धान लगे शर वर्षन। जूझै सैन सहस्र सहस्रन॥
दोंउ सुभट अतिसमर जुहारा। वरषहिं बाण मनो जलधारा॥
भीषम अग्निबाण सन्धान्यो। लखि पांडवदल शङ्का मान्यो॥
प्रकटो अग्नि बाणते ऐसो। प्रलयकाल बड़वानल जैसो॥
प्रकटीं शिखा सहस्र सहस्रन। पांडवदल लागे जारन तन॥
जब पांडव सैना अकुलान्यो। वरुण बाण अर्ज्जुन सन्धान्यो॥
वरुण विशिखते वरष्यो पानी। निमिष एकमहँ अग्नि बुतानी॥
रणमें मेघ घुमरि कै आयो। महा वृष्टि वर्षा झरिलायो॥
वसन सनाह भीजि तनु लागे। परभीजे शर चलत न आगे॥

पवन अस्त्र भीषम गह्यो, सूख्यो नीर तुरन्त।
हय पदाति रथ उड़त हैं, मतवारे मैमन्त॥
ऐसी तेज समीर चलाई। मानुहु वरी प्रलयकी आई॥
नागविशिखि तब फल्गुप्रहारा। सर्पन कीन्ह्यो पवन अहारा॥
फनकाढ़े अजगर सबधावहिं। लीलहिंसैन विलम्ब न लावहिं॥
विषके तेजकटक व्याकुल अति। भीषम शर सन्धान्यो खगपति
गरुड़ देखि सब सर्प पराने। भये अलोप जात नहिं जाने॥

तीक्षण पञ्चवाण कर लीन्हओं। तेशरचोट शीशपर दीन्हओं॥
अर्जुनदूमिअतिविशिखचलायो। शरसों भीषमको रथछायो॥
गङ्गतनय हँसि विशिख पँवारे। पारथ शर बीचहि कर डारे॥
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो। भीषमके सम्मुख पहुंचायो॥

अर्जुन रथ आयो निकट, भीषम देखेउ नैन।
क्रोधवन्त शर साधिकै, कह्यो कृष्णसों बैन॥

दीनवन्धु सन्तन सुख दायक। पारथ नहिं मेरे रण लायक॥
पाण्डु वंशके रक्षा कारण। सारथि आप जगतके तारण॥
आपु सुदृढ़ जोती कर गहिये। मारत हौं तीक्षण शर सहिये॥
ऐसो शर भीषम सन्धान्यो। देवलोक सब शङ्का मान्यो॥
कम्पत है पांडवदल ऐसो। कदलीपात मरुत लगि जैसो॥
दिगपालन देखत भय मानो। वसुधा शायक निरखि सकानो॥
जो शर परशुराम ते पायो। क्रुद्धित ह्वै सोइ बाण चलायो॥
छूटत बाण शब्द भयो भारी। दशदिशिअतिकीन्हीउजियारी॥
कहेउ कृष्ण अर्जुन सुनि लीजै। सावधान रणको मन दीजै॥
जब पारथ सुरपुर पगु धारयो। देवकाज सब दैत्य सँहारयो॥
तब सुरपति शिर मुकुट बँधायो। तहां किरीटी नवपार पायो॥

हँसि दीन्हो सुरनाथ तव, पारथ लीजै वान।
महाकष्ट रणमहँ परै, तब कीन्हओं सन्धान॥

खड्गशरपाणिविजयनरलीन्हओ। पढ़िकै मन्त्र फोंकशरदीन्हओ॥
जिष्णुक्रुद्धहोइ विशिखचलायो। आवतवाणसोकाटि खसायो॥

काटयोशर श्रीपति सुखमान्यो । तव अर्ज्जुनयहिभांतिवखान्यो ॥
अहो पितामह धनु दृढ़ धरिये । सावधान मोते रण करिये ॥
दोऊ सरस रच्यो पुरुषारथ । कीन्ह्यो महाभयानक भारथ ॥
पांडवदल भीषम वहु मारयो । भीमसेन तव आपु संभारयो ॥
रथते उतरि गदा गहि धायो । कौरव दलमें युद्ध मचायो ॥
गदा घाव गजको शिर फोरयो । सहितभुशुण्डदशनतरुतोरयो ॥
कोपि गदा रथ ऊपर मारै । सहित रथी सारथी सँहारै ॥
हय पदाति आगे जो पावै । भीमसेन तेहि मारि गिरावै ॥
रथहि पकरि रथ ऊपर मारै । गहि गयन्द गज ऊपर डारै ॥
आरत लगे जात लोटत गज । लागे थुका उताइल गतसज ॥

कौरवदल त्रासित भयो, धरै न कोऊ धीर ।
सहसा कै रणमें जुरे, एक वार शत वीर ॥

द्वैकरि हांक कियो दृढ़ ठानहिं । सवैरथिन मिलि मारै वानहिं ॥
काल समान तेज रण छूटे । वज्र शरीर लागि सव टूटे ॥
भीमसेन क्रुद्धित होइ धाये । मारि सवै यमलोक पठाये ॥
काहुहि गहि मुष्टिक सों मारै । जे अभिरे ते सकल पछारै ॥
कौरवदलहिं प्राणभय कीन्ह्यो । क्रोधितद्रोणहांक तवदीन्ह्यो ॥
रहु रहु अरे वृकोदर ठाढ़ो । सेना वधि तेरो मन वाढ़ो ॥
यह कहि धनु नराच दृढ़धारयो । भीमअंगदशविशिखप्रहारयो ॥
गुरुद्रोण अगणितशरमारयो । तव निजरथहिभीमपगुधारयो ॥
भीषमते अर्ज्जुन संग्रामहिं । दोऊ जुरे खेत जयकामहिं ॥

पारथ जबलगि भीम निहारयो । दशसहस्ररथभीष्महि मारयो ॥
तब भीषम जयशंख बजायो । संध्यालखिनिजरथहि घुमायो ॥
फिरिकैसुभटकियो जब गवनहिं । पाण्डव गये आपने भवनहिं॥
दुर्योधन हर्षित होइ कह्यो । रणमों भीषमको प्रण रह्यो ॥
दश सहस्र मारयो रथ नीके । पाण्डव गये युद्धमें फीके ॥
सेन सकल कीन्हेउ विश्रामहिं । धर्मराज आये निज धामहिं ॥

अस्त्र खोलि धरणी धरयो, टोप सनाह उतारि ।
श्रम नाश्यो असनान करि, जेवें सहित मुरारि ॥

द्रुपदसुता यह कथा चलाई । आजुयुद्ध केहिकी प्रभुताई ॥
कह्यो कृष्ण भीषम रण मण्डयो । दशसहस्ररथ क्षणमें खण्डयो ॥
प्रात शंख कीजे सेनापति । कुरुदल अर्ज्जुन संहारहि अति ॥
कह्यो द्रौपदी सुनिये केशो । मेरे मन यह बड़ो अँदेशो ॥
जोपै शंख भीष्मते लरिहैं । अर्ज्जुन भीमसेन का करिहैं ॥
कह्यो कृष्ण यामें है कारण । शत्रु सेन कीजै संहारण ॥
प्रात होत दोऊ दल साजहिं । शब्द अघात दमामे बाजहिं ॥
श्रीहरि कह विराट सुनुभूपति । शंखहि कीजै आजु चमूपति ॥
सुनि विराटकह आनन्दितमन । जो आज्ञा कीजै जगवन्दन ॥
मैं कुलमें सुपुत्र सुत जायो । भारत सेनापती कहायो ॥
धर्मराज श्रीपतिके आगे । बाँधन मुकुट शंख शिर लागे ॥

कह्यो शंख कर जोरिकै, सुनि लीजै सुखधाम ।
तुम समान सारथि भये, भीषमते संग्राम ॥

पारथ रथौ आपु प्रभु सारथ। भीषम कियो सरस पुरुषारथ॥
मेरे रथ नहिं सारथि ऐसो। समता युद्ध होइ रण कैसो॥
जो श्रीपति सम सारथि पावों। मारि सबै कौरव विचलावों॥
कही कृष्ण सात्यकि सुनिलीजै। आजआप सारथि प्रण कीजै
बैठि शंखरथ जोती धरिये। भीषमके सन्मुख रण करिये॥
प्रभु आज्ञा सात्यकि तवपायो। आपु सारथी वेष वनायो॥
चारि तुरंग आनि रथ जोरे। घूंघट सहित चलतमुखमोरे॥
बाँध्यो मुकुट शंख मन हर्षहि। राजयुधिष्ठिरके पुनिपद गहि॥
तव विराटके पद सोइ लाग्यो। कृष्णचरण पर्य्यो अनुराग्यो॥
कियो सात्यकीको पगवन्दन। चढ़्योजाइ रथ परमानन्दन॥
नन्दिघोष अर्ज्जुन असवारो। जोती गहे पिताम्वरधारी॥
भीम सहित सेना सब साज्यो। सिंहनाद करि रणमें गाज्यो॥

सबके आगे शंखरथ, साधे कर धनु बान।
भारतके संग्राम कह, सबलसिंह चौहान॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

कुरुदल साज करन सब लागे। राजा कहेउ पितामह आगे॥
आजु अस्त्र यहिविधिते धरिये। कृष्ण सहित अर्ज्जुन बध करिये
भीषम कही युद्धको चलिये। शोच कहा हैं है सब भलिये॥
महा गँभीर कियो दलसाजन। वाजन लगे युद्धके बाजन॥

कुरुक्षेत्र आयो कौरव दल। देखत हाँक दियो दोऊ दल ॥
भीषमअतिअचरजकरिलेख्यो। बांध्यो मुकुट शंखशिरदेख्यो ॥
तब सात्यकि रथ हांकि चलायो। भीषमके सन्मुख पहुँचायो ॥
शंख प्रथम दश वाण चलायो। ते शर भीषम काटि गिरायो ॥
हँसि भीषम दश शायक जोरे। ते शर शंख बीचही तोरे ॥
कोपि कुँवर शतबाण प्रहाऱ्यो। भीषमके उरमध्य सुमाऱ्यो ॥
शर लागत भीषम रिस बाढ्यो। भीषमके उरमध्य सुमाऱ्यो ॥
काल समान बाण सब छूटैं। भेदि सनाह अंगमें फूटैं ॥

क्रोधवन्त भीषम भये, कीन्हों लघु संधान।
सर सरिता सात्यकि भये, कुँवर अंग बहुबान ॥

नृप विराटसुत तेज सँभारो। षष्टिबाण भीषम उर माऱ्यो ॥
भीषम शंख लरे रण अंगन। दोऊदल बहु कियो निकन्दन ॥
गजसों गज चौदन्त लराई। रथी रथी सों मारु मचाई ॥
जुरे आइ असवार महाबल। लगे पदातिपदातिन करिबल ॥
महारथी रथ हाँकि चलायो। कौरव कटकमध्य तब आयो ॥
तब अर्ज्जुन कोदण्ड सुधाऱ्यो। क्रुद्धित ह्वै बहुविशिखप्रहाऱ्यो ॥
जो जो सैन्य दृष्टि में आयो। क्षणमें अर्ज्जुन मारि गिरायो ॥
रुण्ड मुण्ड वसुधामें तोप्यो। सूझि न पऱ्यो मांसमहि रोप्यो ॥

घोरयुद्ध कपिध्वज कियो, सेना वध्यो अनन्त।
गज रथ हय पदचर गिरे, कहूं शीश कहुँ दन्त ॥

अर्ज्जुन वध्यो सैन यहिरूपहि। देखिक्रोध उपज्यो तब भूपहि ॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै धायो । छत्र छांह रविदृष्टि छपायो ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेरयो । मारु मारु दुर्योधन टेरयो ॥
दुःशासनै सब राजन लीन्हें । बाण वृष्टि पारथपर कीन्हें ॥
चहुं ओर वर्षत शर कैसे । भादौं बूंद सघन घन जैसे ॥
नन्दिघोष रथ शरते छायो । अर्ज्जुन कृष्ण दृष्टि नहिं आयो ॥
पारथ इन्द्र अस्त्र गुण जोरे । अन्तरिक्षही सब शर तोरे ॥
अरु सहस्र राजा बध कीन्हों । शङ्खध्वनि अर्ज्जुन तब दीन्हों ॥
मणिमय मुकुट जरायन जरे । शीश सहित वसुधामें परे ॥
जहां जहां अर्ज्जुन रण ताक्यो । तहां तहां माधव रथ हांक्यो ॥
और अनेक निशित शर मारयो । एक बाणयहिभांति प्रहारयो ॥
सारथिशीश काटि महिडार्‍यो । कृष्णअङ्ग दशबाण प्रहार्‍यो ॥
रथते दुःशासन महि आयो । देखि विरथ दुर्योधन धायो ॥
तब कुरुनाथधनुषकरलीन्हयो । महामारु कपिध्वजपर दीन्हयो ॥
सुनिकै शोर वृकोदर धायो । द्रोण जाय बीचहि अटकायो ॥
भीषम कही द्रोण रण रङ्गहि । जुरे धनञ्जय कुरुपति सङ्गहि ॥
आप शङ्खसन समर जु कीजै । हम पारथपर सायक दीजै ॥
जाह्नविसुत यहकहि लघु धायो । शर वर्षा पारथ पर लायो ॥
दुर्योधनको पाछे घाल्यो । आगे रथ गङ्गासुत चाल्यो ॥
सिंहनाद करि हांक जनायो । रहु अर्ज्जुन भीषम अब आयो ॥

अबलौं जो सेना बध्यो, हौं न रह्यो यहि ठौर ।
तौ पारथ बल जानिबो, जो दल बधिहौ और ॥

कोटिन अर्ज्जुन करहुं सँहारण। कृष्णसहाय बचौ त्यहि कारण॥
अर्ज्जुनसुनिक्रुद्धित परिजरयऊ। दृढ़ होइ धनुषबाणकर धरयउ॥
पारथ क्रोधवन्त ह्वै टेरयो। जब तुम सब विराटपुर घेरयो॥
तादिन मैं सबको बल जान्यो। गोधन सबै फेरिगृह आन्यो॥
बड़े अहहु बड़ वचन न कहहू। दृढ़ ह्वै धनुषबाण कर गहहू॥
यह कहिके लागे शरवर्षन। शतते सहस सहस्र सहस्रन॥
अपर चरित्त सुनहु मन लाई। शङ्ख द्रोण जहँ करत लड़ाई॥
एकहि एक क्रोधते मारत। आवत बाण बाणते टारत॥
अमित युद्ध दुर्योधन देख्यो। अपने जिय अचरजकरि लेख्यो॥
शङ्खकुंवरअतिविशिखपँवारयो। रथके चारि अश्व संहारयो॥
कियो सारथीको शिर खण्डित। पुत्र विराट महारण मण्डित॥

द्रोण अपर रथपर चढ्यो, कछु लज्जा कछु क्रोध।
महारथी देखत सकल, बालकपर अनुरोध॥

जब लग द्रोण आपु संभारयो। तनयविराट सैन्य बहुमारयो॥
कौरवदल बहुशङ्ख निपातो। गुरु तब भयो क्रोधते तातो॥
रहुरे शङ्ख ठाढ़ रण रङ्गहि। एकै शर कृत जीवन भङ्गहि॥
दूजो बाण करों सन्धानहि। तौ मोहि परशुरामकी आनहिं॥
यह कहि ब्रह्मअस्त्र करलीन्हयों। पढ़िकैमन्त्रफींक शर दीन्हयो॥
शरको तेज अकाशहि व्याप्यो। सुर नर नाग देखिकै कांप्यो॥
छिटक्यो किरणि बाणते कैसे। ग्रीषमऋतु प्रचण्ड रवि जैसे॥
देखि त्रास सात्यकि जिय बाढ़ो। द्रोण तोणते शर जब काढ़ो॥

कहहु कुंवर तव रथहि फिरावों। अर्ज्जुनके पीछे पहुंचावों॥
शक्रु कह्यो इस्थिर ह्वै रहिये। क्षत्रिधर्म्मकिमिजियनहि गहिये।
बांध्यो मुकुट जु कृष्ण कर, भारतके रण खेत।
द्विजसों पीठ दिखायकै, तनु राखों क्यहि हेत॥
कार्मुक द्रोण श्रवनलगि तान्यो। छूटत बाण शब्द घहरान्यो॥
बाण प्रताप अग्निबहु बाढ़्यो। वड़वानलजनु दधितेकाढ़्यो॥
सप्ततालभयो अग्नि उँचाई। चौदह ताल रह्यो चकलाई॥
देखेउ ब्रह्मअस्त्र ढिग आवत। सात्यकिबहुरिकुँवरसमुझावत॥
फेरों रथ सुनु वचन वावरो। काह मरत विन काज रावरो॥
रथ समेत यहि विधि जरिजैहो। खोजत कतहुँअस्थिनहिंपैहो॥
जो मेरो रथ फेरहु भाई। कृष्ण चरण युग कोटि दुहाई॥
गुरुहति द्विजहति पाप सु पावहु। जो सात्यकिरथफेरिचलावहु
जन्म भये ते मृत्यु न छूटै। सो सपूत जगमें यश लूटै॥
रणते भागि भवन जव जैवो। क्षत्रिनमहं किमि वदनदेखैवो॥
कुँवर लग्यो जलबाण चलावन। ब्रह्म अग्नि को सकै वचावन॥
रणमें द्रोण अधर्म विचार्‌यो। ताहि ताहि सवदेव पुकार्‌यो॥
सुरगण सव यहि विधिकहैं, द्रोण अधर्म विचार।
वालकते रण ठानिकै, ब्रह्मसु अस्त्र प्रहार॥
अस्त्रतेज सव अंगहि व्याप्यो। सहिततुरंग सात्यकी कांप्यो॥
तव सात्यकि रथ फेरि चलायो। कुँवर कूदि धरणीपर आयो॥
सन्मुख रह्यो नेकु नहि मुरो। ब्रह्म अस्त्रमहं ठाढ़े जुरो॥

द्रोऊ दल देखत हैं नयनहिं । साधुशंखभाष्यो सबबयनहिं ॥
भस्म भयो मन नेकु न मोरो । भाजो सात्यकि लै सब घोरो ॥
देखत द्रौ दल शंख जरायो । फिरिकै द्रोणतोण शर आयो ॥
द्रोण आपु जय शंख बजायो । सुनिकै धृष्टद्युम्न मन लायो ॥
रे गुरु द्रोण ज्ञानकर हीनों । करि अधर्म खोयो पन तीनों ॥
ह्वै कै विप्र अस्त्र जो बाँध्यो । बालकपर ब्रह्मास्त्रै साध्यो ॥
अब मोते संग्राम विचारहु । अहो विप्र पहिले शर मारहु ॥
सुनि गुरु द्रोण क्रोधते जाग्यो । तीक्ष्णबाण चलावन लाग्यो ॥
कुँवर सबै वे बाण सँभारयो । द्रोण ललाट तीनि शरमारयो ॥

ब्रह्महि अस्त्र उदोत मय, पारथ देख्यो नैन ।
तौ लगि भीषम वधिगये, दशसहस्त्ररथ सैन ॥

भीषम शंख दयो जय हेतू । सुनिकै शब्द फिरयो कुरुकेतू ॥
सब मिलि गये आपने धामहिं । दोऊदल कीन्हयो विश्रामहिं ॥
अब यहकथा चलो जो आगे । भोजन पान करन सबलागे ॥
बोलि बाढ़िधर बाढ़ि धरायो । कोउशायकमहँ सानकरायो ॥
कोउ निषंगमहँ शायक देखत । चारा चारु तबल कोउ देखत ॥
कोउ स्यन्दनमहँ साजलगावत । कोऊ शक्ति सनाह बनावत ॥
धर्मराज माधव सँग लीन्हें । गमन विराटभवन शुभकीन्हे ॥
अहोनृपति मन शोच निवारहु । क्षत्रिधर्म निजहृदय विचारहु॥
कह्यो विराट सुनहु नृपनायक । जूझे पुत्र मोहिं सुखदायक ॥
धर्मराजके काजहि आयो । शोच कहा बहुतै सुख पायो ॥

धर्म्मराज बन्धुन सहित, साथ लिये घनश्याम।
भोजनको बैठे सकल, द्रुपदसुताके धाम॥
षटरस भोजन आनि बनाये। जेंवत भीम महा सुख पाये॥
द्रुपदसुता कछु वचन उचारयो। आजु युद्धकेहिभांति संवारयो॥
कहेउ कृष्ण अर्ज्जुन बल भारी। मारे सहस छत्रके धारी॥
द्रोण अधर्म्म युद्ध मन लायो। ब्रह्मअस्त्रते शत्रु जरायो॥
धर्म्मराज कह सुनहु मुरारी। मम उर यह संशय अति भारी॥
दशसहस्ररथ नितक्षम जूझै। भीष्मते जय मोहिं न सूझै॥
कहेउ द्रौपदी नृप नहिं डरिये। वनकीकथा आपु सुधिकरिये॥
दुर्व्वासा कुरुनाथ पठायो। अर्द्धराति पर्णशाला आयो॥
सप्त सहस्र शिष्य सँग लागे। भोजन आय द्वार है मांगे॥
क्षुधावन्त हम भोजन दीजै। नाहित ब्रह्मशाप अब लीजै॥
भोजन दीजै कवन विधि, एक अन्न नहिं भौन।
ब्रह्मशापके त्रासते, सबै रहे गहि मौन॥
तब मै कह्यो ऋषिय सुनिलीजे। आपजाय प्रभु स्नानहि कीजे॥
मैं भोजन कर साज बनावों। आवहु तुरत तवन बैठावों॥
छलकरि मैं ऋषिको छिनटारो। बहुत त्रासजियमध्य विचारो॥
प्रभु यहि समय दया अब करिये। नाहित ब्रह्मशापसो जरिये॥
सबमिलिकृष्णचरण युग ध्याये। सुमिरतही तुरन्त प्रभु आये॥
करि प्रणाम बहुते सुख पायो। क्षुधा क्षुधा यदुनाथ सुनायो॥
तब मैं कह्यो अन्न नहि लेशा। भोजन कहा दीजिये केशा॥

रन्धनको भाजन प्रभु देख्यो। तामें शाककणा इक लेख्यो॥
तब घनश्याम शाक वह खायो। मुनिगणकेर उदर भरिआयो॥
कोउ उदर निज पाणि भ्रमावहिं। कोऊ पलन्ह सेज बनावहिं॥
काहुको दूध घीव तब आवहिं। मन्त्रअगस्त्य कोऊ मनलावहिं॥
भीमसेन तब जाय बुलायहु। द्विजगण चलहुगहरुकिमिलावहु॥
दुर्वासा यहि विधि कह्यो, नाहिं न भक्त बिनाश।
सबलसिंह चौहान कह, चरण कमलकी आश॥

इति पञ्चम अध्याय॥ १६॥

आये कृष्ण साधु सुखदायक। पांडु वंशके सदा सहायक॥
दुर्वासा कह सुनहु वृकोदर। व्याप्यो कृष्ण सबनके ओदर॥
जँसो हम याचञा लायो। अपनो कियो आपुते पायो॥
यहि कहिक सब द्विजगण भागे। आये भीम कृष्णके आगे॥
हँसि प्रभु द्वारावति पगुधारयो। वे चरित्र नृप चित्त बिसारयो॥
यहसुधि सबबिसरीकेहि कारण। कहांशोच जहँत्रासनिवारण॥
द्रुपदसुतायहिभांतिबखान्यो। सुनियदुपतिअतिशयसुखमान्यो॥
कौरव कटक समर महँ आयो। धनुकरशर निषङ्ग कटिलायो॥
होत प्रभात सजे कुरु केतू। बजे निशान युद्धके हेतू॥
सिंहनाद करि शब्द सुनायो। पाण्डव सकलअजिररण आयो॥
दोउ अनी सन्मुख तब भयऊ। वीरन धनुष फोंक शर दयऊ॥

रथ गज पदचर नृपति सब, करन लगे रणघोर।
महारथी सेनापती, भिरे जोरसों जोर॥
आंद्रू खोलि दये अधियारी। धाये गज पर्वतसे भारी॥
भादौं घटा उनै जनु आयो। गजन युद्ध चौदन्त मचायो॥
बाण बूंद झरि रथिकर बलकै। शायक खड्ग दामिनी दमकै॥
करिकै नाद भीष्म तब धायो। भयो शब्द जनु घन घहरायो॥
शक्ती शैलह उपर सब टूटहिं। बज्रपात अर्ज्जुन शर छूटहिं॥
विषम खड्ग बाज्यो शर खण्डित। भीष्मरथ हांक्यो परचण्डित॥
नन्दिघोषके सन्मुख आयो।बाण वृष्टि अर्ज्जुनपर लायो॥
पारथ ते शर काटि निवारत्रो। पञ्चविशिख भीषम उर मारत्रो॥
लागतविशिख क्रोध उर बाढ्यो। तीक्ष्णशर निषङ्गते काढ्यो॥
हन्योताकि कपिध्वजके हियमों। गङ्गासुत क्रुद्धित ह्वै जियमों॥
भीषम अर्ज्जुन रण रच्यो, भयो युद्ध अति घोर।
धृष्टद्युम्न अरु द्रोणते, परत्रो आनि अति जोर॥
क्रुद्धित ह्वै बहुविशिख चलायो। धारी व्योम महा शर छायो।
गुरु द्रोण बहु शायक छांड़त्रो। धृष्टद्युम्न क्रुद्धित ह्वै खांड़त्रो॥
भरद्वाजसुत बाण चलायो। कुंवर उत्तरा खड्गले धायो॥
झपटै बाज चर्म्मपर जैसे। पहुंचो आय द्रोण ढिग तैसे॥
निकट जानिकै गुरु सँभारत्रो। लघुसन्धान बाण तब मारत्रो॥
बरषहिं बाण घात नहिं पायो। कुंवर पेलि अपने दल आयो॥
लै कोदण्ड लग्यो शर मारन। छांड़त्रो बाण सहस्र अपारन॥

कृपाचार्य्य किय शरसन्धानहिं। भिरेनकुल तिनते जयकामहिं॥
मन्त्री शकुनी रण सहदेवहि। पण्डित दोउ युद्धके भेवहि॥
हांक्यो जवहि अलंवू स्यन्दन। तिनते भिरयो हिडम्बीनन्दन॥
शल्य नरेश सात्यकी लरई। कृतवर्मा विराट रण करई॥
युद्ध देखि भगदत्त रिसानो। चढ़ि गयन्दपर कियो पयानो॥

ऐरावतको सुत अहै, ताहि दियो सुरराज।
तापरचढ़ि भगदत्त न्टप, कियो युद्धको साज॥

मन्दरसों देखत नर डरई। योजन ऊपर पांवसों धरई॥
दन्त विशाल कहत नहिं आवै। मनहुँ शृङ्ग कैलास सुहावै॥
कालरूप सम कुंजर धायो। पांडव दलके ऊपर आयो।
कटक अमित पाधनसों मारयो। शुण्डलपेटि रथी फटकारयो॥
अपनो दल डोलत अनुमान्यो। भीम अग्र ह्वै हांक सुठान्यो॥
क्रुद्धित शर कोदण्ड सुधारयो। कुंजरशीशविशिखशतमारयो॥
शायक अमित हने गजमत्तहि। षष्टिवाण मारयो भगदत्तहि॥
तव भगदत्त क्रोधउर कीन्हयों। पञ्चविंश शर फोंकन दीन्हयों॥
भीमसेन उर मध्य प्रहारा। वहै प्रवाह रुधिरको धारा॥

तव गयन्द अति क्रोध करि, गयो भीमरथ आय।
फेंकि दियो रथ भूमिमें, परो कोशपर जाय॥

कहूं तुरंग कहूं रथ टूटयो। कहूं सारथी कर शिर फूटयो॥
भीमसेन तव लज्जा पायो। रहु भगदत्त वृकोदर आयो॥
हांक मारि यहि भांति जनायो। लैकर गदा क्रोधकरि धायो॥

एकहि गदा शीशपर दयऊ । चारि पैग पाछे गज गयऊ ॥
गदा घाव गजराज सँभार्‍यो । झारि शीश आगे पग धार्‍यो ॥
तव भगदत्त क्रोध जिय कीन्ह्यो । हांकिशेलउरमध्यसोदीन्ह्यो ॥
शेल घाव ते मोह जनायो । धका मारि गजराज गिरायो ॥
गिर्‍यो भीम धरणीमहँ कैसे । भूधर परत भूमितल जैसे ॥
द्रुपदनरेश देखि करि धायो । उतरा काशिराज संग आयो ॥
जुर्‍यो शिखंडी अति रण धीरा । चारिउ वीर महाबल वीरा ॥
सहस सहस शर सबन चलायो । शीश गयन्द बाणते छायो ॥
गजपर शर वर्षत सब कैसे । गिरिपर वृष्टि नीर घन जैसे ॥

नृप भगदत्त जु क्रोध ह्वै, लीन्हेउ शर कोदण्ड ।
चारिउ भट मोहित किये, भारत रण बरवण्ड ॥

चारिउ वीर विमोहित कीन्ह्यो । पेलि गयन्दकटकपरदीन्ह्यो ॥
सन्मुख आइ शूरशर जोरहिं । झपटि गयन्द सबनशिरतोरहिं ॥
ठोकर अपर पैरते मारहिं । काहुहि छेदि दण्ड ते डारहिं ॥
बिडरी अनी व्यूह सब फूटे । विपुल सङ्ग निज संगते छूटे ॥
भयो शोर दल वैरख डोल्यो । क्रुद्धित धर्म्मराज तब बोल्यो ॥
अहो मूढ़ भागत केहि कामहिं । सन्मुख युद्धकरहु रणधामहिं ॥
प्राण गये उत्तम गति पैहहु । चढ़िविमानसुरलोकसिधैहहु ॥
क्षत्रिय वंश जन्म जो पावै । सो सुपुत्र रण प्राण गंवावै ॥
धर्म्मराज यहि विधि ते कह्यऊ । फिरकै अस्त्र सबन पर गह्यऊ ॥

शर अरु शक्ति शैल ते मारहिं। तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं ॥
क्षत्री क्रोधवन्त ह्वै धाये। तूणिन माहँ खांड अजमाये ॥
साहस करि क्षत्रिय सकल, करहिं सुअस्त्र प्रहार ॥
महा भयङ्कर देव गज, होत घाव नहिं पार।
तब भगदत्त निकरशर डारयो। क्षत्रिय विपुलसमरमहि मारयो ॥
रथ अनेक गज गहि फटकारै। ऊपर शर भगदत्त जु मारै ॥
व्याकुल सैन त्रसित ह्वै भागे। दबेते सकल परे जे आगे ॥
शत नरेश तेहि ठाहर जूझे। चले न भाज पङ्क आरूझे ॥
गज रथ अरु असवार सहस्रन। धर्मराज हित मृत्य भये रन ॥
कायर सकल जीव लै भाजे। तब भगदत्त समर महि गाजे ॥
सिंहनाद करि हांक सुनायो। हैकोउसुभट जो सन्मुख आयो ॥
पांडुवंश सब मारि गिरावों। एक छत्र कुरुराज करावों ॥
तब अपनो पुरुषारथ लेखौं। अर्जुन कृष्ण नयन जब देखौं ॥
धर्मराजके सन्मुख आयो। अर्जुन को माधव समुझायो ॥
अर्जुन अब देखत कहा, धर्मराजपर भीर।
चलहु जाइ उत रण करिय, रथ हांको यदुवीर।
सकल सैन्य धीरज मन धरेऊ। जबहीं दृष्टि कपिध्वज परेऊ।
करिटङ्कोर धनुध कर लीन्ह्यो। अर्जुन आइ हांक रण दीन्ह्यो ॥
गजके जोर सैन्य सब मारे। परेउ आय अब बात हमारे ॥
अब छांड़हु जीवनकी आशहि। गज समेत जैहौ यमपासहि ॥
तब भगदत्त क्रोध करि कह्यो। अर्जुन मैं खोजत त्वहि रह्यो ॥

भली भई विध कीन्ही भेटहि । जैहो आजु कालके पेटहि ॥
सुनि अर्ज्जुनधनुशायक लायो । क्रोधित ह्वै अतिबाण चलायो ॥
तब भगदत्त वाण सब काटे । क्रुद्धित ह्वै सब शायक पाटे ॥
षष्टि वाण मारेउ अर्ज्जुनतन । असोनराच हन्यो श्यामहिघन ॥
सहसवाण मारयो हनुमानहिं । पञ्च वाणते ध्वजा निशानहिं ॥
अष्ट विशिख अश्वनउर लागे । थकित भयो रथचलत न आगे ॥
तब शर विंशति विजयी मारयो । नृपकोचाप खण्डिकै डारयो ॥
पुनि पारथ कीन्हों सन्धानहिं । शक्तिवीचमारयो भगवानहिं ॥
निष्फल भयो शक्तिजब जान्यो । लैकरचापविशिख सन्धान्यो ॥
क्रुद्धित नृप मारयो तीक्ष्ण शर । घायल भये आपु धरणीधर ॥
गजहि पेलि अर्ज्जुनपर आयो । ऊपरते बहु शर झरि लायो ॥
गज ससेटि कै फेक्यो स्यन्दन । अर्ज्जुन कहीं कहीं जगवन्दन ॥
तीक्ष्णवाण घाव उर दीन्हयो । अर्ज्जुनकृष्णविमोहित कीन्हयो ॥
गिरत आपु भाष्यो गिरिधारी । हनूमान रथ रक्षाकारी ।

हम पारथ अरु रथसहित, तुम रक्षक हनुमान ।
यह कहिकै मोहित भये, भक्त हेतु भगवान ।

अर्ज्जुन कृष्ण मोह जब पायो । तब भगदत्त क्रोध करि धायो ॥
गजके पांयनते रथ तोरौं । ठोकरते अर्ज्जुन शिर फोरौं ॥
हनूमान हँसि वचन सुनायो । नृप यह मन्त्र अकारथ लायो ॥
मोकहँ रथ सौंप्यो रघुनायक । ऐरावत नहिं तोरन लायक ॥
यम अरु इन्द्र वरुणजो आवहिं । तेऊ नहिं रथ देखन पावहिं ॥

वेष्टि लँगूर सबै रथ दीन्ह्यो। धायो मत्त हस्ति रिस कीन्ह्यो॥
क्रुद्धित ह्वै नृप धनुष सँभार्‍यो। लक्षबाण हनुमानहिं मार्‍यो॥
प्रवल तेज शोणित शर छूट्यो। वज्र शरीर लागि सब टूट्यो।
दोउ दन्त गहि पेलेउ वलकै। कछुक ढीलदीन्ह्यो कपि छलकै॥
द्वौ सन्धवीच दन्त जब धर्‍यो। तब हनुमान लँगूरहि कर्‍यो॥
पेंच लँगूर दसन दोउ टूटे। तब गज महा कष्टते छूटे॥
उखरे दशन चकित सब कोऊ। शोणित वहै रदनकर दोऊ॥

हरि जागे अर्ज्जुन उठे, हाथ धनुष लै बान।
पेंच लँगूर समेटिकै, रथ छांड्‌यो हनुमान॥

सुनु भगदत्त कह्यो यह पारथ। तुमकीन्ह्यो अतिशय पुरुषारथ॥
अब मेरो प्रण नृप सुनिलीजै। एक बाण कुञ्जर वध कीजै॥
दूजो शर सन्धान जु करऊं। नहिं कोदण्ड वहुरि कर धरऊं॥
जो यह बाण गजहि सम्भार्‍यो। क्षत्रिय धर्म्म आजुते हार्‍यो॥
तब भगदत्त कह्यो यह कारन। मैं यह प्रण कीन्ह्यो अपने मन॥
जो यह शर गजराज गिरावै। मेरो अयश सकल जग गावै॥
कृष्ण कही अर्ज्जुन सुनि लीजै। अब अपनो प्रण रक्षा कीजै॥
पारथ ब्रह्मबाण सन्धान्यो। श्रवणप्रयन्त शरासन तान्यो॥
कुम्भस्थल तकि मारत भयऊ। भेदिशीशशरनिकसिसुगयऊ॥
छटपट प्राण गिरन गज चह्यो। तब भगदत्त जङ्घसों गह्यो॥
राख्यो साधि शकुन नहिं पायो। बाण छूटि अर्ज्जुन पर लायो॥
गजहिंदेखिजियशोचविचार्‍यो। पारथ धनुष हाथते डार्‍यो॥

कहेउ कृष्ण पारथ सुनहु, प्राण तज्यो गजराज ।
राख्यो है भगदत्त गहि, अस्त्र तज्यो केहि काज ॥
सुनतविजयनरधनुशरलीन्ह्यो । क्रुद्धितह्वै सन्धान सु कीन्ह्यो ॥
अर्द्धचन्द्र शर अर्ज्जुन छण्ड्यो । नृपको शीश कन्धते खण्ड्यो ॥
मृतक गयन्दसहित नृप परेऊ । झलकतमुकुटजरायनजरेऊ ॥
अर्ज्जुनरण कीन्ह्यो यह करणी । योजनतीनिपर्योगजधरणी ॥
हर्षित भये देखि जगतारण । धरि यह देह भक्तके कारण ॥
पांडव सेन देखि सुख पायो । फिरिके सकलसमरमहि आयो ॥
हर्षित वचन युधिष्ठिर भाख्यो । अर्ज्जुन रण अपनो प्रण राख्यो ॥
रुण्ड मुण्ड वसुधा अब छायो । रणमें रुधिरनदी वहि आयो ॥
भूत पिशाच योगिनी गावहिं । विकट रूप भैरवगण धावहिं ॥
श्रीहरि कही चलो अब पारथ । भीषमसों कीजे पुरुषारथ ॥
कृष्णदेव रथ हांकि चलायो । तब भीषम जयशङ्ख बजायो ॥

दश सहस्र रथ मारिके, चले आपने धाम ।
सवलसिंह चौहान कहि, भारतके संग्राम ॥

इति षष्ठ अध्याय ॥ ६ ॥

पांचौ बन्धु कृष्णसंग लीन्ह्यों । सेन समेत गमन गृह कीन्ह्यों ॥
तब कुरुराजभवननिज आयो । सकल सैन विश्राम करायो ॥
आप गमन अन्तःपुर कीन्ह्यों । भानुमती आदरकरि लीन्ह्यों ॥

चमर छत्र सब लिये सहेली । मणिमय भूषण रूपगहेली ॥
नृपहिं सिंहासन लै बैठारयो । रानी तव आरती उतारयो ॥
उत्तम नीर सुगन्धसवांरयो । सखिन आय तब चरण पखारयो ॥
तेल सुगन्ध राज तनु लायो । कनक कलश अस्नान करायो ॥
भूषण वसन अङ्ग पहिरायो । अमृत भोजन सरिस ज्यँवायो ॥
कञ्चन मणिमय भवन सवांरी । हीरा रत्न करत उजियारी ॥
ताविच गजमणि झालरि जोरे । देखत धनद कहहिं हम थोरे ॥
बहुत भांतिके सेज सवांरी । पय फेना सम आनँदकारी ॥
शयन करन भूपति पगु धारयो । नृत्यनि मंगल गान उचारयो ॥
आगिलि कथाकहनमन लायो । यदुपतिसहितसकलगृहआयो ॥

अशन करन बैठे सकल, द्रुपदसुताके जाय ।
धर्मराज पूछत भये, वचन सुनहु यदुराय ॥

हनूमान रथ आपु सँभारयो । तव पारथ भगदत्तहि मारयो ॥
दश सहस्र रथ भीषम मारे । नित क्रमसों नहिं एकौ वारे ॥
भीषमरहत कुशल नहिं देख्यो । वस्तुविरोध कठिनकरि लेख्यो ॥
द्रुपदसुता कह सुनहु नरेशो । केहिकारण जियकरहु अँदेशो ॥
जो हरि चरण कमल मनलावै । सो जगमें कलेश नहिं पावै ॥
सदा भक्तकी रक्षा कारण । दीनवन्धु कीन्ह्यो तनुधारण ॥
जब प्रह्लाद खम्भमें कह्यो । नरहरि रूप तहां प्रभु गह्यो ॥
असुर फारि रमनीक पठायो । भक्त शीशपर छत्र धरायो ॥

तें प्रभु सदा रहत तुम सङ्गहि । कारण कौन करहु मन भङ्गहि ॥
करि भोजनशयनहि मनलायो । प्रात होत रण साज बनायो ॥

दल चतुरंग सुसङ्ग लै, सब नृप तेज निधान ।
भीमसेन आगे भयो, किये हृदय अभिमान ॥

कौरव साजि समर महि आये । हूह मारि दोऊ दल धाये ॥
शर अनेक वर्षन रण लागे । धावहिं वीर क्रोधते आगे ॥
शायक घाव करत अति चांड़े । उछरहि गिरहितर्कियत खांड़े ॥
असवारहि असवार प्रहारहि । पकरहिसुभटशीशअसिकारहि ॥
रथी रथीसों कीन्हयों जोरहि । दन्तीसों दन्ती रण घोरहि ॥
सन्मुख जुरेसमरअतिपण्डित । दोउदलमारुमारुध्वनिमण्डित ॥
सन्मुख आइ जुरे रणधीरा । वाल्यो घाव महाबल भीरा ॥
क्षत्रियअतिपौरुषनिजकरिकर । कीन्ह्यो भारत प्रलय भयङ्कर ॥
वासुदेव स्यन्दनहि चलायो । गङ्गतनयके सन्मुख आयो ॥
दोऊ सुभट मिले अति युद्धहि । शरछांड़नलाग्योअति क्रुद्धहि ॥
कर कोदण्ड वृकोदर लीन्ह्यो । बाणवृष्टि अरिऊपर कीन्ह्यो ॥
यहि प्रकार बहुविशिख पवांरे । सहसन वीर समरमहि पारे ॥
कुरुपति कह्यो सुशर्मा धावहु । पांडव सैनहि मारि गिरावहु ॥

दश सहस्र रथ सङ्ग लै, कीन्ह्यो तुरत पयान ।
सिंहनाद किय समरमहि, साधेउ शारँगबान ॥

क्रोधवन्त ह्वै लगे प्रहारण । पांडव दल हत बहु संहारण ॥
गिरा घोर तब भीम सुनायो । स्यन्दन त्यागि गदा गहि धायो ॥

तबहिं सुशर्मा शर धनु लीन्ह्यो। भीमअङ्ग शतशरक्षतकीन्ह्यो ॥
दशसहस्र स्यन्दन रथ आयो। दशदशशरतिन सबन चलायो ॥
लग विशिख बेधे जब तनमें। तबहिं वृकोदर क्रुद्धेउ मनमें ॥
गदाघाव यहि विधिते मारयो। दुइसै रथ चूरण करि डारयो ॥
सहित रथी सारथी न देखत। मांस मृत्तिका समुझो लेखत ॥
अरु बहु स्यन्दन पदते तोरयो। करतलहितबहुमौलिसोफोरयो ॥
गहि बहु भीम चलायो स्यन्दन। यहिप्रकारकिय सेननिकन्दन ॥
भीमसेन बहु कटक सँभारयो। न्टपति सुशर्मा आपु सभारयो ॥

क्रोधित भये नरेश अति, कीन्ह्यो शरसन्धान।
हृदयु वृकोदरके हन्यो, एकबार दशबान ॥

घायल भयो सह्यो सबबाणहि। क्रुद्धगदागहिकियोपयानहिं ॥
करिकै नाद सुगदा प्रहारयो। क्रूदि सुशर्मा आपु सँभारयो ॥
भाज्यो तुरत तज्यो रणरङ्गहि। सारथि सहित कियो रथभङ्गहि ॥
कह्यो भीमभागतकेहिकामहि। सन्मुख जुरौ करौ संग्रामहि ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो। सिंहनाद करि हांक सुनायो ॥
भीमसेन अस्थिर ह्वै रहिये। मारतहौं तीक्ष्ण शर सहिये ॥
तब सारथि लै रथ पहुंचायो। भीमसेन चढ़ि शोभा पायो ॥
भूरिश्रवा बाण दश डारयो। ते शर भीम सुकाटि निवारयो ॥
दोउ वीर सन्धान्यो धनुकर। क्रुद्धित लगे चलावन बहुशर ॥
धृष्टद्युम्न द्रोण गुरु सङ्गहि। दोउ भट मच्यो महारणरङ्गहि ॥
शल्य नरेश सात्यकी योधहि। कृतवर्मा विराट रणक्रोधहि ॥

द्रोणी अरु अभिमन्यु रण, कठिन वजायो मार।
वाण वृंद वर्षत सघन, जिमि श्रावण जल धार॥
नृपजयद्रथरुनकुलकृतमारहि। कठिनअस्त्रदोउसुभटसँभारहि॥
घटउत्कच क्रुद्धित ह्वै धायो। सप्तताल बहुवृक्ष चलायो॥
लै पषाण शिर ऊपर डारै। यहि विधि बहुत कटक संहारै॥
सकल पदाति पकरिकै खायो। गजहि समेटि पेट पहुंचायो॥
कुरुपति कह्यो अलम्बु धावहु। दैत्य दैत्य तुम युद्ध मचावहु॥
सप्त कोटि राक्षस लै सङ्गहि। धायो धनुकर धरि रणरङ्गहि॥
दनुजराज शतविशिखचलायो। शरसों भीमपुत्र रथ छायो॥
मुद्गर लयो तज्यो तब स्यन्दन। धायो उतरि हिडंवीनन्दन॥
लयो गदाकर दानव राजहि। सन्मुखजुरयो युद्धके काजहि॥
मुद्गर गदासु दोउ प्रहारहिं। एकहि एक क्रुधित ह्वै मारहि॥
नृपति अलंबु भीमसुत, भयो सुघोर विरुद्ध।
विकट भयङ्कर रूप धरि, कियो युद्ध अति क्रुद्ध॥
गदाघाव जब तनुमों लागत। शब्द अघात महारण छाजत॥
अस्त्र डारि दोउ लपटाने। अटके मल्ल युद्ध अकुलाने॥
दन्त दन्त नख नखन प्रहारहिं। गहे केश मुष्टिक सों मारहि॥
मेघघटा सम अङ्ग सोहावे। क्रुद्धितदशन विज्जु चमकावे॥
अरुण नयन सोहत हैं कैसे। प्रातहि उदय दिवाकर जैसे॥
रथके खम्भ शीश पर मारहि। पकरि गयन्द कुम्भस्थल फारहि॥
महायुद्ध अति अद्भुत करणी। कियो महाभय भारत धरणी॥

भीमतनय तब तेज सभारयो । दनुजराज गहि केश पछारयो ॥
तब दनुजेश धरणिपर गिरयो । महा अचलमानहुं महिपरयो ॥
तासु हृदय पुनि चरणप्रहारा । मुखते चली रुधिरकी धारा ॥

सबलसिंह चौहान कहि, असुरन्ह कीन्हों खेत ।
भैरव भूत पिशाच गण, नाचत योगिन प्रेत ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

तब भीषम शारँग कर लीन्हों । बाण वृष्टि अर्ज्जुनपर कीन्हों ॥
कृष्ण शरीर विशिख दश बेध्यो । हनूमान विंशति तनुशोध्यो ॥
पारथके शर शोणित छूटयो । काटिसनाह भीष्मउर फूटयो ॥
पांच बाण मनमोहन मारयो । सहस पैग पाछे रथ टारयो ॥
भीषम कह्यो सुनहु जगनायक । अर्ज्जुनयहिपुरुषारथ लायक ॥
अब अपनो रथ रक्षा कीजै । कमलनयन जीती कर लीजै ॥
यह कहिके तीक्षण शर मारयो । रथको पैग तीनशत टारयो ॥
नन्दिघोष रथ श्रीजगवन्दन । पारथ सहित पवनके नन्दन ॥
लग्यो बाण रथ पीछे आयो । साधुवचन यदुनाथ सुनायो ॥
जीवन सफल गङ्गसुत तेरो । बाणघात रथ डो[illegible] मेरो ॥
श्रीहरि तुरँग सँभारिकै, लै आयो तेहि ठौर ।
तौ लगि भीषम वधि गये, दश सहस्र रथ और ॥
हर्षित ह्वै जय शङ्ख बजायो । तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥

सकलसुभट निज धाम सिधाये । किये जाय विश्राम सुहाये ॥
धर्म्मराज सँग लिय सब भाई । सहितगोविन्दभवननिज जाई ॥
अमृत भोजन सरस बनाये । जेंवत भीम बहुत सचु पाये ॥
नृपति युधिष्ठिर यदुपति आगे । कोमलबचन कहन कछु लागे ।
भीषम सरस रच्यो पुरुषारथ । केहिविधि युद्ध जीतिये भारथ ॥
धर्म्मराज तब भये दुखारे । तब कुन्ती कछु वचन उचारे ॥
सब संसार कहत परतच्छ । पांडु वंशके माधव रच्छक ॥
जब तुम सकलरहे यकभवनहिं । खेलनको बालकसबगवनहिं ॥
भीम और दुर्योधन सङ्गहि । सदा विषाद करत मनभङ्गहि ॥
बुद्धिचक्षु तब हमहिं बुलायो । मधुर वचन कहिकै समझायो ॥

दुर्योधन अरु भीमसों, बनत नहीं यक ठौर ।
ताते बसिये अनत ह्वै, रचि देहीं गृह और ॥

नृप दुर्योधन कर्ण बुलायो । शकुनीसहित मन्त्र ठहरायो ॥
यवन बोलाय दयो धनदानहिं । लाखभवन करिये निर्मानहिं ॥
नगर वारुणा महल उठायो । लाखसाज मंदिर सब लायो ॥
लाख कोट सब ईंट सँवारयो । देकरि लच्छ सघन वटारयो ॥
बुद्धिचक्षु कह विदुर सिधावहु । अपनेनयन देखि तुम आवहु ॥
नृपआज्ञा माथेकरि लीन्हयो । चढ़िवरबाजिगमनशुभकीन्हयो ॥
आइ उतरि देख्यो सब धामहि । लाग्यो सकलणाहुको कामहि ॥
यवननते सब पूछन लागे । यह वृत्तांत कहहु मम आगे ॥
यह सुनि यवन कहत सुभयऊ । दुर्योधन मोहि आयसु दयऊ ॥

लाखभवन कीजो निर्मानहिं। गुप्तरूप पांडव नहिं जानहिं॥
विदुर बात मनमें अनुमानत। पापी दुर्योधन जग जानत।

देख्यों सुन्यों न जगतमें, लक्षभवन निर्मान।
दुर्योधन रचना रची, पाण्डव मुये निदान॥

चुप करि रहों पांडुसुत मरेऊ। हत्या करन वीर नृप चहेऊ॥
रत्न मुद्रिका करते लीन्हयों। थवई बोलि हस्तकरि दीन्हयों॥
अब इकसुरँग करहु निर्मानहिं। जैसे दुर्योधन नहिं जानहिं॥
सुनिकै वढ़ई द्वार बनायो। ता ऊपर यक खम्भ लगायो॥
विदुरगयो धृतराष्ट्रके आगे। उत्तमभवन कहन अस लागे॥
द्विज बुलाय शुभदिवस धरायो। गृहप्रवेश हम सब मनलायो॥
भीपम द्रोण साथ करि दीन्हें। यज्ञहोम बहुविधिते कीन्हें॥
संध्या जानि किये सबगवनहिं। सुतनसमेत रहे हम भवनहिं॥
व्याधा एक पांडु तेहि नामहिं। सदा भ्रमै मृगयाके कामहिं॥
मृगन मारि काननते ल्यावै। वेचिमांस सो सुतन जियावै॥
एक दिवस आहेर सिधायो। देखन एक जन्तु नहिं पायो॥
शोचवश जियभयो निराशहि। बालकसबविधि परेउपासहि॥

मृगी एक देखी तबहिं, गर्भ सुदिनन प्रमाण।
हर्षित होइ व्याधा चल्यो, साध्यो शारँग बाण॥

पश्चिमदिशा जाल दै आयो। उत्तरदिशिसोंअनल लगायो॥
पूरबदिशा श्वान इक कीन्हयों। दक्षिणदिश।फाँकशरदीन्हयों॥
चहुँदिशि घेरी देखिकै आयो। कतहुँदिशि निर्वाह नपायो॥

पश्चिमगये जाल में परिये। उत्तर गये अग्निमें जरिये॥
पूरब गमने श्वान पछारै। दक्षिण गये बधिक मोहि मारैं॥
प्रसवकाल खड़ निकटहि आयो। उदरमध्यसुतव्यथाजनायो॥
करुणा करै मृगी यह भाखै। दीनबन्धु बिन को मोहि राखै॥
तृणवन चरौं करौं जलपाना। अपनो मांस बैर सब जाना॥
अहो कृष्ण सन्तन सुखकारी। दयासिन्धु मैं शरण तुम्हारी॥
अब तुम दया करहु जगनायक। यहिअवसरप्रभुहोहु सहायक॥

घूमत है मन भँवरमें, दुखकी नदी अथाह।
चहुं ओर सङ्कट परयो, हरिके हाथ निबाह॥

जब यहिभांति मृगी अकुलानी। दीनबन्धु यह रचना ठानी॥
बनमें मेघ घुमरि करि आयो। बरषि नीर तब अनल बुतायो॥
पवन तेज सब जाल उड़ायो। श्वानहिझपटिव्याघ्रलैखायो॥
तड़प्यो वज्रव्याध शिर परयो। चहुं ओर प्रभु रक्षा करयो॥
दीनदयालु राखि तेहि लीन्हयो। सुखतेमृगीप्रसवतबकीन्हयो॥
बधिक जबै आयो नहिभवनहिं। सुतसमेन नारीकि दगवनहिं॥
द्विज भोजन तब सुनिकै धायो। सोते तब याचका लायो॥
पञ्च पुत्र तब देख्यो नयनहि। शबरीते तब पूछेहु बयनहि॥
कहा नाम तुम मोहि सुनावहु। कहिउत्तम कुमदि बरस गवावहु॥
कुन्तीनाम मोहि द्विज राख्यो। स्वामीनाम पाण्डु तिन भाख्यो॥
सुतको नाम युधिष्टिर अहई। दूजो भीमसेन यह कहई॥
तीजो अर्ज्जुन सरिस सोहायो। नकुल और सहदेव कहायो॥

तब म हर्षित भई वहु, बैस सखी सुनु बात।
पति सुत एकै नामहै, हम तुम भयो सँघात॥
उत्तम भोजन सरिस जेंवायो। सुतन समेत सेज बैठायो॥
शकुनीसुत उलकातेहि नामहिं। दुर्योधन पठयो यहिकामहिं॥
मध्य द्वारमें अनल लगायो। दृढ़ करि वज्रकपाट दिवायो॥
पसरी अग्नि लच्च भिहलाने। बाढ्यो धूम सकल अकुलाने॥
चुइकै लाख देहमों परई। उधिरै त्वचा वह्नि सब जरई॥
कृष्ण कृष्ण हम सबन पुकारी। दीनबन्धु हम शरण तुम्हारी॥
कह्यो भीम क्रुद्धित सहदेवहि। तैं नीके जानत है भेवहिं॥
भीम कीजिये कहा हमारो। बलते यह गहि खम्भ उखारो॥
विदुर सुरँग कीन्ह्यों निर्मानहिं। धर्म्मशरीर नीति सब जानहिं॥
भीमसेन गहि खम्भ उखारो। देख्यो उत्तम पन्थ सवांरो॥
वहि मारग सब मिलि धसे, आतुर कीन्ह्यों गौन।
गदा भूलि आये तहां, भीम गयो फिरि भौन॥
लै कर गदा चलन जब ताक्यो। धरिकै देह अग्नि तब हांक्यो॥
सप्तजिह्व देखत भय पायो। भीमसेन तब विनय सुनायो॥
आपु समान तीनिसौ देहौं। भाषत सत्य समय जब पैहौं॥
द्वारावति महँ रहे बनवारी। सुखशय्यासँगरुक्मिणि प्यारी॥
तातिसमीर अङ्गमें लागी। भीष्मसुता नींदसों जागी॥
अहो नाथ यह कारण कहिये। शय्या अग्नि आंचते दहिये॥
हँसि प्रभु कह्यो मौनह्व रहिये। गुप्त बात काहुहि नहिंकहिये॥

लाख भवन कुरुनाथ सँवारयों । पांडुतनय हम जरत उवारयों ॥
अनल आंच आपनेतनु लीन्ह्यो । उनसबकोनिवाहकरदीन्ह्यो ॥
कृष्ण सहायक चितमें धरहू । हे सुत शोच काज क्यहि करहू ॥

जरत उबारयो वह्नि ते, सदा भक्तको लाज ।
सवलसिंह चौहान कह, शोच करहु क्यहि काज ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

करिभोजनशयनहिंसनदीन्ह्यों । प्रातहोत रणउद्यम कीन्ह्यों ॥
पहिरि सनाह खड़्ग कटि बांधे । हर्षित बदन चल्यो शर साधे ॥
दोऊदल रणभूमिहि आये । हांक मारि पायक गण धाये ॥
रहरहु कहि कृपाण नव खोलहिं । मारतहांकपदादि सुडोलहिं ॥
वजे निशान भयो आघाता । कोउ नहिंसुन केहुकरि वाता ॥
पेलि गयन्द महाउत आये । पर्वत मनहुं भूमिपर धाये ॥
असवारहिं असवार संभारहिं । सन्मुख जुरेखड्ग शिर झारहिं ॥
रथी रथी सों युद्ध लगायो । क्रुद्धित है बहु बाण चलायो ॥
क्षत्रियसकल करहिं संग्रामहिं । जूझहिं स्वामिधर्मके कामहिं ॥
कुरुक्षेत्रमें प्राण गवांवहिं । चढ़िविमानसुरलोकसिधावहिं ॥
नन्दिघोष ओपतिरथ चाल्यो । होलोधरणिशेष शिर हाल्यो ॥

भीषम सों अर्ज्जुन जुरे, कीन्ह्यो धनु टङ्कोर ।
दोऊ दल चकित भये, जनु घुमरो घनघोर ॥

भीषमसों अर्ज्जुन यह भाख्यो। चारिदिवस अपनो प्रणराख्यो॥
दशसहस्र नितक्रम रथ मारयो। दैकर शङ्ख भवन पगु धारयो॥
यहि विधि करौं धनुषकर धारण। सकहु न आज सेनसंहारण॥
भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ। कीजे जो सोहैं पुरुषारथ॥
साखी आप अहैं यदुनन्दन। दशसहस्ररथ करौं निकन्दन॥
यह कहि धनुष हाथ दृढ़ठान्यो। पञ्चविशिखशायकसन्धान्यो॥
निशितविशिख गङ्गासुतमारयो। अर्ज्जुनते शरकाटि निवारयो॥
शायकविंश विजयनर जोरयो। शन्तनुसुतबीचहिशरतोरयो॥
दुहुँवञ्अति विशिख प्रहारहिं। जिमिजलधरवर्षतजलधारहिं॥
बहुत युद्ध रण समता जान्यो। पारथ अग्निबाण सन्धान्यो॥

प्रकट अग्नि बानर चलौ, झपटत लपट कराल।
गज रथ हय पद्चर जरत, कौरव कटकबिहाल॥

भीषम वरुणबाण कर लीन्हयो। ताते अग्नि निवारण कीन्हयो॥
पांडवदल बूड़त सब जान्दो। अर्ज्जुन पवन बाण सन्धान्यो॥
पवन तेज सब नीर सुखायो। ध्वजा टूटि धरणीपर आयो॥
भीषम तज्यो सर्पके बानहिं। नागन मरुत कियो तव पानहिं॥
धाय डसें सब विषधर कारे। यहि विधि बहुत सैन्य संहारे॥
अर्ज्जुन वरही बाण चलाये। मोरन पकरि सर्प सब खाये॥
भीषम अन्धकार शर छाजे। देखत सकल पच्छिगण भाजे॥
अन्धकार भो कछू न सूझै। अपनो पर कोऊ नहिं बूझै॥
हिनअरुअहिनदेखनहिपावहिं। हांक मारिकर आप जनावहिं॥

गजरथ हयपदातिसबधावहिं । अभिरहिंगिरहिंपन्थनहिं पावहिं ॥
पांडव सैन्य देखि नहिं पायो । तव पारथ रविवाण चलायो ॥
भानुतेज कीन्ह्यो तमनाशहि । पांडव दल पायो परकाशहि ॥

मार्तण्ड मण्डल उग्यो, देखत अतिहि प्रचण्ड ।
तब अर्ज्जुन यहि विधिदियो, भीष्मबाहु कोदण्ड ॥

गङ्गासुत क्रुद्धित भयो मनमें । शर मार्‍यो पारथउर रनमें ॥
अष्टबाण तब यहि विधिजोरे । घायलकिय रथचारिउ घोरे ॥
सप्त विशिख मार्‍यो हनुमन्तहि । सत्तरिशर बेध्यो भगवन्तहि ॥
विंशति शर रथ ऊपर मार्‍यो । चाके चारि धरणिमें डार्‍यो ॥
लताजन्ह प्रभु अश्वहि मार्‍यो । महाकष्टते रथहि निकार्‍यो ॥
अर्ज्जुनदेखिक्रोधजिय बाल्यो । तीक्षण शर निषङ्गते काल्यो ॥
भीषमके उर मध्य प्रहारा । बहे प्रवाह रुधिरकी धारा ॥
चारि बाण छूटे अति पायल । ताते भये अश्व रथ घायल ॥
तीनिबाण सारथिपर लायो । एकबाण ते ध्वजा गिरायो ॥
पारथ यह पुरुषारथ कीन्ह्यों । भीषमकोपि हांकि रथ दीन्ह्यों ॥

अर्ज्जुन रण इस्थिर रहो, रक्षा कीजै मैन ॥
आणु सुदृढ़ जीतो गहो, प्रीतम पङ्कजनैन ॥

यहकहि तीक्षणबाण चलायो । शर सों नन्दिघोष रथ छायो ॥
पांडुतनयअसविशिखपवांर्‍यो । आवतशतयककोटि निकार्‍यो ॥
भीषमके शर मारि गिरायो । तब अर्ज्जुन शतबाण चलायो ॥
मारत शर शर सों शर खण्डित । दोउ जुरे समर रणपण्डित ॥

भीषम पर्वत शर सन्धान्यो। देखि देव सब शङ्का मान्यो॥
चलें पहार सके को भाषन। शतते सहस सहसते लाखन॥
लक्ष पहार गगनमें धायो। भादों मेघ उमहि जनु आयो॥
शब्द अघात होत हैं कैसे। सागर मथत कुलाहल जैसे॥
पांडव दल त्रासित ह्वै भागे। हा हा शब्द पुकारन लागे॥
नन्दिघोष राख्यो जगवन्दन। भीमरु रहे सुभद्रानन्दन॥
तीनमहारथि रणमहँ गाजैं। सहित नरेश सकल भट भाजैं॥
अन्धकार यहि विधिते छायो। अर्जुनकृष्णदृष्टिनहिं आयो॥

सुरगण हा हा शब्द कृत, भयो घोर संग्राम।
पारथ शर शारँग गहहु, कहे आपु सुखधाम॥

साधि बाग राख्यो हरि घोड़े। अर्जुन वज्रबाण गुण जोड़े॥
गिरिते भयो वज्र तव दूनों। फोरि पहार कियो तब चूनों॥
ऐसे वज्रबाण तब छूट्यो। लक्ष पहार छार सम फूट्यो॥
विबुध लोग देखत सुख पायो। सेना सकल समरमहि आयो॥
पुष्पमाल सुरकन्या डारहिं। नन्दिघोष रथ सरस सवांरहि॥
जयजयशब्द गगनमहँ बोलत। चढ़े विमान अनन्दित डोलत॥
भीषम निरखि क्रोधउर छायो। पारथसों कछु वचनसुनायो॥
अब अपनो दल रक्षा करिये। सावधान कोदण्डहि धरिये॥
लब सन्धान विपुलशरत्याग्यो। सहससहस शर छूटनलाग्यो॥
गङ्गाननय तेज संभारयो। अर्जुन काटि भूमिमहँ पारयो॥
भीषम चहहिं सैन्य संहारण पारथ प्रणरक्षाके कारण॥

नयन पलक लागननहिंपावहिं । श्रमजलटूटिनयनपरआवहिं ॥
शर सन्धान बात नहिं पायो । बाणन वृष्टि महाझरि लायो ॥
दशसहस्र कृतखण्डितस्यन्दन । कियो शङ्खध्वनि शन्तनुनन्दन ॥
पारथ कह्यो सुनहु यदुराई । भीषम किमि यह शङ्ख बजाई ॥
वध्यो सैन्य माधव यह भाख्यो । गङ्गासुत अपनो प्रण राख्यो ॥
गज रथ हय पदाति सब जूझे । रुण्ड मुण्ड कछु जात न बूझे ॥
अर्जुन लखि अचरज करिमान्यो । महावीर भीषमकहँ जान्यो ॥
संध्या जानि रथहि पलटायो । कौरवदल सब भवनहिं आयो ॥

नन्दिघोष रथ फेरिकै, पारथ कीन्ह्यों गौन ।
सबलसिंह चौहान कह, सहित राधिकारौन ॥

इति नवम अध्याय ॥ ९ ॥

सकल सैन्य विश्राम सो कर्‍यो । खान पान कर्महि अनुसर्‍यो ॥
दुर्योधन भीषम पहँ आये । बैठि वचन यहि भांति सुनाये ॥
पांच दिवस कीन्हें संग्रामहि । पांडव कुशलगये निजधामहि ॥
तव बलनाथ जगत सब जानत । देव दनुज गन्धर्व बखानत ॥
क्षणमां पांडव सकहु सँहारण । आप दया कीजै यहि कारण ॥
सुत भीषम कटुवचनसहो अति । पूर्वकथा अब सुनहुमहीपति ॥
नन्द भवन जब रहे मुरारी । धेनु चरावत अतिहितकारी ॥
सुरपति यज्ञगोपसब कीन्ह्यो । सोहरि मेटि शैलकहँ दीन्ह्यो ।

यह सुनि देवराज दुख पाये। प्रलयकालके मेघ बुलाये॥
उठी घटा वारिद घहराने। देखत ब्रजवासी अकुलाने॥
कृष्ण कृष्ण कहिसबनपुकारी। अहो नाथ हम शरण तुम्हारी॥
तब हरि गोवर्द्धनहिं निहारयो। भुजबल पकरि पहारउपारयो॥
बायें करपर राख्यो मन्दर। यहि विधि नाश्यो गर्व पुरन्दर॥

सप्त दिवस झरि लाइकै, वर्षा घोर अपार॥
ग्राम गोप रक्षा कियो, करसों धरयो पहार॥

ते प्रभु हैं पारथ रथ-सारथ। कहो कहा कीजै पुरुषारथ॥
वधौं कालहि पाण्डव परतक्षक। जो नहिंहोइ कृष्णरणरक्षक॥
होत प्रभात दोउदल सज्जित। शब्दअघात दमामसुबज्जित॥
भांति भांति बेरख फहराने। राजहंस जिमि गगन उड़ाने॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये। क्षत्रिय सकल क्रोध करि धाये॥
महारथी सब बड़े धनुर्धर। सन्मुख जुरे गहे कर धनुशर॥
ऐसे विशिख वृष्टि शर कियऊ। शरके छांह भानु छिपिगयऊ॥
कोउ भट शेल शूल परिहारहिं। कोऊ खड्ग शीशपर मारहिं॥
गदा अपर मुद्गर कर लीन्हयों। ताते मारु भयङ्कर कीन्हयों॥
कोउ भूप गहि खञ्जर चोखे। वाहत जहां रहत नहिं मोखे॥
तब सहदेव खड्ग निजकर धरि। धर्मराजहित हतत सैन्यअरि॥
छत्रसमेत वीर सुतअन्धहि। भ्रुकुटीसहितकाटगजकन्धहि॥

यहिविधिते सहदेव रण, कीन्हेंउ गीध मशान।
धायो शकुनी नाद करि, साधे कर धनुबाण॥

लघुसन्धान विशिख लयमारयो । ते सहदेव फेरि परतारयो ॥
तव पारथ कीन्हयो असवारी । लागे करन युद्ध अति भारी ॥
सप्त नराच निशित करलीन्हेउ । तेशर विद्धिमौलि परकीन्हेउ ॥
जयद्रथन्हपरु नकुलते भारथ । द्वौ भट करत महापुरुपारथ ॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धायो । तिनसों धृष्टद्युम्न रण लायो ॥
द्विभट सरस लागे शर मारन । जूझे सैन्य सहस्र अपारन ॥
द्रोण आप रथ हांकि चलायो । श्यामध्वजा रण शोभापायो ॥
वर्षहिं वाण सकै को भाषन । पाण्डवदल जूझे तव लाखन ॥
यहिविधिकृत बहु सैन्यनिकन्दन । आगे भये सुभद्रानन्दन ॥
गुरुके चरण प्रणाम जनायो । एक वार शत वाण चलायो ॥
सहस विशिख औरौ कर लीन्हें । ताते निकर सैन्यवध कीन्हें ॥

अभिमनुरण यहिविधि कियो, सैनावध्यो अनन्त ।
मारेउ तीक्ष्ण वाण ते, मतवारे मयमन्त ॥

द्रोणसुगुरु निज तेज सँभारयो । अभिमन्युहरविंशतिशरमारयो ॥
अर्ज्जुन सुत कृत शरसन्धानहिं । द्रोणललाटहन्यो दशवानहिं ॥
यहिविधिकरतसमरअति करणी । अङ्ग भेदि शर फूटत धरणी ॥
महारथी सव अपने घातहि । क्रोधित करन लगे शरपातहि ॥
भीषमपर अर्ज्जुन शर जोड़े । हांक देत हरि हांकत घोड़े ॥
सुन्दर श्याम शरीर सुहावा । पीत वसन तनु शोभा पावा ॥
नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ । भीषम कह्यो सुनहु हो पारथ ॥
वासर पञ्च कियो संग्रामहिं । सवमिलिकुशलगयेतुम धामहिं ॥

होइहै आज महाबल भारथ। पारथ समुझि करौ पुरुषारथ॥
कृष्ण देव रणको चित दीजै। पाण्डु वंशकी रक्षा कीजै॥

यह कहि भीषम क्रुद्ध ह्वै, छांड्यो तीक्षणबान।
अर्जुन हरि घायल भये, सहित वाजि हनुमान॥

चारिविशिखयहिभांतिपवांरयो। नन्दिघोष हयघोष सुकारयो॥
क्रुद्धि विजयनरधनुकरलीन्हयों। बाणवृष्टि भीषमपर कीन्हयों॥
असो बाण उर मध्य सुवेध्यो। अष्टविशिखअश्वनतनुशोध्यो॥
दश शर सारथिके उर दयऊ। शायक पञ्चकेतु ध्वजहयऊ॥
कोटि विशिख सेनापर छोड़ेउ। हयगजगिरेअमितरथ तोरेउ॥
गङ्गासुत शर वर्षत कोप्यो। पांडवचमू शरन सों तोप्यो॥
जूझे सुभट गिरे रण ओकहि। चढ़ेविमान चले सुरलोकहि॥
जयमाला सुरकन्या डारहिं। उत्तम रूप सुवेष सवांरहिं॥
यहि विधि गिरे वीर सब जेते। स्वर्ग भोग सुख पायो तेते॥
भीषम कीन्हयों सैन निकन्दन। क्रुद्धित भयो पांडुको नन्दन॥

अर्जुनकर कोदण्ड गह, रणमें यहि व्यवहार॥
कुरुसेना मरिमरिपरयो, शर छायो संसार॥

महायुद्ध करि सकै न बरणी। लक्षण सुभट खसेहति धरणी॥
उटहिंकबंध शोशबिनु धावहिं। खड्गपाणिगहिमारण आवहिं॥
यहिविधिकीन्हयोसमरभयङ्कर। मुण्डलाल बहु लीन्हयों शङ्कर॥
भोपम कह्यो धनञ्जय सुनहू। अब मेरो पुरुषारथ गुनहू॥
यह कहि नारायणशरलीन्हयो। पढ़िकेमन्त्र फोंकशर दीन्हयो॥

विद्युतद्रवशरकियोप्रकाशहि । कोटितरणिजिमिउयोअकाशहि ॥
देवलोक सब देखि डेरान्यो । पांडव दल देखत भयमान्यो ॥
बाणउदोतभयोअतिकेहिविधि । प्रलयकालवड़वानलजेहिविधि ॥
कुपित गङ्गसुत विशिखचलायो । डाटिहांकयहिभांतिसुनायो ॥
पांडव वंश न एको बारौं । सेना सहित सबै भट मारौं ॥
छूटत बाण शब्द भो भारी । पारथसों भाष्यो बनवारी ॥

सब मिलिक अस्त्रहि तजो, तब पावहु जिय दान ।
तीनि लोक नाशिय सके, यह नारायण बान ॥

अर्जुन तुमहि हमारी आनहि । त्याग कीजिये अब धनुबानहिं ॥
यहि विधिते माधव जब टेरयो । अर्जुन धनुषडारि मुखफेरयो ॥
श्रीहरि आपु कहन अस लागे । पांडवदल सब सुनहु अभागे ॥
डारहु अस्त्र गहहु जनि लावहु । वदनफेरि मुख दृष्टि देखावहु ॥
आपुकृष्णयहिभांति पुकारयो । सहित नरेश अस्त्र सब डारयो ॥
विनअस्त्रनक्षत्रिय नहिं मारहि । विमुखभयेशरनहिं संहारहिं ॥
रणमें सबहि देखि शर आयो । अस्त्रहाथ काहुहि नहिं पायो ॥
भीमअस्त्र त्यागन नहिं कीन्हें । सन्मुख रह्यो गदा कर लीन्हें ॥
श्रीपति कह्यो भीमके आगे । यह हठ तजो हमारे मांगे ॥
कह्यो भीम सुनिये जगतारण । कादरवचनकहियकेहिकारण ॥
भारत में इतनो यश लैहों । प्राण देउं पै पीठ न दैहों ॥
अस्त्र गहे भीमहि तकि पायो । प्रबल बाण संहारण आयो ॥
बाणतेज महि मण्डल छायो । नन्दिघोष हरि तजिके धायो ॥

पृष्ठि न दीन्हेउ पांडुसुत, जान्यो निपट निदान ॥
भीमहि राख्यो पेटतर, शर लीन्हों भगवान ॥
अपनोतेज आपु प्रभु लीन्ह्यों। यहिविधिबाणनिवारणकीन्ह्यों
ज्यहिविधि धेनु वत्सपर धावै। प्रीति पाइकै जठर लगावै॥
त्यहिविधितेभीमहिंप्रभुराख्यो। जयजयशब्दविबुधगणभाख्यो॥
पांडवदल देखत सुख मान्यो। तब भीषम यहि भांति बखान्यो
साधु साधु श्रीपति गिरिधारी। पांडु वंशके रक्षाकारी॥
कुन्ती सुदिन बालकन जायो। हरिसे हितू जगतमें पायो॥
भीषम वचन सुनत सुख पाये। तब हरि नन्दिघोषपर आये॥
धनुष बाण अर्ज्जुन कर लीन्हें। ते शर चोट शीशपर दीन्हें॥
करगहि पारथशरहि निकारे। दशसहस्र रथ भीषम मारे॥
शङ्ख शब्द करिकै चले, सबै आपने धाम।
सबलसिंह चौहान कह, उभय सैन विश्राम॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

धर्मराज कछु कहन सुलागे। मधुर वचन सोहनके आगे॥
भीषम कीन्ह्यो सैनसंहारण। केहि विधियुद्धकरियजगतारण॥
नारायण शर भीषम मार्‌यो। मरत भीम प्रभु आपु उबार्‌यो॥
अरु वन जाय तपस्या करिये। भीषमके सन्मुख नहिं लरिये॥
अर्ज्जुन कह्यो नृपति सुनिलीजै। निनहिंशोचक्यहिकारणकीजै॥

सब दिन प्रभु मेरो प्रण राख्यो। कथा पुरातन पारथ भाख्यो॥
पारिजात सतिभामहिंदीन्ह्यो। रुक्मिणिसुनतगहरुमनकीन्ह्यो॥
वाते सरिस पुष्प जब पावों। तब निजनाथहि वदन देखावों॥
कह्यो कृष्ण अर्ज्जुन सुनिलीजै। आपु गमन कदलीवन कीजै॥
पुष्प सुगन्धराज लै आवहु। धावहु तुरत गहरु जनिलावहु॥

कसि निषङ्ग कोदण्ड गहि, कीन्ह्यो तुरत पयान।
कदलीवन पहुँचे तबै, उदित होत ही भान॥

पुष्प सुगन्ध देखि जब पायो। तब पारथ तोड़न मन लायो॥
वानर चारि रहे तहँ रक्षक। धाय रह्यो हनुमत परतक्षक॥
मनुज एक लीन्हें धनु वानहिं। तोरत पुष्प मनै नहिं मानहिं॥
यह सुनि हनूमान चलिआयो। क्रुद्धित तासों वचन सुनायो॥
अरे किरात चोर अपकारी। यमपुरकी इच्छा तैं धारी॥
नितक्रम हम पूजा मनलावहिं। औरघुवरके शीशचढ़ावहिं॥
अर्ज्जुनसुनत क्रोध जियकीन्ह्यों। यहिविधितेहितिउत्तरदीन्ह्यों॥
तरु शाखा शाखापर डोलत। मर्कटक्षुद्रसमुक्तिनहिं बोलत॥
जे रघुनाथ इष्ट करि मानत। तिनको मैं नीके करि जानत॥
किये रहे शारँग कर धारण। कपि पषाण ढोये केहि कारण॥

शरते सागर बांधिकै, जाइ सके नहिं पार।
करत बड़ाई रामकी, कहिये कौन विचार॥

हनूमान यहि भांति बखानत। अधम किरातरामनहिं जानत॥
जिन मारेउ रावण दशकन्धर। कुम्भकर्णजिनवध्योधनुर्धर॥

वालि मारि सुग्रीव नेवाजा । लङ्का किये विभीषण राजा ॥
बांधेउ उदधि न बांधन ऐसे । दलको भार सही शर कैसे ॥
अर्जुन कह निज तेज सँभारौं । सब संसारहि पार उतारौं ॥
बांध बांधिकै मोहिं देखावहु । तौपै प्राणदान तुम पावहु ॥
पवनतनय इमि वचन सुनाये । दोऊ वीर सिन्धु तट आये ॥
जैसे मधुमाखी गण छाये । यहि विधि पारथबाण चलाये ॥
कोटिन अर्व खर्व शर छांटयो । शत योजन बाणनतेपाटयो ॥
हनूमान मन विस्मय मान्यो । नहिंकिरात अपने उर आन्यो ॥
है कोई यह वीर महाबल । कपटरूप कीन्ह्यों मोते छल ॥

मोर भारते शर चलैं, तौ त्वहि वधौं निदान ।
भार रहै दृढ़ सिन्धुमें, करि निज सखा प्रमान ॥

अर्जुन कहा बांध जो टूटै । तौ मेरो परतिज्ञा छूटै ॥
नणक रहा यहि भांति जनायो । हनूमान उत्तर दिशि धायो ॥
रोम रोम में शैल सुबांधे । कछुक अग्र कछुलीन्ह्योंकांधे ॥
यहिविधि रूपभयङ्कर कीन्ह्यों । धरणिअकाशपरतनहिंचीन्ह्यों ॥
रवि छपिगयो भई अँधियारी । योजन सहस देह विस्तारी ॥
अर्जुन अन्धकार जब देख्यो । अपनेजिय अचरजकरिलेख्यो ॥
धन्वि मिटयो तनु देखन पायो । रवि मण्डलमें शीशलगायो ॥
रूप भयङ्कर देखि डेरान्यो । सूखे प्राण विकल अकुलान्यो ॥
कौनकुबुद्धि मोहिं विधि दीन्ह्यों । हनूमानते सरवरि कीन्ह्यों ॥

परमभक्त जगमें बलभारी। जाके प्रभु रघपति धनुधारी॥
जिमि पिपीलिकहि पर ह्वै आवै। परे दीप महँ प्राण गँवावै॥
पारथ अब आतुर भयो, देखि भयानक कीश।
सुमिरण कीन्हेउ ज्ञानकरि, तुम राखहु जगदीश॥
दीनबन्धु सन्तन सुखदायक। यहि अवसरप्रभु होहुसहायक॥
श्रीहरि तब अपने मन जान्यो। परमभक्त दोऊ अरुझान्यो॥
हनू भार वसुधा नहिं सहई। शरको बांध कहौ किमि रहई॥
जो हनुमान जीति करि पावहिं। पारथको यमलोक पठावहिं॥
कृपासिन्धु यह रच्यो उपाई। जाते रहै दोउ सरसाई॥
कमठरूप जलभीतर कीन्ह्यों। शरके हेठ पीठि प्रभु दीन्ह्यों॥
अरे सबल सुनु वचन हमारो। धरत चरण अब बांध सँभारो॥
अर्ज्जुन तब सहसा करि भाख्यो। जाहु निशङ्क बांध मैं राख्यो॥
सुनि हनुमतअतिक्रुद्धितभयऊ। आय पांव शर ऊपर दयऊ॥
दबी पीठि हरि कपिके भारहि। मुखते चली रुधिरकी धारहि॥
अरुणवरण सागर निरखि, कीन्हों हनू विचार।
ऐसोको संसार मों, सहै सोर जो भार॥
ज्ञानदृष्टि धरि ध्यान लगावो। शरके तरे देखि प्रभु पायो॥
कूदि हनू तट कियो पयानो। चाहि चाहि यह भेद न जान्यो॥
मैं पशु मूढ़ अकर्महि कीह्यों। हरिकेशीशचरणनिजदीन्ह्यो।
कामरूप छांड़्यो वनवारी। आपु भये तब शारँगधारी।
हनुमतसों प्रभु कहन सुलागे। दोउ भक्त तुम परम सभागे।

प्रीति विचारहु छांड़हु रोषहि। क्षमा करहु पारथके दोषहि॥
यहिविधि हरिमिलापकरिदीन्ह्यों। आपुगमनद्वारावति कीन्ह्यों॥
हम लै आयो सुमन घनेरो। सब दिन प्रभुराख्यो प्रणमेरो॥
अर्ज्जुन कह्यो युधिष्ठिर राजहिं। आपु शोच कीजैं केहिकाजहिं॥
दृढ़ ह्वै के रणको मन लैये। मारि शत्रु यमलोक पठैये॥

मन वच क्रम जो हरि भजै, तजै औरकी आश।
सबलसिंह चौहान कह, नाहिन भक्त विनाश॥

इति एकादश अध्याय॥ ११॥

प्रात होत कीन्ह्यो असवारी। साजे सैन्य महाबलभारी॥
दोउकटक बहु बाजनबाजत। गहे अस्त्र चलिय गल गाजत॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये। मारु मारु करि सन्मुख आये॥
चतुरङ्गिनि सेना रण जूट्यो। क्रुद्धितअमितविशिखसबछूट्यो॥
शेलत्रिशूलरु शक्तिन मारहिं। मुद्गरगदा शीश पर डारहिं॥
कोतह भये कटारिन मारहिं। गिरत अन्तमहि गिरे करारहिं॥
शर धारा गजदन्तहि लागै। चिनगी उठि बहु पावकजागै॥
पायक हाथ खड्ग लै फेरत। मारत मारु मारु ध्वनि टेरत॥
दोऊ कटक लगे संग्रामहिं। कुरुपतिधर्म्मराजके कामहिं॥
मृगल घाव मारि शिर फोरहिं। जूझिपरे मुख नेकु न मोरहिं॥

सेनासब यहिविधि लरै, करैं भयङ्कर मारि।
महारथी रण हांकहीं, भिरैं प्रचारि प्रचारि॥

महावीर अतिबल शरशोधहिं । हृदयखण्ड धरणो शर वेधहिं ॥
भीमसेन बहु विशिख पँवारयो । छादितशरभारत महिकारयो ॥
लखि कलिङ्ग क्रोधित ह्वै धायो । महा मत्त गज लक्षण आयो ॥
सो वान्धव कलिङ्गके साथो । औ नवलाख महावल हाथो ॥
भीमहिं घेरि सकल शर मारहिं । शक्ति शेल तोमरन प्रहारहिं ॥
लागत क्षत अति कोप बढ़ायो । रथते उतरि गदागहि धायो ।
गदाघावगज मस्तक फोरयो । पांयन ते अनेकरथ तोरयो ॥
नृपकलिङ्ग कीन्हो हट्टानहिं । भीम अङ्ग मारेउ दशवानहिं ॥
अपरविशिखत्रयअतिवलकीन्हों । तेशरविद्धशीशरपर दीन्हों ॥
भीमसेन परतिज्ञा भाषत । रे कलिङ्ग अब को तोहिं राखत ॥
गदापवन ते सबहिं उड़ायो । सनुसहित सबनभ पहुँचायो ॥
हैं नव लक्ष सङ्ग तव हाथो । सकल करों तारागण साथो ॥

भीमसेन है नाम मम, जग परतक्ष प्रमान ।
यह मिथ्या नहिं जानियो, कोटि आन भगवान ॥

अपनो तेज कृष्ण तब दयऊ । भीम अङ्ग प्रविशत सो भयऊ ॥
अरु रण माहिं पवनगण छाये । गदा पैठि निज भाव जनाये ॥
धाये भीम गदा कर फेरत । उड़ैं गयन्द महीतड़ गेरत ॥
पवन तेज आकाश समाने । ज्यों बबूरके पत्त उड़ाने ॥
कुञ्जर सबै गगन मो लागे । कौतुक छोड़ि देव सब भागे ॥
योजन एक सैन जो लायो । गदा पवन ते सबै उड़ायो ॥
कौरवदल देखत दुख मान्यो । काल समान भीमको जान्यो ॥

पकरि शुण्ड गज सत्त चलाये । ते कुञ्जर लङ्का पहुँचाये ॥
अभिरे कनककोटि शिरफूटो । सहित शुण्ड दशनरुबटूटो ॥
बहुतक परे सिन्धुके धारहिं । पकरि मत्स्य सबकरहिंअहारहिं ॥
रवि मण्डल सो जो पहुँचायो । अजहूं फिरतगिरननहिंपायो ॥

भीम भयङ्कर गज घने, फेंके यहि व्यवहार ।
भारतके संग्रामतें, कियो सिन्धुके पार ॥

देखत द्रोण क्रोध तव कीन्हो । रहुरहु भीम हांक तव दीन्हो ॥
सहस बाण उर मध्यसो मारो । शरते तनु जर्जर करि डारो ॥
शायक छूटे जात न जाने । कवच भेदि शर अङ्ग समाने ॥
लघु सन्धान द्रोण शर मारो । अपने रथहिं भीम पगुधारो ॥
लैकरि धनु दश साधेउ शायक । द्रोणशरीर हनेउ बलशायक ॥
नकुलहि और जयद्रथ भारत । दोऊ रच्यो सरस पुरुषारथ ॥
शकुनी अरु सहदेव लराई । महायुद्ध कीन्हो प्रभुताई ॥
द्रोणपुत्र अभिमन्यु संग्रामहि । सरसविशिखछाड़तरणधामहि ॥
ऐसे शर क्रुद्धित ह्वै जोरहिं । मनुज कहा पर्वतकहँ फोरहिं ॥

षष्टिबाण अभिमनु हते, कीन्ह्यो स्यन्दन भङ्ग ।
ध्वजा सहित वै सारथी, मारे चारि तुरङ्ग ॥

कीन्ह्यो अपर रथहि असवारी । सहस बाण जोरे धनुधारी ॥
अर्ज्जुनतनयविशिखअसजोरो । द्रोणीशर निजशर ते तोरो ॥
भूरिश्रवा द्रुपद संग्रामहि । जुरे वीर अपने जय कामहि ॥

वासुदेव रथ कियो पयानो । भीषम के सन्मुख लै ठानो ॥
दोऊ वीर महा धनुधारी । लागे करन भयानक मारो ॥
दिव्यबाण अर्ज्जुन तब मारो । सहस पैग पाछे रथ टारो ॥
भीषम कह्यो धनञ्जय सुनिये । अब मेरो पुरुषारथ गुनिये ॥

श्रवण मूल आकर्षि धनु, हन्यो विशिख समरत्थ ।
तीनि पैग पाछे कियो, नन्दिघोष सो रत्थ ॥

तीनि पैग पाछे रथ आयो । साधु वचन यदुनाथ सुनायो ॥
अर्ज्जुन कह सुनिये गिरिधारी । मम उर यह संशय है भारी ॥
मैंयहिविधिनिजविशिखचलायो । सहस पैग रथको विचलायो ॥
तीनि पैग मेरो रथ आयो । साधुवचन केहि काजसुनायो ॥
हँसि भाष्यो तब शारँगपानी । पारथ तुम यह चरित न जानी ॥
जोमहं सब विबुध गगन अहहीं । ते सब नन्दिघोष महँ रहहीं ॥
मेरु समान भार हनुमानहिं । जगन्नाथकरि सोहि बखानहिं ॥
ऐसो रथ शर टारो पारथ । भीषम धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
अर्ज्जुन सुनत सत्यकरिजान्यो । महा क्रुद्ध ह्वै कार्मुक तान्यो ॥
धाये बाण तेज अति पायल । ताने भे गङ्गासुत घायल ॥
अष्ट बाण ते हन्यो तुरङ्गहि । पुनि त्रयविशिखसारथीअङ्गहि ॥

कोटि बाण अर्ज्जुन तज्यो, कीन्हों लघुसन्धान ।
चारिलच्छ चतुरङ्गदल, जूझेउ लागत बान ॥

अर्ज्जुनयहिविधिअतिबलकरो । भीषम कोपि धनुष कर धरो ॥
असी बाण अर्ज्जुन उरमारो । गज रथ हय पद्मादि संहारो ॥

यहिविधिकरहियुद्धकीकरणौ । जूझहि वीर परहिं रणधरणौ ॥
भीषम किया सरस प्रभुताई । नरके शीश मेदिनी छाई ॥
एकविशिखयहिविधितेजोरो । ताते पारथके गुण तोरो ॥
तवकपिध्वजनिजधनुगुणदीन्हो । पारथहर्षिधनुष करलीन्हो ॥
गङ्गासुत तव समय विचारो । दशसहस्र स्यन्दन संहारो ॥

शङ्खध्वनि करिकै चले, सकल आपने धाम ।
सवलसिंह चौहान कह, भारतके संग्राम ॥

इति द्वादश अध्याय ॥ १२ ॥

अपने भवन सबै मिलि आये । दुर्योधन तब भीष्म बुलाये ॥
सुनहु पितामह वचन कहौं वर । तुमते कोउ नहिं बड़ोधनुर्द्धर ॥
सप्तदिवस रणकृत जयहितयह । पांडवक्षेमसहित गे निजगृह ॥
यह कलङ्क नहिं मिटै तुम्हारा । जो न प्रात पांडव दल मारा ॥
सुनत क्रोध भीषम तनु बाढ्यो । तीक्ष्ण शर निषङ्गते काढ्यो ॥
महाकाल शर नाम कहावै । इन्द्र वज्र नहिं पटतर पावै ॥
याहि शरते पांडव दल मारौं । तब अपने भवनहिं पगुधारौं ॥
दुर्योधन सुनिकैं सुख मान्यो । जीत्यो युद्ध चित्तमें जान्यो ॥
तम्बू एक खड़ो करि दीन्हो । तामह वास पितामह कीन्हो ॥
धर्मराज बंधुन संग लयऊ । युतकमलापति निजगृहगयऊ ॥

सभामध्य बैठे सकल, द्रुपद विराट नरेश ।
मधुर वचन सहदेवते, कहेउ आपु हृषिकेश ॥

प्रात युद्ध होइ है केहि रूपहि । मन्त्री कहहु भेद सब भूपहि ॥
हँसि सहदेव कही सुनु स्वामी । तुम जानत सब अन्तर्यामी ॥
महाकाल शर भीषम राख्यो । पाण्डव वधन प्रतिज्ञा भाख्यो ॥
द्वारहि बस्यो गयो नहिं धामहिं । समुझिकौजियेयोहरिकामहिं॥
सुनतयुधिष्ठिर विस्मय मान्यो । बन्धुन सहित मुये यह जान्यो ॥
कह्योकृष्ण नृप शोच न करिये । मेरो मन्त्र चित्त निज धरिये ॥
अर्ज्जुनको मेरे सँग दीजे । छलकरि महाकालशर लीजे ॥
तब नृप कह यह बड़ो अँदेशो । किमि तुम वह शर पैहौ केशो ॥
कमलनयन नृपको समुझायो । जबतुमसबबनवास सिधायो ॥
काम्यकवन पर्णशाला छायो । दूत आनि कुरुनाथ जनायो ॥

पाण्डवबनमो हैं निकट, वचन सुनो कुरुनाथ ।
सकलकटक सँग लै चलो, भीष्मद्रोण निजसाथ ॥

गोधन धन देखन मनलायो । यहै आगमन सबहि सुनायो ॥
सुरगण सब जान्यो यह कारण । कुरुपतिजात पाण्डवनमारण ॥
सुरपति कह्यो चित्तरथ धावहु । दुर्योधनहिं बांधि लै आवहु ॥
आज्ञातै चढ़ि चल्योविमानहि । कटि निषङ्ग लीन्हो धनुबानहिं ॥
गंध्रव राय आइ तब हांक्यो । चकितु सबहि गगनसुखताक्यो ॥
यहिविधि बाण वृन्द झरिलायो । मारि सबै सेना बिचलायो ॥

अति तीक्ष्णगंधर्व शरलाग्यो। धनुगुणकट्योकर्णतबभाग्यो॥
नागफांस शर यहिविधि सांध्यो। बलते गहि दुर्योधन बांध्यो॥

अपने रथ करि लै चल्यो, गगनपन्थ महँ गौन।
त्राहि त्राहि टेर्यो विकल, सुन्यो युधिष्ठिर बैन॥

यह तोहै दुर्योधन भ्राता। अपकारी गंधर्बलियजाता॥
अर्ज्जुन कर कोदण्डहि धरिये। बन्धनमुक्त बन्धुको करिये॥
भीम कही नृप चुपकरि रहिये। भूलिबातक्यहिकारणकहिये॥
गंधर्व कियो हमारो काजहिं। चलहु राज कीजै सुखधामहिं॥
धर्म्मराज कह सुनिये पारथ। आज्ञामानि करहु पुरुषारथ॥
यहसुनि अर्जुन धनुकर लीन्हो। शायकवृष्टिअकाशहिकीन्हो॥
शरते रथ रोक्यो दिविधामहिं। गंधर्व उर मार्यो दशबानहिं॥
मनहिं विचार चित्ररथ कीन्हो। दुर्योधनहिं डारि तबदीन्हो॥
पारथ तब इमि शायक साध्यो। भूमि अकाश बाणते बांध्यो॥
दुर्योधन शरपर चलि आयो। धर्मराजको दर्शन पायो॥

लज्जित ह्वै यहि विधि कह्यो, अर्ज्जुन राख्यो प्राण।
जो इच्छा सो मांगिये, कहत सुवचन प्रमाण॥

पारथ कही सत्यदृढ़ कीजै। समय परे मांगे वर दीजै॥
एवमस्तुकुरुपति कहि दीन्हो। लज्जित गमन भवनको कीन्ह्यो
श्रीपति कह आजुइ वर लीजै। अर्ज्जुनको मेरे सँग दीजै॥
हरिअर्ज्जुन कीन्होतब गवनहि। आये दुर्योधन के भवनहि॥

कह्यो कृष्ण हम बाहर रहिये। सुनहु किरीटी यहमतकहिये॥
मुकुट मांगि नृपनों लै आवहु। तब भीषम पहँ आपु सिधावहु॥
तब अर्ज्जुन आयो नृप द्वारे। कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे॥
दुर्योधन सुनि तुरत बुलायो। अंतःपुरमहँ कपिध्वज आयो॥
आदर करि आसन बैठारे। कहहु बन्धु क्यहि काम सिधारे॥
अर्ज्जुन कह कुरुपति के आगे। पावहुं आज पूर्व वर मांगे॥
मुकुट दान मणि भूपति दीजै। अपनो सत्य पालना कीजे॥
दीन्ह्यो मुकुट गहरु नहिं लायो। मन गोविंद सुनत सुख पायो

मुकुट बांधि पारथ चले, भीषमके अस्थान।
देखत उठि आदर कियो, दुर्योधनको जान॥

भीषमकह्योजानि कुरुराजहि। आपुगमनकीन्ह्योक्यहिकाजहि॥
मांगे महाकाल शर दीजे। निजकर हम पांडववध कीजे॥
हँसि भीषम दीन्ह्यो तब बाणहिं। प्रातयुद्ध कीन्ह्यो सन्धानहि
हर्षवन्त ह्वै अर्ज्जुन लयऊ। तेहि अवसरप्रकटतप्रभुभयऊ॥
कृष्णहिं देखि भयो छल जान्यो। गङ्गासुत यहिभांतिबखान्यो॥
हे प्रभु तुम पांडवके स्वारथ। मेरो प्रण किमि कियो अकारथ॥
भारत में यश नेकु न पायो। नितप्रतितुमपारथहिबचायो॥
शिव सनकादिक अन्त न जान्यो। तुम पांडवके हाथ बिकान्यो
भक्त हेतु केशव मन भायो। बिनाभक्ति प्रभुको नहिं पायो॥
कह्यो कृष्ण भीषमके आगे। यश पैहौ रण सरस सभागे॥

अपनो प्रण मैं टारिकै, तव प्रण करौं निदान ।
भक्ति विवश लखि प्रकट कह, सबलसिंह चौहान ॥

इति त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

भीषम सुनि जियमें सुख पायो । पारथ धर्मराजपहँ आयो ॥
जिमिचातकमुखस्वातीवरष्यो । बाणदेखि पांडवदल हरष्यो ॥
दुर्योधन सुनिकै दुख मानो । प्रात होत रण कियो पयानो ॥
हर्षित ह्वै पांडव दल साजहिं । भेरि दुन्दुभी मारु बजावहिं ॥
दल चतुरङ्ग साजिकै आयो । युद्ध भूमिमें शोभा पायो ॥
प्रथम पेलि दीन्ह्यो गजमत्तहि । गज रिपु दन्तिभयो चौदन्तहि
पद्चर धाये गांसी दमकै । फेरत फरी खड्ग कर चमकै ॥
चढ़े तुरङ्ग शेल कर लीन्ह्यो । महामारु असवारन कीन्ह्यो ॥
मारत शूल सनोवा टूटहिं । वहते घाव खड्ग शिर फूटहिं ॥
मुरैं न लरैं खेत मो ठाढ़े । महाशूर सब जियके गाढ़े ॥
रथी रथी करिवे रण लागे । चलत न एक एक के आगे ॥

महारथी रण हांकदै, करहिं युद्ध यहि रूप ।
जोर जोर असक्कै सबै, भिरै भूप सों भूप ॥

सहस लाख कोटिनशर छूट्यो । बाणन बाण बीचही टूट्यो ॥
यहि विधि युद्ध करैं रण सरसैं । बहुविधिवाण बुन्दसम बरसैं ॥
काढ़हिं धनुष क्रोध के रणमें । वाहैं शेल हांक दै छणमें ॥

रथते उतरि गदा लै धावहिं। आगे परहिंसा मारि गिरावहिं॥
तोमर फरसा कोउ प्रहारहिं। शक्ति शेल मुद्गर कोउ मारहिं॥
जूझिगिरे भारत रण धामहिं। आनन्दितचढ़िचलेविमानहिं॥
अर्ज्जुन रथ हांक्यो कंसारी। जोती गहे पिताम्बरधारी॥
श्यामशरीर कमलदललोचन। सदा भक्तकर शोच विमोचन॥
नन्दिघोष रथ आगे आयो। तव भीषम यहि भांति जनायो॥
मुकुटबांधि कीन्हो मोसों छल। आजु जानिहो पारथको बल॥
जो हरि के कर अस्त्र गहावों। तो शन्तनुसुत जगत कहावों॥

धर्म्मराज कुरुपति सुनो, भीषम भाष्यो बैन।
आजु गहावों अस्त्र हरि, देखत दूनो सैन॥

गङ्गा गर्भ जन्म जो लीन्ह्यो। तो यह प्रण भारतमें कीन्ह्यो॥
प्रभुको प्रण टारों परतच्छ। आजु करों अपनो प्रणरच्छ॥
यहिविधि बाणवृन्द झरि लावों। शोणित नदी अथाह बहावों॥
कृष्ण हाथ नहिं अस्त्र गहावों। तो मैं वास अधोगति पावों॥
कठिनबाण शारँगगुण जोरों। शरसागर पांडवदल बोरों॥
भीषम यही प्रतिज्ञा ठान्यो। द्वौ दलअतिअचरज करिमान्यो॥
यह सुनि देवलोक सब आये। कौतुकको विमान सब छाये॥
प्रथम कियो है प्रण जगतारण। हमनहिंकरें धनुष करधारण॥
प्रभु पारथको सारथि अहई। भीषम अस्त्र गहाव न कहई॥
यह चरित्र देखत सब मुनिगण। रणमें आजु रहे काको प्रण॥

भीषम तब यहि विधि कह्यो, करिहौं युद्ध अनन्त ।
पारथ रण इस्थिर रहो, सारथि श्रीभगवन्त ॥
यह कहि लगे चलावन शायक । दोऊ भट रणमहँ सबलायक॥
अर्ज्जुन बाण हाथ ते छूटहिं । मानहुँ वज्र गगनते टूटहिं ॥
लघु सन्धान कियो तब पारथ । निज शायक छायो सब भारथ॥
दशदिशि सब बाणनमय सूझै । निज पर नाहिंन कोऊ बूझै ॥
यहि विधि शर आकाशमें छायो । रविमण्डलदेखननहिंपायो ॥
देखि युद्ध भीषम रिस बाढ्यो । तीक्ष्ण शर निषङ्गते काढ्यो ॥
ऐसे सबल बाण गुण जोरे । क्षणमहँ अर्ज्जुनके शर तोरे ॥
लाखन अर्ब खर्ब शर कोप्यो । पांडव दल बाणनते तोप्यो ॥
वीर सकल शर छांह समाने । दृष्टि न परत जात नहिं जाने ॥
क्रुद्धितयहिविधि कृतसन्धानहिं । जलथलसूझिपरतसबबानहिं॥

महाघोर संग्राममें, अर्ज्जुन धनु सन्धान ।
सब शर काटे निमिषमो, तम खण्ड्यो जिमि भान ॥

अर्ज्जुन पाणि निशित शर छूटत । भेदि सनाह वपुषमहँ फूटत॥
सारथि उर शतशायक मारे । विंशतिविशिखकेतुध्वज पारे ॥
अश्वनतनु यहिविधि शर लागे । थकित भयेपगचलत न आगे॥
लक्ष नराच कटक पर डारयो । ते शर चोट मौलि अनुसारयो ॥
तब भीषम निज तेज सँभारयो । सहसबाण अर्ज्जुन उर मारयो ॥
कोटिविशिखलाग्योहनुमानहिं । षष्टिनराच हन्यो भगवानहिं ॥

गङ्गतनय शर अपर सु जोरं । घायल नन्दिघोष के घोरं ॥
शर अनेक सेना पर प्रेरा । पांडव कटक हत्यो बहुतेरा ॥
सहस एक राजा गिरयो, सैन सुबध्यो अनन्त ।
अरुण वर्ण सब देखिये, खेलत मनहुँ वसन्त ॥
भीषम अमित तेज महि साच्यो । रुण्ड मुण्ड महि भारतमाच्यो
महाशूर रण जूझत घायल । मनहुँ नाद मोहे करशायल ॥
यहिविधिकृतअतिरणभयकारी । अर्जुनसों तव कह्यो मुरारी ॥
अब अपनो दल रक्षन कीजे । दृढ़ ह्वै शर कोदण्डहि लीजे ॥
सुनि पारथ लीन्हयो करधनुशर । प्रातसमय जनुउदयदिवाकर ॥
अति क्रुद्धित ह्वै कृतसन्धानहिं । हृदयताकिमारयोबहुवानहिं ॥
भेदि सनाह अङ्गमें लाग्यो । क्रोधअनलउर अन्तर जाग्यो ॥
भीषमविशिखनिशितअतिछूटयो । अर्जुनवपुप भेदिके फूटयो ।
घायल भयो सह्यो सव वानहिं । ब्रह्म अस्त्र तव कृत सन्धानहिं ॥
वाण उदोत तेज महि छायो । देवलोक लखि अति भयपायो ॥
पारथ अतिशय बल कियो, कैश्चा अस्त्र सन्धान ।
चलत तेज अति उदित कृत, मनहुँ दूसरो भान ॥
कौरवदल अति देखि सकान्यो । भीषम ब्रह्म अस्त्र संधान्यो ॥
अस्त्र अस्त्र सों भयो निवारण । तब लाग्यो तीक्ष्ण शरमारण ॥
अयुत वाण हनुमन्तहि मारयो । गरुड़ध्वजतनु सहसप्रहारयो ॥
अर्जुन अङ्ग वाण बहु मारो । शरते तनु झांझर करि डारो ॥
सहितवाजिस्यन्दनकरिघायल । थकितभयेपदचलननपायल ।

भीषम बाण दृष्टि अति लाग्यो । नन्दिघोष रथ शर ते छायो ॥
तीच्णबाण श्याम उर मारो । पीतवसन रँग अरुण सँभारो ॥
क्रुद्धित जलजनयन रतनारे । चक्रपाणि कर चक्र सँवारे ॥
रथ ते उतरि चले नारायन । धाये आप उघारे पायन ॥
सजल श्यामघन अङ्ग सुहायो । मरकतमणि पटतर नहिं पायो॥
मकराकृत कुण्डल मनमोहे । डोलत झलक कपोलन सोहे ॥

गहे चक्रधर चक्र कर, चक्रित चाहत खेत ।
चञ्चल धावनि चरणको, भीषमके प्रण हेत ॥

करमें चक्र सुदर्शन राजत । कोटिभानुद्युतिसरिसविराजत ॥
श्रमजलरुधिर चलत यकसङ्गहि । शोभित अंग अनूपम रङ्गहि॥
विश्वम्भर क्रुद्धित ह्वै धायो । भूमि हली फण शेष उठायो ॥
यहिविधिप्रभुआतुरकियगवनहिं । फहरतपीतवस्त्र लगि पवनहिं॥
गिरो छूटि अम्बर रण धरणी । कबि पै छबि कछुजातनवरणी ॥
कौरव दल देखत सब डरप्यो । मानहु वाज विहँगपर फरक्यो ॥
तब अर्जुन छांड़ो निजस्यन्दन । धाइ जाइ पकरो जगवन्दन ॥
अहोनाथ इस्थिर ह्वै रहिये । आपु अस्त्र क्यहि कारण गहिये ॥
मोते अब कह भय जगतारण । कर गहि चक्रचलो तुम मारण॥
यहई अयश जगतमें पायो । प्रभुकर भीषम अस्त्र गहायो ॥

प्रभु अपनो प्रण टारिकै, कियो मोर जपमान ।
भीषम प्रण स्वारथ कियो, भक्त वश्य भगवान ॥

चरणकमलगहि पारथ फेरयो । देखि एह गङ्गासुत टेरयो ॥
साधु साधु श्रीपति वनवारी । सदा भक्त प्रण रक्षकारी ॥
धनुष डारिकर कियो प्रणामहिं । प्रस्तुतिकरनलगेवनश्यामहिं ॥
तव भीषम यहि विधिते भाख्यो । दीनवन्धु मेरो प्रण राख्यो ॥
विप्र सुदामा दारिद भञ्जन । भक्तवश्य गोपिन मनरञ्जन ॥
गणिका व्याध गीध गज तारण । गोरक्षक गोवर्द्धन धारण ॥
ध्रुवको अचल कियो परतक्ष । द्रुपदसुता की लज्जारक्षक ॥
महाकष्ट प्रह्लाद उवारो । निकसि खम्भ दनुजेशहि मारो ॥
रावणकुल समेत वध कीन्हो । लङ्काराज्य विभीषण दीन्हो ॥
शाप शिला गौतमकी नारी । परसत चरण अहल्या तारी ॥

ब्रह्मा शङ्कर देव मुनि, करत चरण निज ध्यान ।
सवलसिंह चौहान कह, भीषम कियो वखान ॥

इति चतुर्दशोऽध्याय ॥ १४ ॥

जय वृन्दावन विपिन विहारी । श्रीपति श्रीधर श्रीवनवारी ॥
चढ़े आइ हरि पारथ स्यंदन । जोती गहे आप जगवन्दन ॥
अर्ज्जुन कोपि धनुष कर लीन्हो । इन्द्रअस्त्र सन्धानहिं कीन्हो ॥
कौरवदल सन्मुख जो पायो । क्षणमेंअर्ज्जुन मारि गिरायो ॥
महायुद्ध कीन्हो नर रूपहि । मारो समर पञ्चशत भूपहि ॥
सोहत मुकुटन अति मणिपूरी । लोटत धरणि शीशते भूरी ॥

लागत उर अर्जुन के बानहिं । कुरुदलरणमरिखसोनिदानहिं ॥
गङ्गासुत धनु क्रुद्धित लयऊ । गुड़ाकेशपर शर भरि कियऊ ॥
यहिविधिलगे हनन शरतोखा । पाण्डवदलसहसनगिरेमहिरण
दससहस्त्ररथ भीष्म निखण्डो । भवनचलतशंखध्वनि मंड्यो ॥

कुरु पाण्डव फिरिके चले, आये निज निज धाम ।
धर्मराज बन्धुनसहित, सङ्गलिये घनश्याम ॥

भोजन को सबही मनलायो । द्रुपदसुता यहि भांतिसुनायो ॥
धर्मराज दुर्योधन भूपहि । आजुयुद्धकीन्होक्यहिरूपहि ॥
तवपारथ यहिभांति वखानहिं । हरि मेरो कीन्हो अपमानहिं ॥
रण में भीषम को प्रण रख्यो । दीनबन्धु रण अस्त्रहि गख्यो ॥
द्रुपदसुता यहि भांति वख्यान्यो । पारथ तुम यह भेद न जान्यो॥
सदा भक्त की रक्षा कारण । ब्रह्मरूप कीन्हो प्रभुधारण ॥
शिव सनकादिक अन्त न पायो । शबरीके जूंठे फल खायो ॥
महिमा अगम अगोचर मोहन । डोलत सदा भक्तके गोहन ॥
बलिराजा हनुमान सयाने । चरणकमलमनमधुपलोभाने ॥
कह्यो द्रौपदी सुनिये पारथ । भीषम जन्म भक्तमय स्वारथ ॥

धन्य धन्य ते साधु तनु, भजत सांवरे अङ्ग ।
सुखदुखसम्पति विपतिमें, होत नहीं चितभङ्ग ॥

सुनि माधव अतिशय सुखपायो । करिभोजनशयनहिंमनलायो॥
होत प्रभात सजें दो अनी । बजत दमाम भई ध्वनि घनी ॥

वीर सकल रणधरणिहि आये । बँधे अस्त्र कर धनु शर लाये ॥
सिंहनाद करि हांक सुनाये । महाशूर सन्मुख ह्वै आये ॥
लैकर धनु शर कृत सन्धानहिं । क्रुद्धितलगे पँवारन बानहिं ॥
कुञ्जर पेलि महावत दीन्हो । आगेपरे ताहि यम लीन्हो ॥
महावीर सब विरद सुबांधे । अरुझे ठांव ठांव रण कांधे ॥
दलचतुरङ्ग करत रण घोरहि । मण्डे समर जोरसों जोरहि ॥
तेज तुरङ्ग नकुल त्यहि राज्यो । अतिभयदायक संगरसाज्यो ॥
महारथी बहु शर हत करहीं । सहससहसभटरणयहिपरहीं ॥
भीषम पर अर्जुन रण साजो । हांक देत हरि हांकत वाजी ॥
जोती गहे पतितके पावन । वर्षत शर मानहुँ जलसावन ॥

पारथ कर कोदण्डगहि, छायो विशिख अपार ।
मत्तदन्ति रथ हय गिरे, पदचर विविध प्रकार । ॥

तब भीषम निजकरधनुलायो । अतिशयसरिसनराचचलायो ॥
तीक्ष्ण बाण प्रहारण करई । पाण्डव दल बहु भट संहरई ॥
भीषम उर निज तेज सुधारयो । सहस नरेश युद्ध महि मारयो
वीर सबै लागे शर मारन । तब आये कोता हथियारन ॥
शूल गदा मुद्गरन प्रहारहिं । सन्मुखआयखड्गशिरझारहिं ॥
अभिरहिं सुभट कटारिन मारहि । पकरिकेशरणचपरिपछारहि॥
द्रोण कर्ण कुरुपतिके साथहि । यहिविधि लरैं अस्त्रगहिहाथहि
इतते तबहिं वृकोदर धायो । गदा घाव बहुमारि गिरायो ॥

वहुतक मौंजि पांवते टारो। बहुतकगहिअवनीपरडारो॥
अरु वहुस्यन्दन चूरण कीन्हेउ। हयगजफेंकि व्योमपथदीन्हेउ॥

घोर युद्ध यहिविधि कियो, भीम भयङ्कररूप।
सहित सेन रणमें वधे, प्रबल तीनिशत भूप॥

नन्दिघोष हांकत जगवन्दन। अर्जुन कीन्हेउ सैननिकन्दन॥
तीक्षण बाण क्रुद्ध कै मारो। तीनि सहस्र नृपति संहारो॥
मरिभटपरो धरणि सब छायो। रणमें रुधिरनदी बहिआयो॥
शोणितनदी जाति नहिं वरणी। मनअथाह हमका वैतरणी॥
भीमसेन गजराज सँहारे। परे समर सब भये करारे॥
धवल छत्र चमकत हैं कैसे। बाढ़त नदी फेन जल जैसे॥
शक्ती झलक मीनसम चमकैं। कटिनढालकच्छपसमदमकैं॥
केश स्यवार सरिस अरुझाने। मृतक तुरङ्ग ग्राह सम जाने॥
कटे भुशुण्डि सरिस छवि पाई। मनहुँ भूमि जलमें उतराई॥
रुधिर नदी यहि रूप भयङ्कर। नाचत महा मगन ह्वै शङ्कर॥

भैरव भूप पिशाचगण, योगिनि मङ्गलचार।
अन्त्र लपेटहिं कण्ठमें, सरिस विराजत हार॥

कोउ गजमुक्ता लै आवहिं। एक एक के श्रुति पहिरावहिं॥
नृत्यत भूत पिशाच सयाने। रुधिर मांस सब खाइ अघाने॥
जम्बुक गण आनन्दित धावहिं। मांस खाइ मनमें सचु पावहिं
गगन उड़हिं पक्षीगण जेते। रणमें भये तृप्त मन तेते॥
घायल मग्न सु भये रुधिरसरि। उठेसँभरिपुनिशोक सिन्धुपरि॥

शूरन भीभ कुण्ड लै आवहिं । पीवहिंरुधिरयोगिनीगावहिं ॥
उठिकबन्ध धावहिं पुनिमाथहि । मारनआवखड्गगहि हाथहि॥
भीषम सों अर्जुन बलभारी । कीन्हेउअतिभारतभयकारी ॥
अरुणवदन देखत दिन भूल्यउ । जिमिवसन्तकिंशुकतरुफूल्यउ ॥
भूत पिशाच सुव्याह बिचारहिं । धरहिंटोप शिरमौरसँवारहिं ॥

सबलसिंह चौहान कह, अर्ज्जुन कृत रण खेत ।
गावत चौंसठि योगिनी, नाचत हैं सब प्रेत ॥

इति पञ्चदश अध्याय ॥१५॥

गोधन मण्डल मण्डप छायो । जम्बुक सकल बराती आयो ॥
यहिविधि करत कोलाहलभारी । भैरव सहित देहिं करतारी ॥
तब पारथ सन्धान्यउ धनु शर । गङ्गासुत मारेउ उर शतशर ॥
अरुअतिनिशितअमितशरडाट्यो । रथको ध्वजा पताका काट्यो॥
तब भीषम दृढ़कर धृतधनुशर । होनलग्यो अतियुद्ध परस्पर ॥
दशशायक अर्ज्जुनतनु साध्यो । सप्तविशिखयदुपति अवराध्यो ॥
अष्ट नराच अपर गुण नाध्यो । नन्दिघोष हय रथ छत साध्यो ॥
लाग्यउ षष्टिविशिखहनुमन्तहि । दशसहस्र रथ तवहृतवन्तहि ॥
दै जय शङ्ख चल्यो गङ्गासुत । पाण्डदलसबचले भवनउत ।
दुर्योधन सब सेना लीन्हे । अपने भवन गवन तब कीन्हे ॥

धर्मराज फिरिकै चल्यो, आगे कमलाकन्त ।
सबलसिंह चौहान कह, महिमा अगम अनन्त ॥

करि विश्राम अस्त्र सब खोले। नृपतियुधिष्ठिर माधव बोले॥
चले सकल भोजनके कामहिं। बैठे द्रुपदसुता के धामहि॥
धर्मराज अति वचन सुनाये। कंसनिकन्दन प्रभुहि जनाये॥
नव दिन भयो महाबल भारथ। भीष्म खेत सरिस पुरुषारथ॥
दशसहस्र रथ नितक्रम मारहिं। अरु अनेक सेना संहारहिं॥
कह्यो कृष्ण अब कीजे गमना। चलि जैये भीषमके भवना॥
हम तुम अरु पारथ सँग लीजै। गङ्गासुतके दरशन कीजै॥
पूछहिं आइ मृत्यु को कारण। यहिविधिकहतभयेजगतारण॥
अर्जुन सहित चले तब केशौ। निशाकाल उठि चले नरेशौ॥
आये तुरत गङ्गसुत द्वारहि। धायकह्योयहिविधिप्रतिहारहि॥

गङ्गासुत चित दै सुनौ, कह्यो जोरि युगहाथ।
धर्मराज द्वारे खड़े, हरि अर्जुन हैं साथ॥

सुनि भीषम आतुर ह्वै धाये। कृष्णदरश आनन्दित पाये॥
धर्मराज अभिवन्दन कीन्हा। हँसिभीषमअङ्कमभरिलीन्हा॥
होय पाण्डुसुत कुशल तुम्हारो। जीतहु युद्ध शत्रु संहारो॥
पुलक सहित हरिके पदपरश्यो। वदन चन्द्र आनन्दित दरश्यो॥
आदर करि आसन बैठारो। शीतल जलसों चरण पखारो॥
भीषम कह्यो युधिष्ठिर राजहि। आपुगमनकीन्होकेहिकाजहि
धर्मराज यहि भांति जनायो। वनवन फिरत महादुखपायो॥
कै वसीठ यदुनाथ पठायो। पांच ग्राम मांगे नहि पायो॥

तब हरि रच्यो युद्ध यह भारथ । नवदिन किये आपुपुरुषारथ ॥
दशसहस्ररथ नितक्रम मार्यो । सेन अनेक समर संहार्यो ॥

आपु युद्ध यहि विधि करौ, तौ हम छांडी आस ।
पञ्चबन्धु सँग द्रौपदी, फिरि जैबो बनवास ॥

सुनि भीषम यहि भांतिबखान्यो । धर्मराज-यह बात न ज्यान्यो
जाके सदा सहायक हरि हैं । सो रणमो निश्चय जय करि हैं ॥
जहां धर्म तहँ कृष्ण सु आवैं । जहां कृष्ण तहँई जय पावैं ॥
यह सुनि कह पाण्डवदलकेतू । आपु युद्ध कीजै केहि हेतू ॥
जो हमको जय दीन्हो चहिये । अपनी मृत्यु आपुते कहिये ॥
तब गङ्गासुत हँसिकै कहई । जबलगि अस्त्रगहे हम रहई ॥
इन्द्र आदि जो रणमहं आवहिं । मोहिते जयतिपतनहिंपावहिं
तुमते कहौं सुनो यह कारण । सन्मुख अर्ज्जुन सकै न मारण ।
होतप्रात यहिविधिते लरिये । आगे आनि शिखण्डी करिये ॥
द्रुपदकुमार अग्र जब ऐहहिं । धनुषडारि हम वदनदुरैहहिं ॥

कन्याते भयो पुरुषतनु, जानत हैं सब लोग ।
ताते वदन न देखिहौं, प्रथम तज्यो तिय भोग ॥

सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये । जब हम अस्त्र डारिकै रहिये ॥
और बीरके शर नहिं फूटहिं । परसत अङ्ग समर शर टूटहिं ॥
अर्ज्जुन किये शिखण्डी ओटहिं । मेरे उर करिहैं शर चोटहिं ॥
यहि विधिते भीषम समुझायो । सुनिकै धर्म्मराज सुख पायो ॥
कीन प्रणाम चलन जब चह्यो । तब भीषम माधवसन कह्यो ॥

दीनबन्धु पारथके स्वारथ। मेरो बल तुम करत अकारथ॥
हेप्रभु तीनिलोक के स्वामी। सब जीवनके अन्तर्यामी॥
अर्जुन धन्य जगत यश छायो। हरिसे सखा सहजही पायो॥
यह कहिके तब कीन्ह्यो गवना। धर्मराज आये निज भवना॥
भीषम कह्यो मृत्यु को कारण। सुनिहर्षितभयोअधमउधारण॥

धर्मराज पारथ सहित, हर्षित पङ्कजनैन।
अमृतभोजनसरिसकरि, सबमिलिकीन्हो शैन॥

प्रात होत कीन्हे असवारी। साजे सैन महाबल भारी॥
दोऊदल अतिक्रुद्धित साजहिं। शब्द अघात दमामे बाजहिं॥
ठाक ठोक अपनी गति बोलहिं। मारतहांक पदाति सुडोलहिं॥
कोटिन गज साजे मतवारे। बाजत घण्टा चमर सँवारे॥
चले सुभट सब अस्त्रन धारे। क्रुद्धित भये सैन्यते न्यारे॥
रणमहं करहिं शत्रु को अन्तहि। मारहिं धायवेगि गजदन्तहि॥
सारथि रथ जोते हय चोखे। इन्द्र विमान परत हैं धोखे॥
ध्वजा तुरङ्ग सहस फहराने। चलत तेज चाके बहराने॥
तेज तुरङ्ग वीर सब चढ्यो। मानहुँ विधि अपनेकर गढ्यो॥
पीवर लग सरिस छविराजत। तवल अपर गज गाह विराजत॥
पदचर करत कोलाहल धाये। खड्गहस्त ले शोभा पाये।
समर भूमि केहरि सम गाजे। युद्धभूमि में सरिस विराजे॥

कुरु पाण्डव चतुरङ्गदल, जुरे आनि कुरुखेत।
चत्रियगण सब हांकदै, शारंग गह्यो सचेत॥

सैन गभीर कहत नहिं आवै । कहै जो कवि सो अपयशपावै ॥
क्रुद्धित वीर लगे शर वर्षन । शतते सहस सहसते कर्षन ॥
कुञ्जर पेलि महावत दीन्ह्यो । महा मारु मयमन्तहि कीन्हो ॥
यम ऐसे क्रोधित गजधावहिं । आगेपरहिं सो मारिगिरावहिं ॥
महारथी सब मारहिं अत्ती । ध्वजा पताका काटहिं छत्ती ॥
वर्षत बाण कहतको वैनहिं । लक्षण वीर समरकृत सैनहिं ॥
दोऊदल कीन्ह्यो रण घोरहि । परे भीम दुःशासन जोरहि ॥
विंशतिशर दुःशासन लीन्ह्यो । भीम अङ्ग शरभेदन कीन्ह्यो ॥
क्रुद्धित भयो पवनके नन्दन । धायो उतरि छांड़िकै स्यन्दन ॥
लैकर गदा कोपि करि धायो । हांकमारि दुःशासन आयो ॥

दोऊ भट यहिविधि भिर्‌यो, भारत भूमि प्रमान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े विमान ॥

मारल गदा कोपकरि तनमें । लागत घावशब्द जिमि घनमें ॥
शोभित रुधिर अङ्गमें कैसे । ऋतुवसन्त किंशुकतरु जैसे ॥
भीमसेन तब तेज सँभार्‌यो । हांकि गदा उरमध्य सो मार्‌यो ॥
दुःशासन तनु मोह जनायो । अपने रथहि वृकोदर आयो ॥
देखि द्रोण गुरु शर सन्धान्यो । भीम अङ्ग शायक ठहरान्यो ॥
तीक्षण बाण षष्टि गुण जोरे । घायल किये सारथी घोरे ॥
पञ्च बाण ते तोरयो स्यन्दन । आगे भयो सुभद्रा नन्दन ॥
अभिमन्यु हाथ तेज शर छूटयो । भेदि सनाह अङ्ग में फूटयो ॥

एक वार सारथि शिर खंड्यो । चारिविशिखहयहतिरण मड्यो ॥
कीन्ह्यो विरथ द्रोणसे चलो । अर्जुन पुत्र महाबल भलो ॥
द्रोण अपर स्यंदन चढ़यो, लीन्ह्यों चाप सम्हार ।
सबलसिंह चौहान कह, भई भयानक मार ॥

इति षोड़श अध्याय ॥ १६ ॥

भीषमदेव कहन यह लागे । सारथि रथहि चलावहु आगे ॥
अर्जुन वीर कृष्णसे सारथ । तिनते रण कीजै पुरुषारथ ॥
यह कहिकै हांक्यो रथ जबहीं । अशकुन भये बहुतविधितबहीं ॥
बोलत काक भयङ्कर बानी । विना मेघ वर्षत है पानी ॥
गीध निकरकर ऊपर छायो । जम्बुक अपनो भाव देखायो ॥
उगिलहिंखड्गछांड़िकै खापहिं । रथके खम्भ पवनविन कांपहिं ॥
यह अशकुन जब देख्यो नैनहिं । कुरुदल कहनलगे सब बैनहिं ॥
नवदिन युद्ध भयानक पेख्यो । यहि विधिते कबहुं नहिं देख्यो ॥
सारथि कहै गङ्गसुत आगे । अशकुन होन बहुत विधि लागे ॥
भीषम विहंसि कही यह वानी । अहो मूढ़ यह बात न जानी ॥
पारथके सारथि अहें, निरखहु श्रीभगवन्त ।
अशकुन कछु नहिं करिसकैं, सन्मुख कमलाकन्त ॥
यहकहि भीषम रथहि चलायो । डोली धरणि शेष शिरनायो ॥
सिंहनाद करि हांक सुनायो । मानहुँ जलद घटा घहरायो ॥

क्रोधित ह्वै शारङ्ग कर गह्यो । नमित वचन नरहरिते कह्यो ॥
सावधान हरि जोती गहिये । पारथ की रक्षामहँ रहिये ॥
यह कहि बाण सहस्र प्रहारयो । अर्ज्जुनके उरमध्य सो मारयो ॥
दशशर श्याम अङ्गहत कीन्हयों । विंशतिशर हनुमन्तहिदीन्हयों
अपरचारिशरधनुगुण दृढ़किय । धाये नन्दिघोष तुरँगन दिय ॥
तब अर्ज्जुन लीन्हयो कर धनुशर । युद्ध परस्पर होत भयङ्कर ॥
दोऊ भट अरुझे रणधरणी । क्रुद्धितशरछांड़तअतिकरणी ॥

यहि विधिते अर्ज्जुन जुटे, गङ्गतनयसों क्रुद्ध ।
जल थल भारत भूमि नभ, शर पूरित कृतयुद्ध ॥

बाणतजतअतिशययहिकरणी । जिमिजलधरजलवृष्टि सुवरणी
सहस बाण पारथ गुण मोखे । तुरँगन हरिहांकल अतिचोखे ॥
तीक्षण बाण पांडुसुत डारयो । भीषम अन्तरिक्ष हति पारयो ॥
अपर षष्टिशर कार्मुकधारयो । तेसब अश्वनके तनुमारयो ॥
लगे असी शर कपिके अङ्गन । सत्तरिशर मारयो यदुनन्दन ॥
श्यामअङ्ग शोणित छवि छाजत । पीतवर्ण रँग अरुण विराजत॥
जोती गह्यो धन्य अति चापल । वर्षतशरश्रावणजिमिघनजल ॥
यहि विधि ते शर वर्षा कियो । शरके छांह भानु छपिगयो ॥
नन्दिघोष रथ माधव सारथ । बाणवृष्टि ते छायो भारथ ॥
भीषम यहि प्रकारबल कीन्हयो । तब अर्ज्जुन धनुकर दृढ़लीन्हयो
श्रीहरि कहयो सुनहु हो पारथ । सहि न जाइ भीषमको भारथ ॥

हाँके पग नहिं चलत हय, शर छाये सब अङ्ग।
भीषम के संग्रामते, रणमें अचल तुरङ्ग॥
अर्ज्जुनजियविस्मय करि मान्यो। महाक्रुद्ध ह्वै निजधनुतान्यो॥
दैवअस्त्र पारथ तनु डाट्यो। गङ्गासुत बीचहिते काटयो॥
अपरविशिखतीक्षणकरधारयो। ते शर पारथके शिरमारयो॥
अर्ज्जुनसहित भये घायलहरि। तुरँग थकेनचलत लघुगतिकरि॥
वर्षत वाण वर्णि को कहई। पांडवदल लक्षण गति लहई॥
श्रीपति कह्यो सुनहुहो पारथ। रचहु उपाय तजो पुरुषारथ॥
यह कहिकै हरि शङ्ख बजायो। सुनिकै नाम शिखण्डी आयो॥
अर्ज्जुनसों हरि कहन सु लागे। रणमें करहु शिखण्डी आगे॥
पाछे ह्वै शारँग कर धरिये। यहिविधिते भीषमवधकरिये॥
अर्ज्जुन कह्यो सुनहु यदुकेतू। कपट युद्ध कीजिय केहि हेतू॥
जबहिं शिखण्डी आगे आयो। भीषम धनुष डारि शिरनायो॥
विना अस्त्र लज्जितवदन, हेरत नीचे नैन।
इस्थिर ह्वै रथ पर रह्यो, कह्यो कृष्णसों बैन॥
दीनबन्धु पांडव हित कारण। कपटयुद्ध करि चाहहु मारण॥
अर्ज्जुन किये शिखण्डी ओटहि। भीषमउर कीन्हयो शरचोटहि॥
पारथबाण कुलिश सम छूटहिं। कवचभेदि भीषमतनुफूटहिं॥
गङ्गासुत यहि विधिते कहयो। यह शर नहीं शिखण्डी गहयो॥
शर मारत अर्ज्जुन मम हिये। यह विचार कीन्हयो चितदिये॥
घायल भे कांपत तनु कैसे। शिशिर कालमें गोधन जैसे॥

तब पारथ कृत पुनि सन्धानहिं । हृदयताकि करि मारयोबानहिं
चरणकमलमनकीन्हयोंध्यानहिं । रसना रटत कृष्णको नामहिं ॥
रोम रोम यहि विधि शर मारा । बहै प्रवाह रुधिरकी धारा ॥
तीक्षणअपरंविशिखकरधरयो । तेशर कठिन मौलिपर परयो ॥

भीषमको बल थकित भो, मारत अर्ज्जुन तीर ।
तिल भरि देह न देखिये, झांझर भयो शरीर ॥

रथते गिरे गङ्गसुत धरणी । जगमहँ रही सदा यह करणी ॥
देखत सब कौरवगण धाये । हाहा शब्दाघात सुनाये ॥
द्रोण कर्ण दुःशासन अली । धनुष डारि रोवहिं सब चली ॥
करुणा करत कहत यह बैनहिं ! अहो पितामह राखहु सैनहिं॥
कुरुपतितबछाड़योनिजस्यन्दन । आये जहँ गङ्गाके नन्दन ॥
सेनापति ह्वै मुकुट बँधायो । आपु कृष्णकर अस्त्र गहायो ॥
जीति स्वयम्बर कन्या लीन्हयों । दोऊ बन्धु व्याहकरि दीन्हयों ॥
परशुरामते युद्ध विचारयो । उठिकै बाण धनुषकरधारयो ॥
रोदनकरि यहिभांति बखानत । विधिचरित्र कोऊनहिंजानत ॥
मोरे जिय यह बड़ो अंदेशो । पांडवसहित जीतिहौं केशो ॥
तुम पायो क्षत्रीके धर्म्महिं । यह सब दोष हमारे कर्म्महिं ॥

भीषम घेरे खेतमहं, रोवत सबै नरेश ।
सबलसिंह चौहान कह, चल्यो आपु हृषिकेश ॥

इति सप्तदश अध्याय ॥ १७ ॥

धर्मराज माधव सँग लीन्हो । रथतें उतरि गमनतबकीन्हो ॥
अर्जुन और भीम सब राजा । चले पितामह देखन काजा ॥
यहि अवसर गङ्गासुत बोले । सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥
शर शय्या सब अङ्ग विराजै । लटकत शीश भूमिपर राजै ॥
कुरुपति कहो हमारो कीजै । उत्तम भांति शिरहनो दीजै ॥
कोमल तूल पटम्बर भरयऊ । आनि तुरत शिरहाने धरयऊ ॥
तब भीषम भाष्यो यह बानी । दुर्योधन तुम बात न जानी ॥
अर्जुन समय विचारहु मनमें । उचित शिरहनो दीजै रनमें ॥
सुनि अर्जुन शारँग कर लीन्हयों । तीनि बाण संहारण कीन्हयों ,
सन्मुख ह्वै ललाटमहँ मारयो । भेदिशीशशरनिकरिसोपारयो ॥

फोंक बेधि शर पार ह्वै, गड़यो भूमिमें बान ।
यहिविधि शरशय्या दियो, भारतके परधान ॥

धर्मराज बहु रोदन कीन्हो । भीषमसों कछु कहबे लीन्हो ॥
केवल दुर्योधन के पापहि । परशुराम दीन्हो रण शापहि ॥
ताते भयो मृत्यु को कारण । सन्मुख दरश करहु जगतारण ॥
हँसि भीषम यहि भांति वखानी । साधु नरेश परम सज्ञानी ॥
दक्षिणायन रवि घातक कहिये । ताते शरशय्यासों रहिये ॥
उत्तरायण रवि होइहैं जबहीं । करिहौं देह त्याग निज तबहीं ॥
तब लगि क्षत्रिनको बल पेखहिं । भारत युद्ध नयननिज देखहि॥
दुर्योधन अरु धर्म नरेशहिं । भीषम कछु भाष्यो उपदेशहि ॥

अजहुँ कीजिये कहाहमारो। कुरुपाण्डवमिलिप्रीतिविचारो॥
बांटि राज्य लीजै दोउ भाई। वसुधा भोग करहु सुख पाई॥

विग्रह कुलको अन्तहै, अजहुँ कीजिये प्रीति।
जहां धर्म्म तहँ कृष्ण हैं, जहां कृष्ण तहँ जीति॥

जाके सखा आपु जगतारण। तासों युद्ध करहु केहि कारण॥
सुनिकै दुर्योधन यह कह्यो। यह प्रण मैं अपने मन गह्यो॥
सुई अग्र महि देव न औरहि। करौं युद्ध भारत रणठौरहि॥
यह सुनिकै भीषम यह कही। हरिकी शरण जाइये सही॥
जो रणको कुरुपति मन लावहु। कर्णवीर शिरमुकुट बँधावहु॥
द्रोण कर्ण सेना अधिकारी। अर्ज्जुन के समान धनुधारी॥
पारथ नहिं जीतहि अपने बल। जो नहिंकृष्णकरहिं रणमें छल॥
जहँ भीषम शरशय्या लीन्हीं। तम्बू एक खड़ो करि दीन्हीं॥
गङ्गासुत कीन्हो जब मौनहिं। धर्म्मराज आये तब भौनहिं॥

पांडव दल आनन्द मन, जीति चले मैदान॥
अर्ज्जुनके रथ सारथी, सुन्दर श्रीभगवान॥

धेनु सहस्र दिये जो दानहिं। जो फल सब तीरथअस्नानहिं॥
जो फल होइ साधुके दरशे। जो फल शम्भुनाथके परशे॥
जो फल व्रत एकादशि कीन्हे। जो फल होइ भूमिके दीन्हे॥
जो फल रणमें प्राण गँवाये। जो फल होइ ब्रह्मके ध्याये॥

जो फल कोटिन विप्र जेवाये। सो फल भारत सुने सुनाये॥
व्यासदेव भारतके कर्त्ता। बाढ़ै पुण्य पापके हर्त्ता॥

रामकृष्ण गोविन्द हरि, कीजै सदा बखान।
भाषा भीषमपर्व कह, सबलसिंह चौहान॥

इति अष्टादश अध्याय॥ १८॥

इति भीष्म पर्व्व समाप्त।

महाभारत।

द्रोण पर्व।

श्रीगुरुचरण दण्डवत करिये। जेहि प्रसाद भवसागर तरिये॥
वन्दौं राम चरण रघुनन्दन। महावीर दशकन्धनिकन्दन॥
दीरघबाहु कमल दललोचन। गणिकाव्याधअहल्यामोचन॥
व्यासदेव कलियुग अघहरता। चारि वेद श्रीभारत करता॥
श्रोता जनमेजय गुणसागर। महावीर कुरुवंश उजागर॥
वैशम्पायन ऋषिवर ज्ञानी। वक्ता महा सुधारस बानी॥
सत्रह शत सत्ताइस जाने। गनि सम्बत यहि भांति बखाने॥
पुनि बुधवार घरी शुभ जाने। जादिन लङ्का राम पयाने॥
शुक्ल पक्ष आश्विनको मासा। दशमीतिथिकरि ग्रन्थप्रकासा॥
उत्तम नगर सुरचना छाजा। भूपति मित्रसेन तहँ राजा॥

रघुपति चरण मनाइकै व्यासदेव धरिध्यान।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥

जब भीषम शरशय्या लीन्हेउ। दुर्योधन मन बहु दुख कीन्हेउ॥
अब काको सेनापति कीजै। जाके दल भारत करि लीजै॥
कह्यो कर्ण राजा सुनि लीजै। जो मोकहँ सेनापति कीजै॥
अर्जुन भीम खेतमहँ मारौं। सेना सहित न एक उबारौं॥
सो सुनि द्रोणपुत्र मन डोला। नृपसों क्रोधवन्त ह्वै बोला॥
सूर्य्यपुत्र सेनापति करिहौ। ताके बल पांडवसों लरिहौ॥
मोरे शिर जो मुकुट बँधैये। अबहीं जयतिपत्र नृप पैये॥
सो सुनि कर्ण क्रोधयुत भयउ। कम्पितअधरकहनकछुलयउ॥

अर्धरथी भीषम गनो, कुलहीनो जग जान।
सेनापति ताकहँ किये, क्षत्रिनको अपमान॥

क्रोधित कर्ण खड्ग लै धाये। पकरि बांह राजा समुझाये॥
अहो मित्र अब समय विचारो। तजिकै कलह शत्रु संहारो॥
सब मिलि यहै मन्त्र ठहरैये। कहौ जाइ तेहि मुकुट बँधैये॥
कह्यो कर्ण राजा सुनि लीजै। सेनापति गुरु द्रोणहिं कीजै॥
महारथी अरु अस्त्रहि जानत। कुरुपाण्डव दोऊ दल मानत॥
सुनि शकुनीके मनमों भायउ। साधु कर्ण हित बात सुनायउ॥
जयद्रथ कृपरु शल्यते भाखो। दलकर भार द्रोणशिर राखो॥
जब जानौ सबके मन माने। दुर्योधन सुनि आपु बखाने॥
गुरु होहु सेनाकर रक्षक। भारत युद्ध करौ परतक्षक॥
यहकहिआनिमुकुटशिरदीन्हेउ। बहुविधिविप्रवेदध्वनिकीन्हेउ॥

कहौ द्रोण राजा सुनो, कोटि आनि प्रशुराम ।
पांच दिवस भारत रचौं, करौं घोर संग्राम ॥
जो कोटिन पाण्डवदल आवैं । मारौं सबहि जान नहिं पावैं ॥
जो अर्ज्जुनहिं जुदा करि पावौं । बांधि युधिष्ठिर नृप लै आवौं॥
जब गुरुद्रोण कहे अस लीन्हेउ । दुर्योधन प्रतिउत्तर दीन्हेउ ॥
जो आपुहि रणको मन लाये । कोटिन अर्ज्जुन मार गिराये ॥
तुमसों सबहिं सीखिये शायक । पारथ कहा भये यहि लायक॥
हँसिकै द्रोण कहो यह बानी । राजा तुम यह बात न जानी ॥
महारथी जगमों है पारथ । नन्दिघोष रथ श्रीपति सारथ ॥
धनुगाण्डीव अग्नि जेहि दीन्हे । अक्षयतूण वरुणसों लीन्हे ॥
सात वर्ष सुरपुरहि सिधाये । देवअस्त्र सब सिखिकै आये ॥
पुर विराट रण कियो भयङ्कर । वनोवासमहँ जीतो शङ्कर ॥
शरसों सागर बांधिकै, जीति लियो हनुमान ।
सुरपुर नरपुर नागपुर, नहिं पारथहि समान ॥
ताते यह उपाय चित धरिये । पारथ विलग कटकते करिये ॥
कही सुशर्मा गुरु सुनि लीजै । यहिकामहि आज्ञा मोहिं दीजै ॥
परन करत पारथ संग्रामा । लै जैहों तिनको निजधामा ॥
चौदह सहस रथी धनुधारी । बंश प्रकाशनके अधिकारी ॥
जो अर्ज्जुन कहँ पीठि देखावें । हम सब बास अधोगति पावें ॥
यह सुनि दुर्योधन सुख मान्यो । अपनो परमहितू कै जान्यो ॥
उठ्यो सुशर्मा आयो तहँवां । पाण्डव दलमहँ पारथ जहँवां ॥

हरि अर्ज्जुन बैठे इक सङ्गा । कहत कथा भीषम रणरङ्गा ॥
यहि अन्तर इन दर्शन दीन्हयों । पारथ उठि सम्भाषन कीन्हयों॥
आदर कै आसन बैठायो । भूप सुशर्मा वचन सुनायो ॥

परन करत पारथ तुम्हें, युद्ध करनके हेत ।
करहु और जो चित्तमहँ, शपथकृष्णकी देत ॥

पारथ कोपवन्त तब कह्यो । हाँकत मोहिं कहसि धनु गह्यो ॥
मानो परन कालहि रणकरिहौ । ह्वै पतङ्ग दीपकमहँ परिहौ ॥
यह सुनि भूप सुशर्मा आये । कुरुपतिसों सब बात जनाये ॥
प्रात होत दोऊ दल साजे । शब्द अघात दमामे बाजे ॥
गज काले पर्वत से भारी । पांव जँजीर नयन अँधियारी ॥
रथ पर रथी सरिस छवि वनी । जगमगात हीरनकी कनी ॥
अरु अनेक असवार महाबल । उदधिसमान पियादनके दल ॥
दुर्योधन अस कहिवे लागे । सेनापति द्रोणहिके आगे ॥
सबमिलि एक मतो ह्वै लरिये । बलसों बांधि युधिष्ठिर धरिये॥
पांडवदल आये मैदाना । तब पारथ यहि भांति बखाना ॥

आयसु हमरो सुनिय सब, अब हम करहिं पयान ।
सावधान क्षत्रिय सबै, लरहु द्रोण मैदान ॥

धर्मराज सुनिये कहि पारथ । रणमों द्रोण सरिस पुरुषारथ ॥
तीन लोक जो अस्त्रहि धरई । गुरु द्रोण सबको वशकरई ॥
धनुविद्या भृगुपति जेहि दीन्हयों । आपुसमानमहारथिकीन्हयों॥
भये द्रोण गुरु सेना रक्षक । महायुद्ध होई परतक्षक ॥

भीमादिक चालिन सन कहिये। सावधान न्टपके सँग रहिये॥
शूरसेन हैं बड़े धनुर्द्धर। जौलौं रहै गहे शारँग शर॥
तौलगि न्टप रणको मन दीजै। नातर गवन भवनको कीजै॥
अब हम जाहिं युद्धके कारण। शेषप्रकागण करहिं सँहारण॥

अस कहि कै पारथ चले, सारथि श्रीभगवान।
दशयोजन दच्छिण दिशा, समरकेर मैदान॥

नन्दिघोष रथ देखन आये। सेना सहित सुशर्मा धाये॥
चौदह सहस रथी सँग लीन्हे। बाण वृष्टि पारथपर कीन्हे॥
तब अर्ज्जुन मारे तीच्चण शर। होन लगी अतिमारुपरस्पर॥
शेष प्रकागणके शर छूटहिं। मानहु वज्र गगनते टूटहिं॥
अर्ज्जुन सों लोहा उत बाजो। इतहि द्रोण गुरु सेना साजो॥
पहिरि सनाह खड़्ग कटि बांधे। युगल तुणीर विराजतकांधे॥
शीश टोप हाथन दस्ताने। जनु वानरगणसों अनुमाने॥
वख्तर झलकै जोसन राजैं। जिरह मेषलौं सरिस विराजैं॥
चौसा चारु आनिकै दीन्हे। गदालयो साजहि दृढ़ कीन्हे॥
भूरिश्रवा कर्ण सम चत्री। कृतवर्मा ऽश्वत्थामा अत्री॥

कोऊ कञ्चन रथ चढ़े, कोऊ चपल तुरङ्ग।
दुर्योधनरथ साजिकै, शतभाइन लै सङ्ग॥

श्याम तुरङ्ग द्रोण रथ जोरे। पवन बेग वे चारिउ घोरे॥
जानत हैं सारथि के मनकी। बढ़तचलततकिछायसुनतकी॥
पाखर करी समय छबि छाजे। हंस भीष्म उल्लास विराजे॥

चारिउ चरणनालकीचमकनि । ज्योंघनमेंदामिनिसीदमकनि ॥
आगे कुञ्जर शोभा पाये । प्राविट मेघ भूमि पर आये ॥
चमर ढरत चौराशी बाजत । श्वेतदशनअतिसरिस विराजत ॥
फेरत फरी खड़ग कर चमकत । पगके भार मेदिनी धमकत ॥
तापाछे असवारन को दल । शेल सांग कर लिये महाबल ॥

कोटिन रथी महाबल भारी । क्षत्रिय शूर बड़े धनुधारी ॥
महारथी सब साथ लै, कीन्हों द्रोण पयान ।
दुर्योधन राजा चले, गरद लोपि गे भान ॥

पाण्डव दल आये मैदानहिं । आगे भीम गहे धनु बानहिं ॥
कुञ्जरसों कुञ्जर लै जोरहिं । दशनघाव मुख नेकु न मोरहिं ॥
ठोकर अरु त्रुणोरसों मारहिं । गहिकरशुण्डरथहिफटकारहिं ॥
पैदर सों पैदर अरुझाने । महावीर सब बांधे बाने ॥
असवारहिं असवार प्रचारहिं । सन्मुख जुरतखड़गसिरझारहिं ॥
लैकर धनुष रथी रण मण्डे । बाणनते अरिसैन्य विहण्डे ॥
आगे द्रोण पेलि रथ आये । कृपा कर्ण क्रोधित ह्वै धाये ॥
भूरिश्रवा अलंबुष चलो । जान्यो कृतवर्मासे अलो ॥
भीमसेन अरु द्रोणहि भारथ । महायुद्ध कीन्हों पुरुषारथ ॥
भूरिश्रवा सत्यकिहि दोऊ । लड़त हारि मानत नहिं कोऊ ॥
कर्णसाथ अभिमनु भिरे, कीन्हेउ शर सन्धान ।
द्रुपद राउ जयद्रथ सों, महाभूरि मैदान ॥

कृपसों नकुल करहिं संग्रामा । दोऊ वीर युद्ध जयकामा ॥
भूप विराट सुशर्मा चलो । उत्तर कुंवर अलंबुष अलो ॥
धृष्टद्युम्न कृतवर्मा सङ्गा । शकुनी सहदेवहि रणरङ्गा ॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर । जुरे शिखण्डि गहे शारँगशर ॥
घटउत्कच कीन्हो रण ठाना । शल्य नरेश सङ्ग मैदाना ॥
काशिराज भञ्जनको भारथ । कीन्हों खेत महा पुरुषारथ ॥
पाँच कुमार द्रौपदिहि जाये । ते शशिविन्दु युद्ध अरुझाये ॥
जोर जोर अरुझे सब जबहीं । धायो कोपि द्रोण गुरु तबहीं ॥
अति प्रचण्ड धनुशर करलीन्हे । तीक्षण बाण फोंकशर दीन्हे ॥

पेलि फौज आये तहां, जहां धर्म्म सो राज ।
सबलसिंह चौहान कह, द्रोणकियो यह काज ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

सेना सहित द्रोण जब आये । धर्म्मराजकहँ देखन पाये ॥
परी भीर राजापर जाने । शूरसेन तब शारँग ताने ॥
धर्म्मराजकहँ पाछे घाल्यो । क्रोधवन्त आगे रथ चाल्यो ॥
बहुविधि बाणबुन्द झरि लाये । तीन सहस रथ मारि गिराये ॥
बहुरि अनेक चलाये सांगी । कुञ्जर गिरे सहित चौरांगी ॥
हय पैदल जो आगे पाये । शूरसेन सब मारि गिराये ॥
अटको अनी देखि जब पाये । तब गुरु द्रोण क्रोधकै धाये ॥

आठवाण तीक्ष्ण कर लीन्हें। ते शर चोट शीशपर कीन्ह॥
शूरसेन शर सबहि सँभारे। बाण पचीस द्रोण उर मारे॥
महावीर दोउ बड़े धनुर्द्धर। होन लागि तब मारु परस्पर॥

शूरसेन नृप द्रोणसों, भयो घोर मैदान।
जल थल भारतभूमि सब, शर छायो असमान।

क्रोधित द्रोण सहस शर मारे। रथके चारि अश्व संहारे॥
सारथि युद्धखेतमहँ आये। रथते उतरि शैल लै धाये॥
तबहिं शैल नृप करते छूट्यो। लाग्यो बाण बीचते टूट्यो॥
शूरसेन तब खड्ग प्रहारे। क्रुद्धित द्रोण तीक्ष्ण शर मारे॥
टूटि शीश धरणीपर पर्‍यो। झलकतमुकुटजरायनजर्‍यो॥
शूरसेन जूझे मैदाना। धर्म्मराय लीन्हों धनु बाना॥
दश शर भूप क्रोध करि छांटे। ते गुरु द्रोण बीचही काटे॥
लगे द्रोण गुरु मनहिं विचारन। धर्म्मराय वधिये केहि कारन॥
रुधिर परे वसुधा सब जरई। अर्ज्जुन सुनै प्रलय पुनि करई॥
ताते गहि बन्धन अब कीजै। दुर्योधन आगे करि दीजै॥

अस गुनि धाये द्रोण गुरु, नागपाश लै हाथ।
धर्म्मराय रथ तजि भजे, रहा न कोऊ साथ॥

देखि द्रोण राजाकहँ लीन्हे। डारहिं पाश चित्तमहँ कीन्हे॥
जब यह कथा तहां चलि आई। पारथ सों जहँ होत लड़ाई॥
जब तिन कीन्हो शर सन्धाना। तब श्रीहरि यह बात बखाना॥
अर्ज्जुन मेरो जिय गहबर्‍यो। धर्मराजपर सङ्कट पर्‍यो॥

मारहु बाण गहरु केहिकाजा । बांधत द्रोण युद्धिष्ठिर राजा ॥
अर्ज्जुन नयन अरुण ह्वै आये । मन व्यापक शरतुरतचलाये ॥
धावहुबाण बिलम्ब न लावहु । सङ्कटते धर्मजहि छुटावहु ॥
द्रोण गुरु कर पाश उठाये । तेहि अन्तर पारथ शर आये ॥
बाण उदोत होत हैं कैसे । प्रलयकाल बड़वानल जैसे ॥
दोऊ कर भेदन शर कर्यो । नागपाश धर्यो गिरिपर्यो ॥

दश शर लाग्यो द्रोणउर, भेदन कीन्हो अङ्ग ।
रथ सारथि चूरण किये, जूझे चारि तुरङ्ग ॥

अर्ज्जुन बाण द्रोण जब लेखो । गरुड़ पक्ष शर माथे पेखो ॥
कनक फोंक लागे वहु दामा । अङ्कित है पारथ को नामा ॥
देखत बाण जानि गुरुमनमों । पारथ फिरिआयो यहि रनमों ॥
तबहिं द्रोण फिरि कीन्हो गवना । धर्मराज पहुँचे निजभवना ॥
कौरव दल जो खेतहि पाये । चल्योचल्योकरि अर्ज्जुन आये ॥
फिरे द्रोण लीन्हे सब सैना । कुरुपतिनिरखिकह्योतबबैना ।
धर्मरायकहँ बांधन धाये । कहो गुरु फिरिकै तुम आये ॥
सुनि तब द्रोण कहै मनलाये । यसे हते अर्ज्जुन शर आये ॥
अर्ज्जुन शर ते चेत न धर्यो । करते पाश भूमिगिरिपर्यो ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना । कुरुपाण्डवआये फिरिभवना ॥

उभय सेन कुरु पाण्डव, सबआये निजधाम ।
अर्ज्जुन सावकाश नहिं, राति दिवस संग्राम ॥

कुरुपति तबहि द्रोणपह आये। बैठिबात यहि भांति जनाये॥
सबके गुरु तुम वीर महाबल। पाण्डव नाश कहा करिये छल॥
जो आपुहि रणको मन दीजै। चणहि पञ्च पाण्डव वध कीजै॥
कीजै कहा कहतु यह बातन। राजा सुनिये कथा पुरातन॥
जो कीन्हो है अर्जुन करणी। ऐसो वीर न दूसर धरणी॥
द्रुपद नरेश स्वयम्वर ठानो। लच नरेश वर्ण कै जानो॥
हम सब गये हुते तब साथा। हलधर हते सहित यदुनाथा॥
यहि विधि राजायन्त्र बनाये। नभमहँ कञ्चन मीन लगाये॥
नयन बने हीरन को कनौ। कोइ चत्रिनको रहो न मनौ॥
द्रुपद नरेश आपु उठि भाष्यो। वीरहु कहां गये बल भाष्यो॥

जो कोऊ भेदन करै, मीन नयनमहँ बान।
यह कन्या सोई वरै कहत बचन परमान॥

सब चत्री सुनि मौनहिं गह्यो। पारथ वीर सभामहँ रह्यो॥
ह्व द्विजरूप कोउ नहिं चीन्हो। शरअरुधनुष कर्णसों लीन्हो॥
धरिके पांव खड्ग गहि बाना। खैंचि धनुष तब कियसन्धाना॥
तुमसबमिलि मिथ्याकै भाष्यो। दीनबन्धु पारथ प्रण राख्यो॥
कर्ण धनुषबल कोउ न पूजो। सुरपति धनुष दियो तब दूजो॥
बहुरि धनुष लै शर सन्धाना। मार्‍यो मीन नयन तकि बाना॥
गिरेहु कराह अनत नहिं गयो। तब सबके प्रतीति जियभयो॥
भूषण वसन विचित्र सँवारे। द्रुपदसुता जयमालहि डारे॥
कन्या निरखि लोभ चित आये। तुम शकुनी कहँ दूत पठाये॥

धन अनेक द्विज लीजिये, बिप्रवंश कुरु व्याह ।
द्रुपदसुता कन्यारतन, कुरुपति कीन्हो चाह ॥
क्रोधवन्त ह्वै पारथ भाखै । शकुनी बधउँ कवन तोहिं राखै ॥
भानुमती रानी स्वहिं दीजै । सम्पति सब कुबेर की लीजै ॥
सो सुनि भूप क्रोध तुम कीन्हो । कर्ण आदि कहँ आज्ञा दीन्हो ॥
पुनि सुनिकै चलो सब धाये । पारथ एक सबै बिचलाये ॥
जरासन्ध होते बल माहीं । कोऊ छुइ न सको है छाहीं ॥
हम सब मिलिकै अस्त्रहि गह्यो । पै काहू सन खेत न रह्यो ॥
चलो सब गये बीरज खोई । बाणावरि नहीं पूछ्यो कोई ॥
दुर्योधन तब कहिवे लीन्हों । गुरुसनबिनयजोरिकरकीन्हों ॥
आपुहि इहां काज चितदीजै । पाण्डव सबहिं मारि यश लीजै ॥
कह्यो द्रोण राजासों वचना । कालहि प्रात कीजै यह रचना ॥
चक्रव्यूह निर्माण करि, करहु युद्ध यहि रूप ।
बिन पारथ यहि जगत मों, भेद न जानहिं भूप ॥
निशा मध्य महँ गढ़निर्मावा । जाको अन्त कोउ नहिं पावा ॥
सात खेल देखत मन भाये । चलाङ्गित बहु व्यूह बनाये ॥
सात द्वार तामह निर्मावा । दलबलसहित भूप सुख पावा ॥
प्रथम द्रोण जयद्रथकहँ राखो । सैन अनेक जात नहीं भाखो ॥
दूजो द्वार द्रोण सम अलो । साथ अनेक महाबल चलो ॥
तीजो घोर कर्ण दृढ़ कीन्हो । रथी समूह साथमहँ लीन्हो ॥
चौथे कृपा लिये बहु सङ्गा । पँचयें द्रोणपुत्र रण रङ्गा ॥

छठयें घोर वीर बहु अहई । भूरिश्रवा आपु तहँ रहई ॥
सतयें वीर कुरुपति साजो । शतभ्रात्रन नृप सङ्ग विराजो ॥
तीनि सहस राजा नृप साथा । सावधान चलौ गहि हाथा ॥

सात द्वारको दृढ़ कियो, चक्रव्यूह करि साज ।
कुरुपति पठये दूत तब, जहां धर्म को राज ॥

दूत आइ ठाढ़ो भो द्वारा । जाइ जनावहु कहिप्रतिहारा ॥
द्वारपाल जब जाय जनाये । धर्मराज तेहि निकट बुलाये ॥
आय दूत नावा तब माथा । लाग्यो कहन जोरिकै हाथा ॥
चक्रव्यूह रचि द्रोण बनाये । ता कारण नृप मोहिं पठाये ॥
उठिकै व्यूह भेद नृप कीजै । नातरु जयतिपत्र लिखि दीजै ॥
जो नहिं लरौ रहौ गहि भवना । हारौ युद्ध करौ बन गवना ॥
यह कहि दूत तुरत चलिआये । धर्मराज सब वीर बुलाये ॥
सबसों नृप यहि भांति बखानो । चक्रव्यूह रण तुम कोउ जानो ॥
जो कोई जानत तौ कहिये । व्यूह भेद अब कीन्हो चहिये ॥
जो नहिं भेद व्यूह को जानो । युद्ध हारि गृह करो पयानो ॥

यह सुनिकै सब मिलि कही, धर्मरायसों बैन ।
चक्रव्यूह रण नहिं सुनो, काहु न देख्यो नैन ॥

जब वीरन यहि भांति जनाये । सुनिकै धर्मराज दुख पाये ॥
हरि रचना यह कीन्हो भारथ । सब उद्यम अब भयो अकारथ ॥
चारिवन्नु सेना सब सङ्गा । पारथ विना भयो रणभङ्गा ॥
भाष्यो भूप देखि सहदेवा । जानत कोउ व्यूह को भेवा ॥

सो सुनिकै सहदेव बखानौ। तीनि विना चौथो नहिं जानौ॥
जानत द्रोण कि अर्ज्जुन भाई। की प्रद्युम्न यह जान लराई॥
भूप युधिष्ठिर कहिवे लीन्हे। शिशुपकागणमोहिदुख दीन्हे॥
भूप सुधर्मा द्रोण पठाये। छलकै अर्ज्जुन को अटकाये॥
जबराजा हिय शोक जनाये। सभामध्य अभिमनु तब आये॥
दोउ कर जोरि कह्यो तब राजहिं। आपुशोचकोजै केहिकाजहिं॥

चक्रव्यूह रचि द्रोणगुरु, कियो चहत संग्राम।
आजु दिवस पारथ नहीं, भयो विधाता वाम॥

अभिमनु कही सुनो तुमराजा। अब विलम्ब कीजै केहिकाजा॥
व्यूह भेद मैं जानत अहऊं। सो वृत्तान्त आपुते कहऊं॥
छहौं द्वार भेदन कर जाना। सतवां द्वार भेद नहिं जाना॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो रक्षक। छहौं द्वार तोरौं परतक्षक॥
सतवां द्वार भेद नहिं जाना। सुनि राजा यहि भांति बखाना॥
भीमादिक कोउ भेद न पाये। व्यूह युद्ध केहि तुमहिंसिखाये॥
अभिमनु कही भूप के पासा। कीन्हे जबहिं गर्भ हम वासा॥
प्रसव काल माता दुख पाई। तबहिं पिता यह व्यूह सुनाई॥
पारथ कही सुभद्रा आगे। गर्भ मांझ सुनिबे हम लागे॥
छठौं द्वारको भेद बखाना। सो हम सब अपने जिय जाना॥

सप्त द्वारके कहत ही, हम लीन्हें अवतार।
गीत नाद आनन्दते, मग्न भये परिवार॥

तातें अपर भेद नहिं पाये। सत्यवचन नृप तुम्हैं सुनाये॥
सुनत युधिष्ठिर विस्मय भयो। पीठि ठोंक अभिमनुसों कह्यो॥
तुम्है कवन विधि आज्ञा दीजै। व्यूह युद्ध वीरन ते कीजै॥
पन्द्रह वर्ष वीर सुकुमारा। तुम हम सबके प्राण अधारा॥
सुनिअभिमनुयहिभांतिवखाना। नृपहमकहँ बालककरिजाना॥
अर्ज्जुन पुत्र सुभद्रानन्दन। आजु करौं रिपुसैन निकन्दन॥
द्रोण कर्ण सब वीर घनेरे। आजु देखिहहु भुजबल मेरे॥
मारि सबै सरदार गिरावों। तौ अर्ज्जुनको पुत्र कहावों॥
बांधौं भुजबल बली पुरन्दर। सेना उदधि होइ किमि मन्दर॥
यहिविधि बाण बुन्द झरि लैहौं। शोणित नदी अथाह बहैहौं॥
शोच करत नृप आपु अकारथ। अब देखौ मेरो पुरुषारथ॥

भीमसेन ऐसी कही, राजा सुनहु विचार।
छहौं द्वार भेदन कहेउ, सतवां मो शिरभार॥

चलौ सबहि अस्त्र गहि हाथा। पेलि जाहिं अभिमनुके साथा॥
सतवां द्वार पलक महँ तोरौं। गदा घावसों पर्वत फोरौं॥
भीमसेन यहि भांति बखाने। सो सुनि धर्म्मराय मनमाने॥
साजेउ सैन दमामा बाजे। बांधे अस्त्र वीरगण गाजे॥
भांति भांति बैरख फहराने। शूर विमानन ध्वजा उड़ाने॥
आगे कुंजर शोभा पाये। सावन मेघ उनै जनु आये॥
चारौं पाद बहत मदधारा। जिमि झरना जल बहै अपारा॥
श्वेत दशन कवि किये विचारा। कज्जलगिरिजनुगङ्गकिधारा॥

अंकुश लगे चलत गज ठनकत । ठोकर पांव लगत हयहनकत ॥
नयनन मों दीन्हीं अंधियारी । देखत रूप शत्रु भयकारी ॥

तुङ्गस्थल अतिक्रोधमें, राजन ऊर्ध्व भुशुण्ड ।
भूमि भ्रमै पर्वत मनहुँ, भये झुण्डके झुण्ड ॥

तेहि पीछे पैदल दल राजै । विविध अस्त्र करमाहँ विराजै ॥
चले अश्व असवार फँदावत । नृत्य करत मानहुँ नट आवत ॥
चले सारथी सब रथ हांकत । युद्ध हेत चली रण डांकत ॥
तेन सहित योजित रथ आये । चक्रव्यूह जहँ द्रोण बनाये ॥
देखत सबहिं अचम्भौ मानो । कहां द्वार कछु जात न जानो ॥
व्यूह अन्त कछु जानि न पैये । कैसे कै रणमों मन लैये ॥
अटकी अनी देखि जब जाने । तब अभिमनुयहिभांति बखाने ॥
हम ह्वै बे सबही के आगे । तुम सब आवहु पाछे लागे ॥
यह कहिकै हांकन रथ रद्यो । तब कर जोरि सारथी कह्यो ॥
तुम बालक कैसे रण करिहो । द्रोणी द्रोण कर्णसों लरिहो ॥

सुनत वचन अभिमनु कही, सुनु सारथि मतिहीन ।
कपिगणसँग रघुनाथके, कुश एकै वश कीन ॥

बालक करि मोकहँ मति जानहु । हांकहु रथहिकहाममानहु ॥
यह सुनिकै सारथि रथ हांक्यो । डोलीधरणि शेषशिर कांप्यो ॥
भीमादिक रणभूमिहि आयो । सिन्धुराज बहु बाण चलायो ॥
द्रुतते सब चत्रिन शर मारे । जय के हेतु वीर संहारे ॥
अभिमनु कोपि लगे शर मारन । शतते सहस सहस्र हजारन ॥

तब जयद्रथ कीन्हि प्रभुताई । जल थल सबहिं रहे शर छाई ॥
अभिमनु महामारु जब जाने । तीक्षण बाण कोपि सन्धाने ॥
विद्युत्सम शशिगण परकाशे । चमकत दृष्टि नयनको नाशे ॥

पलक परत सब वीरको, रथ हांको रथवान ।
सबलसिंह चौहान कह, चक्रव्यूह मैदान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

अभिमनु व्यूह मध्य जब आये । तब जयद्रथ सबहिं अटकाये ॥
रथते उतरि भीम तब धाये । पै जयद्रथ मारि बिचलाये ॥
द्रुपद विराट क्रोध कै धाये । धर्म्म पुत्र सात्यकि सब आये ॥
नकुल वीर सहदेव रिसाने । धृष्टद्युम्न रणको अरुझाने ॥
इत सब वीर क्रोध रणमंड्यो । सिन्धुराज शर सबहिंविहंड्यो ॥
गदा हाथ गहि भीम भयङ्कर । प्रलयकाल महँ मानहुँ शङ्कर ॥
ह्वैकरि हांक क्रोध करि धाये । मनहुँ घटा बनमहँ घहराये ॥
तब जयद्रथ कीन्ह सन्धाना । भीम अङ्ग मारे शत बाना ।
बाण लग्यो तब मोह जनायो । तब सारथि रथ फेरि चलायो ॥
दशशर धर्मराज उर मारयो । नकुलहृदय बहुबाण प्रहारयो ॥

नृपति जयद्रथ क्रोध करि, मारे तीक्षण बान ।
सबै वीर मोहित भये, भारतके मैदान ॥

धर्मराज मूर्च्छा तजि जागे । तब सहदेवहि बूझन लागे ॥

यह कछु भेद जानि नहिं पाये। नृप जयद्रथ सवहिं अटकाये॥
आदि कथा सहदेव सुनाये। जेहि विधि शङ्करसो वरपाये॥
तब दुर्योधन ताहि पठाये। जब हम सब वनवास सिधाये॥
लै द्रौपदिहि तबहिं हांको रथ। विधिवश मिलो पन्थमहँपारथ।
क्रोधवन्त पारथ शर सांध्यो। नागपाश जयद्रथहि बांध्यो॥
शीश मुण्डि अपमानहिं कीन्हों। मारत जीवदान तब दीन्हों॥
लज्जा पाइ भवन नहिं गयऊ। शङ्करकी पूजा मन लयऊ॥
ह्वै प्रसन्न यह कह गङ्गाधर। जो इच्छा मनमहँ मांगहु वर॥
पांच पांडवन जीतैं रनमें। यह इच्छा है मोरे मनमें॥

यह सुनिकै शङ्कर कहेउ, दीन्हेउ वर जयद्रथ।
चारिबन्धु तुम जीतिहौ, पारथ अजय समर्थ॥

यहि विधि शङ्कर ते वर पायो। ताकारण सबको विचलायो॥
दूजे द्वार अभिमनु जब गयऊ। तहां द्रोणको दर्शन भयऊ॥
सब क्षत्रिनसों द्रोण सुनायो। अभिमनु व्यूह भेदिकै आयो॥
क्षत्री सबहिं लगे शर मारन। यह अकेल उत वीर हजारन॥
अभिमनु ऐसो बाण चलायो। शरते भरद्वाज सुत छायो॥
और साठि शर छांड़े पायल। ताते भये विप्र रण घायल॥
कोपि द्रोण योतिक शर जोरे। अर्ज्जुनसुत बीचहिं धरि तोरे॥
तब गुरुद्रोण क्रोध मन भयो। तीक्ष्ण बान चलावन लयो॥

बहु पुरुषारथ गुरु कियो, रोकि रह्यो रणरत्थ।
सबहिं पेलि भीतर गयो, अभिमनु वड़ो समत्थ॥

तीजो द्वार कर्ण है रक्षक । अभिमनु आइ जुरे परतच्छक ॥
सुन अभिमनु पारथ नहिं आयो । व्यूहभेदकहँ तुमहिं पठायो॥
अभिमनु सुनिप्रति उत्तर दीन्ह्यो । बालक करि तुमहम कहँ चीन्ह्यो ॥
इहके गहहु व्यूह द्वारो थल । बूझि देखिहौ बालकको बल ॥
व्यूह द्वार जब रथ पहुँचायो । कोपि कर्ण तब बाण चलायो ॥
सहस बाण अर्जुनसुत छांट्यो । सब शर अन्तरिच्छमहँ काट्यो ॥
ताते कीन्हो सैन निकन्दन । क्रोधित भये कर्ण रविनन्दन ॥
तीच्छण बाण कर्ण गुण जोरे । सो अभिमनु सबबीचहि तोरे ॥
दिव्यबाण अभिमन्यु चलायो । भूमअकाशदशहुँदिशिछायो ॥
देखिअनीक सबहिं भ्रम भयउ । तौ लगि व्यूह भेदिकै गयऊ ॥

पेलि द्वार भीतर गयो, जात न लागी बार ।
पहुँचे चौथे द्वार जहँ, कृपाचार्य्य सरदार ॥

आये अभिमनु सबहिं पुकारे । कृपाचार्य्य तब धनुष सभारे ॥
महायुद्ध कीन्ह्यो पुरुषारथ । तेहिच्छण भयो भयानक भारथ ॥
पुनि अनेक सेनावध कीन्ह्यो । रुण्डमुण्डककुजातनचीन्ह्यो ॥
कृपाचार्य्य क्रोधित शर जोरे । ते अभिमनु बीचहिं सब तोरे ॥
अपर पांच शर मार्‌यो लै जब । चेत न रह्यो भयो घायल तब ॥
पेलि द्वार अभिमनु जब आयो । द्रोण पुत्र तब देखन पायो ।
कर धनुशर गहिकै कत आवत । मारुमारु कहि हांक सुनावत ॥
अश्वत्थामा लीन्हेउ शरकर । जलधरसम लागेउ वर्षनशर ॥
क्रोधित होइ सुभद्रानन्दन । क्षणमहँकीन्ह्यो सैननिकन्दन ॥

अर्ज्जुन सुत अरु द्रोण सुत, परो आनि जब जोर।
रणकरकस दोऊ सरस, भयो युद्ध अतिघोर॥

तब अभिमन्यु कीन्ह सन्धाना। हृदय ताकि मारयो दशबाना॥
एक बाण या विधि ते छूटयो। काटो धनुष सहितगुणटूटयो॥
औरो साठि सहस शर मारे। तिन बाणन सबसेन सँहारे॥
जब लगि द्रोणी धनुष चढ़ाये। पेलि द्वार अभिमनु तब आये॥
पँचवां द्वार पेलि जब गयऊ। छठयें द्वार उपस्थित भयऊ॥
अभिमनु जब आगे हांको रथ। भूरिश्रवा आइ रोकेउ पथ॥
या विधि बाण बुन्द झरिलायो। रथसमेत अभिमन्यु छिपायो॥
इन्द्रअस्त्रअभिमनु तब छांटयो। सबशरनिमिषएकमहँकाटयो॥
बाण काटि शर किये प्रकाशा। जिमिप्रचण्डरविउवो अकाशा॥

सहसबाणयहिविधि हनो, रह्यो न तनुमें चेत।
पेलि द्वार भीतर गयो, जीति नरेशन खेत॥

सतयें द्वार आइ अरुझान्यो। जासु प्रवेश भेद नहिं जान्यो॥
दुर्योधन सेना सँग भारी। तीस सहस नृप छत्रके धारी॥
ते सब वीर आनिकै घेरे। मारु मारु दुर्योधन टेरे॥
रथपर शर वर्षत हैं कैसे। मन्दर शीश वृष्टिजल जैसे॥
महारथी सब मेघसमाना। वर्षत बाण बुन्द अनुमाना॥
धनु टङ्कोर मेघ की गर्जनि। खड़ग छटा दामिनिकी तर्जनि॥
शक्ति शूल वीरन कर छूटत। मानहुँ वज्र गगनते टूटत॥

महामारु चविन जब कियऊ। तब अभिमन्यु क्रोधतनु भयऊ।
जो शर अर्ज्जुन आपु सिखाये। तौनिवाण सोइ कुँवर चलाये॥
सब शर काटे निमिषमहँ, सेन बधेउ रिसहेत।
जिमि दाहो पावक सघन, कानन सखा समेत॥
सन्मख सेन दृष्टि जो आई। चणमहँ अभिमनु मारिगिराई॥
फौज मध्य अभिमनु है कैसे। मृगदल मांह केशरी जैसे॥
हय गज रथ पैदर संहारै। भूप अनेक खेत महँ मारै॥
सुनिकै शोर द्रोण कृप धाये। कर्ण समेत वीर सब आये॥
सबमिलि घेरि लगे शरमारन। एक वीर इत उतै हजारन॥
सारथि कही कुंवरसों वचना। युद्ध अधर्म द्रोणकी रचना॥
एक एक ते उचित लड़ाई। यह अनीति हम देखी भाई॥
इत अभिमनु है एक जुझारा। उत आये लाखन सरदारा॥
चहुंदिशिबाणवृन्दझरिलावहिं। कहोकवनिदिशिरथहिंचलावहिं
सुनिअभिमनुभाष्योयहबानी। सारथि तुम यह बात न जानी॥
चक्रव्यूह भीतर परे, शत्रुहि कीजै नाश।
आनि परी शिर आपने, छांड़ बिरानी आश॥
सुनु सारथि अबशोच न करिये। सन्मुख सब योधनसों लरिये॥
चाक रूत्य तुम रथहि घुमैये। चहूं ओर हम बाण चलैये॥
सारथि रथ हांको तब बांको। जैसे चलत कुम्हारको चाको॥
द्रोण कर्ण जेतक हैं आगे। शतशत बाण सबनके लागे॥
सारथि तनु दश दश शरमारे। द्वै द्वै शर आसन परिहारे॥

पांच पांच शर हस्ति बिदारे । एक एक शर पैदल मारे ॥
अर्ज्जुन सुत याविधि शर खाचो । घायलसबहि एकनहिं बाचो॥
क्रोधवन्त ह्वै कुरुपति धाये । स्र वीरन सों वचन सुनाये ॥
बालक एक करत संग्रामा । तुम सबको पाल्यौं केहि कामा ॥

सब मिलि मारौ घेरि रथ, गहरु करहु केहिकाज ।
शिशु होइ सेनाबधतु है, आवत तुम्है न लाज ॥

सुनि कै द्रोण कहन असलागे । दुर्योधन भूपति के आगे ॥
यह अर्ज्जुनसुत बड़ो धनर्द्धर । जब लगि धनुष रहै याके कर ॥
महारथी जो कोटिन आवैं । यहिते जयतिपत्र नहिं पावैं ॥
अर्ज्जुन सम अभिमनु धनुधारी । प्रलय समय जैसे त्रिपुरारी ॥
कही द्रोण दुर्योधन राजहि । पच्यो युद्ध जीति किमि-बाजहि ॥
गत अनेक जो मारन आवैं । एक सिंह की सरि नहीं पावैं ॥
जो याको धनु काटत कोई । तौ रणमें अभिमनु वध होई ॥
यह सुनिकै चलौ सब धाये । करणादिक आगे चलि आये ॥
सेन मध्य अभिमनु है कैसे । चीर सिन्धु महँ मन्दर जैसे ॥

अर्ज्जुन सुत अति क्रोधकै, छांड़े तीक्षण बान ।
या विधि सेनावध किये, जिंकि लङ्का हनुमान ॥

सब मिलि एक मतौ ह्वै धाये । रथहि घेरि चहुँदिशि ते आये ॥
बहुतक कोपि बाण सों मारे । शेल शूल मुद्गर परिहारे ॥
जो शर कृपाराय सों पाये । तीनि बाण सोइ कुँवर चलाये ॥
ताते अस्त्र भये चय कैसे । तिमिर जाइ देखत रवि जैसे ॥

जूझि गिरे कुञ्जर मतवारे। रथ सारथि अश्वन संहारे॥
अभिमनु कीन्हो है यह करणी। रुण्डमुण्ड तोपी सब धरणी॥
देखत कर्ण क्रोध जियकीन्हे। दैकर हांक धनुष कर लीन्हे॥
अग्नि बाण कीन्हे परिहारा। अभिमनुजारिकरैउधरिछारा॥
बरत अग्नि चलि भा तब जारन। प्रकटीशिखा हजार हजारन॥
तब अभिमनु जलबाण चलाये। क्षणभीतर सब अग्नि बुझाये॥

अग्नि बुतायो नीरसों, बाढ़ी जलकी धार॥
कौरवदल बूड़न लगे, चहुँदिशि परी पुकार॥

रविसुत मारुत बाण चलायो। पवन तेज सब नीर सुखायो॥
अभिमनु तज्यो सर्पकर बाना। नागन कियो पवन सब पाना॥
डसि धाये तब विषधर कारे। या विधि बहुत सेन संहारे॥
बरहि बाण तब कर्ण चलाये। मोरन पकरि सर्प सब खाये॥
अभिमनु क्रोधवन्त ह्वै रनमें। मारे बाण कर्ण के तनमें॥
अपर साठिशर छांड़े पायल। ताते भये द्रोण गुरु घायल॥
रूपके हृदय बाण दश मारे। असी बाण द्रोणहि परिहारे॥
अपर पांच शर भालुक छूटे। भूरिश्रवा हृदयमहँ टूटे॥
ताने धनुष पार्थसुत अनी। मोहित भे दुःशासन चली॥
मारे बाण काल के आंके। काटे रथ के ध्वजा पताके॥
सात लक्ष चतुरङ्गदल, जूझि गिरे मैदान॥
जिमि वर्षत जलधर जलहि, इमि वर्षत ते बान॥

अभिमनु कीन्हों सेन निकन्दन। क्रोधित भये आपु रविनन्दन॥
पांच बाण तीच्चण कर लीन्हे। ते शर चोट शीशपर दीन्हे॥
घाव लाग अभिमनु रिस बाढ़े। तीच्चण शर निषङ्गते काढ़े॥
दैगुण फोंक बाण परिहारे। चारिउ तुरग सारथी मारे॥
विरथ भये कर्णहि जब जाने। तब गुरु द्रोण शराशन ताने॥
भूरिश्रवा क्रोध करि धाये। अश्वत्थामा कृप सब आये॥
दुःशासन सब बन्धुन लीन्हे। महामारु अभिमनुसों कीन्हे॥
रथी महारथि पैदल हाथी। अभिमन एक न दूजो साथी॥
कर्ण वीर रथ पर चढ़ि आये। सबमिलिबाणवृष्टि झरिलाये॥

उतसेना सरदार सब, इत अर्ज्जुनसुत एक।
सबै वीर घायल किये, अभिमनु राखी टेक॥

कुरुपति तबहिंक्रोधअतिकीन्हे। मारु मारु कै आज्ञा दीन्हे॥
सुनिकै कर्ण बाण करलीन्हे। पढ़िकै मन्त्र फोक शर दीन्हे॥
जो शर परशुराम ते पाये। क्रोधित ह्वै सो बाण चलाये॥
दैकै हांक बाण तब छांटे। करते धनुष कुंवर को काटे॥
टूटो धनुष कुंवर तब डारे। करगहिशक्ति तबहि परिहारे॥
तब अभिमनु अस कहा बुझाई। देखि तुम्हारि अधर्म्म लराई॥
तुम हम ऊपर बाणहि छांटे। बीचहि कर्ण धनुष मम काटे॥
यह कहि कुंवर शक्ति परिहारे। कर्णहि हृदय ताकिकै मारे॥
मूर्च्छित किये कर्ण ते चलो। अर्ज्जुन पुत्र महाबल अलो॥
बिनु धनपाणि कुंवरको पाये। घेरि वीर सब निकटहि आये॥

अभिमनु घेरे आय सब, मारत अस्त्र अनेक।
जिमि मृगगणके यूथमहँ, हरत न केहरि एक॥

लैके शूल कियो परिहारा। वीर अनेक खेत महँ मारा॥
जूझो अनी भभरिके भागे। हँसिके द्रोण कहन अस लागे॥
धन्य धन्य अभिमनु गुणसागर। सब क्षत्रिन महँ बड़ो उजागर॥
धन्य सुभद्रा जगमें जाई। ऐसे वीर जठर जनमाई॥
धन्य धन्य जगमें पितुपारथ। अभिमनु धन्य धन्य पुरुषारथ॥
एक वीर लाखन दल मारे। अरु अनेक राजा संहारे॥
धनु काटे शङ्का नहि मनमों। रुधिरप्रवाह चलत सब तनमों॥
यहि अन्तर बोले कुरुराजा। धनुष नाहि भाजत केहिकाजा॥
एक वीर को सबै हरत हैं। घेरि क्यों न रथ धाइ धरत हैं॥
बालक देखु करी यह करणी। सेना जूझि परी सब धरणी॥

दुर्योधन या विधि कह्यो, कर्ण द्रोणसों बैन।
बालक सब सेना वधी, तुम सब देखत नैन॥

यह कहिके दुर्योधन आये। सबै वीर आगे ह्वै धाये॥
चलो घेरो अभिमनु रनमों। मानहु रवि आच्छादित घनमों॥
लैके खड़ग फरी गहि हाथा। काटो बहु क्षत्रिनको माथा॥
अभिमनु धाइ खड़ग परिहारा। सम्मुख जेहि पावै तेहिमारा॥
भूरिश्रवा बाण दृग छांटे। कुंवर हाथ को खड़गहि काटे॥
तीनि बाण सारथि उर मारे। आठ बाण ते अश्व सँहारे॥
सारथि जूझि गिरे मैदाना। अभिमनु वीर चित्तअनुमाना॥

यहि अन्तर सेना सब धाये । मारु मारुके मारन आये ॥
रथको खैंचि कुंवर कर लीन्हे । ताते मारु भयानक कीन्हे ॥
अभिमनु कोपि खम्भपरिहारे । यक यक घाव बीर सब मारे ॥

अर्ज्जुनसुत इमि मारु किय, महावीर परचण्ड ।
रूपभयानक देखियतु, जिमि लीन्हे यमदण्ड ॥

क्रोधित होइ चहूं दिशि धाये । मारि सबै सेना बिचलाये ॥
यहिविधि किये भयानक भारथ । साहस धन्य धन्य पुरुषारथ ॥
ऐसी मारु खम्भ सों कीन्हे । दशसहस्र राजा वधिलीन्हे ॥
मारि सबै राजा बिचलाये । अरु अनेक राजा मिल धाये ॥
चहुँदिशि महारथी सब घेरे । चली सबै वीर बहुतेरे ॥
नाना अस्त्र सबहि परिहारे । निकट न जाहि दूरिते मारे ॥
दुर्योधन कहँ देखन पाये । गहेखम्भ अभिमनु तब धाये ॥
जुरे बीर चली बहुतेरे । खम्भघाव ते बधेउ घनेरे ॥
जब नरेशके निकटहि आये । द्रोण गुरु दशबाण चलाये ॥

गुरुद्रोण अति क्रोधके, मारे बाण अचूक ।
कुंवर हाथको खम्भ तब, काटि किये दुइ टूक ॥

खम्भ कटे अभिमनु भे कैसे । मणिबिनुफणि कबिकलहै जैसे ॥
क्रोधित भये सुभद्रानन्दनु । चरणघात कै तोरेउ सो धनु ॥
रथते कूदि कुंवर कर लीन्हे । चकाउठाय रणहि शुभकीन्हे ॥
चका कुँवर कर शोभित कैसे । हरिकर चक्र सुदर्शन जसे ॥
रुधिर प्रवाह चलत सब अङ्गा । महाशूर मन नेकु न भङ्गा ॥

गहिकै चक्रा चहूं दिशि धावै। जेहि पावै तेहि मारिगिरावै॥
दुर्योधन पर चक्रा चलाये। गदा रोपि कुरुनाथ बचाये॥
चलो घेरि लगे शर मारन। जुरे आइ कोता हथियारन॥
दुःशासन सुत गदा प्रहारे। अभिमनुके शिर ऊपर मारे॥
जूझे कुँवर परे तब धरणी। जगमहँ रहो सदा यह करणी॥

धन्य धन्य सब कोउ कहै, कुँवर रहो मैदान।
पै गुरु द्रोण मलीनमुख, कहे वचन परमान॥

गुरु द्रोण यहि भांति बखाने। हर्षि नरेश सबै सुख माने॥
अभिमनु मरण सुनैगो पारथ। करिहै महा भयानक भारथ॥
इन्द्र वरुण यम होइँ सहायक। कोइनहिंअर्ज्जुनजीतब लायक
भीमादिक यह युद्ध विचारे। पै जयदथ सबहि शर मारे॥
क्रोधित भये पाण्डुके नन्दन। फेंको सिन्धुराजको स्यन्दन॥
गिरे दूरि उठि निकटहि आये। भीम उपर शतबाण चलाये॥
धर्मराज तब कीन्ह दरेरो। पै जयदथ मारि मुख फेरो॥
लै अनीक सब कुरुपति धाये। जहँ जयदथ लरत तहँ आये॥
कौरव दल जय शङ्ख बजाये। अभिमनु गिरे भूप सुनि पाये॥
धर्मराइ सुनि मौनहि गहेऊ। संध्या भयो युद्ध तब रहेऊ॥

कुरुपांडव फिरिकै चल्यो, भयो युद्धको शेष।
भीमादिक चत्रिय सबै, रोवत धर्म्म नरेश॥

हाहा! अभिमनुअभिमनुभाखेउ। देखेबिना प्राणकिमि राखेउ॥
सुन सपूत तोसों नहि पावों। अर्ज्जुनको किमि वदन दिखावों॥

रोवत भीम नकुल अरु मन्त्री । सैनी सबै महाबल क्षत्री ॥
रोवत सबै भवनकहँ आये । उर्ध्व बाहु केशहि छिटकाये ॥
अभिमनु कहिकै सबै पुकारत । दोऊ हाथ शीशपै मारत ॥
अन्तःपुर पहुँचो यह बानी । श्रवणन सुना सुभद्रा रानी ॥
कुन्ती सुनत महा दुख पाई । रोदन करत शूल उर छाई ॥
सुनत सुभद्रा जननी कैसे । बिना जीव कठपुतरी जैसे ॥
बहत प्रवाह नयनको पानी । हिमऋतु मनो कमलकुँ भिलानी॥
हाहा ! पुत्र परम सुखकारी । सुन्दर मुखपै मैं बलिहारी ॥

पुत्रशोच श्रवणन सुनत, धरणी परी अचेत ।
नयन नीर कज्जलसहित, मनो तिलांजलि देत ॥

जो तुम्हरे पितु होते सङ्गा । तुमसों को जीतत रण रङ्गा ॥
कुन्ती सहित द्रौपदी रानी । बहत प्रवाह नयनभरि पानी ॥
करुणा करहिं ठोंकिकै माथा । रत्न गये पैये नहिं हाथा ॥
यह सुधि सुनि वैराट कुमारी। बारह वर्ष वयस सुकुमारी ॥
पति जूझे रण सुनिकै सरो । मानहु शोकसमुद्रहि परो ॥
कहां गयो प्रीतम सुखदायक । चक्रव्यूहके भेदन लायक ॥
जूझे खेत जगत यश लीन्हे । जयमाला सुरकन्यन दीन्हे ॥
तुम सुरपुर विलसहु सुकुमारा । मोहि अनाथको नाथविसारा ॥
हे स्वामी मोहिं दरशन दीजे । नातरु सङ्ग आपने लीजै ॥
पांच मास मम भये विवाही । विधियहसमय बिछोहा नाही ॥

लग्न व्यास गनि थापेऊ, दाता नृप वैराट।
अर्जुन सुतवर कन्याहित, विधि दुख लिखा ललाट॥
यह सुनि रोइ उठीं दुखवानी। कुन्ती सहित द्रौपदी रानी॥
ठोंकि ललाट कर्म विधि सोये। सुनिदुख पशु पच्छी सबरोये॥
करुणा करि सब रानिन जाई। उत अर्ज्जुनने रची लड़ाई॥
पारथ ब्रह्मअस्त्र परिहारे। रणमां शिशुपकागण मारे॥
जय करि कहि कीजै हरि गवना। हांको रथ जैये निजभवना॥
आजु चित्त कछु चञ्चल मेरे। ताते उपजत शोच घनेरे॥
ते सब शर गुरु बीचहि काटे। पांचबाण तिन फिरिकै छांटे॥
द्रोण सात्यकी भा रण रङ्गा। दुनों वीर महाबल अङ्गा॥
दोऊ सरस रचेउ पुरुषारथ। कीन्हेउ महाभयानक भारथ॥
द्रोणगुरु या विधि शर जोरे। व्यूह द्वार ठहरात न घोरे॥
हँसि भाषेउ गुरु द्रोण तब, सुनु सात्यकि अज्ञान।
बाहर होइ अर्ज्जुन गयो, तुम चाहत द्रुत जान॥
यम अरु इन्द्र वरुण जो आवें। व्यूह द्वार होइ जान न पावें॥
सुनि सात्यकी किये पद वन्दन। बेखटके हांकेउ तब स्यन्दन॥
जौन पन्थ पारथ शुभ कीन्हेउ। चक्रलीकमारगधरि लीन्हेउ॥
जाइ व्यूह कीन्हा परवेशा। रण महँ जीते बहुत नरेशा॥
चहुँ ओर क्षत्रिय शर मारत। नाना अस्त्र शस्त्र परिहारत॥
जेहि पथ अर्ज्जुन कीन्ह पयाना। चले सात्यकी मारत बाना॥
लरत सात्यकी आयउ तहँवां। भूरिश्रवा भूप है जहँवां॥

दोऊ वीर भिरे मदाना। क्रोधित लगे चलावन बाना॥
आयो रथ अति निकटहि जाने। भूरिश्रवा आनि लपटाने॥
रथते उतरि परेउ दोउ धरणी। मल्लयुद्ध कीन्हेउ बहुकरणी॥

भूरिश्रवा महाबल, बर दीन्हो तेहि ईश।
गहे केश तेहि खड़ग लै, काटन चाहत शीश॥

कोपि नरेश खड़ग कर लीन्हे। शीघ्रचलाय घातनहिं कीन्हे॥
ताते घात नहीं बनि आई। इहां कृष्ण अर्जुनहि चेताई॥
भूरिश्रवा खड़ग गहि हाथा। काटत आहि सात्यकी माथा॥
मन व्यापक शर अर्ज्जुन छांटे। खड़गसमेत बाहु तेहि काटे॥
उठि युयुधान खड़ग तब लीन्हे। भूरिश्रवा शिर छेदन कीन्हे॥
बधि नरेश अपने रथ आवा। हांकि तुरङ्ग अग्रको धावा॥
विक्रम युद्ध करत पुरुषारथ। पहुँच्यो जाइ लरत जहँ पारथ॥
श्रीहरि निरखि बहुत सुखपाये। भले भये सात्यकितुम आये॥
अर्ज्जुन युद्ध करत परतच्छक। नन्दिघोष पाछे तुम रच्छक॥
अस कहि रथ हांकेउ बनवारी। दल मारत अर्ज्जुन धनुधारी॥

एकै शर अर्ज्जुन हने, गुण जोरत दश बाण।
छूटतही शत होत हैं, बधत सहस परिमाण॥

यहि विधिते सेना संहारे। सन्मुख वीर जुरे ते मारे॥
सोमदत्त नृप बड़े धनुर्द्धर। सो हैं जुरे गहे शारँग शर॥
रहु रहु करि कीन्हो सन्धाना। अर्ज्जुन उर मारे दश बाना॥
कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे। बीस बाण हनुमानहिं मारे॥

सोमदत्त कीन्हों पुरुषारथ। क्रोधित ह्वै जोरे शर पारथ॥
पढ़ि रविमन्त्र बाण सब छांटै। सोमदत्तको शीशहि काटै॥
मुकुट समेत परो शिर धरणी। अर्जुनरण कीन्हो यह करणी॥
बाहुलीक गन्धार महारथ। सेन समेत करत पुरुषारथ॥
नृप कांमोद धनुष कर लीन्हे। महामारु पारथ पर कीन्हे॥
चहुँदिशि ते लागे शर मारन। बहुतक जुरे कुन्त हथियारन॥

शर वर्षत हैं वीर सब, शक्ति खड़गको धार।
शूल गदा मुद्गर घने, चहूँ ओरको मार॥

सेना सबै जानि रथ घेरे। मारु मारु कहि चहुँदिशि टेरे॥
पै पारथ मन नेकु न भङ्गा। शर सन्धान करत रण रङ्गा॥
अर्जुन वधत सेन यहि रूपहि। प्रलय होत जैसे जल भूपहि॥
लाखन दल कीन्हे शर खण्डित। रुण्डमुण्ड धरणीसब मण्डित॥
जुरे आइ सब वीर महाबल। पलभरिपारथनहिंपावतकल॥
यहिविधि करत घोर सग्रामा। जूझिगिरे कुरुपतिके कामा॥
पारथ अरीन करत निकन्दन। नन्दिघोष हांकत जगवन्दन॥
जो दल अर्जुन मारि गिराये। लोथिनपरहरि रथहि चलाये॥
याविधि सघनफौजअतिभारी। प्रभु सारथि पारथ धनुधारी॥
महारथी सब बाण चलावहिं। नन्दिघोष रथ छांह छिपावहिं॥

कठिन अस्त्र आवत जबहिं, जाहि न रिपु बच जाइ।
ऊपर श्रीहरि लेत शर, अर्जुन अङ्ग बचाइ॥

नृप काम्बोज कठिन शर मारे। कृष्ण अङ्ग शत बाण प्रहारे॥

श्याम शरीर रुधिर छबिपाये । पीतवसन तनु अरुण सुहाये ॥
क्रोधवन्त अर्ज्जुन शर छांटे । नृपकाम्बोजके शीशहि काटे ॥
हांकत अश्व जगत के तारन । हर्षि वीर लागे शर मारन ॥
बहुतक जानि रथहि लपटाने । महाशूर सब बांधे बाने ॥
नन्दिघोष रथ राजन घेरे । सावधान अर्ज्जुन हरि टेरे ॥
बाहु विशाल कृष्ण परिहारत । अभिरत ता जनतासों मारत
पुनिअनेक शर अर्ज्जुन छांटत । रुण्ड मुण्ड वसुधा सब पाटत
याविधि होत युद्धको करणी । महामारु कछु जाइ न वरणी
रथ पाछे सात्यकि है रक्षक । वीर अनेक वधे परतक्षक ॥

या विधि अर्ज्जुन रण करत, होत घोर संग्राम ।
हांकदेत हय हांकहीं, सारथि श्रीघनश्याम ॥

याविधि अर्ज्जुनकरत मशाना । भारत अवनि करत मैदाना
जोती गयो पतितके पावन । थके तुरङ्ग सकैं नहिं धावन ॥
अश्व कियो चाहत जलपाना । पारथसों हरि आए बखाना
दोइ प्रहर दुइ ऊर्ध्व हि भयऊ । तृषित तुरङ्ग तेज घटिगयऊ
अर्ज्जुन कहा न करो अँदेशो । जल उपाय करिहैं हमकेशो ॥
असकहि पारथ करि सन्धाना । भूमि निरखिकै मारओबान
भेदि पताल गयउ शर तहँवा । भोगावति गङ्गा हैं जहँवा ।
या विधिते शायक परिहारा । निकरी फूटि गङ्गके धारा ॥
ताते भयो सरोवर ऐसो । निर्मल नीर सुधा का जैसो ॥
पारथ कहो कृष्ण सुनि लीजै । रथते तुरँग खोलि जल दीजै

अश्वघाव क्षत्रिय करत, अभिरत वीर अनन्त ।
केहि विधिते जल दीजिये, भाषैं श्रीभगवन्त ॥
अर्ज्जुन कोपि किये सन्धाना । मारयो सैन कियो मैदाना ॥
तब पारथ शर पञ्जर छाये । अर्द्ध नीर शर ओट छिपाये ॥
ताते वीर निकट नहिं आयो । नन्दिघोष नहिं देखन पायो ॥
तब अर्ज्जुन भाषेउ भगवानहिं । खोलहु अश्वकरहिजलपानहिं ॥
श्री हरि सुनिकै जोती छोरे । किये पानजल चारिउ घोरे ॥
स्वकर नाथ अश्वनको धोये । फरकन लगे सबै श्रम खोये ॥
फेंट खोलि तब चूरण लीन्हे । मिश्रितकरिमिश्रिततेहिदीन्हे ॥
अर्ज्जुन गये कृष्णके पासा । कहीकहत सुनि वचनउदासा ॥
शशिको पुत्र कहै बुध नामा । काको सुत आयो केहि कामा ॥
सुन नाती छांड़ो केहि कारण । मोते भाषौ त्रासनिवारण ॥
आदि कथा हरि भाषन लागे । सुनिये पारथ परम सभागे ॥
जब हम जठर देवकी जाये । देव दैत्य सब जगमहँ आये ॥
क्षत्री होइ जगमें सबै, मम लीलाके काज ।
कुरुपति कलिको अंश है, धर्म्म युधिष्ठिरराज ॥
सुरगण सब पांडव हितकारी । कुरुपति असुरनकोअधिकारी ॥
ब्रह्मा कही चन्द्र सुनि लीजै । बुधसुत देहु जन्म जगकीजै ॥
विधिसों विनय सुधाकर कह्यो । इहई पुत मोर घर रह्यो ॥
जौंलगिसुतहिजन्मजगकरिहौ । काहिदेखि धीरज मन धरिहौ ॥
हंसिविधिकहौनिशापति आगे । पन्द्रह वर्ष देहु मोहिं मांगे ॥

जन्म सुभद्रा जन्महिं लैहै । भारत मों बहुत यश पैहै ॥
पन्द्रह वर्ष लागि हम मांगे । एको दिन नहिं रहिहै आगे ॥
जो यहि बीच आवनहिं पैहै । दोउ दल मारि तोर सुत ऐहै ॥
तुमते कहौं सुनो हो पारथ । शोच न कीजै आपु अकारथ ॥

अर्ज्जुनको परबोधके, लै आये प्रभु ऐन ।
शोकमिटा तनुक्रोध भा, कह्यो कृष्णसों बैन ॥

कालहि युद्ध जयदर्थहि मारौं । नातरु देह अग्निमों जारौं ॥
यह प्रण मैं कीन्हों अपने मन । वधौं शत्रुको देहुँ अपन तन ॥
प्रण सुनि श्रीहरि कहिवे लीन्हे । जयद्रथ कहँ शङ्कर वरदीन्हे ॥
ताते अजय भयो है पारथ । केहिविधितुमकरिहौपुरुषारथ ॥
हमतुम मिलि कीजै अब गवना । चलु जाइ शङ्करके भवना ॥
नर नारायण सङ्ग सिधाये । क्षणमहँ गिरि कैलासहि आये ॥
चहुँदिशि वनस्पती सब फूले । मत्तमधुप गुञ्जत रस भूले ॥
बटतर बैठे हैं गङ्गाधर । उमा सहित हरिनाम जपत हर ॥
अङ्ग विभूति बसन मृगछाला । चन्द्रललाट गरे शिरमाला ॥
शीशजटा महँ गङ्ग विराजत । लोचन तीनि मनोहर छाजत ॥

शङ्कर देख्यो कृष्णकहँ, उपजो चित्त अनन्द ।
विहँसि वदन पूछन लगे, शरदश्याम सुखचन्द ॥

करि आदर आसन बैठारे । कहौ आपु क्यहि काज सिधारे ॥
हँसि हरिकही सुनहु गङ्गाधर । तुम दीन्हों जयदर्थहिको वर ॥
अभिमनु जूझि गिरे भारतरण । ता कारण पारथ कीन्हो प्रण॥

कालहिवधौं नहिं सिन्धुनरेशहि । तौमैं अग्निहि करौं प्रवेशहि ॥
पारथही अब यह वर दीजै । कालहिवधहि जयदर्थहि कीजै ॥
शङ्कर कही दीन्ह वर पारथ । विधि जयदर्थ करहु पुरुषारथ ॥
जाके सखा आपु श्रीकेशौ । जयकरिहौ रणकौन अँदेशौ ॥
लैकर धनुष बतायउ वाना । यहि विधिते कीजै सन्धाना ॥
लै अर्ज्जुन माधव गृह आये । समाचार सब कुरुपति पाये ॥
अर्ज्जुन प्रण कीन्हे उ यहिकारन । कालहिचहतजयदर्थहिमारन॥

जो न वधौं जयदर्थही, करहुँ अग्निपरवेश ।
यह प्रण दृढ़ पारथ किये, सुधि सब सुनी नरेश ॥

सुनि जयदर्थ महा भयमानी । इतई रहब मरण निज जानी ॥
कुरुपतिपहँ कीन्हों तब गवना । कही जात हम अपने भवना॥
पारथ प्रण मिथ्या नहिं परिहै । कोसन्मुखहोइ तिनसनलरिहै॥
तेहिकारण भवनहिं बसि कीजै । शङ्कर शरण जाइके लीजै ॥
सो सुनिकै कुरुनाथ बखाना । अबनहिंकीजियममअपमाना ॥
हम सब तव रक्षा रण करिहैं । कर्णादिक लै आगे लरिहैं ॥
सब मिलिकैं करिये पुरुषारथ । कैसे तुमहिं वधैंगे पारथ ॥
भागि गये पुनि अमर न ह्वै हौ । क्षत्रिनमध्य लाज बहु पैहौ ॥
दिन भरिकै रक्षा सब करिहैं । सांझ समय तब अर्ज्जुन मरिहैं ॥
पारथ मरैं युद्ध हम जीतैं । तुम काहेक जिय मानत भीतैं ॥

सेनापति हैं द्रोण गुरु, रक्षा करिहैं तोहिं ।
सांझ भये अर्ज्जुन मरहि, विधि जय दीन्हो मोहिं ॥

तातें अब हम तुमसों कहिये । करि साहस इस्थिर ह्वै रहिये ॥
सिन्धुराज तब बोले बयना । कहूं न ऐसो देखहुँ नयना ॥
पारथ कोपि धनुष जब धरिहै । को समरथ जो सन्मुख लरिहै ॥
जब विराटपुर गोधन हरेउ । अर्ज्जुन एक सबै बश करेऊ ॥
मोहिते कहेउ यहै त्रिपुरारी । पारथसम नहि कोउधनुधारी ॥
उठिकै कर्ण कही परतक्षक । कालहि दिवस हम होबे रच्चक ॥
तब जयदर्थ कहा समुझाई । सबको बल हम जानत भाई ॥
जो गुरु द्रोण बांह गहि राखैं । रच्चा करहिं पैज करि भाखैं ॥
तौ मैं रहौं सुनो न्हप बयना । नतरु जाइहौं अपने अयना ॥
कुरुपति कहीसबहिमिलि जैये । जाय द्रोणसों बात जनैये ॥

यह कहिकै सब मिलि चले, गये द्रोणके भौन ।
आदर कै आसन दिये, किमि न्हप कीन्हेउ गौन ॥

सो सुनिकै दुर्योधन कहेऊ । अर्ज्जुन प्रण कीन्हेउ अस अहेऊ ॥
कालहि दिवस जयदर्थहि मारौं । नहिं तौ देह अग्निमहँजारौं॥
जो गुरुद्रोण होहु तुम रच्चक । दृढ़कै बांह गहौ परतच्चक ॥
कालहि दिवस जयदर्थ बचैये । पारथ मरत युद्ध जय पैये ॥
यह सुनि द्रोण कहे तब लीन्हे । अब मन अपने मैं प्रणकीन्हे॥
ऐसो व्यूह करौं निर्म्मांना । जाको भेद कोउ नहिं जाना ॥
सब आगे होइ हैं हम रच्चक । देखो को आवत परतच्चक ॥
जो कोटिन अर्ज्जुन चलि आवैं । तौ मोते नहि द्वार छुड़ावैं ॥
कालहि करौं यहि विधि पुरुषारथ । कृष्णसमेत जीतियै पारथ॥

या प्रण में तुमते करहुँ, सुनहु वचन परमान।
पारथ अन्त न पावहीं, करौं व्यूह निर्मान॥
कह्यो द्रोण अब साजहु सैना। रचत व्यूह अब देखो नैना॥
कीन्हेउ वम्ब दमामा बाजे। सुनिकै सवहि भूपगण गाजे॥
सारथि रथ जोते हय चोखे। इन्द्र विमान परत हैं धोखे॥
चढ़े अश्व असवार महाबल। उदधिसमानपियादनकोदल॥
सब जुरिकै आये मैदाना। कीन्हे द्रोण व्यूह निर्माना॥
विकटव्यूह अतिनिकट बनाये। जाको अन्त कहूं नहिं पाये॥
कमलव्यूहते मध्यहि फेरेउ। शतदलको व्यूहहिते घेरेउ॥
कमल व्यूहमहँ व्यूह बहुतेरे ते सब रहेउ अस्त्र गहि घेरे॥
आपु द्रोण राखो है चक्रहि। सोमदत्त वल समता शक्रहि॥
बाह्लीक गन्धार नृप, दोउ बाजू रहि ताहि।
कर्ण मध्यकस्थलरहो, सवहि सराहत जाहि॥
अग्रभाग गुरु द्रोण विराजत। पहिरिसनाह सिंहसम गाजत॥
कमल मध्यमहँ जयद्रथ राखो। महाविकट बलजातन भाखो॥
षट योजन रचि व्यूह बनाई। योजन तीनि बनी चौड़ाई॥
आठ कोहिणी दल सब राखे। है समूह दल जात न भाखे॥
कहों कोहिणी दल परिमाना। यहिते बुध करिहैं अनुमाना॥
रथपर एक रथी छवि छावै। तेहि पाछे पचास गजधावै॥
गज पाछे शतशत असवारा। वनमहँ करत शत्रु संहारा॥
एक एक असवारन पाछे। शत शत पैदल आवतआछे॥

इतनो होय रथी त्यहिकहिये। शूरवीर कोई रण लहिये॥
ऐसो रथी पांचशत आये। ताको सेना एक कहाये॥

ऐसो दल सेना जुरि, पृतना कहिये ताहि।
दश पृतना जुरिकै चलै, यही वाहिनी आहि॥

ऐसे दल वांहिनि जुरि आई। एक छोहिणी फौज कहाई॥
आठ छोहिणी दल परिमाना। कीन्हेंव्यूह निकट निर्माना॥
गहिकै धनुष द्रोण गुरुकह्यो। सब क्षत्रिय दृढ़कै थल गह्यो॥
सब मिलि सावधान ह्वै रहिये। अर्ज्जुनसों कीन्होंरण चहिये॥
अरुण उदय पांडव दल साजे। शब्द अघात दमामे बाजे॥
स्वकर रथहि जोते बनवारी। चढ़े आइ पारथ धनुधारी॥
पहिरि सनाह धनुष कर लीन्हे। दोउ तुणीर कसिकैंदृढ़कीन्हे॥
शिरपर मुकुट मनोहर नीको। भालउदित हरिमन्दिर टीको॥
यज्ञपवीत विराजत कांधे। पीताम्बर कटि कसिक बांधे॥
सुन्दर श्याम शरीर विराजत। कुण्डल कान मनोहर छाजत॥

ब्रह्मा शङ्कर देव मुनि, नहि पायो ज्यहि अन्त।
भक्त हेत जोती गहे, महिमा अगम अनन्त॥

धर्मराइ मैदानहिं आये। तब श्रीपति यह वचन सुनाये॥
सुनहु युधिष्ठिर तुमसों कहिये। लै सेना इतही अब रहिये॥
जो सब मिलि रणको उरझैये। व्यूह भेद को अन्त न पैये॥
अर्ज्जुन रथी सङ्ग हम सारथ। देखो नृप नयनन पुरुषारथ॥
धर्मराइ कछु कहिवे लीन्हे। अर्ज्जुन सौंपि कृष्णको दीन्हे॥

तीनि लोक भापत परतच्चक । पाण्डुवंशके माधव रक्षक ॥
पारथ वीर अहैं हम सारथ । कहा शोच करि है पुरुषारथ ॥
अस कहिकै माधव रथ हांको । गर्जत नन्दिघोषको चाको ॥
ध्वजा उपर हनुमत छवि पावै । चञ्चल अश्व पवन गतिधावै ॥
पहुंचो निकट व्यूह जब पेख्यो । अतिअगाधदलपरत नलेख्यो ॥

अर्जुन देख्यो द्रोण तब, सङ्ग कोउ नहिं सैन ।
क्रोधित शर सन्धानि कै, कह्यो कृष्णासों बैन ॥

हे श्रीपति तुम अन्तर्यामी । मेरो प्रण यह सुन्यो न स्वामी ॥
जो कोटिन अर्जुन हरि आवैं । व्यूह द्वार मैं जान न पावैं ॥
श्रीपति कह्यो धरहु धनु पारथ । देखत कहा करहु पुरुषारथ ॥
अर्जुन गुरुहि कीन्ह परणामा । आशिष दीन्ह होय मनकामा ॥
द्रोण प्रथम कीन्ह्यो सन्धाना । एकहि वार तजे दोउ बाना ॥
गुरु अरु शिष्यकरत रणशरसे । दोउ दिशिबाण बुन्दसमबरसे ॥
साठि बाण अर्जुन तन मारे । कृष्ण अङ्ग दशबाण प्रहारे ॥
सहस बाण लागे हनुमानहिं । लघु सन्धान तजत गुरुबानहिं ॥

अर्जुन वर्षत बाण इमि, जिमि सावन जलधार ॥
सघनसैन भेदन करत, निकरजात शर पार ॥

तब गुरु द्रोण क्रोध जियकीन्ह्यो । महामारु पारथपर कीन्ह्यो ॥
ऐसे बाण द्रोण गुरु जोरे । शरते पग ठहरात न घोरे ॥
दोऊ वीर भिरे मैदाना । सरसनिरसकहि जात न बाना ॥
इन्द्र अस्त्र पारथ तब कीन्हेउ । पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हेउ ॥

छूटत बाण शब्द घहरानेउ । अचरज कै सबहीं जियजानेउ ॥
हँसिकै द्रोण किये सन्धाना । तजेउस्वामिकार्तिककर बाना ॥
ताते इन्द्र अस्त्र हनि दीन्हेउ । तब पारथयमअस्त्रहिलीन्हेउ ॥
मृत्यु क अस्त्र द्रोण परिहारेउ । तब यम अस्त्रहि पारथ मारेउ ॥
अस्त्र अस्त्र सों कीन्ह निवारण । तब लागे तीच्णशर मारण ॥
पारथ बाण कीन्ह सन्धाना । इत गुरुद्रोण सरस मैदाना ॥

कही द्रोण अर्ज्जुन सुनो, द्वार न छांड़ौं आज ।
दीनबन्धु पारथ सहित, समुझि कीजिये काज ॥

श्रीपति कही सुनहु हो पारथ । गुरुसों होइ न सक पुरुषारथ ॥
भई अबेर दिवस चढ़ि आयो । व्यूह भेद अजहूं नहिं पायो ॥
बाहर होइ रथ भीतर डारहिं । भेदि व्यूह जयदर्थहि मारहिं ॥
अर्ज्जुन कही उलै होइ जैये । रणमों कैसै पीठि दिखैये ॥
माधव कही न जानत पारथ । भूलि बात यह कही अकारथ ॥
कहा न कीजै अपने काजा । द्विज गुरुते भाजे नहि लाजा ॥
अस कहिकै हरि रथहि चलायो । द्रोणहितजिअन्तरहोइआयो
लै ताजन हरि अश्वन मारेउ । दै करि हांक व्यूह पर डारेउ ॥
बहुतक पारथ मारि गिरायो । कछु रथचाककृष्ण कचरायो ॥
कछु हय धका उलटिकै डारेउ । ताजन घाव कृष्णकछु मारेउ ॥

नन्दिघोष रथ जाइकै, व्यूह किये परवेश ।
चहूं ओर शर वर्षहीं, चत्रिय सबै नरेश ॥

सेन मध्य रथ धावत कैसे । वोहित चलत सिंधुमहँ जैसे ॥
अर्जुन कीन्हेउ शर सन्धाना । मारन लगे क्रोध करि वाना ॥
अगणित कीन्हेउ सेननिकन्दन । नन्दिघोष हांकत जगवन्दन ॥
वीर अनेक आनि के घेरहिं । मारहिं मारु मारु कहि टेरहिं ॥
अर्जुन वीर कृपासे सारथ । लागे करन सरस पुरुषारथ ॥
रथ पर लोग शूल शर वर्षे । युद्ध देखि पारथ मन हर्षे ॥
वीर अनेक अस्त्र परिहारे । खड्ग घाव रथ ऊपर मारे ॥
अर्जुन कोपि चलायो वाना । योजन एक कियो मैदाना ॥
नन्दिघोष हांकत वनवारी । जीती गहे पिताम्बरधारी ॥
योजन एक किये रथ आगे । धर्मराय तब कहिबे लागे ॥

धनुटँकोर ध्वनि सुनि परत, कहा होत धौं आहि ।
हरि अर्जुन सुधि लेनको, अब पठवों मैं काहि ॥

कह्यो नरेश सात्यकी जैये । सुधि लैके मोपर फिरि ऐये ॥
नृपआज्ञा माथे धरि लीन्हेउ । रणकोगमन सात्यकीकीन्हेउ ॥
तब सात्यकि देखेउ परतच्छक । द्वारहि व्यूह द्रोण गुरुरच्छक ॥
जबसात्यकिअतिनिकटहिआये । हँसिक द्रोण कहन मनलाये॥
अरे मूढ़ मेरे ढिग आवा । निश्चय भयो कालको खावा ॥
यह सुनि क्रोध भये वहु नाना । एक वार मारे शत वाना ॥
वाम आंखि वायां भुज फरके । जियअकुलातचहतहियदरके ॥
सोहरिसुनि यहिभांति वखानो । मोरहु जिय चदहे अकुलानो॥

को गुरुद्रोण शूलचत करयो। धर्मराजपर संकट परयो॥
सब जानत हैं अन्तर्यामी। अभिमनुमरणकहोनहिंस्वामी॥
हांको रथ माधव तबहिं, धाये चपल तुरङ्ग।
अशकुन देख्यो पन्थ महँ, भा पारथ मन भङ्ग॥
आतुर ह्वै चलिआये तहँवां। रोदन करत भूमिप त जहँवां॥
चलत प्रवाह अश्रुहैं नयना। अर्जुन कही कृष्णसों बयना॥
अभिमनुमरण सुनो श्रीमाधव। नहिंजानतविधिकीन्होंकाधव॥
रथते उतरि गयो पुनि तहँवां। रोदन करत सबै हैं जहँवा॥
अभिमनुनाहिं सभामह देख्यो। जूझ्यो पुत्र सत्य करि लेख्यो॥
तब अर्जुन भाष्यो यह बयना। अभिमनु कहां न देखहुँ नयना॥
धर्मराज सब बात सुनाई। अकथकथाविधिकीप्रभुताई॥
चक्रव्यूह गुरु द्रोण बनाये। दुर्योधन कहि दूत पठाये॥
भेदहु व्यूह आनि कै लरिये। नातो हारि गवन वन करिये॥
सो सुनिकै हम बहुदुख कीन्हेउ। सबचत्रिनको आज्ञादीन्हेउ॥
व्यूहभेदि जानहिं नहीं, कहहिं सबहि परिमान।
सब चत्री हियहारिगे, अभिमनु लीन्हों पान॥
बहुत भांति मैं कहि समुझायो। अभिमनुकेरुहुमनहिंआयो॥
छहौं द्वार तोरौं सति भावा। सत वांको रण मोहिं न आवा॥
यह सुनि भीमसेन तब कहेऊ। सतवां द्वार भार मम रहेउ॥
सो सुनिकै साजौ हम सयना। चक्रव्यूह देखत तब नयना॥
देखत सबहिं अचम्भव भयऊ। अभिमनुव्यूहभेदिकै गयऊ॥

भीमादिक चलौ सब धाये। पै जयद्रथ सबहिं अटकाये॥
छठों द्वार सुत पेलि कै गयऊ। सतयें द्वार महारण भयऊ॥
सो सब काहु न देखो नयना। जूझेउ पुत्र सुनेउ यह वयना॥
यह सुनि अर्ज्जुन मूर्च्छित भयऊ। रोकै कृष्ण अङ्कमहँलयऊ॥
अर्ज्जुन कृष्ण विकल होइरोये। पुत्रशोक चाहतजियखोये॥

अर्ज्जुन भाष्यो भीमसों, प्राणकि कीन्हे गौन।
सुतहिंजुझायो खेतमहँ, तुमसब आयो भौन॥

चौदहवर्ष वेस अतिवारा। द्रोण कर्ण के युद्ध विचारा॥
याहो समय होत हम साथा। वधे वैरि सुत मनहुँ अनाथा॥
सुन्दर रूप मनोहर आनन। खण्डखण्डवीरनकिये वाणन॥
करुणा कै पारथ यह भाखैं। पुत्र विना हम प्राण न राखैं॥
सुनहो वीर महा धनुधारी। तुमपर प्राण करौं वलिहारी॥
हम जीवत तुम जीवत रनमों। यहै शोच आवत है मनमों॥
धर्म्मराय के कामहिं आयो। हमहिंछांडितुम कहांसिधायो॥
चत्रिय सवै वीर सरदारा। सबहिं कुशल जूझे तुम बारा॥
भीमसेन वहुतै गलगाजे। सुतै जुझाय खेत तजि भाजे॥
सुनिकै भीम कहन अस लागे। लज्जावन्त क्रोधसौं पागे॥

सब मिलिकै भारत रच्यो, राज्यभोगके हेत।
अब रोवत विलखत कहा, जव सुत जूझेउ खेत॥

जो म होतेउँ सुतके साथा। सनसहितवधतिउँ कुरुनाथा॥

कहो कृष्ण अर्ज्जुन सुनि लीजै । चलहु गवन अन्तःपुर कीजै ॥
अर्ज्जुन कही सुनोहो माधौ । अब उतजायकीजिये काधौ ॥
आपु जाहि हरि हम नहिं जैहैं । रानिन में का वदन दिखैहैं ॥
सो सुनि अन्तःपुर हरि आये । बहिन सुभद्रा देखन पाये ॥
धाइ सुभद्रा चरणन लागी । हे माधव हम परम अभागी ॥
श्रीहरि तुम कीन्हें प्रतिपालक । भारत जूझिगयो मम बालक
अर्ज्जुन से पितु मातुल केशौ । रणजूझे सुत बड़ो अँदेशौ ॥
करुणा करै सुभद्रा लागी । विह्वल विकल शोकते पागी ॥

वधू उतरि आई तहां, गहे कृष्ण के पाइ ।
आज्ञा दीजै जाहि हम, पतिसँग यादव राइ ॥

तेरे गर्भ बाल भाषो गनि । कुरुपांडवको वंश शिरोमनि ॥
होइहै पुत्त प्रबल बल भारी । एक छत्त वसुधा अधिकारी ॥
या विधिते श्रीपति समुझाये । अन्तःपुर ते बाहर आये ॥
भोजन पान कहूं नहिं कीन्हें । सेना सबहि समरमन दीन्हें ॥
अर्ज्जुन निकरि चले वनवासा । पुत्त शोकते जीव निरासा ॥
श्रीपति अग्र न देखो पारथ । पाछे चले सखा के सारथ ॥
वनमां पारथ भटि मुरारी । गहिकरवचन कहेउ वनवारी ॥
पारथ शोच छांड़ि अब दीजै । निर्म्मल ज्ञान चित्तमें कीजै ॥
काको सुत बांधव पितु जगमों । पथिकमित्तआहीजिमिजगमों॥
सगरादिक ऐसे नृप भयऊ । ते सब यहि धरणीमहँ गयऊ ॥

कोइ न काहूको अहे, कीजै हृदय विचार।
सबलसिंह चौहानकह, मिथ्या है संसार॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

सुनिकै अर्जुन तब यह भाखो। दीनबन्धु जिय जात न राखो॥
पारथ सङ्ग हमारे ऐये। अभिमनुतुमकहँ आनि दिखैये॥
यह सुनि पारथको मन हरष्यो। करिप्रणाम हरिके पगपरष्यो॥
विनतासुतकहँ सुमिरण कीन्हे। आयेगरुड़ कहन मनदीन्हे॥
मेरे सङ्ग चलहु तुम पारथ। सुरपुर जाइँ तुम्हारे स्वारथ॥
उड़ेउ गरुड़ तब कीन्हेउ गवना। क्षणमहँगयोदेवनिशिभवना॥
देखो जाइ महारण रङ्गा। अभिमनु लरत दैत्यके सङ्गा॥
कृष्ण कही अभिमनुपहँ जैये। पकरि बांह सुत इतलै ऐये॥
सुत कहँ देखि महासुख पाये। मिलिवेको आतुर ह्वै धाये॥
मोहिछांड़ि कित कीन्हें गवना। हेसुत वेगि चलो निजभवना॥

सो सुनिकै अभिमनु कही, काह वकत विन काज।
पुत्र पुत्र भाषत कहा, जीव न आवत लाज॥

काको सुत काको रथ हाथी। जैसे मिलत स्वप्नमहँ साथी॥
पितुते सुत सुतते पितुकरणी। जैसे चलत रहटको ठरणी॥
हम शशिपुत्र बुद्ध है नामा। रोदन काह करत बेकामा॥
यह सुन अर्जुन बहुत लजाये। रहे मौन कछु वचन न आये॥

मनमहँ ज्ञान कियो तब पारथ। सत्य कहत जग सबै अकारथ॥
और दवा प्रभु आपु खवाये। होइ बलवन्त भये सच पाये॥
दोऊ कर हरि धोवन कीन्हे। गङ्गोदक झारी भरि लीन्हे॥
वरिउ तुरङ्ग आनि रथ जोरे। चञ्चल चपल दिननके थोरे॥

कुरुदल सबै अनन्दसों, करन लगे जलपान।
धन्यधन्य पारथजगत, अरिदल करत बखान॥

चपल तुरङ्ग हांकि रथ दीन्हे। पुनि पारथ बाणावलि कीन्हे॥
शर पञ्जर ते भारत आगे। चहूँ ओर शर वर्षन लागे॥
महाशूर जो आगे आवत।क्षणमहँ अर्ज्जुनमारिगिरावत॥
अर्ज्जुन बाण गिरत दल ऐसो। प्रबल पवन कदलीवन जैसो॥
यहि विधिलरत शङ्कनहिंमनमों। रुधिर प्रवाहचलतसबतनमों॥
वीरन अङ्ग देखि दृग भूले। जिमिवसन्त किंशुकतरुफूले॥
अरुण वर्ण शोणित लपटाने। खेलत मनहुँ अबीरन साने॥
पेलि फौज रथ याविधिधावत। जिमिमैनाकधरणिपरआवत॥
याविधिते रथ हांकत केशव। धर्मराज इत करत अँदेशव॥
खबरि हेतु सात्यकी पठाये। सुधि लैके अजहूं नहिं आये॥

भीमसेन तुम जाहु अब, हरि अर्ज्जुनके ठौर।
उत चाहत सुधि लेनको, वीर न देखौं और॥

साहस कै बांधव शुभ कीजै। अर्ज्जुनखबरिआनिमोहिंदीजै॥
पहर अढ़ाई दिन भा आई। अबलौं जिनकै खबरि न पाई॥
नृपु आज्ञा माथेपर लीन्हे। रणको भीमसेन शुभ कीन्हे॥

व्यूहद्वार जब रथ रहुँचाये। द्रोणगुरू देखन तब पाये ॥
क्रोधवन्त शारँग कर लीन्हे। ते शर गुरुवीचहि चयकीन्हे ॥
अपर पांच शर मारे पायल। ताते किये अश्व रथ घायल ॥
हँसि गुरुद्रोण कह्यो यहवानी। सब दिन भीम परमअज्ञानी ॥
नन्दिघोष रथ हरिसम सारथ। सके न द्वार जान यहि पारथ ॥
यहि मारग ह्वै जान न पैहो। पारथ गये तितहि ह्वै जैहो ॥

भीमसेन अति क्रोधकरि, कहे द्रोण सों बैन ॥
द्वार पेलि अबजातहौं, तुमदेखत वधि सैन ॥

अर्ज्जुनके धोखे जनि रहिये। सावधान होइ शारँग गहिये ॥
धावा उतरि छांड़िके स्यन्दन। मनमें सुमिरे श्रीजगवन्दन ॥
लघु सन्धान द्रोण गुरु मारत। बांयें अङ्ग भीम सब टारत ॥
प्रवल तेज शोणित शर छूटत। वज्र शरीर लागि सब टूटत ॥
जाइ गदा रथ हेठ लगाये। लै भुजवल गुरुसहित उठाये ॥
द्रोण समेत फेंकि रथ दयऊ। गिरेउ न बीच कोश दुइ गयऊ ॥
गिरयो भूमि टूटयो तब स्यन्दन। अश्व सारथी भयो निकन्दन ॥
उठिकै द्रोण पयादे धाये। तब लगि भीम व्यूहमहँ आये ॥
चहुँदिशि गदा कोपि परिहारे। सन्मुख ज्यहि पाये तेहि मारे॥
गज मारे अनेक मय कीन्हे। वहुतक फेंकिगगनमहँदीन्हे ॥

वहुतक मारे चरणते, वहुमुष्टिका प्रहार।
भीमसेन सेनासवे, याविधि कीन सँहार ॥

रथते रथ गज सों गज मारे। पकरि अश्वपर अश्व प्रहारे ॥

सम्मुख आय वीर शर जोरत। गदाघाव तिनको शिरफोरत ॥
यहिविधि कीन्हे सेन निकन्दन। हय गज मत्त तोर बहुस्यन्दन ॥
लैकर गदा क्रोध करि धाये। वीरन मारत बार न लाये ॥
हांक मारि कै गदा प्रहारे। एकवार सहसन दल मारे ॥
यहि विधि लरत चले परतच्चक। पहुँचे जाय कर्ण तहँ रच्चक ॥
देख्यो कर्ण वृकोदर आये। रहुरहु कहिगुणधनुषचढ़ाये ॥
आवत कहा औरके धोखे। असकहि बाण चलायोचोखे ॥
भीम अङ्ग मारे शर जबहीं। हांक मारि कै धायो तबहीं ॥

रथ सारथि चूरण कियो, जूझे चारि तुरङ्ग।
गज अनेक मारन लगे, रचो भीम रणरङ्ग ॥

अर्ज्जुन कहो भीम प्रभु आवत। युद्ध करत हैं हांक सुनावत ॥
श्रीहरि कहो दूरि अति पारथ। योजन डेढ़ बीच पुरुषारथ ॥
कर्ण अपर रथही चढ़ि आये। क्रोधित ह्वै बहुबाण चलाये ॥
लाग्यो घाव भीमके तनमें। अधिक क्रोधउपज्योतबमनमें ॥
लैकर गदा कोपि परिहारे। चारिउ तुरँग सारथी मारे ॥
चक्रसहित टूटो तब स्यन्दन। आतुरभागि चले रविनन्दन ॥
औरहि रथ कीन्हो असवारी। सन्मुख जुरे वीर धनुधारी ॥
तब या विधि कीन्हो सन्धाना। भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर साठि शर भल्लुक लीन्हे। ते शर चोट शीशपर कीन्हे ॥
तीन सहस शर ऊपर लागे। थके भीम पग चलत न आगे ॥

कर्ण धनुर्द्धर अति प्रबल, या विधि मारे बान।
भीम अङ्ग झांझर सबै, मोहि गिरे मैदान॥

श्रमजलरुधिर अङ्गमहँ बह्यो। गज लोथिनके बीचहि रह्यो॥
मूर्च्छित भये पाण्डुके नन्दन। कर्ण बीर हांक्यो तब स्यन्दन॥
रहे दूरि अति निकटहि आये। धनुषअङ्ग तनु खोदि जगाये॥
उठो भीम कीजै रण करणी। मोहित कहा परयो है धरणी॥
खाहु बहुत सोवहु निज धामा। रणमहँ काह तुम्हारो कामा॥
जीवदान मैं ताते दीन्हयो। कुन्ती मातु मांगिकै लीन्हयो॥
यह कहि कर्ण चले पुनि आगे। भीमसेन मूर्च्छा तब जागे॥
शीतल पवन परस तनु कीन्हे। श्रम भा दूरि गदाकर लीन्हे॥
अपनो बल तब भीम सम्भारो। सेना पेलि अग्र पगु धारो॥
या विधि चल्यो करत पुरुषारथ। कृष्णससेत लरत जहँ पारथ॥

भीमसेन कह हांक दै, मैं पहुँच्यो अब आय।
पारथ तुम निरखत कहा, वधौ सेन मन लाय॥

भीम सात्यकी पाछे आवत। आगे नन्दिघोष रथ धावत॥
भीमसेन राजन संहारे। पुनि सात्यकी अमित दल मारे॥
हांके तुरँग पतितके पावन। रुधिरनदी अतिबढ़ीभयावन॥
मत्तगयन्द गिरे हैं कैसे। दोऊ ओर कगारक जैसे॥
बार सेवार सरस अरुझाने। फेन समान जो पग उतराने॥
टूटे खड्ग मीन सम चमकहिं। ढालमनहुँ कच्छपसमदमकहिं॥
कटे शीशधर बखतर राजैं। मनहुँ ग्राह जलमाहिं विराजैं॥

यातिविधि कीन्हेउ खेत भयङ्कर। नाचत मुण्ड लिये हैं शङ्कर॥
भूत वेताल पिशाच सयाने। रुधिर मांस सब खाइ अघाने॥
योगिनि खप्पर भरति हैं, काक कङ्कको भीर।
गीध श्टगाल अनन्द सों, बोलतसरितातीर॥
यहिविधिते कीन्ह्यो रणभारथ। पारथ करत जहांपुरुषारथ॥
महावीर कोटिन शर मारत। बाणनते अर्ज्जुन संहारत॥
यहि विधि होत महारणशरसे। अस्त्र समूह बुन्द सम वरसे॥
सबै शूर सरदार महाबल। पलभरिनहिपारथपावतकल॥
अर्ज्जुन हाथ बाण जो छूटत। सेना वेधि धरणिमहँ फूटत॥
धर्मराय कुरुपतिके सैनहि। हितअनहितरवि देखतनैनहि॥
चक्रवाक पाण्डवदल जानत। समउलूककुरुदलनिशिमानत॥
वध जयदर्थ पाण्डुदलभावत। कौरवदल सब चहतबचावत॥
व्यासदेव उपमा कह्यौ, दोऊ दलहि विचारि।
अर्ज्जुनप्रण जयदर्थ वध, वाल अप्रौढ़ा नारि॥
आतुर ह्वै अर्ज्जुन शर छांटत। वीर अनेकनके शिर काटत॥
महायुद्ध अद्भुत पुरुषारथ। हांक देत हांकत रथ सारथ॥
बाह्लीक कृतवर्मा अली। सन्मुख जानि जुरे सब चली॥
मारु मारु कै सब रणटेरे। चहुँ दिशि नन्दिघोष रथ घेरे॥
अश्वत्थाम कृपा तब आये। सब मिलि बाणबुन्दझरिलाये॥
सेन अनेक अस्त्र परिहारत। सांग शूल मुद्गरसों मारत॥
यहि विधि होत महारण भारी। हरि सारथि पारथ धनुधारी॥

श्री हरि तब अपने मन जाने । प्रहर दिवस बाकी अनुमाने ॥
जो सब दिवस बीत के जैहै । सन्ध्या पारथ प्राण गँवैहै ॥
जो अर्ज्जुन निजप्राण गवांवा । मेरो अयश सबै जग गावा ॥

पाण्डव मेरे परम धन, पारथ प्राण समान ।
अर्ज्जुन केहि विधि राखिये, करत शोच भगवान ॥

श्रीहरि कहो सुदर्शन धावहु । वेंड़े होइके सूर्य छिपावहु ॥
हरि आज्ञा माथे धरि लीन्हा । तब रवि ओट सुदर्शन कीन्हा ॥
गगनदिवस तकि तेजनिहारी । भई सांझ कुरुसेनपुकारी ॥
प्रमुदित ह्वै कौमुदी प्रकाशा । पाण्डवदल सब भयो निराशा ॥
सन्ध्या देखि थकित भे पारथ । डारेउ धनुष तजेउपुरुषारथ ॥
पारथ धनुष डारि जबदीन्हे । मिटो युद्ध सबके मन कीन्हे ॥
दुर्योधन आनँद ह्वै आये । सेन समूह सबै पलटाये ।
तब पारथ यहि भांति बखाना । कुरुपति करहु चित्तअनुमाना ॥
सुनिके दुर्योधन मन हर्षेउ । जिमिचातकजलस्वाती वर्षेउ ॥
कुरुपतिको आज्ञा जब पायो । शतवन्धुन मिलि चिता बनायो

चिता चढ़न अर्ज्जुन चल्यउ, कहेउ कृष्ण समुझाय ।
धनुष बाण लैकर चढ़ऊ, क्षत्रिय धर्म्म न जाय ॥

हरि आज्ञा पारथ मन बढ़ेऊ । लैकर धनुष चितापर चढ़ेऊ ॥
कुरुपति तब निरखनकोलागे । कहो शकुनि जयद्रथहि आगे ॥
तुव कारण मारेउँ सब सेना । पारथ मरण देखिये नैना ॥
याते और न है सुख कोई । देखत नयन शत्रु क्षय होई ॥

उठि जयदर्थ निहारे जबहीं । श्रीहरि गगन तकायो तबहीं ॥
कर्षि सुदर्शन तब ढिग आये । रविप्रकाशभा दिवसलखाये ॥
चकृत सबहिं अचम्भा माने । तव श्रीहरि पारथहिं बखाने ॥
अर्ज्जुन गहरु करत क्यहिकाजा । देखत तुमहिं सिन्धुके राजा ॥
तब अर्ज्जुन कीन्हेउ सन्धाना । कण्ठ ताकिकै मारेउ बाना ॥
जूझे शीश परन महि चहेऊ । तब अर्ज्जुनसों माधव कहेऊ ॥

अन्तरिक्ष शिरलै चलहु, सुनहु वचनपरिमान ।
द्रोणपर्व भाषा रच्यो, सबल सिंह चौहान ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

सुनि अर्ज्जुन कीन्हेउ सन्धाना । लै शर शीश चल्यउ असमाना
हरिअर्ज्जुन रथपर चढ़ि धाये । शरलागत शिर गिर न नपाये ॥
पहुँचायो शिर पारथ बाणन । जहांसुरथ तप साधत कानन ॥
धरयो ध्यान अञ्जलिकरसाधत । पुत्रहेतु शङ्कर अवराधत ॥
कहो कृष्ण अर्ज्जुन सों ऐसो । वाके हाथ परत शिर जैसो ॥
यहि विधिते अर्ज्जुन शर मारे । नृपके हाथ शीश लै डारे ॥
छूट ध्यान चिन्तामन कीन्हेउ । मृतकहिशीशडारिमहिदीन्हेउ॥
गिरो शीश धरणी महँ जबहीं । माथो सुरथ काटिगो तबहीं ॥
छूटे प्राण गिरयो तब धरणी । कहिनजातिविधिकी यह करणी
ऋर्ज्जुन देखि भये भ्रम भारी । यह चरित्र कहिये वनवारी ॥

शीश गिरो वाके करहि, भूमि सो दीन्हेउ डारि।
प्राण तज्यो क्यहि कारणे, हमसों कहिय मुरारि॥

कथा पुरातन श्रीहरि कहत्रऊ। सुरथ नाम राजा यह रहत्रऊ॥
सिंधूराज महा बल भारी। क्षत्रिय प्रबल वीर धनुधारी॥
राजभोग इन बहुविधि कीन्हा। पुनि तपहेतु जायमनदीन्हा॥
शङ्कर की पूजा अवराधे। सेवा करि गोरी व्रत साधे॥
भयो प्रसन्न कहेउ गङ्गाधर। जो इच्छा मांगहु सोई बर॥
दीजै पुत्र सुरथ यह कहत्रऊ। मरै न अमर सदाजगरहत्रऊ॥
सुनिके शङ्कर कहा बुझाई। अमर छांड़ि मांगो वरभाई॥
जब मैं कहहुँ मरै तब स्वामी। यह वर दीजै अन्तर्य्यामी॥
जो वाको शिर करहुँ निपाता। तुरत मरै तब ताकत ताता॥
एवमस्तु कहि शिव वर दीन्हे। तब जयद्रथ जन्मजग लीन्हे॥

दिनदिन सुत बाढ़न लग्यो, भयो महारथ वीर।
शिवपूजा सन्तत करत, श्रीसुरसरिके तीर॥

दुर्योधन की वहिनि दुशाला। के विवाह दीन्हेउ जयमाला॥
जब भारत रणको पग दीन्हेउ। सुरथ जाइ तप वनमेंकीन्हेउ॥
सुतके कुशल तपस्या करई। इनहि कहै जयद्रथ सो मरई॥
ता कारण इनको शिर लाये। ताहि मारिकै तुम्हें बचाये॥
यहिविधिसवमाधवकहि दीन्हो। हांको रथभवनहि शुभकीन्हो॥
धर्मराय सेना सब लीन्हे। पारथ पन्थ चितैचित दीन्हे॥
यहि अन्तर रथ देखन पाये। सबहि कह्यो हरि अर्जुन आये॥

पारथ तब नृपके पग परसे। आनन्दित सबके मन हरषे॥
धर्मराय माधवसों भेंटे। त्रिविधताप तनुकी सबमेंटे॥
हरिभाष्यउ प्रणराख्यउ पारथ। वधि जयदर्थ कियो पुरुषारथ॥

धर्मराय भाषन लग्यो, श्रीहरिसों यह बैन।
पारथप्रण रक्षा सदा, तुमहीं पङ्कज नैन॥

जहँ जहँ गाढ़ परत्रो परतक्षक। सबदिन तहां भये तुमरक्षक॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये। जरततहां प्रभु तुमहिबचाये॥
रहौ पास सबदिन वनवारी। द्रुपदसुताकी लाज निवारी॥
वनमें दुर्वासा छल कीन्हेउ। हेजगदीश राखितुमलीन्हेउ॥
युद्धके हेतु विभीषण आये। मारतप्रभु तुम हमहि बचाये॥
जब कौरव विष भोजन दीन्हे। तहँहुँ आप रक्षा तब कीन्हे॥
वनमों तृषित भये वनवारी। कर-उठाय दीन्हेउ तुम झारी।
दीनबन्धु मोरे हित काजा। चरण धोइ बैठारेउ राजा॥
नारायण शर भीषम मारत्रो। मरत भीम प्रभु तुमहिउबारत्रो॥
हनुमतसों हठपारथ कीन्हेउ। दीनदयाल राखितुमलीन्हेउ॥

पारथ प्रण रक्षक सदा, श्रीवर दीनदयाल।
जाके तुमसे सारथी, ताहि न जीतै काल॥

जो जो चरण तुम्हारे ध्यावे। सङ्कटमों प्रभु सबहिंबचावे॥
ग्रहगृहीत प्रभुसुमिरणकीन्हे। धाये त्वरितराखित्यहिलीन्हे॥
प्रण प्रहलाद राखि विनकारण। नरहरि रूप धरो जगतारण॥
ध्रुवकहँ अटल करेउ सबऊपर। विद्यामान विभीषण भूपर॥

भक्त वश्य भीषम प्रण कारण। रणमहँ अस्त्रगह्यो जगतारण॥
धर्मराय यहि भांति बखाने। श्रीपति सुनत बहुत सुखमाने॥
दुर्योधन गुरु द्रोणहि कह्यऊ। आज युद्ध पारथ प्रण रह्यऊ॥
तुम सब भये न कोऊ रक्षक। वधि जयद्रथ गयो परतक्षक॥
सो सुनि द्रोण कहनअसलागे। सत्य वचन राजाके आगे॥
बलते अर्जुन सकउ न मारण। रच्यो उपाय जगतके तारण॥

रवि दक्षित निशिह्वै गई, छल कीन्ह्यो भगवान।
भक्त परण राख्यो कही, सबलसिंह चौहान॥

इति पञ्चम अध्याय॥ ५॥

अबराजा जिय शोच न करिये। आजयुद्धनिशिकालहिलरिये॥
साजो सेन विलम्ब न लाये। रथप्रति सबहिमशालबराये॥
रथ प्रति चारि अश्व प्रतिदोई। यहिविधि साजकियेसबकोई॥
खड़े भये चढ़ि बाजन बाजे। इतदिशिभीमपाण्डुदलसाजे॥
बरत मशाल ज्योति उजियारी। शोभा मानहुँ परब ख्विारी॥
सुवरण शीश मुकुट छबिछाजै। मोर मनहुँ वर शीश विराजै॥
सुन्दरि हाथ आरती लीन्हे। सुरकन्यन व्याहन मन दीन्हे॥
सिंहनाद दोऊ दल कीन्हे। वीरन धनुष फोंक मनदीन्हे॥
गजसों गज रथ सों रथ जोरे। पैदल सों पैदल रण घोरे॥
यहि विधि लरत जोरसों जोरे। महाशूर मन नेकु न मोरे॥

अर्ज्जुन लीन्ह्यो धनुषकर, कीन्हे शर सन्धान।
श्रीमुनिसों करउदित छवि, रथ हांको भगवान॥
पाण्डवदल अनेक रण मारे। तब गुरु द्रोण बाण परिहारे॥
अर्ज्जुन कीन्हेउ लघु सन्धाना। कुरुदल जूझिगिरेमैदाना॥
निशाकालमहँ अतिपुरुषारथ। दुउदलकीन्हेउअतिशय भारथ॥
शकुनीते सहदेव लराई। महायुद्ध कीन्हेउ प्रभुताई॥
जुरे भीम दुश्शासन साथा। दोऊ सबल गदा लै हाथा॥
नकुल भिरे कृतवर्मा सबो। कृपाचार्यअरुसात्यकि अबो॥
जरासन्ध सुत द्रोणी सङ्गा। दोऊ मचे महा रणरङ्गा॥
शल्य नरेश युधिष्ठिर राजा। दोऊ लरत आप जय काजा॥
धृष्टद्युम्न अरु कर्ण महारथ। बाणनसों छायो सब भारथ॥
अन्धकार भा निशि अन्धियारी। चमकतअस्त्र होतउजियारी॥
सुनियत धनु टङ्कोर अति, निरखत अस्त्र उदोत।
हांक देत सबो सबिहिं, निशा युद्ध इमि होत॥
द्रुपद नरेश द्रोणगुरु साथा। खड्गलेइ गुरु काट्यउ माथा॥
गिरेउ द्रुपद धरणीमहँ जबही। पाछेको गुरु जान्यउ तबहीं॥
धोखे मित्र वध्यो हम रनमें। उपज्यो शोच द्रोणके मनमें॥
महारथी करि एक न लागे। चलहिं न एक एकके आगे॥
सूझि न परत सघन अँधियारी। आगे परत जात सो मारी॥
मुकुट अनेक धरणिमहँ परेऊ। झलकतज्योतिजरायनजरेऊ॥
गुरु द्रोण सबहीते कह्यो। निशिको युद्ध अचेतो रह्यो॥

दोऊ दल विश्रामहिं लीन्ह्यो । गुरुद्रोण मनमें दुख कीन्ह्यो ॥
यहिविधिकह्यो कुरुपतिराजा । गुरु शोच कीजै क्यहि काजा ॥
अन्धकार निशि गये न चीन्हे । आपने हाथ मित्र वध कीन्हे ॥

दुर्योधन भाषन लगे, कहो गुरुहि समुझाय ।
द्रुपदमित्र क्यहि विधि भये, सुनिसन्देहनशाय ॥

द्रोण गुरू आये यहि बातन । हे नरेश सुनु कथा पुरातन ॥
तप कारण वनमें हम आये । यमुना मज्जन करन सिधाये ॥
द्रुपद देखि कीन्ह्यो परणामा । आशिष दीन्ह होहु मनकामा ॥
तब हम कहा कौन तुम अहहू । कौनवर्ण क्यहिआश्रम रहहू ॥
राजा द्रुपद अहै मम नामा । विधिवश तजिआयेनिजधामा ॥
लिये किरातन राज्य हमारे । हारे युद्ध बनै पगु धारे ॥
रानी अरु मन्त्री लै साथा ॥ आये वनहिं अस्त्र नहिं हाथा ॥
हम भाषो राजा सुनिलीजै । मेरे साथ गमन अब कीजै ॥
वधि किरात तुमकहँ बैठावों । द्रोण नाम तब जगत कहावों ॥
कह्यो द्रुपद सोइ बड़ो धनुर्द्धर । जूझो सैन्य सकल जाके बल ॥
क्षत्रिय हैं जुरि नहिं सके, तुम द्विज कोमल अङ्ग ॥
धनुविद्या जानत नहीं, किमि करिहौ रणरङ्ग ॥
तब हम याविधिवचन सुनाये । ज्यहिप्रकार धनु विद्या पाये ॥
परशुराम तब यज्ञ विचारे । सुनि सब सुनत तुरत पगुधारे ॥
पूर्ण यज्ञ दक्षिणा दीन्हा । लैसब विप्रभवन शुभकीन्हा ॥

बच्यो न कछु सबै उन दयऊ । तब हमजाय उपस्थित भयऊ ॥
परशुराम यह वचन सुनाये । अवसर गये विप्र तुम आये ॥
बच्योकमण्डलु और कुशासन । धनुषबाणकर एक न आसन ॥
तब हम कह्यो सुनो हे स्वामी । तुम जानत सब अन्तर्यामी ॥
बहुत भांति दारिद्य सताये । तब हम तुम्हैं ताकिकै आये ॥
यकइस बार निचत्रिन कीन्हे । धरनी धन विप्रनकहँ दीन्हे ॥
कही नारि तुम वेगि सिधावो । परशुराम ते धन लै आवो ॥

आशा करि आये हते, पै विधि कीन्ह निरास ।
कर्म्महीन जो जगतमों, भवन कुवेर उपास ॥

भृगुपति चित्त दया है आई । निकट बोलि म्वहिं बैन सुनाई ॥
धनु विद्या चाहहु तो लीजै । दुखी विप्रत्वहिं विमुखनकीजै ॥
यहकहि धनुविद्या म्वहिं दीन्हे । पुनि सब अस्त्र समर्पणकीन्हे
परशुराम दीन्हे धनु शायक । तीनिलोकके जीतन लायक ॥
जब सब भेद द्रुपद सुनिलीन्हो । आनँदसहित मित्रताकीन्हो ॥
जो आपहि किरात बध कीजै । आधो राज्य बांटिकै लीजै ॥
लेद्रुपदहि प्रणशालहि आये । फल अरुमूल अहार कराये ॥
प्रात होत लीन्हे धनुबाना । द्रुपदद्रोण मिलि कीन्हपयाना ॥
सुनि किरात सब आतुरधाये । तीनिकोटि सैना जुरि आये ॥
भाष्यो द्रुपद मित्र सुनि लीजै । आये शत्रु, युद्ध अब कीजै ॥

ब्रह्म अस्त्र सन्धानि कै, हम कीन्हो परिहार ।
तीनि कोटि चतुरङ्गदल, जारि कीन्ह सबछार ॥

द्रुपदहि सिंहासन बैठाये। तिलककेंद्र शिर छत्र धराये ॥
भाषा द्रुपद मित्र सुनि लीजै । आधा राज्य भोग अब कीजै ॥
रहै राज्य सुस्थिर तब पासा। हम तप हेतु जात बन बासा ॥
असकहिहम श्रगशालहिआये। मुनिसमाजसँग तपमनलाये ॥
विधिवश पुत्र जन्म जगलीन्हे । अश्वत्थाम नाम त्यहि कीन्हे ॥
मुनिकुँवरनसँग खेलत डोलत। बातैं मधुर अमीसम बोलत ॥
सबमिलि कह्यो दूध हम पाये। सुनि सो पुत्र मातुपहँ आये ॥
बालक कह्यो दूध अब दीजै । माता कहो कहा अब कीजै ॥
तंदुल हुते भवन महँ थोरे। शिलते बांटि नीरते घोरे ॥
नारि द्रोण द्रोणीका दीन्हे । हर्षवन्त ह्वै पानहि कीन्हे ॥

हर्षवन्त खेलत चलो, मेरो करि अपमान ।
निरखि नारि रोवन लगी, जियमो भई गलान ॥

त्यहिअन्तर हम भवनहिं आये। रोवत देखि महादुख पाये ॥
तियलागी करसों शिर मारन। हम पूंछी रोवत क्यहि कारन ॥
दूध स्वाद मम पुत्र न जानत। उज्वलनीर दूधकरि मानत ॥
हम भाषा जनि होहु निरासा। चलहु तुरत द्रौपदके पासा ॥
देखि नगर आनन्दित भयऊ। तब चलिभूपतिद्वारहि गयऊ ॥
प्रतिहारन कहँ जाइ जनायो। कह्यो कि जाय मित्रनृपआयो ॥
सुनिकै तुरत गये प्रतिहारा। राजा मित्र खड़े तब द्वारा ॥
द्विज अतिदुखित वसनतनुफाटे। सुनत द्रुपद प्रतिहारन डाटे ॥

द्विज संग्रह है बड़ो अपावन । दूरि करौ
यह सुनि द्वारपाल सब धाये। खेदि दिये

शाप दिये हम क्रोध करि, जानि
धनमदते अपमान करि, अतिउदा

पुरी हस्तिना तब हम आये । तुम बाल
कूपहि परो गेंद जब जाने । तुमसब शो
सिद्धबाण संधानहि कीन्हे । गेंद उठाय
तुमसब देखि अचम्भत्र भयऊ। लयो गेंद
सुनत चित्त भीषम अनुमाने ! आये द्रो
आदरकरि निजगृह लै आयो। चरण धो
धेनु अनेक बहुत विधि दीन्हे । पांचक
मेरे सङ्ग रहौ सुख पैहौ। बालक सबलै
सिखये अस्त्रनिपुण सब कीन्हे । सब मि
पारथ ते कछुओ नहिं लीन्हे। यहै बात

द्रुपदमित्र मेरोरहै, तिन कीन्हों
बांधि चरणतरडारिये, माँगतहौं

अर्ज्जुन जाइ किये तहँ भारथ। महायुद्ध

यहि विधि मित्र द्रुपद सुनुराजा। मारेउँ आजु तुम्हारे काजा॥
सब मिलिके आये निजधामा। दोऊ दल कीन्हेउ विश्रामा॥
होत प्रात कुरु पाण्डव साजे। कीन्हेउ बम्ब दमामा बाजे॥
वेगि अनी आये मैदाना। चलिय लगे चलावन बाना॥
दल चतुरङ्ग चले सब आगे। नन्दिघोष हांकन हरि लागे॥
अर्जुन कीन्हे सेन निपाता। कुरुपति कह्यो द्रोणसों बाता॥

हम अर्जुन सन्मुख लहैं, यह इच्छा मनमाह।
सो सुनि भाषे द्रोणगुरु, को चलिहै नरनाह॥

पढ़ि नारायण कवचहि दीन्हे। रामकवच त्यहि ऊपरकीन्हे॥
भाष्यो द्रोण भूप अब लरिये। सन्मुख अर्जुनते रण करिये॥
दृढ़ ह्वै धनुषबाण कर धरिये। शत्रुनिपाति राज्यपुनिकरिये॥
सुनि अर्जुन कीन्हेउ सन्धाना। हृदय ताकिकै मारेउ बाना॥
निष्फल भये बाण सब टूटे। कवच प्रताप अङ्ग नहिं फूटे॥
अर्जुन देखि क्रोध जिय कीन्हे। तीक्ष्ण बाण दिव्य कर लीन्हे॥
मारेउ दुर्योधनके अङ्गा। भेद न भये बचे सब अङ्गा॥
तब पारथ यहि भांति बखाने। अहो नाथ यह भेद न जाने॥
सुनि श्रीपतियहिभांति बुझाये। कवच भेद नृप द्रोण बताये॥

द्रोणकवचपढ़िके दये, बाण न फूटतअङ्ग।
ताकारणपारथ सुनहु, होतसकल शरभङ्ग॥

भेद जानिकै शर परिहारे। चरिउ तुरंग सारथी मारे॥

विरथ भयो दुर्योधन जाना । तब गुरु द्रोण बाण सन्धाना ॥
पञ्च बाण पारथ उर मारे । कृष्ण अङ्ग दश बाण प्रहारे ॥
अश्वन तनु मारे दशबाना । सहस बाण मारे हनुमाना ॥
पारथ कोपि गहे शारँग कर । होनलागिअति मारुपरस्पर ॥
तब अर्ज्जुन ऐसे शर जोड़े । मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
द्रोण अपर रथ किये सवारी । अर्ज्जुनद्रोण युद्ध भा भारी ॥
महारथी सब हतैं धनुर्द्धर । कठिनयुद्ध कीन्हेतेहिअवसर ॥
धर्मराय कीन्हे पुरुषारथ । सन्मुखरचो शल्यसों भारथ ॥
क्षत्रिय सकल करत संग्रामा । कुरुपति धर्मराजके कामा ॥

बाणवृष्टि अतिहोहितब; शूलशक्ति परिहार ।
मुद्गर तोमर फरीकर, गदा खड़गकी मार ॥

सबहिंअस्त्र क्षत्रिय परिहारहिं । सन्मुखज्यहिपावहिंत्यहिमारहिं॥
यहि विधि युद्ध करे मनलाये । लै कर गदा भीम तब धाये ॥
गज अनेक मारे तरवारा । रथी अश्व पैदल संहारा ॥
देखि कर्ण कीन्हेउ सन्धाना । भीम अङ्ग मारे दश बाना ॥
रथ चढ़ि भीम धनुष करलीन्हे । बाणवृष्टित्यहिदलपर कीन्हे ॥
धृष्टद्युम्न दुशशासन क्षत्री । दोऊ जुरे महा बल अत्री ॥
कृपाचार्य कीन्हे सन्धाना । भिरे नकुल त्यहिसन मैदाना ॥
काशीराज द्रोण रण मण्डे । बाणनते रिपु सेन विहण्डे ॥
काशिराज कीन्हेउ पुरुषारथ । बाणन ते छाये सब भारथ ॥
द्रोणो जङ्घ तीनि शरमारे । चारि बाण अश्वन परिहारे ॥

क्रोधवन्त द्रोणी भये, कीन्हेउ शर सन्धान।
द्रोण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान॥

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

सन्ध्या जानि किये विश्रामा। दोऊदल आये निज धामा॥
भूप युधिष्ठिर कहिवे लागे। मनमलीन मोहन के आगे॥
चौदह दिवस भयो रण भारथ। भीषम द्रोण सरिस पुरुषारथ॥
आपु युद्ध रचना जब कीन्हे। तब भीषम शरशय्या लीन्हे॥
गुरू कीन्ह सब सैन सँहारण। अब उपाय कहिये जगतारण॥
श्रीहरि आपु कहन असलागे। राजा धर्मराज के आगे॥
काल्हि प्रात याविधि रणकीजै। आज्ञा नृपति भीमको दीजै॥
द्रोणी फेंकि दूरि करि डारहि। आपुद्रोणमरिहैं बिन मारहि॥
कह्यो भीम सुनिये जगवन्दन। द्रोणपुत्त फेंको गहि स्यन्दन॥
यहिविधिकहि भूपहि समुझाई। शयन किये निद्रा तब आई॥
होत प्रात कीन्हो असवारी। कुरु पाण्डव साज्यो दल भारी॥

बम्ब दमामा होत हैं, अरु बैरख फहरात।
क्रोधवन्त रिससों भरे, बीर चले सबजात॥

महामत्त कुञ्जर बहु आवत। वुन्द मनहुँ घनशब्द सुनावत॥
उड़िकै गरद लागि असमानू। सूझि न परत विलोप्यउभानू॥
हरित अरुण बैरख फहराने। उपमा इन्द्रधनुष समजाने॥

दोऊ दल अति शोभा पावत। हिंसत तुरँग जु पैदल धावत॥
धनु टङ्कोर घोर ध्वनि राजै। उभय फौजमहँ मारु विराजै॥
क्षत्रिय सकल करन रण लागे। अर्ज्जुन द्रोण कर्ण के आगे॥
श्वेत वर्ण पारथ रथ राजे। श्याम वर्ण रथ द्रोण विराजे॥
हांक देत हांकत जगतारण। सारथि भये भक्तके कारण॥
अर्ज्जुन द्रोण सरिस पुरुषारथ। दल चतुरङ्ग भयानक भारथ॥

दोउदलवीरन रण रचेउ, कहि न सकहिं कविबैन।
शरसमूह छाये गगन, रविनहिं सूझत नैन॥

कुञ्जर भिरत करत रण घोरा। होइ चौदन्त जोर सों जोरा॥
रथी रथी सों सरस लराई। छूटत बाण बुन्द की नाई॥
अश्वअश्वलै सन्मुख जोरहिं। शूलघाव सों बखतर फोरहि॥
पैदल ते पैदल रण घोरा। अरुझे सबहिं जोरसे जोरा॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे। तोमर गदा खड़ग सों मारे॥
जूझि गिरहिं भारत मैदाना। सुरपुरगवनहिं चढ़े विमाना॥
यहि विधिकरहियुद्धकी करणी। रुण्डमुण्ड पाटे सब धरणी॥
भूत बिताल योगिनी गावहिं। जम्बुक अपनोभावदिखावहिं॥
उड़हिं काक अन्तहि लै कैसे। टूटे डोरि चङ्ग गति जैसे
यहि विधि होतभयानक भारथ। क्षत्रिय सबै करत पुरुषारथ॥

गुरु द्रोण अति क्रोधकै, मारेउ तीक्षणबाण।
पाण्डव दल जूझे घने, छाये शर असमान॥

अर्जुन बाण वृष्टि करिलाये। कौरव दल बहु मारिगिराये॥
उरझे खेत जोरसों जोरा। लागे करन महारण घोरा॥
शूल सांगि मुद्गर परिहारे। सम्मुख जाइ खड्ग शिर झारे॥
कोतल भये कटारन जोरहिं। जूझिजायँ मुख नेकु न मोरहिं॥
जहां जहां अर्जुन मन धावत। तहां तहां हरि रथ पहुँचावत॥
सारथि भये भक्तके कारण। करि लोजन हांकत जगतारण॥
पारथ करते जे शर छूटत। अङ्गभेदि धरणीमहँ फूटत॥
गुरु द्रोण उत बाण चलावत। श्वेतपद्मामरथ शोभा पावत॥
अर्जुन कोपि कियो सन्धाना। द्रोण अङ्ग मारे शत बाना॥
गुरु द्रोण शर कोपि प्रहारे। सो शर पारथ के उर सारे॥

तीस बाण अश्वन हने, लक्षबाण हनुमान।
पीताम्बर तनु अरुणकरि, महावीर बलवान॥

अर्जुन देखि क्रोध जिय सरसे। गुरुपर लागि बाणबहुबरसे॥
पारथ द्रोण करत पुरुषारथ। बलसमदोउ करत महभारथ॥
दोऊ दल महँ लोहा बाजत। सिंहनाद चलो गण गाजत॥
अर्जुन द्रोण सरस शर छांटत। बाणन ते वसुधा सबपाटत॥
शरशर भिरत होत चिगवारा। योगिनि हांकदेत करिहारा॥
रथते उतरि भीम तब धाये। गदा घाव सब वीर गिराये॥
कृतवर्मा राजा संग सायो। अश्वत्थाम नाम त्यहिहायो॥
भीम उपर कुञ्जरजब धावा। वीचहि अर्जुनमारिगिरावा॥

द्रोण पुत्र कीन्हो सन्धाना। क्रोधित भीम जुरे मैदाना॥
गुरुसुतलग्यो कठिनशरमारन। पाण्डवदल रणगिरेउहजारन॥
भीमसेन अति क्रोधकै, गहि उठायकै रत्थ।
द्रोणसुतहि फेंक्यउ तबहिं, महावीर समरत्थ॥
तीनि शतहि योजन परिरेखा। विधिवशगयेउडेउ सो देखा॥
भुवनेश्वर शङ्कर अस्थाना। अमरहतेउनहिंत्याग्यउप्राना॥
चूरण भये सहित रथ सारथ। लाग्योधकत्याग्योपुरुषारथ॥
शङ्कर त्वरित नीर लै धाये। बदनसींचिकै विप्र बचाये॥
अर्जुन द्रोण सरिसरणमाच्यउ। जूझोधने अल्प दलबाच्यउ॥
सब सेना यहि भांति बखाना। जूझे द्रोण पुत्र मैदाना॥
निजसेना सों द्रोण बखानत। कितसुतगयोकहोतुमजानत॥
सब मिलि कहैंगुरु सों बैना। लरत भीमसों देख्यों नैना॥
की भाजो की जूझो रनमों। यहकछुजानिपरेउनहिंमनमों॥
कहो द्रोण तब भीम सों, जुरो हुतो तुम सङ्ग।
कहा भयो सुत कित गयो, कहौ सांच रणरङ्ग॥
भाषो भीम गदा परिहारे। रथसमेत चूरण करि डारे॥
सुनिकै द्रोण चित्त अकुलाने। मिथ्या बात भीमकी जाने॥
कह्यो द्रोणसों पारथ बैना। बध्यो भीम देख्यो मैं नैना॥
अर्जुन वचन सुनत मन ऊबो। करुणासिन्धु बीच जो डूबो॥
कह्यो कृष्ण तुम त्यागहु प्राना। पूर्व आपदा विधि निर्माना॥
अर्जुन के मन भयो अन्देशव। केहिविधि आपद पाई केशवो॥

श्री हरि कही सुनहु होपारथ। अकथकथाविधिकीपुरुषारथ॥
तप साधत जब वनमहँ हते। मुनि सबके आश्रम यक मते॥

मुनि कुमार क्रीड़ा करत, सब मिलि एकै सङ्ग।
उद्दालक सुत कह्यउ तब, देखहु मेरो रङ्ग॥

बाघ समान शब्द जो कीन्हा। ऋषिनारिनकहँबहुभयदीन्हा॥
बोलत द्रोण कूदि ढिग आवा। शब्द वेधि इन बाणचलावा॥
मुख लाग्यो शर विधिकीकरणी। छूटे प्राण परेउ तब धरणी॥
सब बालक मिलि शोर मचायो। सुनिकैसकल विप्रगणधायो॥
द्रोणआइ देख्यो शिशु मर्‌यो। अपनो चित्तशोच बहुकर्‌यो॥
क्रोधवन्त उद्दालक भयऊ। द्रोणहिनिरखिशापतबदयऊ॥
पुत्रशोक हा त्यागत प्राना। तुम ऐसे मरिहो रण ठाना॥
यहिविधिशाप द्रोण कहँ दीन्हा। तब द्विज प्राणत्यागसो कीन्हा॥
वही समय अब आयो पारथ। मुये द्रोण जीते हम भारथ॥
भाष्यो द्रोण कृष्ण सों वचना। करत सदा तुम मिथ्या रचना॥

भूप युधिष्ठिर बूझिके, तब त्यागहिं हम प्रान।
मिथ्या कहत न धर्मसुत, सदावचन परिमान॥

अबहिं द्रोण यह वचन सुनाये। तब हरि धर्मराइ ढिग आये॥
तबहिं द्रोण राजाके आगे। कर उठाइ कै पूंछन लागे॥
सत्यवचनतुनसबदिनभाष्यउ। हमदृढ़ता तुम ऊपरराख्यउ॥
अर्जुन सुत तुम देखो नैना। हे नृप सत्य कहो यह बैना॥
यौहरि कहो भूप कहि दीजै। अपनेकाज कहा नहिं कीजै॥

कही भूप सुनिये जगतारण । मिथ्यावचनकहहुँक्यहिकारण ॥
सात द्वीप सम्पति जो दीजै । तऊ कृष्ण मिथ्या न कहीजै ॥
तब श्रीहरि अस कहा बखानी । क्यहि कारण तुम भारतठानी ॥
जबहिं भूप पांसा मन लाये । तब यह धर्म विचार न आये ॥
राजा द्रुपदसुता पटरानी । गहिकर केश सभामहँआनी ॥

दुश्शासन अञ्चल गहे, हरण चीरके काल ।
तब यह धर्म कहां रहै, भाष्यो दीनदयाल ॥

तुम जब लाज छांड़िकै दीन्हेउ । द्रुपदसुताममसुमिरणकीन्हेउ ॥
ये बातैं विसरीं क्यहि कारण । यहिविधिकहीजगतकेतारण ॥
लाख भवन कुरुनाथ बनाये । अर्द्धरात्रिमहँ अनल लगाये ॥
विदुरखम्भ को मारग लयऊ । तब तव धर्म कहां नृपगयऊ ॥
जब भीमहिं विषभोजनदीन्हेउ । सुरसरिबोरिगमनघरकीन्हेउ ॥
पुर पताल को नागहि गयऊ । तब यह धर्म कहां तव रह्यऊ ॥
कृष्ण बचन नृपके मन आये । तब द्रोणहिं याविधिसमुझाये ॥
अश्वत्थामा हत रण भयऊ । कहि नरकी कुञ्जर कहि दयऊ ॥
आधे वचन द्रोण सुनि पाये । आधे महँ हरि शङ्ख बजाये ॥
सुनिकै द्रोण सत्य करि जानो । अपनो मरण हृदयमहँ आनो ॥

यहि अन्तरमहँ सप्तऋषि, गगनपथमहँ आय ।
भरद्वाज मुनि साथलै, द्रोण हिकहा बुझाय ।

तुम ऋषि वंश महा अभिमानी । छत्री धर्म करत अज्ञानी ॥

अस्त्रघात जो प्राण गँवावहु । तौ तुम स्वर्गवास नहिंपावहु ॥
मुनि सब देखि दण्डवत कीन्हे । तबकरजोरि कहनकछुलीन्हे ॥
तुम आज्ञा माथे पर लीजे । ब्रह्मरन्ध्र भेदन अब कीजे ॥
धरो धनुष झारी कर लीन्हो । कैआचमन देह शुचिकीन्हो ॥
अङ्गन्यासकरि नासहि गयऊ । धरिकर ध्यान मौनह्वै रहयऊ ॥
यहि अन्तर विराट नृप आये । सिंहनाद कै हांक सुनाये ॥
द्रोण संभारि अस्त्रकर गहहू । मारतहौं तीच्छण शर सहहू ॥
सुनिकै द्रोण क्रोध जिय कीन्हा । ध्यानछांड़िशारँगकरलीन्हा ॥

दिव्यवाण सन्धानिकै, किये द्रोण परिहार ।
मुकुटसहितशिरटूटिकै, परयोधरणिविकरार ॥

भाषो ऋषिन द्रोणके आगे । छांड़िध्यान तुम लरिवेलागे ॥
दोउकरजोरि द्रोण तब कहयऊ । वीरहांकसुनि ज्ञान न रहयऊ ॥
ताते मैं विराट वध कीन्हे । यह कहि बहुरि नीरकरलीन्हे ॥
करि अन्नान ध्यान दृढ़ साधो । परमज्योति मनमों अवराधो ॥
खैंचो पवन ऊर्ध्वगति ध्याये । ब्रह्मरन्ध्र भेदन कहँ आये ॥
निसरो पवन ऊर्ध्व गति भयऊ । हरि अर्जुन देखन को गयऊ ॥
भरद्वाज ऋषि सप्तक जेते । ब्रह्मलोक सँग पहुँचे तेते ॥
भारत मन चलौ तब लाये । धृष्टद्युम्न क्रोधितहोइ धाये ॥
रथतें उतरि खड्ग लै हाथा । मारो जाय द्रोणको माथा ॥
शीश समेत परो तनु धरणी । द्रुपदपुत्रकीन्हेउ यहकरणी ॥

पाण्डवदल जय जय करत, जीतिखड़े मैदान ।
कौरव दलहिं मलीन मन, ज्योंसंध्याकोभान ॥

तब रथ हांकि कर्णचलिआये । आगे ह्वै सेना अटकाये ॥
संध्या जानि कीन्ह तब गवना । कुरु पाण्डवआयेफिरिभवना ॥
आगे कथा कहन मन लायउ । अश्वत्थामा कछु चेतन पायउ ॥
दोउ करजोरि शम्भु के आगे । यहिविधिविनयकरन तबलागे ॥
फेंको रणते भीम भयङ्कर । प्राणदान दीन्हेउमोहिंशङ्कर ॥
यहिविधि वर दीजै मोहिं स्वामी । होहुँ जगतमें मनसागामी ॥
आजु रात्रि पहुँचो कुरुखेता । कुरु पाण्डव जहँ सेन समेता ॥
शङ्कर कही विलम्ब न लैहो । एक पहरमहँ जाइ तुलैहो ॥
पहर एक महँ आयो तहँवा । दलसमेत कुरुपतिरहजहँवां ॥

दुर्योधन भाषन लगे, द्रोणी सुनिये बात ।
आजु युद्ध जूझेगुरू, धृष्टद्युम्न असि घात ॥

सो सुनि द्रोणी कीन्हेउ क्रोधा । पाण्डव सहित वधौं सबयोधा ॥
धृष्टद्युम्न मारौं मैदाना । तब पितहिं देहौं जलदाना ॥
यह सब कथा यहांतक रह्यो । धर्मराय उत हरिसों कह्यो ॥
तुम आज्ञा मैं मिथ्या कह्यो । इहै शोच मेरे मन रह्यो ॥
मिथ्या दोष रहो है माधवौ । नहिंजानौंकरिहैं विधि का धवौ ॥
श्रीहरि कही सुनहु नृपज्ञानी । धर्म कि गतिसूक्ष्मयहजानी ॥
मिथ्या कहिकै स्वर्ग सिधाये । सांच कही ते नरकहि पाये ॥

समय विचारि बात जो कहिये । अन्तकालमहँ तो सुख लहिये ॥
धर्मराय परशंसा कीन्हा । हरिसों कथा सुपूँछै लीन्हा ॥
तब श्रीहरि यह कहेउ बुझाई । नृप हरिचन्द राज्य जब पाई ॥

सत्यधर्मपथ नेमव्रत, सबहि चलतसंसार ।
साहु भवन मूसन गयो, गहो चोर कोउ बार ॥

लैके नृप आगे त्यहि कीन्हा । वधहु तुरत यह आज्ञादीन्हा ॥
तब कोतवार मारिबे लाग्यो । बन्धन तोरि चोर तब भाग्यो ॥
ऋषिआश्रमके निकटहि आवा । देख्यो लता सघनद्रुमछावा ॥
चोर दूत नृप देख न नैना । यहि विधि छिपेउ इहांमनु है ना ॥
आइ गये सब पाछे लागे । कह्यो जोरिकर ऋषिके आगे ॥
चोर एक भागो इत आवा । सत्य कहोमुनि जो लखिपावा ॥
तब ऋषिकह्यो सत्य यह बैना । लता ओट मैं देख्यों नैना ॥
लै कोतवार बान्धि तेहि टर्‍यो । तब नृप चोरकेर वधकर्‍यो ॥
यह अपराध ऋषय शिर पर्‍यो । अन्तकाल नरकहिथलकर्‍यो ॥
कहा कृष्ण सुनिये नृप ज्ञानी । समय जानिकै बोलिय बानी ॥

सत्यवचन सो भाषिकै, परोनरक अतिघोर ।
हत्या लाग्यउ विप्रकहँ, नृपवधकीन्हे चोर ॥

मिथ्या कहत स्वर्ग गति पाई । श्रीमाधव यह कथा सुनाई ॥
परशुराम त्रेता अवतारा । क्षत्रिन मारि उतारेउ भारा ॥
पिता बैर कारण व्रत लीन्हे । इकइस बार निक्षत्र कीन्हे ॥

भूप सुबाहु वधो बल भारी । पुर हस्तिना केर अधिकारी ॥
भूपमारि सेना सब जीते । भागे युग कुमार भय भीते ॥
भृगुपति तिनके पाछे धाये । विप्र भवनमहँ बालक आये ॥
महात्रास तब वदन सुखाने । हिमऋतुमनहुँ कमल कुम्हिलाने
द्विजके चरण गिरे द्वउ बालक । शरणागत कीजै प्रतिपालक
परशुराम त्यहि अन्तर आये । महाक्रोध करि हांक सुनाये ॥
बालकवेगि निकरिनहिं आवत । नहितौयहिघरआगि लगावत

समय होय तब विप्रवर, परे चरण महँ आय ।
स्वामी यह कारण कहा, आपुहि आयोधाय ॥

क्षत्री के बालक दुइ आये । तेरे भवन देखि हम पाये ॥
देहु निकारि तुरत बध करऊं । तब अपने भवनहिंअनुसरऊं ॥
दुइ बालक मेरे घर अहंई । हैं द्विज जाति पढ़नइतरहंई ॥
परशुरामकह बालक लावहु । तुरतआनिकै मोहिंदिखावहु ॥
विप्र कही चलिये अब भवना । अभिअन्तर कहँ कीजै गवना ॥
जब द्विज अभिअन्तर लै आयो । द्वउबालक तबआनिदिखायो ॥
परशुराम देखत अनुमाना । क्षत्रियकरिनिश्चयजियजाना ॥
मिथ्या कही विप्र क्यहि कारण । हैं क्षत्री दीजै मोहिं मारण ॥
कोटि शपथ कै विप्र बखाना । द्विजबालककहमनिश्चयजाना ॥
रन्धन करि बालकके हाथा । भोजन करहु विप्र इनसाथा ॥

सोसुनि विप्र अनन्दह्वै, करिरन्धन शिशुहाथ ।
परसि लीन्ह बैठे तबहिं, खायो एकहि साथ ॥

परशुराम तब क्रोध निवारेउ । उठिकै अपने भवनसिधारेउ ॥
मिथ्या कहिकै जाति गँवाये । अन्त विप्र वैकुण्ठ सिधाये ॥
संशय धर्म्म भूपके कारण । यहिविधि आप कहीजगतारण ॥
श्रीमाधव यह आप बखाने । भूप युधिष्ठिर सुनिसुखमाने ॥
कही कृष्ण राजा सुनि लीजै । प्रात होत रण उद्यम कीजै ॥
भीषम द्रोण किये पुरुषारथ । पन्द्रह दिवस बीतिगा भारथ ॥
कठिन युद्ध आगे नृप करिहैं । कुरुपति कर्णमुकुटशिरधरिहैं ॥
जयदिन कर्ण सेनके रक्षक । महामारु करिहैं परतक्षक ॥
सुरपति शक्ति लई यहि कारण । कर्ण वीर अर्ज्जुनके मारण ॥
जो अर्ज्जुन कहँ देखन पैहैं । वज्रशक्ति सों कौन बचैहै ॥

धर्म्मराय यहिविधिकही, सुनिये श्रीभगवान ।
पांडव सङ्कट परहि जब, तुम रक्षकपरधान ॥

दीनबन्धु जाके रथ सारथ । मारि सकै को रणमहँ पारथ ॥
कुरुपति जरत सेनबल कारण । मेरे बल तुमहीं जगतारण ॥
यह सुनि कृष्णबहुतसुखमान्यो । नृपकहँ परम हितूकै जान्यो ॥
दुर्योधन तब कर्ण बोलाये । करि आदर आसन बैठाये ॥
तुम बल यह भारत हम ठाना । मृत्यु शेष आयो नियराना ॥
मुकुट बाँधि सेनापति हूजै । अर्ज्जुन रण समता नहि दूजै ॥
कहो कर्ण राजा सुनि लीजै । आप दुःख केहि कारण कीजै ॥
नृप देख्यो मेरो पुरुषारथ । पांडव सैन्य बधौं रण भारथ ॥

तीनि दिवस मोरे शिर भारहिं। निश्चय अर्ज्जुन बन्धु सँहारहिं
सुनिकै दुर्योधन सुख पाये। सेनापति करि मुकुट बँधाये ॥

पांडवके रक्षक सदा, भक्तवश्य भगवान।
द्रोणपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

इति द्रोणपर्व समाप्त।

कर्ण पर्व।

प्रथमहिं करि गुरुचरण प्रणामा। जाते होहिं सिद्धि सबकामा॥
बन्दौं रामचन्द्र गुणसागर। सीतापति रघुवंश उजागर॥
महिमाअगम और नहिंजाना। परमभक्त जानत हनुमाना॥
शक्ल पक्ष आश्विनको मासा। तिथिपञ्चमियहकथा प्रकासा॥
संवत सतह शत चौवीशा। नौरंगशाह दिलीपति ईशा॥

रघुपति चरण मनाइकै, व्यासदेव धरिध्यान।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान॥

गुरू द्रोण जूझे मैदाना। दुर्योधन तब आपु बखाना॥
द्रोणी कर्ण शल्य सम अत्री। अरु अनेक बैठे हैं क्षत्री॥
अब काके शिर मुकुट बन्धैये। जाते जयतिपत्र रण पैये॥
द्रोणी कह्यो भूप सुनिलीज। आपु शोच केहिकारण कीजै॥
को मेरे शिर दीजै भारा। नातरु कर्ण करहु सरदारा॥
रविसुत कर्ण महाबल भारी। अर्ज्जुन के समान धनुधारी॥

तब राजा यहि भांति बखाना । गुरुसुत वचन कह्यो परमाना ॥
शकुनी शल्य दुशासन भाखो । दलको भार कर्णपर राखो ॥
कही द्रोण कुरुनाथ भुवारा । जो सौंपत मोरे शिर भारा ॥
करिकै जुद्ध पाण्डवन मारहुँ । सेना सहित न एक उबारहुँ ॥
अर्ज्जुन सहित एक गुण भारथ । मनगामी श्रीपति हैं सारथ ॥
कृष्ण समान सारथी पावों । कोटिन अर्ज्जुन मारि गिरावों ॥

शकुनी कह्यो विचारिकै, दुर्योधन सों वैन ।
शल्य सारथी कृष्णसम, और न देखों नैन ॥

मामा शल्य रचहु पुरुषारथ । कर्णरथहि होवहु तुम सारथ ॥
कही शल्य नृप लोग न थोरे । कर्णरथहि हम हांकहि घोरे ॥
कुरुपति कही शल्यसुनुराजा । कहा न कीजतु अपने काजा ॥
सारथि होहु हमारे स्वारथ । कृष्ण समेत जीतिये पारथ ॥
करगहि नृप बहुभांति बुझाये । शल्यहि लिये कर्ण पहँआये ॥
कृष्ण समान सारथी लीजे । रणमहँ सब पाण्डववध कीजे ॥
सुनिकै कर्ण अनन्दहि छाये । धाइ शल्यकहँ कण्ठ लगाये ॥
शल्य नरेश सारथी मेरो । अब अर्ज्जुन सम बधौं घनेरो ॥
कृष्ण शल्य सम सारथि दोऊ । इकते एक सरिस नहिंकोऊ ॥
विप्रन सकल वेदध्वनि कीन्हे । मुकुट नरेश कर्णशिर दीन्हे ॥
सब दिन मेरो मित्र भरासो । अर्ज्जुन सहित जीतिहैं केशो ॥

सेनापति कर्णहिं किये, मुकुट बांधिकै शीश ।
धर्मराय सों दूत कहत, सत्यसिन्धु जगदीश ॥

अब अनर्थ उपजा अतिभारी। रविसुत कुरुसेना अधिकारी॥
लिये बोलि सहदेवहि आये। सब मिलिमन्त्रविचारन लाये॥
कही कृष्ण कुन्तीपहँ जैये। पांचो वाण मांगि लै ऐये॥
जे शर परशुराम तेहि दीन्हे। अर्ज्जुन वधन प्रतिज्ञा कीन्हे॥
नितप्रति वह पूजत है बाना। पारथ पर करिहै सन्धाना॥
तब हमहूं नहिं सकैं बचावन। यहि विधि कही पतितकेपावन॥
हम नीके जानत हैं भेवा। को पूंछहु मन्त्री सहदेवा॥
को कुन्ती जानत है तनमों। पाप धर्म दोऊ हैं मनमों॥
सुनतहि कर्ण विलम्ब न लइ है। माता जानि त्वरितसो दइहै॥
सुनि कुन्ती उठि कीन्हेउ गवना। आई त्वरित कर्णके भवना॥
उठिके कर्ण किये परणामा। मातु गमन कीन्हे केहिकामा॥
सुनि कुन्ती यह बात जनाई। अर्ज्जुन कर्ण सहोदर भाई॥

जेठे धर्मज पुत्र तिन, लह्यो राज्यके भार।
जन्मे मेरे उदर महँ, आये यहि संसार॥

सुनिकै कर्ण कही यह बाता। चत्री धर्म कठिन है माता॥
दुर्योधन कीन्हे प्रतिपालक। अब तुम कही हमारे बालक॥
अशन बसन बहु भांति बड़ाई। दुर्योधन दीन्ही प्रभुताई॥
उन यह युद्ध रच्यो मेरे बल। ऐसे समय कहा कीजै छल॥
सातद्वीप इन्द्रासन पावों। तौयहिसमय न चित्तडोलावों॥
तब कुन्ती मांग्यो सो बाना। कर्णदीन्ह मन भयनहिंआना॥
जे दिनकर दीन्हेओ ते बाना। माताको दीन्हो करि दाना॥

कर्ण भये सेनापति भाई । इन्द्रलोक महँ परी जवाई ॥
सुनिकै इन्द्र चितहि दुखमानो । अब अर्ज्जुनको भयो निदानो ॥
सुत सनेहहित तुरत सिधाये । चढ़ि विमान कुरुखेतहि आये ॥
रथते उतरि द्वार पगुधारे । कह्यो जनावहु हो प्रतिहारे ॥
द्रोणी तब तहँ आय जनायो । देवनाथ द्वारेपर आयो ॥
आतुरचल्यो बहुत सुखमाना । अपनोजन्म सफलकरिजाना ॥
परदक्षिणा प्रणाम जनाये । चरण रेणु लै माथ लगाये ॥
आजु सफल दिन भयो हमारा । देवनाथ द्वारे पगु धारा ॥
तुम तो तीनि लोक के स्वामी । कहियजानिआपनअनुगामी ॥
सहसनयन तब कहा विचारी । सुनहु कर्ण यह बात हमारी ॥
दानी बड़े श्रवण सुनि पायो । हमहूं कछु मांगनको आयो ॥
कहौ सत्य जो माँगे दीजे । तब तुमते याचण्या कीजे ॥

कहो कर्ण आनन्दसों, कियो सत्य यह जान ।
नाहिं न कीन्हा जन्मभरि, दीजे तन धन प्रान ॥

मेरो कर्म्म सबन सों भारो । जा सुरपति भयो आयभिखारी ॥
मांगो तुर्त गहरु जनि लावहु । जो इच्छाकरिहौ स्वइपावहु ॥
दाता हौ सब लोक बखाना । कुण्डल कवच दीजिये दाना ॥
जन्म समय जो दिनकर दीन्हा । ते हम अब याचज्ञा कीन्हा ॥
सुनिकै हर्ष हृदय अति बाढ्यो । तालछोरिकै कवचहि काढ्यो ॥
हँसिकै कर्ण इन्द्र कर दीन्ह्यो । साधु साधु सब देवनकीन्ह्यो ॥
देवराज तब बाहर आये । चढ़ि विमान चलिबे मन लाये ॥

रथ अटको धरणी अति जोरे। हांकि थके मातलिसों घोरे॥
चकित ह्वै तब कह्यो पुरन्दर। अचल विमानभयोज्योंमन्दर॥
तब मातलि यहिभांति वखाना। पापभार नहिंचलत विमाना॥
सुर राजा याचण्या लायो। भरयो पाप रथ चलै न पायो॥
धन्य कर्ण जग में यश पायो। जिन सुरपतिको हाथ बँधायो॥

कह मातलि तब इन्द्रसों, वचन सुनौ परिमान।
कर्णहि हाथ उठाइये, जाहि अकाश विमान॥

सुनिकै इन्द्र कर्ण पहँ आये। धन्यधन्य कहि वचन सुनाये॥
मांगहु वर जो इच्छा होई। तव समान दाता नहि कोई॥
सुनिकै कर्ण कहै मनलाये। अच्छर चारि न गुरु पढ़ाये॥
नाहिन पढ़े ज्ञान मो अपने। कहूं कह्यो जागत नहिं सपने॥
कहो इन्द्र यह हठहि तुम्हारो। निष्फल दर्शन होइ हमारो॥
माँगहु वर तुमको कछु दीजै। तब हम गमन अमरपुरकीजै॥
कहो कर्ण माँगहुँ नहि मुखते। लियो चहहु तो देहौं सुखते
निकरहिं प्राण देह बरु छांड़ै। कबहुँ न कर्ण हाथको वाड़ै॥
कह्यो इन्द्र जब दानहिं दीजै। विप्रमुखहिं कछुआशिषलीजै॥
परशराम धनु विद्या दीन्हे। तब तुमचरण परशिकै लीन्हे॥
कह्यो इन्द्र यहनीति विचारो। सुनो कर्ण यक वचन हमारो
नवो होइ दान जो लेई। ताकहँ दोष कोउ नहि देई॥

कर्ण हस्त गहि लीजिये, विदित वेद यह वैन।
भाष्यो व्यास विचारिकै, जहां देन तहँ लैन॥

कहो कर्ण जो अति हठ कीजै । वज्र शक्ति म्वहिं माँगे दीजै ॥
सुनि कै इन्द्र शक्ति तब दीन्हे । बहुरि वचन यहकहिवेलीन्हे ॥
वज्र शक्ति जानत संसारा । यहतौ है निज अस्त्र हमारा ॥
कर्ण वीर जेहि यहै चलैहे । ताहि मारि मेरे कर ऐहै ॥
चढ़े आइ रथ कीन्ह्यो गवना । आये धर्मराय के भवना ॥
राजा देखि दण्डवत कीन्हा । हृदय लगाय शक्र तबलीन्हा ॥
सुरपति कृष्णहिं भेद सुनाये । कुण्डलकवच माँगिहमलाये ॥
कुण्डल श्रवण मृत्यु नहिं होई । कवच भेद भेदहि नहिं कोई ॥
ता कारण दोऊ हम लीन्हे । तेहि ते वज्रशक्ति उन दीन्हे ॥
अर्ज्जुन कर्ण वैर है भारी । तुम रक्षा करिहो बनवारी ॥
कहि सुरसाइँ गमन तब कीन्हे । धर्मराय शयनहिं मन दीन्हे
प्रात होत दोऊ दल साजे । शब्द अघात बाजने बाजे ॥

गज काछे हय पाखरहि, जोते सारथि रत्थ ।
पहिरि सजो दल अस्त्र लै, चढ़े वीर समरत्थ ॥

शल्य नरेश आपु रथ साजे । पहिरि सनाह कर्ण दल गाजे ॥
द्रोणी वीर दुशाशन चढ़्यो । अरु अनेक वीरनमनवढ़्यो ॥
शकुनी कृतवर्मासे बली । दुर्मष दुरद महाबल अली ॥
दुर्योधन रथ सोहै कैसे । इन्द्र विमान देखिये जैसे ॥
यहि विधि चढ़े साजि सब सैना । कहो कर्ण राजासों बैना ॥
अक्षयतोण धनञ्जय बांधे । घटत नाहिं कोटिनशरसांधे ॥

मेरे रथ जो शर पहुँचैहो । रणमहँ विजयपत्र तब पैहो ॥
राजा कहौ धरौ जनि धोखा । दोऊ हाथ चलत शर चोखा ॥
दशहजार हाथिन पर लादे । चिन्नितसबहि एक नहिं सादे ॥
दशहजार भरि ऊंट लदाये । दशहजार गाड़िन भरवाये ॥
तौसहजार कहारन दीन्हे । चलेसाथसब बहिंगिन लीन्हे ॥
कनक फोंक अतितीक्षणधारा । गीधपक्षते सबहिं सवारा ॥

कुरुपति चलेऊ साजिदल, सेना सिन्धु समान ।
कर्ण तेज द्युमि देखिये, मनहुँ दूसरो भान ॥

श्वेत पीत बैरख फहराने । अरुणश्यामरँगसबुज सोहाने ॥
यहिविधि ते कीन्हेउदलसाजा । बाजन लाग युद्धके बाजा ॥
धर्मराय कीन्हेउ असवारी । श्वेत गयन्द महाबल भारी ॥
भीमसेन अति शोभा आये । नकुल वीर सहदेव सोहाये ॥
धृष्टद्युम्न लीन्हे सब साथा । चढ़े तुरङ्ग अस्त्रगहि हाथा ॥
अर्जुन रथ कीन्हेउअसवारी । जोती गहे पिताम्बर धारी ॥
पीत वसन तनु शोभितनीका । भालउदित हरिचन्दनटीका ॥
बाजन बजत शब्दआघाता । श्रीहरि कहौ भीमसों बाता ॥
धृष्टद्युम्न को सार्थाहि लीजै । सन्मुख युद्ध कर्णचित दीजै ॥
भीमसेन यह साहस करिये । कर्ण वीरके सन्मुख लरिये ॥
अर्जुन कहौ सुनहु जगतारण । यहिविधिआपकहेउ केहिकारण॥
हांको रथ आगे ह्वै लरिये । सन्मुख युद्ध कर्णसों करिये ॥

अर्ज्जुन सुनिये मन्त्र यह, भाषेउ श्रीभगवान ।
कर्णपर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

जौलौं शक्ति कर्णके हाथा । करौ युद्ध जनि वाके साथा ॥
इतना कहा हमारो कीजै । चलौ जाय द्रोणी रण लीजै ॥
दोऊ दलमहँ बाजन बाजैं । हांक देत क्षत्रिय गण गाजैं ॥
गज सों गज रथसों रथ जोरे । मुख लागत हिंसतहैं घोरे ॥
पैदल सों पैदल अरुझाने । महावीर सब बांधे बाने ॥
बष बाण सकै को भाषन । शतते सहस सहसतेलाखन ॥
शल्य सारथी रथहि चलायउ । आगे कर्ण पेलिकै आयउ ॥
गहे धनुष कर बाणहि फेरत । अर्ज्जुन कहां हांक दै टेरत ॥
सुनिकै भीमसेन तब धायउ । इस्थिररहौनिकटनहिं आयउ ॥
यह कहि बीसबाण कर लीन्हे । ते शरचोट शीशपर कीन्हे ॥
करि सन्धान कर्ण तब भाषेउ । जुरेउ आपु अर्ज्जुन कित राखेउ॥
बाण पचीस भीम उर मारे । सात बाण अपुवन परिहारे ॥
इतहि कर्ण उत भीमसों, युद्ध भयो अतिघोर ।
महारथी सब हांक दै, जुरे जोरसों जोर ॥
शकुनी सहदेवहिं संग्रामा । जुरे वीर अपने जय कामा ॥
नकुलहि कृतवर्मा सों भारथ । दोऊ सबल रच्यउ पुरुषारथ ॥

कुरुपति धर्मराइ तव सरसे। छूटे वाण बुन्द सम वरसे॥
घटउत्कचहिं द्विरद संग्रामा। कुरुपति धर्मराइके कामा॥
शूल साँगि मुद्गर परिहारे। कोऊ गदा कोपि शिरमारे॥
खड्‌ग कटारौ वाहहिं चोखे। लागत जहां रहत नहिं धोखे॥
कोऊ पाश साजि शिर मेले। अरस परस करि आगे पेले॥
भीम कर्ण ते सरस लराई। महायुद्ध कीन्हे प्रभुताई॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोड़े। मारे रथ के चारिउ घोड़े॥
विरथ भये भीमहिं जव जाने। धृष्टद्युम्न तव साँरग ताने॥
यहि विधि सरस वाण सन्धाने। कुरुदल के शरछांह छिपाने॥
विरथहु भीम घाल वनि आये। लेकर गदा क्रोध करि धाये॥

कर मुष्टिकाप्रहारते, मारेउ सेन अनन्त।
गदा घाव लोटत परे, मतवारे मयमन्त॥

देखि द्विरद आगे चलि आयउ। भीमउपर शतवाणचलायउ॥
द्विरदसङ्ग आये शत भाई। ते सव वाण वृष्टि झरिलाई॥
भीमहिं घेरि लगे शर मारन। इत अकेल उत वीर हजारन॥
द्विरद आइ मुद्गर परिहारे। भीमसेन वायें कर मारे॥
मुद्गर शीश परो तव धरणी। देखी सवन भीमकी करणी॥
द्विरदहिंगिरत सवैमिलिधायउ। शूल शैल सववाण चलायउ॥
वहुतक आनि गदा परिहारे। वहुतक आनि खड्‌गशिरझारे॥
क्रोधित भीम भयो अति ताते। शतवन्धहु महँ वीस निपाते॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे। धृष्टद्युम्न कर मारेउ घोरे॥

शल्य सारथी रथ पहुचावा । रहुरे भीम कर्ण अब आवा ॥
यह कहिकै मारे तीक्षण शर । घायल ह्वैकै फिरै वृकोदर ॥
पांण्डव दल जूझे घने, लगत कर्णके बान ।
धर्मराइ यह देखिकै, कीन्हे शर सन्धान ॥
कर गहि धनुष कीन्ह सन्धाना । कर्ण अङ्ग मारे दश बाना ॥
अपर बीस शर पायल छूटे । ते सब शरहु हृदयमहँ फूटे ॥
हँसिकै कर्ण बाण दश लीन्हे । भूप अङ्ग शर भेदन कीन्हे ॥
अर्ज्जुन कहां दुरायहु भाई । तुम मोसों रण रची लराई ॥
तुमते कहा करहिं पुरुषारथ । मेरे बल समान है पारथ ॥
शल्य सारथी कर्ण चेताये । बाँधौ नृपति घात भलि पाये ॥
जो लगि धर्मराइ लै आये । जयतिपत्न भारतमहँ पाये ॥
नागफांसको उद्यम कीन्हे । धर्मराइ खगपति शर लीन्हे ॥
तब भूपति कहँ पाछे घालेउ । धृष्टद्युम्न रथ आगे चालेउ ॥
क्रोधित कीन्हेउ युद्ध भयङ्कर । मुण्डमाल दीन्हेउ गर शङ्कर ॥
द्रोणी सों अर्ज्जुन पुरुषारथ । कीन्हो महा भयङ्कर भारथ ॥
सहस बाण द्रोणी तब छांटे । आवत बीचहि पारथ काटे ॥
अर्ज्जुन द्रोणी रणमचो, छूटत बाण अनन्त ।
हय रथ पैदल गिरतहैं, मतवारे मयमन्त ॥
दूनों दल महँ परी लराई । सन्ध्याकाल आइ नियराई ॥
घटोत्कचहिं तब कृष्णबखाना । आपुयुद्ध कहँ करहु पयाना ॥
माया युद्ध करिय यहि रूपा । मारौ मिलि कौरवपति भूपा ॥

करत प्रणाम असुर सब धाये । कुरुसेनाके ऊपर आये ॥
गगन पन्थ कीन्ही अंधियारी । वर्षहिंबाण मनहु घनभारी ॥
वृक्ष अनेक गगनते छूटत । लागत शिलासेन शिर फूटत ॥
यहिविधिमारु भयानक कीन्हे । अन्धकार कछु जात न चीन्हे ॥
सूझत नहीं हाथ गहि हाथा । कोउ न रहेउ काहु के साथा ॥
अपने मन सांचो करि जानेउ । प्रलयकालअबआयतुलानेउ ॥
दुर्योधन तब आपु पुकारे । कहां कर्ण हैं मित्र हमारे ॥
मारहु असुर विलम्ब न लावहु । सङ्कटते अब मोहिं छुड़ावहु ॥

कर्ण कही राजा सुनहु, वधहुँ असुर जो आज ।
वज्रशक्ति मेरे अहै, राखेउँ अर्ज्जुन काज ॥

आजु राति इस्थिर ह्वै रहिये । सबमिलिकै धीरजमनगहिये ॥
राजा कही कर्णसों ऐसो । अहो मित्र बोलत हौ कैसो ॥
जो सब मिलि आजुनहिमहँमरिये । अर्ज्जुनमारि कालुहिकाकरिये
सांग शूल मुद्गर परिहारत । वृक्ष पषाण शीश पर डारत ॥
अबजनि गहरु करो तुम भाई । मारि असुरकह देहु गिराई ॥
कर्णपुकारि कही यह बानी । राजा तुम तौ बात न जानी ॥
अहैं कृष्ण पारथके रक्षक । तिनउपायकीन्हेउ परतक्षक ॥
मृतुअ विना कोऊ नहिं मरही । भये मृतुअ को रक्षा करही ॥
धीरज धरहु करहु मन गाढ़ा । मैं अब धनुष लिये करठाढ़ा ॥
वज्रशक्ति ते असुर न मारहुँ । कालहि युद्ध अर्ज्जुन संहारहुँ ॥

अर्ज्जुन मारि जीतिहौं भारथ। कुरुपति करहु तुम्हारो स्वारथ ॥
राजा कही मतिहि बौरानी। आजुहि मरे काल्हिको जानी ॥
कर्ण कही विधिकी रचित, टारि सकै सो कौन।
मारतहौं अब असुरकहँ, रहैं सबै होइ मौन ॥
यहकहि वज्रशक्ति करलीन्हे। सहसनयनको सुमिरनकीन्हे ॥
ताकि असुरको कर्णचलायउ। छिटकीज्योतिअकाशहिआयउ ॥
लागी शक्ति असुर उर कैसे। लगत बज्र गिरिवर गिरिजैसे ॥
पर्‍यो भूमितल असुर भयङ्कर। मुण्डमाल लीन्हेउ सो शङ्कर ॥
गई शक्ति सुरपति के हाथा। बहुत अनन्द भये जगनाथा ॥
साधु कर्ण सेना सब भाषे। ऐसे समय कवन केहिराखे ॥
उभय सैन्य अपने गृह आयहु। सबमिलि खानपानमनलायहु॥
रोदन करैं हिड़म्बी कैसे। बिछुरी गाय वच्छसों जैसे ॥
भीमसेन करुणा बहु कीन्हे। कृष्णदेव कछु कहिबे लीन्हे ॥
करुणा करहु कछू नहिं होई। जगमहँ अमर भये नहिंकोई ॥
कुरुक्षेत्र महँ प्राण गवांये। आपु मरे अर्ज्जुनहिं बचाये ॥

क्षत्री होय प्रणको धर, करै सतत्र परमान।
कर्ण पर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

त्रय दश वर्ष छूट भा देशहि। द्रुपदसुता नहिं बाँधे केशहि॥
जब यह बात कही बनवारी। छूटो शोक क्रोध भा भारी॥
घायल धर्मराय दुख पावा। अर्ज्जुनसों यह वचन सुनावा॥
धृग अर्ज्जुन धृग धनु शर तोरे। कर्ण बाण झरझर तनुमोरे॥
सो सुनि अर्ज्जुन क्रोधहि पायउ। करगहिकै यदुनाथ बुझायउ॥
सेना सबहि शयन मन दीन्हे। प्रात होत रण उद्यम कीन्हे॥
कीन्हे बम्ब दमामें बाजे। सावधान क्षत्री सब गाजे॥
कर्ण तुरत अस्नानहिं कीन्हे। विप्रन बोलि दान बहु दीन्हे॥
पहिरि सनाह किये रण साजें। चहुँ दिशि भेरि दुन्दुभी बाज
माथे मुकुट विराजत कैसे। सूर्य्य प्रकाश अकाशहिं जैसे॥
शल्य सारथी जोते घोरे। चञ्चल चपल दिननके थोरे॥
खोदत महि फहरत हैं ठाढ़े। मानहुँ सिन्धु मथनके काढ़े॥

पाखर लाल लगाइकै, पुनि बांधे गजगाह।
चढ़े कर्ण रथ कोपिकै, मन लरिवेकी चाह॥

दुर्योधन कीन्हे असवारीं। साजी सेन महाबल भारी॥
भई बम्ब वैरख फहराने। चले वीर सब बांधे बाने॥
पाण्डवके दल बाजन बाजे। नन्दिघोष रथ श्रीपति साजे॥
पहिरिसनाह खड्ग कटि बांधे। अक्षय तूण विराजत काँधे॥
कर गहिधनुष चढ़े रथ पारथ। जोती गहे कृष्णसे सारथ॥
धर्मराय कीन्हे असवारी। आगे भये भीम धनु धारी॥
दल चतुरङ्ग रङ्ग करि आवा। युद्धभूमि महँ शोभा पावा॥

मूर्ख महाउत ले अधिकारी। भिरे गयन्द युद्ध भा भारी ॥
दल चतुरङ्ग करत रण घोरा। उरझे सबै जोर सों जोरा ॥
कह्यो कर्ण अब रथहि चलावहु। अर्ज्जुनके सन्मुख पहुँचावहु ॥
मारौं आजु खेतमहँ पारथ। देख्यो शल्य मोर पुरुषारथ ॥
हँसि के शल्य कही तब बानी। रविनन्दन यह बात न जानी ॥

हंस काग जैसी भई, तैसी भई निदान।
अबहिं कर्ण बल देखियो, भारत के मैदान ॥

क्रोधित ह्वै तब कर्ण बखाने। हंस काग को भेद न जाने ॥
भाषो शल्य कर्ण सुन बीरा। एक दिवस सरवरके तीरा ॥
राजहंस सब चले उड़ाई। सिन्धु पार महँ बनी चराई ॥
तिनसों काग कही अस बानी। हमकहँ साथ लेहु खगज्ञानी ॥
कही हंस तुम जाइ न पैहो। मरिहो बूड़ि पार नहिं लहिहो ॥
कही काग गति सबहि उड़ैहौं। तुम सब साथ पार मैं जैहौं ॥
यह कहि चले हंस के सङ्गा। कोस चारिलै उपज्यो रङ्गा ॥
थको काग तब ढिगही आयो। बूड़त हौं यह वचन सुनायो ॥
कही हंस सुधि अबहि भुलानी। अब काहे बूड़त जड़ ज्ञानी ॥
सुनिकै हंस निकट तब आयो। पीठिउपर तब काग चढ़ायो ॥
फेरि बहुरि लाये यहि पारा। राख्यो काग नींबकी डारा ॥
सिन्धु पार सब गये उड़ाई। यह चरित्र हम देख्यो भाई ॥

शरसों सागर बान्धिकै, जिन जीते हनुमान।
शरपञ्जर रथ राखिकरि, तिनसों तुमहि समान ॥

जब विराटको गोधन गखऊ । ता दिनकर्ण कहां तुम रखऊ ॥
क्रोधित कह्यो कर्ण यह बैना । देखहु आजु युद्ध तुम नैना ॥
हांको रथहि विलम्ब न लाओ । अर्जुनके सन्मुख पहुँचाओ ॥
सुनिकै शल्य तेज रथहांको । पवन लगे फहरात पताको ॥
भीमसेन आगे ह्वै लीन्हे । बाण वृष्टि करिबे मनदीन्हे ॥
तब कह कर्ण भीम तुम अहहू । अर्जुन कहां सो मोसन कहहू ।
यहै कहत अर्जुन तब आये । नन्दिघोष रथ प्रभु पहुँचाये ॥
भाख्यो अर्जुन भीम सिधारो । दुःशासन सों युद्ध विचारो ॥
आजु कर्णसों यमहि लराई । पुरुषारथ देखो सब भाई ॥
यह कहिकै कीन्हेओं सन्धाना । लागे सरस चलावन बाना ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे । आवत बाण बीचहीं तोरे ॥
दोऊ वीर बाण सन्धाना । शरके छाहँ छिपाये भाना ॥

अरस परस दोऊ प्रबल, कीन्हेओ शर सन्धान ।
अन्धकार भा दिवसमों, सूझि परहिं नहिं भान ॥

चले बाण कवि सकहिं न भाषन । शतसों सहससहससोंलाखन ॥
नन्दिघोष हांकत बनवारी । शल्यसारथी उत अधिकारी ॥
अर्जुन कर्ण करत मन जितको । कृष्णशल्य हांकतरथतितको ॥
अग्निबाण अर्जुन कर लीन्हे । पढ़िकैमन्त्र फोंक गुणदीन्हे ॥
चले बाण कौरव दल जारन । प्रकटीं शिखा हजारहजारन ॥
देखि कर्ण जल बाण चलाये । चण भीतर सब अग्निवुताये ॥
जलकी धार नैन दिकलाने । पवन बाण अर्जुन सन्धाने ॥

परम बेग ताते जेहि ताका । टुटनलगे सब ध्वजापताका ॥
छांडे कर्ण सर्पके बाना । नागन कीन्ह पवन सबपाना ॥
तब अर्ज्जुन खग बाण चलाये । मोरन पकरि सर्प सब खाये ॥
दोऊ वीर चलावत हैं शर । बलसमान सो बली धनुर्द्धर ॥
धरणी जल अरु स्वर्ग पताला । बाण मारि सूखे सरि ताला ॥

पच्छी उड़ते गगन नहिं, ताको दिशा अँधार ।
देव न देखत युद्ध कछु, शर छायो संसार ॥

कोटिन अर्व खर्व शर छांड्यो । दोऊ दल बाणनते पाट्यो ॥
कुरु पाण्डव दल सब भरमाये । अर्ज्जुन कर्ण न देखन पाये ॥
दोऊ वीर सरस पुरुषारथ । कीन्हे महा भयानक भारथ ॥
चुञ्चुक कहो कर्ण के आगे । अब मोकहँ सन्धान सभागे ॥
तीलौं कृष्ण सहित रथपारथ । अब देखहु मेरो पुरुषारथ ॥
सो सुनि कर्ण वीर सन्धाना । चुञ्चुकसहित त्याग तबबाना ॥
कहो कर्ण अर्ज्जुन संहारहु । आजुजानिबो तेज तुम्हारहु ॥
हांक मारिकै बाण चलाये । चुञ्चुक प्रकट देह धरि आये ॥
देखत रूप भयङ्कर भावा । भादौंघटा उमड़िजनु आवा ॥
दरबि बाढ़ि लाग्यो असमाना । फणाके छांह छिपाये भाना ॥

रवि अछत निशि ह्वै गई, अर्ज्जुन भाषे बैन ।
अन्धकार कस देखिये, कहिये राजिव नैन ॥

तब श्रीहरि आये यहि बातन । पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
जब खाण्डव व.दानहन कीन्हा । सारथि होइ जीती हमलीन्हा ॥

शर पञ्जर छाये तुम कानन। शतयोजन घेरे तुम बानन॥
तादिन रथ ऐसो मैं हांका। घुमरत मनहुकुम्हारको चाका॥
खग मृग पशुजारतदवकानन। बाहेर होय न बचत है बानन॥
युर्मि नाम नागिनि जब जानी। तेजवन्त आकाश उड़ानी॥
तब तुम वेगवन्त शर छांटे। नागिनि गई पूंछ त्यहिकाटे॥
ताको सुत यह चुञ्चुक नामा। बसै पताल शेषके धामा॥
करकोटकको पुत्र कहावा। बैर लेन भारत मों आवा॥
कर्ण तोण निवसत है तबसों। कीन्हो युद्ध अरम्भन जबसों॥
तब अर्जुन यह भेदहु जाने। क्रोधित बाण कीन्ह सन्धाने॥
अर्जुन क्रोध लगे शरमारन। शतते सहस सहस्र हजारन॥

अर्जुन मारत कोपिकै, नाहिन फूटत अङ्ग।
चुञ्चुकके फण लागि कैं, होत बाणसबभङ्ग॥

गर्जत क्रोध सर्प जो कैसा। प्रलयकाल बोलत घन जैसा॥
चुञ्चुक कही सुनौ हो पारथ। लीलत अहौं करौपुरुषारथ॥
यह कहि वदन कियो विस्तारा। मनहुँ उदरनद्वि अहहि पनारा॥
जो शर अर्जुन के करछूटन। गड़े न नेकु लागि सब टूटत॥
पाण्डव दल देखत भय माने। धर्मराइ अचरज करि जाने॥
नन्दिघोष रथ लीले लीन्हेउ। हाहा शब्द देवतन कीन्हेउ॥
सुरपति देखि महाभय पायो। हनूमान सों ऐस जनायो॥
दाबहु रथ सो आइ पताला। यहि विधिवञ्चितकोजियब्याला॥
ऊपर बल कीन्हेउ हनुमाना। रथगड़ि गयो पताल समाना॥

चुञ्चुकके मुख पीत पताका । पवन लगे डोलत है बाँका ॥
दोऊ दल कीन्हेउ अनुमाना । नन्दिघोष अहिउदर समाना ॥
चुञ्चुक फिरेउ कर्ण ढिगआवा । साधु साधु कहि कर्ण सुनावा ॥

शल्य कही तब कर्णसों, झूठ कहो क्यहि काज ।
पारथको को ग्रासिहै, जेहि सारथि ब्रजराज ॥

यहि अन्तर हरि रथहि उठायउ । नन्दिघोष धरणीपर आयउ ॥
पाण्डव दल देखत सुख मानेउ । तबहिं कर्ण सों शल्यबखानेउ॥
रथ समेत देखहु यह पारथ । हनूमान रथ पारथ सारथ ॥
कर्ण कही चुञ्चुकसों बानी । मिथ्या तुम भाषेउ अज्ञानी ॥
चुञ्चुक कही भयो छल भाई । मैं तो कछु यह भेद न पाई ॥
फिरि मोको कीजै सन्धाना । करौं ग्रसन पारथ भगवाना ॥
कही कर्ण यह उचित न होई । बाण बटोरि चलाव न कोई ॥
आश देइके कीन्ह निरासा । पैहो नाग नरकमहँ वासा ॥
यह कहि नाग किये तब गवना । जैहो कर्ण कालके भवना ॥
चुञ्चुक जब भवनहिं शुभ कीन्हे । अर्ज्जुन कर्ण युद्ध मन दीन्हे॥
कब आवे कब शर सन्धाने । कब छूटहि कोई नहिं जाने ॥
यहि विधि करत युद्धको करणी । अङ्ग भेदि फूटत शर धरणी ॥

महावीर दोऊ भिरैं, करहिं अस्त्र परिहार ।
रण देखत मुनिदेवगण, कठिन बजाये सार ॥

अर्ज्जुन कर्ण भयो रण घोरा । परो भीमदुःशासन जोरा ॥
भीमसेन ऐसे शर जोरे । मारे रथके चारिउ घोरे ॥

दुःशासन सारँङ्ग करलीन्हे। बाणन वृष्टि भीमपर कीन्हे॥
चारि बाणते अश्व सँहारे। एक बाणते सारथि मारे॥
शतशर भीमसेन उर लागे। क्रोध अनल तनु अन्तर जागे॥
करगहि गदा भीम तब धाये। हांक मारि दुःशासन आये॥
दोऊ वीर खेत महँ कैसे। महा मत्तगज उरझे जैसे॥
करगहिगदा कोपि परिहारहिं। एकहि एक कोपकरि मारहिं॥
धमकत घाव लगेउ जबतनमें। बाढ़त कोप दोउके मनमें॥
अस्त्र डारिकै दोउ लपटानेउ। क्रुद्धिततरलयुद्धअरुझानेउ॥
करगहि कच मुष्टिक परिहारहिं। शीशहि शीश कोपिकै मारहिं॥
उरसों उर पेलत हैं दोऊ। पारिसकत नहिं टरते कोऊ॥

भीमसेन अतिक्रोधकरि, अभिरत अमित अनन्त।
आनि पछारेउ धरणिपर, मानहुँ सिंह गयन्द॥

तरेउ भीम दुःशासन कैसे। व्याध कुरङ्ग पछारहिं जैसे॥
कहेउ भीम दुःशासन वीरहि। खैंचत कस न द्रौपदी चीरहि॥
खेलहु पांशा कपट बनावहु। गहो केश द्रौपदि लै आवहु॥
अबहिं सबहिसुधिबिसरी भाई। मेरे चितहि आजु सब आई॥
भीमसेन कह नकुलहि धावहु। जाइ तुरत द्रौपदिलैआवहु॥
पलमहँनकुलगयो चलिभवना। द्रुपदसुता अबकीजे गवना॥
मेलेउ भीमसेन अभिमानी। हँसिकै चली आपु तहँ रानी॥
आई तुरत विलम्ब न कीन्हे। पीढ़े भीम दुशासन लीन्हे॥
कही पुकारि द्रौपदी रानी। सुनिये बात भीम तुमज्ञानी॥

ऐसे तौ तुम पांच सहोदर । धन्य धन्य तुम धन्य वृकोदर ॥
जब कीचक विराटपुर मारे । तादिन मेरे लाज़ निवारे ॥
तन मन धनहि निछावरि कीजे । तोपर प्राण वारिकै दीजै ॥

भीम भयङ्कर रूपधरि, कहेउ सुनौ दोउ सैन ।
है कोऊ रक्षा करे, सो मोसे कहिये बैन ॥

कुरु पाण्डव जेतेहैं क्षत्री । कृष्ण सहित यदुवंशी अत्री ॥
असुर नाग नर सुरहु पुरन्दर । धरणी सिन्धु मेरु गिरि कन्दर ॥
चन्द्र सूर्य्य तुम दोऊ साखी । तीनि लोक देखत हैं आंखी ॥
रक्षा करहु दुशासन मारत । कही भीम हम भुजा उपारत ॥
सुनि पारथके जिय रिस बाढ़ी । तीक्षणशर निषङ्गते काढ़ी ॥
मारि भीम अब करौं निपाता । कैसेउ सहि न जातियहबाता ॥
श्रीपतिकही उचित नहिं होई । आजु भीमसों जितहि न कोई ॥
मैं नरसिंह रूप बल दीन्हा । भीम अङ्ग परवेशित कीन्हा ॥
हांक मारिकै भुजा उपारे । रुधिर द्रौपदीके शिर डारे ॥
शिरसों परत रुधिरकी धारा । द्रुपदसुता तब बान्धेउ बारा ॥
अरुण वर्ण तनु सोहत कैसे । असुर युद्धमहँ देवी जैसे ॥
द्रुपदसुता तब भवन सिधारी । अर्ज्जुन कर्ण रचेउ रण भारी ॥

शरवर्षत हर्षत दोऊ, हांकत रथ भगवान ।
कर्णपर्व भाषारचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

दोउ वीरहैं मेघ समाना । वर्षत बाणबुन्द अनुमाना ॥
घन घहरात घहर रथ चाके । बकपांतीसम श्वेत पताके ॥
ऐसेबाण गगन मों धावहिं । शर रोंकत शरपन्थ न पावहिं ॥
कुरु पाण्डव दल नाहिन सूझै । अपन पराइ कोइ नहिं बूझै ॥
गज अरु शकटहजारनधावहिं । कर्णरथहिबाननपहुँचावहिं ॥

अर्जुन कर्णहिरणमच्यो, जलदबुन्द समबान ।
सरस निरस कहिजातनहिं, रच्योमण्डिमैदान ॥

कर्ण पांचशर भालुक लीन्हे । लघु सन्धान किरीटनकीन्हे ॥
दोऊ सारथि रथहि चलावत । वोहितमनहुँ सिन्धुमहँधावत ॥
जूझो सेन लगे तीक्षण शर । होनलागि अतिमोरु परस्पर ॥
अर्जुन कर्ण करत रण करणी । रुण्ड मुण्ड मण्डग्रोसबधरणी ॥
अर्जुन बाण कोपि परिहारयो । सहस पैग पाछे रथ टारयो ॥
देखि कर्ण तब शर सन्धाना । मारयो नन्दिघोष तकिबाना ॥
पैग अढ़ाई पाछे टारयो । साधु कर्ण यदुनाथपुकारयो ॥
सफल जन्म जग जीवन तेरो । बाण घात डोलत रथ मेरा ॥
अर्जुन कह्यो सुनहु जगतारण । साधुवचनभाष्योकहिकारण ॥
सहसपैग हम रथहि चलायो । पैग अढ़ाई मम रथ आयो ॥
तब श्रीपति बोले यह बानी । अर्जुन तुम यह भेद न जानी ॥
नन्दिघोष रथ मेरु समाना । ध्वजपर परम भार हनुमाना ॥

महा विश्वम्भर रूपधरि, हांकतहैं यह रत्थ ।
टारो रविसुत बाणते, महावीर समरत्थ ॥

यह सुनि बाण लगे परिहारन। जूझो सेना वीर हजारन॥
कर्ण कोपि भालुक शर लीन्हे। ते शर चोट शीशपर कीन्हे॥
कृष्ण अङ्ग शतबाण प्रहारे। सहस बाण हनुमानहिं मारे॥
श्याम शरीर रुधिर छबि छाये। पीत वसन तनु शोभा पाये॥
अर्ज्जुन को तनु झांझर कीन्हे। क्रोधित भये एक शर लीन्हे॥
रविनन्दन के उरसो मारयो। भेदि अङ्ग निसरो शिरपारयो॥
बाण सहस्र शल्य उर दीन्हे। घायलकरितनुझांझर कीन्हे॥
अरुण वर्ण देखत तनु भूले। मधुमहँ मनहुँ किंशुकी फूले॥
यहिविधि कीन्हयो बाण दरेरो। दशहूँ दिशा दोउ रथ घेरो॥
दोऊ रथ यहिविधि छबि पाये। पर्वत मनहुँ भूमिपर आये॥
कही कर्ण अर्ज्जुन सुनि लीजै। सावधान मोते रण कीजै॥
अब यहिविधिते बाण चलावों। काटों शीश विलम्ब न लावों॥

मारतहौं अब गहरु नहिं, कह्यो कर्ण यह बैन।
सारथि ह्वै रक्षा करहु, प्रियतम पङ्कज नैन॥

यह कहि नीलबाण कर लीन्हे। जो शर ऋषि दुर्वासा दीन्हे॥
कृष्णदेव रणको मन दीजै। अब पारथकी रक्षा कीजै॥
क्रोधित बाण किये सन्धाना। देखि शल्य यहि भांति बखाना॥
जाके रक्षक श्रीजगत्राता। ताको कर्ण कौन चह घाता॥
हृदय ताकि मारेउ तब बाना। पलटि न करहु फेरि सन्धाना॥
यह कहि धनुषकर्ण लगि ताना। कर्ण हाथ छूटयो तब बाना॥
अन्तरिक्ष शर आवत कैसे। छूटै वज्र इन्द्र कर जैसे॥

अर्ज्जुन लगे कठिन शर मारण। पै न सके यह बाण निवारण॥
आयो बाण कण्ठ तकिजवहीं। नन्दिघोष दाबेउ प्रभु तबही॥
जुटिके अश्व रथहि ढिग आयो। कटो मुकुट श्रीकृष्ण बचायो॥
मुकुट काटि शर वेधेउ धरणी। जगमें रही सदा यहकरणी॥
धन्य कृष्ण पाण्डव सब भाखा। दीनदयालु पारथहि राखा॥

जाके सारथि चक्रधर, मारि सकै तेहि कौन।
अर्ज्जुन के रक्षक सदा, श्रीपति राधारौन॥

हांक देत हांकत हरि घोरे। अर्ज्जुन कोपि कठिन शरजोरे॥
दोऊ वीर बाण परिहारे। एकहि एक क्रोधते मारे॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे। श्रावण मेघ महा झरि जैसे॥
पक्षी गगन उड़न नहिं पावत। शर लागत धरणीपर आवत॥
अरुणावर्ण आये सँग आवहिं। शर समूहते पन्थ न पावहिं॥
ऐसे लाग चलावन वाना। शरपञ्जर छाये असमाना॥
जूझी सेना पन्थ न पावहिं। लोथिनपर रथ हांकिचलावहिं॥
गर्जत नन्दिघोषके चाके। पवन वेग फहरात पताके॥
शल्य सारथी रथहि चलावा। नन्दिघोष सन्मुख पहुँचावा॥
अर्ज्जुन कर्ण जुरे हैं कैसे। रघुपति सों रावण रण जैसे॥
इकते एक महाबल भारी। वर्णि शूर दोऊ धनुधारी॥
महायुद्ध अर्ज्जुन पुरुषारथ। रणसमबली कर्ण अरु पारथ॥

अर्ज्जुनकर्णहि रणमच्यो, छूटत तीक्षणबाण।
कौतुकत्याग्यो सुरगणन, भाजे छांड़िविमान॥

शल्यहि कहो कर्ण तब ऐसो । चाक भूमिपरसै नहिं जैसो ॥
जेहि दिन मैं विराट पुर घेरो । बैठों गाइ अहीरन केरो ॥
तब सहदेव बुद्धि उपराजो । खुरदै बाँधि आपु उठि भाजो ॥
लाठी छाँड़ि बहुत विधि मारो । अचलगाइतनुटरत न टारो ॥
मैथुनि नाम गाय इक रहेऊ । क्रोधित ह्वै अस मोसन कहेऊ ॥
जैसे अचल भयो तनु मोरा । रथ अटकै भारत मैं तोरा ॥
चाके चारि ग्रसै जब धरणी । तब न बनै कछु तोसों करणी ॥
यह सुधि मेरे मनमैं आई । सावधान हांको रथ भाई ॥
शल्य सारथी कीन्हेउ करणी । चाक छुवै नहिं पावत धरणी ॥
अर्ज्जुन कर्ण करत संग्रामा । पलभरनहिं पावत विश्रामा ॥
देव अस्त्रद्वउ दिशि परिहारहिं । एकहि एक क्रोधकरि मारहिं ॥
गज रथ पैदल जूझे लाषन । महा मारु कोउ सकै न भाषन ॥

नदी भयङ्कर रुधिर की, गजन करारे जान ।
मरतमांस जलफेनसम, लहरी चमकै बान ॥

ढाल मनहुँ कच्छप उतराने । बार सेवार सरिस अरुझाने ॥
बखनर सहित परे धर जेते । ग्राह समान देखियत तेते ॥
गज भुशुण्डि टूटे कस जाने । मनहुँ सूसि जलमैं उतराने ॥
चक्रत फरी लसत हैं कैसे । रुचिर पत्र पुरइनिके जैसे ॥
शूर शीश देखत दिग भूले । जैसे कमल सहस दल फूले ॥
मांस बहुतसम सरस सोहावा । नावचलत जिमि रथउतरावा ॥
परि जँजीर जल शोभापावहिं । धीवरमनहुँ जाल छिटकावहिं ॥

भूत प्रेत करते स्नाना। योगिनि मनहुँ करैं सोपाना ॥
जम्बुक गीध काकगण आवहिं । मांसखाहिं मनमोल चुकावहिं
नन्दी चढ़ि डोलत हैं शङ्कर। मुण्डमाल गर रूप भयङ्कर ॥
गज शुण्डहिलै योगिनिआवहिं। दै मुख बिचकर तालबजावहिं ॥
नाचि कबन्ध देहिं करतारी । कौतुक रचि रणभूमिहि भारी ॥

आंत लपेटे गजचरण, किये पखाउज साज ।
भैरवगण या विधिफिरत, खेतभयङ्करलाज ॥

यहि विधि युद्ध भयङ्कर भारी। दोऊ भिरे खेत परचारी ॥
क्रोधित अरुण नैन भये कैसे। भोरहिं उदित दिवाकर जैसे ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे। घायल नन्दिघोषके घोरे ॥
तीक्ष्ण बाण कृष्ण उरदीन्हे। हनूमान तनु जर्जर कीन्हे ।
तब अर्जुन कीन्हे सन्धाना। कर्ण हृदयतकिमारेउ बाना ॥
घायल किये शल्यसे सारथि। इकते एक सरस पुरुषारथि ॥
बाणहिं त्यागत यहि व्यवहारा। जिमि वर्षा बरषै जलधारा ॥
रविमण्डलमहँ शब्दसुनावहिं । कर्णमारि अर्जुन यश पावहिं ॥
सुरपति कहो जीति हैं पारथ। मारौ कर्ण करहु पुरुषारथ ॥
यहि विधि कहहिं देवगणबानी । सुनिके शल्य अचंभव मानी ॥
कोउ कह लरो नहिं ऐसो। अर्जुन कर्ण भयो रण जैसो ॥
रुधिर प्रवाह चलै सब अङ्गा। महाशूर मन नेकु न भङ्गा ॥

वीरयुद्ध यहि विधि करत, दोऊ वीर समान ।
शल्य सारथी कर्णरथ, पारथरथ भगवान ॥

भीमसेन कीन्हीं बहु करणी । परे वीर लोटत सब धरणी ॥
गजते गज हयते हय मारे । रथहि पकरि रथऊपर डारे ॥
सम्मुख जुरे गिरेरण जेते । गगन पन्थकहँ फेंकत तेते ॥
जे अभिरे ते सबहिं पछारे । बहुतक मींजि चरण ते डारे ॥
लागे वीर गदा सों मारण । दुर्योधनके बन्धु सँहारण ॥
ते सब बहुरि कठिन शर मारे । मुद्गर गदा शल्य परिहारे ॥
भूलि परे पर भीम न डरपैं । मनहुँ बाज पच्छिनपर झरपैं ॥
क्रोधित भये पाण्डुके नन्दन । यहिविधिकीन्हे सैन निकन्दन ॥
तब अर्ज्जुन छांड़े शर पायल । शल्यसहित रविनन्दनघायल ॥
कर्ण बाण ऐसे परिहारे । अर्ज्जुन हृदय ताकि कै मारे ॥
कहो कृष्ण सुनिये अब पारथ । प्रणकहंसुमिरिकरहुपुरुषारथ ॥
कर्ण वीर ऐसे शर जोरे । हांकत पद ठहरात न घोरे ॥

अर्ज्जुन कर्णहि रण मचेउ, उपमा और न तासु ।
मारत शरके अश्व ते, उड़त गगन महं साधु ॥

सखा साथ धरणी के ऊपर । ग्रसो चाक गाड़ो रथ भूपर ॥
होनहार सो होय निदाना । विधि चरित्र कोऊ नहिं जाना ॥
भाषो शल्य कर्णसों ऐसा । अटको चाक चलत रथ कैसा ॥
सुनिके कर्ण कियो दृढ़ ठाना । मारो नन्दिघोष तकि बाना ॥
सहस बाण अश्वन उर मारे । थकित भये पशु टरत न टारे ॥
असी बाण मारेहु हनुमानहिं । शर अनेक घाले भगवानहिं ॥

तीनि वाण पारथ उर मारे । नन्दिघोष रथ टरत न टारे ॥
कृष्णदेव हांको रथ बांको । जैसे फिरत कुम्हारको चाको ॥
चहुँ ओर शर वर्षत कैसे । भाद्र वृष्टि मन्दरपर जैसे ॥
जेहिदिशि अर्ज्जुनको रथ धावै । तेहिदिशिकर्णवाण झरिलावै ॥
छूटत वाण कर्ण के करसों । नन्दिघोष रथ घेरेउ शरसों ॥
हांक देत हांकत रथवोरे । अर्ज्जुन कठिन वाण गुणजोरे ॥

मारयो पारथ क्रोधकरि, च ोबाण परचण्ड ।
कर्ण धनुर्द्धर श्रीप्रवल, काटि किये शतखण्ड ॥

अभ्रन शल्य वहुतविधि हांको । छूटत नाहिं भूमिते चाको ॥
कूदि कर्ण रथको ढिग आये । गहि चाका तेहि चहत उठाये ॥
कर्ण वीर कीन्ह्यो वल भारी । अर्ज्जुनसों भाष्यो बनवारी ॥
मारहु वाण गहरु जनिलावहु । कर्णशीश अब मारि गिरावहु ॥
पारथ कह्यो उचित नहिंहोई । विना अस्त्र नहिं मारहि कोई ॥
यह अधर्म करिये केहि कारण । यहसुनिकही जगतकेतारण ॥
चक्रव्यूह महँ अभिमनु मारे । तादिन कर्ण न धर्म विचारे ॥
आजु धर्म तुम शोचौ पारथ । तौ भारत रण किये अकारथ ॥
कुन्ती दिये वाण सो लीजै । अर्ज्जुन कर्ण वधन तेहि कीजै ॥
मारहुतुरत गहरुजनि लावहु । वहुरि न ऐसो अवसर पावहु ॥
रथ उठाइ करिहै धनु धारण । तव अर्ज्जुनतुमसकहुनमारन ॥
सुनि अर्ज्जुन कीन्हे सन्धाना । श्रवण प्रयन्त शरासन ताना ॥

दीन्हे हांक प्रचारिकै, चलो वज्रसम बान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यो, सबलसिंह चौहान ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

लाग्यो बाण कर्ण के कैसे । इन्द्र वज्र पर्वत पर जैसे ॥
काटो शीश परा तब धरणी । जगमें रहो सदा यह करणी ॥
कृष्ण आपु जयशङ्ख बजायो । पाण्डव सैन्य देखि सुखपायो ॥
हर्षि इन्द्र तब आज्ञा दीन्हा । पुष्प वृष्टि सब देवन कीन्हा ॥
जयजयशब्दगगन महँ बोल्यो । चढ़ि विमानआनन्दितडोल्यो ॥
जूझेउ कर्ण जगत यश पायो । निसरो रथ महिऊपर आयो ॥
छूटो चक्र धरणि ते जबहीं । फेरयोशल्य हांकि रथतबहीं ॥
छूटो रथ दुर्योधन देखा । जूझेउ कर्ण सत्य करि लेखा ॥
बिचलिसेन कौरवपति जान्यो । आगे ह्वैकें शारँगङ्ग तान्यो ॥
शरसों मारु भयङ्कर दीन्हे । सेना सबै निवारण कीन्हे ॥
सन्ध्या जानि किये तब गवना । द्वउ सेना आई तब भवना ॥
अस अहमिति अर्ज्जुनमनकीन्हे । कर्णमारि जगमें यश लीन्हे ॥
महावीर रविसुत निरखि, कही कृष्ण यहबात ।
अर्ज्जुन सुनिये श्रवण दै, षटजन किये निपात ॥
परशुराम जब शापहि दीन्हे । कुण्डल कवच पुरन्दर लीन्हे ॥
तुम हम धरणी कुन्ती माता । छह उन ने मिलिकीन्ह निपाता ॥

अर्जुन कह्यौ सुनहु जगतारण । भृगुपतिशापदियोक्यहिकारण ॥
तब श्रीहरि भाये यहि बातन । पारथ सुनिये कथा पुरातन ॥
रत्नपर्व व्याकरण पढ़ायो । भृगुपतिपहँ पढ़िवेकोआयो ॥
कटिमें मूँज मेखला बान्धे । कीन्हे तिलक जनेऊ कान्धे ॥
निकट जाय परणाम जनाये । कौन जाति कहँवाते आये ॥
मैंहौं विप्र श्रवण सुनि लीजै । आये पढ़न अनुग्रह कीजै ॥
विद्या मोपहँ आय घनेरो । पढ़िये जो मन आवे तेरो ॥
तब भाष्यो धनुविद्या दीजै । बालक जानि कृपामोहिं कीजै ॥
धनुविद्या सिखइय मुनि ज्ञानी । कर्ण चतुर्दशिआय तुलानी ॥

धनुष बाणलै हाथ महँ, करन चले अस्नान ।
खरी तुरत लै आवहू, पाछे शिष्यसुजान ॥

आगे चलत वृक्ष इक देखा । फूले फूल कदम्ब अशेखा ॥
परशुराम हँसि शारँग साधो । मारयो फूल कटो तब आधो ॥
एक शरहि यहि भांति चलायो । कटे सब नहिं एक बचायो ॥
परशुराम जलतीरहि गयऊ । पाछे कर्ण वृक्षतर आयऊ ॥
आधो फूल लाग है ऊपर । आधो कटो परो है भूपर ॥
मनहिकही मैं बाण चलावों । आधो है त्यहि मारि गिरावों ॥
भूपर खगी धरै जो कोई । वाहै दोष पवित्र न होई ॥
इकलाये तब कनक कटोरा । लै धनु बाण हाथ गुणजोरा ॥
यहिविधि ते कीन्हों सन्धाना । कटयो फूल सब एकहिबाना ॥
बायें हाथ धनुष शर लीन्हें । दहिने हाथ कटोरा कीन्हें ॥

आये परशुराम के पासहि। खरी लगाय पढ़ै सो आसहि॥
करि स्नान ध्यान तब कीन्हें। चले तुरत भवनहिंमनदीन्हें।

आये वृक्ष कदम्बतर, देखिरहे होइ मौन।
आधो सब हम काटिगे, आधो काटो कौन॥

सुनिकै कर्ण कही यह वानी। आधो काटो मैं अभिमानी॥
परशुराम मन माहिं विचारी। भयो सुपूत सिद्धि धनुधारी॥
यहिविधिते कछुदिवस गवांयो। एकदिवस निद्रामन लायो॥
आलसभयो शयनतब कीन्हा। कर्णजङ्घ ऊपर शिर दीन्हा॥
वज्रकीट कीरा जो रहेऊ। जड़सोंनिकसिजंघसोगहेऊ॥
भेदेउ जंघ निकरि तब पारा। तासों चली रुधिर की धारा॥
तातो रुधिर अङ्गसों लागा। उठ्यो चौंकि भृगुनायकजागा॥
रुधिर देखिकै मन अनुमान्यो। लाग्यो वज्रकीट यह जान्यो॥
सुधि अजहूँ नाहीं त्यहि केरी। कहु रे शिष्य जाति का तेरी॥
ऐसो विप्र कहां ते आयो। विनु डोले जिन जंघ छेदायो॥
क्षत्रिय जाति अहो मैं जाना। छल काहे कीन्हों अज्ञाना॥
विद्या दै विनाश का कीजै। वर अरु शाप एक सग लीजै॥

पांचबाण मैं देतहौं, जौलौं रहि हैं हत्थ।
अजय होहि संसार मो, जीतैतोसमरत्थ॥

जब यह बाण शत्रु करजैहै। तबहीं मृत्यु कर्ण तू पैहै॥
वर अरु शाप दोउ जब जाने। सो सुनि कर्ण अनुग्रह माने॥
अर्जुनके जिय संशय रहेऊ। ताकारण या माधव कहेऊ॥

धर्मराय तव वात जनाई। मेरे जिय यह संशय आई।
विप्र जानिके विद्या दीन्हेउ। चतौजानिशापकिमिकीन्हअउ॥
याविधि कही जगतके तारण। धर्मराय सुनिये यह कारण॥
भीषम गये रहे तहँ आगे। परशुरामते सिखै सो लागे॥
विद्या अस्त्र वहुत विधि दीन्हे। आपु समान धनुर्द्धरकीन्हे॥
विद्या पाइ भवन कहँ आये। तव माता यह वचन सुनाये॥
मेरोकहा कियो तुम चाहो। जीति स्वयम्बर वन्धु विवाहो॥
दोऊ वन्धु साथ लै लीन्हे। वाराणसी गवन शुभकीन्हे॥
जानि स्वयम्वर सव नृप आये। रङ्गभूमि सव राजन छाये॥

अम्वे अम्वा अम्वली, तीनो कन्या साथ।
निकरीं भूषण साजिकै, जयमाला लै हाथ॥

जव कन्या इत पांव न दीन्हओ। भीषमदेखिक्रोध जियकीन्हओ॥
तीनिउगहिकर रथहि चढ़ायो। तव भीषम चलिवे मन लायो॥
भिरे नरेश किये रण क्रोधा। गङ्गासुत जीते सव योधा॥
कन्या लै भवनहि पहुँचाये। मातासों तव वचन सुनाये॥
चित्राङ्गदहि अम्विकहि दीन्हे। अम्वहि चित्रवीज तवलीन्हे॥
अम्वालिका कोऊ नहि चाहे। द्वउ कन्या द्वउ वन्धु विवाहे॥
जो भीषम अपनो भलचाहो। तौ मोको अव आपु विवाहो॥
जो अपने मन इच्छा कीन्हे। जाहु शल्यपर आज्ञा दीन्हे॥
कन्या चली शल्यपहँ आई। भीषम ओकहँ दीन पठाई॥
शल्यकही यह उचित न होई। अवतोकहँ व्याह नहिकोई॥

अम्बालिका वचन सुनिपाई । तब फिरि पशुरामपहँ आई ॥
गङ्गासुत मोकहँ हरि लाये । करैं न व्याह बीच टरकाये ॥
परशुराम सुनि क्रोधकै, कहा चलो ममसाथ ।
भीषमको मैं सौंपिहौं, पकरि हाथसों हाथ ॥
भृगुपति आय दिये तब दरशन । भीषम दौरिकिये पगपरशन ॥
इतना कहो हमारो कीजै । जयमाला कन्यासों लीजै ॥
कीन्हो कौल पिता सों अपने । सङ्गम नारि करहुँ नहिं सपने ॥
की मानौ तुम कहा हमारो । की अब मोते युद्ध विचारो ॥
गङ्गासुत सुनि क्रोधहि पाये । बाँधि अस्त्र मैदानहि आये ॥
शिष्यगुरुरच्यउमहारण भारथ । चौविसदिवस रच्यो पुरुषारथ ॥
देवन आइ बीच कर दीन्हा । तब कन्याकछु कहिवे लीन्हा ॥
गङ्गतीर शुचि चिता बनाई । देखत सबहि जरत हौं भाई ॥
क्षत्री होइ लेहौं अवतारा । तब भीषमको करहुँ सँहारा ॥
अस कहिकै निज देहै जारौं । जन्म शिखण्डी भीषम मारौं ॥
तबसों परशुराम प्रण कीन्ह्यो । क्षत्री को विद्या नहिं दीन्ह्यों ॥
सुनिकै धर्मराय सुख माना । सत्यवचन भाष्यउ भगवाना ॥
जहां धर्म तहँ कृष्ण हैं, जहँ हरि विजय प्रमान ।
कर्णपर्व भाषा रच्यउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

इति कर्णपर्व समाप्त ।

शल्य पर्व ।

जय जय गुरुचरणनचितदीजै । रघपति पद अभिवन्दनकीज ॥
शारद चरण करहु परणामा । वन्दौं वाल्मीक गुणग्रामा ॥
सम्वत सत्रह सैं जग जाना । त्यहि ऊपर चौबीस बखाना ॥
कार्त्तिक मास पक्ष उजियारा । दशमी तिथिको कथा उचारा ॥
नौरंग शाह दिली सुलताना । प्रबल प्रताप जगत सब जाना ॥

व्यासदेव पद वन्दिकै, जा मुख वेद पुरान ।
शल्यपर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥

जूझे कर्ण जगत यश पाये । दुर्योधन यह वचन सुनाये ॥
हाहा मित्र परम सुखदायक । महायुद्ध करिबेके लायक ॥
तुम पायं निज क्षत्री धर्मा । यह सब दोष हमारे कर्मा ॥
बलसों अर्ज्जुन सके न मारण । छलकरि वधे जगतके तारण ॥
अब काको सेनापति कीजै । जाके बल भारत यश लीजै ॥

कृतवर्मा तब कह्यो बिचारी । राजा सुनिये विनय हमारी ॥
जब पाण्डव निज देशहि आये । करि बसीठ यदुनाथ पठाये ॥
पांच ग्राम मांगे नहि दीन्हेउ । हठकरिके भारत तुम कीन्हेउ॥
अब करुणा कीजै क्यहिकाजा । साहस सदा चाहिये राजा ॥
सदा धर्म अपने मन राखउ । सत्य छांड़ि मिथ्या नहिं भाषउ ॥
ब्राह्मण गौकी रच्चा करही । परधन परनारी नहि हरही ॥
सुतसम प्रजा करो प्रतिपालक । ज्यों जननी पालै निजबालक ॥

सदा दान सन्मान करि, तजो न शीलस्वभाव ।
शरणागत रच्चा करत, देश प्राण बरु जाव ॥

मातु पिताकी सेवा करऊ । आज्ञा तासु शीसपर धरऊ ॥
कृतवर्मायहिविधि कहिदीन्हेउ । तब शकुनी कछुकहिबेलीन्हेउ॥
शोचकरतन्टप काह अकारथ । अर्ज्जुन मारिरचहु महभारथ ॥
कृपाचार्य्य द्रोणी सम अत्ती । हमहूं हैं कृतवर्मा च्त्ती ॥
शल्य नरेश अहै बल भारी । च्त्ती महावीर धनुधारी ॥
मुकुट बाँधि कीजै सरदारा । दीजै भूप शल्य शिर भारा ॥
सुनिकै कुरुपति आनँद पाये । मुकुट शल्यके शीश बँधाये ॥
बिप्रन आइ बेदध्वनि भाख्यउ । आगे कलश नीर भरि राख्यउ ॥
बहुत भांति शकुनी शुभकीन्हे । दुर्योधन कछु कहिबे लीन्हे ॥
शल्य नरेश आपु यश लीजै । रण पांचौ पाण्डव वध कीजै ॥
भीषम प्रथम गिरे मैदाना । द्रोण गुरुको भयो निदाना ॥

सैन सहोदर सब गिरे, गिरे कर्णसे मित्त।
शल्य पाण्डवन जीतिहै, ऐसो नृपके चित्त॥
कह्यौ शल्य देखहु पुरुषारथ। मारि पाण्डवन जीतहुँ भारथ॥
महायुद्ध करिहौं परतच्छक। पै अर्जुन रथ श्रीपति रच्छक॥
कुरुपति हर्ष भये सुनि बैना। रविके उदय साजि सब सेना॥
कृपाचार्य अश्वथामा साज्यउ। भेरि दुन्दुभी मारू बाज्यउ॥
कृतवर्मा कीन्हेउ असवारी। सेन अनेक वीर धनुधारी॥
अस्त्र बांधि शकुनी तबआयउ। चढ़ो जाइ रथ शोभा पायउ॥
कुरुपति रथ साजो है कैसे। इन्द्र विमान देखिये जैसे॥
चञ्चल चपल आनि रथ जोरे। पवन वेगसों चारिउ घोरे॥
ध्वजा पताका बांधेउ बाना। बहुत भांति बैरख फहराना॥
गज काछे पर्वत सम भारी। पांव जँजीर नन अन्धियारी॥
चारिहु पाट बहुत मद धारा। ज्यों झरना झर बहै पनारा॥
अति उतङ्ग देखत छबिपावत। मनहुँ मेघ धरणीपर आवत॥
कुरुपति चलिभो साजिदल, सेनासिन्धुसमान।
हय रथ पैदल चलेउ बहु, गर्द लोपि गे भान॥
धर्मराय कीन्ही असवारी। पारथ रथ जीते बनवारी॥
अर्जुन अङ्ग सनाह बिराजैं। अक्षय तोण गाण्डिवसो भ्राजैं॥
चढ़े कोपि रथ भीम भयङ्कर। प्रलय कालमहँ जैसे शङ्कर॥
चढ़ि तुरङ्गपर नकुल सुहाये। धर्मरायकहँ शीश नवाये॥
कञ्चन रथ सहदेव बिराजे। कर असि फरी सरिसशरछाजे॥

धृष्टद्युम्न चलो गण राजे । चढ़े तुरङ्ग वीर सब गाजे ॥
गज अरूढ़ अगणितबलभारी । जिनके नयन परी अँधियारी ॥
पहिरि सनाह महाव्रत चढ़े । मानहु विधि अपने कर गढ़े ॥
क्रोधवन्त जानत रण घोरा । छाया लखि देखहिभुजओरा ॥
कोपमान पैदल रण चांड़े । फरी लेहू चमकावत खाँड़े ॥
सांगि शूल लीन्हे कोऊ कर । कोउ मुद्गर लै कोउ धनुर्द्धर ॥

धर्मराय यहि विधि चले, दल बल कीन्हो साज ।
पारथ रथ जोती गहे, सारथि श्रीब्रजराज ॥

सेनसाजि कुरुखेतहि आये । दुउ दल वीरन सोभा पाये ॥
वम्ब निशान बाजने बाजे । होत शब्द मानहु घन गाजे ॥
कोहकत गज हींसत हैं घोरे । आगे होयँ शूर रण जोरे ॥
अग्रहि पेलि देहिं मयमन्ता । क्रोधित जुरे फिरैं चौदन्ता ॥
रथी रथी शर वर्षन लागे । कोप अनल उर अन्तर जागे ॥
खमसी अनी जुरे असवारा । मुद्गर गदा शूल परिहारा ॥
हांक मारिकै पैदल धाये । मल्लयुद्ध करिबे मन लाये ॥
यहि विधि लरत करत घनघोरा । मण्डेउ खेत जोर सों जोरा ॥
आणि शल्य हांकि रथ आये । बाण वृष्टि रथ ऊपर लाये ॥
शर अनेक वर्षत हैं कैसे । जलद मनहुँ श्रावणमहँ जैसे ॥
नन्दिघोष श्रीपति पहुँचायो । अर्जुन बाण बुन्द झरिलायो ॥
द्रोणी भीम करत संग्रामा । दोऊ जुरे खेत जय कामा ॥

कृतवर्मा अरु नकुलसों, भिरे खेत परचारु ।
शकुनी रण सहदेवसों, भई भयङ्कर मारु ॥
कृपाचार्य कीन्ह्यों पुरुषारथ । धृष्टद्युम्नसों मण्डो भारथ ॥
कुरुपति धर्मराय रण सरसे । छूटत बाण बुन्द सम बरसे ॥
दुउदल महा बाजने बाजे । करहिं युद्ध क्षत्री गण गाजे ॥
यहि विधि सरिस चलावतबाना । जूझे वीर गिरे मैदाना ॥
शल्य हाथ तीक्षण शर छूटे । सेन वेधि धरणीमहँ फूटे ॥
अर्जुनके बाणनके मारे । कुरुदल लोटे परे किनारे ॥
परे शूर महि लोटत कैसे । लागत पवन पाक फल जैसे ॥
क्षत्री सत्रा अस्त्र परिहारहिं । एकहि एक क्रोधकरि मारहिं ॥
शल्य कोपि ऐसे शर जोरे । घायल नन्दिघोषके घोरे ॥
सहस बाण मारे हनुमानहिं । असी बाण ते श्रीभगवानहिं ॥
अर्जुन अङ्ग बाण बहु मारे । शरते तनु जर्जर कै डारे ॥
तब पारथ कीन्हेउ सन्धाना । शल्य अङ्ग मारे बहुबाना ॥
आठ बाणते रथ हन्यो, तुरँग अङ्ग शरवीश ।
एक बाण यहि विधिचल्यो, कट्यौसारथीशीश ॥
शल्यहि भयो क्रोध अतिभारी । करयो अपर रथपर असवारी ॥
यहिविधि बाण बुन्द झरिलाये । पाण्डवदल बहु मारि गिराये ॥
अर्जुन त्यागि बाण यहि रूपा । प्रलय काल जैसे यम भूपा ॥
कुरुदल पारथ किये निपाता । जानत सबै युद्धकी बाता ॥
सोई बाण क्रोध करि जोरें । मानुष कहा शेष शिर फोरें ॥

शल्य कोपि लागे शर मारन । जूझे सेन हजार हजारन ॥
भीमसेन द्रोणीते भारत । दोऊ जुरे सरिस पुरुषारथ ॥
मारे बाण क्रोध ते पागे । चल्यउ न एक एक के आगे ॥
सत्तरि बाण भीम उर लागे । क्रोधवान उर अन्तर जागे ॥
किये भीम तउ लघु सन्धाना । गुरुसुत अङ्ग हने शतबाना ॥
दोऊ वीर करत घमसाना । जरजर भये लगे तनुबाना ॥
क्रोधवन्त यहि विधि शरछाटयो । भारत भूमि बाण ते पाटयो ॥

यहि विधि कीन्हेउ युद्धबहु, दोऊ वीर समान ।
सात लक्ष चतुरङ्गदल, जूझि गिरे मैदान ॥

अर्द्धचन्द्र शर द्रोणी छांटयो । धनुगुण भीमसेन को काटयो ॥
करते धनुष डारि महि दीन्ह्यो । रथते उतरि गदाकर लीन्ह्यो ।
दै करि हांक वृकोदर धाये । मानहुँ काल देह धरि आये ॥
द्रोणी कोपि बहुत शर मारे । बांये अङ्ग भीम सब टारे ॥
क्रोधित भये गदा परिहारे । बचो कूदि गुरुपुत्र सँभारे ॥
हय सारथि रथ चूरण कीन्हे । सेना बधन भीम मन दीन्हे ॥
धर्मराय दुर्योधन दावन । बरषैं बाण मनो घन सावन ॥
दोऊ भूप छत्र के धारी । महाशूर क्षत्री अधिकारी ॥
भालुक पांच युधिष्ठिर लीन्हे । ते शर चोट शीश पर कीन्हे ॥
दुर्योधन कीन्हेउ सन्धाना । धर्मराय उर मारेउ बाना ॥
क्षत्री सबै करत रण सरसे । चहुँ दिशि बाणबुन्दसे बरसे ॥
कृतवर्मा सन नकुल लराई । यहायुद्ध कीन्हे प्रभुताई ॥

अर्ज्जुन शल्यहि रणमचो, रथ चाके घहरात।
हांकत हरि रथ हांकदै, पीताम्बर फहरात॥

श्याम शरीर जगत मन मोहै। कुण्डल झलक कपोलन सोहैं॥
श्रम जल बुन्द वदनपर कैसे। मरकत मणि मुक्ताहल जैसे॥
सारथि रूप धरो वनवारी। भक्त हेतु पाण्डव हितकारी॥
कही कृष्ण अर्ज्जुन सों वैना। चितधरि करौ शल्यसनसैना॥
सुनि अर्ज्जुन लागे शर मारन। जूझी फौज हजार हजारन॥
शल्य नरेश पाण्डु दलमारत। जैसे अग्नि सघनवन जारत॥
वीरन हाथ तेज शर छूटत। भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटत॥
महामत्त लाखन गज धावत। आगेपरत सो मारि गिरावत॥
ठोकर पुनि वखोरि सों मारत। वहुतक छेदि दन्तसों डारत॥
वहुत लपेटि शुण्डसों लीन्हे। डारि चरणतर चूरण कीन्हे॥
तोरि शीश फेंकत हैं कैसे। पाके ताल गिरहिं महि जैसे॥
अति उतङ्ग देखत भयकारी। यहिविधि वहुतकसेनसँहारी॥

पाण्डवदल जूझे घने, भई भयङ्कर मारि।
गदा हाथ ल हांक दै, धाये भीम प्रचारि॥

गदा घाव कुञ्जर संहारेउ। ताते वदन फोरिकै डारेउ॥
दशन पकरिकै जे गज हटकेउ। गहिकरिशुण्डधरणिमहँपटकेउ॥
फेंको पदल जात न जाने। ज्यों वकुलाको पङ्क उड़ाने॥
यहिविधि कीन्ह्यो सैन निकन्दन। दौरे देखि द्रोणगुरु नन्दन॥
क्रोधित ह्वै कीनहे सन्धाना। भीम अङ्ग मारे शत वाना॥

तीक्षण तीनि बाण कर लीन्हे। ते शर घात भीमपर दीन्हे॥
भीमसेन तब धनुष सँभारे। द्रोणी अङ्ग बाण दश मारे॥
यहिविधि दोउ युद्ध अरुझाने। अरुणवर्ण शोणितउपटाने॥
शकुनी कही भूपसों बाता। कुरुपति सुनो युद्धकी घाता॥
दोऊ दल अटके अरुझाने। महायुद्ध कछुजात न जाने॥
अब आज्ञा मोहि दीजिये, लैधावों कछुसैन।
बेंड़े होइ अरि पर परैं, आपु देखिये नैन॥
कुरुपति सुनिकै आज्ञा दीन्हे। अपनी अनी साथकै लीन्हे॥
दश सहस्र,कुञ्जर मतवारे। तीनिसहसरथसरस सँवारे॥
साठिसहस असवार महाबल। डेढ़ लाख लीन्हे सब पैदल॥
क्रोधवन्त होइ शकुनी धाये। विदरि होइ पाछेकहँ आये॥
पैठे पेलि फौज मह कैसे। गङ्गा मिलीं सिन्धु महँ जैसे॥
शैल खड्ग मुद्गरफटकारहि। शरते वीर शैल बहुमारहि॥
मारे बहु पाण्डव दल वीरा। भरकीअनी धरहि नहिंधीरा॥
शकुनी रची युद्ध की करणी। जूझी सेन परी सब धरणी॥
भयो शोर दल वैरख डोले। दगा दगा पाण्डव दल बोले॥
छूटे बाणसकै को भाषण। पाण्डव दल जूझे तब लाषन॥
महाशूर रण पलटि सभारे। मारु मारु कै सबनपुकारे॥
चलैं न एक एक के आगे। उरझे सबै क्रोधते पागे॥
यहि विधि शकुनी सैनकी, जूझी फौज अनन्त।
पारथ अब निरखत कहा, भाष्यउ कमलाकन्त॥

नन्दिघोष फेरो वनवारी। भयो अघात शब्द अधिकारी॥
तब अर्जुन शर छांड़त कैसे। प्रलयकाल घन वर्षत जैसे॥
हय गज रथ कीन्हेउ वहुखण्डित। रुंड मुंड धरणी महँ मंडि
यहि विधि कीन्हेउ सैन निकन्दन। हाक देत हांकत जगवंद
तब शकुनी कीन्हे सन्धाना। अर्जुन उर मारे शत वाना॥
कृष्ण अंग बहु वाण प्रहारे। बीस वाण अश्वन उर मारे॥
तब पारथ तीक्षण शर छाँटे। मारे अश्व धनुष गुण काटे॥
सेना वधि अर्जुन रण गाजे। चढ़ि तुरंगपर शकुनी भाजे॥
कह्यो जाय दुर्योधन भूपहि। पारथ युद्ध किये जेहि रूपहि॥
यहि विधिते अर्जुन धनु खांचे। जूझे सकल एक नहि वाचे
विरथ भये आये तब तुमपै। मन्त्र एक नृप सुनिये हमपै॥

धनु धारी अर्जुन सरिस, जीति सकै नहिं कोइ।
कोता है सब मिलि जुरहि, होनी होइ सु होइ॥

कुरुपतिके मनमें तब आई। कहा शल्यसों बूझौ जाई॥
उरझो शल्य युद्धके वाता। शकुनी आय कही तब वाता॥
शरते अर्जुन सकहि न मारन। अब लरिये कोता हथियारन
यहि विधि कीन्हे चलो धर्महि। हारि जीति राजाके कर्महि
सेवक धर्म करहि प्रतिपालहि। होई अन्त लिखा जो भालहि
शकुनी शल्य लगे यहिवाता। उत पारथ दलकरत निपाता॥
शल्य नरेश क्रोध के धाये। धर्मरायके सन्मुख आये॥
भाष्यो शल्य युधिष्टिर भूपहिं। धर्म युद्ध करिये केहि रूपहिं

छांड़ेउ धनुष बाणको करणी । रथहि छांड़ि धाये सब धरणी ॥
सत्रह दिवस भयो रण भारथ । भीषम द्रोण कर्ण पुरुषारथ ॥
आजु युद्ध मेरे शिर भारा । उतरि लरहु कीता हथियारा ॥
भूप शल्य भाष्यो यह बानी । धर्मराज बोलेउ सज्ञानी ॥
भूप युधिष्ठिर क्रोध करि, कहेउ वचन परिमान ।
शल्य पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

लरहु शल्य जस आवहि मनमें । निजकर आजु मारिहौं रनमें ॥
शल्य नरेश धनुष तब राखेउ । रथते उतरि वचन यह भाष्यउ ॥
रथहि छांड़ि उतरे सब धरणी । धर्म्मयुद्ध कीन्ह्यो यह करणी ॥
धर्म्मराय त्यागो असवारी । उतरे भूमि क्रोधकरि भारी ॥
दोऊ दल छांड़े निज स्यन्दन । नन्दिघोष बैठे जगवन्दन ॥
अर्ज्जुन उतरि खड़्ग लै हाथा । धृष्टद्युम्न कहँ लीन्हेसाथा ॥
नृप आगे सहदेव विराजे । बांधे अस्त्र फरी कर साजे ॥
भीमसेन गहि गदा फिरावत । नकुल शेलकर शोभा पावत ॥
उतरे सबहि युद्धके शूरा । क्षत्रिय धर्म्म महाबल पूरा ॥
कुरुपति उतरि रथहिते आये । गहे अस्त्र कर शोभा पाये ॥
महावीर सब बांधे बाना । अटके ठौर ठौर मैदाना ॥
दोऊ दल यहि विधि जुरे, कठिन बजाये मार ।
मुद्गर गदा सु शेल कर, छुटत खड़्गकी धार ॥

लागत खड़ग घाव शिर फूटे। वहते शेल सजोद्दल टूटे॥
मुद्गर परत करत चकचूरन। जूझि गिरे धर केतिक भूरन॥
फेरि खड़ग सहदेव सँभारत। कौरव दल बहुतै रणमारत॥
ऐसे हनत खड़ग कर साधे। टूटिपरहिं हय गय गिरिकांधे॥
क्रोधित शकुनि खड़ग परहारे। शिरकाटत सहदेव सँभारे॥
हँसि सहदेव कही यह बानी। सुनु मन्त्री शकुनी अभिमानी॥
तेरेहि मन्त्री भये सब नाशा। करहुँआजुतोहियमपुरवाशा॥
दोऊ वीर भिरेउ रण चांड़े। उछरत तजि बचावत खांड़े॥
तब सहदेव घात करि पाये। मारि खड़ग शिर काटि गिराये॥
कुण्डल सहित परेउ शिरधरणी। महामारु कछु जात न वरणी॥
भीमसेन कर गदा सँभारे। एकै घाव वीर सब मारे॥
कुरुपति आय कियो पुरुषारथ। मारेउ सैन कियो रण भारथ॥

गदाहाथ मणिमय लिये, करत कोपि परिहार।
हय गज रथ चूरण किये, सेना बीसहजार॥

हाथन शूर कटारिन मारहिं। पकरिकेशगहिभूमि पछारहिं॥
यहि विधि महा युद्ध रण होई। पाछे पाँव धरहि नहिंकोई॥
जुरे शिखण्डी द्रोणी सङ्गा। महायुद्ध कीन्हे रण रङ्गा॥
क्रोधित खड़ग घाव परिहारहिं। दोऊ वीर ढालपर टारहिं॥
गुरुसुत क्रोधित औ भारभारो। कटो शीश ह्वै परेउ नियारो॥
अर्जुन गहेउ खड़ग तबहाथा। काटे बहु क्षत्रिनके माथा॥
कहुं शीश कहुँपरे अधर धर। खड़ग सहित कहुँपरे कटे कर॥

कोऊ युद्ध करत रण करणी । कोऊ कटे अधर धर धरणी ॥
लगे शेल महि परे कराहत । कोऊ खड्ग कोपि शिर बाहत ॥
कहूं देखियत गजको शुण्डा । कहूं मुण्ड कहुँ लखिये रुण्डा ॥
कहूं कबन्ध धरणि पर धावत । शीशपरे महिजयजयगावत ॥
कुञ्जर शीशरुधिर की धारा । जनु गेरू-रङ्ग श्रवत पहारा ॥

कुन्त फरो तोमर गहे, लरत शूर परचारि ।
मारतबीरन क्रोध कै, निसरत पञ्जर फारि ॥

सैन सबहि लोटत लपटाने । खेलत फागु अबीरन साने ॥
मारत शेल सजोड़ल फूटत । रुधिरधार पिचिकासमछूटत ॥
यहि विधि खेलत चांचरि रनमें । महाशूर शङ्का नहि मनमें ॥
धृष्टद्युम्न कीन्ह्यो रण करणी । कौरवदल लोटत सब धरणी ॥
कृतवर्मा तब आपु सँभारे । पाण्डवदल बहुतै संहारे ॥
कोऊ बाहत खञ्जर धोपा । कोउ मारत मुद्गरकरिकोपा ॥
भीमसेन गज बहुत सँहारे । जे अभिरे तेहि सबहि पछारे ।
मारु मारु कै सब मिलि भाषत । महावीर सब लोहुन चाखत ॥
अभिरत भिरत लरत मैदाना । क्रोधित सबै शङ्क नहि माना ॥
यहि विधिसों जोरत रणरङ्गा । करत भोग सुरकन्यन सङ्गा ॥

दोउवीर दल झुमि लरत, जूझि गिरत मैदान ।
कौतुक देखत देवगण, हर्षित चढ़े विमान ॥

रहत खेत महँ शूर न कैसे । देखत भोर तारगण जैसे ॥
धर्मराय तब कहा विचारी । सुनो शल्य हित बात हमारी ॥

अब हमसों तुमसों है जोरा। चढ़िरथ कीजै धनु टङ्कोरा॥
राजा भीम खेत महँ खांड़ो। धर्मयुद्ध मोते रण चांड़ो॥
तब रथपर कीन्ह्यो असवारी। धनुषबाणकर गह्यो सँभारी॥
कह्यो शल्य इस्थिर अब रहिये। मारतहौं तीक्षण शर सहिये॥
यह कहि शल्य बाण दश छांटे। धर्मपुत्र त्यहि बीचहिकाटे॥
सात बाण भालुक नृप लीन्हे। ते शर चोट शल्यपर कीन्हे॥
दोऊ बीर बाण परिहारहिं। एकहिं एक क्रोधकै मारहिं॥
कोपि शल्य यम अस्त्रहि लीन्हे। पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे॥
हांक मारिकै बाण प्रहारहिं। इत नृप इन्द्रबाणसों मारहिं॥
तोमर बाण युधिष्ठिर छांटे। नृपको धनुषबाण गुण काटे॥

डारि धनुष कर शूलले, घालो घाव प्रचण्ड।
सात बाणते धर्मसुत, काटिकियो शत खण्ड॥

दोऊ बीर क्रोधते पागे। अशकुनहोनबहुतविधिलागे॥
दिशा धुन्धि भयकारक भारी। रविअदृश्यबहु फिकर सियारी॥
जम्बुकगण बोलत रथ आगे। रुधिर बुन्द नभ बरषनलागे॥
बैठे काक भयङ्कर बोलत। भूमि चलीअहिपतिशिरडोलत॥
झंझर पवन बहै अतिभारी। उलकापात होत भयकारी॥
गीधन आय शल्य रथ छाये। ध्वजाटूटि धरणीपर आये॥
भये अघात शब्द बहराने। अचरज करि सब काहू माने॥
नृप युधिष्ठिर हांकै दीन्हो। क्रोधित शक्ति हाथकै लीन्हो।
मारत हौं अब शल्य सँभारो। आजु जानिबो तेज हमारो॥

क्रोधित शल्य खड़्गकरलीन्हे । शक्ति घाव राजा तब कीन्हे ॥
छूटत शक्ति शब्द भयो भारी । दशो दिशा कीन्ह्यो उजियारी ॥
वज्र समान शक्ति जब आई । कुरुपतिदेखि महाभयपाई ॥

धर्मप्रबल सुतधर्म को, कीन्हो शक्ति प्रहार ।
ढाल फोरि कर छेदिके, हृदय भेदि गै पार ॥

जूझे शल्य परे तब धरणी । धर्मराज कीन्ही यह करणी ॥
धर्मतनय जब शल्यहि मारो । सब देवन जयजयतिपुकारो ॥
भीमसेन बल आपु सँभारो । ज्यहि पायो त्यहि सबै संहारो ॥
द्रोणि कृपा कृतवर्मा भाजे । जीति युद्ध पाण्डव दल गाजे ॥
अन्ध धुन्ध भा खेत भयङ्कर । नाचत महा मगन मन शङ्कर ॥
नूप युधिष्ठिर भाष्यो बेना । अन्धकार नहि सूझत नैना ॥
कृष्ण समेत कियो तब गवना । चले धर्मसुत अपने भवना ॥
दुर्योधन तब शोचत मनमें । कोऊ साथ रह्यो नहि रनमें ॥
कीजे काह कवनि दिशि जैये । बाढ़ो रुधिर पन्थनहि पैये ॥
सात तालभा रुधिर उँचाई । हयगजभाषत वरणि न जाई ॥
तुरङ्ग तरङ्ग कहत नहि आवै । रत्नाकरको पटतर पावै ॥
बहे जात लोहित मँझधारा । कौन भांति जैये अब पारा ॥

पृथ्वीपति दुर्योधन, लक्ष कुलधर साथ ।
लक्ष्मी जाके कन्धपर, त्यहि विधि कीन्ह अनाथ ॥

तब नृप मनमें कीन्ह विचारा । पैरि रुधिर जैये अब पारा ॥

अस्त्र सनाह खालि सब डारें। लेकर गदा भूप पशु धारे ॥
यहि विधि भारत किये महारन। एक लोथ पर परे हजारन ॥
वार पार दिग आव न जाही। रुधिर नदी अति भई अथाही ॥
पैरत भूप शङ्क नहिं मनमें। जात लोथ अभिरत है तनमें ॥
कबहुँ केश चरणन अरुझावें। पैरत जात पार नहिं पावें ॥
जहां द्रोण गाड़ो जय खम्भा। अभिरे भूप गहो तब थम्भा ॥
गहिके खम्भ किये विश्रामा। जीव शोच पहुँचौं किमि धामा ॥
पकरहिं लोथ बहुत मँझधारा। बूड़िजातसबसहत न भारा ॥
विधिवश एक लोथ तब गव्हऊ। बूड़ी नहीं भार तिनसव्हउ ॥
चला लोथगहि रोहित हेलत। अभिरत मृतक गदासों ठेलत ॥
बहुत कष्टसों उतरे पारा। तब अपने मन कियो विचारा ॥

कौन वीरकी लोथ यह, किय मनमाहँ निदान।
शल्यपर्व या विधिकही, सबलसिहचौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

इति शल्य पर्व समाप्त।

महाभारत।

गदापर्व्व।

गदापर्व अब करत बखाना। दुर्योधन मनमें अनुमाना॥
अन्धकार भो गयो न चीन्हा। मुकुट ज्योति मुख देखै लीन्हा॥
लषण कुमार चीन्हि जब पाये। करुणा करत भूप मन लाये॥
जूझे पुत्र हमारे काजा। कहिहौं कहा भवन अतिलाजा॥
ऐसे सुत सुपूत संसारा। मुयहु समय मोहिं पार उतारा॥
रोय कह्यो दुर्योधन राजा। विधि विरुद्ध कीन्ह्यो यह काजा॥
यहिविधि लोथि डारि जो जैहैं। जंबुक काक गीधगण खैहैं॥
अग्नि देन अवसर नहिं पाये। कहो मृत्तिका दै करि जाये॥
गदा घाव धरणीपर मारो। भयो गढ़ा तब लोथहि डारो॥
ऊपर दियो मृत्तिका ऐसो। जंबुक काक न पावहिं जैसो॥
महाशोच करि कीन्हों गवना। पहुँचे जाइ सुकुरुपति भवना॥
अन्तःपुर कीन्हे परवेशा। रानी चकित देखि यह वेशा॥

एक वसन बूड़े रुधिर, अरुणवर्ण सब अंग।
गदाहाथ शिर मुकुट है, और न कोऊ संग॥

रानी रोय ठोंकि कै माथा। जिन विधि कीन्ह्यो हमहिं अनाथा॥
आदर करि आसन बैठाई। धोइ रुधिर बस्तर पहिराई॥
दुर्योधन भाष्यौ सब वचना। ज्यहि विधि भई युद्धकी रचना॥
सुनि रानी बोली यह बानी। मेरी बात नाथ नहिं मानी॥
भीषम द्रोण कर्ण धनुधारी। जूझेउ खेत तबहिं बल भारी॥
गिरे शल्यसुत बन्धु गिराये। खेत छांड़ि काहे तुम आये॥
जैये तहां जहां पितु आवै। जौलों खोज भीम नहिं पावै॥
कछुक आनि मिष्टान्न जेंवाये। दीन्हपान कछु विनय सुनाये॥
अब यहि समय भूप सुनि लीजै। साहस छोंड़ि शोच नहिं कीजै॥
चारिहु युग ऐसो चलि आई। कर्म लिखा सो मेटि न जाई॥
दुर्योधन सुनि कीन्ह्यो गवना। आये तुरत पिताके भवना॥
चरण परसि ठाढ़े भे आगे। कौरवपति सों कहिवे लागे॥

दुर्योधन सबविधि कह्यो, जूझिगिरे सबखेत।
अब उपाय का कीजिये, बूझतहौं सो हेत॥

सुनत शोच धृतराष्ट्र कीन्हो। करिकरुणाकछुकहिबोलीन्हो॥
विधि परपञ्चजानि नहिं जाई। व्यास सरोवर रहो छिपाई॥
गान्धारी भाष्यो नव बैना। देखों पुत्र खोलि तोहिं नैना॥
जबते पति देखो मैं आंधो। तबते नैन पटी हम बांधो॥
नमन नग्नि सुत आगे आवो। पाछे व्यास-सरोवर जावो॥

एक बसन सों जंघ छिपाये। दुर्योधन तब आगे आये॥
पटी खोलि गान्धारी हेरी। हे सुत बात न राख्यो मेरी॥
वज्र शरीर भयो सुत तोरा। उबरा जंघ दोष नहिं मोरा॥
अस कहि पटी नैन महँ दीन्हे। करुणासहित विदा सुत कीन्हे॥
चलि निशंक दुर्योधन कैसा। परमहंस छाँड़त गृह जैसा॥
मातु पिता छाँड़े निय भवना। लैकर गदा पंथकहँ गवना॥
तके सरोवर न्टप तहँ आये। फूले कमल सुवास सुहाये॥

चक्रवाक सारस युगल, निर्मल जल गम्भीर।
मधुकर गण डोलत सदा, बहु मरालको भीर॥

पिछले पांव धँसो जल राजा। पांडव खोज मेटिबे काजा॥
यहिविधित्टषितनीरतकि आये। झलकत मुकुटदेखि तेहिपाये॥
जल थंभन विद्या कर कैसे। बैठो जादू भवन महँ जैसे॥
लक्ष्मीकृपा बहुत विधि कीन्हा। कनक पलँग सोवनकहँ दीन्हा॥
दुर्योधन कीन्हें विश्रामा। पांडु गये सब अपने धामा॥
जयकरिविजयभवनकहँकीन्ही। कुन्ती हाथ आरती लीन्ही॥
रणमहँ इन मारे कुरुनाथा। करै आरती तेहि निजहाथा॥
कही भीम सब बन्धु सँवारे। दुर्योधनकहँ मैं नहिं मारे॥
धर्मपुत्र कह भो रण घोरा। मोसन परेउ शल्य सों जोरा॥
अर्ज्जुन कही मातु सों बैना। कुरुपति हम नहिं देख्योनैना॥
नकुल कही नहिं जान्यो भेवा। तब कुन्ती बूझा सहदेवा॥
मन्त्री मन्त्र विचारो मनमें। कुरुपतिबच्यो कि जूझ्योरनमें॥

हाथ जोरि सहदेव कह, मातु सुनहु यह बैन ।
जीवतहै दुर्योधन, गिरत न देख्यो नैन ॥
कुन्ती कहो सुनहु हरि पारथ । तुम भारत रण कियो अकारथ ॥
कुशल गये दुर्योधन धामा । तौ सेना मारे केहि कामा ॥
पांचों बन्धु कृष्ण सँग धाये । दुर्योधनहिं वधे यश पाये ॥
तब कुन्ती यह बात जनाई । कहो कृष्ण मेरे मन आई ॥
पांडव तबहि चले हरि साथा । खोजत खोज फिरैं कुरुनाथा ॥
अन्धकार भा जात न चीन्हा । बारि मशाल हाथ कै लीन्हा ॥
जूझे बीर खेत मों परे । झलकैं मुकुट जरायन जरे ॥
कहूं मुण्ड कहुँ देखे रुण्डा । कहूं गयंद परे कहुँ शुण्डा ॥
कहूं तुरङ्गम परे अरथ खर । कहूं चरण कहुं परे विकरकर ॥
रुधिरपान करि योगिनि नाचहिं । जंबुक काकलोथि बहु खांचहिं
कुरुपति खोज करत नहिं पावत । देखो पंथ व्याध इक आवत ॥
भीमसेन पूंछे तब बैना । दुर्योधन को देख्यो नैना ॥
कहो व्याध करजो रिकै, भीमसेनसों बात ।
वीर एक देख्यो हतो, व्यास सरोवर जात ॥
गदा हाथ शिर मुकुट सुहाये । वीर एक हम देखन पाये ॥
सुनों भीम मनमहँ अनुमाने । निश्चय कै दुर्योधन जाने ॥
पांचो बन्धु कृष्ण सँग आवत । आगे व्याध पन्थ दिखरावत ॥
व्याससरोवर निकटहि आये । चरण चिह्न तहँ देखन पाये ॥
धरतपांव दुर्योधन जहँवां । फलत कर्णा धरणिमहँ तहवां ॥

विधि बिरोध काहू नहिं होई। लच्छण भयो कुलच्छण सोई।
यहिबिधि खोज करतचलिआये। व्यास सरोवर देखन पाये॥
अगम गँभीर सरोवर कैसो। उठै तरङ्ग तरङ्गिनि जसो॥
कृष्णदेव तब आप बखानत। जलथम्भन नीको न्टप जानत॥
धर्मराजको भा अन्देशो। जलमहँबलकछुचलै न केशो॥
अब उपाय करिये प्रभु कैसो। अवहीं निकरै कुरुपति जैसो॥

महावीर दुर्योधन, कहैं आपु भगवान।
अबहीं निकरत नीरसों, भीमहांक सुनि कान॥

भीमसेन आये तब तीरा। दिये हांक दुर्योधन वीरा॥
निकरो न्टप बूड़ो केहि काजा। कुरुवंशहि लावत हो लाजा॥
सुनते हांक क्रोधकै भारी। उठिकर गदा गहो सम्भारी॥
पकरि बांह लच्छो बैठाई। पुनि राजाको बहुत बुझाई॥
जलसों निकरि युद्ध मतिकरिये। मेरो कहा चित्तमहँ धरिये॥
दूजी हांक भीम जब दीन्हो। कटुक वचनकहिबे बहु लीन्हो॥
सुत बांधव रण सबहि जुझायो। आपु भागिकै जीव बचायो॥
भारत भूमि धरायो नामा। जलमोंआनिछिप्योकेहिकामा॥
भीम हांक सुनि कुरुपति कैसो। द्रुम दावा लागो पुनि जैसो॥
गहिकर गदा उठन जब चह्यो। आगे ह्वै कमला कर गह्यो॥
हृस्थिर रहो सुनो मम बैना। कालहि देहुँ सम्पति औ सैना॥
दिवस अठारह भई लराई। तीनिलोक फिरिकै हमआई॥

तोसम लक्षणवन्त नहि, करयो कन्ध जेहि बास ।
तीन लोकमहँ ढूंढ़िकै, फिरि आइउ तव पास ॥
कालहि दिवस जो तेरे मनमें । जीति सकै नहि पाण्डवरनमें ॥
ताकारण सुनु तोसों कहिये । आजु धीरह्वै जलमहि रहिये ॥
सुनिकै नृप कमलाके वयना । पौढ़िपलँगपरकीन्हे उशयना
तीजी हांक भीम जब मारो । निकरुनिकरुकुरुनाथपुकारो ॥
छांड़त हो कत चलो धर्मा । होइहि सोइ लिखा जो कर्मा ॥
महागर्व तुम सबदिन कीन्ह्यो । निकरतनहींभाजिजललीन्ह्यो ॥
धिक जीवन जल में है तेरो । इतनी बात अङ्गवत मेरो ॥
अपने बलते गनत न आना । अब काहे तुम तजत गुमाना ॥
मारहुँ गदा फाटि जल जैहै । गहिकै केश अवहि लै ऐहैं ॥
सुनत वचन दुर्योधन जरयो । बरत अग्नि मानहुँ घृत परयो ॥
क्रोधित उठि कौरवपति जबहीं । गहो बाहँ कमला पुनितबहीं ॥
बंधु बैर को सकहि निहारी । पांयन ठेली लक्ष्मी डारी ॥
गदापाणि दुर्योधन, ऊपर पहुँच्यो आइ ।
धर्मराज तब दौरिकै, मिले हृदय महँ लाइ ॥
धर्म युधिष्ठिर के मन आई । चलि सिंहासन बैठिय भाई ॥
सब मिलि हम सेवा तव करि हैं । आज्ञा सदा शीशपर धरिहैं ॥
पांच गांव अजहूं मोहि दीजै । अपनो छत्र सिंहासन लीजे ॥
यह सुनि दुर्योधन हँसि भाखे । धर्मराज तुम धर्महि राखे ॥
ऐसे समय न छांड़ो टेका । करिहौं आजु एकको एका ॥

सुई अग्र देहौं नहिं दाना। करहुँ युद्ध भारत मदाना॥
धर्मराज कह सुनिये भाई। तेरे मन ऐसी जो आई॥
दोउ बन्धु अब हमसों लीजै। तीनि तीनि सम ता रणकीजै॥
हँसि दुर्योधन भाष्योबानी। भाई तुम यह बात न जानी॥
अर्ज्जुन भीम लेउँ जो दोऊ। बांधत तुम्हैं न राखत कोऊ॥
धर्मराज तब कहा बुझाई। एक एकते उचित लराई॥
दुर्योधन बोले परिमाना। राजा राजहिं युद्ध समाना॥

कह्यो कृष्ण कुरुनाथसों, यहहै उचितविचार।
लरौं भीमसों खेतमहँ, जयदेइहि करतार॥

दुर्योधन क्रोधित ह्वै भाष्यो। कबते भीम छत्रशिरराख्यो॥
कही कृष्ण तुम बात न पाई। चारिहुयुगहियहीचलिआई॥
भुज बलते वसुधा कर भोगा। ज्ञानीं ह्वै सु करहि पुनि योगा॥
भीम महाबल जीते भारथ। लई राज अपने पुरुषारथ॥
तब भीमहिं राजा करि लेखो। धर्मराज नावहिं शिर देखो॥
पांचहु बन्धु कृष्ण मुख ताके। सब दिन रहत भरोसे जाके॥
धर्मराज जब शीश नवैहैं। पलमों भीमसेन जरि जैहैं॥
तब श्रीहरि रचना यह कीन्ह्यो। लै हरिवंश भीमकहँ दीन्ह्यो॥
कृष्णदेव यह रचनाठाना। ताको दुर्योधन नहिं जाना॥
श्रीपति कही विलम्ब न लावहु। धर्मराय अब शीश नवावहु॥
भीम बगल हरिवंशहि राखो। सो तकि धर्म युधिष्ठिर भाखो॥
भूप भीमकहँ शीश नवायो। जयध्वनिकरिहरिशंखबजायो॥

दुर्योधन कह भीमसों, क्रोधवन्त ह्वै बैन ।
गदायुद्ध हम तुमकरहिं, सब मिलि देखें नैन ॥
गहिकै गदा दोउ भे ठाढ़े । क्रोध अनलउर अन्तरबाढ़े ॥
मण्डलफिरहिंघातदोउ ताकहिं । कोउ कोऊकहँ यतननपावहिं ॥
रोंकत गदा गदासों टारत । एकहि एक क्रोध कै मारत ॥
गदा प्रहार शब्द भा कैसे । छूटत वज्र इन्द्र कर जैसे ॥
सरसनिरखि कहि जात न काहू । पण्डित गदा युद्ध बल बाहू ॥
धावत गदा हांक दै हांकत । पद के भार मेदिनी कांपत ॥
कुरुपति भाष्यो भीम सँभारो । आजु जानिबो तेज हमारो ॥
कही भीम सब जानत भाई । गालमारिजनिकरहु बड़ाई ॥
मोंते आजु परयो है कामा । देखो को जीते संग्रामा ॥
दुर्योधन तब क्रोधकै, घाल्यो घाव प्रचण्ड ॥
गदा रोंकि सम्भारिकै, भीममहा बलवण्ड ॥
कोपि भीम तब गदा प्रहारा । महावीर कुरुनाथ सँभारा ॥
दोऊ वीर जोरते झरपत । महावीर मन नेकु न डरपत ॥
यहि विधि करत युद्धकी करणी । भूमिपाल डोलति है धरणी ॥
महामत्त नगु उरझो दोऊ । प्रलय युद्ध देखत सब कोऊ ॥
गदा गदा सों लागत जबहीं । निकरत अग्निभभूकातबहीं ॥
गदा हाथ रण शोभा पावत । पक्ष सहित पर्वत अनुधावत ॥
दोऊ जुरे युद्ध महँ कैसे । सतयुग महँ बलि बांध्यो जैसे ॥
चढ़े विमान देवगण देखत । अपने मन अचरजकरि लेखत ॥

गौर श्याम दोउ सोहैं कैसे। कुंकुम अरु कज्जलगिरि जैसे ॥
कलबलकरतभीमर्मफिरिआवत। गदा पवनते पच्छि उड़ावत ॥
जुरे भीम दुर्योधन कैसे। प्रद्युम्नहि शङ्कर रण जैसे ॥

अयुत नाग बल दुहुँन के, महावीर परचण्ड।
मारत गदा जु कोपि कै, ज्यों टूटत यमदण्ड ॥

लागत गदा दोउ के तनमें। धमकत घाव शब्दजनु घनमें ॥
चञ्चल चपल फिरत दोउ बांको। घूमत मनहुँ कुम्हारकी चाको
दोऊ वीर युद्ध मन लाये। तीरथ फिरि बलभद्रहि आये ॥
देखो तहां महारण घोरा। परो भीम दुर्योधन जोरा ॥
हलधर विहँसि कही यह बाता। कुरुपति सहित गदाके घाता।
बल कछु अधिक भीमके तनमें। हार जीत नहि देखत मनमें ॥
अजहूँ प्रीति करहु दोउ भाई। केहि कारण अब रचहु लराई ॥
करिकै गदा ऊर्ध्व परिहारन। कोउ न सकहि काहुको मारन ॥
अजहूँ दूनहुँ प्रीति विचारहु। जो मानहु हितवचनहमारहु ॥
युद्ध घात दोऊ अरुझाने। हलधरवचनहृदयनहिं आने ॥
कहि बलभद्र कियो तब गवना। कुरुक्षेत्र परिरच्छक कवना ॥
कृष्ण भीम कहँ जंघ बताई। निरखि वृकोदर घात लगाई ॥

भीमसेन तब क्रोधकै, मार्‍यो घाव बचाय।
दोउ जंघ भङ्गनभयो, पर्‍यो धरणिपरआय ॥

गिरि कुरुपति धरणीमें ऐसे। काटत मूल परत द्रुम जैसे ॥
पूर्व वैर मनमहँ सुधि आई। भीमसेन तब लात उठाई ॥

हाहा शब्द युधिष्ठिर कीन्हा। रहहु भीम कहिवे अस लीन्हा ॥
अष्टादश चोहिणी भुवारा। भनत गोविन्द जानुसवसारा ॥
कृष्ण सहित भाष्यो सवराजा। चरणप्रहारकरत क्यहि काजा ॥
करते चरण समेटन कीन्ह्यो। बैठ सँभारि कहै तव लीन्ह्यो ॥
चलो धर्म्म न भीम विचारयो। गदा घाव जंघन पर मारयो ॥
कही भीम दुर्योधन वीरहिं। जादिन हरो द्रौपदी चीरहिं ॥
तादिन मैं सवसों प्रण भाख्यों। तोरयों जंघ प्रतिज्ञा राख्यों ॥
श्रीपति कही कुरूपति राजहिं। जबहम गये वसीठी काजहिं ॥
तादिन मेरो कहा न कीन्हा। कटुक वचन मोसे कहि दीन्हा ॥
सेना संपति सकल गँवायो। ज्यहि चणकरगहिमोहिंउठायो ॥

दुर्योधन कह कृष्णसों, मैंहौं जन्तु समान।
हमैं लगावत दोष अब, तुम प्रेरक भगवान ॥

जो तुम रच्यो भयो सो स्वामी। मोहिं दोष नहिं अन्तर्य्यामी ॥
श्रीपति सुनत हृदय सुखमाना। धर्म्मराज तब आपु बखाना ॥
कुरुपति कही वचन परमाना। सुनिमाधव तव कीन्हपयाना ॥
पांचौ वन्धु कृष्ण सँग लीन्हे। भारतजीति भवन शुभकीन्हे ॥
कृष्णदेव सों कुन्ती भाखो। दीनदयालु भक्तप्रण राखो ॥
अस कहिकै आरती सवाँरी। प्रथम कृष्णके शीश उतारी ॥
धर्म्मराज सों माधव भाखो। मेरो मन्त्र सदा तुम राखो ॥
मोकहँ मति ऐसी वनि आई। चलो साथ तुम पांचौ भाई ॥

आजु राति बसिये नहिं भवना । नन्दिघोष चढ़ि कीजै गवना ॥
असकहि पांचौ बन्धु चढ़ाये । योजन एक भवन तजि आये ॥
अर्ज्जुन हृदय शोच भा भारी । का रचना यह कीन्ह मुरारी ॥
सुमिरण शम्भुनाथकर कीन्हा । शंकर आय दरश तबदीन्हा ॥

श्रीहरि भाष्योशम्भुसन, हमसब कीन्हो गौन ।
आजु राति द्वारे रहो, द्वारपाल ह्वै भौन ॥

गङ्गाधर भाष्यो परतच्छक । आज द्वार रहिहैं हमारच्छक ॥
जो विधि रची होय पुनि सोई । द्वारे जान न पावै कोई ॥
लै पाण्डव माधव पगु धारे । शूलपाणि भे ठाड़े द्वारे ॥
अश्वत्थाम मनहिं अनुमानी । गिरे भूप यह हियमहँ जानी ॥
मध्य प्रहर निशि आयो तहँवां । जंघ भङ्ग दुर्योधन जहँवां ॥
बैठे कर सों गदा फिरावत । जंबुकगीधनिकटनहिं आवत ॥
गुरुसुत दूरिहि ते कहि कारण । अमर सदा सककोउ न मारण ॥
अजहूं कहा हमारो कीजै । पाण्डव मारि जगत यशलीजै ॥
सुनि बोले तब द्रोणी ऐसा । राजाबिनु रण कीजै कैसा ॥
गन्ध रुधिर लै टीका कीन्हा । मैं राजा तुमकहँ करि दीन्हा ॥
मारि पांडवन पांचो भाई । वसुधा भोग करहु तुम जाई ॥

गुरुसुत भाषा क्रोध कै, दुर्योधन सों बैन ।
मारि पांडवन शीश लै, आनि देखावहु नैन ॥

ऐसो कहि पुनि आयो तहंवां । कृपाचार्य्य कृतवर्मा जहंवां ॥
तासों वचन कहै अस लीन्हो । दुर्योधन राजा मोहिं कीन्हो ॥

द्वौ जन मोरि सहायक हूजै । पाण्डव मारि राज्य अब कीजै ॥
वटतर तीनों मनहिं विचारत । एक उलूक काक बहु मारत ॥
द्रोणी कहै देखिये नैना । बूझो शत्रुहि को बल रैना ॥
चलौ तुरत जाइय यहिकारण । दिवस न सकौं पांडव न मारण ॥
यह कहिकै तीनों जन आये । द्वारे दरश शंभुके पाये ॥
गढ़ चहुँ फेर शूल है रक्षक । दरवाजे शङ्कर परतक्षक ॥
कृतवर्मा तब कह्यो विचारी । जात कहां ठाढ़े त्रिपुरारी ॥
द्रोणी कहा रहहु तुम रक्षक । जैहौं निकट होइ परतक्षक ॥
अस कहिकै शङ्कर ढिग आये । कै प्रणाम तब गाल बजाये ॥
तब कृपालु हर भाष्यउ बानी । मांगो वर द्रोणी बड़ ज्ञानी ॥

द्रोणपुत्र यहि विधि कही, भीतर दीजै जान ।
गदा पर्व भाषा रचेउ, सबलसिंह चौहान ॥

इति गदा पर्व समाप्त ।

— —

सौप्तिक पर्व्व ।

अश्वनाथ बोल्यो यह वचना । मनमें समुझिकृष्णकीरचना ॥
द्वारे मारग जान न पैहो । गढ़हि फांदिकै भीतर जैहो ॥
द्रोणी कह शङ्करसों ऐसो । फिरत शूलत्यागहिस्वहिकैसो ॥
काढ़ि भस्म शङ्कर तब दीन्हा । जाहि शूल ते रक्षा कीन्हा ॥
कै.प्रणाम तब तुरत सिधाये । फान्दो गढ़ भीतर तब आये ॥
प्रथम गये द्रोणी चलि तहँवां । कीन्हे शयन द्रौपदी जहँवां ॥
बैठे चपरि हृदय पर कैसे । व्याध कुरङ्ग धरत हैं जैसे ॥
लैकै खड़्ग कण्ठ मों धरिहहुँ । कटिहौंशीश बिलम्ब न करिहहुँ ॥
कनकपलँग पर कीन्हे शैना । पांच पुत्र तब देख्यो नैना ॥
पांच बन्धुके पांचो जाये । रूप समान भेद नहिं पाये ॥
खड़्ग घाव तब द्रोणी कीन्हे । पांचौ शीश बामकर लीन्हे ॥
यहि अन्तर दासी सब जागीं । हाहा शब्द पुकारन लागीं ॥

जागि उठ्यो रनिवाससब, टेरत करुणा बैन ।
द्रोण पुत्र कर खड़्ग लै, लाग निपातन सैन ॥

चौंकि उठे पुनि सब अकुलाने । आपुसमें बहुते अरुझाने ॥
अन्धकार नहिं सूझै नैना । मारु मारु करि भाषें बैना ॥
भागि निकरि गढ़ बाहर जेते । कृतवर्मा कृप मारे तेते ॥

अन्धकार महँ कछु नहिं सूझत। अपन परार कोउ नहिं बूझत॥
गढ़ भीतर द्रोणी संहारे। निकरि चले कृतवर्मा मारे॥
भारत माहिं बचे हैं जेते। निशा युद्ध महँ जूझे तेते॥
निकरि द्रोण सुत बाहर आये। कृप कृतवर्मा देखन पाये॥
मारि पाण्डव कीन्ह्यो काजा। चलिये शीघ्र देखाइय राजा॥
बैठे खेत कुरूपति जहँवां। तीनिउ वीर गये चलि तहँवां॥
द्रोणी कही नृपतिसों बाता। पांचहु पाण्डवकीन्ह निपाता॥
हर्षवन्त होइ राजा भाख्यो। मेरी टेक द्रोणसुत राख्यो॥
धरे आनि शिर भूपति आगे। मुकुट ज्योतिसों देखन लागे॥

पांच बन्धुके पांच सुत, भूप निहारे नैन।
विस्मय करि भूपति कही, द्रोणपुत्रसों बैन॥

करुणा करि भाख्यो तबराजा। बालकबधकीन्ह्यो कहि काजा।
सूकभये दुख हृदय भुवारा। वंश चार कीन्हे हत्यारा॥
अस कहि प्राणतजे नृप जबहीं। भय उपजो द्रोणी जिय तबहीं॥
अर्जुन भीमसेन नहिं मारो। द्रुपदसुता के पुत्र सँहारो॥
कृतवर्मा जब चित्त विचारा। द्वारावती तुरत पगुधारा॥
भे आतुर द्रोणी चले तहँवा। उत्तर नर नारायण जहँवां॥
उदय प्रभात सूर्य भे जबहीं। लै पाण्डव हरि आये तबहीं॥
देखे सबै सैन्य संहारे। पांचो पुत्र तेउ गे मारे॥
करुणा करहिं द्रौपदी सरसे। आंसु नीर नैनन सों बरसे॥

अर्ज्जुन देखि अचंभव माना । द्रुपदसुता यहि भांति बखाना ॥
करुणाकरि पाञ्चाली भाखी । अब घटप्राण जाहि ना राखी ॥
पांच पुत्र करि बन्धु सँहारे । अनुचर सहित सैन सब मारे ॥
द्रोणिहि बान्धि तुरतही दीजै । ना तरु प्राणत्याग हम कीजै ॥
क्रोधवन्त अर्ज्जुन भयो, हांको रथ भगवान ।
बान्धिलैआवोंद्रोणसुत, यह प्रण किये निदान ॥
इति सौप्तिक पर्व समाप्त ॥

ऐषिक पर्व्व ।

यह सुनि रथहांको वनवारी ।क्रोध शोक पारथ धनुधारी ॥
ज्यहिपथ द्रोणीकियो पयाना । तापथ रथ हांको भगवाना ॥
सुनि रथशब्द द्रोणि उत ताके । जात कहां अर्ज्जुन तब हांके ॥
सोवत पांचो बालक मारे । आज जात सुनु किमि हत्यारे ॥
सुनि द्रोणी अपने मनजाना । आयु आनिअवसमयनिदाना ॥
जाको भेद न अर्ज्जुन जाने । सोई बाण कौन सन्धाने ॥
परबल श्रृङ्गी अस्त्रहि लीन्हे । पढ़िकै मन्त्र फोंक शर दीन्हे ॥
सुरगण देखि सबै भयमाना । प्रलय भये सबही मनजाना ॥

पाण्डव वंश न एक उवारौं। अर्ज्जुन सहित आज सब मारौं॥
हांक मारि द्रोणी शर छांटे। भूमि अकाश अशिते पाटे॥
छूट्यो वाण तेजसों कैसे। प्रलय अनलमह धावहिं जैसे॥
अर्ज्जुन निरखि अचम्भव माना। श्रीपतिसों यहिभांति बखाना॥

पारथ कह्यो विचारिकै, सुनु देवनके देव।
कोन नाम है वाणको, बूझि परै नहिंभेव॥

तब श्रीहरि यहि भांति बखाने। यह शर अर्ज्जुन तुम नहिंजाने॥
गुरु द्रोण वञ्चितनोहिं कीन्हे। पुत्र जानि वाको शर दीन्हे॥
त्याग किये यह रुद्री बाना। तीनि लोक जाको भयमाना॥
श्रीपति कहो सुदर्शन धावहु। पाण्डु वंश तुम जाय बचावहु॥
सात वाण तव अर्ज्जुन मारे। महाप्रबल शर टरत न टारे॥
वाण प्रताप सबन भय पाये। नन्दिघोष तजि यदुपति धाये॥
वदन पसारि लीन्हभगवाना। महावाण हरि उदर समाना॥
सहितयुधिष्ठिर सबहिं बचाये। गर्भ परीच्छित जरै न पाये॥
नाग पाश तब पारथ लीन्हे। क्रोधित द्रोणिहिंबन्धन कीन्हे॥
तब श्रीपति रथ ऊपर डारे। चले तुरत भवन पगुधारे॥
करुणा करति द्रौपदी नारी। आइ गये पारथ धनुधारी॥
अश्वत्थामांहिं कीन्हे ठाढ़ा। छूटे केश कुबंधन गाढ़ा॥

तनुप्रस्वेद विगलितवदन, चितवनि नीचो नैन।
भीमसेन कर खड्ग लै, क्रोधित बोलै बैन॥

अरे मूढ़ काटौं अब शीशा। द्रौपदि सुतन वैर लै ईशा ॥
द्रौपदि देखि दयाचित आई। तब माधवसन भाष्यो गाई ॥
विप्र वधेकर दूषण भारी। बन्धन छोड़ि देहु वनवारी ॥
जूझे पुत्र फेरि नहि पैहौं। द्विजहत्या परलोक नशैहौं ॥
सो सुनि हरि बहुते सुख माना। धन्य द्रौपदी आपु बखाना ॥
शीश चोरि श्रीहरि मणिलीन्हे। पाछे छोरि द्रोणसुत दीन्हे ॥
भारत रणमहं जूझे जेते। सद्गति कीन्हि धर्म्मसुत तेते ॥
पांच बन्धु श्रीपति संगलाये। देखन बुद्धिचक्षु पहं आये ॥
बुद्धिचक्षु कछु कहिबे लागे। सबै कृष्ण पांडवके आगे ॥
सब मिलि भीम सराहत तोको। अंक मालिका दीजिय मोको
हरि रचि तुल्य वृकोदर कीन्ह्यो। लोहक भीम आगु लै दीन्ह्यो
अन्धभूप तब भुजा पसारे। मिलत समय चूरण करि डारे ॥
भाष्यो भीम अंधबल भारी। तुम रक्षा कीन्हे बनवारी ॥

गन्धारी सबही मिलै, मधुर बन को भाखि।
बहुत भांति परबोधि करि, समाधान करि राखि ॥

राजहि कहि गंधारी रानी। हरिरचना कीन्हो यह जानी ॥
दिवस अठारह भा महभारथ। इकशत पुत्र सैन्य पुरुषारथ ॥
सो संहार सकल हरि कीन्हा। तेफल लेहि शाप हमदीन्हा ॥
हलधर सहित सकल परिवारा। एक दिवस सब हो संहारा ॥
क्रोधित होइ शाप जो दीन्हा। हंसे कृष्ण रिस नेकु न कीन्हा ॥
पुरी हस्तिना कीन्ह्यउ गौना। व्यास देव भाष्यो यह रौना ॥

पुरमें वन्दनवार बंधाये। अति आनंदमय शोभा पाये॥
नट नाचत गायन सब गावत। वेद पुराणहिं विप्र सुनावत॥
कनक कलश गङ्गाजल धरयो। व्यासदेव घट आगे करयो॥
द्रुपद सुता अरु धर्म नरेशहिं। गांठिजोरकीन्हो अभिषेकहिं॥
उत्तम वसन आनि पहिराये। श्रीपति सिंहासन बैठाये॥

दीन्ह्यो मुकुट सु शीशपर, मनहु उदित भे भान।
जय जय भाष्यो देवगण, छाये स्वर्ग विमान॥

यदुपतितिलक आपुकरलीन्ह्यो। व्यासदेव ध्वनिवेदहिकीन्ह्यो
भीमसेन तब चामर ढारो। अर्ज्जुन छत्र शीशपर धारो॥
भूप युधिष्ठिर हरिसों भाखो। दीनबंधु अपनो प्रण राखो॥
भारत तुम जीत्यो जगतारण। कृपाकरोमोहिंजगतउधारण॥
प्रभुतुम तीनिलोकके स्वामी। जीव जन्तु सबके उरगामी॥
विप्र सुदामा दारिद भञ्जन। केशीकंस अघासुर गंजन॥
यह सुनिके श्रीपति सुखमान्यो। धर्मराय सों आपु बखान्यो॥
तुम हौ धन्य धर्म अवतारा। परमभगत जानत संसारा॥
यहि अन्तर पुरवासी आये। दिये भेंट अरु शीशनवाये॥
सब संसार सुखी भा भारी। राजा धर्मराज अधिकारी॥
प्रजालोग सबकरहिं अनन्दा। जिमिचकोरपावहिंनिशिचन्दा॥

द्रुपदपुत्र मन्त्री भये, पकरे भक्ति निदान।
सबलसिंह चौहान कह, भक्तिवश्य भगवान॥

भारत कथा सुनै मनलाई । ताके निकट पाप नहिं जाई ॥
जो फल सब तीरथ असनाना । जो फल कोटिन कन्यादाना ॥
जो फल होइ शरणके राखे । जो फल सदा सत्यके भाखे ॥
जो फल हो परमारथ कीन्हे । जो फल पिण्ड गयाके दीन्हे ॥
जो फल रणमां प्राण गंवाये । सो फल है यह कथा सुनाये ॥

भारत सुने अनेक फल, मोसे कहो न जाय ।
अनायास वैकुण्ठ लहि, दरश देहिं यदुराय ॥

सौप्तिक—ऐषिक पर्व समाप्त ।

स्त्री पर्व्व ।

जन्मेजयते कहतहैं, वैशम्पयन बखान ।
नारिपर्व भाषा रची, सबलसिंह चौहान ॥

सुनु राजा अब कहौं बखानी । जाते होय पापकी हानी ॥
सञ्जय देखो मरे भुवारा । विस्मय मान्यो मनहिंमझारा ॥
जाइ तब धृतराष्ट्रके आगे । पुत्र मरण विस्मय अनुरागे ॥
जब धृतराष्ट्र सुनी यह बाता । मानो परी वज्रकी घाता ॥

रोदन करि तब अन्धभुवारा। हा पृथ्वीपति पुत्र हमारा॥
दुर्योधन सुत रण संहारा। सौवों पुत्र जे हते हमारा॥
एक भीम सब रणमहँ मारी। का कीन्हेउ करतार खरारी॥
हते पुत्र सेवकसमुदाई। कोउ न अपनो देत दिखाई॥
निष्फल है अब जियन हमारा। पुत्र पौत्र बिन जग अँधियारा॥
हा हा पुत्र पुत्र करि राई। रोवै कुरु भूपति दुख पाई॥

दुःशासन अरु कुरुन्पति, सौ बान्धव लै सङ्ग।
जूझे रणमहँ सबै दल, भयो चित्तमहँ भङ्ग॥

हा हा भीषम पिता हमारा। हाय द्रोण हा कर्ण भुवारा॥
जो जो गुणहै पुत्र तुम्हारा। सो सुमिरे तनु जरत हमारा॥
है सुतशोक महा संसारा। कत गुण सुमिरौं भूप तुम्हारा॥
राज पाट सब परा तुम्हारा। कनक पलँगके सोवन हारा॥
कहां पुत्र दुर्योधन राऊ। परा सुदेश सकल भुइँ गांऊ॥
वृथा काल सुत शोगहि पाये। वाम विधाता भा दुखदाये॥
कर्मदोष दुख लिखा हमारा। सो अच्छर को मेटनहारा॥
परिचर्या करिबो हम काही। पुत्र शोक हिरदयमा आही॥
वृद्ध अवस्था विधि दुख दीना। जैसे पक्षी पङ्खविहीना॥
सब पुरुषारथ पुत्र हमारा। का रचना कीन्हों करतारा॥

विना नयन तनु ज्यों अहै, वासर ज्यों विनुभानु।
चन्द्र विना जिमि रैनि है, दीपक विनु गृहजानु॥

त्यों बिन पुत्र वंश है ऐसा। कुल को नाम नाश भा तैसा॥
परशुराम नारद समुझाये। सुतके मनते बचन न भाये॥
हमैं छांड़ि सुत कहां सिधाये। गर्ब्बवन्त ह्वै प्राण गंवाये॥
सुनी मृत्यु दुर्योधन केरी। जीवन आश नहीं अब मेरी॥
भीषम कर्ण और भगदन्ता। द्रोणगुरु को भयो निहन्ता॥
महाविलाप अन्ध नृप करई। संजय तबै बात अनुसरई॥
राजा शोच तजौ तुम यातें। अब तुम सुनौ ज्ञानकी बातें॥
राजा अहो परम सज्ञाना। जानौ सब श्रुत शास्त्र पुराना॥
जन्म मृत्यु दोनों सख्याता। दोनों रहैं पिण्ड महँ ताता॥
जन्म मृत्यु मायाते धारण। समुझौ मन रोवत केहि कारण॥

जन्म मृत्यु माया सबै, रोवत हौ केहि काज।
सञ्जय तहँ समुझावहीं, अन्ध वृद्ध कुरुराज॥

सञ्जय नाम हते इक राजा। पुत्र शोकते भयो अकाजा॥
सुत हित चाहत प्राण गँवाये। तब नारद मुनि जाइ बुझाये॥
जीवन मरण लोक दुखजाना। कर्म्म फलित भा प्राप्त प्रमाना॥
सब माया जानो तुम नरपति। केवल सबै कर्म्मकी यह गति॥
पुत्रहि केर समुझि मन दोषा। हृदय माहिं करिये सन्तोषा॥
काहूकेर वचन नहिं माना। साधनवचनसुन्यो नहिंकाना॥
दुःशासन मन्त्री सब जाना। ताते मन्त्र गने नहिं जाना॥
शकुनी कर्ण मन्त्र परमाना। काहू केर कहा नहिं माना॥

भीषम केर वचन नहिं राखे। बहुतै नौति धर्म उन भाखे ॥
गन्धारी के वचन न माना। तेहि अपराध तजे तिन प्राना ॥

सदा पाप मनमें वसै, नाहिन धर्म विचार।
सोइ पापते भूप सुनु, जूझे पुत्र तुम्हार ॥

व्यास केरि वाणी नहिं मानी। अतिशय अहङ्कार मतिठानी ॥
बहुत प्रकार कृष्ण समुझाये। पै विरोध वाके मन भाये ॥
चत्री सब कीन्हें चयजानी। कृष्ण केरि बाचा नहिं मानी ॥
तुम नृपसुतवशकछुनहिंकहेऊ। पापते पुत्र नाश ह्वै गयेऊ ॥
ताते शोक तजहु तुम राई। बहुत प्रकार मन्त्र समुझाई ॥
सुनत कछु अधीर भा राजा। महा शोक पुत्रनके काजा ॥
छांड़े भूप ऊर्ध्व कर श्वासा। पुत्र शोकते भयो उदासा ॥
रोवै धीर धरै नहिं राई। तबहिं विदुरराजहिं समुझाई ॥
सुनिकै वचन धीर भयो राजा। कीन्हेउ शोक पुत्रके काजा ॥
उठो नरेश शोच नहिं करिये। मेरे वचन हृदय में धरिये ॥
काल विवश है सब संसारा। तीन लोक वश मृत्यु भुवारा ॥

जानै योग्य अयोग्य तब, जानै सब संसार।
महाबीर चत्री जिते, सबै होत संहार ॥

वृद्ध युवा अरु बालक आहीं। राजा प्रजा जिते जगमाहीं ॥
सबही मृत्यु, सत्य प्रचराना। जानहु राजा परमनिधाना ॥
सुनिनृपबातविदुर मुखजबहो। भयो मौन धृतराष्ट्रकतबहीं ॥
तबहुँ होत हृदय नहिं धीरा। मूर्च्छितभये अन्धनृप वीरा ॥

तबहिं व्यास सञ्जय इक साथा। विदुर सहित बोधे नरनाथा॥
शीतल नीर वदन मैं दीन्हा। तबहीं हृदय चेत नृप कीन्हा॥
यहि प्रकार तब चेत जनाये। रोदन करत कहत मन लाये॥
धृग यह जीवन जगत हमारा। पुत्र सुशोक सहै को पारा॥
महा विलाप धीर नहिं धरहीं। पुत्रशोक पुनिपुनि उर करहीं॥
बार बार रोवत है राई। हाहा पुत्र परम सुखदाई॥

धृतराष्ट्रक रोवें तहां, पुत्र शोक कर हेत।
छण इक होत सचेत नृप, छण इक होत अचेत॥

बहुविधि व्यासकहतसमुझाई। तबहूं धीर धरत नहिं राई॥
विदुर और सञ्जय समुझावैं। काहुके वचन हृदय नहिं आवे॥
महा शोक करि रोदन करहीं। पुत्रनाम पुनि पुनि उच्चरहीं॥
तबहिं व्यास मुनि कह समुझाई। मन्त्र हमार सुनो हो राई॥
रोदन केहि हित करहु भुवारा। यह सब देखनको उपकारा॥
मैं इक समय इन्द्रपुर गयेऊं। नारदआदिमुनिनसगलयेऊं॥
तिहि अवसर वसुधा तहँजाई। विधि सुरपतिसों कह्योबुझाई॥
कहो देव मेरो उद्धारा। मम ऊपर भवभार अपारा॥
पूर्व विष्णु जे दैत्य संहारा। ते सब भयो चत्रि-अवतारा॥
भारी पाप सहै नहिं पारा। यहै निवेदन सभा-मँझारा॥
रोदन करि धरणी तब कहई। सकल देवता साखी अहई॥

तहां विष्णु हँसिके कहेउ, सुनु भुव वचन हमार।
मन चिन्ता त्यागन करो, करिहौं काज तुम्हार॥

हैं निज वंश देवता जेते। जगतमाहिं जन्मे लै तेते॥
कुरुक्षेत्र भारत सञ्चारा। तहां होय सबको संहारा॥
जाहु पुहुमि अपने अस्थाना। देव विचारि कहो भगवाना॥
वसुधा मृत्यु लोक कहँ आई। तबहि विचार करै यदुराई॥
सो दुर्योधन पुत्र तुम्हारा। कलियुग केर अहै अवतारा॥
महाक्रोध चञ्चल है अङ्गा। सो कलियुग आयसु करि भङ्गा॥
सो बान्धव अरु कर्ण भुवारा। भारत हेत भयो अवतारा॥
हम सब कथा कही तुव पासा। भयो युद्ध तेरो सुत नासा॥
ता कारण सब भयो सँहारा। शोक तजहु अब अन्ध भुवारा॥
यह सब कीन्हे अन्ध भुवारा। पृथ्वीकेर उतारेउ भारा॥

यहि प्रकारते व्यास तब, कहेउ बहुत समुझाय।
धर्मरूप तुम अन्धरूप, त्यागहु शोक उपाय॥

धर्मस्वरूप युधिष्ठिर राजा। ताते होय तुम्हारो काजा॥
पांचो बान्धव पाण्डुकुमारा। सो जानो शत पुत्र हमारा।
वे पांचो तुव सेवा करिहैं। आज्ञा तोरि सदा शिर धरिहैं॥
मोरे वचन सत्य सुनु राजा। तुम्हरे क्रोधते पाण्डु अकाजा॥
राखहु नृपति आपने पासा। दासभाव मनकर हुलासा॥
पाण्डवकेर करो कल्याना। सुनि तब राजा करै बखाना॥
व्यास मुनीश्वर अग्र विधाना। सुनो सबै तुम अब दै काना॥
पुत्रशोक तनु जरै हमारा। धीर्य धरों सो कौन प्रकारा॥
तौ तुव हेतु बात हम माना। पुत्रशोक त्यागे हम जाना॥

यहिप्रकार शान्तनु नृपभयेऊ। तबहिंव्यासऋषितपहितगयऊ॥
शीतल जल राजाको दीन्हा। व्यास वचन सुनिधीरजकीन्हा॥

राजाको समझाइकै, से मुनि अन्तर्द्धान।
व्यास वचनते अन्धकहँ, मनमें उपजो ज्ञान॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

सुनु राजा तब संजय कहई। दोउ कर जोरि चरण गहि रहई॥
कछुक निवेदन अहै हमारा। आज्ञा यद्यपि देहु भुवारा॥
गन्धारीकहँ बात सुनावो। अन्तःपुरमें खबरि जनावो॥
राजा सुनत दीर्घ लै श्वासा। मूर्छित गात भूमिपरगासा॥
तबहीं विदुर उठायो राजहि। रोदन काह करौ बेकाजहि॥
तब धृतराष्ट्र कहेउ समुझाई। आनु विदुर सब इस्त्री जाई॥
वधुन समेत सङ्ग गन्धारी। सब लावहु यह कहा विचारी॥
चलौ सङ्ग तुमहूं हम जैहैं। सबहीको अबहीं लै ऐहैं॥
यह कहि रथहि चढ़े तबराजा। चले वधुनके आनहि काजा॥
गये तुरत तब महलमँझारा। महाशोकते अन्ध भुवारा॥

महादुखित रोदन करत, कीन्हेउ महल प्रवेश।
सब जूझे कुरुक्षेत्रमहँ, सबहुन सुना सन्देश॥

रोदन करत भयो आछाता। मानो परी वज्र की घाता॥
घर घर रुदन नगरमें ठयेऊ। नर नारी सब रोवत भयेऊ॥

देवन जे देखी नहिं नारी। परीं भूमि लोटैं सुकुमारी॥
विकलवन्त रोवैं सब नारी। छूटे केश न देह सँभारी।
एक एक पट पहिरे अहई। राजवधू दुःखी जे रहई॥
घरते बाहर चलीं पुकारी। विकल सबै कुरुखेत सिधारी॥
गृहते चलीं पुकारत जाई। मनहुँ सिंहिनी पतिन गँवाई॥
एकको गहे एक धरि रोवै। एकको हाथ हाथ पर जोवै॥
कन्या पुत्र गोदते डारहिं। परी भूमिमें सबहिं पुकारहिं॥
कञ्चन पुतरी मनहुँ संभारी। रोवत लोटत भूमि मँझारी॥
हा पति देव प्राणके प्यारे। हमहि छांड़ि तुम कहां सिधारे॥
प्यारे हमहिं सङ्ग ले लीजै। इस विपत्तिमें दगा न दीजै॥
यह रणभूमि महादुखदाई। कोउ न अपनो देत दिखाई॥

आर्तनाद भयो नगरमहँ, सब तिय भई अनाथ।
सबैं वधू तहँ रोवतीं, धरे हाथपर हाथ॥

सासु श्वशुर सब एकहिं साथा। रोवहिं सबै धुनै महि माथा॥
चलीं नगरके बाहर तहंवां। भयो युद्ध कुरुखेतहि जहंवां॥
सहित अन्ध नृप औ गन्धारी। आई सब कुरुखेत मझारी॥
धृतराष्ट्रकके सन्मुख आये। तीन्हु वीरन वचन सुनाये॥
कृप कृतवर्मा द्रोणकुमारा। महा प्रबल तीनों सरदारा॥
राजाते रोवत यह कहई। वचन न आव नयन जल वहई॥
महायुद्ध कीन्हेउ कुरुराजन। बचे न कोउ सुनिये महराजन॥
हम तीनों भारतमें रहेऊ। राजा सुनहु सत्य हम कहेऊ॥

तीनौं तब बोधत गन्धारी। तजो शोच सुनि बात हमारी॥
जाना तुम्हैं क्रोधमें राई। तबहि लोहकर भीम बनाई॥
क्रोध तजो राजा परमाना। पाण्डव तनय पुत्रकरि जाना॥
धर्म्मजके दुख देखु विचारी। तुम्हरे पुत्र दीन दुखभारी॥
व्यास विदुर भीषम समुझाय। बहु प्रकार हम ताहि बुझाये॥
काहू केर कहा नहिं माना। हठकर कीन्हे उ रण मैदाना॥
तुम सब जानत हौ सज्ञाना। कहा कहों भाषत भगवाना॥
तुम्हरे चित्त दया नहिं आई। पाये बहु दुख पांचो भाई॥
पांच गांउ तुमहूं न दिवाये। अपने पुत्रहि नहिं समुझाये॥

महादुःख सहि पाण्डवन, तब कीन्हों यह कर्म।
मारन चाहौ भीमको, कहा कहौ तुम धर्म॥

कृष्णवचन सुनि अन्धभुवारा। कहै सुमति करि हृदयविचारा॥
बड़े भाग्यते भीम बचाये। धन्य कृष्ण अन्धहि समुझाये॥
क्रोध सकल अब गयो हमारा। महा कृपा भै पाण्डुकुमारा॥
पुत्र सकल रण जुझे हमारा। महाशोक भा नन्दकुमारा॥
तब जानेउ छूटेउ मन क्रोधहि। परशंहि अङ्ग पांडवन योधहि॥
धर्मराज अरु भीम जुझारा। पारथ सहदेव नकुल कुमारा॥
सबहि अन्ध चरणन लपटाने। तजिकै क्रोध दया बहुमाने॥
पाण्डव पुत्र महा अज्ञाना। आपन पुत्र सत्य करि जाना॥
ऐसे पुत्र नशोक मिटाये। प्रेम हर्ष तब पांडव पाये॥

धृतराष्ट्रको परशिके, पुत्र सुशोक मिटाइ।
तब पांचो पांडव बहुरि, गन्धारीपहं जाइ॥

गन्धारीपहं कीन्ह पयाना। आइ व्याससुनि तहां तुलाना॥
पुत्रशोक गन्धारो अहई। शाप देन पाण्डवको चहई।
पट्टी बांधे हैं दोउ नयनहिं। तहां व्यास भाषे यह बैनहिं॥
वचन हमार वेद परमाना। तुव आगे मैं करौं बखाना॥
शांति होहु सब दुखन मिटाई। तुव सेवा कर पांचो भाई॥
जात युद्ध दुर्योधन राऊ। आज्ञा लै नहिं परशेउ पांऊ॥
तब तुम्हरे मुख आइ न बाता। धर्मज सञ्जय पाप निपाता॥
इतनी बात पुत्रसन भाषा। पूरण भयो धर्म अभिलाषा॥
वचन तुम्हार जगत महँ टरई। तौ रवि चन्द्र उदयनहिं करई॥
सोई वचन भयो परमाना। विरथै धर्म कुकर्म नशाना॥

क्रोध क्षमा करु वेगि तुव, कहेउ व्यास समुझाइ।
धर्म वृद्ध क्षय पापको, यहै सुनो मन लाइ॥

व्यास वचन सुनिक गन्धारी। तज्यो क्रोध तब कहेउ विचारी॥
ठाढ़े पांच बन्धु भगवाना। कहेउ व्यास गन्धारि बखाना॥
जो कछु व्यास कहतहैं बानी। वेद प्रमाण सत्य हम जानी॥
पांचो पुत्र परम रिस नाहीं। सुतको शोक भयो मनमाहीं॥
जैसि मम कुन्ती जननी तासू। तैसे हमैं देखि परगासू॥
कुरुपति शकुनी कर्णहुँ चारो। पापी सबै भूप संहारी॥
पांडु पुत्र पापहि मन दीन्हो। जानुभङ्ग दुर्योधन कीन्हो॥

नाभी हेठ दान परहारा। ताते मनु भा क्रोध हमारा॥
पापी भीम जानुमें मारा। सुनत त्रासभयो पांडुकुमारा॥
मनमहं त्रास हाथ तब जोरै। मातन कहौ दोष कह मोरै॥

सबै वीर संहारि कै, बाच्यो एक भुवार।
ताहि न मारैं जननि हम्, निष्फल युद्ध हमार॥

उनते जीति न सकेहु भुवारा। पाप कपट करिकै हम मारा॥
अब भाई कर दोष विचारी। ताते जानु भङ्ग करि डारी॥
जा दिन सभा द्रौपदी आनी। जानु देखायो सो अज्ञानी॥
ता दिन हमहु प्रतिज्ञा लीन्हा। जानु भंग ता कारण कीन्हा॥
राजा बिन जीते ते माई। केहि प्रकार हम पृथ्वी पाई॥
अन्तहु पांच गाउँ हम मांगे। दीन्हो नहीं गर्व मन पागे॥
तबहुँ न मानी बात भुवारा। कहु जननी का दोष हमारा।
ता कारण नहिं धर्म्म विचारा। जस करि जाना तस हम मारा
अपने कर्म्म भयो संहारा। नाहिन सुत कछुदोष तुम्हारा॥
यह दुख मोहिं दीन्ह करतारा। धर्मराज अस सुत रणमारा।

नकुल साथ दुःशासनहिं, लरे प्रथम मैदान।
तुम गहि भुजा उखारेहु, यहै बड़ो अपमान।

पाछे भीम कहेउ समुझाई। बिना दोष कीन्हो नहिं माई॥
रजस्वला जो द्रौपदि रानी। गहिकर केश सभामें आनी॥
एक वस्त्र सोउ खैंचकै लीन्हा। तहँ माता हमहूं प्रण कीन्हा॥
भुजा उखारों जबहिं तुम्हारी। पुरै प्रतिज्ञा तबहिं हमारी॥

कहेउ पुकार सभाके माहीं। विना हते छांड़ों तोहि नाहीं॥
जबलों रुधिर पियो नहिं तोरा। कबहुँ न मिटै शोक यहमोरा॥
क्षत्रीधर्म्म प्रतिज्ञा कीन्हा। ताते भुज उखारि मैं लीन्हा॥
याते जननी दोष हमारा। क्षमा करो मैं शरण तुम्हारा॥
तुम जननी मत जानहु आना। हौं मैं जानत कुन्ति समाना॥

द्रुपदसुता पट सभामें, खैंच दुष्ट दुर्बोध।
कहु जननी कैसे नहीं, आवै हमको क्रोध॥
भइ उनहींकी ओरसे, माता सबै उपाध।
अब सब क्षमिये जान जन, मेरो यह अपराध॥

यह सुन कहत भई गन्धारी। तू राक्षस है मांस-अहारी॥
सुत दुःशासनको वध करिकै। रुधिर पियो अति आनन्द भरिकै
लरे वधे को दुख नहीं मोहीं। शोणित पियो कौन विधि द्रोही॥
यह सुन भीम कह्यो सुन माता। दुःशासन हो मम प्रिय भ्राता॥
तासु रुधिर नि[illegible]सम अनुमानो। तासों कछू घृणा नहिं आनो॥
अर्जुन धर्म नृपति भय करिके। कहत भये इमि धीरज धरिकै॥
हम तुम्हरे पुत्रन वधकारी। क्षमा करो हम शरण तुम्हारी॥
अब करजोरि खड़े हम पांचो। शाप देहु किमि आशिष सांचो॥
बार बार हम विनवत माता। मिटत न जो कछु लिखेउ विधाता
मधुर वचन जब सबन सुनाये। ऐसे मातहि शान्त कराये॥

सो[illegible]म कीन्हो अस्व सुनु, मम मन दुख अनुमान।
क्रोध ईर्षा दूर कर, दया हियेमें जान॥

क्रोध शान्त देवी भई, भीम वचन सुन कान।
तब गन्धारी शान्तह्वै, कहन लगी दुख मान॥
दया छांड़ि निर्दयी बन, शतसुत वधे सटेक।
अन्ध वृद्धकी लकुटिया, समुझन छोडी एक॥
कहत लोग सब जगतमें, कठिन पुत्रको पीर।
सौ पुत्रनको मरण सुन, कैसे बांधौं धीर॥

इति द्वितीय अध्याय॥२॥

तब गन्धारी कहेउ बुझाई। कहँ धर्मंश युधिष्ठिर राई॥
सुनत त्रास कांपे नरनाथा। ठाढ़े भये जोरि कर हाथा॥
बोले वचन त्रास भई भारी। जननी सुनियो बात हमारी॥
हमते भा सब वंश सँहारा। जननी आयो शरण तुम्हारा॥
शाप योग्य मैं माता नाहीं। सहे शाप तुव को जगमाहीं॥
धृग जीवन है जगत हमारा। अपने हाथ बन्धु-संहारा॥
देवी सुनत भयो मन धीरा। दीन वचन भाषे नृपवीरा॥
प्रति-उत्तर तब कछु न दीन्हा। मनको दुख प्रकाश नहिं कीन्हा॥
तब माता धीरज धरेउ, नृपति विनय कह वैन।
तीन बन्धु देवी कहे, हम नहिं देखे नैन॥
अर्जुन सहदेव नकुलकुमारा। सुनत वचन तब भयो खँभारा॥
हरिके पाछे पारथ जाई। भागि दुरे तब दूनो भाई॥

तीनो हरिके पाछे गयऊ। शापत्रासते आतुर भयऊ॥
एकघरी सबही चुप रहेऊ। क्रोधशान्त गन्धारी कहेऊ॥
पुत्र आउ अब निकट हमारा। काहे कीजै त्रास कुमारा॥
अपनो हुक्म करो अब जाई। धर्मपुत्र तुम पांचौ भाई॥
देवी क्रोध तज्यउ परमाना। पाण्डव शाप भयो परित्राना॥
गन्धारी तब बोली बाता। आनौ कुन्ती शत्रु जाता॥
पांचौ बान्धव कुन्ती लाये। सबही मिलि कुरुखेत सिधाये॥

गन्धारी कुन्ती सहित, पांच बन्धु भगवान।
युद्धभूमि तब सबै जन, देखतठाढ़ निदान॥

तहँ शत वधू रूप उजियारी। मानहुँ चन्द्रकला वपुधारी॥
अपने अपने कन्त उठावे। रोदन करैं सबै बिलखावे॥
मनहुँ मृगी शिशुयूथ बिहाई। रोदन करैं सबै बिलखाई॥
युद्ध भूमि देखी भयकारा। देखे वीर अनेक जुझारा॥
कुण्डल नाना रतन अपारा। महारूपते परे भुवारा॥
रथन छत्र अरु दण्ड अपारा। पूरि रहेउ रणभूमि मँझारा॥
वसन अस्त्र बहुतक तहँ देखे। नाना मुकुट रतन मय लेखे॥
शोणित नदी बहत हैं ऐसी। सरिता यम वैतरणी जैसी॥
गज रथ अश्व मनुष्य अपारा। बहे जात शोणितकी धारा॥
तीन तार शोणित गम्भीरा। परे नृपति चली बलवीरा॥

रोवत हैं सब वियोगता, नाना रूप अपार।
आपन आपन कन्तको, रोदन करत पुकार॥

काहू केर शीश है नाहीं। काहू केर परे कटि बाहीं॥
काहू केर दोउ भुज नाहीं। काहुहिं शूल घाव तनु आहीं॥
कोई कटे खड़्गते आधा। काहुहि परे भूमिपर कांधा॥
काहू केर जांघ दोउ काटे। काहू केर हृदयमें छाटे॥
ऐसे परो वीर बहु तहँई। भारत रणहि भूमि है जहँई॥
काक गृध्र जंबुक जहँ नाना। अस दुर्गन्धि वास है घ्राना॥
बहुत रूप पक्षी गण आये। मांस खाइ आनन्द बढ़ाये॥
प्रेत भूत वैताल अपारा। नाचैं योगिनि लाल सँभारा॥
नचैं कबन्ध देत करतारी। योगिनि डाकिनि करैं धमारी॥

क्रोधवन्त धनु बाणलै, कोई युद्ध प्रकास।
उठ कबन्ध रण खेत महँ, प्रेतकरहिं सब हास॥

कोइ पति कहि कोइ कहैं कुमारा। कोइ बन्धु करि करै पुकारा
भयो महारण आरत भोरा। रोदन भयो महाघन घोरा॥
रोवहिं शतहु वधू बिलखानी। महा विकल दुर्योधन-रानी॥
सो कहँ लग मैं करहुँ उबारा। भयो रुदन जहं शब्दअपारा॥
हाहा कन्त प्राणपति राजा। जाको यश सब जगतविराजा॥
बासुकि लक्ष्मी अन्ध नृपाला। करैं सेव लाखन भूपाला॥
छत्रहि छत्र रहत जग छाई। सेव करन आवत बहुराई॥
रत्न सिंहासन पाट तुम्हारा। नाम तुम्हार जान संसारा॥
रत्न मुकुट आलंकृत नाना। रूप देखिकै काम लजाना॥
अधिक सुन्दरी तुमरी रानी। कर्मविवश यह गति भै आनी॥

अपने अपने सुन्दरी, शत बान्धवकी नारि ।
बहु विलाप कहि जात नहिं, रोवहिं शीश उघारि ॥
लखि गन्धारी भई अधीरा । देख्यो यह कारण यदुवीरा ॥
सकल बधू रोवतीं हमारी । तुमहीं सब अनाथ करि डारी ॥
जो सुन्दरि मैं तुमहि गनाहीं । भई अनाथ रोवत सब आहीं ॥
राजा एक करै सुत सेवा । ताकी यह गति कीन्ह्यो भेवा ॥
जा तनु अतर सुगन्ध सोहाई । तौन शरीर गृध्र खग खाई ॥
यात्रा समय पुत्रसन भाखा । वचन हमार राउ नहिं राखा ॥
ताहि दोष नहिं नन्दकुमारा । सबै पराक्रम आहि तुम्हारा ॥
जूझे सौ सुत रहेउ न कोई । अन्ध नृपतिकी का गति होई ॥
अस कहि रोवहिं ऊंच पुकारी । ताहि देखि बोले बनवारी ॥
तुम्हरे सुत मम वचन न माना । मोर कहा सो तृणसम जाना ॥
भीषम द्रोण बुझायेऊ, और विदुर मुनिव्यास ।
कहा न मान्यो काहुकर, कीन्ह्यो रणपरगास ॥
धृतराष्ट्रक तव बहुत बखाना । इन कीन्ह्यो सबकरअपमाना ॥
पाण्डव वीर महाबल भारी । हठिकैकुरुपतिरणहिविचारी ॥
अपने कर्मन भये विनाशा । नारायण यह वचन प्रकाशा ॥
सुनिके बात कहत गन्धारी । अपने कर्मन गो अपकारी ॥
दोष न काहू को मन धरेऊ । सो बांधव तेहि संगहि मरेऊ ॥
क्षत्रिधर्म उन करेउ रण, सबै वीर मैदान ।
कुरुक्षेत्र तनु त्यागिकै, सब चढ़ि गये विमान ॥

तब तीनउ जन कह्यो बुझाई। सुनिये मातु परम सुखदाई॥
शोक तजौ मत करौ बिलापा। गये स्वर्ग सब कहँ सन्तापा॥
भीम पाप कीन्हेउ बहुसंगा। ताते हम कीन्हेउ रणरंगा॥
मारे दल पाण्डव संहारा। वधे द्रौपदी पञ्च कुमारा॥
पाण्डवको सो पराभव दीन्हा। राजाद्रुपद पुत्रवध कीन्हा॥
अब आज्ञा दीजे नरनाहा। जैये हमहूं निज थल माहा॥
विदा मांगि तीनों तब गयेऊ। द्रोणी व्यासाश्रम पगु धरेऊ॥
कृप कृतवर्म द्वारका गयेऊ। कुरुक्षेत्रमहँ सबजन रहेऊ॥
गये सबै रणभूमिमँझारा। जहँ बहु वीर परे विकरारा॥
रोदन करैं तहां सब कोई। वाम विधाता काहु न होई॥
भयो शोर तहँ आरत भारी। एक बार शत वधू पुकारी॥

महाशोर कुरुक्षेत्रमहँ, रोदन भयो अपार।
नगरलोगकी नारि सब, रोवत करत पुकार॥

राजा धर्म सुनो यह पाये। कुरुक्षेत्र धृतराष्ट्रक आये॥
पांचौ पाण्डव नन्दकुमारा। कुरुक्षेत्र तुरतहिं पगु धारा॥
प्रथमै धर्मराज गये आगे। अन्ध नृपतिके चरणन लागे॥
महौं युधिष्ठिर पुत्र तुम्हारा। मोरे दोष न करौ विचारा॥
आप पिता हम पुत्र तुम्हारा। क्षमौ दोष जो भयो हमारा॥
राजपाट सब अहै तुम्हारा। हम सेवक समेत परिवारा॥
बहु प्रकार तब अस्तुति कीन्हा। तब धृतराष्ट्र शान्ति मनलीन्हा॥
अन्धनृपति तब कहेउ विचारी। भीम सबै मम पुत्र सँहारी॥

मिलन हेतु हमरो है आशा। कपट बुद्धि मनमें परगाशा ॥
भस्म करन चाहै मन माहीं। तब कह कृष्ण भीम यहं नाहीं ॥

कालहि आइकै भेंटि है, भीम तुमहि नरनाह।
चारौ वन्धव मिलेतहँ, विनय वहुत करि ताह ॥

तब यह श्रीपति युक्ति उपायेउ। लोहे भीम तहां निर्मायेउ ॥
भीमसेनकहँ राखि दुराई। लोहे भीम अन्धपहँ लाई ॥
ठाढ़ो भीम कहत यदुराई। मिलौ हेतु करि कण्ठ लगाई ॥
न्टपके कपट आहि मन भाई। मारौं भीमहि दुख मिटिजाई ॥
कही वात हिरदयमें चाही। सुतके शोक विकल तनुमाही ॥
हर्षित क्रोध मिले तब राई। मनहुँ परी दुखिया निधि पाई ॥
अयुत नागको वल तनुमाही। कोधित भीमसेनको गाही ॥
मिलत लोह चूरण करि डारा। पुहुमी माहिं पराकै छारा ॥
सञ्जय हाहा करो पुकारा। भीमसेन को करै सँहारा ॥
सब ही हाहा शब्द पुकारा। भयो मोह तब अन्धभुवारा ॥
तब माया करि रोवन लागे। भीम शोक हिरदयमहँ पागे ॥

हाय भीमसुत राजा, वहुविधि करत पुकार।
शोकशान्ति जबहीं भयो, श्रीपति वचन उचार ॥

राजहि बात कहत यदुनाथा। रोदन कहा करो नरनाथा ॥
अहै भीम सुनियो हो राई। धृतराष्ट्रको कृष्ण बुझाई ॥
राजा कहत सुनहु वनवारी। है सब रचना कृष्ण तुम्हारी ॥
सर्वमयी तुमहो भगवाना। तुमहीं देहु ज्ञान अज्ञाना ॥

वैसी बुद्धि तासुको दयऊ। जाते भ्रत बान्धव मरि गयऊ॥
पाण्डव कह जीते पुरुषारथ। भक्तहेतु कीन्हेउ तुमस्वारथ॥
पाण्डव कुलके भयो उबारा। कौरव वंश कीन्ह संहारा॥
दिना अठारह अस रण रचेऊ। भ्रत बान्धव महँ एक न बचेऊ
मोर वंश तुम कीन्ह सँहारा। कृष्ण लीजिये शाप हमारा॥
त्रिंशति षट संवत यदुराई। तवकुल आपुसमहँ कटि जाई॥

छपन कोटि यदुवंश हैं, पुत्र प्रपौत्र तुम्हार।
लेहु कृष्ण तुम शाप मम, एकहि दिन संहार॥

हँसिकै कृष्ण कही यह बाता। को अस है जगमें सज्ञाता॥
यदुवंसिन सों जीतन चहई। कौन जगत में ऐसो अहई॥
आपहि वंश होय अपकारा। यद्यपि पायो शाप तुम्हारा॥
पापी कुरुपति गयो सँहारा। काह दोष धौं भयो हमारा॥
हम जब गये हते दरबारा। पांच गांव मांगे भूपारा॥
ग्राम देहि नहि मारन चहई। तब कुरुपतिसन भीषम कहई।
मोहिं शाप केहि कारण दीन्हेउ। यहै जगतपति कहिबे लीन्हेउ
सुनिकै लज्जित भइ गन्धारी। कृष्ण-वचनसों शोक निवारी॥
पुत्र शोक छांड़ेउ गन्धारी। तज्यो क्रोध तनु सुरतिसँभारी॥
ऐसे सुनत शान्त सब भयऊ। तबहीं कृष्ण हर्ष मन लयऊ॥

क्षमा क्रोध जबहीं भयो, अन्ध कुरुपति राय।
पाछे तहंवा द्रौपदी, पुत्रशोक बहु पाय॥

पांच पुत्र गये वधे हमारा। विलपै परी भूमिमंझारा॥
गन्धारी गहि हाथ उठाई। लीन्ह वधू कहँ कण्ठ लगाई॥
वहु प्रकार समुझावहि वानी। भइ तब मौन द्रौपदी रानी॥
सबै वधू लै कन्दन रोवत। देवलोक सब सुरगण जोवत॥
तरुण वयस सब ही हैं वाला। प्रथमवयस अतिरूपविशाला॥
छूटे केश न देह सँभाला। व्याकुलसकलमहाविकाराला॥
यह सब देखि तेयागेउ शोका। पुत्र तुम्हार गये सुरलोका॥
रोइ सुभद्रा सुतहि पुकारी। पुत्रहि बिना धीर किमि धारी॥
चक्रव्यूहयुद्ध में वीत्यो। कर्ण द्रोण वीरनते जीत्यो॥
ऐसो पुत्र जासुको मरई। तासु जननि किमि धीरज धरई॥

कैसे जीवै मातु वह, और तासुकी नारि।
उतरा रोवति लाज तजि, हा प्रीतम सुखकारि॥

देख्यो विस्मय श्रीभगवन्ता। रोवत पारथ शोच अनन्ता॥
उतरहि देखि सबै तहँ रोवत। कुन्ती रानि वधूमुख जोवत॥
सासु सुभद्रा कहि समुझावत। उतराकहँ कर गहि बैठावत॥
यहि प्रकार रोवत सब नारी। कुन्ती मातु करै मनुहारी॥
ऐसेही सब भई अधीरा। शोकित व्याकुल रहे शरीरा॥
कुन्ती रानी औ गन्धारी। कीन्ह वधुनको बहु मनुहारी॥

आरत नाद मिटाइ तव, वहु वहु धीर धराइ।
सब मिलि त्यागहु शोक अब, कहा युधिष्ठिर राइ॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

आरत नाद शान्त जब भयेऊ। धृतराष्ट्र राजासों कहेऊ॥
सुनहु बात धर्मज सुत राजा। अब नहिं शोच करनको काजा॥
हरिकी मायाते संसारा। आवत जात न लागै बारा॥
मरे वीर भारत मैदाना। दानव हते देव जे नाना॥
अष्टादश चोहिणि दल भारी। भारत भूमि परे सब झारी॥
द्रोण कर्ण भगदत्त भुवारा। और नृपति जे हते अपारा॥
और नृपति जिनके नहिं कोई। समगति करो सबनको सोई॥
राजा कैसो करै उपाई। दाहकर्म वीरनके आई॥
सुनिके बात युधिष्ठिर राजा। लागे करन दाहकर काजा॥
धर्मज भीम धनञ्जय वीरा। नकुल और सहदेव सधीरा॥

पांचो बान्धव मिलि तहां, करैं दाह उपदेश।
बड़े बड़े सरदार सब, क्षत्री वीर नरेश॥

चन्दन अगर सहित घृत लीन्हे। दाह कर्म सबहीको कीन्हे
पहिले दुर्योधन शत भाई। लक्षण कुंवरको दाह कराई॥
भूमि शुभ्र करि कुरुपतिधारा। बाहर काढ़ि कुंवरको जारा॥
द्रोण वीर भगदत्त भुवारा। और कलिङ्ग शूर बरियारा॥
कर्णवीर अँगारमनि रानी। होवै मांझ सतीभइ जानी॥
और त्रिया जेहि सत मनमाना। भई संग पति सती प्रमान॥
भूरिश्रवा जयद्रथ राजा। अभिमन्यु दाह करें तब काजा॥
उतरा सती होनको जाई। कहैं कृष्ण तासों समुझाई॥

तुम्हरे गर्भ पुत्र यक होई। कुरु पाण्डवके सरबर सोई।
है दुइ मास गर्भ कहि भाषा। बहु समुझाइ कृष्ण तेहि राखा
बहुप्रकार उत्तराकहँ, कहेउ कृष्ण समुझाइ।
दुहूँ वंश महँ एक पति, होइ गर्भ तुव आइ॥–
तब विराट अरु द्रौपद राजा। सोमदत्त के दाहन काजा॥
अंशुमानको दह्यो शरीरा। चेकीतान दह्यो रणधीरा॥
काशीराज शिखण्डी वीरा। धृष्टद्युम्नको दह्यो शरीरा॥
केकयि और त्रिगर्त नरेशा। दाह कर्म सब कीन्ह नरेशा॥
जे द्रुपदीके पांच कुमारा। गति कीन्ही तब धर्म भुवारा॥
है घटउत्कच भीम कुमारा। और अलंबुष दानव वारा॥
दाहन कर्म सबहिको कीन्हा। चलो वीर जहांलगि चीन्हा॥
पाछे को जितने असवारा। अरु पायक जे भये सँहारा॥
भारतमहँ जूझे हैं जेते। दाहकर्म धर्मज किये तेते॥
धृतराष्ट्रक अरु सँग नरनाथा। गये गङ्गतट ब्राह्मण साथा॥
तर्पण आस अस्नान करि, चलो देव प्रमान।
यहि प्रकार राजा कर, दाहन कर्म सिरान॥
करिअस्नान नगरमें आये। तब कुन्तीपुत्रन समुझाये॥
सुत सुपत्र भाषहि संसारा। सोइ कर्ण सुत हते हमारा॥
सुता कलङ्क भयो अवतारा। सूर्यध्यान कीन्हरउ जेहि वारा॥
ज्येष्ठ बन्धु सोइ कर्ण तुम्हारा। प्रेत कर्म तेहि करो भुवारा॥
यह चरित्र राजे सुनि पाये। हाय कर्ण तुम कहां सिधाये॥

भ्राता आजु बात सुनि पाये। अनजाने रण तुमहिं गिराये॥
आगे माता नाहिं जनाये। भाष्यो तब जब मारि गिराये॥
मोकहँ शोक सिन्धुमें डारेउ। पहिले माता नाहिं सँभारेउ॥
तबहिं शाप माताकहँ दीन्हा। तब गुण मातु कर्णवध कीन्हा॥
गुप्त कथा नारिन तनु माहीं। रहै कदापि काल उर नाहीं॥

महाशोक राजा हृदय, कर्णहिं हेतु विलाप।
ज्येष्ठ बन्धु वध कीन्हेउ, भयो महा बड़ पाप॥

कर्ण वीरके कर्महिं कीन्हे। वेद प्रमाण सुगति मनु दीन्हे॥
है वृषकेतुको कर्ण कुमारा। कर्म पिताके करै सँभारा॥
औरो ज्ञाति सबै परिवारा। कीन्हे कर्म वेद व्यवहारा॥
तर्पण स्नान गंगमहँ कीन्हा। पिण्डदान तब दश दश दीन्हा॥
यह कीरति जलमें निर्वाहा। पुनि बाहर आये नरनाहा॥
क्रियाकर्म सबके हित कीन्हेउ। बहुत दान विप्रनकहँ दीन्हेउ॥
विदुर और धृतराष्ट्र भुवारा। पांचो पाण्डव नन्दकुमारा॥
गृहमें गये सबै इक साथा। पाण्डव सङ्ग आपु यदुनाथा॥
रहे गेह महँ सब जन आई। कुन्ती अरु गन्धारी माई॥
सहित द्रौपदी गृह महँ जाई। चिन्तावन्त धर्मसुत राई॥

ज्ञाति बन्धुको शोक है, धर्मराज मनमाह।
दुखपावत हैं हृदयमहँ, पाण्डवपति नरनाह॥

यहि अन्तर तहँ सबमुनि आये। पाराशर तब हर्षि सिधाये॥
नारद मुनि आये पुनि तहँवां। सनक सनन्दन हू गये जहँवां॥

व्यासकपिल अरु ऋषिगण नाना । मुनिवशिष्ठतहँ कियो पयाना
ऋषि जमदग्नि सङ्ग सब आये । धर्मराज तब दर्शन पाये ॥
पांचो बन्धुन बैठे जहँवां । कुरुकृप अ र विदुर हैं तहँवा ॥
बन्धु शोकते धर्म शरीरा । नयन स्रवत जल बहु दुख पीरा ॥
राज पाट हित बान्धव मारा । महाशोकमहँ धर्मभुवारा ॥
रोदन कर तहँ धर्मनरेशा । बन्धुशोक तनु भयो प्रवेशा ॥
तबहीं व्यास सिखावन लागे । राजनीति धर्मजके आगे ॥

बहु प्रकार समुझायकै, धीर धरायो व्यास ।
कृष्ण सहित गुरु बन्धु सब, बुद्धिचक्षु हैं पास ॥

सुर अरु असुर दनुज नरदारा । बन्धु बन्धुते वैर सँभारा ॥
सर्प गरुड़ बान्धव परमाना । सदा युद्ध ते करैं निदाना ॥
सदासों यह बात चलिआई । तुम कह शोच करत हौ राई ॥
जन्म मृत्यु होतो परमाना । हरिमाया काहू नहिं जाना ॥
तीनोंरूप त्रिगुण अवतारा । सिरजैं पालैं करैं सँहारा ॥
जनमत संग मृत्यु तो आवा । माया रूप गर्भ नर पावा ॥
मरि हैं सबै न बचि हैं कोई । जितने देव दैत्य नर सोई ॥
मरहिं देव अरु इन्द्र भुवारा । मरहिं अष्टकुल नाग पसारा ॥
मरिहैं धरती और अकाशा । मरि हैं सेष नीर परकाशा ॥
मरि हैं चन्द्र सूर्य अरु तारा । मरि हैं ब्रह्मऋषिहि संसारा ॥

शोक परिहरो धर्मसुत, देखहु ज्ञान विचार ।
जो जन्मा सोई मरा, मृत्यु लोक संसार ॥

जेतक भये मही अवतारा। कहां गये वे सबै भुवारा॥
केते भये कहत नहिं आवैं। अन्तकाल सब मृत्यु हि पावैं॥
राजा रङ्क मरैं सब झारी। मरिहैं महावीर धनुधारी॥
मृत्यु हि लोक नाम यहि अहई। जो कोइ जन्म आइकै गहई॥
मरिहैं सबै अमर नहिं कोई। केवल सुयश रहै जग सोई॥
माता पिता वधू सुत भाई। जीवत भरि माया अधिकाई॥
अन्तकाल एको नहिं अहई। अपनो धर्म आप सँग रहई॥
धर्म कर्म्म जो जाको जैसा। ताको फल पावै सो तैसा॥
व्यास कहैं राजहि समुझाई। शोक करो केहि कारण राई॥
एक ब्रह्मकी सब यह माया। देव असुर मानुष्य अमाया॥

राजा शोक न करो तुम, कहेउ व्यास समुझाइ।
एक धर्म साथी अहै, और संग नहिं जाइ॥

जसे एक चन्द्र नभमाहीं। कोटि कला सम प्रगटै ताहीं॥
सर्व मध्य देखौं सोइ चन्दा। एकौ अङ्ग अहैं सब बन्दा॥
नाना घट माया विस्तारा। सुत पितु बन्धु मातु परिवारा॥
यक घट नाश जबहि ह्वै जाई। ताको जल सब भूमि समाई॥
तजिकै रूप पुरुष अस जाई। चन्द्रज्योति जिमि चन्द्र समाई॥

घट विनाशते पुरुष तब, लीन होइ तहँ जाइ।
प्राकृत माया त्रिगुण जो, सो भरमावत आइ।
यहि प्रकार मुनि व्यास बुझायो। धर्मराजको धीरज आयो॥

भारत कथा पुनीत प्रतापा। नाशै सकल देहकर पापा॥
आवै मति दुर्मति मिटि जाई। सत्यवन्त ते जानत राई॥
कहैं कथा मुनि वैशम्पायन। जनमेजय सुनिये सुखदायन॥
इस्त्री-पर्व यहै विस्तारा। शान्तिपर्व अब सुनिय भुवारा॥

चलौ सुनत जे शूरमा, मूरख ज्ञान प्रकास।
श्रवणपान जे करत नर, छूटत यमकौ त्रास॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

इति स्त्री पर्व समाप्त।

शान्ति पर्व्व।

सुमरि कृष्ण गोविन्द हरि, व्यास देव भगवान।
शान्तिपर्व्व वर्णन करत, सबलसिंह चौहान॥

राजा सुनौ शान्ति विस्तारा। करत राज श्रीधर्मभुआरा
ज्ञानि शोकते धर्म भुआरा। भावत नहीं राज संसारा॥
दिन दिन महाशोच नव माना। चौथेपनका कौन पयाना॥
वधगतबन्धु द्रोण गुरु मारा। रोवहिं धम दीर्घ जलधारा॥

कर्ण बन्धु सोऊ वध कीन्हा । भीषम तौ शरशय्या लीन्हा ॥
यहै शोच तौ राजा करही । दिन दिन तनु दुःखित दुखपरही ॥
जेही अवसर मुनिसब आये । नारद और वशिष्ठ सिधाये ॥
मार्कण्डेय कपिल अरु भृगुमुनि । जमदग्नी औरौ मुनीश गुनि ॥
वृहदश्व लोमश सज्ञानी । सब मन्त्रीगण विदुर प्रमानी ॥

श्रीबलभद्र नरायण, पांचौ बन्धु भुआर ।
बैठे सबै सभाविषे, सुनौ परीक्षित बार ॥

सबै करत राजासे बाता । श्रीबलहरि मुनि ऋषि सख्याता ॥
परजा भाग धर्म सुतराजा । पुरी हस्तिना शोभित साजा ॥
बड़े भाग सब कुरु संहारे । परम सुःखकर राज भुआरे ॥
जस सञ्जय नृप शोक गमाये । नारद सबको कहि समुझाये ॥
वेदव्यास ऋषी बहु ज्ञानी । धर्मराजसे कह्यो बखानी ॥
ज्ञानतत्व सुनहू नृप वाता । चलो वेगि भीषमपै ताता ॥
व्यास वचन सुनिके नरनाथा । चले नृपति हरिबल हैं साथा ॥
औरौ सबै मुनी सँग लाये । कुरुक्षेत्रमें पहुँचे आये ॥
जहँ शरशय्या भीषम पाये । बैठे सबै तहां मन लाये ॥
शरशय्या भीषमकहँ देखा । महाशोक बाढ्यो नृप पेखा ॥

रोदन धर्मराज कर, देखि पितामह नैन ।
हृदय शोक परकाशिकै, कहै लाग नृपवैन ॥

बालक काल पिताके होना । तब प्रतिपालन तुमहीं कीना ॥
मोसम पापी मुगध न जाना । भीषम मैं मारे अज्ञाना ॥

सत्य वचन हमको गुरु जाना । मैं कर पाप असत्य बखाना ॥
जेठ वन्धु कर्णहि रण मारा । अस्त्रहीन पारथ संहारा ॥
मोसम पापी जगत न कोई । भये नहीं नहिं होवे कोई ॥
पांच पुत्र द्रुपदीके गयऊ । औ अभिमनु रणमें वध भयऊ ॥
कौन सुःख है राज हमारा । अल्पकाल पातकको टारा ॥
जाऊं वनहि तजौं मैं राजा । वनोवास कुमतीके काजा ॥
शोक अनलते दहै शरीरा । महाशोकसे कह नृप वीरा ॥

शोक विकल है राजा, जगत वन्धु दुख ताप ।
कर्मलिखा नहिं जानहि, सहव कहा सन्ताप ॥

कहहीं वात व्यास समुझाई । समाधान है सुन अब राई ॥
बाल युवा वृद्धहु किन होई । अन्तकाल मरते सब कोई ॥
दुख सुख है यक सम संसारा । काल सर्व संहारन हारा ॥
रोगी मरै वैद्य मरिजाई । इस्त्री पुरुष मरैं सब राई ॥
राजा प्रजा गुणी सब मरैं । देवरु दैत्य जन्म सब धरैं ॥
मरिहैं गँधरव यक्ष अपारा । चांद सूर्य्य मरिहैं अवतारा ॥
सिधि संन्यासी मरि हैं झारी । मरि हैं राजा रंक भिखारी ॥
जहँवां जन्म मृत्यु है तहँवां । दुख सुख सब एकै सँग लहँवां ॥
यहै वात जब भीषम सुना । सुनतहि हृदयमाहिं तब गुना ॥
शरशय्यामहँ भीष्म कह, सुनो धर्म नरनाह ।
जहँ संयोग वियोग तहँ, यही भेद जो आह ॥

पानी बिंब देख संसारा । नाश होत नहिं लागै बारा ॥
होतव्यता जो कर कर्तारा । कहा तुम्हार रहब संसारा ॥
जन्मे वीर रूप जग जाना । होतो मौच पतङ्ग समाना ॥
रातो दिन षटऋतु परमाना । रचना रचते विवध विधाना ॥
पुनि पुनि आय करै पैसारा । आवत जात न लागहिं बारा ॥
कहैं व्यास सुनहू न्टप सोई । आशा छोड़ि सकत नहिं जोई ॥
औषध विद्या मन्त्र अपारा । अस्त्र सेज औ वलि विस्तारा ॥
घना कुटुम्ब बहुत विस्तारा । अन्तकाल को राखै पारा ॥
काहूकेर पुत्र पितु नाहीं । भार्या भगिनी मातु न आहीं ॥
जैसे पथिक चलै मगमाहीं । तैसे जगत मांय सब आहीं ॥
एकहि संग रहै परिवारा । अन्तकालको देखन हारा ॥

कौन पन्थ कै गवन है, पाव न कोई चाह ।
मोर मोर जो भाषता, सो माया हरि आह ॥

पुनि पुनि जन्म होत संसारा । घरी रहट जानो संसारा ॥
कर्म रु कुल जैसे जो करई । सो प्रकार जग भुगते फिरई ॥
मायाजाल कपट मन बंदा । सब घट पूरण बाल गोविन्दा ॥
यहिसे तरै नाम इक धाई । यज्ञ ध्यान मनसा फल पाई ॥
विनाभक्ति विष्णुहुको देखा । कोटियज्ञ औ धर्म अलेखा ॥
पूर्वज पाप सो फल दरशावै । धर्मपन्थसे सो सुख पावै ॥
गङ्गासुत तब कहत बखानी । श्रुति इतिहास पुराण बखानी ॥
ऋषी कहेव जनकके पाहां । जनक यज्ञशालाके माहां ॥

स्वर्गमृत्यु पाताल सब, सृजी प्रजापति ताहि।
देव दैत्य नर नाग है, जन्मत बाढ़त ताहि॥

मृत्यु नहीं जानै सब कोई। पृथ्वी भारन व्याकुल होई
राय कहा परजापति ताहां। पिग भये भारत रणमाहां॥
दिन दिन सब बाढ़ो परिजाना। परजापतिसे प्रथम बखाना॥
क्रोधरुद्रके नैन निहारा। कन्या एक भई अवतारा॥
ब्रह्मापाहँ कहे सब बाता। आज्ञा कहौ कवन सख्याता॥
सबै जक्त अब करौं सँहारा। तबै प्रजापति कहा विचारा॥
मृत्यु: नाम परजापति भाषा। अंबु वृद्धके को गुणरापा॥
चौंसठ रोग तुम्हारे संगा। तव परिवार करौं गुण भंगा॥
सूर्य्य वदन यमको परमाना। परम अधर्म विचारहु नाना॥

चित्रगुप्त सँग यम रहैं, मृत्यु लोक सञ्चार।
सुन्दर गृह स्थोर यम, करत जगत संहार॥

दण्डअस्त्र तब ताको दीन्हा। यही प्रकार प्रजापति कीन्हा॥
शिव विद्याधर हैं परमाना। गँधर्व किन्नर सुत तव जाना॥
मृत्यु पाय चल उत्तर द्वारा। उपमा कौन कहै को पारा॥
उत्तम द्वार मार्ग उजियारा। सो सूरज नहिं तहां पसारा
योगी सिद्ध संन्यासी जेते। पश्चिम द्वार जात हैं तेते॥
पूव द्वार उत्तम अस्थाना। तहां जावैं सो सुनौ बखाना॥
कन्याअरु गो अन्नको दाना। पूर्व माहिं सो पावहिं जाना॥

सत्यवन्त दाया परमाना । अतिथि सेव परहि
देवस्थल पुस्कर जो निकरै । पूरव द्वारसे सब स
तीनद्वारके भेद बखाना । जौन कर्म करि जेहि

उत्तम कथा प्रकाश किय, सुनौ धर्म कर
जौन कर्म करता जवन, तहां तौन सो

अब सुन दक्षिण मार्ग भुवारा । तहँपर हैं चौर
रात्रि दिवस है तहँ अँधियारा । सात लाख औ
हैं यमदूत तहाँ निहधीरा । देखत सबै कुरूप
लोहदण्ड सबके करमाहीं । वहै द्वार यम रूप
पापी जीव तहां दुखपावै । राजा हमसे कहत
बहै नदी वैतरणी ताहां । रक्तमांस औ जल औ
नाना कर्मी विकट शरीरा । जलसरिता सोहै
तहँ जो जात सुनो सो काना । भीषम भाषें श
परदारा परद्रव्य चोरावै । मिथ्या सदा पाप ते
स्त्री विप्र गो हत्या करहीं । मात पिता गुरु नि

नगरपापकर सज्जता, दुख देवै संसार ॥
गुरुजन को हिंसाकरै, तहां करत पैसा

लोहदण्ड मारैं यम ताही। ऐसे कष्ट देत बहु आही॥
ऐसे प्रजापति सिर्जैं ताहीं। कर्म फलहि सब भुगतैं जाहीं॥
सब विष्णु: माया जो अहै। नानारूप भीष्म तो कहै॥
जन्मत संग मृत्यु अवतारा। यहिसे शोच न करो भुवारा॥
कर्मके वश नर पाव कलेशा। छुटै न कोटिकल्प परवेशा॥
श्रीकृष्णपद चिन्तन करै। कर्मबंधसे सो उद्धरै॥
याहि विचारो भूपते,-तजो शोज सन्ताप।
श्रीपति सबके कर्ता, नाना पुण्य रु पाप॥
ताते सब कर्ता हरी, करन करावत सोय।
इन्हीं चरण लव लावहो, इनसे और न कोय॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

पुनि भीषम भाष्यो सुन राजा। तजौ शोक सत करहू काजा॥
सो जस राजा कथा सचारा। भरतनाम राजा संसारा॥
हरि विन और एक नहिं जाना। महाराज भक्तो भगवाना॥
राज्य कियो बहुदिन विस्तारा। बन्धु राज्य दे वन पगु धारा॥
कियो प्रवेश महावन राजा। निरत भक्तिपथ हरिके काजा॥
एक दिवस मज्जनके काजा। सरवर मांह गये तब राजा॥
गर्भवती हरिणी यक आई। नीर पियेको जलमें जाई॥
पूरणगर्भ मृगीसो आहै। मायाविष्णु सुनौ जो चाहै॥

पीकर नीर चली शिरनाई। प्रसव समय तो आय तुलाई॥
उदरपीर जो भई अपारा। प्रसव भई सो सुनौ भुवारा॥
बालक एक नदीके तीरा। राव चरित्र देख रणधीरा॥

विधिकै रचना ऐसिहै, मृगी तजा तहँ प्रान।
देख भरत राजा तहां, सरमैं करत सनान॥

देख नृपति शिशु परा अनाथा। तबहिं ताहि पाले नरनाथा॥
तृण अरु नीर देत आहारा। बहुत प्रीतिकै पाल भुवारा॥
समय विचारि मृगा वन आये। सुत समान तौ पालहि राये॥
कितने दिवस बीत तब गयऊ। यक दिन मृगा भागवनलयऊ॥
पाये सँग जो मृगके तहां। परम सुखरहे सँगमैं जहां॥
राजा हृदय महादुख आना। ढूंढत नहिं पायो पछताना॥
कौनौ ले गयो मार कुरङ्गा। ताके हेतु सदा मन भंगा॥
कितने दिवस शोक महँ गयऊ। अन्तकाल राजाको भयऊ॥
तब यमदूत गये लै ताहीं। हिरणा शोक हेतु मनमाहीं॥

क विचार तब धर्म नृप, दीन मृगा अवतार।
मृग स्वरूपमैं जोरहै, कौडलपुरी मँझार॥

सहस लाख मुनि मेरे जाना। कारण कहा ऐस भगवाना॥
तुम चेतौ माया अवतारा। मृगारूप यह हेतु तुम्हारा॥
पूरव बात भयो तब ज्ञाना। जलतृण तजे किया नहिंपाना॥
ऐसा शोक मृगा तज प्राना। पाया तब दर्शन भगवाना॥

आगे जन्म भये अवतारा। तब सो राजहि भयो उधारा॥
सगरे शोक कालके फांसा। ताते भूप करै हरि आसा॥
हरता करता तारत हरि है। तीनो लोक बखानत हरि है॥
चारौ वेद प्रजा पति धारा। ध्यान धरै हरि पावन पारा॥
शेष सहसमुख गुण जो गावैं। नारद कपिल सनातन ध्यावैं॥
मुनी करैं तप जा पद आशा। करै अनन्त ब्रह्माण्ड प्रकाशा॥

सो हरि विना सुजगत महँ, दूसर नाहीं आन।
धर्म सत्य यह कहा हम, तौ अंग्रित परमान॥

सहस नाम ते धर्म न आना। सहस नाम गांगेय बखाना॥
चारि वेदमें सार जो अहै। सहस नामसे पाप न रहै॥
राम रमहि रामे रम रामा। राम सहस्र नाम सुखधामा॥
राम स्वरूप व्याघ्र भय नाहीं। छूटै व्याध धर्म पद जाहीं॥
करि संक्षेप बखाने नाना। सहस नामके महिमा आना॥
नाम अनन्त अन्तको जाना। एक नामसे पद निर्वाना॥
पञ्चनामसे द्वादश नामा। अष्टाविंश नाम है ज्ञाना॥
सत्यनाम सहसनमें जाना। पुनि अनन्तको नाम बखाना॥
परम तत्त्व अह नाम जो एका। सुमिरहिं संत जो हृदय विवेका॥
परम धर्मको सार है सोई। नाम सहस्र पढ़े जो होई॥

राम कृष्ण रघुपति हरी, राघव राधा कन्त।
विभु गोपाल शारंगधर, गिरिधारी भगवन्त॥

रावणारि कंसारि हरि, भक्त वन्धु भगवान।
ध्यानकरौ मन जानि धरि, मनशा वाचा जान॥
सर्बसार जे जगपती, इतना नाम बखान।
नाम भजे पातक हरत, भूप सुनौ दै कान॥

इति द्वितीय अध्याय॥ २॥

राजा सुनौ कथा तौ अहै। पुनि गङ्गासुत राजहि कहै॥
ब्राह्मण चत्रिय वैश्य सोहाई। चौथो शूद्र वर्ण सुन राई॥
गङ्गासुत तब कहैं बखानी। इनके धर्म नीति सज्ञानी॥
प्रथमहि ब्रह्मकर्म सो जाना। विद्या वेद सहस्र प्रमाना॥
त्रयसंध्या धारण नित ध्याना। वेद प्रमाणहि जौन बखाना॥
योग न जाप न औ अध्यापन। उद्यापन औ धर्म परायन॥
इत्यादि ब्रह्मवर्णके धर्मा। गङ्गासुत भाष्यो यह मर्मा॥
ब्रह्मकर्म सब ब्रह्म सुजाना। ब्रह्मज्ञान ब्रह्मा परमाना॥
सुन्दर जन्म जानु संसारा। संस्कारसे द्विज संचारा॥
वेद अभ्यासंसे विप्र सुजाना। ब्रह्म जन्मसे ब्राह्मण जाना॥

संध्या तर्पण विविध विध, वेदपाठ परमान।
परम कर्म यह विप्रका, भीषम कहा बखान॥

चत्री गौ ब्राह्मणको पारै। मन्त्री प्रीति शत्रु संहारै॥
दुर्भिक्ष जु अन्न कर दाना। गाढ़े शरण न जाय जो प्राना॥

रणमें शूरधर्म्म मन माना। है क्षत्री जो धर्म्म बखाना॥
वैश्य वणिज कृषिको संचारी। द्विज वैष्णव पूजा अनुसारी॥
सदा धर्म्म जो यहै बखाना। चौगुण वर्ण धर्म्म जगजाना॥
सुन्दर धर्म सुनै सब कोई। तीन वर्णको सेवत सोई॥
आलस तजा भक्त भगवाना। चौगुण वर्णरु धर्म्म बखाना॥
आपन आपन राखहिं धर्मा। चार वर्णके याही कर्मा॥
सृष्टि होय है केहिन सेवा। त्यागै सत्य सुनहु नृप भेवा॥
के विचार परहै गृहमाहीं। तव तासू गृह भोजन खाहीं॥
राजधर्म जो सुन विस्तारा। मिथ्यावाद दण्ड नहि सारा॥
धन्य प्रजा जो लोभ न करही। दानरु धर्म्म यज्ञ मन धरही॥
जीत बाहुबल यह संसारा। पालहु प्रजा पुत्र परकारा॥
वचन प्रतिज्ञा यहै प्रमाणा। भूप यही नित पाल सुजाना॥
मन्त्री दिश न धरै विश्वासा। प्रीति प्रतीति वचन परकासा।
गऊ ब्रह्म जो विष्णु स्वरूपा। पूजा करब एक मति भूपा॥
तीन दिना के सुनव पुराना। राजधर्म्म सब सुनहु प्रमाना॥

देव दोष मिथ्या नहीं, रहही रैन सचेत।
राजनीतिका धर्म्म अस, रिपुसे जीतव खेत॥

रानी धर्म्म पती कर सेवा। यह वृत्तान्त सुनहु जो भेवा॥
सेवक धर्म्म पती सेवकाई। बिनबोले सबकर अधिकाई॥
ताते धर्म्मज सब सुख पाव। गृहद्वारा विवाह करवावै॥
दशहु अङ्ग गुरुका देई। सेवक धर्म्म कहै पुनि तेई॥

गृहको धर्म अभ्यागत पूजा । अन्नदानसे दान न दूजा ॥
वैष्णव धर्म एकांतकै पाऊ । लीन ज्ञान परसंग उपाऊ ॥
लै संन्यास तपस्या करै । भीषम राजा यह संचरै ॥
सर्वहि धर्मसार यतनाऊ । अन्नदान औ सत्य स्वभाऊ ॥

परहिंसा परकर्म तज, दयावन्त हित होय ।
क्षुधार्थी अनदान दे, यहिसे धम न कोय ॥

गुरुभक्तिपर नाहीं भक्ती । भक्ति विना जात तनु जगती ॥
विष्णुपरे सुर और जु नाहीं । गुरु विष्णुसम कहिये ताही ॥
गंगा परे नदी नहि कोई । एकादशि सम व्रत नहि होई ॥
वेदनाम जो साम प्रमाना । इन्द्रियनाम न रूप अमाना ॥
यह सब नाना शास्त्रक धर्मा । ताको कहिये उत्तम कर्मा ॥
क्षत्री होय शोच का करहू । ज्ञान हमार हृदयमें धरहू ॥
रणमें क्षत्रि उपस्थित होई । बन्धु पिता पुत्रहु नहि कोई ॥
ताते शोच तजो परमाना । राजा सुनिये करौं बखाना ॥
साहस रण क्षत्रीको कामा । भजो चरण तुम श्रीघनश्यामा ॥
हरिके चरण सदा मन लावो । भव सागर तर निश्चय जावो ॥

पिता बन्धु सुत क्षत्रिको, रणमें कौन विचार ।
आपन धर्म जु आप सँग, भीषमकर उपचार ॥
धर्मएक सँग होत निज, और संग नहि कोय ॥
यहिते वह मन राखिये, धम न छोड़ो सोय ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

वैशम्पायन कहैं विचारा । भीषम भाषे धर्म भुआरा ॥
व्रतन शिरोमणि एकादशी । तुलसी पुष्प तीर्थ वनरशी ॥
ताको राजा सुन विस्तारा । दुर्लभ जन्म जो कह संसारा ॥
एकादशिको महिमा या है । भीषम धर्मराजसीं काहै ॥
दैत्य मुरासुर अतिबल भारी । ताते हरि माया सञ्चारी ॥
युद्ध माहिं जीती नहिं पारा । मुराअसुर दानव संहारा ॥
हरिको नाम मुरारी तबसे । हरि वासर जु जन्म है तबसे ॥

अनगिन माया विष्णुकी, माया योग सँचार ।
एकादशिव्रत महिमा, सो तौ सुनौ भुआर ॥

अवधपुरी इक मङ्गल राजा । विष्णु स्वरूप करै सो साजा ॥
संभावती तासुकी रानी । धर्म्म पुत्त गत शूर सुज्ञानी ॥
एकादशि व्रत सो सञ्चारा । ताको राजा सुनौ विचारा ॥
नृपके पुष्पवाटिका आही । तोरै पुष्प उर्वशी जाही ॥
मालाकार पतीका दहै । धर्म्म प्रमाण सभातो गहै ॥
राजा पहँ तौ बात जनाये । तब राजा देखनको आये ॥
तब उर्वशि सब अर्थ सुनाये । हमैं सुरपती यहां पठाये ॥
पुष्पहेतु आये तौ कामा । पतिव्रतरत धर्म्महिके कामा ॥
एकादशिको पुण्य जो चहिये । तबहि विमान अमरपुर जइये ॥
राजा पूछ सब व्यवहारा । कहो भेद नाहीं संसारा ॥

दशमी एकहि वेर नृप, नियम करै आहार ।
एकादशि उपवास व्रत, शुचितनु रूप सवार ॥

एकादशि व्रत रहै उपासा । प्रात द्वादशी होत प्रकाशा ॥
करि अस्नान अन्नदै दाना । एकोतरसै नाम बखाना ॥
यहिके मांह छूट जो होई । एकादशि विसरावा सोई ॥
विना पीत उछरंग न करहीं । ताको पुण्य सबको धरहीं ॥
ताको पुण्य सो पावहि तबहीं । जाय विमान स्वर्गको जबहीं ॥
तौ राजाको जगमो नाहीं । यहि प्रकारको जानत आहीं ॥
खोजत एक पुरुष अस कहई । रजक एक नगरीमें अहई ॥
तासु नारि सो रही कोहाई । एकादशिको अन्न न खाई ॥
क्रोध विवश सो रही उपासा । व्रतपूरण द्वादशी प्रकाशा ॥
तिन चरणनसे छुये विमाना । तबहिं विमान जु स्वर्ग उड़ाना ॥

यह गति देखत भूपमणि, एकादशि परमान ॥
पुत्र समान प्रजापती, पालत रूप सज्ञान ॥

दुखी दरिद कोइ पुर नाहीं । धर्म्म वृद्ध सो राजा माहीं ॥
एकादशि विन और न जाना । और देव नहिं पूजत आना ॥
देशमो घर घर डोंडि बजाई । कहै दूत सबकहँ हँकराई ॥
दशमी संयम कै उपहारा । हरिवासर त्यागौ संचारा ॥
एकादशी जागरण करहीं । प्रातस्नान द्वादशी धरहीं ॥
करै अनेक अन्न जो दाना । पुरमें गृहप्रति करै बखाना ॥
ऐसी बात नगर सञ्चारा । गज वाजी नहिं पाव अहारा ॥
वृद्ध युवा पशु नर अरु नारी । बालक दूध न दे महतारी ॥

चारौ वर्ण प्रजा जे रहहीं । पशु अरु जीव जन्तु जो अहहीं ॥
पापक नगर नहीं लवलेशा । ऐसा व्रत सव नगर प्रवेशा ॥
पशु श्वानादि गजादितक, और जीव चण्डार ॥
मृत्यु समय प्राणी सबै, नहिं यमलोक सँचार ॥
एकवार कौतुक तौ भयऊ । यक चण्डाल मृत्यु जो भयऊ ॥
पापी महा रहा अपराधी । यमके दूत चले ल बांधी ॥
विष्णु दूत ताक्षण तहँ धाये । यमदूतनको दूर कराये ॥
वहु प्रकारसे गये जु ताही । जीवहि विष्णु दूत लै जाही ॥
यमके दूत भाग सब राई । यमराजा सन खबरि जनाई ॥
विष्णु दूत मारे प्रभुकाजा । लै चण्डाल गये सुन राजा ॥
वन्ध छोरिकै हमका मारे । जीवहि लै वैकुण्ठ सिधारे ॥
रथ चढ़ाय लगे पुनि सोई । यमसे दूत कहैं अस रोई ॥
भागे हम लै आपन प्राना । धर्मराज तुम सुनौ वखाना ॥
धर्मराज दूतन दुख देखो । अपने मनमें विस्मय लेखो ॥
दूतहि सँग लै भूपमणि, ब्रह्मलोक पग ढार ॥
ब्रह्मपाश तो जाय तव, कहा वचन सम्भार ॥
मोर काज यह पदसे नाहीं । जेहि मन मानै दीजै ताहीं ॥
कारण तासु सुनौ परमाना । अवधनगर चण्डाल महाना ॥
ताको लेन दूत सब गयऊ । हरिके दूत महादुख दयऊ ॥
तव ब्रह्मा लागे अनुसारन । सुनौ धर्म कहि हौं सव कारन ॥
एकादशी विदित संसारा । महापातकी पावत पारा ॥

एकादशी सुधा जो सहई । तेहि के अनल पाप सब दहई ॥
तोर दूत तहँ जाय न पारा । एकादशी विष्णु अधिकारा ॥
सुना बात ब्रह्माके जाना । धर्मरायको आप बखाना ॥
मोरा इह पद नाहीं काजा । कहे बात ऐसे यमराजा ॥

तब ब्रह्मा कह बात यह, सुनौ धर्मके राव ।
करत पच्छ तव कारणे, रचिये एक उपाव ॥

नारद कहा नारि औ नारा । ताते मोहित भये भुआरा ॥
नयननमो ब्रह्माको जाना । सर्व देवको अंश प्रमाना ॥
सिर्जा नाना रूप अपारा । लै ब्रह्मा तामें जिव डारा ॥
सबपर एक किये परधाना । मोहनी रती रूप परमाना ॥
मोरी बात अवधपुर जाई । रुप मगतको धर्म्म नशाई ॥
ले करपान सुकन्या जाई । नगर निकट ठहरी बन आई ॥
राजा तहां अहेरहि गयऊ । तहां भेट कन्यासे भयऊ ॥
काम विवश मोहित नृप कहई । कह कत मात पिता को अहई ॥
तब कन्या कह बात विचारी । यहि बनमें है वास हमारी ॥

सुरकन्या देवानुग्रह, भयो मोर अवतार ।
व्याह नहीं भा भूपमणि, रहत बनै मंझार ॥

राजा काम मोहके कहई । अस स्वरूप जे बनमें रहई ॥
व्याह न करत सो कौने काजा । कन्या कहत सुनो हो राजा ॥
मनवांछित वर जो मैं पाई । सोई कन्त सत्य समुझाई ॥
राजा कहै चहौ का सोई । पचैं देव जो मनमें होई ॥

अवधनगर जो देश अनूपा । मैं राजा रूप मांगत भूपा ॥
अपने बल जीता संसारा । दैत्य अनेक दुष्ट संहारा ॥
सूरज वंश कहत मैं तोहीं । आवैं मनतौ वरिये मोहीं ॥
कन्या कहा तेज मन जेते । महाबली मैं चाहौं तेते ॥
सत्यप्रण जो राजा कहिये । तउ हम राजा तुमको वरिये ॥
सत्यहमार संग नरपती । तौ हम मानी ताकह पती ॥

जब जो चाहैं हम नृपति, तब सो दीजे मोहि ।
यही शपथ करु राजा, तव हम वरियें तोहि ॥

राजा सत्य कियो परमाना । कन्या तबहीं कीन पयाना ॥
केतिक दिवस रहे तव राऊ । मोहित भये मोहनी भाऊ ॥
दशमी राजा संयम कियऊ । एकादशि व्रत तब ते भयऊ ॥
संयम हेतु भये नृप ठाढ़े । तवहिं मोहनी बोलत गाढ़े ॥
खावहु पान भूपमणि राऊ । तब राजा ताकहँ समभाऊ ॥
एकादशिका संयम अहै । मोरे हेतु नगर सब रहै ॥
तब मोहनी कहत रिसियाई । यह तौ कन्त मोहिं नहिं भाई ॥
राजा भय पुरवासिन सुना । सुनत वात सबही मन गुना ॥
दानरु यज्ञ होमके कर्मा । जानौ यज्ञ राजको धर्मा ॥
संन्यासी वैरागहु जेते । व्रत उपवास कर्म हैं तेते ॥

पान खाइये भूपमणि, तजहू व्रतकर वान ।
परवशते यह खाइये, दीजै हमको दान ॥

राजा तब मोहनीसे सुना। सुनत बात सबही मन गुना॥
ऐसी बात बहुरि जनि कहौ। जो हमार जिव राखा चहौ॥
तुमहू व्रत करिये मनलाई। लेहु अभयपद हरिपुर जाई॥
सुनत मोहनी क्रोधित भयऊ। जाना भूप सत्य अब गयऊ॥
पूर्व कहे जो चाह तुम्हारा। देव जानि अब कहौ भुआरा॥
एकादशी तजौ तुम राजा। जो चाहत हौ सत्य सुराजा॥
नहिं तौ देव पुत्रकर माथा। नहिं तौ व्रत तजहू नरनाथा॥
राजा सुनिकै चकृत भयउ। विनती वचन कहै तब लयऊ॥
मानत नहीं मोहनी बाता। राजहिं शोक भयो तब गाता॥
निज रानीसे जाय जनाई। धर्मांगत पुत्रहु सुनि पाई॥

पुत्र कहा सो वचन तब, सुनौ सत्य तुम तात।
अन्तकाल पै देखहू, यही सत्य संघात॥

धर्मांगत जु वचन तब भाखो। मम मस्तक दैके व्रत राखो॥
बहुत प्रकार पुत्र समझावा। रानी राजाके मन भावा॥
एकादशि व्रत करि अस्नाना। पिता पुत्र दीन्ह्यो बहु दाना॥
पुत्र पद्म आसन करि बैसे। धरे ध्यान योगी जन जैसे॥
तहां मोहनी कहै बखानी। संझावती केशधरि तानी॥
देव सबै तहँ देखन आये। तब राजा कर खड्ग उठाये॥
आसन डोलेव शङ्कर जाना। द्विज स्वरूप करिगे भगवाना॥
दिव्य एक रथ आयो ताहां। दर्शन प्रकट दियो नरनाहा॥

नगरहु सहित परम पद पाये। अन्तरिच्छ राजा मन भाये॥
तब मोहनिको श्रीभगवाना। भाख्यो नरकग्राम परमाना॥

मम भक्तनपर सङ्कट, कौन तहां चण्डार।
ताते अगति तुम्हारी, नहीं तोर उद्धार॥

तब मोहनी बहुत दुख पाई। तब राजा पहँ विनती लाई॥
चमहु मोर दोष नरनाहा। मम उद्धार करौ जगमाहा॥
तब नृप हरिसे विनती लाई। देव दयापति श्रीयदुराई॥
आपअनुग्रह करु नरनाथा। रहिहै तौ यह मोरे साथा॥
तब प्रसन्न भाषे भगवाना। जाहू यंत्र होव परित्राना॥
द्वादशि में जो पारण करहीं। और शयन जो नीद सँचरही॥
ताके व्रतहि धर्म्म बहु होई। तुमका व्रत ह्वै है पुनि सोई॥
तबहि मुक्ति हो तेरी नारी। जग वकुण्ठपुरी अधिकारी॥
यह वरदान जो मोहनि पाई। पुरी सहित नृपनगर सिधाई।
भीपम भाषे पद्मपुराना। धर्म्मराज सुनतहि सुखमाना॥

एकादशी महातम, भाषे सब गांगेव।
वैशम्पायन कहत भे, जन्मेजय सुन भेव॥
हरिवासर उत्तम जु व्रत, सर्व पाप चय होय।
नाम सदा जो गावहीं, तेहि समान ना कोय॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

जन्मेजय सुनिये धर काना। धर्मराजसे भीष्म बखाना॥
वनस्पतीमें तुलसि बखानी। ताको महिमा कहँ को जानी॥
तुलसी रोपहि पूजहि ताही। प्रातदर्शसे पाप नशाही॥
तुलसी रानि विष्णु है राऊ। करत ध्यान हरिलोक सो पाऊ॥
एक पात राधे यदुराई। जन्म जन्मके पाप नशाई॥
करै प्रदक्षिण बारम्बारा। कबहूं यमपुर नहीं पैसारा॥
शीश नवाय पत्र शिर धरही। तनुमेंके सब पातक हरही॥
संध्या दीप नित्य जो दीन्हा। अन्धमार्ग उज्यारा कीन्हा॥
तुलसी दल पूज भगवाना। शालिग्राम शिला परमाना॥
सदा वास वैकुण्ठहि पावै। तुलसी महिमा कहत न आवै॥

सुमिरन तुलसी मन्त्रको, लह वैकुण्ठ स्थान।
धर्म्मराजके आग्रह, भीषम कहे बखान॥

शालिग्राम रूप हरि जोई। तुलसी दल सन्तुष्टहि होई॥
पूर्व दैत्य यक जलचर नामा। तासु तिया वृन्दा गुणधामा॥
देवन सङ्ग महारण होई। दैत्यहि जीति सकै नहि कोई॥
वृन्दा पतिव्रता अवतारा। आप शरीर दैत्यकर धारा॥
तब हरि माया करि विस्तारा। तासु धर्म्म नहिं दैत्य सँहारा॥
वृन्दापहँ यह मांग्यो हरी। कै छल जाय नारि सो करी॥
रति दानहि जब वृन्दा दयऊ। तब रणमध्य दैत्य वध भयऊ॥
तब वृन्दा जाना सब भेऊ। पाहन शाप हरीको दयऊ॥

दैत्यहि गति कारण तव नारी। तव हरि पाहीं कहेव विचारी॥
हरिने कहो कोटि अवतारा। पाहन खण्डव देह हमारा॥

पत्र तोर मम पूजा, तैं तरि है संसार।
शालिग्राम होब हम, तुम तुलसी अवतार॥

सो तुलसीकी महिमा छिनछिन। शङ्कर शेष वखानत निशिदिन
तुलसी माला जप जो करहीं। ताहि फूल सञ्चित जो धरहीं॥
शालग्राम शिलाको जोई। तुलसी दलसे पूजन कोई॥
उत्तम पूजा कोइ करावै। अन्त वास वैकुण्ठहि पावै॥
तुलसी मञ्जन हरिके पासा। भीषम कहै बात परकाशा॥
तुलसी गृह मञ्जन जो करहीं। उत्तम मारग सो पगु धरहीं॥
तुलसी मांह अर्घ्य जो देई। अन्तकाल सुख पावै सोई॥
तुलसी वास वदन परकाशै। तीने वास पापसो नाशै॥
तुलसी गेह द्विजन जो देई। उज्ज्वल मार्ग प्राप्ति सो होई॥
तुलसी मृत्यु समय जल पाव। पापी ह्वै वैकुण्ठ सिधावै॥

तुलसी महिमा भाष्यऊ, धर्मराज सुन कान।
तुलसी भक्ती करत जो, ताहि प्रीति भगवान॥

आगे सुनो धर्मके राऊ। तीरथ माहँ वनारस भाऊ॥
जाति पत्र दै पूज महेशा। यमके नगर न करु परवेशा॥
श्रीफलकेर पत्र महँ सोई। शिवा शम्भु सन्तुष्टित होई॥
शिवके लोक वास सो पावै। काशी मध्य जु प्राण गँवावै॥
जो काशीमें करवट लेई। मन वाञ्छित फल पावै सोई॥

जो काशीमें करिहै वासा । यमके दूत न आवहिं पासा ॥
जो काशीमें नर कहुँ मरई । तौ कैलास गमन सो करई ॥
जो काशीमें धरही ध्याना । हो शिवलिङ्ग रूप परमाना ॥
जो काशीमें गोधन दाना । ताको फल अनन्त नहिं जाना ॥
जो काशी तीरथ नृप कहई । हर त्रिशूल पै काशी अहई ॥

जो काशी महँ वास कर, सहित महातम राव ।
शिवस्वरूप तेहि अन्त है, यमके नगर न जाव ॥

तरे पतित वह गङ्गापावनि । देव मुनिनके शोक नशावनि ॥
कोटिन लिङ्ग करै परकासा । सदारहत वासहि कैलासा ॥
महिमा ताहि कहत ना आवै । तीर्थ बनारस ब्रह्म बतावै ॥
यमके द्वारन परी पुकारा । काशीवास वर्ण अधिकारा ॥
हरपूजा काशीकी महिमा । बहुत प्रकार बखानी ब्रह्मा ॥
धन्य धन्य जो लच्छि जनावै । सन्तत वृद्धि शत्रुक्षय जावै ॥
रणमें जेतिक होत प्रकाशा । तनुसे व्याधि होत है नाशा ॥
शशु प्रस्वरूप लिङ्ग परकाशा । अन्तकाल तेहि शिवपुर वासा ॥
हरको वास जो काशी अहई । भै कैलास मृत्य पुर रहई ॥

काशीकेर महात्म्य यह, तुमसे कहा बुझाय ।
चेतो धर्म्मज धर्म्म नृप, सेय चरण यदुराय ॥

औरौ धर्म्म सुनो नरनाहा । कार्त्तिकमास न्हान जो जाहा ॥
औ वैशाखस्नान प्रमाणा । ताको संख्या सुनिये काना ॥
आठमास कार्त्तिक अस्नाना । दश वैशाख स्नान प्रमाणा ॥

मास मास यहि विधि जो करही । गो सेवा औ दान सँचरही
पञ्चरतन पट पिण्डादाना । करे होम जो शास्त्र विधाना ॥
प्रतिव्रत मास यही परकारा । ताके फल जो सुनहु भुआरा ॥
नृप होवे सुधर्म परमाना । पावै सुख जन्महि भरि नाना ॥
नृपधर्महि तजि पाप उपावै । नरकवास ता कारण पावै ॥

कार्त्तिक अरु वैशाख जो, ताको सुनौ बखान ।
भीषम भाषे नृपतिसे, पद्मपुराण प्रमाण ॥

औरो धर्म सुनौ दै काना । कन्या अरु कन्याको दाना ॥
ताके फल कत कहौं बुझाई । विष्णु लोक सन्तत सुखदाई ॥
कन्याको ले धान्य जो कोई । महापातकी जगमें होई ॥
ताको गती कल्पभरि नाहीं । धर्मकथा सुनहू मम पाहीं ॥
गऊ दूध घृत मधुको दाना । जाय स्वर्गसो दिव्य विमाना ॥
दानधर्मको यह व्यवहारा । धर्मव्रत जब सुनौ भुआरा ॥
शक्ती रचो अष्ट उपवासा । ताके फलहि पाव कलासा ॥
धर्मव्रत जो यह परमाना । ताके फलको करो विधाना ॥

नाना धर्म जु शास्त्रमत, भीषम कहा बखान ।
धर्मराज सुनतै तबै, ताते पाप नशान ॥
सब पुराण परसङ्ग तौ, भाषे तहँ गाङ्गेय ।
जो यह मत प्राणी चलै, तौ फिर जन्म न लेय ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

औरौ भीषम कहा बखानी। गंगाको माहात्मत्र सुजानी॥
कंदु नाम मुनि एकहि रहंई। ताकी कथा भीष्म जो कहंई॥
सो गृह तज द्विजपहँ मन भयऊ। पृथ्वीकी परदच्छिणा दयऊ॥
नाना तीरथ भर्मत अहई। केवल प्रीति विष्णु के रहई॥
धर्म्म रूप विष्णु कै भक्ती। चाहे संत होन नहिं अगती॥

जेतिक तीरथ पुहुमिमें, वन सर नदी पहार॥
भर्मत भर्मत जगतमें, कीरत सब संसार॥

चंदरभाग नदीपर गयऊ। चंद्रकेतु राजा तहँ रहेऊ॥
मंडप एक अहे अनुपामा। पंच वर्ष तहँ कर विश्रामा।
विकट रूप देखा द्विज जाई। महाशोक सो ब्राह्मण पाई॥
पांचौ कहें क्रोधसे बातां। कहौ नाम सोई सख्याता॥
द्विजने कहा कंदु मम नामा। कौन जाति है कितको धामा॥
सुनत वचन तब पांचौ कहई। पांचौ जना प्रेत हम अहई॥
सूचीमुख श्टंगीकर अहई। जो यहिके वर येशित कहई॥

यह चारौजन प्रेत हरि, पंचक लेखक नाम॥

जौने पापहि प्रेत भै, ताको सुनौ बखान॥

वरजो शीत प्रेत परधाना। प्रथमहि कहिये आप बखाना॥
सत्य बातको झूठ कहाये। ताते महाकष्ट द्विज पाये॥
तीनहि पाप प्रेत अवतारा। परयोषित है नाम हमारा॥
सुचीमुखी तो व्रतहि बखाना। मेरी बात सुनौ यह काना॥

ब्राह्मण इक मेरे गृह आवा। कर अपमान गव उपजावा॥
वहां जात्र जहँ यज्ञ सु होई। ऐसा झूंठ कहा हम सोई॥
आशा देके विप्र बोलावा। प्रेतजन्म ताहीसे पावा॥
सूचीमुख ताते भो नामा। अब इष्टंगीकर करें बखाना॥
अतिथि जु मांगा मोपहँ दाना। चुधावंत हम कौन बखाना॥
रहत अन्न मैं नाहीं दीना। प्रेत जन्म ताहीसें लीना॥

ठाढो भिक्षुक रहो तहँ, उत्तर तुरत न दीन॥
चुधावंत भो विप्रवर, प्रेत तबहि कहि लीन॥

लेखक कहता बात विचारी। ब्राह्मण सुन अपराध हमारी॥
लेखक कह माया भर्माऊ। चुधावंत तो इक द्विजआऊ॥
ठाढ़ विप्र आशा तब कीन्हा। ताको मैं कुछ उतर न दीन्हा॥
पहर एक ठाढ़ा है रहेऊ। भा निराश मुख फिरिकै गयऊ॥
तीने पाप प्रेत अवतारा। ताते लेखक नाम हमारा॥
वहिकै बात सुनौ परवेशा। द्विजसे प्रेतक कहत नरेशा॥
गुरु नारायण माना नाहीं। विद्या पात्र गर्व मनमाहीं॥
गुरु विप्र माना नहि राई। प्रेत कि योनि ताहिसे पाई॥
सुनि पांचो जन केर उपाई। विस्मय होय कहा द्विजराई॥
काम भखनहो जक्त तुम्हारा। ताते देह धरेव संसारा॥

लज्जावंतहि पंचजन, कहे वचन विस्तार।
मलरु मूत्र उच्छिष्ट सब, यह सब करें अहार॥

अंधकालमें रहन हमारा। करौ गोसाँई मम उद्धारा॥
दयावन्त द्विज कहे पुराना। गंगा केर महातम ज्ञाना॥
श्रवण परत पातक क्षय होई। सुनत वचन तरि गे सब कोई॥
गंगा पतितपावनी अहई। मृत्युलोकको महिमा कहई॥
एक समय सब देव उपाई। बैठे सभा अनूप बनाई॥
विष्णु कहा शंकरसे बाता। पंचवदन रागहिं सख्याता॥
शंकर कहेव देवसे बानी। धरो धीर मैं कहत बखानी॥
पंचवदन जो राग गँभीरा। सबै देव धरि सके न धीरा॥
लिये कमंडलु सो जल परहीं। गङ्ग निमित्त तौ शंकर करहीं॥

विष्णु शरीरहि सोय जल, राख्यो ब्रह्मा जानि॥
सुनौ न्टपति भीषम कहे, गंगा चरित बखानि॥

जब बलि छले तिपद हरिभयऊ। एकजपद आकाशहि गयऊ॥
ध्यान तजो ब्रह्मा मन कीन्हा। वहि जलसे चरणोदक लीन्हा॥
कन्या रूप भई अवतारा। जल स्वरूप प्रकटी त्रयधारा॥
सो गंगा मृत लोकहि आई। सोइ महातम सुन मनलाई॥
पतितपावनी गंगा अहई। महापातकी पातक दहई॥
सूरज वंश सगर न्टप भयऊ। साठि सहस्र पुत्र निर्मयऊ॥
महावीर सेना बलबाना। अश्वमेध यज्ञहि न्टप ठाना॥
बहुत मुनी आये सब राऊ। अश्वमेध यज्ञहि निर्माऊ॥
सो सब व्रत करिकै उपकारा। श्यामकर्ण पूजा संचारा॥
साठि सहस्र पुत्र दल संगा। परदक्षिण करि छुटा तुरंगा॥

नाना देश जु सब जिते, कहत होय विस्तार ॥
सुरपति मंत्र किये तब, यज्ञ खंड अनुसार ॥
जाना इन्द्र मोर पद लेई । तासे मन शङ्का भै तेई ॥
इन्द्र आय तब माथा धरी । श्यामकर्ण को लै गये हरी ॥
पुरी पताल कपिल मुनि पाहीं । बांधे अश्व जान कोउ नाहीं ॥
लगी समाधि मुनी नहिं जानी । गये इन्द्र निज स्वर्गस्थानी ॥
तब सब बहुतो खोज तुरंगा । कहँ गो अश्व भया मनभंगा ॥
तब पद चिह्न तुरंगम जाई । देखा अश्व मुनीके ठाई ॥
तब सब खोदे पुहुमी माहा । साठि सहस्र कुदारिन जाहा ॥
देखा सबहि चोर करि जाना । मारा लात धरेव जो ध्याना ॥
अश्व चुराय दूरि बड़ आये । महा कठिनतासे हम पाये ॥
अब मुनि बनो धूर्त्त अज्ञानी । हमरी महिमा कुछ नहिं जानी ॥
छूटा मुनिको ध्यान जू, क्रोधित नयन निहार ॥
साठि सहस्र समेत तो, भये पलकमो छार ॥
सगरभूप तब सुनि यह बाता । साठि सहस्र जो पुत्र निपाता ॥
पुत्र शोक राजा तब कियऊ । महा खभार यज्ञ नहिं भयऊ ॥
जेठ पुत्र असमञ्जस आया । राजा ताको वेगि पठाया ॥
कपिल मुनीसे कहो प्रणामा । हे मुनि कवन कौनहो कामा ॥
तब असमञ्जस गये पताला । जहँ कपिल मुनि ध्यान संभाला ॥
जाय प्रणाम कीन तेहि चरणमें । कपिल मुनी हर्ष तब मनमें ॥
तब भाषा जो मुनी विचारा । विना दोष मम लातहि मारा ॥

ताहि जरे सब राज कुमारा । हम नहिं जानैं अश्व तुम्हारा ॥
लै घोड़ा तुम जाहु कुमारा । करौ जाय तुम यज्ञ सँचारा ॥
करि परणाम अश्व तब लाये । अवध नगरमें तुरत सिधाये ॥

करी यज्ञ पूरण तबै, जोहै तासु विधान ॥
सगर नृपति अति हर्ष मन, दीन द्विजनको दान ॥

यहि परकार यज्ञ तब भयऊ । कितने दिवस बीतिकै गयऊ ॥
सगर नृपति परलोकहि गयऊ । असमञ्जस राज्यहि मन दयऊ ॥
बन्धुवर्ग कस हो उद्धारा । यह चिन्ता राजा अनुसारा ॥
तब वशिष्ठसे पूँछा जाई । तिन गङ्गाको नाम बताई ॥
ब्रह्म कमण्डलमें सो अहई । करिकै ध्यान मुनी तब कहई ॥
करिकै तप जो आनै पारहु । कुल समूह तुरतै उद्धारहु ॥
सुनिकै राय हेमंचल गयऊ । तहाँ जाय तबही मन दयऊ ॥
देववाणिको भा सञ्चारा । तुमसे नाहीं होब भुआरा ॥
तोर पुत्रकै सुत अवतारा । पुत्र तोर तौ करै उधारा ॥
तब सुनि राजा गृह फिर गयऊ । असमञ्जस ताको सुत भयऊ ॥

असमञ्जसको अंतभा, अंशुमान भे राव ॥
केतिक दिन ये राज्यकरि, संतति नाहीं पाव ॥

सुनी बात यह जबहिं भुवारा । मोरे सुतसे वंश उधारा ॥
मोरे पुत्र भयातौ नाहीं । ताते राज्य छोड़िक जाहीं ॥
राजा गये छोड़िकै राजै । हेमाचलमें तपके काजै ॥

कै तप भूप तजे तव प्राना। सोते धर्म्म रानि सब जाना॥
पाट शिरोमणि हैं द्वै रानी। तब वशिष्टसे कहा बखानी॥
वंशनाश ह्वै गो मुनिराऊ। सुनि वशिष्ठ तब कहा उपाऊ॥
सूर्य्य वंशहित चिन्ता करई। तब वशिष्ठ ज्ञानहि हित धरई॥
वाम वाम करु रति श्टङ्गारा। होई पुत्र करव उपकारा॥
रानी गृह आई तव ताहां। रति श्टङ्गार कीन बिन नाहा॥

रह सगर्भ आशा भई, सुनै जाय भव त्रास।
दशम मासके अन्तमैं, पुत्र जन्म परकास॥

अस्थिनहीन मासकै देहा। लै वशिष्ठ गर्भ करु येहा॥
मुनिकहं जहां सुमारग आहीं। अष्टवक्र मुनि न्हानक जाहीं॥
सो मारगमैं राखु कुमारा। होव अस्थि तौ सुनौ भुआरा॥
बालक लैकै तहां रखाई। दोनो रानी तव गृह जाई॥
अष्टावक्र मुनी तहँ आये। पथमैं बालक देखन पाये॥
जाना मुनी करै अपमाना। विस्मय हर्ष वचन अनुमाना॥
अस्थि रहत वाके जो देहा। अधिक वक्र हो कहा सनेहा॥
जो विन अस्थी देह सवारा। होइ हो दिव्य अस्थि सुकुमारा॥
कहत तासु तनु अस्थीभयऊ। दै आशिष मुनि तव गृह गयऊ॥
रानी देखि अङ्कमैं लाई। देखा बोल वशिष्ठहि ठाई॥

हर्षित ह्वै मुनि नाथ तव, धरयो भगीरथ नाम।
बालदशाके अन्त तव, सुनहु सकल बखान॥

पितृलोक केरा उपकारा । वह सब कैसे होय उधारा ॥
तबहिं भूप जो चाहै जाना । मुनि वशिष्ठ तब जाय तुलाना ॥
पाद्य अर्घ्य देकर परणामा । पितृ उधारण पूजहि कामा ॥
तब वशिष्ठ भाष्यो यह वानी । गङ्गाबिनु नहिं गति अरु जानी ॥
राजा कह गङ्गा कत अहई । नारदसन वशिष्ठ तब कहई ॥
सांचे राव जु नारद आये । गङ्गामर्म पूंछि मन लाये ॥
नारद कहा सुनौहो राऊ । मैं यक दिन गो इन्द्रके ठाऊ ॥
पूछेव गङ्गा महिमा ताहीं । इन्द्र कहा मैं जानत नाहीं ॥
इन्द्र देश मैं आयो ताहां । यमराजासों पूछे आहां ॥
उनहुँ कहा मैं जानत नाहीं । यहतौ मर्म ब्रह्मका चाहीं ॥

पूछा विधिसे जायकर, कह्यो शम्भु पहँ जाव ।
शिवपहँ तब हम जायके, पूछा भेद बताव ॥

शिवकह तब गङ्गाका नामा । नाशत पाप करै मनकामा ॥
जाहु विष्णु पहँ तुम मुनिराऊ । गङ्गाभेद तहां सब पाऊ ॥
तब वैकुण्ठ विष्णु पहँ गयऊ । महाभेद मैं पूछत भयऊ ॥
विष्णु कहा सुन चितधरि नारद । गये विष्णु पहला गुणशारद ॥
सुने विष्णु यह पद मन भाना । बड़ आश्चर्य्य चित्तमहँ आना ॥
गङ्गाकी महिमा जु बखाना । विष्णुरूप भै विष्णु सुजाना ॥
नारदगये जहां तौ राऊ । पूछा महिमा गङ्गा नाऊ ॥
देखा रूप शंखकर चारी । चक्र गदा अरु पद्म सवारी ॥

पूछा वात कहा तिन जानौ । चारौ जने सुनौ मुनि ज्ञानौ ॥
प्रवास योनिमें भा अवतारा । विना अहार महादुख भारा ॥

गङ्गाजल यक मुनीलै, जात रहे मगमाहि ।
और एक मुनि मांगऊ, भेंट भई तव ताहि ॥

तेहि मारगपर परे हजारहि । विप्र विप्र दोउ हर्षित कारहि ॥
कुशसे जल मुनि मुनिपर डारा । परा बून्द यक भाग्य हमारा ॥
बून्द एक जल तनुमहँ डारा । तासे रूप यह भयो हमारा
तव वैकुण्ठमाहँ हम आये । नारद राजहि वात सुनाये ॥
सो गङ्गा आने जो पावहु । पितृ सबै यमपाश छुड़ावहु ॥
राजा सुनत वात विस्तारा । मन्त्री सौंपा राज्य भण्डारा ॥
माता पांह विदा तव भयऊ । मन्त्र एक भागीरथ दयऊ ॥
प्रथम मेरुपर ग तप कीन्हा । यम अरु नियममाहिं मन दीन्हा ॥
धर्मराज हर्षित मन भयऊ । मन्त्र एक भागीरथ दयऊ ॥
सिद्ध करौ यह मन्त्र नरेशा । पैहौ गङ्गाकर उपदेशा ॥

यही मन्त्रके सिद्ध हित, तवगे चलि कैलाश ।
कथारूप गङ्गा अहै, महाशोक परकाश ॥

वारह वर्ष तपस्या कीन्हा । पूरण आश शम्भु वर दीन्हा ॥
गङ्गा अर्थ भगीरथ कहई । कहा रहै मोहि पाहन अहई ॥
वारहवर्ष रहे निरहारा । गङ्गा नहिं पाये कर्तारा ॥
तवहि विष्णुका तप सञ्चारा । वारह वर्ष रहे निरहारा ॥
नाना अस्तुति कै परकाशा । कह प्रसन्न हरि राजा पासा ॥

चार भुजा भै गरुड़ सवारा। भागीरथ तब करै विचारा॥
हौ तुम भक्त हमारे राजा। करौं तोर मन वांछित काजा॥
चलहू सङ्ग हमारे तहां। पुरवैं आशा गङ्गा जहां॥
हरि आगे पाछे जु भु आरा। आये तब ब्रह्माके द्वारा॥
अर्घ्य पाद्य गङ्गा तब दीन्हा। वही नीर चरणोदक लीन्हा॥

शीश माह चरणोदक, ब्रह्मा डारेव ताहि।
शिव आराधन कीन्हेऊ, ब्रह्म कमण्डलु माहि॥

कन्या हरिसे कहा विचारा। तुम्हरे चरण मोर अवतारा॥
विष्णु कहा गङ्गा तव नामा। पाप विनाशन जग विश्रामा॥
जाहु मृतकपुर करौ न वारा। तव गङ्गा वाणी सञ्चारा॥
जगके पाप हमहिं निस्तरैं। मेरे पाप कहो को हरैं॥
तोरे पाप हरैं हरि कहहीं। साधु स्नान करैं तो दहहीं॥
नरको पाप जन्तु तौ खाई। वही जन्तु नर भच्छै आई॥
जाके पाप तासुके पांहा। सत्य स्नान तोरि गति आहा॥
सुनि जलरूप गङ्ग भइ तबहीं। आज्ञा हरिकी पाई जबहीं॥
भागीरथ जो अस्तुति सारा। माता पितनकर उद्धारा॥
ब्रह्मा हरिको कर परणामा। लै गङ्गाजल राजा ग्रामा॥

आगे नृप भागीरथ, पाछे सुरसरि धार।
पहुँचे तौ कैलाशमें, शङ्कर देखि विचार॥

जाना गङ्गा चलीं भुआरा। जटा तीन तौ तहां पसारा॥
जटा माहँ गङ्गा शिव लयऊ। महा शोर भागीरथ कियऊ॥

हरि तुम बड़ दानी जु कहाये। मैं सेवक नर दुख बहु पाये॥
तब गङ्गा तुम तौ मोहिं दीना। अब वटपारीके तुम लीना॥
शिव समाधि हरि हर्षित भयऊ। मांगुमांगु वर बोलन लयऊ
राजा कहा कष्ट बहु लाये। महाकष्टसे गङ्गा पाये॥
छुटी समाधि शंभु सुख भयऊ। मांगु मांगु वर शंकर कहऊ॥
जो तुम राखा दीजै दाना। मोरे पितृ होयँ परित्राना॥
अस्तुति बहुत भगीरथ कीना। तब गङ्गाको शंकर दीना॥
कै प्रणाम आये तब राऊ। शङ्ख बजावैं हर्ष उपाऊ॥

हेमगिर्द दुर्गम शिखर, अटकी गङ्गा ताह।
पर्वत लांघि न पारही, रोवैं तब नरनाह॥

गङ्गा कहा पुत्रसे वाता। इन्द्र पास अब जाव सख्याता॥
ऐरावत हस्ती लै आवो। देहि मार्ग करि पारहि जावो॥
राजा गये इन्द्रके पाहा। अस्तुति बहुत करै नरनाहा॥
वारहवर्ष तपस्या कीन्हा। तबहिं इन्द्र यह आज्ञा दीन्हा॥
मांगु मांगु वर सुन नृप वाता। ऐरावत दीजै सुर त्राता॥
इन्द्र कहा तुम गजपहँ जावो। जासे मनवांछित फलपावो॥
भागीरथ तब गज पहँ आये। सब वृत्तान्त गजहि समुझाये॥
पर्वतमें करि दीजै द्वारा। हमले गङ्गा जायँ सो पारा॥
गज भाषा हमसे नहिं होई। होय काज वच राखै कोई॥

जो गङ्गा रति देइ मोहिं, देव तबै करिपार।
नातौ हमसे होय नहिं, अन्ते खोजु भुवार॥

सुनिकै राव गये फिरि ताहां। गङ्गा जाना अन्तर माहां॥
रोदन भूप करौ केहि हेता। आनहु गज तुम जाय सचेता॥
कहहु हस्तिसे वचन हमारा। सहै हमार जु तीन प्रहारा॥
तौ हम देवै रतिको दाना। जाहु पुत्र मम करौ बखाना॥
तब राजा फिरि गज पहँ आये। यह वृत्तान्त कह्यो समुझाये॥
सुनिकै गज तब परम अनन्दा। भागीरथ कह सुन शुभ दन्दा॥
तीन तरङ्ग हमारे सहई। रति संग्राम हमारो लहई॥
भाषे गज सो सहब तरङ्गा। तब तरङ्ग पर हारेव गङ्गा॥
एक लहर तब गजगै साहा। दुःखित महा जीव औगाहा॥

गये बूड़ि गज ततच्चणहि, पहिलि लेत तरंग।
दूसरि लहर जो जल उठी, सहि नहिं सक्यो गयन्द॥

तब गज सुस्त भयो जल माहीं। गङ्गाकी अस्तुति तब काहीं॥
मैं पापी माता सुनु बाता। राखु प्रहार शरण सख्याता॥
तव महिमा जानैं सब देवा। करत चरण तुम्हरे नितसेवा॥
गङ्गा कह्यो अरे अज्ञानी। गर्भहिसे तव यह गति जानी॥
देव सबै मम राह उपाई। सुनतै गज तब उठा होराई॥
दन्तराय पर्बत गज ताहां। भये रन्ध्र तब पर्वत माहां॥
चलिकै पार भये गजधारा। गजने इन्द्रलोक पगु धारा॥
आगे चले भगीरथ राऊ। पाछे गङ्गा चार सिधाऊ॥
जह्नु मुनीश करैं तप जहां। पहुँचे जाय अचंभित तहां॥

जाना मुनिहैं गङ्ग यह, आय मृतुत्र अस्थान ।
परम हर्ष मन महामुनि, कर गङ्गा कहँ पान ॥
भागीरथ विस्मय तव भयऊ । तव मुनीशकी सेवा कियऊ ॥
मुनिके पांह विष्णु को धाये । वारह वर्ष तु तहां गँवाये ॥
कोटिन विप्र गऊ दै दाना । नहिं गङ्गासम तीर्थ बखाना ॥
विष्णु आय हर्षित तव भयऊ । मुनिकर ध्यान तुरतछुटि गयऊ
विष्णुकहा तत्र मुनिसों वाता । भागीरथ जगमहँ सख्याता ॥
गङ्गा देहु वहुत सुख पाये । पितृलोक उद्धारन आये ॥
तव मुनि ज्ञान विचारे तहां । गङ्गा देउँ कौन विधि महां ॥
मुत्र अशुद्ध मुख जूठा होई । कहै उच्छिष्ट जगत सब कोई ॥
जांघ चीरिकै गङ्ग निकारा । जाह्नविनाम ताहि से धारा ॥
अन्तर्द्धान विष्णु भै जाहीं । भागीरथ हर्षित मनमाहीं ॥
आये देश माहिं तव राऊ । माता पहँ धै गङ्गा लाऊ ॥
गङ्गा पाहीं कहा यह, गङ्गा कहि गोहराव ।
तवहीं माता तव तहां, औरो ध्रुव बैठाव ॥
मातापाहँ भगीरथ गयऊ । मध्य नगर हर्षित तव भयऊ ॥
कहेउ वात माता पद गहा । गङ्गाका वृत्तान्त सव कहा ॥
तहां देव गङ्गा परवाहा । जाते जाय विष्णुपुर माहा ॥
यहि प्रकार पूंछत हो राऊ । अभ्यन्तर अव सुनो उपाऊ ॥
गङ्गा नाम गऊ यक रहे । एक अहीर पुकारत रहै ॥
गङ्गा गङ्गा नाम पुकारा । गङ्गा चली सहस द्व धारा ॥

भागीरथ कहते तब बाता। यहका कौन कहौ मोहि माता॥
तब गङ्गा राजासे कहेऊ। तुम्हारा संशय अबनहिं रहेऊ॥
तब पितरनको करौं उधारा। पाछे हम तारब संसारा॥
भागीरथ प्रसन्न मनमाना। भीष्म धर्मनृप पांह बखाना॥
कंदु नाम जो ब्राह्मण, कहे प्रेतगण जाँह॥
चंद्रभाग नहिं प्रापती, परमहर्ष मनमाँह॥
महापातकी जगमें अहई। गङ्गा परसत पाप न रहई॥
धन्य भाग्य जो लेत तरङ्गा। पाप नाश अरु निर्म्मल अङ्गा॥
कोटिन विप्र गऊ दे दाना। नहिं गङ्गाके नीर समाना॥
सब तीर्थनमें गङ्ग प्रधाना। श्रुति स्मृति भागवत बखाना॥
यहि प्रकार द्विज कथा सुनाये। पंचविमान स्वर्गसे आये॥
प्रेतरूप तज ताही वारा। विद्याधर स्वरूप संचारा॥
स्वर्गलोक भा तेहिकर ग्रामा। गङ्ग महात्म्य सुनत सुखधामा॥
जाके चरण गङ्ग अवतारा। ते हरि सब दिन संग तुम्हारा॥
तजो शोक सब धर्म्म भूपती। हरि सहाय संतत तुम गती॥
सत्य सत्य जानौ परमाना। यही देवपति श्रीभगवाना॥
यहि प्रकारसे भीष्मजी, सुनते पाप नशाय।
गङ्गाकेर प्रभाव कह, धर्मराज समुझाय॥
सर्व्व नदीमें गङ्गा, देवनमहँ भगवान।
छन्दमांह गीता सही, धर्म न दया समान।

इति षष्ठ अध्याय॥ ६॥

धर्म्मराज सुनहू परमाना। भीषम भाषे अथ पुराना॥
महादेव सेवा मन लावै। सो कैलाशहि वासहु पावै॥
शिवको वरत चतुर्द्दशि अहै। धन्य रु धन्य रूप हर कहै॥
चरत नाम व्याधा संसारा। सो कैलाशमाहिं पशु धारा॥
कौन रूप सुनते विस्तारा। भीष्म कहा सुन नृपति भुआरा॥
पशुन मारिकै वनसे लावै। मांस बेंचिकै दिन भुगतावै॥
एक दिवस तौ उपवन जाई। सांझभई यक जन्तु न पाई॥
महाशोच बाढ़ा मनमाहीं। कौने रूप आज गृह जाहीं॥
इस्त्री सुत पुत्री उपवासा। सबतो अहैं हमारी आसा॥
यह चिन्ता व्याधाके भयऊ। महाशोच करता तब लयऊ॥

कौन भांति गृह जाउँ मैं, सबतौ परे उपास।
यह चिन्ता व्याधा मनहिं, तनुके मांह प्रकास॥

महादेवको व्रत दिन सोई। महाशोक व्याधाके होई॥
तब मनमें यह करै विचारा। धृगधृग जगमें जन्म हमारा॥
ताते यह काननके माहीं। रहौं आज हम गेह न जाहीं॥
यहँ पर बाघ सिंह बहु अहई। जन्मअन्त अब व्याधा कहई॥
श्रीफल तरु चढ़िकै सो रहई। व्याधा हृदय शोच बहु गहई॥
कर्म्म अंकपे सदा सहाई। कर्मते हेतु दुःख सुख पाई॥
जो विधनाहै लिखा लिलारा। दूसरे कौन मिटावन हारा॥
मर्महिसे सुख होत जो राई। पावै सुख अनेक सुखदाई॥
सदाचित्तस मेटत सोई। लाख उपाय करौ जो कोई॥

व्याधा रहिगो राति तहँ, श्रीफल तरुके डार ॥
महाभयंकर निशि तहां, भयो महा अँधियार ॥
क्षुधावन्त अतिही दुखपाई । रोदन करव हृदय दुखदाई ॥
अर्द्ध रातिसे शङ्कर आये । वृषभ चढ़े गौरी सँग लाये ॥
भूतप्रेत जो दैत्य अपारा । शृङ्गी डमरु झांझ मंजारा ॥
ताही वनमें भा उजियारा । सोई तरुवर परश भुआरा ॥
तहँ बैठे हर उमा जो जाई । व्याधाहै कोइ मर्म न पाई ॥
करते नृत्य महेश्वर तहां । रोवै व्याधा सो तरु महां ॥
आंसुपार बहतेहैं ताई । कर्मभयो ताके फलदाई ॥
एक श्रीफलपत्र प्रमाणा । आंसू भीजे रोवत नाना ॥
पवन तेज पत्ता सब झरे । महादेवके शिरपर परे ॥
महादेव हर्षित बदन, कहै बात तौ लीन ॥
ले वरदान आय अब, पुष्पांजलि जो दीन ॥
उतरि वृक्षसे व्याधा पड़ा । हाथ जोरिक सन्मुख खड़ा ॥
शिव प्रसन्न होकर वरदीन्हा । राजा श्री धन्वंता कीन्हा ॥
अन्तकाल सो गो कैलाशा । भोलानाथ भक्त परकाशा ।
व्याधा तब जानै नहिं पाये । दैवी गति पत्ता हरि पाये ॥
जगतमांह करकै सुख नाना । अन्तकाल कैलाश पयाना ॥
भक्तवक्षल तौ शिव भगवाना । ब्रह्म इन्द्र पद पाय प्रधाना ॥
रणमें जो शत्रू संहारा । सोय भवानी वर संसारा ।
राजाधर्म भक्ति मन धरौ । शोक दुःख राजा परिहरौ ॥

शोक करौ तो गहिहै नाहीं । वचन मोर राखै मनमाहीं ॥
केवल करौ हरीको ध्याना । पावहु राजा पद निर्वाना ॥
तजौ शोकहो राजा, चितवौ राधारौन ॥
यहि प्रकार भीषम कहा, तो कीन्हो है मौन ॥
राजा सुना यही सब बानी । तजा शोक तबही परमानी ॥
देव मुनी सब जो अस्थाना । सहित पाण्डवन श्रीभगवाना ॥
प्रति वासर तो राजा जाई । सुना जु ज्ञान पितामह नाई ॥
जेते कहे जो शन्तनुनन्दन । सुनत पाप होतहैं खण्डन ॥
सो चरित्र संक्षेपहि कहेउ । पुनि विस्तार बहुत तोरहेउ ॥
भीषम वर्णो धर्म्म सो, सुनो सत्य मम पाह ॥
महापाप सबनाशही, सुनते श्रवणन माह ॥
नाना शास्त्र पुराण मत, भीषम कह्यो बखान ॥
राजा हृदय राख यह, सत्य वचन परमान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

जरत रहत मेरो हियो, निशिदिन यह सन्देह ।
वरी सम मारो तिन्हैं, जिन सो परम सनेह ॥
कहो भलो कहा होय हमारो । डरपौं दोष दुःख अति भारो ॥
झूटो बोल द्रोण हम मारे । पिता पुत्र भ्राता संहारे ॥
अब मैं प्राण घातकर मरिहौं । इस पृथ्वी को राज्य न करिहौं ।

सत्य सत्य पितु कहौं विचारी। नाथ कौन गति होय हमारी॥
रहत तुम्हारे निशिदिन संगा। बाणन सों वेधो सो अंगा॥
किञ्चित लाज न आवत मोही। हाय भयों मैं कुरुकुलद्रोही॥
फिर निर्लज बनि तुम पै आयो। तुम करि कृपा बहुरि अपनायो
मुख सन्मुख नहिं होत तुम्हारे। बोल न सकत लाजके मारे॥
सब तनुवेध तुम्हारो डारो। कुछ न बडप्पन गिनो तुम्हारो॥
अब मैं पिता तुम्हारी शरना। हरो मोर संशय दुखहरना॥

महा कुकर्मी कुटिल मैं, अन्यायी निबुद्ध।
सब कुटुम्ब गारत कियो, आपसमें कर युद्ध॥

भीषम कहत सकल भ्रम त्यागो। ममता मोह नींदसों जागो॥
सूच्मगति कर्मकी अपारा। होत जात नहिं लागहिं बारा॥
रचो जु वस्तु कर्म्मकी जोई। मन पहिलेही तैसो होई॥
मन बच क्रम जो कर्म्महि धावै। तो कछु क्रम तैसा मन आवै॥
भावी होनहार जो होई। कोटि यतनसे मिटत न सोई॥
दिन दिन चित्त विषै तनु छीजे। ताते ज्ञान अमिय पय पीजै॥
सुन इतिहास नृपति चित धारी। पन्नग वधिक गौतमी नारी॥
तप गौतमी करै बहुतेरो। बालक पुत्र एक ताकेरो॥
सो बालक खेलै बनमाहीं। फिरत रहत वृत्तनकी छाहीं॥
खेलत ताहि सर्पने खायो। सर्पहि वधिक बांधि लै आयो॥

वधिक गौतमीसों कही, अब सब बिगरो काज।
तेरो सुत इन सर्पने, डसो विपिनमें आज॥

वालघात इहि करी अभागे। मारौं याहि तुम्हारे आगे॥
सुनतहि वचन गौतमी वोलौ। अरे वधिकतव मति कहँ डोलौ॥
सर्पहि छांड़ो कहे हमारे। पुत्र न जिये सर्प के मारे॥
विना मीचु तनु नहिं परिहरही। अपनी मीचु सबै कोउ मरही॥
एक जीव अग्निमें जरहीं। एकै रोग व्याधि पचि मरहीं॥
एक क्षुधाकर प्राण गमावैं। एकै शस्त्र जरा मृतु पावैं॥
एक सिंह गज के वश परहीं। एक सर्प विष खाये मरहीं॥
जाको जौन मतो है भाई। ताने ताही विधि मृतु पाई॥
पापीकहँ न पाप मन धरही। अपने पाप आप जरि मरही॥
पापी मारे पाप न होई। ऐसी वात कहत सब कोई॥
वालघात इन कियो अकाजू। याहि न जीवत छांड़ो आजू॥

अवगुणको गुण मानहीं, गुण को परमोपकार।
ऐसे नर संसारमें, कहीं कहीं दो चार॥

अवगुणको अवगुण मन धरहीं। गुणको गुण सब कोऊ करहीं॥
अपने स्वारथ लागे रहई। भली भली सब कोऊ गहई॥
दोष परायो जो नहिं गहई। ताको यश जगमें थिर रहई॥
निपट वुरो रु भलो जो होई। महा साधुके सम है सोई॥
तिन से पृथ्वी सोहे ऐसे। घर सुपुत्रसे दीखै जैसे॥
और जीवको जो दुख देही। सो सब दुख आपनको लेही॥
जो कोउ दुखते डरपै भाई। तौ दुख औरहि देन न जाई॥
यद्यपि वहुत भांति कोउ कहई। तद्यपि कुमति साधु नहिं गहई॥

प्रेरेहु पाप साधु नहिं करई । वह अपने स्वभाव मन धरई ॥
पापी जो समझावै कोई । कोयला घिसे न उज्ज्वल होई ॥

प्रथम जन्मकी वासना, सोई प्रगटत आय ।
कोटि यत्न कर मेटहू, तौहू नाहिं मिटाय ॥

सर्प जान जीवनकी आसा । नर भाषा बोलै अब दासा ॥
अहो वधिक कछु वश नहिं मेरो । हौं पुनि पराधीन मृतुकेरो ॥
कहत मृत्यु, कछु चलै न मेरो । घर घर काल देत है फेरो ॥
थावर जङ्गम जो कछु आही । काल विवश सब जानो ताही ॥
तीनो लोक उदरमें जाके । आदि अन्त कछु नाहिन ताके ॥
धर्म धाम सुख सब फल टरहीं । समय, वृक्ष फल पक गिर परहीं
राखे रहे न कछुक उबारा । काल विवश यह सब संसारा ॥
तीनों काल पाश हैं ताता । आदि मध्य को जानत बाता ॥
मेघ अकाश वायु शशि जैसे । ये सब जीव वसत हैं तैसे ॥
इतनी कहत कालतह आयो । तिन मृतुसों वचन सुनायो ॥
बोलो काल मृत्यु से हँसकर । राखो कर्म्म सकल जग वशकर ॥

मरत जियत सब कर्म्मसे, मेरो कछु नहिं दोष ।
लोग वृथा मोपर करत, मूरखपन से रोष ॥

जन्म मरण गति मोर न मानो । कर्म्म प्रधान सबहि परजानो ॥
हमहं कर्म्म पाशमें आवत । कर्म्महि ते दुख सुख सब पावत ॥
आवत जीव गर्भमें जबहीं । पावत कर्म्म लिखा सो तबहीं ॥
बलविद्या आयुर्धन धर्मा । पाप रु पुण्य करै सब कर्मा ॥

प्रथम कर्म कीन्हे है जैसे। भुगतै बनै सबनको तैसे॥
ऐसो को समरथ जग बली। रोकै चलत कर्म की गली॥
सहस धेनु जहँ कहूं मिलानी। बच्छ मात को ले पहिचानी॥
देश विदेश कहूँ किन जाई। कर्म्महि कर्म्म लेय तहँ आई॥
कबहुँ कर्म नहिं छोड़ै अज्ञा। सोवै सोवत जागै सज्ञा॥
न्यारो नाहिं कर्म्म तनु माहीं। जैसे सङ्ग न छांड़त छाहीं॥

हानि लाभ दुख सुख सुयश, मरण जियन गुणज्ञान।
सबहि होत हैं कर्म्मते, सब में कर्म्म प्रधान॥

ज्यों वनमें रक्षक नहिं कोई। राखै कर्म्म रहै पुनि सोई॥
उलट कर्म्म सकल दुख सहई। घरमें वस्तु न राखी रहई॥
कर्म्म विना न देह निर्वहई। ज्यों विन तेल न दीपक रहई॥
पन्नग मृत्यु कालको मर्मा। यह सब है बालकके कर्मा॥
दुख दरिद्र सब आपहि पावै। जैसे काष्ठ अग्नि उपजावै॥
इस बालकको कर्म्मन मारो। हे मृतु कछु नहिं दोष तुम्हारो॥
तब गौतमी बधिक सों बोली। अहिके बन्ध देहु तुम खोली॥
काल भुजङ्ग मृत्यु नहिं कोई। अपने कर्म्मनको फल होई॥
मोहिं काल ऐसे समुझायो। सब पै कर्म्म प्रधान बतायो॥
तत्क्षण बधिक क्रोध सब गयऊ। उर अन्तर आनन्दित भयऊ॥

मुख्य मानकर कर्म्म को, सर्प गयो वन माहिं।
बोले भीषम धर्म्मसों, बली कर्म्मसम नाहिं॥

सकल कर्म्म करतार वश, कोउ न पावत अन्त ॥
मनते सब सन्देह तज, भजहु सदा भगवन्त ॥

इति अष्टम अध्याय ॥ ८ ॥

तप अरु दान दोउ विख्याता। तिनमें कौन अधिक फल दाता ॥
तपते श्रेष्ठ दान है भाई। महिमा कहत शेष सकुचाई ॥
जो जो भये जगतमें दानी। तिनकी महिमा अचल बखानी ॥
धन बिन दान बनत है नाहीं। ताते धनहि मुख्य जग माहीं ॥
चितवत चलत द्रव्य मन आगे। अतिप्रियप्राणकुटम्बहित्यागे ॥
बन पर्वत समुद्रमें बहई। धनके काज कठिन दुख सहई ॥
धन हित नर उद्यम बहु करई। ता धन लागि प्राण परिहरई ॥
निशिदिन धन आशा मन धरई। मन दे धनकी रक्षा करई ॥
अकृत सुकृतकर धन उपजावै। सो धन दियो कौनको भावै ॥
ऐसो धन जो देत सदाहीं। सो दाता त्रिभुवनके माहीं ॥
सबते श्रद्धा अधिक बखानी। श्रद्धासे जो दे सो दानी ॥

श्रद्धाते जो करत हैं, अन्नदान सन्मान।
ते नर सुरपुर जात हैं, चढ चढ विमल विमान ॥

जौ नर महा अधिक धन पावै। निशिदिन श्रद्धा सहित लुटावै ॥
दान समान कोउ कृत नाहीं। जाको सुयश होत जगमाहीं ॥
श्रद्धा सहित अल्पहू करही। ताको कियो कोटि गुण फरही ॥

अधिक दान श्रद्धा विन ऐसो। ऊसर बीज वये फल जैसो॥
कथा पुरातन कहौं सुनाई। मुद्गल नाम ब्रह्मऋषिराई॥
सदा वृत्ति तिय पुत्र समेता। परम सुधर्म रहै कुरुखेता॥
जोरत दिन पन्द्रह जब जाहीं। तादिन अतिथि पूजकै खाहीं॥
कुटुम सहित जाको वनवासा। अतिथि देख मन होत हुलासा॥
सब देवन मिल ताहि पठायो। अतिथि रूप दुर्वासा आयो॥
उद्यम रूप दिगम्बर रहही। वचन औरके औरहि कहही॥
पन्नगि तहँ ठाढ़ो हुइ रहेउ। मुद्गल वचन बहुरि तब कहेउ॥

मुद्गल मुनिको देखकर, बढ़ो परम अनुराग।
आज मनोरथ सफल भा, धन्य धन्य मम भाग॥

नमस्कार कर पूजा करी। धन धन सुफल आजकी घरी॥
देखत सफल नयन भये मेरे। अमृत रूप वचन सुन तेरे॥
ऐसे पूज अन्न जब दीन्हो। तब दुर्वासा भोजन कीन्हो॥
जेवत जूंठो जौन उबरियो। अङ्ग लगाय सोउ शिर धरियो॥
ऐसे जब आवैं तब पावैं। मुद्गलके मन दूनो भावैं॥
नहीं भई निन्दा कछु जाके। नहिं मन क्रोध कृपणता ताके॥
भलो जान साधू यों कहेउ। दुर्वासा प्रसन्न तब भयेउ॥
तुमसों दाता मिलो न कोई। तुम्हरो यश त्रिभुवन में होई॥
धीरज सहित विवेक विचारा। छांड़ि कृपणता भयो उदारा॥
समदर्शी अरु ज्ञान निधाना। तुम समान देखेउँ नहिं आना॥
मुद्गल सुन मुनीशको वानी। बोला वचन प्रेम रस सानी॥

तुमसे साधु कृपा जो करहीं । तौ हम जीव क्यों न निस्तरहीं ॥
धन्य सोई तुम शरण जु आयो । साधु समागमको फल पायो ॥
जब इहि भाँति साधु गुण गायो । आज्ञा दई विमान मँगायो
लाये जब पारषद विमाना । दुर्वासा अनन्त सुख माना ॥
रत्नजटित प्रकाश मय सोई । बाजा बजत शब्द ध्वनि होई ॥
तिहि चढ़ चलो ब्रह्म ऋषिराई । देवलोक सब करै बड़ाई ॥
देवदूतसों पूछत मुदगल । केतो दूर स्वर्ग ते भूतल ॥
मारग चलत भले जो कोई । सबही प्रीतम मित्र जु होई ॥
ताते तुमसों पूंछत भेवा । स्वर्ग कवन गुण कहिये देवा ॥
देवदूत बोले मुसुकाई । धन्य धन्य तुम हो ऋषिराई ॥

तुम गुणज्ञ सर्वज्ञ हो, जानत कहा न तात ।
हमैं बड़ाई देन को, पूंछत हो यह बात ॥

स्वर्गादिक सुव नन्दन वनके । पुरवैं वृत्त मनोरथ मनके ॥
दिव्य विमान अप्सरा जहां । सकल काम भोगादिक तहां ॥
काम मोक्ष धर्महि मन लावत । स्वर्ग जायँ ते सब सुख पावत ॥
ऐसे जीव स्वर्ग नहिं जाई । जे परधन चुराय कर खाई ॥
चोर कृतघ्नी निन्दक पापी । अदृष्ट भ्रष्ट क्रोधी सन्तापी ॥
कपटी क्रूर कलहमय मंसा । दुख दे जोंहि परायो अंसा ॥
मिलत स्वर्ग इतननको नाहीं । इत उत भ्रमत रहत जगमाहीं ॥
और बहुत गुण कहब बखानी । सुनो ध्यान धर सकल कहानी ॥

सुनो स्वर्ग के गुण हैं जेते। तुमसों विप्र कहौं मैं तेते॥
जय जय शब्द सदा तहँ होई। विना भजन तहँ रहत न कोई॥
विमल कथा सुन्दर सरस, हरहु सकल श्रम शोक।
पशु पच्ची नर जन्तुमें, एकहि जीव बिलोक॥
मिलै कहूँ वहु धन भण्डारा। करिये दान धर्म उपकारा॥
धर्म ज्ञान वल सना सुदाना। ज्ञान सिद्ध फल मिलै निदाना॥
मुद्गल कथा सुने फल होई। पाप कलाप रहै नहिं कोई॥
राजा हरि चरणन चित दयऊ। संशय सकल शमन ह्वै गयऊ॥
कहत युधिष्ठिर शीश नवाई। सव वाधा प्रभु मोर मिटाई॥
सव सन्देह और भ्रम नाशा। हिये ज्ञानको भानु प्रकाशा॥
धन्य धन्य भीषम सुखदानी। तुम समान कोउ लखो न ज्ञानी॥
तुमने सकल वंशको तारा। आपहु तरे हमें निस्तारा॥
ऐसीहि और कहो जो कोई। फिर कवहूँ कोउ भ्रम न होई॥
सतसङ्गति की यहै वड़ाई। परमानन्द होत सुखदाई॥
मुख नहिं सन्मुख होतहै, लखि लखि देह तुम्हार।
चमहु मोर अपराध अव, अपनी ओर निहार॥

इति नवम अध्याय॥ ९॥

धन्य धन्य कुरुपति सुखदाई। सव संशय प्रभु मोर मिटाई।
कहो और पूंछत हौं मर्मा। शरणागत रचाको धर्मा॥

सकल देवतन बात चलाई। उत्तम धर्म कौन है भाई॥
धर्म समेत तुला कर धारो। सब मिलकर यह बात विचारो॥
सबने तत्त्वकथा यह वरणी। दुखित जीव की रक्षा करणी॥
सकल यज्ञ जप दान समेता। काशीग्रहण दान कुरुखेता॥
नाहिन और धर्म्म कोउ ऐसो। दुखी जीवको पालन जैसो॥
कथा पुरातन कहौं सुनाई। अग्नि इन्द्र राजा शिविराई॥
राजा सुकृत यज्ञ उत्येऊ। तिहिं ठां एक अचम्भा भयऊ॥
इन्द्र सचान रूप तहँ कियो। अग्नि कपोता ह्वै भाजियो॥
डरो भाज राजाकी शरना। लगो धर्मकी रक्षा करना॥
तब सचान आगे ह्वै भाई। राजासों बोलेउ अकुलाई॥

तुम सर्वज्ञ सुजान नृप, ज्ञानी परम उदार।
करहु न धर्मविरुद्ध तुम, लेहु न मोर अहार॥

राजा बोले सुनहु खगेशा। शरण न देहुँ देहुँ धन देशा॥
अबलों तो यह टेक निवाही। आयो शरण दियो नहिं ताही॥
डरप विहंग भयो शरणाई। सो मैं लीन्हो कण्ठ लगाई॥
शरण राखि जो त्यागै कोई। हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई॥
लोभ दोष भव जो पै करही। ताके पाप आप जर मरही॥
शरण मिटाये हैं अति दोषा। शरणागत त्यागे नहिं मोषा॥
जैसो दुख औरै तप आपै। दुख सबके शरीरमें व्यापै॥
जो भयते आपहि दु ख होई। तसेहि दुख मानत सब कोई॥

भय सङ्कटसे राखै प्राना। बुद्धिमान सो परम सयाना॥
शोक त्रास सङ्कट ते डरही। सोई साधु दया मन धरही॥

रक्षा करनी दुखी की, यही धर्म है सार।
याते अधिक न और कछु, नेम धर्म आचार॥

शरणागतकी रक्षा कीजै। शक्त्यनुमान सबहि सुख दीजै॥
जैसे आप अपनपो मानै। ऐसे औरनको तनु जानै॥
दुख सुख होत सबनके तनमें। यह विचारकर अपने मनमें॥
याहि शरणते देहुँ न तोहीं। यह भय भीत रहेउ गहि मोहीं॥
मेरे यहै धर्म है भाई। प्राण जायँ पर प्रण नहिं जाई॥
कहत सचान सुनहु नृपराई। प्रण तुम्हार है अति सुखदाई॥
यह तो वचन आपको सतहै। पर बिन भोजन कोउ जियतहै॥
सो अहार जीवैं सब प्रानी। भोजनते बुधि बल अरु बानी॥
भोजनते अनेक सुख लहई। विना अहार धरो सब रहई॥
एक जीवकी रक्षा करनी। जान बहुत जीवों की करनी॥

एक जीव के कारने, कई जीव की घात।
सत्य कहो नृपराज यह, कौन धर्मकी बात॥

मोहि अहार देहु जो नाहीं। कुटुम सहित हम सब मरजाहीं॥
मेरे मरे बहुत दुख होई। दारा पुत्र रहै नहिं कोई॥
सो हत्या नृप तुम को लागै। फिर कोउ यत्न बनै नहिं आगै॥
राजा शोच समझ लो मनमें। धर्म नहीं कुछ इन बातनमें॥
जिन धर्मनते धर्म न रहही। ताको धर्म न कोऊ कहही॥

धर्म्म सूक्ष्मगति अतिहि कहावै। धर्म करत अधर्म हो जावै॥
अधिक कल्पना धर्म घनेरो। यहां न चलै चतुरपन तेरो॥
बार बार विनवौं नृप तोहीं। कुटुम समेत हनै मत मोहीं॥
इतनो सुयश होय तव राई। एक जीवकी जान बचाई॥
जब मेरो कुटुम्ब तनु त्यागै। यह हत्या तोहिं कैसी लागै॥

हे सचान मत प्राण तज, पाल अपन परिवार।
जो चहिये सो लेय तू, पर कपोत मत मार॥

तू ज्ञानी जानत सब ब्यौरा। अभयदान सम दान न औरा॥
अभयदान उत्तम जग माहीं। ऐसो और धर्म कोउ नाहीं॥
दुखी जीव परहित जो करहीं। तापर कोउ दुःख नहिं परहीं॥
और दान फल थोरो रहई। अभयदान अक्षय फल लहई॥
दान यज्ञ फल तीरथ सेवा। और अनेक धर्म सुन भेवा॥
अभयदान को उत्तम फलहै। अभयदान जगमाहिं अचल है॥
राजशरीर जाहु किन सारो। पर न देहुँ यह पक्षी प्यारो॥
जन्म अनेक पुण्य मैं कीन्हो। परमेश्वर अर्पण कर दीन्हो॥
तासु पुण्यको यह फल पायो। दुखी जीव मेरे घर आयो॥
तनक मांसमें कहा विचारा। लेहु अहार अनेक प्रकारा॥

मान कहा अज्ञान तज, हे सचान गुणवान।
मन इच्छा आहार ले, तज कपोतके प्रान॥

अहो नरेश महा बड़भागी। सत्यसिन्धु दाया अनुरागी॥
मुझको भक्ष्य विधाता दीन्हा। सो निर्दय बन तुमने लीन्हा॥

अब कह खाय बचावों प्राना। ताते अपन मरन जियठाना॥
अधिक कहा कहनी बहु बाता। मोर भक्ष दीजै मोहिं ताता॥
कह नरेश तुम सुनहु सचाना। यह कपोत मोहिं प्राण समाना
शेष महेश गणेश बखानो। अभयदान सबमाहिं प्रधानो॥
जो जन जीव दया मन धरहीं। सो प्राणीं काहे नहिं तरहीं॥
शरणागतपर दया न आनी। ते प्राणी मूरख अज्ञानी॥
जहँ लौं अपनी पार बसावै। शरणागतको अवशि बचावै॥
चाहै जाय धाम धन राजू। पर कपोत नहिं देहौं आजू॥

जो नहिं देहु कपोत तुम, करहु वचन निर्वाह।
तो तुम अपनो मांस मोहिं, देहु काटि नरनाह॥

जो उपकार औरको कीजै। अपनो मांस काटि मोहिं दीजै॥
सुनत सचान वचन यह तेरो। अधिक प्रसन्न भयो मन मेरो॥
अपनो मांस काटि तोहिं देहूं। झूठो तनु सांचो कर लेहूं॥
झूठे तनुमें मिली बड़ाई। याते और कहा अधिकाई॥
परउपकार जो आवै देहा। तो है वृथा सकल सन्देहा॥
यह तनु थिर न रहे संसारा। विटक्रमि देह होय जरि क्षारा॥
जो तनु परउपकार न आवै। वृथा जननि जनके दुख पावै॥
जो भय ते अप-तनु दुख होई। तैसेहिं दुख पावत सब कोई॥
दुख सङ्कटते राखै प्राना। सोइ भक्त जन परम सुजाना॥
दुख सबके शरीरमें व्यापै। जैसो औरहि तैसो आपै॥

भोजनको छौनानके, अति विलम्ब अब होत।
मने करो कै देहु मोहिं, मेरो भच्य कपोत॥
निकसत प्राण भूंख के मारे। अब मत बहुत विचार विचारे॥
जब यह प्राण निकस गय तनते। फिर कह होय सुधा भोजनते॥
जो अपनो जगमें यश चाहो। तो आपन प्रण आप निबाहो॥
अपनो आमिष तुला चढ़ाई। दे कपोतसम मोकहँ राई॥
अधिक मांस चाहिये मोहिं नाहीं। धीरज मोहिं थोरेही माहीं॥
राजा तुरत कटार उठायो। मांस काटकर तुला चढायो॥
दूजी ओर कपोत चढाकर। राजा चाह्यो करन बराबर॥
भयो कपोत महा अति भारो। नृपति शरीर चढ़ायो सारो॥
मांस बराबर भयो न जबहीं। आपहि चढ़ो तुला नृप तबहीं॥
जय जय शब्द भयो चहुँ ओरा। धन्य धन्य राजा सत तोरा॥
निरखि देव दुन्दुभी वजावैं। धनधन कहि नृपको यश गावैं॥
देख धीर शिबिराजको, प्रगट भयो सुरभूप।
धीर धुरन्धर धन्यतुम, पूरण धर्मस्वरूप॥
अग्नि कपोता मैं सुरराई। देख्यों सत्य तुम्हारो राई॥
ऐसी करी करै नहिं कोई। जो मुख कही करी तुम सोई।
तुमहीं धर्मरूप जग खम्भा। तुमरे हि सत्य धरणि नभ थम्भा॥
तदपि कर्म वश जीव रु जन्तू। तुम उपकारी धीरजवन्तू॥
ब्रह्मा प्रगट किये परकाजा। मेघ वृच्छ अरु तुमसे राजा॥
देह अपनपौ राखो प्राना। मिले परमगति पद निर्वाना॥

देत अपनपौ लगी न वारा। जीवन सांचो पर उपकारा॥
अर्थ पराये जीवन सारा। जैसे वृक्ष रहत संसारा॥
जगमें तुम समको वड भागी। ठाढ़े शरण इन्द्र अरु आगी॥
अस यश सुनो तुम्हारो राऊ। सो सब देख्यों प्रगट प्रभाऊ॥

ऐसे नर संसारमें, प्रगट बहुत कम होत।
अपनो तनु त्यागन चह्यो, त्यागो नाहिं कपोत॥

कहै नरेश सुनहु सुरराया। यह सब तव चरणनकी माया॥
नरहू करत कहीं अस काजा। यह सब तव प्रताप सुरराजा॥
हमहिं न लज्जित कीजै भूपा। धारण कियो कपटको रूपा॥
जगमें अधिक धर्म तुम कीन्हो। तीनो लोक जीत यश लीन्हो॥
अग्नि इन्द्र निज लोकहि गयऊ। शिबिकी यज्ञ सफल अति भयऊ॥
यज्ञ सिरानो सीझे काजा। तब मनमें आनँद भो राजा॥
शिबिको चरित जु सुनै सुनावै। नाशै पाप सकल सुख पावै॥
कैसो धर्म कियो शिबिराई। जिनकी महिमा त्रिभुवन छाई॥
जबलों रहै जगत में प्रानी। दे नित दान कहावै दानी॥
मोरध्वज हरिचन्द नरेशा। दियो दान नहिं कियो कलेशा॥
जिनकी अबलों अचल कहानी। धन्य धन्य ते आतमज्ञानी॥
जिनकै आठ प्रहर हरिध्याना। माया मोह द्रोह विलगाना॥
तुमहू तजो मोह मद ममता। सब प्राणिनते राखो समता॥
को अपनो अरु कौन विरानो। सब में एक ब्रह्म तुम जानो॥

अजर अमर अद्वैत प्रभु, रहेउ जगतमें व्याप ॥
जीव अमर नहिं मरत है, वृथा शोक सन्ताप ॥

भीषम पिता मोहि अति भर्मा । महाशरण रक्षाको धर्मा ॥
अपने आश्रम आवै कोई । ता मुख दिये कवन फल होई ॥
धर्म शरणरक्षा को जैसो । त्रिभुवनमें कोउ और न ऐसो ॥
सुन इतिहास पुरातन घाता । कथा कपोत वधिक की ताता ॥
नित प्रति वधिक रोपकै जाला । हनै अनेक जीव तत्काला ॥
एक दिवस उठ चलो अहेरे । बनमें बधिक कर्मके प्रेरे ॥
फिरत फिरत बन सकल अथायो । कोऊ जीव हाथ नहिं आयो ॥
वधिकहि भटकत भई अवारा । निष्फल उद्यम क्षुधा अपारा ॥
चारो ओर अँधेरी छाई । कोऊ जीव न देत दिखाई ॥
वर्षन लगेउ जोरसे पानी । तब तो वधिक अधिक भय मानी ॥

घन गर्जै लर्जै हिया, छिन छिन जिय अकुलाय ।
जलही जल कहुँ थल नहीं, आगे चलो न जाय ॥

चपला चमकर घन गर्जै । कठिन शब्द सुनि सुनि जिय लर्जै ॥
पशु पक्षी सब लगे पराने । गिरि खोहन में आय लुकाने ॥
पन्थ न सूझै चलो न जाई । शीत भीत कम्पै अकुलाई ॥
थर थर थर सब करत शरीरा । जकड़े अङ्ग होत अति पीरा ॥
गिरत परत आयो सो तहां । रहि भयभीत कपोतन जहां ॥
दूरहि ते तेहि वधिक निहारो । झटपट पकर जालमें डारो ॥
भई अधीर धीर तनु नाहीं । विकल परी चिन्ता मनमाहीं ॥

वारम्बार कपोतन कहई। कन्त अकेलो कैसे रहई॥
मोहिं मरनको संशय नाहीं। पति न परै कहुँ विपता माहीं॥
मेरे मरे न होय अकाजा। तुम्हैं न दुःख होय पतिराजा॥

दैवयोगसे वधिकने, कीन्हेउ उतहि पयान।
आश्रम जहां कपोत को, वही ठौर नियरान॥

सघन वृच्छ छाया अधिकाई। मानो मन्दिर रचेउ बनाई॥
सुनेउ चहचहा कछू न बुझाई। तबहीं वधिक रहेउ मुरझाई॥
माघ मास शरदी अति परही। कँपकँपाय तनु थरथर करही॥
भीजेते विह्वल तनु भयऊ। क्षुधा अपार शीत दुख दयऊ॥
मुखसे वचन कहे नहिं जाई। तनु गो ऐंठ काठकी नाई॥
कपोतनीने भी यह जाना। मेरहि पति मेरहि अस्थाना॥
जब कपोत आयो तेहि ठांई। तिया न दीख फिरो चहुँघांई॥
लाग मनहि मन करन विचारा। आज मोहिं सन्देह अपारा॥
मनहीं मन कपोत अकुलाई। कारण कवन नारि नहिं आई॥
आवत मोते नित्य अगारी। कछू न कछु है सङ्कट भारी॥

अहो प्रिया मोहि छोड़कर, कहां गई तू आज॥
तुझ विन मम जीवन कहा, लुटो मोर सब राज॥

आज मोर सुख विधना लियऊ। सब सुख छीन दीन मोहिकियऊ
जब विधि रची सृष्टि यह सारी। तियारूप मिथ्या विस्तारी॥
जादिन तियसों परै विछोहा। ता दिन मिथ्या घर सो सोहा॥
घर शोभा घरनीसों नेहा। को दुख सहै आज यह गेहा॥

इत उत दृष्टि कपोता करी। देखी तिया जालमें परी॥
कहा करू बल चलै न मेरो। कहा उपाय करू तियकेरो॥
बेवश जान मुष्टि गहि रहेऊ। पतिसों वचन कपोतिन कहेऊ॥
जो मेरो तनु परहित लागे। दूजे मरू तुम्हारे आगे॥
स्वामी धन्य भाग्य है येही। परकारज आवै यह देही॥
तियको बडो भाग अधिकाई। पति अपने मुख करै बड़ाई॥
नारि धर्म्म है पतिकी सेवा। और न पूजै देवीदेवा॥

पति पूजन जो रातदिन, करै प्रेमसे नारि।
तिनको यश गावत सदा, देवी स्वर्ग मँझारि॥

जब जान्यो पति अति अकुलाना। बोली तिय पिय कर्म्मप्रधाना॥
काम न आवत सुत वित दारा। छांडि मोह कर धर्म विचारा॥
अब कह शोच करत हौ नाथा। बिछुरन मिलन कर्मके हाथा॥
धीरज धर्म सँभारो प्यारे। आयौ अतिथि तुम्हारे द्वारे॥
विपति परे पर धम जु करही। ताको यश जगमें विस्तरही॥
धन्य सुधर्म अतिथि घर आवै। धन्य सुभोजन ताहि करावै॥
नारी धन्य सो पुरुषहि भावै। पुरुष सु धन्य धर्म मन लावै॥
आरत दुखी शीत भय भीता। आयो ऐसो गेह अतीता॥
जो कछु बनि आवै उपकारा। दीजै नाथ अतिथि आहारा॥
अपने घर आवै जो कोई। करै तासु सत्कार जु होई॥

जो घरपर आवै अतिथि, करै तासु सन्मान।
महायज्ञ जग में सोई, गावत वेद पुरान॥

सुनि तिय वचन कपोता ज्ञानी। धरि धीरज बोलेउ मृदु
हौं पक्षी उत्पति आकारा। मोते कहा होय उपकारा॥
हौं चुग उदर आपनो भरिहौं। अतिथि धर्म कौनो विधि
उद्यम कारण चलेउ विसूरी। देखो अग्नि बरत कहुँ दूरी॥
चोंच लकरिया जरती लीनी। आनि वधिक आगे धर दी
जानि चोंच सों लकरी पाती। वारी अग्नि विहङ्गम जाती
अग्नि पजार वधिक पै आयो। अतिथि वधिकको अधिक
छूटेउ शीत क्षुधा अकुलानो। वहुरि कपोत देख पछितानो
धिग धिग हम पक्षी कुलजाती। अपनो पेट भरैं दिनराती
एक सहस जनको दे खाहीं। हम सों पेट पलत है नाहीं।
वारम्वार विसूरत आपू। कैसे सहौं दुःख सन्तापू॥
पक्षी पूर्व जन्मको ज्ञानी। शोच समझ मनमें यह आनी॥
अपनो देह प्राण परिहरहुं। आदर अधिक वधिक को करहु
यह कह अग्नि माहिं सो परेऊ। वधिक देख मन अचरज
अर्थ धर्म हित छोड़े प्राना। देखि वधिक मन उपजो ज्ञाना
मैं मानुष काहे को भयऊ। सब दिन पाप करतही गयऊ॥
मैं नर तनु धर करे कुकर्मा। देखो इस पक्षीके धर्मा॥
मैं सबको दीनो सन्तापा। किया अत्यन्त जीवको पापा॥
मैं तो सर्व पापको भौना। मोहिं नरकते राखै कौना॥

कबहुँ न कोउ तीरथ कियो, कबहुँ न न्हायो गङ्ग।
निशि दिन मारतही रहेउ, पक्षी और कुरङ्ग॥

जेहि तनु तप तीरथ नहिं कीनो । जेहि तनु परउपकार न भीनो
ऐसो तनु मैं वृथा गमायो । मारमार जीवनको खायो ॥
जेहि तनु करत यज्ञ व्रत दाना । जेहि तनुमें उपजत शुभज्ञाना ॥
सो तनु पाप रूप में कीनो । बहु प्रकार जीवन दुख दीनो ॥
यह नहिं है पच्छीको धर्मा । सोई धन्य जो करै सुकर्मा ॥
जब यह पशु पच्छिनकी रीती । तऊ न तेरी गई अनीती ॥
फाड जाल लकडी परिहरी । तुरतहि वधिक दया मन धरी ॥
निकल कपोतन कियो विचारा । पुरुष विना सूनो संसारा ॥
जैसे वृथा धर्म्म बिन येहा । जैसे वृथा प्राण बिन देहा ॥
जैसे वृथा खेत विन वारी । तैसे वृथा पुरुष बिन नारी ॥

जैसे सरवर नीर बिन, ज्यो रजनीबिन चन्द ॥
ऐसे नारी पुरुष बिन, सहत सदा दुखद्वन्द ॥

जैसे गृही द्रव्य विन छीना । जैसे व्याकुल जल विन मीना ॥
जैसे फल विन उद्यम हीना । ऐसे तिया पुरुष बिन दीना ॥
जैसे शशि विन निशि अँधियारी । ऐसे विना पुरुषकी नारी ॥
माता पिता भ्रात संयोगा । दारा पुत्र कुटम्बके लोगा ॥
सजन सनेही अन धन धामा । पति विन और न आवत कामा ॥
पतिविन पतनी पतित न मगमें । पतिविन अपति नारिकी जगमें
पतिविनसबसुखविपतिसमाना । पतिविन गतिनहिंहितमनमाना

विन पति अवलाकी कुगति, चाहे हों सौ सुःख ॥
परत विपतिपर विपति नित, जित देखे तित दुःख ॥

पति सब विपति बटावन हारे। सो न रहे मम प्राण पियारे॥
पतिबिन कहा करौं हौं जीके। करौं न बार जरौं संग पीके॥
परम धर्म्म नारीको एहा। संग पुरुषके त्यागै देहा।
ताते सती होहुँ मैं आजू। बहुरि मिले मम पति सुख साजू॥
सती धर्म्म सम धर्म न दूजा। जपतप नियम धर्म्म पति पूजा॥
तिन्हें कर्म कुछ दुर्लभ नाहीं। जो नारी पति संग जरि जाहीं॥
यह कह अग्निमध्य सो परी। सांची सती सत्यसों जरी॥
सती धर्म्म जब सुरपुर गयऊ। जय जय देवलोकमें भयऊ॥
देव विमान स्वर्ग ते आयो। सुर किन्नर गँधरव यश गायो॥
सब मिल सती सराहन लागे। पतिके हेत प्राण इन त्यागे॥

धन्य धन्य यह पच्छिणी,धन धन याको धीर॥
प्यारे पतिके प्रेममें, कीन्हो भस्म शरीर॥

चढ़ि विमान सुन्दर तनु धारी। पुरुष सहित वैकुण्ठ सिधारी॥
ज्यों ज्यों दरश करैं सब देवा। अधिक सराहैं करकर सेवा॥
देववधू दर्शनको आवैं। करैं आरती मङ्गल गावैं॥
अहिको ज्यों वायगी नचावैं। मन्त्र शक्ति ताको गहि लावैं॥
अस तिय पतिहि नरकते काढैं। देवविमान स्वर्ग सुख बाढैं॥
कैसो पाप पुरुप किन करहीं। कहैं पुराण तिया लै तरहीं॥
रोगी ऋणी दरिद्री होई। दुखी सुखी जाने सब कोई॥
क्रोधी कुटिल कुरूप कुसेवा। भामिनिको भरता गति देवा॥

भामिनि भरता वचन न टारै । आप तरै अरु पतिको तारै ॥
निशि दिन करै पतीको पूजा । पति सम और देव नहिं दूजा ॥

देखेउ धर्म सुधर्मको, कैसो सुभग प्रभाव ॥
सत्संगतसे वधिकको, पलटौ तुरत स्वभाव ॥

साधुसंगको यह फल भाई । परम सुबुद्धि वधिकको आई ।
निर्विकार निर्म्मल मन भयऊ । तपके हित उत्तर दिशि गयऊ ॥
शीत उष्ण दुख सुख सब सहेऊ । इस्थित चित्त शुभ ह्वै रहेऊ ॥
गहि वैराग्य ज्ञान उच्चाटा । चलत न जानेउ औघट घाटा ॥
गयउ पाप हरि सन्मुख भयऊ । सुरपुरवास वधिकने लयऊ ॥
सत्सङ्गतको लखेउ प्रभाऊ । भयो वधिकको शील सुभाऊ ॥
जो यह कथा सुनै अरु कहंई । तिनके पाप दोष नहिं रहंई ॥
कथा कपोत वधिककी गाई । सम्पूरण भय दश अध्याई ॥
भली कथा मोहिं पिता सुनाई ॥ गयो शोक त्रय ताप नशाई ॥
धन्य धन्य प्रभु कृपा निधाना । मम अवगुण तुम एक न माना ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

कृपा करहु जन जान निज, हरहु सकल सन्देह ॥
मोरि दुष्टता नहिं गिनी, कीन्हेउ परम सनेह ॥

महा कठिन गढ़ यह संसारी । जिसमें कोटि विपति भ्रमभारी ॥
कैसे हो इनते निस्तारा । पिता कहो हित जान हमारा ॥

कैसे यश गावैं सब कोई । केहि विधि प्रीति सर्व्वसों होई ॥
सत्य वचन कह भीषम राऊ । हरिसों प्रीति धर्म्म परिभाऊ ॥
परदारा परधन परिहरहीं । श्रद्धासों हरि सुमिरण करहीं ॥
सबके विषय आत्मा जानो । सब जगको एकहि पति मानो ॥
सन्तोषी इन्द्रिय जित सूरो । परम उदार ज्ञान मति पूरो ॥
कृष्ण कृष्ण तृष्णा तजि करहीं । सो संसार दुर्गते तरहीं ॥
यह संसार तरन विधि गाई । बढ़ै अधिक यश सो सुन भाई ॥
सम दृष्टी सबको अधिकारी । बोलै मीठे वचन विचारी ॥

सुधा गरलको सम गनै, कछु नहिं करै विचार ॥
रामरूप सबमें लखै, जहांतलक संसार ॥

महाशुद्ध मन गांठि न रहई । हृदय और मुख और न कहई ॥
पर उपकार धर्ममय होई । ताको यश गावै सब कोई ॥
जैसे होय सर्वसों प्रीती । सुनहु युधिष्ठिर ताकी रीती ॥
घर मायाते होय उदासी । तजि मद मोह होय बनवासी ॥
विष्णु भक्तसे मिलै सदाई । तासों प्रीति करैं अधिकाई ॥
करै धर्म छोड़ै नहि नीती । ऐसे होय सर्वसों प्रीती ॥
जैसे हरै विपति भ्रम भारी । सो सब सुनहु सत्यव्रतधारी ॥
त्याग द्रोह सत्सङ्गत करहीं । सो सब महा विपति भ्रम हरहीं ॥
अब हम बहुरि कहत समुझाई । जाते छुटै विपति दुखदाई ॥
जो अनन्य ह्वै हरि मन लावै । रात दिवस गोविंद गुण गावै ॥
सब तजि रामनाम व्रत धरहीं । सो संसार दुर्गते तरहीं ॥

रामनाम उर धारकर, कर भक्ति दिन रात ।
इससे जगसे तरनको, और अधिक नहिं बात ॥
माता पिता तीर्थ गुरु देवा । तुलसी गऊ साधुको सेवा ॥
व्रत अस्नान दया मन राखै । श्रीरघुपति रघुपति मुख भाषै ॥
हरि गुण यश भागवत पुराना । भारत कथा सुनै दै काना ॥
हरि-भक्तों की सेवा करही । सो नर निसन्देह भव तरही ॥
प्रातकाल करके अस्नाना । गीता पढ़ धरै हरि ध्याना ॥
सन्ध्या तपण त्रिकाल करै सो । भवसागरसे सहज तरै सो ॥
करै कृष्ण चरणन सों प्रीती । यह भवसिन्धु तरन की रीती ॥
नारि धर्म अब कहौं बखानी । चितदे सुनहु युधिष्ठिर ज्ञानी ॥
भामिनि धर्म आप पहिचानै । पुरुषहि नारायण सम जानै ॥
दिन प्रति पुरुष वचन मन धरही । सो संसार दुर्गते तरही ॥
वृथा और आराधै देवा । तियको परमधर्म पतिसेवा ॥

पतिही इक संसार में, पुरुष परम विज्ञान ।
औरनको नारी गिनै, सोई नारी जान ॥
भव सागरके तरनको, वर्णो सकल वृत्तान्त ।
रामनाम तारन तरन, करन सदाचित शान्त ॥

इति एकादश अध्याय ॥ ११ ॥

तुमको देव करहुँ परणामा। कृपानिधान सकल गुण धामा॥
अब यह कहिये कृपानिधाना। तपहै बड़ो कि समता ज्ञाना॥
सकल ऋषिन को यहै विचारा। तपसे समता अधिक अपारा॥
सब साधन मिल यहै विचारी। जप तपते समता अतिभारी॥
अब सुन तप समता की बाता। कथा पुरातन वर्णौं ताता॥
तपफल अरु समता फल यथा। जाजुलि तुलाधार की कथा॥
आसन तट समुद्र के तीरा। कीन्हेउ जाजुलि तप गम्भीरा॥
बढ़ी जटा ओढ़े मृग छाला। कीन्हेउ तप बहु वर्ष विशाला॥
अतिअभिमानभयो तेहि मनमें। मोसम और न कोइ द्विजगणमें
अधरममें न कबहुँ अनुरागो। वेद मार्गमें नित प्रति पागो॥

नारायणकी भक्तिमें, रहै सदा लवलीन।
करत तपस्या रात दिन, द्विजवर परम प्रवीन॥

ज्येष्ठ मास पञ्चागिनि तापै। वर्षा माहिं न जलभय व्यापै॥
जाड़े में रहे जलमें ठाढ़ो। धीर धुरन्धर व्रतको गाढ़ो॥
करत करत तपअति अधिकाना। तब द्विजमन उपजो अभिमाना
एक समय सो विप्र गुसांई। वनमें खड़ो काठकी नांई॥
ताकी घनी जटा लख अच्छी। धरो घोंसला कुलङ्ग पच्छी॥
जब यह भेद विप्रने जानो। इस्थिर रहेउ न नेक हिलानो॥
वर्षा बीत शरदऋतु आई। तब तिन अण्ड दये न्टपराई॥
जब द्विजवरने अण्ड निहारे। हलो न कहुँ अण्डनके भारे॥

फूटे जब अण्डे पच्छीके। दो बच्चे प्रगटे अति नीके ॥
समय पाय ते परम सुहावन। भये सपच्छ दोउ मनभावन ॥

रहन लगे आनन्द सों, भये महा बलवान।
देत कुलङ्ग कुलिंगिनी, सदा खान औ पान ॥

प्रात होत वन को उड़ जावैं। सन्ध्या समय फेर घर आवैं ॥
एक समय जो गे वनमाहीं। तीन मासलौं आये नाहीं ॥
अबनहिं आवेंगे वह पच्छी। तिनको मिली ठौर कहुँ अच्छी ॥
यह विचार करके निज मनमें। बहुरि करन लागो तप वनमें ॥
मो सम और न सब जग हेरो। सबते अधिक भयो तप मेरो ॥
आप समान और जगमाहीं। दूजो तपसी जानत नाहीं ॥
औरनको तप भयो अधूरो। मेरो तप भो सबसे पूरो ॥
यह सुन तुरत भई नभवानी। मति कर मान अरे अभिमानी ॥
तुलाधार की सम जगमाहीं। धर्मी अबहिं भयो तू नाहीं ॥
तुलाधार गर्वी नहिं ऐसे। बकत फिरत तू जाजलि जैसे ॥

नभवाणीके सुनतही, उपजो क्रोध अपार।
देखूंगो मैं जायकर, तुलाधारको द्वार ॥

चलत चलत पहुँचो सो काशी। जहां विराजैं शिव अविनाशी ॥
भैरव कोतवाल जहँ गाजैं। अन्नपूर्णा सदा विराजैं ॥
मुक्तिमही सब मुनिन बखानी। पहुँचेउ तहँ जाजलि अभिमानी
जब द्विजने सब नगर मँझायो। तुलाधार घृत बेंचत पायो ॥
तुलाधार जाजलि पहिचाना। कियो बहुत आदर सन्माना ॥

जो आये तुम मेरे पाहीं। मो सम आज कौन जगमाहीं॥
जो म कहूं आपसो सुनिये। सो सब अपने मनमें गुनिये॥
प्रथम सिन्धुमें तप तुम कीन्हो। पर सुधर्मको रूप न चीन्हो॥
जब पूरण तप भयो तुम्हारो। शीश अटन को अधिक पसारो॥
पच्छिन नीको नीड़ बनायो। सुखदायक अति परम सुहायो।

पच्छिनने अण्डा धरे, तुम जानो सो भेद।
देह करी सब काष्ठ सम, होय न पच्छिन खेद॥

जब वह पच्छी उड़ गये वनमें। छायो गर्व तुम्हारे मनमें॥
जब तू भयो महा अभिमानी। तुरतहि तोहिं भई नभवानी॥
सो सुन कठिन क्रोध तोहिं आयो। ढूंढ ढांढ तैं मुझको पायो॥
हे द्विजवर पूंछत हौं तोसों। अब मैं करौं कहो जो मोसों॥
यह सुन जाजलि अति अकुलानो। कैसे भेद वणिकने जानो॥
एक ब्रह्म सबही संसारा। जानौ बहुत ज्ञान व्योहारा॥
बेंचत वस्तु जगतकी सारी। ऊंची हाट ठाट अति भारी॥
मोहिं अचम्भा यह आवत है। धर्म्म कहां जब रस बेंचत है॥
कहो मित्र सब भेद बुझाई। कैसे धर्म्म रहत है भाई॥
मेटहु सब सन्देह हमारा। धर्म्म कहा जब यह व्योहारा॥

जाजलिके यह वचन सुन, तुलाधार गुणखानि।
रस बेंचनमें धर्म की, कहा होत है हानि।

धर्म तत्त्व सूक्षम है जगमें। सदा चलत हौं मैं तेहि मगमें॥
लवणादिक रस उत्तम लैके। बेंचत सदा निष्कपट ह्वैके॥

धर्म्म सोई सब जगमें जानो । जो कुछ महज्जननने मानो ॥
काहू में न कामना राखौं । मिथ्या कबहुँ न मुखसे भाषौं ॥
जो जन मोहि वचन कटु भाषत । तासु द्रोह मनमें नहि राखत
कञ्चन माटीको सम मानो । सब में एक भाव निज जानो ॥
चहिये सदा अहिंसा करणो । जाको कथा मुनिवरन वरणो
अभय देत सब प्राणिन जोहै । आपहि अभय लहत जन सोहै ॥
यह विचार सब प्राणिन माहीं । देत रहतहौं अभय सदाहीं ॥
बेंचत धेनु वत्स अरु धरणी । कबहुँ न सुधरत उनकी करणी ॥
यह मैं सुनो मुनिनके मुखते । । कबहुँ न करत रहतहौं सुखते ॥

कीजै सकल विचारकै, ज्ञानदृष्टिसों जोय ।
विना विचारे जो करै, कार्य सिद्ध नहि होय ॥

जो नर समता जानत अहहीं । समता समझ सर्व सुख लहहीं ॥
पूरब संस्कार मति सारा । ताते उपजो ब्रह्म विचारा ॥
ना म पढो न अति तप कीन्हो । ना उपासनामें मन दीन्हों ॥
जो कछु देखो ज्ञान प्रकाशू । सो मेरो पूरब अभ्यासू ॥
काहू को न दोष हौं करहूं । राखौं धर्म सत्य उच्चरहूं ॥
विष्णु विष्णु निशिवासर भाषूं । समताभाव सबनसों राखूं ॥
विप्र धेनु गुरुको सन्मानो । सबही में नारायण जानो ॥
बाराणसी वसौं जहँ गङ्गा । करौं सदा सन्तन सत्संगा ॥
तुला पकर कर घाट न देहुं । अंश परायो कबहुँ न लेहुं ॥
करत गऊ गुरु जनकी सेवा । याते जानतहुं सब भेवा ॥

गोपदरज ऊपर परत, कलिमल सकल नशात।
गुरुजनके सत्संगसों, हियो शुद्ध हो जात॥
दुखी दरिद्री मूरख मानो। नहिं जो कोई दहै अज्ञानो॥
सो नर अन्ध नरकमें परहो। बहुरि दरिद्री ह्वै अवतरहो॥
मद विन सव रस विक्री करहू। हानि लाभ कछु मन नहिं धरहू॥
भये गये को नहिं सन्देहा। समता ज्ञान हमारो एहा॥
दुख उद्वेग न काहू देहु। अवगुण तजि सबको गुणलेहु॥
नहिं अस्तुति नहिं निन्दा करहू। सबको एक भाव मन धरहू॥
अन्ध कुबुद्धि वधिर जो होई। इन्द्रिन विषय भृष्ट है सोई॥
शुद्ध भाव सव सों सम रहौं। काको शतु मित्र मैं कहौं॥
भलो बुरो शुभ अशुभ न मानो। निज आत्मा सबही में जानो॥
सरवर नदी समुद्र समानो। तीरथ मठ पर्वत सम जानो॥
आश्रम वरण बराबर मेरे। सबही में नारायण हेरे॥

जल थल अगजग सकलमें, रहेउ विश्वपति भाश।
सूर्य चन्द्रमामें सदा, उसही को परकाश॥

सबमें व्याप रहेउ नारायण। निशिदिन करत रहत पारायण॥
इस प्रकार तप करौं सुधर्मा। ममता त्याग अचारौं कर्मा॥
लोभ मोह मैं सब परिहरहू। कबहूँ क्रोध न मनमें धरहू॥
मैं सब दशा कही कुशलाता। जाजलि समुझ लेहु यहबाता॥
जिन पक्षिनको तवशिर वासा। चले गये वनतजि सव आसा॥
कैसे तजकर जटा तुम्हारो। फिरत रात दिन विपिन मँझारो॥

द्विज वर उनको वेग बुलाओ। कछु उनसे समुझो समुझाओ॥
सुन द्विज तुलाधारकी बानी। शीघ्र बुलाये दोउ द्विज ज्ञानी॥
जाजलि तुलाधार है जहां। ते पक्षी उड़ि आये तहां॥
पक्षी शीश नाय पग लागे। हे द्विज अबहि मोहमें पागे॥

सुजन कुजनके मागजे, तिनको द्विज तू देख।
देखेगो तब परैगो, भलो बुरो आलेख॥

समता समकोउ समनहिं द्विजवर। समता परमधर्म्म धरनीपर॥
दुखकर तपकीजे अधिकाई। सो तप गर्व करत मिट जाई॥
छाड़ो मोह दम्भ मद हानी। ध्यानीसों सम ना पहिचानी॥
भस्म रमाय जटा शिरधरहू। है मुण्डित त्रिदण्ड लै करहू॥
फिरो सदा दण्डकवन माहीं। बिना भक्ति किञ्चित् फल नाहीं॥
बृथा कलेश मरो पचि कोई। समता विना मुक्ति नहिं होई॥
मुखसे ज्ञान ध्यानको गानो। समता ज्ञान हृदय नहिं आनो॥
मन वच कर्म्म ध्यान नहिं धरही। मिथ्याचार सबै सो करही॥
इन्द्रिय हाथ आपने नाहीं। तौ कत बृथा बसो वनमाहीं॥
इन्द्रिय जीत घरहिं किन रहई। सो नर परम धामपद लहई॥
विना ज्ञान जप तप आचारा। तन मनका दुख देनेहारा॥

ज्ञान बिना नहिं भक्तिहै, भक्ति बिना नहिं ध्यान।
ध्यानबिना समता कहा, अहो विप्र विज्ञान॥

काहे देह बृथा श्रम सहई। जो समता चितमें नहिं रहई॥
अज्ञानी कर कोटि उपाई। ज्ञान बिना संशय नहिं जाई॥

पच्छी वचन सुनत सुख भयऊ। तब ऋषि परम ज्ञानपद लयऊ॥
सत्सङ्गति को यह फल भाई। जाजलिके समता मति आई॥
अहङ्कार ममता मिटगई। परम स्वरूप ज्ञान मति भई॥
समता भई ज्ञान पहिचानो। सर्व रूप परमेश्वर जानो॥
तुलाधारसे मांग विदाई। जाजलि गयो बनहिं नृपराई॥
पच्छिन शाप तुरत मिट गयऊ। नरतनुधर अति आनँद भयऊ॥
समताने सब को निस्तारो। सो समता तुमहूँ उर धारो॥
समताको देखेउ फल राजा। सिद्ध भये सबहिनके काजा॥
तुलाधार द्विजराज कहानी। वर्णन करी सकल नृप ज्ञानी॥
जो यह कथा पढ़ै अरु कहई। ताको ज्ञान धर्म नित रहई॥

ऐसे सुखद अनेक हैं, भारतमें इतिहास।
हरत सकल कलिमल कलह, देत स्वर्गको वास॥

इति द्वादश अध्याय॥ १२॥

अर्थ धर्म दोऊफलदायक। इनमें कौन महा अघघायक॥
मोहि समुझाय कहो सबताता। दुहुँमें अधिक भलो को ताता॥
धनइच्छा मनमें सब लहई। धनते धर्म भलो ऋषि कहई॥
कहूं पुरातन इक इतिहासा। विप्र एक धन काज उदासा॥
धनके हित आराधे देवा। कर देखी सबही की सेवा॥
सेवा करी तबै धन भयऊ। बहुत भांति उद्यम मन ठयऊ॥

सब तजि उद्यम कीजै सोई। जाते काम धाम धन होई॥
कुण्डधारकी सेवा ठानी। धन पावनको यह मत आनी॥
द्विजवर तपको उद्यम कियो। देवाकुण्ड शरण मन दियो॥
धन धन धन धन रटना लागी। धन दे मोहिं करो बड़ भागी॥
कुण्डधार द्विजवरको देखी। मनमें भयो प्रसन्न विशेखी॥
काहे देत विप्र दुख तनुको। अबहिं जात तेरे हित धनको॥

कुण्डधार यह कह गयउ, परम धाम तत्काल।
ब्रह्मा विष्णु महेश जहँ, राजत रूप विशाल॥

लागो करन चरणकी सेवा। होहु प्रसन्न दास पर देवा॥
देवदया अब मोपर कीजै। जो कछु हौं चाहौं सो दीजै॥
कुण्डधार तुम चाहो जोई। हम प्रसन्न ह्वै देहैं सोई॥
विप्र एक मम शरणै आयो। ताको धन दीजै मन भायो॥
कहो त्रिदेव सुनो द्विजराई। बिना धर्म्म धन है दुखदाई॥
चाहै धन मनुष्य जो कोई। धर्म बिना धन कबहुँ न होई॥
जिनके धर्म्म बसे मनमाहीं। सदा लच्मी रहत तहाँहीं॥
धर्महि धन विद्या धनरूपा। धर्महि ते सुखराज अनूपा॥
धर्महिते मन सुख सन्तोषा। धर्महिते नर पावै मोखा॥
धर्म कुलीन कुलीन कहावै। धर्म हिते सुरपुर नरपावै॥
धर्म हिते कीरति बढ़त, धर्महिते यश होय।
धहिते आनँद बढ़त, धम देत दुख खोय॥

लोभ मोह ममता को हरकै। हरि हरि भजै धर्म चित धरकै॥
धर्म अनेक धर्म तज करहीं। धूरि समेट वृथा पचि मरहीं॥
धर्म वासना जो मनलावैं। दारिद्रोहू स्वर्ग सिधावैं॥
जो धनपाय धर्म नहिं करहीं। देखत घोर नरकमें परहीं॥
कुण्डधार सुन शिव अजवानी। अधिक धर्मकी महिमाजानी॥
चहिये और यत्न नहिं करनो। सबसे अधिक धर्म फलवरनो॥
दे टूक वस्त्र विदा तेहि कीन्हो। कुण्डधार शिर पर धर लीनो
शीशनाय बोलो द्विजराई। धर्मकथा मोहिं भली सुनाई॥
मैं अज्ञान न जानो भेवा। अब भई कृपा तुम्हारी देवा॥
आशा सहित लोभ मन धरेऊ। तृष्णा जान बहुत दिन जरेऊ॥

यह तृष्णा पापिनि गरे, रोम रोम रहि व्याप।
धर्म्म कथा सुन कर प्रभू, मिटे मोर त्रयताप॥

कुण्ड वस्त्र जो हरिसों लायो। सो द्विजको दै धर्म्म पढ़ायो॥
सवसुख छाण्डि करों वनवासा। करों धर्म्म तजिकै सब आसा॥
धर्म छाण्डि जो उद्यम करहीं। ते जगमाहि वृथा पचिमरहीं॥
धर्म समुद्र निकट विसरायो। मृगतृष्णा जल अन्त न पायो॥
सकल पुराण वेद यह कहंई। पूरव कियो सो अब फल लहंई॥
हो प्रत्यच कर्म जो करही। वृथापरिश्रम करकर मरही॥
तातै चित्त कलेश न करिये। पूरब कियो सफल मन धरिये॥
पौरुष वृथा भागके आगे। कछु नहिं फलै कर्मके त्यागे॥

सुनके विप्र गुरुको बानी । धन्य धन्य प्रभु आतमज्ञानी ॥
धर्म मार्ग तुम मोहि दिखायो । सकल कलह कलि कलुष नशायो ॥
धर्मरूप धर्मात्मा, कीन्हेउ धर्म प्रकाश ।
धर्महिके बल है खड़ो, पृथ्वी अरु आकाश ॥
जा धनते मेरो मनमानो । सो धन नरक रूप मैं जानो ॥
दृष्टिचक्षु मेरे अति भयऊ । तुम्हरी कृपा सकल दल गयऊ ॥
साधु कृपाते उपजे ज्ञाना । सबते अधिक धर्मको जाना ॥
लोभ मोह मेटो भ्रमजाला । धन्य धन्य प्रभु दीनदयाला ॥
गुरुको नमस्कार तिन कीनो । केवल ज्ञान धर्म मन दीनो ॥
मैं तो अर्थ लोभ मन दयऊ । तुम्हरी कृपा कृतारथ भयऊ ॥
ज्यों निशि नाशै प्रगटै भानू । तुमते प्रगट भयो अस ज्ञानू ॥
तुम्हरी कृपा भयो वैरागा । ब्रह्मभाव समता मन लागा ॥
गुण अवगुण दुविधा मन गई । दुख सुख मिटो शान्त मति भई ॥
अब मैं धर्महि नाहिं बिसारौं । धर्म धर्म दिन रात पुकारौं ॥

इति त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

जो तृष्णा कर अति अकुलाई । ताको जरन कौन विधि जाई ॥
कौन कर्मनाशै सब दोषा । किहि विधि उपजै मन सन्तोषा ॥
भावी होनहार जो होई । ताको मैंट सकै नहिं कोई ॥
यहै जान धर्महि मन धरहू । तृष्णा जरन करत मति जरहू ॥

जाते तृष्णा तप्र बुझाई। मङ्की कथा कहौं समुझाई ॥
मङ्की यत्न वहुत विधि करही। ताहि अर्थ उद्यम नहिं सरही ॥
उद्यम करै वहुत चितलाई। वढ़ौ न कछु धनकी प्रभुताई ॥
रहेउ न जव कछु ताके पासा। लागो करन पराई आसा ॥
इत उतसे उधार धन आनौ। तव तिन लिये वृषभ द्वै जानौ ॥
वृषभहि फेरन लागो जवहीं। आगे कर्म आयगो तवहीं ॥

उतते आयो ऊंट इक, इतते दोउ वृष जात।
फँस गय ताके कण्ठमें, दिन विगरे की वात ॥

खच ले चलो दोऊ वृषनको। भाज गयो ले वृष सो वनको ॥
वृषको जव नहिं लगो ठिकानो। तवतो मङ्की अति घवरानो ॥
जो जो मैंने काय वनायो। निष्फल भयो अर्थ नहिं पायो ॥
सव उद्यम मैं करकर हारो। चलत न विधनासे कुछ चारो ॥
विधिकी गति कछु लखी न जाई। कहा भई औ कहा वनाई ॥
लिखो दुःख सुख सो क्यों टरही। यह मन मूर्ख वृथा श्रम करही
औरहि चितवत औरहि भयऊ। मोती चाहत मणि गिर गयऊ
जव विधना उलटे दिन करही। कै धन जाय कि धनपति मरही
जो कोउ अधिक उपाय वनावे। भाग्य विना सो कवहुँ न पावे
बुधि वल मन्त्र नहीं धन होई। कोटि उपाय करो किन कोई ॥
जा धनको सोचत दिन जाहीं। लाभ अलाभ होत चणमाहीं ॥

पूर्वजन्मके हैं कोऊ, कर्जदार वृष ऊंट।
अवलौं कहुँ पाये नहीं, गये कौनसी खट ॥

अव सब खोय समझ मोहिं आई । है यह द्रव्य महादुखदाई ॥
धर्म सहित जो उद्यम करही । दुखी न होय चमा मन धरही ॥
काम क्रोध मद जब मिटजाई । ब्रह्मज्ञान प्रगटे उर आई ॥
ब्रह्मज्ञान इस्थिर जब होई । आनँद रूप लखै नर सोई ॥
ऐसे मङ्की समझो जबहीं । पूरण ब्रह्म रूप भयो तबहीं ॥
सबको त्याग भयो वैरागी । धन्य धन्य मङ्की बड़भागी ॥
पाय उदार ज्ञान मतिधारी । छग छग छग छग छग संसारी ॥
राजा तृष्णा ऐसे जाई । मङ्कीने ज्यों तुरत मिटाई ॥
जो यह कथा सुनै चितलाई । ताकी सब संशय मिटजाई ॥
पावे पद निर्वाण अनूपा । चित दे सुनहु युधिष्ठिर भूपा ॥

कीजै ज्ञानकुठारसों, इच्छा कहं निमूं ल ।
ब्रह्मज्ञान उपज हृदय, मिटै मोह भ्रम शूल ॥

इति चतुर्दश अध्याय ॥ १४ ॥

धर्माध्यच धम तम ज्ञाना । गुरुआज्ञा सेवा बड़ जाना ॥
बौद्ध नहुष सों जो कछु कहेऊ । सो सब कथा सुननचित चयऊ
सप्तऋषीन ज्ञान उपदेशा । कहेउ बौद्ध सो सुनहु नरेशा ॥
यह इतिहास पुरातन कथा । बौद्ध जु कही नहुषसों यथा ॥
सो सब तुम सों पाण्डव कहहूं । सब छन्देह तुम्हारे दहहूं ॥
मुक्ति रु ज्ञान पाइये जैसे । मन निश्चलम ति होवै तैसे ॥

जसे हौं पाऊं यह सारा । सो स्वामी तुम कहो विचारा ॥
करत न हम उपदेश भुवाला । अरु नहिं शिक्षा देत विशाला ॥
जो उपदेश मोक्षके नीके । जानतहो तुम यत्न सभीके ॥
जिनसे मैं गुरु दीक्षा पाई । तिनके नाम सुनो नृपराई ॥

चील, पिंगला, तीरगर ; सर्प, कुमारि, विहंग ।
यह मेरे छै गुरु भये, लगो इनहिको रंग ॥

चील आदि षट गुरू हमारे । अवगुण तज सबके गुण धारे ॥
चील मांस ले उड़ी अकाशा । पक्षिन घेर लियो चहुँ पासा ॥
घेरत मांस छांड़ि तिन दीनो । निसन्देह हो मारग लीनो ॥
इस प्रकार संगत गृह त्यागै । फिरनाहीं कोइ आपद लागै ॥
यह सब गति मेरे मन भाई । तब अपनो गुरु चील बनाई ॥
वेश्या एक पिंगला वाला । शुद्ध बुद्धि अतिरूप विशाला ॥
व्यसनी की नित इच्छा करही । धनको ध्यान न चितते टरही
धनी आश जबलों मन लागी । तबलों रति न भाग्य की जागी
तजी आश जाते दुख होई । तब पिंगला चैन सों सोई ॥
आश छोड़ जब अति सुख पायो । तब वेश्या को गुरू बनायो ॥

विरच रहेउ इक तीरगर, तीरहि ध्यान लगाय ।
देखो कछु नहिं निकट ह्वै, गइ सैन्य समुदाय ॥

चहिये ऐसो चित्त लगानो । सैन्य नरेश जात नहि जानो ॥
ऐसे मन ईश्वरसों धरहीं । और सकल चिन्ता परिहरहीं ॥
सन्मुख कटक जात नहिं दीखो । यह गुण मैंने तासों सीखो ॥

संग्रहरम्भ बहुत दुखदाई । पर घर रहै सर्प्प ज्यों राई ॥
इहि प्रकार छांड़ो गृहकूपा । मिलै परम आनन्द अनूपा ॥
घर करने में कोटि बुराई । यह शिक्षा सर्पनसों पाई ॥
इक कुमारिके घर संन्यासी । आये कहुँते तीरथवासी ॥
तिनहित लगी बनावन पूरी । खट खट खटकन लागीं चूरी ॥
इक इक कर कर चूडी फोड़ी । एक एक करमें रखछोडी ॥
हो बेखटक बनायो भोजन । लगे प्रेमसे जीमन सो जन ॥

रहै सकल घरवार तज, ऐसे आपुहि एक ।
निशि वासर हरि हरि रटै, प्रगटै परम विवेक ॥

भिक्षावृत आश्रित जे आहीं । सुखसे रहत सदा बनमाहीं ॥
इकलो बसनो अति सुखदाई । यह सिख मोहि कुमारि सिखाई
छांड़ि द्रोह सब जीवनकेरो । लहत विहङ्गम मोद घनेरो ॥
वनको वास सदा मन भायो । यह मति मोहिं विहङ्ग सिखायो ।
ताते यह तजिये सब सङ्गा । धारण करो ज्ञानको अङ्गा ॥
जब इन सबकी शिक्षा मानी । आतम रूप भयो विज्ञानी ॥
यह कह बौद्ध भवन निज गयऊ । नहुषानन्द बहुत मन भयऊ ॥
सर्वातमा लखै जन जोई । समता ज्ञान ब्रह्म मति होई ॥
हे राजन् यह षट गुरु ज्ञाना । नहुष नृपतिसों बौद्ध बखाना ॥
यह प्रसङ्ग जो सुनै सुनावै । निश्चय वास स्वर्गको पावै ॥

इति पञ्चदश अध्याय ॥ १५ ॥

दयादृष्टि करके प्रभू, वर्णौं प्रज्ञा ज्ञान॥
लोभ मोह छूटे सकल, लागै हरिपद ध्यान॥
प्रज्ञा ज्ञान जासु विधि होई। ऐसौ रीति बतावहु कोई॥
जब संसार सकल सुख जाहीं। तब वराग होय मनमाहीं॥
पूरब भाग्य उदय हो जबहीं। प्रज्ञा ज्ञान होय मन तबहीं॥
प्रज्ञा ज्ञान जबहिं मन लागै। तब संसार सुखनते भागै॥
है प्रह्लादहि नाम प्रमाना। मंकीको भो जैसे ज्ञाना॥
कहौं पुरातन कथा बखानी। वैश्य एक मन मद अभिमानी॥
रथ चढ़ि चलेउ गर्व मन भरेऊ। ताके धक्के द्विज गिर परेऊ॥
वैश्य भजाय रथहि लै गयऊ। पश्चात्ताप विप्र मन भयऊ॥
हैं सब दोष कर्मके मेरे। ह्वैहै कहा वैश्यके घेरे॥
दूनो धन हो वैश्यपर, यहै हमारो शाप॥
भुक्तेगो सो समयपर, अपनी करनी आप॥
धनी भये संतन दुखदाई। यह अनीति अब सही न जाई॥
हौं बहु दुखी कहा जो करहूं। अबहीं प्राण त्यागकर मरहूं॥
तुम जनि विप्र शोक मन आनो। पूर्व्व जन्मको दुख सुख जानो
सम्पति विपति सबै सहि लीजै। औरहि काहू दोष न दीजै॥
हम पशु जाति करैं मह कर्मा। तुम मानुष जानो सब धर्मा॥
सत्य बात समझाऊ तोही। तू निज मोह मगन मति होही॥
निज संतोष ज्ञान मन नाहीं। देखो सबै दरिद्री आहीं॥
विषयी धन इच्छा मन करहीं। ज्ञान पाय धनको परिहरहीं॥

जो संसार सुखनते रहंई । आनन्द सहित परमपद लहंई ॥
जरन अधिक तृष्णा जहँ छाई । तहां न सुख देखो द्विजराई ॥
जो पृथ्वीको पावे राजू । तृप्त न होत सजै सुख साजू ॥
सदा मूर्खतामें मन रहई । मेरो मेरो सब कोउ कहई ॥

यह मेरो घरवार है, यह मेरो परिवार ।
यह मेरी है सम्पदा, निशि दिन यही विचार ॥

त्रिया पुत्र मित्रादिक भाई । इनहिं छोड़ यमके घर जाई ॥
धन सम्पदा सबै परिहरहीं । धनते धनिक सबहि मन डरहीं ॥
प्रथम धनिक राजाते डरहीं । कुल कुटुम्ब डर मनमें करहीं ॥
चोर दण्डते डरपै भाई । पानी अग्नि देख अकुलाई ।
जैसे आमिष पृथ्वीमाहीं । श्वान शृगाल सबै मिल खाहीं ॥
जो आमिष आकाश जाई । पक्षी बहुत लगैं तेहि धाई ॥
मच्छ कच्छ पानीमें खाहीं । त्यों सुख कहूं धनीको नाहीं ॥
ताते धन तृष्णा तज दीजै । निज सन्तोष हृदयमें कीजै ॥
ज्यों तरङ्ग उपजै जल माहीं । ज्यों थिर नहीं वृक्षकी छाहीं ॥
ऐसे धन थिर कबहुँ न रहही । सदा मूर्ख धन हित दुख सहही

मूरख जन नित करत हैं, धनको सदा गुमान ।
काहु सङ्ग नहिं जात धन, जात अकेले प्रान ॥

नहिं सूधो चितवत धनराई । धन उन्माद करै वरियाई ॥
इतनो मद नहिं व्यापै ताही । बुद्धिमान जो ज्ञानी आही ॥

ब्राह्मण जन्म श्रेष्ठ तनु पाई । सो केहि हेतु तजत द्विजराई ॥
हमते धर्म न कोऊ सरई । तौ यह देह न तनु परिहरई ॥
होकर गुणी प्रवीन सुजाना । तुम क्यों विप्र तजतहौ प्राना ॥
मूँसे मेंडक सर्प अपारा । योनि तिर्यको श्वान मंजारा ॥
वहिरे पङ्गु अन्ध अरु रोगी । गूङ्गे जीवन मन्द वियोगी ॥
अपने धर्म रहैं थिर जोई । तासम और न पण्डित कोई ॥
तुम तो ब्रह्मवंश उजियारे । प्राण तजत पापी हत्यारे ॥
तजहु शोक धीरज उर धारो । राम राम मुखते उच्चारो ॥
भजन समान और तप नाहीं । मिलत परमपद घरही माहीं ॥
शिवि दधीचि हरिचन्द नरेशा । लियो परमपद तजो न देशा ॥
जनकादिक राजा जे भयऊ । राजकरत निर्भय पद लयऊ ॥
इन्द्रिय वश घरही वैरागी । विषय तजै सो अति बड़ भागी ॥
सव तज विष्णु शरण किन जाई । कत संसार दुःख अकुलाई ॥
सर्व रूप नारायण जानो । निर्भय विष्णु चरण चित आनो ॥
हे पशु इक अचरज मोहिं भारी । को हो तुम शृगाल तनुधारी
अज हरि हर रवि चन्द्र सुरेशा । हो कोउ देव धरे मुनि वेशा ॥
रूप प्रकाश करो तुम स्वामी । जान परत मोहिं अन्तर्यामी ॥
धर्म रूप प्रिय वचन उचारे । सुनत सकल दुख गये हमारे ॥
हम हैं इन्द्र सुनहु द्विजराई । तव दुख देखि दया मोहिं आई ॥
सत्य रूप नारायण मानो । सव संसार स्वप्नवत जानो ॥
सकल साधु गुरुको परणामा । प्रज्ञा ज्ञान सदा निष्कामा ॥

पूर्व जन्मको भक्त जो, ताहि होय वैराग।
हरि हरि हरि हरि नित रटै, सर्व विषयको त्याग॥

इति षोड़श अध्याय॥ १६॥

यह संसार महा दुखदाई। दुखही दुख नित देत दिखाई॥
है सुख कौन जगतमें ताता। मोहिं समुझाय कहो सबबाता॥
सबते कहा सर्व कल्याना। भीषम पिता कहो निज ज्ञाना॥
निशिदिन क्षमा दया मन धरही। अरु सब इन्द्रिय निग्रह करही
सब संसार मृतक कर मानै। परमेश्वरहि सत्य कर जानै॥
कहौं पुरातन इक इतिहासा। सुनहु ध्यान धर तज सब आसा
जो कुछ पुत्र पिता सों कहेऊ। सुनहु तात मेरे मन रहेऊ॥
ब्रह्मपुत्र मेधावी भयऊ। पूछन ज्ञान पितापै गयऊ॥
मोको कहा कर्म अब करनो। कैसे रहौं पिता सो बरनो॥
कहा सु दिन दिन करौं विचारा। सो सब कहो सहित विस्तारा
प्रथम वेद पढ़ करहु सुकर्मा। पीछे ब्रह्मतत्त्व को मर्मा॥
प्रथम राज्य सन्तत उपजाई। बहुरि करो तप वनमें जाई॥
काल भुजङ्ग रहेउ मुँह बाई। दिन दिन बढ़ै रोग अधिकाई॥
क्षण क्षण भङ्ग होत तनु ताता। तुम क्यों कहो स्वार्थकी बाता॥
ऐसे आयु क्षणहि क्षण क्षीना। जैसे विकल थोर जल मीना॥
यह तनु जात न लागै बारा। कोऊ थिर न रहै सँसारा॥

जवलग नाहीं होत गिलानी । तब लग रोग ग्रसे नहिं आनी ॥
जवलग नहीं कालसों दापा । तबलग वेग सँभारो आपा ॥
जंबलग अति आपदा न आई । तबलग दूर करो भय भाई ॥
जवलग देह देह नवराता । तब लग विष्णु सँभारो ताता ॥

जैसे जलमें बुदबुदे, उठ उठके गल जात ।
ऐसेही गल जायगो, एक दिना यह गात ॥

दारुण काल मृत्युको भर्मा । बालकपनते कीजै धर्मा ॥
ज्यों तरु फल पकपक गिरपरहीं । त्योंही काल सबन संदरहीं ।
वालकते तरुणापन भयऊ । तरुणापनसे वृध ह्वै गयऊ ॥
जैसे घर जीरण गिर परही । तैसे तनु घर सब सुख टरही ॥
ममता कर अपनो सव मानै । आप समेत जात नहिं जानै ॥
जो मैं कहो सो माने बाता । शिरपर काल न सूझै ताता ॥
जब आयुर्बल जात बिलाई । आवत काल न जानो जाई ॥
यह विचार कर विलम न कीजै । विष्णु चरण धर्महिं मन दीज
जवते भूल अपनपो गयऊ । तवते जन्म मृत्यु वश भयऊ ॥
सवही जात मृतक छिटकाई । एक धर्म अपने सङ्ग जाई ॥

होत न काहूको कोऊ, तात मात गुरु भ्रात ।
दो दिनके साथी सवै, अन्त धर्म सँग जात ॥

जानो कालसिंह बलवाना । तुरत निकार लेत है प्राना ॥
ताते हर हरिसों कर नेहा । सदा न रहै खेदको देहा ॥
दारा पुत्र मित्र अधिकाई । अपनी अपनी कहत बनाई ॥

जिन जिनको तुम सगे विचारत। ठोंक ठोंकके सोइ पजारत ॥
पानी अग्नि जरत सब जहां। जठरागिनिमें राखो तहां ॥
खान पान पूरत सब साजा। सो कृतघ्न क्यों बिसरत आजा ॥
ऐसो रूप कहां ते आयो। बनो बनायो कहां समायो ॥
कौन बन्धु अरु को परिवारा। सब झूठो जगको व्यवहारा ॥
मारगमें पन्थी दिनचारी। ऐसे सब कुटुम्ब नर नारी ॥
घरमें हितू जानिये जोई। मरती समय सङ्ग जो होई ॥
होत कोउ काहूको नाहीं। माया मोह झूंठ जगमाहीं ॥

कोऊ काहूको नहीं, झूंठो माया मोह।
धन्य वही जो त्याग सब, बसत गिरिनको खोह ॥

हा हा तात तात कर रोवै। सर्प खाय मेंडक जिमि जोवै ॥
ऐसे मृत्यु ग्रसे सब कोई। पण्डित मुगध न छूटै सोई ॥
देह अनित्य जान अस लीजै। हरि हैं नित्य ताहि मन दीजै ॥
पुत्र वचन सुन उपजो ज्ञाना। परमातमा सत्यकर माना ॥
सर्व त्याग निस्पृह तब भयऊ। श्री गोविन्द चरण मन दयऊ ॥
लागो हरि हरि हरि हरि करनै। निशिदिन प्रभुकी महिमा वरनै
कभी कहै तुम त्रिभुवन स्वामी। कभी कहै तुम अन्तर्यामी ॥
कभी कहै तुम शिव अजदेवा। सुरनर मुनि नहिं पावत भेवा ॥
कभी कहै तुम जग निस्तारो। कभी कहै तुम मोहि उबारो ॥
कभी कहै तुम हे गिरिधारी। पूजो मनकी आश हमारी ॥

यहि प्रकार करिके विनय, लगेउ करन पुनि ध्यान।
यह छवि मोहिं दिखावहु, कृपासिन्धु भगवान॥
सुन्दर श्याम पीत पट भ्राजै। शङ्ख चक्र कर गदा विराजै॥
परम मुदित नयनं अभिरामा। वदन प्रसन्न भक्त सुखधामा॥
शीश मुकुट कटिपर पट भ्राजै। पीताम्बर तनु अधिक विराजै॥
कम्बु कण्ठ सुन्दर भुजचारी। हृदय भृगुलता सोहै प्यारी॥
करधनु शायक कटितट भाथा। जनसुखदायक श्रीरघुनाथा॥
चरण कमल कोमल अरुणारे। कलिमल सकल निवारण हारे॥
हृदय धारि द्विज ऐसो ध्याना। परम उदार प्रगट भो ज्ञाना॥
यहि छविसों प्रभु शारँगपानी। दीजै दरश मोहि प्रभु आनी॥
पुत्र पिता को ज्ञान वतायो। सो सब क्रमक्रम तुमहि सुनायो॥
प्रज्ञा ज्ञान होत है ऐसे। पुत्र पिता उपदेशेउ जैसे॥
प्रज्ञाज्ञान विधान सब, कहेउँ तुमहिं समुझाय।
चित्त न भटकावहु कहूँ, भजहु कृष्ण यदुराय॥

इति सप्तदश अध्याय॥ १७॥

योगेश्वर जानै सब भेवा। मुनियन मध्य श्रेष्ठ शुकदेवा॥
ब्रह्म भाव मायाको त्यागू। केहि सुखसे उपज वैरागू॥
प्रथम गर्भ योगेश्वर जानो। ताके व्यास अपनपौ मानो॥
ज्ञानवान श्रद्धासों रहेऊ। ताते व्यास वचन सो कहेऊ॥

क्षुधा पिपासा दुख सुखरागा। यह सब जीत करहु वैरागा॥
मदषट कर्म क्रोध परिहरहू। सबतज सत्यधर्म आचरहू॥
बन्धु मित्र पुत्रादिक जेते। कोऊ सङ्ग न लागहि तेते॥
धर्म विना नर सदा अनाथा। जीवन कर्म धर्म है साथा॥
काम क्रोध मद लोभ अपारा। दम्भ द्रोह निन्दा संसारा॥
सांचो शुद्धभाव मन धारो। ऐसे ब्रह्मचर्य्य आचारो॥

आदि ब्रह्म अद्वैत अज, अविनाशी अविकार।
ताहि भजो सब तजो भ्रम, जो चाहो निस्तार॥

हिंसा त्याग क्षमा मन आनो। निर्मल स्वर्ग पन्थ पहिचानो॥
हिंसादिक कुकर्म बेढंगा। त्यागो परधन परतियसङ्गा॥
सदा कुमति अवगुणसों प्रीती। यह सब है अधर्मको रीती॥
जहां न सुफल वृक्ष विश्रामा। जहां न परमेश्वरको नामा॥
धर्मात्मा जहां नहिं कहिये। ऐसे ग्राम देश नहिं रहिये॥
मोह नींदमें सोवत रैहौ। आंख खुलै तब फिर पछितैहौ॥
नीच मीच का भय अति भारा। सावधान हो करो विचारा॥
जिनसों रीति प्रीति अति चारू। ते सब क्षणमें होत बटाऊ॥
जाति बन्धु मरघट लौं सङ्गी। सङ्ग न जात सगी अरधङ्गी॥
आगे आप अकेलो जाई। कोऊ सङ्ग न लागत धाई॥

तब रोरो पछितात है, मल मल दोऊ हाथ।
उस कुसमयमें होत हैं, दान धर्महो साथ॥

मिलत नहीं तेहि पथ विश्रामा। नहिं अवलम्ब एक क्षण यामा॥
कठिन पन्थ अतिकण्टक जहां। अन्धकार नहिं सूझै तहां॥
वहां न कोऊ होत सहाई। भारत यम तब अति अकुलाई॥
मात पिता सुत वित अरधङ्गी। उस दुखमें कोउ होत न सङ्गी॥
और न काहूकी तहँ आशा। ज्ञान दीप तहँ करै प्रकाशा॥
सत्सँग दीप हृदयमें धरही। धर्म अनेक तेल तप करही॥
दया रुईकी बाती करिकै। क्षमादान दीपक में धरिकै॥
भक्ति अग्नि सों ताहि पजारै। बड़े यत्न सों उरमें धारै॥
यों दीपक वरिये चित लाई। जासों नीच काल मिट जाई॥
निसन्देह फिर कीजै भक्ती। होय अधिक तब निश्चल शक्ती॥

काल व्याल इस जीवको, डसत रहत दिन रात।
भजन सार संसारमें, और न दूजी बात॥

क्षणमें क्षणभङ्गुर तनु जाई। ताते वेगि समुझिये भाई॥
कौन पिता को काका सुतहै। बस जगकी माया अद्भुत है॥
हिम ग्रीषम वर्षाऋतु आई। ऐसे दिन दिन आयु सिराई॥
इन्द्रिन वश सुत वित सत माने। हरिसों प्रीति रीति नहि माने
जो निष्काम उग्र तप करहीं। शोक मोह दारुण दुख हरहीं॥
जरा आन जब तनुको गहई। देह सिथिल सुधि बुधि नहिं रहई
सुनत ज्ञान मनमें नहिं धरहीं। ज्यों कर दीप कूपमें परहीं॥
पन्द्रह ते पच्चिस को भयऊ। तऊ न ज्ञान रत्न मन दयऊ॥

ज्ञानहि करै पापको नाशा। ज्ञान हृदयम करै प्रकाशा॥
जब उपजे मनमें सन्तोषा। ज्ञानहि ते पावै नर मोषा॥

ज्ञान भानु जाके हृदय, करै प्रकाश अपार।
ताको भव वाधा हरै, देय अक्षत फल चार॥

ऐसे ज्ञान धर्म्म जे करहीं। मनमें ताको फल नहिं धरहीं॥
ताहि धर्म्म ते उपजै ज्ञाना। सत्यवचन यह व्यास बखाना॥
तुम स्वामी सब धर्म्म सुनायो। मिथ्या कर संसार दिखायो॥
उपजायो मन ब्रह्मविचारू॥ कियो हृदयमहं ज्ञान प्रचारू॥
इन्द्रिय निग्रह अरु वनवासा। विन विद्या नहिं होत प्रकासा॥
होय न ज्ञान विना सन्तोषा। तबलग जीव न पावै मोषा॥
तपते पूर्व पाप सब टरहीं। ब्रह्मज्ञान जीवहि निस्तरहीं॥
जो मधु अन्न मेलकर खाई। वढै क्षुधा सब रोग नशाई॥
जीवन धर्म्म अर्थ अरिमाना। धर्म्महि को है केवल ज्ञाना॥
ज्ञान विचार धरै सो ध्याना। लहै मुक्ति सो पद निर्वाना॥

रहत विष्णु के निकट नित, सदा उन्हीं को ध्यान॥
और न चित भटकत कहूँ, येही पद निर्वान॥

नित प्रति ब्रह्मज्ञान की गाथा। पद्मासन कीजै मन हाथा॥
मन वच क्रम हरिध्यान लगावै। सो नर अचल मुक्तिपद पावै
प्रकृति पुरुषको पावै भेवा। व्यासवचन समुझो शुकदेवा॥
व्यास कही शुक समझो यथा। तुम्हैं सुनाई नृप सो कथा॥
धर्म्म समेत सुनै जो कोई। निज मुक्तिहु पावै नर सोई॥

जब यह ज्ञान चित्तमें लागा । तब शुकको उपजो वैरागा ॥
इस प्रकार भये शुक वैरागी । भवसागर की माया त्यागी ॥
सब मुनि जनमें आदर पायो । ब्रह्मज्ञानसे ध्यान लगायो ॥
जो जो प्रश्न किये तुम राई । सो सब गाथा कह समझाई ॥
धन्य धन्य तू नृप बड़ भागी । मिले तोहि ऋषि मुनि वैरागी ॥

श्रेष्ठ कथा शुकदेवकी, सुनै सुनावै जोय ।
चला जाय वैकुण्ठ को, रोक सकै नहिं कोय ॥

इति अष्टादश अध्याय ॥ १८ ॥

भई अधिक श्रद्धा मम गाता । भीषम पिता कहो यह बाता ॥
जाते पाप दोष सब जाई । भूमि दान कहिये समझाई ॥
भूमि दई तिन दीनो सबूं । कनक आदि द्रव्यादिक सबूं ॥
मन्दिर वापी कूप तड़ागा । ताल ग्राम उपवन बन बागा ॥
अग्नि होम यज्ञादिक जेते । भूमि दानते सब फल तेते ॥
पृथ्वी कश्यपसों अस कहई । मोहिं देय सो सब फल लहई ॥
प्रभु वराह ह्वै लाये मोहीं । शुद्ध जान कर दीनी तोहीं ॥
महीदानदे कियो महीशा । धन्य धन्य प्रभु हरि जगदीशा ॥
इन्द्रकही सुरगुरुसों बाता । पृथ्वीदान बड़ो है ताता ॥
मोसों यह ब्रह्माने गाई । सो मैं कहूं तुमहिं समझाई ॥
जब गेहूं खेती बहु फरही । हरी भूमिको दान जो करही ॥

ईख समेत खेतको दाना। जाय स्वर्गचढ़ सुभग विमाना॥
शय्या सिंहासन शिर छत्ता। हय गज रत्न अमूल्य विचित्ता॥
सूरज चन्द्र पर्व जब बीतै। भूमि दानदे सब जग जीतै॥
पृथ्वी दै अन्हाय जो कोई। यज्ञ समान ताहि फल होई॥
इन्द्र भूमि सुर गुरुको दीनो। कीरति सकल लोकमे लीनो॥
वेदाध्ययन विप्रको दीजै। अक्षय स्वर्गामृत फल पीजै॥
ऐसे राजा तुमहू देहू। सुकृत धर्म करो अब एहू॥
पृथ्वी हरे पाप कह होई। मोसों पिता कहो सब सोई॥
जो काहू भू लेय छिनाई। ताको दोष कहो समझाई॥

पहिले पृथ्वी दान कर, पीछे लेय छिनाय।
तिनको गति कह होत है, कहो पिता समझाय॥

जो छीने कोउ भूमि पराई। साठसहस सो नरकहि जाई॥
पृथ्वी हरे पाप यह होई। कोटि जन्म रह नरकहि सोई॥
अरु जे भूमि विप्रको हरई। बनमें सिंह होय अवतरई॥
दई भूमि जो लेय छिनाई। नीच भवन जन्मे सो जाई॥
सगरादिक दीनो भू जानो। राजा त्योंही तुम परिमानो॥
विवाद में गिरगट तनु धारो। भलो बुरो कछु नाहिं बिचारो॥
जो जानै तो सांची कहई। नातरु मौन साधु चुप रहई॥
श्रद्धा सहित कथा नित पढ़ई। श्रोता फल पावै यश बढ़ई॥
भूमिदानको कथा बखानी। सुनो आपने नृप विज्ञानी॥
भूमिदान से सबफल होई। भूमि समान दान नहिं कोई॥

सर्वोपर आनन्द मय, भक्ति मुक्तिकी खान ॥
ताते सब तज कीजिये, हे नरेश भूदान ॥

इति एकोनविंशतितम अध्याय ॥ १६ ॥

भूमिदान को सुनेउ विधाना। का फल होय किये गोदाना ॥
मोपै पितु दयालु नित रहिये। धेनुदान की महिमा कहिये ॥
अति पवित्र सबते गोदाना। भिन्न भिन्न कर वेद बखाना ॥
विधि सों गऊदान जो करहीं। कुल समेत भवसागर तरहीं ॥
गऊ दूध है सुधा समाना। देय सु पावत अमिरत पाना ॥
बच्छा सहित जु कपिलागाई। कनक शृङ्ग पाटम्बर छाई ॥
अर्द्धप्रसूता गउ निरमेई। मानो सकल भूमि सो देई ॥
तरुणी सूधी नम्र दुधारा। बच्छा सहित सुकृत व्यवहारा ॥
दीजे तहां सुखी जहँ होई। उत्तम द्विज कुलीन हो जोई ॥
अशुचि अधर्म्म मूर्ख अकुलीना। दुखी कुचाली कपटी दीना

लोभी लम्पट लालची, कपटी अरु अज्ञान।
ऐसे द्विज को भूल के, कभी न दे गोदान ॥

विधि सों नृप कीजै गोदाना। पावो विष्णु लोक सुख नाना
तेहि गुण पुत्र मित्र अधिकाई। विष्णु लोक लौं होय बड़ाई ॥
राजा सुनहु पुरातन कथा। शापो पुत्र ऋषीश्वर यथा ॥
उद्दालक तप करै घनेरो। बेटा नाशकेतु ता केरो ॥

सेवत बहुत धर्म्म मन धरही । निशिदिन टहल पिताकी करही॥
कहेउ ऋषीश्वर वचन सुभावा । कुश फल फूल समिध ले आवा॥
तबलौं उद्दालक उठि गयऊ । पुत्रहि कुछ विलम्ब वन भयऊ ॥
नासकेतु खाली फिर आयो । कुश फल फूल समिध नहिं लायो ॥
रीतो देख भयेउ मन दापा । तबहिं पुत्रको दीनो शापा ॥
ताते उपजो चोभ अकाजू । निश्चय हमहि देख तू आजू ॥

शाप देत ऋषिराजके, आय गये यमदूत ।
पकर लै चले ताहि जब, तब बोलो ऋषिपूत ॥

मैं नहिं जैहौं सङ्ग तुम्हारे । दुखी होयँगे पिता हमारे ॥
सुनकर नासकेतुकी वानी । बोले उद्दालक मुनि ज्ञानी ॥
तात तात कर रोये सोई । मैं जो कियो करै नहिं कोई ॥
हे यमेश मेरो यह शापू । यम दिखाय लौटावहु आपू ॥
जब मुनि शोक बहुत विध कियऊ । भोर होतही पुनि सो जियऊ
उठिकै पितुके पावन लागो । मानो निशि सोवतते जागो ॥
नासकेतु बोले करजोरी । सुनहु ध्यान धर विनती मोरी ॥
सुनिये पिता स्वर्गकी बाता । मोहिं देख यम विहँसो गाता ॥
जो जो मैं देखो सो सुनहू । भिन्न भिन्न सबके गुण गुनहू ॥
जहां तहां विचरहिं सुर देवा । निशि दिन करहिं विष्णु की सेवा

कहीं तपहि आनन्द से, ऋषी मुनी अरु साध ।
कहीं लगावें प्रेम से, योगी योग समाध ॥

बहुतिक तपैं गङ्गके तीरा। बहुत तपैं गिरि खोह गँभीरा॥
कहो प्रथम अपनी कुशलाता। कहिये बहुरि स्वर्गकी बाता॥
धर्म्मराय यह वचन सुनाये। तुम ऋषिराज भले यहँ आये॥
स्वर्ग देख फिर जाओ आपू। ऋषिको वृथा जाय नहिं शापू॥
हमसों कछुक मांग वर लेहू। जाय पिताको उत्तर देहू॥
हे प्रभु मेरे पाप नशाओ। धेनु दान फल मोहिं सुनाओ॥
गऊ दानको फल है जेतो। हौं सो देखन चाहौं तेतो॥
तव मोहि लियो विमान चढ़ाई। दिव्य लोक मैं देखेउँ जाई॥
दिव्य स्वरूप अप्सरा जहां। मधु अरु चीर सुधा जल तहां॥
बहु दधिकी तहँ नदी बहाई। मिश्रीके पहाड़ तेहि ठांई॥

जहां तहां सुन्दर भवन, स्वर्ण कलश रहे राज।
ध्वजा पताका मनहरण, द्वार द्वार रहीं साज॥

जिन दीना गोरसको दाना। तिनहिं परम सुख सुन्दर नाना॥
दान करै जो सहित विधाना। सर्वोपरि उत्तम गोदाना॥
जितने रोम गायके आहीं। इतने दिवस रहै सुख माहीं॥
वैतरणी की तारनहारी। गोसम और कौन हितकारी॥
जीते जी निज दूध पियावै। अन्त समय सुरपुर पहुँचावै॥
ताको धर्म्म होय अधिकाई। जो कोउ देय प्रीतिसों गाई॥
धेनु महातम कहेउ बखानी। सुनतेहि मिलै मुक्ति मन मानी॥
है गोदानकि ऐसि बड़ाई। प्रीति सहित जो अर्पै गाई॥

वर्ष इकोत्तर स्वर्ग बसाई । आवागमन रहित होजाई ॥
दिव्य लोक फल पावै सोई । दान करै गायनको जोई ॥
महिमा सब गोदान की, वरणी सहज उपाय ।
भक्ति मुक्ति दायक सदा, सन्तत करै सहाय ॥

इति विंश अध्याय ॥ २० ॥

दान महात्म्य कहो अब ताता । उपजी श्रद्धा मेरे गाता ॥
पिता विचार कहो अनुमाना । दानन मध्य बड़ो को दाना ॥
पहिलो कथा याद मोहिं आई । ऋषि नारद जो मोहिं सुनाई ॥
कहत शास्त्र सब वेद पुराना । सबते बड़ो अन्नको दाना ॥
अन्नहि धर्म्म कर्म्म उपजावै । अन्नहि बुद्धि बल ज्ञान बढ़ावै ॥
अन्न देहमें राखत प्राना । अन्नदान सम और न दाना ॥
अन्न प्राण एकहि कर जाना । अन्न दियो तिन दीने प्राना ॥
अन्न दानते शुद्ध शरीरा । अन्नदान धारै मन धीरा ॥
अन्न दानते आवै ज्ञाना । अन्न दानते लागै ध्याना ॥
अन्नदान सम दान न औरा । जिमि केशव देवन शिरमौरा ॥
अन्न दान आनन्दनिधि, अन्न प्राण आधार ।
अन्नहि को सब जगतमें, छाय रहेउ व्यौहार ॥
श्रद्धा सहित अन्न जो कोई । देय प्रीति सों अति फल होई ॥
जाति परीक्षा कछु नहिं कीजै । क्षुधावन्त को भोजन दीजै ॥

भोजन समय जो आवै कोई। भूखो अतिथि आनिये सोई॥
जो जन भोजन ताहि जिमावै। जग यश अन्त परमसुख पावै॥
दधि घृत अन्न सहित मिष्टाना। श्रद्धा सहित करै जो दाना॥
मिलै ताहि सुरपुर को वासा। पूरण होय सकल मन आसा॥
कनकदान मोती मणि अङ्गा। और अनेक द्रव्य बहु सङ्गा॥
सब दाननको जानो भेवा। सबसे बड़ो दान यह देवा॥
अन्नदानकी अकथ कहानी। कथा पुरातन कहौं बखानी॥
वनमहिं वांछ तपहि आचरही। शिष्यसुभट सेवा नित करही॥

करत करत तप वांछको, भई अधिक कृश देह।
सुभट चरण पूजत रहत, गुरुसों परम सनेह॥

कही शिष्य गुरुसों यह बाता। जीव क्षुधाते अति अकुलाता॥
मेरो वचन सत्य तुम मानो। क्षुधा दुःख प्रभु सकल बखानो॥
खड़ग त्रिशूल और सब धारा। इन घायनते क्षुधा अपारा॥
मुद्गर चक्र शरनके घाई। इनते क्षुधा अधिक अकुलाई॥
तोमर शक्ती गदा कृपाना। इनते कठिन क्षुधाके बाना॥
अतिक्रम होय क्षुधाके सोगा। मानो अनल ग्रसे सब रोगा॥
लागे क्षुधा सबै गुण खारा। सोहै नही रूप शृङ्गारा॥
लागै क्षुधा बुद्धि नहिं रहई। धीरज ज्ञान ध्यान सब दहई॥
जो नहिं शीघ्रहि मिलै अहारा। भूलै सबही दम्भ अचारा॥
तुमजो क्षुधा वृत्तान्त बखाना। सत्य सत्य स्वामी मैं जाना॥

होत क्षुधा बाधा जबहिं, बिसर जात सब ज्ञान ।
और कष्ट नहिं जगतमें, दूजो क्षुधा समान ॥
क्षुधारोग जब तनु अकुलाई । दीजै औषधि अन्न मँगाई ॥
दान क्षुधा महिमा जो गाई । सबते अन्नदान अधिकाई ॥
बड़ो अन्नते और न दाना । देव मनुज सबहीको प्राना ॥
बहुत बात का कहौं बनाई । आतुर प्राण अन्न बिन जाई ॥
अश्वमेध यज्ञादिक जेते । अन्नदानसों लहिये तेते ॥
अन्नदानसों पावै मोषा । मानस पितृदेव सन्तोषा ॥
अन्नदान दायक कल्याना । सब धर्मनम धर्म्मप्रधाना ॥
और दानको पलटा होई । याते उऋण होत नहिं कोई ॥
ताते बड़ो अन्नको दाना । कहत शास्त्र सब वेद पुराना ॥
अरु इक कथा याद मोहि आई । चित दे सुनहु युधिष्ठिरराई ॥
आंखो देखी कहतहौं, गुप्त बात कोउ नाहिं ।
अति अद्भुत लीला भई, पुरी द्वारकामाहिं ॥
एक समय यदुपति सुखदानी । भये प्रीतिवश सुरति भुलानी ॥
द्विजके तन्दुल लिये चबाई । पीछे अन्नदान सुधि आई ॥
इक इक मुठी दयो इक लोका । तबहु न गयो चित्तको शोका
अपसे दूनों ताहि बनायो । तबहु रहेउ मनमें पछितायो ॥
हरि तौ अवगति अखिल अरूपा । कैसे भये प्रीति वश भूपा ॥
सो मोहिं पिता कहो समुझाई । जाते मम सन्देह नशाई ॥
तिल सबते पवित्र तुम कहेऊ । सो चिन्ता मेरे मन रहेऊ ॥

सो समुझाय कहो तिल दाना । किहि विधि करै होय कल्याना
तिलको दान भलो है यथा । सुन इक नृपति पुरातन कथा ॥
सुनत श्रवण उपजहि अह्लादा । धर्मराज द्विजवर सम्वादा ॥

सो सब वर्णन करतहूं, सुनहु पुत्र धर ध्यान ।
त्रिभुवनमें दूजो नहीं, तिलकेदान समान ॥

अन्तरवेद गांव इक रहेऊ । तहां सुविप्र गेह कर लहेऊ ।
एकहि रीति भांति गुण जहां । एकहि नाम विप्र द्वय तहां ॥
अगस्तिकर्मा तिनकोनामा । गोत्र अगस्ति वेदविश्रामा ॥
ताको यमकिङ्कर जु पठाये । वा धोखे वाको ले आये ॥
वाके धोखे वह जब आयो । धर्मराय यह वचन सुनायो ॥
विप्र आप मोहि अधिक पियारे । मेटो यह सन्देह हमारे ॥
जाके दिये बढ़ै अति धर्मा । मोसों देव कहो सो मर्मा ॥
सुख कामना कवन विधि होई । कवन पुण्य पावै गति सोई ॥
जो उत्तम दूतन सों डरहीं । संयम नियम व्रतहु सो करहीं ॥
तिल पवित्र जानो अतिधर्मा । तिलकर होम यज्ञ सब कर्मा ॥

तिलहै परम पवित्र अति, देय जो तिलको दान ।
यमको भय आवै नहीं, होय परम कल्यान ॥

माघमास के पहिले पच्छा । गोवरमें मल कीजै वच्छा ॥
चारकोण विधि सों विस्तरही । अष्टकमलदल तापर धरही ॥
वस्त्र उढ़ाय पन्न विधि कीजै । तनक तहां सोना धर दीजै ॥
मणि मोती फल गन्ध सुवासा । करिके प्रीति धरै दधि आसा

सोलह पल अन्न भर धरही । व्रतकर दान तिलनको करही ॥
तादिन तिलहि करै आहारा । सुमिरै वासुदेव करतारा ॥
माधो प्रीति मान मन लीजै । जो तिलपद्म विप्रको दीजै ॥
देय जो विष्णु भक्तको जोई । जो चाहे फल पावै सोई ॥
पावै अर्थ धर्म अरु मोषा । मिटै ब्रह्महत्या द्विजदोषा ॥
जो तिल गुड़ घृत द्विजन जिमावै । निश्चय परमधाम सो पावै

पितृ देव द्विज पाय तिल, मनमें होत प्रसन्न ।
करत प्रशंसा रात दिन, तिल समान नहिं अन्न ॥

छाया छत्र छांह सुख ठौरा । वस्त्रदान पाटम्बर औरा ॥
दधि घृत सहित अन्न सुख हेता । कूप बावड़ी ताल समेता ॥
स्त्रक चन्दन तँबोल फलदाना । मिष्टवचन सादर सन्माना ॥
राजा सकल धर्म आचरहू । धीरज ज्ञान हृदयमें धरहू ॥
सकल ज्ञान दाता तिलदाना । तिलमहात्म्य मुनिवरन बखाना
तिलसमान कोइ दान न औरा । तिलको दान सकल शिरमौरा
यम संतुष्ट होत तिलपाई । सब नरकन में करत सहाई ॥
तिलको दान देत जो कोई । यमपुर ताहि कष्ट नहिं होई ॥
तिलकी महिमा तुम्हैं सुनाई । धीर धरहु चितमें नृपराई ॥
अन्नदान सर्वोपरि वरनो । ताते अन्नदान नित करनो ॥

इति एकविंश अध्याय ॥ २१ ॥

मोसों पिता कहो समुझाई। सत्सङ्गति में कवन बड़ाई॥
सत्सङ्गति कवने फल होई। मोहिं समुझाय कहो पितु सोई॥
सुनहु एक उत्तम इतिहासा। जाते होय स्वर्गको वासा॥
धीवर मच्छ सहित प्रतिवादू। च्यवन सङ्ग उद्धार निषादू॥
मुनिको मार्ग जान नहिं परही। गङ्गामध्य सुतप नित करही॥
कर निषाद वृत्ति व्योहारा। गङ्गामें डारो तिन जारा॥
जब ही च्यवन जारमें परेऊ। देख निषाद अधिक मन डरेऊ॥
मछुन महामुनि देखेउ जबहीं। सब निषाद तहँ आये तबहीं॥
सब मछुवन मिल विनती ठानी। क्षमहु हमार दोष मुनि ज्ञानी॥
हमरो तो यह उद्यम पानी। तुम क्यों फँसे जालमें आनी॥
तुमहिं देख विह्वल तनु बानी। अब हम कहा करहिं मुनि ज्ञानी॥

होहु न अति भय भीत तुम, धीर धरहु मनमाहिं।
हमहुँ सदा जलमें रहैं, तुमहिं तनक डर नाहिं॥

घबरायो मत धीरज धारो। सिद्ध करूं मैं काम तुम्हारो॥
राजा नहुषहि सार जनाऊं। तुमको अपनो मूल्य दिवाऊं॥
समाचार जब नहुष जनाये। सुनतहि गङ्गनिकट सो आये॥
नमस्कार कर बोले गाथा। आज्ञा कहा देहु मुनिनाथा॥
मेरो मूल्य निषादहि देऊ। इनको जीवन उद्यम एहू॥
सांचो धर्म विचारो गाता। राजा समझ हमारी बाता॥
लाख करोरि और सब राजू। मूल्य तुम्हार देहु मैं आजू॥
राजा मिथ्या बोल न बोलो। दे अब समझ हमारो मोलो॥

आनो नहीं मोलको मर्म्। ऋषि सों कहो रहै ज्यों धर्म ॥
राजा भय सङ्कित भो जहां । गर्विजातु ऋषि आये तहां ॥
कोटि भानु सम तेज जेहि, दश दिशि होत प्रकाश ।
इत उत चितवत धरणि को, कबहुँ तकत आकाश ॥
राजा निर्मोलक मुनि जानहु । इतनो मूल्य और नहिं मानहु ॥
पूजे धर्म न और अनेरो । है निज मूल्य गाय मुनि केरो ॥
मोर मूल्य कहो गर्विजाता । राजा समक्ष आपने गाता ॥
मङ्गल रूप गायकी रेनू। सब ते अति पवित्र है धेनू ॥
गाय समान नहीं कोई औरा । जा गोबर पवित्र सब ठौरा ॥
तिहूँ काल गो सुमिरन करहीं । ताको पाप दोष सब हरहीं ॥
अरु जो देय गऊको ग्रासा । ताको विष्णुलोक निज वासा ॥
सब देवनको स्वरूप जो गाई । वेद धर्म ता चारो पाई ॥
सर्व आपदा कुमति हमारी । तुम्हरे दर्शन करत सिधारी ॥
परम दुःखकाटन उपकारी । कुटुँब सहित हम शरण तुम्हारी ॥
सत्सङ्गतिकी महिमा गावै । मच्छन सहित सर्व सुख पावै ॥
वेद पुराणन महिमा गाई । तीरथ रूप साधु हैं भाई ॥
नहुषहि संबोधन जस भयऊ । धर्म सहित अपने घर गयऊ ॥
जो यह कथा सुनै चितलाई । ताको सकल पाप मिट जाई ॥

इति द्वाविंश अध्याय ॥ २२ ॥

केहि विधि सब तीरथ फल पावै। वरमें रहै धर्म क्यों आवै॥
तुम मुनि सब तीरथ फल लहौ। मनसा तीरथ मोसों कहौ॥
राजा सुनो पुरातन कथा। लोमश कही जनक सों यथा॥
लोमश सब तीरथ जब न्हाये। विचरत जनकराय गृह आये॥
पूजा करी बहुत मनुहारी। बोले मीठे वचन विचारी॥
जब यह जनक चलाई बाता। तुम कछु मोंहि पूछो अब ताता॥
तुम स्वामी जानत सब भेवा। मनसा तीरथ कहिये देवा॥
सुने यहौं प्रभु तीरथ धर्मा। मोसों कहो महा मुनि मर्मा॥
तीरथ ज्ञान क्षमा मन धरही। निज तीरथ इन्द्रिय वशकरही॥
ब्रह्मचर्य कोमल मनमाया। तीरथ सब भूतोंमें दाया॥

तीरथ माता पिता गुरु, तीरथ जेठो भ्रात।
तीरथ पितुके मित्र जे, उत्तम तीरथ जात॥

तीरथ दोष रहित वैरागू। निज तीरथ हिंसाको त्यागू॥
वड़ तीरथ इन्द्रिन सों युद्ध। निश्चय तीर्थ ज्ञान मन शुद्ध॥
जल अस्नान शुद्ध नहिं होई। जबलौं मन वश कर न कोई॥
क्रूर नास्तिक चञ्चल सोई। तीरथ गये शुद्ध नहिं होई॥
जबलग मन प्रसन्न नहिं भयऊ। तीरथ माहिं गयउ अनगयऊ॥
जलके जीव जलहि में रहई। ते तीरथ को फल नहिं लहई॥
ताते निर्विकार मन रहई। सोई सब तीरथ फल लहई॥
जो नर सत्य ध्यान व्रतधारी। सो सब तीरथको अधिकारी॥

ज्यौं मद वासन शुद्ध न होई। सहस वार किन डारो धोई॥
वृथा सकल तीरथ न्टपराई। काम द्वन्द्व पाखण्ड न जाई॥

गङ्गा यमुना नर्मदा, काशी औ केदार।
चित्त शुद्ध तो शुद्ध सब, जगन्नाथ हरिद्वार॥

जाय जो आदि गया कुरुखेतू। पावै सब तीर्थन कर हेतू॥
इन्द्रिय वश निर्मल मन जहाँ। सब तीरथ घटहीमें तहां॥
तीरथ ज्ञान ध्यान जल होई। राग द्वेष मल डारो धोई॥
ज्ञान क्षमा तीरथ मन लावो। तब यह जीव परम पद पावै॥
जहां साधु संगति को वासा। जहां परम भागवत निवासा॥
जहँ हरिकथा नाम अविगाही। तेहि आश्रम सब तीरथ आही॥
वासुदेव नारायण जेते। तीरथ रूप जानिये तेते॥
जहां विष्णु श्रीवैष्णव तहां। तहां विष्णु सब तीरथ जहां॥
जहँ हरिभक्त तहां भगवन्ता। जिनको आदि मध्य नहिं अन्ता॥
ऊँच नीच हरि शरण जु आवे। सोई धन्य जु जग यश पावे॥

जे नर हरि हरि करत हैं, सब छल छिद्र विहाय।
भक्ति मुक्ति भागी तेई, पाप कलाप नशाय॥

हरि को शरण शुद्ध सब होई। तीरथ हरि सम और न कोई॥
श्वपच नीच हरि शरणजु आवै। होकर शुद्ध परमगति पावै॥
ताको जाति जु उघटै कोई। जाय नरक निश्चय नर सोई॥
जाति पांति बूझै नहिं कोई। हरि को भजै सु हरिका होई॥
सन्तोषी वैष्णव जो होई। विष्णु रूपकर पूजै सोई॥

तीरथ और भूमिपर जेते । धर्म्म सहित सो कीज तेते ॥
जबलौं शुद्ध चित्त नहिं होई । तीरथवर तस फल नहिं कोई ॥
निर्म्मल मन प्रसन्न नहिं जबलौं । कोई कार्य शुद्ध नहिं तबलौं ॥
सुन यह कथा शुद्ध मन होई । ज्ञान ध्यान पावौ सब कोई ॥
मनसा तीरथ कहेउ बखानी । सुनहु नरेश महा विज्ञानी ॥

इति त्रयोविंश अध्याय ॥ २३ ॥

अब यह कथा बखानहु ताता । ब्रह्म दोष क्यों लागै गाता ॥
चतुर पुरुष जानै सब कोई । बात न ब्रह्म दोष क्यों होई ॥
यह विचार मेरे मन रहेऊ । तब मैं व्यासदेव सों कहेऊ ॥
ब्रह्म दोष मुनि वर्णो यथा । तुम सों कहौं सकल सो कथा ॥
द्विजहि दान दे फिर जो लूटै । ब्रह्म दोष ते ते नहिं छूटै ॥
जो नर द्रव्य विप्रको हरहीं । अरु बिन काज साधुसों लरहीं ॥
मानै साधु सन्त नहिं कोई । ताहि ब्रह्महत्या फल होई ॥
विप्र साधुको करै बुराई । पानी पियत बिडारै गाई ॥
स्वारथ मात पिता परिहरही । हत्या ब्रह्म दोष सो करही ॥
अन्ध पङ्गु रोगी अन्याई । इनको सरवस लेय छिनाई ॥
इनमें दुख उपजावै कोई । हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई ॥
त्रिधा ब्रह्म जानो यह भेवा । ब्रह्मा विष्णु रुद्र त्रय देवा ॥
इनको करै अवज्ञा जोई । ब्रह्महत्या निश्चय तेहि होई ॥

भूखो विप्र जासु घर आवै। दुष्टवचन सो ताहि सुनावै॥
तासु निरादर करै जु कोई। हत्या ब्रह्म दोष तेहि होई॥
हृदय क्रूर गुरुसों अभिमाना। बनके जीव वृक्ष सम्माना॥
ब्रह्मदोष ता नरको होई। ऐसे काम करै जो कोई॥
अतिक्रोधी हिंसा मन धरही। जानत बुरो परायो करही॥
हरि गुण कथा न भावै जाही। हत्या ब्रह्मदोष हो ताही॥
आश लगाय विप्र घर आवै। विमुख जाय कैसो फल पावै॥
देन कहै अरु दियो न जाई। ताको कहो कहा फल पाई॥

भलो प्रश्न तनै कियो, अहो युधिष्ठिरराय।
भिन्न भिन्न मैं सब कथा, तोहिं कहों समुझाय॥

कहिकै देय नाहिं जो ताही। ताको सुकृत सफल नहिं आही॥
भूखो विप्र क्रोध जब करही। ताके दोष आप जर मरही॥
जैसे अग्नि घास जरजाई। ब्रह्मदोष त्यों सुकृत नशाई॥
कथा पुरातन वर्णौं ताता। सुन श्टगाल वानरकी बाता॥
पहिले जन्म विप्र हो कोई। अब पशु भयउ पापते सोई॥
इक श्टगाल इक वानर जाती। एकहि बन तिनकी उत्पाती॥
बनमें मृतक परो इक जहां। खान गयो गीदड तेहि तहां॥
वानर बैठो वृक्ष सँघाता। लागेउ कहन जन्मकी बाता॥
पहिले जन्म पाप तुम करेऊ। जबहि श्टगाल रूप तुम धरेऊ॥
मृतक भक्ष बुधि भई बिहाला। कौन पाप तुम भये श्टगाला॥
पहिले देन विप्रको कहेऊ। बहुरो भवन आय दुरि रहेऊ॥

तब मैं कछ विचार नहिं कीन्हो जब मोहिं विधि शृगाल तनुदीन्हो
तेरो प्रथम पुण्य सब गयऊ। कौन पाप तू वानर भयऊ ॥
यह सन्देह अधिक मोहिं ताता। वानर कहो आपनी बाता ॥
धर्म करत चञ्चल मन करेऊ। गुरु सों कपट क्रोध मन धरेऊ ॥
फल फूलनकी चोरी कयऊ। ताते मोहिं वानर तनु दयऊ ॥
ऐसे वचन परस्पर भयऊ। अपने अपने मारग गयऊ ॥
ताते मन अभिमान न कीजै। अरु काहूको अंश न लीजै ॥
आपन सुकृत धर्म मन रहई। हरिहर सुमिर परमपद लहई ॥
जो यह कथा सुनै हर्षाई। ताहि नाहिं यम देय दिखाई ॥

इति चतुर्विंश अध्याय ॥ २४ ॥

बिन आमिष नाहिंन सन्तोषा। वेद शाखिदे मेटहिं दोषा ॥
जिनको आमिष सदा अहारा। तिनको पिता कौन व्यौहारा ॥
व्यास समान कौन सामर्था। जानै गुप्त वेदको अर्था ॥
वेद सबै मिल मत जो कहई। मूरख समझ जान नहिं गहई ॥
वेद न आमिष खान बतावैं। झूठे झूठी बात बनावैं ॥
हिंसा आमिष चितसे तजिये। नारायण नारायण भजिये ॥
पद गुप्त मूरख मर्म न जानै। इन्द्रिनको स्वारथ पहिचानै ॥
शब्द भिन्न प्रति कोई जैसे। आमिष अर्थ सुभृतिमें ऐसे ॥
चलत कुपथ विषयी न विचारा। समझ न सकौ अर्थ व्यौहारा ॥
कैसे ताहि खान नर कोई। निरखत जासु महाघिन होई ॥

रक्त मूल मल वसाको, पूर्णपात्र सो जान ।
धिग धिग धिग उनको सदा, खात जे नर अज्ञान ॥
जिनको तनु आमिषसों पोषो । तिनको धर्म्मकर्म्म सब सोषो ॥
जिह्वा अग्र स्वाद सब आही । विष्ठा होत वार नहिं ताही ॥
निकट वधिकको सुधि नहिं लहैं । मीन दौर वनशीको गहैं ॥
गहत स्वाद पीछे अकुलाई । जब यम पकर पछारैं आई ॥
यह विचार मन डर उपजाई । आयु बढ़ै नहिं आमिष खाई ॥
आमिष खात सबै गुण जाहीं । आमिषसम निषिद्ध कोउ नाहीं
जिहि कुल मास खाय नहिं कोई । अति बलवान जानिये सोई॥
जो अहार आमिषको करहीं । सो बहु रोग व्याधि पचि मरहीं ॥
जाको मांस खाय है कोई । सो ताको फिर खैहै सोई ॥
आमिष खेत माहिं नहिं होई । घास समान न उपजै सोई ॥

मांस होत हिंसा किये, हिंसाको बड़ पाप ।
पाप वंशको क्षय करत, सहत नरकसन्ताप ॥

प्राण घातकर उपजै मांसा । खाये होत धर्मको नासा ॥
कांटा चुभत पीर तनु मानै । ऐसे दुष्ट औरको जानै ॥
काहू डर उपजावै कोई । ताको डर सबही ठां होई ॥
जितने रोम पशुहिं संहरहीं । उतनो वार नरक नर परहीं ॥
हाथ दीप ले परिये कूपा । यह आगे हिंसादि स्वरूपा ॥
मारै एक दूसरो कहई । एक विश्वासघातपर रहई ॥

अरु एक हाथ संवारें धरई। अरु जो आमिष विक्रो करई॥
छठो रसोंई रांधे आनो। अरु सातवों पसावै पानी॥
बैठ आठवों रुचिसों खाई। यमपुर सँग आठसो जाई॥
आठ प्रकार जु मारे कोई। आठोंको एकहि फल होई॥

हिंसासम संसारमें, दूजो पाप न और।
अन्धा गूंगा होय सो, जन्म लेय जेहि ठोर॥

जो ले मोल हते वर आनो। ताहि उधार देय जो जानो॥
ताहि उधार दिये अति दोषा। धन की हानि न पावै मोषा॥
जिनके आमिष कुल चल आयो। धूरि खाय कर जन्म गमायो॥
मांसस्वादसों खायँ जु जितन। श्वान शृगाल वने ते तितने॥
सुखसो आमिष भषै जु कोई। वृत्तरूप तामस तनु होई॥
बहुरो होय अधमगति सही। मोसों व्यासदेव सब कही॥
हिंसा पाप दोषते डरही। मद्य अरु मांस दोउ परिहरही॥
निरखत ज्ञान सोरे मन रहेऊ। यहै विचार बृहस्पति कहेऊ॥
जे जन छांडें मद्य अरु मांस। तिनहि मिलै वैकुण्ठनिवास॥
स्वर्ग मनोरथ पावें सही। राजा सुन वशिष्ठ यह कही॥

कैसी पीड़ा होति है, जब तनु लागत फांस।
फिर नर कैसे खात हैं, मार पशुन को मांस॥

साधु सभा ऋषि स्मृति सही। येही कथा नीति मिल कही॥
येही धर्म सनातन ताता। सत कर मानहु मेरी वाता॥
जीव दया सब धर्म समाना। सुवरण भूमि गायको दाना॥

दया जीवपर सबसे सारा। पाराशरको यही विचारा ॥
मुख्य जगतमें भोजन पाना। तजहु परन्तु मांसको खाना ॥
सबसों हेतु करै जो कोई। हरिके मन भावै नर सोई ॥
आमिष को त्यागै नर जबहीं। अश्वमेध फल पावै तबहीं ॥
करै सदैव सनातन रीती। धर्म्महि कथा सुनै कर प्रीती ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै। धर्म्म सहित चारो फल पावै ॥
आमिषको सम्पूर्ण विधाना। तुमसों वेदनुसार बखाना ॥
इति पञ्चविंश अध्याय ॥ २५ ॥

सुनबेकी श्रद्धा कर ताता। जनमेजय बूझो यह बाता ॥
कैसे भीम सर्पबश रहेउ। कैसे वचन युधिष्ठिर कहेउ ॥
मृगया भीम गयो हो जहां। देखेउ सर्प सोवतो तहां ॥
देखत भीम अचंभे रहेऊ। अहि साहसकर ताको गहेऊ ॥
बलकर भीम रहेउ पचिहारी। छूटै नहीं सर्प अतिभारी ॥
ताको पौरुष अन्त न लहेऊ। तबहि भीम इस्थिर ह्वै रहेऊ ॥
राजा बैठे आसन जहां। असगुन देखन लागे तहां ॥
तबतो अति विस्मय मन भयऊ। भीम अकेलो बनमें गयऊ ॥
तरुण बैस अति दारुण क्रोधा। ऊच नीचको ताहि न बोधा ॥
भीम कहूँ निश्चय भय खाई। जाते अशगुन देत दिखाई ॥
कहा करौं कासे कहौं, कासों बूझूं भेद।
मन अधीर उर पीर अति, होत चित्तमें खेद ॥

यह कह आप चले अकुलाई। पीछु सङ्ग पुरोहित जाई॥
अर्जुन नकुल और सहदेवा। देखत चिह्न विचारत भेवा॥
टूटे टाटे वृक्ष जु पाये। जाना भीम हतै ह्वै धाये॥
ऐसे चलत खोज तिन लयऊ। सबके मनमें धीरज गयऊ॥
तीनों भ्रातन कहेउ विचारा। भीम कुशल है सकल प्रकारा॥
भीम सर्प पकरे है जहां। ढूँढ़त ढूँढ़त पहुँचे तहां॥
धौम्य पुरोहित सङ्ग जु गयऊ। अपने राजा आगे भयऊ॥
पर्वतको कन्दरा विकरारा। तामहिं देखो भीमकुमारा॥
तुम पण्डित जानत सब बाता। सबते भीम बली अति ताता॥
तुम क्यों भये सर्पवश ताता। मोसों कहो सत्य सब बाता।

तुम समान संसार में, और कौन बलवान।
यहां आन कैसे फँसे, होकर बुद्धिनिधान॥

दैत्य अपर बल गिनिये जितने। मोसों युद्ध जुरहिं नहिं तितने॥
सर्प दर्प मारेउ मम चाहो। जानों नहीं कौन यह आही॥
यह सुन अर्जुन उठो रिसाई। बीर धनुष कर लीनेउ धाई॥
लावहु वेग हमारे बाना। मारौं सर्प करौं खरियाना॥
नकुल और सहदेव रिसाना। भयो क्रोध नहिं अङ्ग समाना॥
सर्प हमारे भ्रातहि गहई। फिर भी वह जड जीवत रहई॥
परे आपदा सहिये बीरा। कोप न कीजै अर्जुन धीरा॥
सोचा भीम रहे पचिहारो। सो नहिं मानै दाव तुम्हारो॥

छांड़ो क्रोध धरो मन धीरा। यह कुछ औरहि कारण वीरा॥
तुम कत बन्धु देख अकुलाता। बूझन देहु सर्पसों बाता॥

सर्प नहीं यह देव कोउ, राखो रूप छिपाय।
भीमसेनसे बली को, दीनेउ मान घटाय॥

कौन रूप का कियो उपाई। को तुम अहो कहो सत भाई॥
क द्विजशाप मलिन तव गाता। कारण कौन गहेउ मम भ्राता॥
हौ तुम्हार पुरुषा निज आही। अति प्रचण्ड जानत सबताही॥
नहुष नाम राजा गम्भीरा। जोहै सकल धर्म गुण धीरा॥
अति ऐश्वर्य राज मम भयऊ। तबहि अगस्त्य शापमोहिं दयऊ॥
तुम राजा अपने व्योहारा। यद्यपि अतिप्रचण्ड संसारा॥
तुमने कहा कियो अस पापा। जो प्रभु तुमहि दयउ मुनि शापा
गौतम पाप इन्द्र दुरि गयऊ। इन्द्रलोक तव सूनो भयऊ॥
चलेउ पलानि भेद यह जानी। हौं इन्द्रासन बैठेउ आनी॥
इन्द्राणी सुर दुरि रहे जहां। कोप वचन हौं बोलेउ तहां॥

जीतेउँ सब संसार हम, मिलेउ इन्द्रपद्द आज।
रहेउ हमारे करनको, और कौन सो काज॥

निन्नयानवे यज्ञ कर लयऊ। अब हम त्रिभुवनपति प्रभु भयऊ॥
पायो तीन लोकको साजा। इन्द्र समान भयो मम राजा॥
शची हमार भेद जब पायो। गुरुसों मिल कछु मतो उपायो॥
जब लौं काल न पहुँचे आई। तबलौं इन्द्र न देय दिखाई॥
जबलौं गौतम शाप न छैहो। तबलग छल कर राखो एहो॥

तुम अवाह् वाहन मँगवाओ । ता चढ़ नृप हमको ले जाओ ॥
यथाहृवाहन है नहिं कोई । तेरे किये तुरन्तहि होई ॥
यह सुन शची तहां छल कियो । मधुर वचन हमसों बोलियो ॥
होहु प्रसन्न वचन इक पाऊँ । तब मैं निकट तुम्हारे आऊँ ॥
इन्द्र समान तुम्हैं जब मानू । लाओ एक अनूपम यानू ॥

जाहि देख इक बारही, मोह जाय संसार ।
शीघ्र मँगावहु प्राणपति, मानहु वचन हमार ॥

जब ऐसी पालकी मँगाओ । तापर कर गहि मोहिं चढ़ाओ ॥
लेकर चलहि विप्र मुनि ज्ञानी । तब मैं बनूं तुम्हारी रानी ॥
मैं मूरख यह भेद न जाना । नारिवचन अति प्रियकर माना ॥
द्विजन सहित पालकी मँगाई । आप चढ़ो औ प्रिया चढ़ाई ॥
विप्र अगस्त्य आदि मुनि जेते । ले पालकी चले सब तेते ॥
क्रोधित हो बोले मुनि ज्ञानी । अजगर होहु नृपति अभिमानी ॥
जबहि अगस्त्य सर्प मोहि कहेऊ । मुनिको शाप शीशधर लयऊ
उतर तुरन्त चरण मुनि गहेउ । दीन वचन मुनिवरसों कहेउ ॥
ब्रह्म तेजको लखो न भेवा । छुटौं शापते कब मैं देवा ॥
जब पग शिर धर विनती ठानी । तब कर कृपा कहेउ मुनि ज्ञानी

नगर हस्तिनापुर विषे, लेय धर्म्म अवतार ।
नाहि युधिष्ठिर कहैं सब, ज्ञानी परम उदार ॥

सो राजा तव कुलमें होई । ताहि धर्म जानैं सब कोई ॥
धर्म नीति को जानन हारा । तेज पुञ्ज बलवान अपारा ॥

तेरे वंश होयगो सोई । ताको यश वर्णै सब कोई ॥
ताके वचन सुनत गति होई । ऐसा वचन कहे ऋषि सोई ॥
ताते भीमसेन मैं गहेऊ । इस मिस आवें मुनि जो कहेऊ ॥
कहो वचन छूटै अहिदेहू । जो बूझौं सो उत्तर देहू ॥
सो सब बूझो जो जी चाहै । जो तुम्हरे मन चिन्ता आहै ॥
बुद्धि समान कहो जो बाता । ताको उत्तर देहौं ताता ॥
तुमहि देख उपजो अति नेहू । धर्म वचनको उत्तर देहू ॥
तुम राजा जानो सब मर्मा । कहो कोइ उत्तम सो धर्मा ॥

तात आपके सामने, कह न सकौ कछु सार ।
पर कछु वर्णन करत हौं, अपनी मति अनुसार ॥

सत्य शौच जप तप आचारो । सम दम अरु धीरज मन धारो ॥
क्षमा दया कोमलता ज्ञाना । संयम सहित विचारो ध्याना ॥
जानो परमेश्वरको मर्मा । सब धर्म्मनमें उत्तम धर्मा ॥
को तप मोहिं सुनावो देवा । कहा सत्य समझावहु भेवा ॥
दम्भ कहा सो कहिये ताता । कस जानिये शौचकी बाता ॥
सत्य रु शौच परमतप अहहीं । दम्भ सदा मन वशकर गहहीं ॥
कहा लाज कहिये नृपराई । का सन्तोष कहा समुझाई ॥
कहा क्षमा कहिये यह बाता । कोमलता समझावहु ताता ॥
लज्जा चितमें करत गिलानी । विषय त्याग सन्तोष जु जानी ॥
दुख सुख सहै जु क्षमा पवित्ता । कोमलता कहिये समचित्ता ॥

कहा ज्ञान कहिये नृपति, कहा वस्तु है शान्त।
दया ध्यान काको कहत, कहिये सकल वृत्तान्त॥

तत्त्व विचार कहिये ज्ञाना। मनको प्रश्न शान्तकर माना॥
दया सोई सबको सुख दीजै। ध्यान विषय नृत रति मन कीजै
सदा शत्रु बैरी निज कौना! को सब रोग व्याधिको भौना॥
कौन साधु कहिये नृपराई। यह सब मोहिं कहो समुझाई॥
बैरी सदा क्रोध यह जानो। लोभ अनन्त व्याधिको खानो॥
सबसों हेतु करै सो साधू। हिंसा मन निर्दयी अगाधू॥
जाको संगत उपजै पापू। जाको नाम लेत सन्तापू॥
यह मोसों कहिये समुझाई। अक्षय नरक कौन विधिजाई॥
बोल विप्रघर करै निरासा। ताको सदा नरकमें वासा॥
नृप अधर्म मूढ़ मति रहई। झूँठ वचन सबहीसों कहई॥

वेदनको निन्दा करै, हरै विप्र धन धाम।
डरै न हत्यासों कबहुँ, सरै न कोउ शुभ काम॥

उचटै धर्म परायो पापी। नित प्रति रहै शोक सन्तापी॥
ऐसे कर्म जु प्राणी करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
झूठी साखि लोभ तें भरई। गुरुसों क्रोध कपट मन धरई॥
वेद पुराण प्रीति नहिं करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
पचत धरो पतियह लेई। मांगे बुद्धि न औरहि देई॥
नारायणको भक्ति न करई। अक्षय नरक मध्य सो परई॥
छिद्र पराये देखत रहई। निशिदिन दोष औरके कहई॥

कर सुगुरुसों कपट सयाना । तिनहिं देख कीजै मनमाना ॥
दासी नीच गमन जो करई । तासों पितृ वैर मन धरई ॥
मीठी वस्तु अकेलो खाई । अक्षय नरकमध्य सो जाई ॥
धर्म्म रूप नृप तेरी वाता । सुनत बहुत सुख मेरे गाता ॥
राजा समझ वचन इक कहिये । देवलोक कौने विधि रहिये ॥
जाके अतिथि विमुख नहिं जाई । अरु हरिकथा सुनै चित लाई ॥
मित बोलै आगे ह्वै लेई । मीठो वचन बोल सुख देई ॥
ईश जान पूजै नर सोई । निश्चय देव लोक तेहि होई ॥
सोवत जागत यहै विचारा । होय सदा सन्तन उपकारा ॥
पर-उपकार-परायण रहई । देवलोक सो प्राणी लहई ॥
नारायण नारायण करई । भक्त साधु संगत मन धरई ॥
वेद धर्म्म को मारग गहई । नित अनन्द सो सुरपुर रहई ॥
कामिनि करै पुरुषकी सेवा । पतिको लखै कृष्ण समदेवा ॥

निशि दिन पतिके पदकमल, पूजै सहित सनेह ।
कोऊ रोक सकै नहीं, सुरपुर जाय सदेह ॥

रूपवन्त यौवन गुण सदा । अरु घर होय सकल सम्पदा ॥
परनारी माता सम जानै । द्रव्य परायो रज कर मानै ॥
जो ऐसो इन्द्रियजित रहई । कोमल वचन सबन सों कहई ॥
कछु अभिमान न मनमें लावै । सो प्राणी वैकुण्ठ सिधावै ॥
राजा सुनत तुम्हारी बाता । श्रद्धा प्रगट भई मम गाता ॥
श्रद्धासों कीजै सब बाता । कीजै सो श्रद्धा विख्याता ॥

अकुलीनो इन्द्रियजित होई। ताको हित सों पूजै कोई॥
सकल धर्म्म निज उपजै जहां। तीरथ फल पावै सो तहां॥
ज्ञान धर्म्म तप तेज बढ़ावै। जाते वेग परम पद पावै॥
आगे कतने करै जु कर्मा। श्रद्धा विना सकल सब भर्मा॥

योगासन धारण करै, बांधै वेद पुरान।
क्षमा दया श्रद्धा विना, सब नटकला समान॥

छूटो नहुष शापते जबहीं। भीमसेन छूट आये तबहीं॥
भीमसेन राजा ढिग आये। परम प्रीति कर कंठ लगाये॥
अमृत वचन सुने जब काना। देवरूप भये नहुष सुजाना॥
साधु वचन सबको उपकारा। साधु समागम तारनहारा॥
साधुन की महिमा अधिकाई। साधु वचन सब को सुखदाई॥
धन्य सुदेश धन्य वे लोगा। धन्य धन्य सन्तन संयोगा॥
तुम सम नृपति भयो नहि होई। यश प्रसिद्ध जानै सब कोई॥
अब हौं धन्य धन्य महाराजू। जो मोपर प्रसन्न तुम आजू॥
तुम पण्डित जानत सब बाता। कस मद भयेउ तुम्हारे गाता॥
अबहूं मम संशय नहि गयऊ। तुमको पिता गर्व क्यों भयऊ॥
यह सब भेद मोहि समभावो। मेरो सब सन्देह नशावो॥

तुम ज्ञानी दानी परम, सन्तत शील सुभाव।
को नहि जानत जगत में, तुम्हते पूर्ण प्रभाव॥

जैसो प्रकृति होत गति सोई। जैसे जल शीतल अति होई॥
अपनी प्रकृति देह सों अन्ता। रहेउ राजमें नित मदमन्ता॥

ज्यों पानी बिन चलै न नाऊ। त्यों राजाको गर्व सुभाऊ ॥
मदिरा पिये उतर मद जाई। राज गर्व दिन दिन अधिकाई ॥
दीजै जबही राज गिराई। ताते स्वर्ग तिमिर फटजाई ॥
लोभ अपार कामहू बढई। तबते स्वर्ग राज्य मद चढई ॥
मुनि अगस्त्य दीनेउ मोहिं डारी। तुमहू कीजो राज सँभारी ॥
सदा द्विजनको पूजा करिये। सब दिन ब्रह्मतेजसों डरिये ॥
जिन समुद्र चुल्लूभर पियो। तिनसों गर्व जाय नहिं कियो ॥
द्विजसेवा कीजै चितलाई। यहै कृष्ण गीतामें गाई ॥

प्रलय अग्निहू सों प्रबल, है साधुनको क्रोध।
जारि छार छिनमें करत, इनको कठिन विरोध ॥

सहिये सदा साधुको क्रोधा। यह न कहै मैं हूँ अतियोधा ॥
सहै न साधु क्रोध नर जोई। तासु सहाय करै नहिं कोई ॥
साधु क्रोध है अति दुखदाई। ताते बचो यहै चतुराई ॥
साधु सदा ईश्वरके प्यारे। सब दुख द्वन्द मिटावन हारे ॥
यह कह नहुष स्वर्ग को गयऊ। राजाके मन आनँद भयऊ ॥
मैं सब पिछली कथा बखानी। कही नहुषसों जो नृप ज्ञानी ॥
जो यह कथा सुनै चित लाई। ताको सकल पाप जरि जाई ॥
जनमेजय बूझो तें जोई। भीम सर्पगति जैसो होई ॥
सो इतिहास सकल मैं बरनो। द्विजसों द्रोह कबहु नहि करनो ॥
आदि जगतपति हैं द्विज देवा। ताते करहु द्विजनको सेवा ॥

इति षट्विंश अध्याय ॥ २६ ॥

सत्यवचन कवनै फल होई। मोको कथा सुनावहु सोई॥
बोले सत्य तजै नहिं धर्मा। अब मोहिं यहै सुनावहु धर्मा॥
तुमहिं सुनावहु वहुला कथा। बोलेहु सिंह धेनु सों यथा॥
मथुरा देश मध्य इक गाऊँ। चक्रावती नगर इक ठाऊ॥
सुफल वृक्ष शीतल जल औरा। मनवाञ्छित मनोहर ठौरा॥
अति रमणीक भूमि सुख देनी। जहां सिंह तहँ वहुला धेनी॥
गाय सिमिट चरन तहँ गई। वहुला सबते आगे भई॥
सुन्दर वन गहवर तहँ छाहां। वहुला धेनु गई पुनि ताहां॥
जब तिन जाय गहेउ निज कौरा। सिंह आय घेरो तेहिं ठौरा॥
आशु क्षुधाकर अति रिस मोही। विन खाये नहिं छांड़ों तोही

भूख मोहिं लागी अधिक, मिलै न जवलों मांस।
तवलों हृदयेकी अगनि, लेन देत नहिं श्वास॥

वहुला रुदन मनहि मन कीना। मोहि दैव कुसमय दुख दीनो॥
कहा करों अब कछु न वसाई। मोविन वत्स जिये कह खाई॥
मृत्यु हमारो पहुँची आई। एतहि कैसे देखौं जाई॥
कहत सिंहसों हे वनचारी। मानो तुम कछु कहन हमारी॥
जो तुम्हारि आज्ञा मैं पाऊँ। वत्सहि देख वहुरि फिर आऊँ॥
वत्सहि देख वहां नहि रहौं। तोसों सत्यवचन हों कहौं॥
जो तू मोते छूटन पावै। तो घर जाय वहुरि नहिं आवै॥
सत्य वचन बोलै निवाहै। ऐसो ज्ञान कहा तोहिं आही॥

हौ प्रसिद्ध जानै सब गाऊँ । बहुला धेनु हमारो नाऊँ ॥
बनमें ग्वाल चरावैं मोहीं । मिथ्या वचन न बोलो तोहीं ॥

जानत सब मथुरा नगर, मधुवन गोकुल ग्राम ।
झूठ न बोलो आजलौं, सदा सत्यसों काम ॥

जो कछु है कहि हैं अब यथा । सिंह सुनो मेरी सब कथा ॥
मोसो सौंह लेहु जो जानो । जो तुम मेरे वचन न मानो ॥
सब प्रकार तब सोच मिटाऊं । जब मैं वत्साके ढिग जाऊं ॥
तोसों छल कर रहूँ न गेहू । सिंह सौंह मोते तुम लेहू ॥
दुखी पिता माता परिहरही । सेवा तिनकी कबहुँ न करही ॥
हत्या ब्रह्मदोष तेहि होई । जो फिर यहां न आवै सोई ॥
दोय भार जो इक दुख सहई । एक तजै एकै संग्रहई ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं । जो नहि सिंह वेग यहँ आऊं ॥
जीवन हतै अहेरे दङ्गा । अरु मलेच्छके रहै जु सङ्गा ॥
ताको सकल पाप मैं पाऊं । जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥

छल बल कर लूटै पथिक, बहुरि देय तेहि मार ।
सो हत्या मुझको लगै, जो मैं लाऊं बार ॥

गुरुसों कपट मसकरी खेला । ताड़ै गो पायनसों ठेला ॥
तुरँग भस्त्र सुत बचै गाई । चारों दुखी होय तहँ जाई ॥
इनको पाप दोष हौं पाऊं । जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥
वेद पुराण प्रीति नहिं करही । झूँठी साख सभामें भरही ॥
ताको पाप दोष हौं पाऊं । जो हौं सिंह वेग नहिं आऊं ॥

और दोष बरणों सिंह यथा। चित दै सुनहु हमारी कथा॥
प्रथम पिता कन्या दै काहू। पुनि दूसर सँग करै विवाहू॥
सो सब पाप दोष हों पाऊं। जो हों सिंह वेग नहिं आऊं॥
याती लोप जु करहि पराई। मित्रनको नित करैं बुराई॥
अपनो इष्ट जानकर तजही। वासुदेव गोविन्द न भजही॥

लगै मोहि अपराध सो, होय नरकमें वास।
अहो सिंह जो मैं नहीं, आऊं तेरे पास॥

मात पिता सों वैर जु ठानै। विद्या पढ तेहि गुरु नहिं मानै॥
तीरथ जाय जु पाप कमावै। सँग साथिनको द्रव्य चुरावै॥
तिनको पाप दोष हौं पाऊं। जो नहिं सिंह वेग हौं आऊं॥
ऐसी सौंह गऊ जब खाई। तब तेहि दीनी सिंह बिदाई॥
तुम सब धर्म्म सधानी गाता। चलत सिंह समुझाई बाता॥
धर्म्म समान सिद्धि नहिं कोई। अन्न भूमि दानादिक सोई॥
सत्य वचन सम धर्म्म न जापू। झूठ समान और नहिं पापू॥
अपनो सत्य वचन उर धरिकै। सुतसों मिलहु शान्त चित करिकै
बहुला तब घरही को धाई। करत विचित्र चरित्र उपाई॥
मन धर धीर पीर अधिकाई। थनपय स्रवत तहां सो आई॥

वत्स देख उमडो हियो, बहत नयन जलधार।
चाट चाट कर वत्सको, लागी करन पियार॥

सांभ सांभ गो बोली एहू। अस्तन पान वत्स कर लेहू॥
बहुरि नयन भर आयो नीरा। दुर्लभ भयो पुत्र यह चीरा॥

विन सुपुत्र धन जन नहिं बढ़ई। विन सुपुत्र कुल शोभ न चढई ॥
जो सुपुत्र उपजै कुल कोई । ताते पुत्र प्रीति पर होई ॥
तुम्हरे सङ्ग अवहिं मैं जहौं । माता सेवन यश मैं पैहौं ॥
तुम्हरे सङ्ग न चलिहौं तवहीं । तुमते उऋण होहुँ मैं जवहीं ॥
भइया बन्धु कुटुम्ब सब सुखी । माता विना पुत्र घर दुखी ॥
मात विना छिन छिन दुख दूना । माता विना सकल घर सूना ॥
मात विनाको लाड लडावै । द्वन्द मेट आनन्द दिखावै ॥
मात सदा सुत पोषणहारी । पुत्र हेतु रह आप दुखारी ॥

मात समान न प्रिय कोऊ, मातहि जीवन मूल ।
मातहि के तप तेजते, मिटत तापत्रय शूल ॥

मात समान न कोउ सुख देवा । निशि दिन करै पुत्रकी सेवा ॥
कहत वत्स अस बारम्बारा । तुम विन जीवन वृथा हमारा ॥
जब विधि करै कठिन अति कोहा । तब मातासों होत विछोहा
सो विधि आज वाम भो मोही । मोर सर्वसुख लीन्हो द्रोही ॥
हे सुत वृथा शोक किमि करही । मेरो आई तू क्यों मरही ॥
जल थल पुत्र प्रमाद न करिये । नदी ताल जल सम परिहरिये
मूरख अरु म्लेच्छते डरिये । इनसे पुत्र प्रीति नहिं करिये ॥
धीरज धर्म ज्ञान मन धारो । अब तुम सकल शोक निवारो ॥
तब बहुला माता पै गई । पुत्रहि ले ढिग ठाढ़ी भई ॥

विदा देहु मोहिं मातु अब, क्षमा करहु मम दोष ॥
वत्सनको सौंपत तुम्हे, करहु न इनपर रोष ॥

मेरा सुत यह दुख नहिं पावै। कोउ दुष्ट नहिं इसहि सतावै॥
प्रतिपालन इसको नित कीजै। माता इसहि दगा मत दीजै॥
दूध पियाय इसहि तुम दीजो। दिनमें चार वार सुधि लीजो॥
बारबार सौंपत मोहिं याही। छोड़ पुत्रको तू कहँ जाही॥
बहुला सत्य सुनावहु मोही। ऐसी कहा विपति है तोही॥
करै जो तू बिछुरनकी बतियां। सुनत वचन दरकत हैं छतियां॥
नयन नीर भर बोलत गइया। कहा कहौं तुमसों मैं मइया॥
मैं बन चरन गईही जहां। सिंह आय मोहिं घेरो तहां॥
ताको वचन देय मैं आई। सत्य तजे नहिं होत भलाई॥
तातें हौं जाऊं तेहि पासा। वनमें सिंह न होय निरासा॥

जो निराश ह्वै सिंह कहुँ, त्यागै अपनी देह।
वृथा नरक रहनो परै, जाय गेहको गेह॥

खाय गाय तो कबहुँ न कहिये। सङ्कट परै प्राण नहिं रहिये॥
काज विवाह तियासों बाता। सब स हरत विप्र सकुलाता॥
इतनी ठौर झूठ जो बोलै। ताहि न पाप कहत हौं खोलै॥
झूंठो वचन बोलिये वहां। प्राण पराये उबरैं जहां॥
अपनै काज सत्य नित बोलै। धर्म मर्यादामें नहिं डोलै॥
जानो ते जीवतही मरहीं। जितने सत्य वचन सब टरहीं॥
सत्यवचन गुण ज्ञान विचारा। सत्यवचन जीवन संसारा॥
जब बहुला अस उत्तर दीन्हो। नमस्कार सबहिनको कीन्हो॥

अस कहि निकट गई जब गाई । सिहहि भली बुद्धि तब आई ॥
बहुलाके दर्शन गो पापा । जानो प्रथम जन्मको शापा ॥

पायो पिछले पापते, मैंने सिह शरीर ।
धन्य धन्य माता तुम्हैं, मेंटो मेरी पीर ॥

दर्शन,करत पाप मम गयऊ । वचन सुनत अचरज सों भयऊ ॥
धन्य सुनर भवसागर तरही । जो तुम्हार दर्शन नित करही ॥
धन्य सुठौर जहां गोरेनू । सब विधि धन्य धन्य तुम धेनू ॥
बहुला तोहिं भयो सन्तापू । अबलौं बहुत किधो मैं पापू ॥
बहुत जीव मैं मारे खाये । कौन नरकहौं परिहौं जाये ॥
कै हौं पर्वतसों गिरपरहूं । कहौ अग्निमाहिं जरि मरहूं ॥
कै जल प्राण त्याग हौं भारी । जैहौं कौने नरक मँझारी ॥
ऐसी कौन पाप मैं कियऊ । जाते सिहदेह विधि दियऊ ॥
कोटिन जीवन को मैं मारो । कैसे ह्वैहै मोर उबारो ॥

तुम्हरे दर्शन करतही, दूर गये सब पाप ।
अब मुझको निश्चय भयो, मिटो हमारो शाप ॥

सतयुग तप त्रेता मख सारा । द्वापर पूजा विधि व्यवहारा ॥
कलियुग जीव दया हरिनामा । जाते ब्रह्मलोक विश्रामा ॥
हौं पशु देवशापते भयऊ । तेरे दर्श सकलश्रम गयऊ ॥
कीन्हेउ प्रथम योग अभ्यासा । अब मोको फिर भयो प्रकासा ॥
बहुला सत्सङ्गतिकी रीती । मेरे मन अब भई प्रतीती ॥
तबफिर योग ज्ञान मति भई । छूटो शाप परमगति दई ॥

बहुला बहुरि भवन निजआई । गोप गाय सब कर बधाई ॥
वह निस्तरी पुत्र सुख भयऊ । बहुला सत्यवचन फल लयऊ ॥
राजा तेरे श्रद्धा प्रीती । उत्तम सत्यवचनकी रीती ॥
कहै सुने श्रद्धा सों जोई । सुख सम्पति यश पावै सोई ॥

इति सप्तविंश अध्याय ॥ २७ ॥

परहित वचन जो बोले आई । जीव दयाते लेय छुडाई ॥
रक्षा करे साधुकी जोई । ताको पिता कहा फल होई ॥
ब्राह्मण एक गृहस्थ आश्रमा । तिया सहित पाले निज धर्मा ॥
करे शब सन्तत को जोई । वृद्ध भयो कोउ पुत्र न होई ॥
बहुरि एक कन्या तेहि भई । वानप्रस्थ है यह मति ठई ॥
वानप्रस्थ है सो वन गयऊ । इस्त्री सहित जाय तप कियऊ ॥
माता पिता प्रीति अधिकाई । कन्या बडी होत जब आई ॥
देख पिता के यह मन आई । कन्या वरको दीजे जाई ॥
कछुक दिवस सोचत भये तबहीं । मरो पिता कन्याको जबहीं ॥
कन्या तहां सयानी भई । माताहू ताकी मर गई ॥
कन्या शोक करै अरु रोवै । मेरो दुःख कौन अब खोवै ॥

परी विपति पर विपति मोहिं, अपनो कोउ न दिखाय ।
कहां जाउ कासों कहौं, इकलो रहेउ न जाय ॥

बार बार सो करै पुकारा । हौं अनाथ भई विपिन मँझारा ॥

कीन्हेउ कौन पाप अधिकाई । मात पिता दोऊ न रहाई ॥
छिन रोवै छिन गिर गिर जाई । वनमें परी अधिक अकुलाई ॥
कन्या तहां अधिक दुख पायो । यम तब विप्र रूप धरि आयो ॥
अपने दुःख अपनपो छीजै । पुत्री वृथा शोक नहिं कीजै ॥
दुख सुख और न काहू दीनो । सब कोउ पावै अपनो कीनो ॥
अपनो पाप आप भर लेहू । तातें औरहि दोष न देहू ॥
तेरे प्रथम जन्मको कथा । सुनहु सुवृत्त कहौं मैं यथा ॥
गणिका रूप परम सुखदैनी । हती प्रथम तू नगर उजैनी ॥
तेरी शोभा जाय न वरणी । सुन्दर रूप जगत वशकरणी ॥

शशिसम मुख चम्पकवरन, हरत सबनको चित्त ।
धनी सेठ आवत सदा, वर्षत निशि दिन वित्त ॥

ब्रह्मापुर द्विज इक अनुगामी । ताको पुत्र एक सो कामी ॥
सो द्विज सुत तेरे घर आयो । अपनो काम धाम विसरायो ॥
तोसों मोहिं प्रीति अधिकाई । मात पिता मोहिं कोउ न सुहाई ॥
तब घर विप्र पुत्र जब गयऊ । तासों कलहु परस्पर भयऊ ॥
उपजो क्रोध न सको सँभारी । विप्र तनय तैं डारो मारी ॥
ताके मात पिता बिया नेहा । रोवत आये तेरे गेहा ॥
तिन सब शोक कियो अनिदापा । तब ताको दीनो तिन शापा
हौं जो मात पिता विन दीना । अरु हौं ज्यौं भरता बिन हीना ॥
ऐसो कठिन शाप तिन दीनो । मन में नेक तरस नहिं कीनो ॥

सो अब पाप आय नियरायो । ताहीने यह दुख दिखरायो ॥
जैसा करै स तैसो पावै । ताने दोष कौनको लावै ॥
जो कुछ लिखा लिलारमें, मेंट सकै नहिं कोय ।
कोटि यत्न करते फिरो, अनहोनी नहिं होय ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुरराऊ । तुम को हो कहिये सतभाऊ ॥
मेरो शोक मोह सब गयऊ । तुम्हरे वचन सुनत सुख भयऊ ॥
धर्मराज निज जानो मोहीं । मैं समझावन आयों तोहीं ॥
तेरे प्रथम धर्म मन भायो । ताते विप्र रूप ह्वै आयो ॥
धर्मराज तुम जानो एहा । मेरे मन उपजेउ सन्देहा ॥
गणिका पाप दोषको खानी । क्यों अवतरी ब्रह्मकुल आनी ॥
अस मैं कहा धर्म तप कीनो । पुरुष अनेक तहाँ मन दीनो ॥
धर्मराज सो कहो बखानी । मेरे मनकी जाय गिलानी ॥
अर्थ धर्म्म करता पहिचानो । तुमते दुरो नहीं सब जानो ॥
सकल धर्म्म तुमते नहिं छानी । मोसों कहिये सकल बखानी ॥
जाते ज्ञान भयो तव गाता । सुनो सुवृत्त कहौं सो वाता ॥
तेरे पिछले जन्मको, कहौं सर्व इतिहास ।
जाते तेरे हृदयमें, भयो ज्ञानको भास ॥
काहूके उपजेउ निज ज्ञाना । तेहि साधु हरि अर्पेउ प्राना ॥
निज हरि चरन कमल मन लयऊ । सकल सुखनते निग्रह भयऊ
सुख स्वरूप जानो संसारा । तब मैं कीन्हेउ दर्श तुम्हारा ॥
तबहीं उपजेउ ज्ञान अपारा । निकस कियो तिन ब्रह्म विचारा ॥

तीरथ रूप विष्णु आगाधू। तेहि पुरमें आयो सो साधू ॥
भाग उजैन उद्दै सो आयो। परमेश्वर संयोग बनायो ॥
तहाँ स्वभाव बैठ सो रहेउ। काहूसों कछु वचन न कहेउ ॥
आधो रात गई जब जहाँ। कोतवाल फिर आयो तहाँ ॥
दुष्टन मार तहाँ दुख दयऊ। तब साधू छुड़ाय जो लयऊ ॥
मधुर वचन तिन तासों कहेउ। तुम स्वामी कत दुष्टन कहेउ ॥
आओ स्वामी आदर कीनो। झारि अंग अपने कर लीनो ॥

तुम प्रयंक बैठे रहो, सेवहुँ चरण तुम्हार।
मन इच्छा पूरण करौं, पूजौं विविध प्रकार ॥

चुप कत रहे लोथको नांई। कछु आज्ञा मो देहु गुसांई ॥
मेरे मन इच्छा कछु नाहीं। सुख अरु भोग वृथा सब आहीं ॥
उत्तम अन्न जो भावै जोई। इन्द्रिनको सुख ऐसो होई ॥
शोभा सुख दुख मान गुमाना। मेरे सात्विक सदा समाना ॥
ऊँच नीच घट बढ़ नहिं लेखौं। वासुदेव सबहीमें देखौं ॥
संशय भय छाँड़ो सब दोषा। ताते मान लियो संतोषा ॥
जानत ज्ञान मौन ह्वै रहेउ। श्रद्धावान जान तोहिं कहेउ ॥
धर्म्मरूप तेरी मति सारा। तेरे मन पर कार्य उदारा ॥
रक्षा आज साधुकी करी। निज संसार दोषते तरी ॥
देखी मति मैं तेरी भली। तू मारग साधुनके चली ॥

पर सुखदाता परमहित, संतनके पद माहिं।
तिनकी महिमा कहनको, योगी जिह्वा नाहिं ॥

चरण पकर पूछो सन्देहा । जो तुम स्वामी करहु सनेहा ॥
तुमहो साधु कृपालु उदारा । भव समुद्र नौका आधारा ॥
कैसे परमेश्वर मन धरिये । क्यों संसार दोषते तरिये ॥
कैसे जरै पाप अरु दोषा । कैसे रहै सदा सन्तोषा ॥
दम्भ छांड़ि धर्म्महि आचारो । गुरुपद नारायण चित धारो ॥
समता दया क्षमा सन्तोषा । इनते प्राण पाय है मोषा ॥
साधुन की संगति मन दीजै । विष्णु जान सबसों हित कीज
निश्चल मन कर हरि हरि करहो । सो संसार दोषते तरहो ॥
काम क्रोध तृष्णाको खोई । पूरो इन्द्रीजित जो होई ॥
जीत विकार कृष्ण मन धरही । सो संसार समुद्र न परही ॥

तुलसी दल फल फूल जल, चन्दन धूप चढ़ाय ।
पूजै शालग्राम नित, भवसागर तर जाय ॥

अति गम्भीर हृदय जो होई । सूम दियो नहिं पावै कोई ॥
लोभ मोह क्रोधादिक जहाँ । यह रिपु सबही जानो तहाँ ॥
ऐसोंकी संगति नहिं करिये । तो संसार दोषते तरिये ॥
यह कह महापुरुष चल गयऊ । तोपर अति प्रसन्न सो भयऊ
मज्जन मिलत मलिनता गई । ताही पुण्य ब्रह्मकुल भई ॥
सुनन सुव्रता अपन सब बाता । अब यह तोहिं समझाऊँ ताता
साधु समागम अति फल भयऊ । ताही पुण्य दर्श मैं दयऊ ॥
मेरो वचन सत्य कर माना । तब तेरे मन उपजेउ ज्ञाना ॥

वर दे धर्म्म गयो निज लोका । तब सुवृता भई निःशोका ॥
उपजेउ हृदय ज्ञान वैरागा । अति तप तेज बुद्धि बड़ भागा ॥
मिटो मोह ममता सकल, प्रगट भयो उर ज्ञान ।
ऐसो सन्तप्रभाव शुभ, गावत वेद पुरान ॥

इति अष्टविंश अध्याय ॥ २८ ॥

कोउ यज्ञ व्रत संयम करई । कोऊ धम अर्थ मन धरई ॥
कठिनौ ज्ञान बुद्धि वैरागा । कोऊ कहै मोक्ष को भागा ॥
कोऊ आराधे बहु देवा । कोऊ करै विष्णुकी सेवा ॥
कोऊ गुण ब्रह्माके साधै । कोऊ यन्त्र मन्त्र आराधै ॥
कोऊ शङ्कर शङ्कर करही । कोउ ध्यान गणपतिको धरही ॥
कोऊ शालग्राम मनावै । तुलसी दल फल फल चढावै ॥
इनमें कौन परम सुखदाई । भीषम पिता कहो समझाई ॥
मोसों पिता कहो निरधारा । काको पूजन इनमें सारा ॥
भली बात बूझी नृप आदू । नारद पुण्डरीक सम्वादू ॥
जो जो प्रश्न किये तुम सही । पुण्डरीक नारदसों कही ॥
कथा पुरातन वर्णौं ताता । नारद पुण्डरीककी बाता ॥
अन्तरवेद मध्य इक गाऊँ । पुण्डरीक इक द्विज तेहि ठाऊँ ॥
विष्णु चरणकी शरणमें, रहै सदा लवलीन ।
अन्त न चित्त डुलावही, ज्ञानी परम प्रवीन ॥

ताके भक्ति ज्ञान वैरागा। सबही लसत श्रेष्ठ बड़ भागा॥
पूरब संस्कार मतिसारा। शीलवान चित परम उदारा॥
एको दक्षिणाव्रत कर आयो। सब तीरथ देखे फल पायो॥
समझ विचार देख तिन लीनो। सबही ते निरास मन कीनो॥
ह्वै विरक्त मन कियो विचारा। दुख समुद्र समुझेउ संसारा॥
गण्डक खेत तबहि सो गयऊ। तहाँ जाय इस्थिर मन भयऊ॥
पूजा विष्णु ध्यान मन लायो। सब तज श्री कृष्णहि यश गायो॥
पुलकित रोम प्रेम अनुसरिया। प्रेम लच्छ नामनमें धरिया॥
कबहूँ नृत्य करै उठिधाई। कबहुँ अनहद रहै समाई॥
कबहूँ प्रेम हृदय गहि भरही। कबहूँ नयन उमग जलढरही॥

कबहूँ हँसत गावत कबहुँ, कबहुँ मगन मन होय।
कबहुँ रटत गोविन्द हरि, कबहुँ देत सो रोय॥

ऐसे हरि चरणन मन लायो। प्रेम मगन आपा विसरायो॥
जेहि औसर आरति को आवै। तहँ तुलसीदल पुष्प चढ़ावै॥
बारम्बार हृदय भर आवै। परमेश्वरहि शुद्धता भावै॥
ताके चरण रेणु शुभ नीका। होय पवित्र चौदहौं लोका॥
सब विधि निर्मल जानो जहाँ। सुनकर नारद आये तहाँ॥
नारद ब्रह्मा विष्णु उछंगा। अति शुभ जटा कनक द्युतिअंगा॥
कमलनयन प्रसन्न मुख नामा। परम स्वरूप कृपानिधि रामा॥
फिरत सदा हरिके गुणगावत। भाग्य उदय भो दर्शन पावत॥
देखत पुण्डरीक छकि रहेऊ। सूरज अग्नि जाय नहिं कहेऊ॥

तब युग चरण गहे तेहि आई। नारद लीनो कण्ठ लगाई॥

अहो विप्र आनन्द निधि, ऋधि सिधिके दातार।
भली करी दीनेउ दरश, आये समय विचार॥

तुमहिं देख विहँसों मैं गाता। तुमहो ब्रह्मरूप गुण ज्ञाता॥
तुम्हरो भेद जो अबहूँ पाऊँ। बार बार पूरण गुणगाऊँ॥
ब्रह्मपुत्रहौं नारद आही। हरिको प्रिय हरि भावै ताही॥
अबहौं पूर्ण गुसांई भयऊ। जब तुम मोको दर्शन दयऊ॥
तुम हरिके प्रिय आये जहाँ। हरिहू कबहूँ आवे यहाँ॥
अब तुमसों पूंछो इक बाता। कृपा दृष्टिकर कहिये ताता॥
व्रत संयम सबहीमें सारा। यह मोसों कहिये निर्धारा॥
कौन विचार कहा व्रत गहौं। सुन पुनि भिन्न भिन्न कर लहौं॥
को पण्डित ऋषि वचन प्रमाना। साधनको मारग जो जाना॥
जो जो प्रश्न किये तुम ताता। मैं अजसों बूझी यह बाता॥

ब्रह्माने मोसों कही, भिन्न भिन्न समुझाय।
सो मैं तुमसों कहतहूं, जगत हेत सुखदाय॥

शास्त्र पुराण गर्व निर्धारा। नारायण सबहीमें सारा॥
सब तज भज श्रीपति यदुराई। वृथा और कत करत उपाई॥
वोही आदि मध्य अरु अन्ता। नारायणके रूप अनन्ता॥
सब स्मृति प्रतिपादत जाहीं। नारायण सबहीमें आहीं॥
मेरो मन्त्र पुत्र यह आही। नारायण भजिये चितलाही॥
यहै मन्त्र अति उत्तम जानो। जपत सुरेश महेश भवानो॥

नमो नमो नारायण स्वामी। सत्य सनातन अन्तर्यामी ॥
धन धन नारायण सुरराई। ब्रह्म जीव माया उपजाई ॥
सब कामना सधत्र निष्कामी। तुमहीं मात पिता गुरु स्वामी ॥
रंगकर वस्त्र जटा शिर धरहीं। काहेको बहु वेष जु करहीं ॥

झोली खप्पड़ धारकर, घर घर मांगत अन्न।
इन वातनते होत नहिं, नारायण परसन्न ॥

नारायणसों कीजै प्रीती। यहै सर्व साधनकी रीती ॥
नारायण पारायण होई। सबते उत्तम जानो सोई ॥
यह सुन अति आनँदमन भयऊ। नारायण चरणन चित दयऊ ॥
पुण्डरीक सों कहि सब भेवा। अन्तर्धान भये ऋषि देवा ॥
तब गोविन्द प्रगट भे आनी। गरुड़ासन निर्भय सुखदानी ॥
श्याम रूप अति उत्तम अंगा। पीत वसन थिर दामिनि अंगा ॥
रुधिर विलास कमलदल नैना। मन्द हँसन सुन्दर मुख वैना ॥
चलत श्रवण कुण्डलगलगंडा। शोभित भुजा भोग भुवदंडा ॥
वनमाला कटि पट बहु रङ्गा। देखत लाजत कोटि अनंगा ॥
चरण कमल नखचन्द्र निवासा। फैलो दशहू दिशा प्रकाशा ॥

कोट मुकुटकी झलक लख, होत अधिक आनंद।
मन मन लज्जित होत शशि, निरख विमल मुखचंद ॥

आवत कमल फिरावत हाथा। सिद्ध साधु सब सुर मुनि साथा
अति प्रकाश कछुजात न कहेऊ। अंजलि जोरि थकित ह्वै रहेऊ
रोम पुलक अति आनंद भरेऊ। दण्ड प्रणाम भूमिपर परेऊ ॥

तव हरि वचन कहेउ गम्भीरा। हौं सन्तुष्ट भयो तव वीरा॥
पुण्डरीक तू अति बड़भागा। जो तव चित मम चरणन लागा
मोसों मित्र और नहिं भ्राता। हौं वर काम दाम सुखदाता॥
तुम्हरे दर्श कर्म सब गयऊ। आनँदसहित ज्ञान मन भयऊ॥
हौं नहि जानत अंतर्यामी। तुमही कहो प्राणपति स्वामी॥
सुकवि वचन प्रभु तुमसों कहेऊ। तुम तो मिले मांगवो रहेऊ॥
तव मायाते अजहूं डरहौं। तुमते बिछुर बहुरि नहिं परहौं॥

अज शृङ्गीऋषि देवऋषि, इन्द्र मारकण्डेय।
तव मायाको भेद कछु, यह जन जानत हेय॥

निज सनेह कर हौं जो कहेऊ। तव निज रूप हमारो लहेऊ॥
यह कह गरुड़ासन बैठारी। सत्य धाम ले गये मुरारी॥
देख इन्द्र दुन्दुभी बजावै। हर्ष पुष्पमाला पहिरावै॥
जय जय शब्द स्वर्ग सुर गावैं। पुण्डरीकको दर्शन पावैं॥
जो यह सुनै और जो कहई। ताको प्रेम भक्ति मन रहई॥
शुद्धचित्त कर गावै जोई। सकल धर्म फल ताको होई॥
तैं बूझेउ नृप बहुत विचारा। सब धर्म्मनमें है को सारा॥
पुण्डरीकको कथा सुनाई। सब में सार क्रिया यह राई॥

इति नवविंश अध्याय॥ २९॥

सावधान हो सुनिये ताता। अब हौं तनु त्यागौं गो प्राता॥

परम रहस्य अति उपकारा। सात्विक,पर्वत मध्य जु सारा॥
धर्म सहित मन बुधि सन्देहू। सब इतिहास सार सुन लेहू॥
सावधान ह्वै समझो वीरा। तुमसों कहा कहौ गम्भीरा॥
पुरुष एक हस्ती रपटायो। भज मैमन्त जु बनमें आयो॥
बनमें उठो सिंह ललकारी। और दिशा तब भजो पुकारी॥
तब वह दिशा उठी अगलाई। तहां शोच कीन्हेउ अधिका
कन्या एक खड़ग लिये तहां। काटै शीश जाउँ भज कहां॥
इत उत चहूं दिशा भय भरेऊ। तब अकुलाइ कूपमें परेऊ
परत बेल पकरी इक धाई। तासों अरुझि रहेउ लपटाई॥
महा अँधेरो कूपमें, सूझ परै कछु नाहिं।
बहुत ध्यान धर लख्यउँ जब, द्वै मूषक तेहि माहिं॥
श्वेत श्याम मूसे द्वै जानौ। ता बेलोको काटैं आनौ॥
नीचे सर्प रहेउ मुहँवाई। टूटै बेलि गिरत सो खाई॥
तामहिं काटहिं मच्छर डांसा। जाला पूरि रहे चहुँ पासा॥
देह रिपुनसों अति अकुलानौ। फिरभी दुग्ध कलह कौ खा
तहँ इक सरप सुडाल सुहाई। तामें मधु टपकत सुखदाई॥
सो मधु बूंद आन मुखपरी। चाटत जीभ बहुत रुचि करी॥
भूलेउ सब दुख कठिन कराला। परम प्रसन्न भयउ वहि काल
ऐसे दुःख न मनमें आनै। मधुको बूँद परमहित मानै॥
निशिदिन यह अभिलाषा करही। और बूँद मुखमें कब पर
महा कलेश रात दिन सहही। ता मधु बूँद मध्य मन रहही

चलत फिरत सोवत जगत, उसौ बूँदमें ध्यान ।
कब मेरे मुखमें परै, त्रिभुवनको सुख खांन ॥

देखो यह अचरज अधिकाई । अस दुखमें सुख चाहत भाई ॥
यह नहि कथा समझिये ताता । विद्यमान सब जानहु भ्राता ॥
तुम कछु मनमें और न आनो । सब जीवनको यह गति जानो ॥
कौन पुरुष को हस्ती भयऊ । कहँ बन कहां सिंह निर्मयऊ ॥
कहा अग्नि धौ कन्या रूपा । कह वेलि कहा मूषक कूपा ॥
कहा काम जारनको दापा । माछर डाँस कहा सन्तापा ॥
कह मधु बूँद जहां मन रहही । जाके काज कठिन दुख सहही ॥
बार बार म परसों पाई । भीषम पिता कहो समुझाई ॥
पुरुष रूप यह जीवजु आही । संशय गज रपटायो ताही ॥
सिंह रोग तहँ वन संसारा । इन्द्रिय विषय भोग आहारा ॥

वात पित्त कफ ताप त्रय, ताको तेज अपार ।
खात रात दिन निडर ह्व , कबहुँ न मानत हार ॥

चिन्ता शोक अग्नि तहँ जरई । जरत रात दिन कल नहिं परई ॥
कन्या खड्ग लिये जो धावै । सो यह जरा सबन को आवै ॥
इत उत फिरत जु हारा जीता । लोभ मोह कर अति भयभीता ॥
तृष्णा काम क्रोध भय डरई । अन्ध कूप सरिता में परई ॥
वेलि आयु अवलम्बन जहां । रात दिवस मूसे ह्वै तहां ॥
श्याम श्वेत दोऊ दिन राती । छण छण आयु निबरती जाती

दोष जराकर विक्रम रहेऊ। काल सुसर्प वाय मुख रहेऊ॥
कन्या सुत कलत्र चहुँ पासा। यह तहँ काटे मच्छर डासा॥
तृषा क्षुधाते उर जब जरही। चित्त माहिं व्याकुलता करही॥
तहँ आमिष हिंसा दुरगन्धा। चारो फूट गई भो अन्धा॥
काम बूँद मनमानो एहा। यामें नाहिन कछु सन्देहा॥

काम सहत को बूँद है, सबहि नचावत नाच।
सुर नर मुनि मोहे सकल, मानहु फिरत पिशाच॥

मैथुन ग्रसो सकल संसारा। तालग सहत कलेश अपारा॥
सुख किञ्चित् दुखपर्वत आही। तऊ मूढ फिर चाहत ताही॥
बूँद दुख सुख अचल समाना। तामें भूल रहेउ अज्ञाना॥
थिर नहि पुत्र पौत्र जग माहीं। यौवन रूप सदा थिर नाहीं॥
थिर न रहे इन्द्रिय सुख भोगा। नहि थिर सुजन मिल संयोगा।
थिर यश धर्म क्षमा सन्तोषा। थिर हरिनाम होय जिहिं मोषा॥
धृग धृग काम रहेउ मन लाई। धृग आपदा न छोडी जाई॥
धृग अपनो कर माने देहा। सो थिर नहिं क्षणमें हो खेहा॥
विषा, विना धृग सबही कर्मा। पर उपकार विना सो धर्मा॥
यश कीरति विन धृग संसारा। ज्ञान बिना धृग नर अवतारा॥

धृग धृग सो कर्त्तव्य सब, जहां न हरिका नाम।
धृग सो नर है प्रेत सम, कहै न मुखसों राम॥

बिन हरि कथा सुनै नहिं काना। धृग विद्या जहँ बुद्धि न ज्ञाना॥
धृग सुजान नहिं जहँ वैरागा। धृग हरिनाम बिना जप जागा॥

ऐसी सब साधनकी रीती। राम नामसों कीजै प्रीती॥
इस्थिर चित हरि सों हित करही। सो संसार समुद्र न परही॥
धन्य धन्य ते नर अनुरागी। सब तज भये परम वैरागी॥
धन्य धन्य ते भक्त अनूपम। गावत हरी लखत हैं सब सम॥
निशि दिन वेद पुराण निहारैं। श्रीगोविन्द छबि उरमें धारैं॥
रटत सदा गोपाल कृपाला। जय जय जय प्रभु दीनदयाला॥
पावत स्वर्गवास ते प्रानी। जहां सुरेश अमर विज्ञानी॥
मनमें कछु इच्छा नहि राखत। नारायण नारायण भाखत॥

भक्त सदा हरिके प्रिय, भक्तन सम कोउ नाहिं।
भक्तन हित हरि तन धरत, मृत्यु लोकके मांहि॥

यह इतिहास सुनै अरु कहई। ताके ज्ञान धर्म्म मन रहई॥
धर्म्म ज्ञान हरि यश सुन लेहू। श्रद्धा सुकृति दान सो देहू॥
इक चित ह्वै जो सुनहिं सँभारी। अर्थ धर्म्म फल पावहिं चारी॥
भीषम पिता व्यास ऋषि राई। भारत कथा व्यास मुनि गाई॥
प्रभुकी महिमा कौन बखानै। शिव अज इन्द्र भेद नहिं जानै॥
मूक होय वाचाल प्रवीना। दीनन के कुबेर आधीना॥
पङ्गु चढैं पर्वतपर जाई। पापिन के कलि कलुष नशाई॥
क्षणमें रचै चतुर्दश लोका। हरै करै नित शोक विशोका॥
कोटिन ब्रह्मा इन्द्र बनावै। कबहुँ प्रलय कर सकल नशावै॥
महिमा अमित अपार अनादी। पार न पावत अजसनकादी॥

वर्णत वर्णत हरि सुयश, उतरायण भयो सूर ।
नृपति युधिष्ठिरको तबहिं, भयो सोच सब दूर ॥

वैशम्पायन गावन लागे । जन्मेजय श्रोताके आगे ॥
यहि विधि बहुत दिवस जब गयऊ । उत्तर रवी प्रवेशत भयऊ ॥
भीषम तबहीं चेतेउ ज्ञाना । अब तजि तनु कीजिये पयाना ॥
धर्मराजके पाहिं बखाना । राजा सुनो बात परमाना ॥
शरशय्या बहुते दुख सहेऊ । उतरायन सूरज अब भयऊ ॥
अब शरीर तजिहौं परमाना । धर्मराजसे बहुत बखाना ॥
अब तो कली होब परमाना । संतत भूत विचारो ज्ञाना ॥
येही कृष्ण देव परमाना । अन्तकाल गति श्रीभगवाना ॥
हरिको छोड़ रहहु जनि राजा । कहौं बात तोरे भल काजा ॥
अबै तुम्हार जो होय उधारा । भीषम भाषे याहि भुवारा ॥

अब वैकुण्ठे आव हरि, शून्य देव अस्थान ।
केतिक दिनके अन्तमें, गमनव श्रीभगवान ॥

नृपति युधिष्ठिरसे यदुराई । बहु प्रकार भीषम समुझाई ॥
हरिते भीषम कहेउ बखाना । सर्व लोकपति हो भगवाना ॥
कृपा करो हम तजें शरीरा । विश्वरूप तुमही यदुवीरा ॥
बहु प्रकारते अस्तुति कीन्हा । तुरत शरण तब कृष्णहि दीन्हा ॥
माघ सुदी अष्टमि शुभ जाना । तादिन भीषम करब बखाना ॥
फाल्गुन मास पक्ष उजियारा । सातो तीरथ कहे विचारा ॥

श्रीपति अरु जो पांचो भाई । सबै पितामह लिये बुलाई ॥
विदा भये सबते प्रभु गाये । तजे शरीर परम सुख पाये ॥
मातलि रथ तो इन्द्र पठाये । विष्णुदूत सँग लेने आये ॥
रथ ऊपर भीषम बैठाये । स्वर्गलोककी राह सिधाये ॥

परमहर्ष नारायण, भीषम तजो शरीर ।
गये वैकुंठ विष्णु पुर, परम अनन्दित धीर ॥

धर्मराज तब रोदन कीन्हा । क्रिया कर्म सबकर मन दीन्हा ॥
कीन्हा कर्म वेद व्यवहारा । शास्त्रन शांती कर सञ्चारा ॥
श्रीपति कहे राव सन वानी पुरी हस्तिनापुर महँ आनी ॥
श्रीपति सङ्ग करहु सब काजा । करहु राज्य हर्षित मन राजा ॥
मोरी भक्ति करो मन लाई । पुहुमी राज्य करो सुखदाई ॥
हमको विदा दीजिये राई । हमहु द्वारका देखें जाई ॥
हर्षित राजा करै बखाना । गति हमारि तुमही भगवाना ॥
मैं अनाथ तुम जनके साथा । अस्तुति करत बहुत नरनाथा ॥
पायो बँधुसँग द्रौपदि रानी । मिलेउ सबै सँग शारँगपानी ॥
बहिनि सुभद्रा भेटेउ जाई । होकर विदा चले यदुराई ॥

सात्यकि रथको साजेऊ, श्रीपति भे असवार ।
सबते विदा होय हरि, द्वारावति पगु धार ॥

हर्षित गये देव भगवाना । द्वारावती नगर परमाना ॥
आये द्वारावति यदुराई । यदुवंशी हर्षित सब आई ॥

धर्म्मराज राजा सुखकरही । सदाधर्म्म धर्म्महि हितधरही ॥
नगरलोग सब तहँके सुखी । स्वप्नहुतहँ सुनिये नहि दुखी ॥
पुत्र समान प्रजाप्रतिपाला । धर्म्मरूप श्रीधर्म्म भुवाला ॥
एही भांति राज्य नृपकरही । धर्मराज शोकित मनरहही ॥
सजन सखा बंधुजन जेते । गुरू गोत्र कुल भीषम तेते ॥
तिन सबको मारे निज हाथा । यही शोच शोचै नरनाथा ॥
प्रजालोग तब करैं अनन्दा । जनु चकोर पाये निशि चन्दा ॥
भारत कथा पाप क्षयजाई । पढ़त सुनत हो हर्ष बधाई ॥

वैशम्पायन कथा करि, पुर हस्तिनाप्रकाश ।
जाते पावहिं परमपद, होत पापको नाश ॥
भारत कथा पुणग्र फल, करैं नारि नर गान ॥
शान्तिपर्व भाषारची, सबलसिंह चौहान ॥

इति त्रिंश अध्याय ॥ ३० ॥

इति शान्तिपर्व्व समाप्त ॥

महाभारत।

अश्वमेध पर्व।

गौरीनन्दनके चरण, विनवौं बारम्बार॥
जिनके चिन्तन करतही, विघ्न होयँ जरि क्षार
पाराशर ऋषिके तनय, व्यासदेव भगवान॥
आचारज इतिहासके, करौ नाथ कल्यान॥
महरानी वानी सुमिरि, करौं कथा सुखदान॥
यज्ञपर्व भाषारचत, सबलसिंह चौहान॥

वैशम्पायन कह्यो बुझाई। यज्ञ कथा सुनु कुरु कुलराई॥
कियो युधिष्ठिर नृप तब शोका। भीषम भये जबहिं परलोका।
कह्यो व्यास सन धर्म्मकुमारा। मारा गोत पाप बहु भारा॥
यज्ञरु योग जापका कर्म्मा। कैसे पाप छुटै हो धर्म्मा॥
सुनी बात तब कहै ऋषेशा। पातक खण्डब तोर नरेशा॥
परशुराम कहँ सब जगजाना। हने मातु आज्ञा पितु माना॥
माता द्विज वध हत्या पाये। अश्वमेध तब यज्ञ बनाये॥

यज्ञ कियो तव पातक हरै। तुमहू करौ यज्ञ अनुसरै॥
रामचन्द्र दशरत्थ कुमारा। रावण वंश कियो संहारा॥
विश्रवर्णा को सो सुत अहई। ब्रह्मवधन तो रामहि गहई॥
वाजौ यज्ञ कियो प्रभु रामा। द्विज वध छूटि भये निःकामा॥

अश्वमेध तुमहू करौ, गोत्रहि वध दुख हेत॥
धर्म्मराज यह सुना जव, भाष्यो बात सचेत॥

यज्ञ समर्थ जो धन मम नाहीं। कैसे यज्ञ होय जगमाहीं॥
फलविहीन तरु पच्छि न जाई। धन विहीन तस पुरुष कहाई॥
विन धन धर्म्म कहौ कस होई। धनसे हीन पुरुष जग जोई॥
कहे व्यास सुनु धर्म्मकुमारा। अब चहौ सुनु बात हमारा।
पूर्व मरुत नृप यज्ञ वनाये। सुर नर मुनि जन हर्ष बढ़ाये॥
दिये दान वहु विधि परकारा। किये अयाचक मग्न अपारा॥
ले न सके तो तजि नृप गयऊ। गिरिहिमालयके बीचहि रहेऊ॥
सो धन लेय यज्ञ प्रण ठानौ। धर्म्मराज सव भेद वखानौ॥
द्विज धन लै के यज्ञ वनाओं। यज्ञ करत तो अपयश पाओं॥
व्यास कह्यो सुन धर्मकुमारा। सो सव द्विजन नहीं अधिकारा॥
पूर्व दैत्य बन राजा गयऊ। ताही मारि देव धन लयऊ॥

सोई धन हरिचन्द्र नृप, दीन्ह्यो मुनिको दान।
पाछे वलि राजा भये, सव धन ताको जान॥

जा वलि राजा दीन्ह्यो दाना। पाछे परशुराम जग जाना॥
कश्यप मुनि को दीन्हो दाना। ऐसे धन राजा को जाना॥

दान देय खाही बिलसाही। ताको धन्य मुनी यश गाही॥
सो धन लै करु यज्ञ भुवारा। कछु दोष नहि लागु तुम्हारा॥
राजा धर्म्म व्यास सन कहही। यज्ञ अश्व मोरे नहि अहही॥
सुना व्यास तब कह अस बाता। आनहु अश्व आह सख्याता॥
भद्रावति पुर हय है राई। यौवनास्व राजा के ठाई॥
दश करोड़ दल हय को रक्षक। यज्ञ नहीं सो करै प्रत्यक्षक॥
ताही जीति अश्व लै आओ। धर्म्मराजते बात जनाओ॥
भीम आदि बान्धव हैं जेते। करि संग्राम थके नर तेते॥

मेघवर्ण वृषकेतु है, बालक औ पितु शोक॥
ता सन कछू न भाषिये, दोष देय सब लोक॥

सुनि के भीम कहत अस बानी। करबे यज्ञ अश्व धन आनी॥
होय प्रसन्न यज्ञ करु राजा। आनब धन अश्वहु जग काजा॥
हम सहाय जगतके तारण। केहि ते डरिय कौन सो कारण॥
राजा कह्यो सुनहु सब भाई। कत अकेल बाजी बहुताई॥
दश करोड दल राख तुरङ्गा। कैसे भीम करब रण रङ्गा॥
सुनिकै वृषकेतू तब कहई। आज्ञा देहु सङ्ग हम रहई॥
आनो भीमहि आज तुरङ्गा। यौवनाशवको करिये भङ्गा॥
सुनते राजा कहे बखानी। कैसे कहन सको यह बानी॥
तोरे पितहिं धनञ्जय मारा। देखे मुख मनदुःख हमारा॥
तब वृषकेतु कहेउ सुनराजा। कीन्हेउ भला कर्णको काजा॥

सभा मांझ द्रौपदीकहँ, पराभाव सो दीन्ह॥
एहि पापते तजेउ तन, उन्हके गति तुम कीन्ह॥

पार्थ वाणसे गङ्ग बहाये। ताते पिता धर्मपद पाये॥
सुने भीमराजा सुख पाये। मेघवरन तव बात सुनाये॥
भीम सङ्ग हम जैहैं तहां। भद्रावती नगर है जहां॥
क प्रण तेज अश्वलै जाऊं। धर्मराज को यज्ञ कराऊं॥
भीम पितामह कर्णको नन्दन। करि रण उत्कट हेतु तुरंगन॥
सुनि हर्षित भये धर्मकुमारा। यज्ञभेद बहु पुण्य प्रकारा॥
केते विप्र कौन मतिदाना। केते घृत साकल्य प्रमाना॥
व्यास कहे सुनि बीस हजारा। लाख कलशहै घृत विस्तारा॥
तीन लाख साकल्यहि लाई। चन्द कुंदनकें अश्व बनाई॥
पीत पूंछ अरु वपु है श्यामा। चैत्र पूर्णतिथि कीजै कामा॥
कञ्चन पत्र बांध शिर ताही। अपने नाम यज्ञपति चाही॥

हम छोड़ाहै अश्व यह, जगत वीर कोउ और।
घड़ी एक जो गहि रखे, जीतव सो प्रणठौर॥

करै अश्व लघुशंका जहाँ। सहसन गऊ दान दे तहाँ॥
एकहि सेज द्रौपदी साथा। साधन योग करो नरनाथा॥
यावत अश्व गेह नहि आवे। तावत भोजन विप्र करावे॥
बीचहि खड़्ग राखिके राजा। वर्ष दिवस सोवत यह साजा॥
नारी पासे मन जब जाई। वही खड़्ग चितवै तबराई॥
अश्वमेध इन्द्रहि मन धारा। इस्त्री व्रत पाली नहि पारा॥

सत्यकेतु नाम सुनु राऊ। अश्वमेध कै सबै नशाऊ॥
व्यासगये कहि अपने थाना। राजा करहिं हरीको ध्याना॥
सुनत राउ तब चिन्ता करई। कठिन व्रत आशा हरि धरई॥
अभ्यन्तर आये भगवाना। द्वारपाल ते कहो बखाना॥

कहो जाय राजापहँ, आये श्रीभगवान।
सबै जानिकै आनहीं, कीजै जाय बखान॥

प्रतीहार तब कह हरि पाहीं। तुव अटकावकि आज्ञा नाहीं॥
कहे कृष्ण रानी परमाना। कौने मत हम करौं पयाना॥
सुनि प्रतिहार तहाँ तब गयऊ। जहाँ धर्मनृप स्थित रहेऊ॥
सुनि सब वचन बन्धु हरषाये। सहित द्रौपदी बाहर आये॥
राजा हरिहिं कियो परणामा। चारौं बन्धु मिले घनश्यामा॥
विहँसि वचन तब राजा कहेऊ। चिन्ता मम तब मन महँ अहेऊ
तेहि पीछे रानी मिलि आई। भै अचिन्त तब पांचो भाई॥
पञ्चाली भाषेउ परतच्छक। सदाभक्तके हौ तुम रच्छक॥
सभामांह तौ लज्जा तारा। दुर्वासा छल मन विस्तारा॥
सदा भक्तके रच्छा कारण। जगतमाँह कीन्हे तनु धारण॥

सावधान बैठे सबै, परमहर्ष मन कीन्ह।
धर्मराज नृप समझिकै, हरिसन भाषे लीन्ह॥

यज्ञ हेतु हम चिन्ता कीन्हा। नाथ आय के दर्शन दीन्हा॥
अश्वमेध हम कियो विचारा। जो आज्ञा कर नंदकुमारा॥
कृष्ण कहे राजा के पाहीं। जगत मांह ऐसा को आहीं॥

जाना मन्त्र भीम यह दीन्हा । उदर भरे कर उद्यम कीन्हा ॥
दैत्यनिसंग भयो मन भंगा । कामी विवश सदासुख रंगा ॥
जगत माहिं जो धर्म न जाना । महावीर हैं भक्त प्रमाना ॥
जानत नाहिं आप बल वाहीं । भक्त वीर सब देखा नाहीं ॥
रामचन्द्र यज्ञ निरमाये । चतुरङ्गिणिको सङ्ग पठाये ॥
शुक्रमती ग्राम इक अहई । श्रुतदेव तहं राजा रहई ॥
तहँ भा युद्ध महा भयकारी । पुनि बालक दोउ शरननमारी ॥

चारों बन्धु बधे रण, कुश लव दोऊ वीर ।
तुम कत यज्ञ करे चहो, अस भाषे यदुवीर ॥

का तुमको तब रक्षा करिहै । को रण रचे अश्वको हरिहै ॥
सुनिकै भीम कहे तब बानी । अस कस भाषहु शारंगपानी ॥
तोर ध्यान प्रथमे मैं गहेउ । पाछे मन्त्र राजपहँ कहेउ ॥
लम्बोदर तुमहीं जग माहीं । जगत मांह कोउ दूसर नाहीं ॥
तुमतो इस्त्रीके वश अहो । कहते कहत मौन ह्वै रहो ॥
धर्मराजको भ्रम उपजायो । काहित काज नाश करवायो ॥
अश्वमेध हम तो अब करिहैं । ऐसे गोत्र पापसे तरिहैं ॥
जेते वीर जगत में आहीं । मारो सबहिं महारण माहीं ॥
तुम हमार सर्वस हो स्वामी । तुम सबही के अन्तर्यामी ॥
सुनिकै कृष्ण हर्ष अति पाये । तब राजा ते हर्ष सुनाये ॥

धर्मराज ते श्रीपती, भाषे बात विचार ।
पातक जो है गोत्रवध, हम कहां देहु भुआर ॥

मैं तो पाप करों सब भारी। सुखते कीजे राज्य अघारी॥
भीम तबहिं इक उत्तर दीन्हा। पातक कौन आपु हरिलीन्हा॥
पाप देहिं जो तुम कहँ राजा। पाप बढ़े अरु धर्म अकाजा॥
महापुण्य मखमें जत होई। तुम कहँ राजा देहैं सोई॥
हम तो यज्ञ करौं प्रण ठानी। करिहौं यज्ञ अश्व धन आनी॥
वृषकेतू जो कर्णकुमारा। मेघवर्ण सुत प्राण अधारा॥
मोरे संग दोय जन जैहैं। श्यामकर्ण अश्वहि ले ऐहैं॥
करौं युद्ध घोड़ा ले आवौं। तबहिं वृकोदर नाम धरावौं॥
धन जन सब जो है नृप पाहीं। लाओं शीघ्र हस्तिपुर माहीं॥
तुम सहाय जोहौ जगतारण। तौ हम भरमहिं कौने कारण॥

सुनिके हर्ष जगतपति, हर्षित आज्ञा दीन्ह।
अश्वमेध परवेश यह, सूक्षम भाषा कीन्ह॥
जाको सुन जनमेजय, नाशै पाप पहार।
सोई यज्ञ कियेते, नर उतरै भव पार॥

इति प्रथम अध्याय॥ १॥

सुनि राजा सो कथा प्रमाना। यामिन गत तो भये विहाना॥
मेघवर्ण अरु भीम सयाना। वृषकेतू सँग कीन्ह पयाना॥
कुन्ती नृप औ श्री भगवाना। इन सब कहँ कीन्हेउ परणामा
माता कछु सम्भर लै दीन्हो। भीमसेन तब भोजन कीन्हो॥

पुनि माता कछु औरो लाई । मेघवर्ण कहँ दीन्ह बनाई ॥
भीम कहे तब श्रीपति पाहीं । यौवनाश्व नगरी हम जाहीं ॥
तुम रक्षा परजाके करहू । सत्य बात यह हिय महँ धरहू ॥
यह कहिके तीनो जन जाई । यौवनाश्वपुर चले पराई ॥
तीनो जना एक सङ्ग भयऊ । यौवनाश्वकें नगरहिं गयऊ ॥
ग्राम रंध पुष्करणी अहई । वन उपवन चहुँ दिक लहलहई ॥
पुष्पवाटिका देखेउ जाई । अनुदिन पुष्प रहे तहँ छाई ॥

पर्वत एक विराजही, यज्ञ वेद पुरमाहँ ।
तेहिपर पै तीनो जने, वैठे हयके चाँह ॥

जब दोपहर दिवस भयो भारी । जलके हेतु अश्व पगुधारी ॥
श्यामकर्ण हय चालत आवै । चमर छत्र तापर छबि छावै ॥
बहुतक दल हय गज सँग आये । देखत मेघवर्ण मन लाये ॥
भीमसेन सन कह तब बाता । आनों जाइ अश्व सख्याता ॥
यह कहिके तुरन्त चलि भयऊ । गिरिते कूदि भूमि पर गयऊ ॥
राक्षस माया तब संचारा । दशदिक करे लागु अँधियारा ॥
पाहन वर्षा अधिक चलावै । देखत लोगन दिशा गमावै ॥
देवन दूत स्वर्ग महँ गयऊ । इन्द्र पाहँ जाकर सो कहेऊ ॥
दैत्य एक माया परकाशा । जगत चहत है करै विनाशा ॥
दूसर दूत सुरेश पठाये । मेघवर्ण ताकहँ समुझाये ॥

मेघवर्ण पुनि कहेउ तब, तुम शङ्कित केहि काज ।
लै जैहैं हम अश्व तहँ, यज्ञ धर्मके राज ॥

सुनत दूत गवने सचुपाये । सुनासीर कहुँ जाय जनाये ॥
तब सुरेश मन माहिं थिराना । अश्वमेध सुनि बहु हर्षाना ॥
मेघवर्ण माया सञ्चारा । सबै वीर भये शिथिल अपारा ॥
पीछे अश्व हरण तो करेउ । पर्वत माँह तबै पगुधरेउ ॥
देखे भीम हर्ष तब माने । राजा दल सब शंका आने ॥
राजा दल देखे तब धाये । रण हित तब वृषकेतु सिधाये ॥
वीरन काहँ हांक जब दीन्हा । सबै वीर यह भाषण कीन्हा ॥
काह नाम औ जात तोहारा । भाषो सो तो पाहँ हमारा ॥
तब वृषकेतु कहा रिसाई । युद्ध समय का जाति जनाई ॥
युद्ध करो या भागो भाई । नाम गोत का करो सगाई ॥
तब वीरन सब रणदिय ठाना । महामार नहिं जात बखाना ॥

महाबली सब सैन्यके, जल सम बर्षत बान ।
कोटि वीर शर वर्षते, कर्णकुँवर पर आन ॥

कर्ण पुत्र तब बाण चलाये । अगणित वीरहिं मारि गिराये ॥
भगे वीर पुरुषारथ देखे । जुझे वीर रण मांह अलेखे ॥
राजा आगे परी पुकारा । हरे अश्व सब दल कहँ मारा ॥
राजा कह केता दल अहई । हमते रण करने को चहई ॥
धावन कहै देवता अहेउ । तीन वीर हैं सब तब कहेउ ॥
यौवनाश्व नृप तहँ पगुधारा । और चले सब राजकुमारा ॥
कर्णपुत्रको राजा देखा । बालक देखत अचरज पेखा ॥
राजा पूछा कहो कुमारा । नाम गोतका अहै तुम्हारा ॥

सुनि कुँवर तब कहै विचारा। कश्यप गोतरु कर्णकुमारा ॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये। ताते अश्व लेन कहँ आये ॥

यौवनाश्व तब अस कहेउ, तुम्हरे तौ रथ नाहिं।
रथ लीजे मम पाससे, करौ युद्ध रण माहिं ॥

कर्णपुत्र तब कियो बखाना। मैं ता रथको युद्ध न जाना ॥
राजा पुनि कह बाण चलैये। कर्ण पुत्र जब यह सुनि पये ॥
तुम तो वृद्ध अहो मैं न्याना। तुम्हरे दरशकरैं भगवाना ॥
राजा तब दश बाण चलाये। कर्णपुत्र निज शरन उड़ाये ॥
तीन बाण राजाको मारा। निष्फल कीन्हे सबै भुआरा ॥
अर्द्धचन्द्र कुँवरहि तब छांटे। चमर छत्र गुण शारँग काटे ॥
तब राजा धनु पै गुणधारा। साठबाण वृषकेतुहि मारा ॥
रक्तबाण कुँवरहि तब लीन्हा। तीन बाण रिस करि तजिदीन्हा॥
सारथि अश्व तजे तब प्राना। जूझे राजा सब दल जाना ॥
अग्नि पवनके बाण चलाये। उड़िके सैन्य अग्नि जरि जाये ॥

तब राजा दूसर रथहि, क्रोधित भये सवार।
वारिबाण तब भूपमणि, तहँ जो कीन्ह प्रहार ॥

ताते सब जो अग्नि बुताये। बाणन्ह कर्णकुमार छिपाये ॥
भीमसेन तब देखन पाये। राजा महामार मनलाये ॥
कर्णपुत्र तब चक्र चलाये। काटे बाण विलम्ब न लाये ॥
पुनि इक बाण नृपतिकहँ मारा। क्रोधित भो मद्रेश भुआरा ॥
मारेउ बाण कर्णसुत राई। कर्णपुत्रको मूर्च्छाआई ॥

देखत भीम क्रोध तब पाये। गहिकर गदा क्रोध करि धाये॥
काह कहब राजासे जाई। यह कहि भीम चले रिसि आई॥
धावत जँघते पवन चलाये। हयगजरथ पैदल उड़िआये॥
बहुते गज तहँ भये संहारा। जसे पुण्य पाप कर छारा॥
यौवनाश्व राजाको मारा। ताको नाम सुवेश उदारा॥

कुँवर हांक तब भीमको, क्रोधित दीन्हे आय।
गदा घाव तब धायके, मारे भीम घुमाय॥

क्रोधित भीमसेन फिर आये। सो वैरी फिरि भूमि गिराये॥
तब सुवेश आपुहि संभारा। भीमसेन को भूमि पछारा॥
भीम उठाये गजते भारे। राजपुत्रके ऊपर डारे॥
मारेउ गदा घाव भूवारा। पड़े दोउ रणभूमि मँझारा॥
राजा सुनो कथा अब आगे। कर्णपुत्र मूर्च्छाते जागे॥
यौवनाश्वको मारेउ बाना। पांचशरन नृप मोहन जाना॥
राजा मूर्च्छित परे मैदाना। कर्णपुत्र धर्मी करि ज्ञाना॥
फेंट छोड़ि अम्बर तब लीन्हा। कुँवर पवन तब राजहि कीन्हा॥
भाषे जो भक्ती भगवाना। तब राजा पाये जिवदाना॥
यहि अन्तर राजा तब आगे। रहु रहु कह तब बोलन लागे॥

चेत पाय देखा तबै, कुँवर डोलावै पौन।
देखत लज्जा भै नृपहि, तब कीन्हाहै मौन॥

गल लगाय तब भेंटा राऊ। तुमहीं हमरे प्राण बचाऊ॥
सदा धर्मरत तव पितु रहेउ। ताके पुत्र कुँवर तुम अहेउ॥

देश राज धन प्राण तुम्हारा । धन्यवीर हौ धम भुआरा ॥
अवरन केर नहीं है कामा । चलो तहां जहँ भीम सुठामा ॥
यौवनाश्व औ कर्णकुमारा । भीम पाँह हर्षित पगुधारा ॥
कहे जाय तप युद्धन काजू । कर्णपुत्र मोहिं रचेउ आजू ॥
प्रथम किये मूर्च्छित मैदाना । तेहि पीछे दीन्हो जी दाना ॥
अब है युत्तकाज कछु नाहीं । चलो भीम मेरे पुर माहीं ॥
अब मेरे मन उपजो ज्ञाना । दर्शन जाय करब भगवाना ॥
दशसहस्र गज श्वेत जु अहई । लै चल मखको राजा कहई ॥

राजा यज्ञ अरंभेऊ, रक्षक हम को जान ।
यहि प्रकार ते प्रीतिकरि, पुर कहँ कीन्ह पयान ॥

प्रीति भये तब देखन पाये । मेघवर्ण हय लेकर आये ॥
नगरमांह कीन्हा परवेशा । अन्तःपुर पठयेउ सन्देशा ॥
आरति ले रानी कर साजा । अन्तःपुर आये तब राजा ॥
राजा कहेउ सुनो तुम रानी । वीरन्ह के आरति कर आनी ॥
कगह शत्रु जो अहै हमारा । सो तुम राखौ कर्ण कुमारा ॥
पीछे भोजन पान कराये । हर्ष होय तब भोजन पाये ॥
शयन किये रैनी सख्याता । गत भइ रैन भयउ परभाता ॥
राजा उठि सेवकहि हँकारा । सबते बात कहे सञ्चारा ॥
दल साजन को कर मनलाई । हर्षित सब हस्तिनपुर जाई ॥

नगर लोग सब जेते, दल बल हय गज साथ ।
नगर हस्तिनापुर चले, जहँ दर्शन यदुनाथ ॥

यौवनाश्व माताके पासा। जाय तहां ये वचन प्रकाशा॥
माता चलौ हस्तिपुर माहीं। कृष्ण चरण जेहि पुरमें आहीं॥
धर्मराज यज्ञहि मन लाये। देश देशके नृप सब आये॥
सदा धर्म्मरूपहि भगवाना। जाके चरण गङ्ग परमाना॥
माता चलो ताहि पुर माहीं। जहँ वस नृपति युधिष्ठिर जाहीं॥
तब माता कहि वचन सुनाई। कारण कवन तहां को जाई॥
देव धर्म्म नाहीं हम जाना। वहां गये मम देश नशाना॥
गोरस अन्न दासि अरु दासा। गये हमारे होहि विनाशा॥
कृष्ण युधिष्ठिरका दोउकरई। आपन पुर मिथ्या परिहरई॥
जैसे गृह वेहैं मन दीन्हा। तैसे गृह आपन मन कीन्हा॥

बहु प्रकार राजा कहे, माता मानति नाहिं।
बांधि मातु कहँ राव तब, डारा डोली माहिं॥

यहि प्रकार माताकहँ लीन्हा। तब राजा चलबे मन दीन्हा॥
पुरके लोग चले सब सङ्गा। नृपति सदन हिय भरे उमङ्गा॥
नाना धन जेते गज श्वेता। चले हर्ष नृप सबै सचेता॥
दिवस पांच तो पन्थ सिराना। देश हस्तिना आय तुलाना॥
योजन एक हस्तिपुर रहेऊ। राजापाहँ भीम तब कहेऊ॥
इहां रहो राजा तुम भाई। मैं यह बात जनावों जाई॥
यह कहि पुनः वृकोदर गयऊ। हस्तिनपुर प्रवेश तब कियऊ॥
चारों बन्धु और भगवन्ता। इनकहँ मिलेउ सप्रेम तुरन्ता॥
भाषेउ तब यह बात बुझाई। अश्व सहित लै आयउँ राई॥

राजा सब परिवार समेता। आयउ तव दर्शनके हेता॥
दरश चहै प्रभु तव चरणनकी। जो तारन सुर नर मुनि जनकी॥
तब नृप धर्मराज अस कहई। जाहु भीम द्रौपदि जहँ अहई॥
जाय कहहु अस वयन हमारा। तुम द्रुत नवसत करहु शृँगारा॥
भूषण अलङ्कार सजु अङ्गा। वेगि चलहु कुन्तीके सङ्गा॥
भीमसेन द्रौपदि पहँ गयऊ। पूछा कुशल कहन तवलयऊ॥
कहेउ भीम सब कुशल हमारा। यौवनाश्व मम पुर पगुधारा॥
परभावति अति नैनविशाला। सखी सहसदश सङ्ग रसाला॥

तुरग सहित सब आयऊ, भूषण करहु बनाव।
दरश तुम्हार चहत हैं, भेटहु आगे जाव॥

भीम कहा तब सुनु मम प्यारी। विनु शोभा नहिं देव मुरारी॥
यहि अवसर नहिं यादवराई। विनु गोविन्द नहिं शोभा पाई॥
तब द्रौपदी भीम से कहीं। हैं हरि निकट गये नहिं अहीं॥
इतना कहत भीम सञ्चारा। नृपके पास देखि हरि खरा॥
चले नृपति सँग चारो भाई। कृष्ण सहित शोभा बनिआई॥

रथ चढ़ि चले युधिष्ठिर, गज चढ़ि चारो भाइ।
चले नकुल सहदेव सह, पार्थ भीम समुहाइ॥

यौवनाश्व दल साज वनाई। हय वनाय कर अग्र चलाई॥
धर्मराज पै अमरहुँ जाई। हनि निसान जनु घन घहराई॥
यौवनाश्व दल गरुअ भुआरा। महि डगमगै सैन्यके भारा॥

आय दोउ दल सन्मुख भयऊ। धर्मराज तब देखन लयऊ ॥
देखि नृपति मन कीन्ह विचारा। बढ़े नृपति हैं गरुअ भुआरा ॥
यौवनाश्व कहँ देखा, सुत पत्नी परिवार।
तबसे रथ उतरे नृपति, दोऊ मिले भुआर।

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

वैशम्पायन ऋषि तब आगे। जन्मेजय सन भाषन लागे ॥
यौवनाश्व तब लागे पाऊ। आशिष दीन्ह युधिष्ठिर राऊ ॥
तुम मोरे जस चारो भाई। मिलेउ कृष्ण नृप दीन्ह दिखाई ॥
धरहु चरण उर करु सेवकाई। जेहि ते अहै हमार बड़ाई ॥
यौवनाश्व प्रणयउ यदुवीरा। भो निर्मल बहु शुद्धशरीरा ॥
नमस्कार कुन्ती कहँ कीन्हा। नृप द्रौपदि सह आशिष दीन्हा ॥
धन्य तुरँग सब कहवे लयऊ। जेहि हित तीनं वीर चलिगयऊ ॥
धनि बृषकेतु कर्ण के बारा। जेहिते भयउ सुखी परिवारा ॥
भावी धन्य हमार यह, पूर्व पुण्य बहु कीन्ह।
दर्शन नयन जुड़ानेऊ, नृपये कहवे लीन्ह।
पुनि अर्ज्जुन माद्री सुत आये। भे अनन्द तब अङ्कम लाये ॥
अर्ज्जुन नमस्कार तब कियऊ। अस्तुति करि तब कहवे लयऊ ॥
हमरे तुम जस धर्म नरेशा। अति गरिष्ठ जस देव महेशा ॥
धन्य देश जहँ बनहु नरेशा। हमरे भाग्यन यहां प्रवेशा ॥

पुनि सुवेश पारथ ढिग गयऊ । करि प्रणाम तब कहवे लयऊ ॥
वृषकेतु के कीन्ह वखाना । जिन्ह के करत मिले भगवाना ॥
धन्य तहां जहँ वस भगवाना । विनु गोविंद नर प्रेत समाना ॥
हरि सम दुर्लभ और न आना । कृष्णनाम नित करौ वखाना ॥

धर्मराय यदुपति सहित, आनँद भये अपार ।
मिल कर सब आवत भये, नगर कीन्ह पैसार ॥

पहर एक जब निशि गत भयऊ । दामोदर तब कहवे लयऊ ॥
सुनहु बात इक धर्मकुमारा । यज्ञकाज सब करहु सँभारा ॥
चैत पूर्णिमा गत भो राजा । अब विशाख शुभ करिये काजा ॥
मास विशाख नौमितिथि धरिया । तेहि दिन यज्ञ अरम्भनकरिया
तबहीं कृष्णकिये अनुसारा । यज्ञ करै कहँ यह व्यवहारा ॥
कञ्चा सुवरन सागर पारा । तहां विभीषण रहै भुआरा ॥
तहँ वांसि कञ्चन जो आवे । सोइ यज्ञ के यतन करावे ॥
तब राजा मन विस्मय कीन्हा । कौन पुरुष कहँ यश यह दीन्हा ॥
तब अर्जुन अस कहवे लागे । राजा कहहु हमारे आशे ॥
जेहि कारण तुम विस्मय करहू । सो आयसु मेरे शिर धरहू ॥

तब राजा मन हर्षेउ, हँसिके बीरा दीन्ह ।
अर्जुन लीन्हो विहँसिके, चरण जु वन्दै कीन्ह ॥

कृष्णहि किय प्रणाम कर जोरी । होहु सहाय जगतपति मोरी ॥
तबहीं कृष्ण किये अनुसारा । वेगि जीत फिरु पाण्डुकुमारा ॥
तब अर्जुन दक्षिण दिशिगयऊ । तहँ इक राक्षस भेंटत भयऊ ॥

भाष्यो दैत्य भाजि कहँ जासी। मारों तोहिं मेलिके फांसी॥
तब अर्ज्जुन तिष्ठित ह्वै कहई। कौन वीर तैं डाटत अहई॥
तब दानव अस कहे प्रचारी। राय विभीषणके रखवारी॥
तब अर्ज्जुन किय मन अनुमाना। मारों दैत्य करों यशमाना॥
दैत्यशैल शिर ऊपर छावा। सन्मुख अर्ज्जुन सपदि चलावा॥
अर्ज्जुन सपदि बाण कर लीन्हा। शैल काटि तो दुइ टूक कीन्हा॥
दैत्य भाजि लङ्काकहँ गयऊ। हनुमत सों भेटत तब भयऊ॥
कह दानव सुनु पवनकुमारा। इक चत्रिय बड आउ जझारा॥
तहँवां सों भागत मैं आवा। तुम्हरे शरणहि जीव बचावा॥

मैं जानत हौं राम है, की तौ लक्ष्मण आहि।
भगि आये हम तुमपहां, जाहु खोज लेहु ताहि॥

यह सुनि पवनतनय मन हसा। चलहु साथ नहि कीजे त्रसा॥
कह दानव सुनु पवनकुमारा। हम नहिं जाउब साथ तुम्हारा॥
शैल एक मैं उन्ह पर डारा। धनुष टँकोर कीन्ह वे छारा॥
तिनके डरसे भगि मैं आवा। कैसे मुख मैं उन्हहि दिखावा॥
वन्दि चरण दानव गो तहां। न्टपति विभीषण बैठत जहां॥
तब कहि वचन ताहि समुझावा। सुनत विभीषण आनँद पावा॥
तब हनुमत निज मन अनुमाना। पवनतनय तौ पवनसमाना॥

पवनतनय तब ऊछला, उदधि पार चलि आय।
सेतुबांध जहँ बांधेऊ, खडे हुए पुनि जाय॥

हनुमन कोपि कहे अस बाता। कौन वीर यह आहि विधाता॥
पूछेउ आये तुम केहि कारन। तब कह पारथ लाउ न बारन॥
कह अर्ज्जुन सुनिये कपि वीरा। हम अर्ज्जुन आहहि रणधीरा॥
ब्रह्म सहोदर वध हम कीन्हा। चिन्त सोइ युधिष्ठिर लीन्हा॥
बोलेउ राज्य छोड़ि बन जाहीं। भारी पाप भये हम पाहीं॥
छुगुनत गये रात सब बीती। चिन्ता नृपहिं भयउ नहिं रीती॥
व्यास ऋषै तब पूछै लीन्हा। कारण ताहि यज्ञ उन्ह कीन्हा॥
तब राजा दोऊ कर जोरी। सुनहु व्यास मुनि विनती मोरी॥
गुरु सहोदर वध हम कीन्हा। भारी पाप हमे विधि दीन्हा॥
कहा व्यास सुन धर्म सुराजा। त्रेता कियउ राम मख साजा॥
रामचन्द्र त्रेतामहँ भयऊ। पूर्विल कथा कहय तब लयऊ॥
रामचन्द्र रावण वध कीन्हा। ता कारण यज्ञहिं चित दीन्हा॥
ऐसन यज्ञ तुमहुँ जो करहू। तब यहि पापन ते उद्धरहू॥
व्यास ऋषय असकहिके गयऊ। तेहिके सेवक वनचर रहेऊ॥
रामचन्द्र तब किय अनुमाना। केहिविधि उतरव जलधिमहाना॥
तीन दिवस सागर तट रहेउ। तऊ न पथ सागरसन लहेउ॥
तब कोपेउ लक्ष्मण बलवीरा। खैंच श्रवणलगि धनुपै तीरा॥
करधरि जांबवन्त समुझावा। स्वामी उदधि आपु चलि आवा॥
सुनि लक्ष्मण मन धीरज भयऊ। ब्राह्मणरूप सिन्धुचलि अयऊ॥
हे स्वामीका अवगुण मोरा। केहि हित बाण शरासन जोरा॥
हौं सेवक तुव आदि गुसाँई। तुम मारहु मम काह बसाई॥

तुम जो मोकहँ दीन्ह बड़ाई। उतरहि कपि तोका प्रभुताई॥
नल अरु नील जो कपिकर बीरा। औ सुग्रीव आहि रणधीरा॥
नल अरु नील खेल लरिकाई। वाही समय ब्रह्मऋषि आई॥
तिन्ह अशीष दीन्हा मनलाई। सिंधु शिला तोहिं देउ तराई॥
सो नल नील आहि तुव साथा। आज्ञा देहु सुनहु रघुनाथा॥

सो अशीश तिन्ह पाये, कीजै का पररोष।
सो आज्ञा इन्ह दीजिये, बांधहिं सागर चोख॥

तब हनुमत सुग्रीव बुलावा। तुरत आय तिन्ह प्रभु शिरनावा॥
तब कपि कहा सबहि समुझाई। गिरि पहार तुम आनहु जाई॥
तब सब मिलि पहार लै आये। सेतु बांध तब तुरित बँधाये॥
रामचन्द्र तब आज्ञा दीन्हा। चले बीर निर्भय मन कीन्हा॥
यहि मिसु सागर बाँधेउ बीरा। तब तुअ लंक जरै रणधीरा॥
सेतुबन्ध चढ़ि जाय न देऊं। मैं हनुमत परतिज्ञा लेऊं॥

रामचन्द्र कर सेवक, पवनपुत्र हनुमान।
रण जीतेउ कौरव दल, देखों तुअ अनुमान॥

अर्ज्जुन बाण हाथकै लीन्हा। तब हनुमन्तहिं उत्तर दीन्हा॥
तोहि राम अतुलित बल दीन्हा। तौ समर्थ ममखोजे लीन्हा॥
तुम हनुमन्त पवनसुत जाये। बल अनुमान न मोसन आये॥
कहु सागरहिं करौं जरि छारा। कहु बाणन ते बांधो सारा॥
कहहु मारि पौरुष तुव चरों। की तोहिं मारि सिंधु महँबूरों॥
कोपि वचन जब अर्ज्जुन कहेउ। हनुमत तब सन्मुख ह्वै रहेउ॥

कोपि पूंछ तब फेरा, हनुमत वीर रिसान।
दोऊवीर विचचण, दोऊ चतुर सयान॥

तब अर्ज्जुन धनुशर सन्धाना। हनुमत सन भाषेउ परमाना॥
एकहि वाण समुद्रहिं नाखौं। तब निज नाम धनञ्जय राखौं॥
तब हनुमन्त कोपि कह वैना। देखब बाण तोर भरि नैना॥
मोर बांधते चढ़िके देखा। तोर बाण मोरे केहि लेखा॥
तोरों बाण तौ हनुमत वीरा। नातरु सेवक हौं रणधीरा॥
जो तोरे जिय अस मन देऊ। तब अर्ज्जुनहुँ प्रतिज्ञा लेऊ॥
दोनो वीर पैज जब किये। डोलेउ नारायण तव हिये॥
धरे ध्यान तब श्रीभगवन्ता। जहांहुते अर्ज्जुन हनुमन्ता॥

यज्ञ विपय जहँ थे हुते, आसन टरु भगवान।
तबहिं कृष्ण तहँ ते उठे, भक्तिवश्य भगवान॥

उठे कृष्ण द्वारका वासी। सबै कृष्ण घट आहिं निवासी॥
एक रूप राखे मख पाहां। दूसर देह सिन्धु तट माहँ॥
खैंचेउ बाण शरासन ताना। मारेउ शर पारथ सन्धाना॥
दोऊ वीर प्रतिज्ञा कीन्हा। कृष्ण चरण तव सुमिरे लीन्हा॥
उदधि पाटिगो आरहिपारा। कह अर्ज्जुन सुन पवनकुमारा॥
जो यह पाव तोरु हनुमाना। तौ न कुवों मैं धनु गुन बाना॥
कृष्ण चरित्र तबै यह कीन्हा। बांधक तरे पीठ प्रभु दीन्हा॥
तब हनुमन्त कोपि कह बाता। देखब बांध तोर मैं भ्राता॥

हनूमान बहु कोप करि, उछल बांध बलवीर।
जहँवाँ हनुमत पग धरैं, हरि तहँ देहिं शरीर॥
तब हनुमत लज्जित ह्वै गयऊ। दौरि चरण अर्ज्जुन कहँ नयऊ॥
यहां बहुत जो कञ्चन पावों। तब मैं हस्ती नगर सिधावों॥
कह हनुमत यह केतिक बाता। सुवरन आनि देहुँ मैं भ्राता॥
तब अर्ज्जुन कहँ धीरज दयऊ। कहि यह वचन पवनसुत लयऊ
वही ठाम अर्ज्जुनहिं बिठावा। आज्ञा लै हनु लंकहिं आवा॥
तत्क्षण खोजे कञ्चन मेरू। कञ्चन खोज लेत चहुँ फेरू॥
खोजत बीतेउ तीन दिन, हनुमत मन अनुमान।
क्रोधित भे तब हनुबली, लङ्का सबै सकान॥
यह जब भेद विभीषण पावा। जहां पवनसुत तहँवां आवा॥
अंजलि जोरि वीनती कीन्ही। कवन काज प्रभु आयसु दीन्ही॥
तब हनुमन्त कहैं सुनु वीरा। कञ्चा सोन देहु रणधीरा॥
कहा विभीषण अंजनिपूता। तुम आपुही कीन्ह अजगूता॥
सगरी लङ्का खोरि जराये। तहँ सो कञ्चन रहे न पाये॥
एक बात सुनहू हनुमाना। रामचन्द्र सुमिरहु बलवाना॥
हम तुम्हार सेवक अहैं, मोपर वृथा कोहाहु।
जिउ हमार तुव आगे, जैसे शशिको राहु॥
यह तो बात पवनसुत सुनेउ। परमज्योतिको सुमिरण कियेउ॥
वाणी यह तब भई तुरन्ता। काहे कोपेउ तुव हनुमन्ता॥
प्रथम लात कंगूरन मारा। सो खसि परेउ समुद्र मँझारा॥

सो कञ्चन समुद्र महँ अहई । मांगि लेहु यह वाणी कहई ॥
तबहिं विभीषण विदाकरावा । तबहीं चला पवनसुत आवा ॥
हाँटि दर्प जो कह हनुमन्ता । देहु रत्न नहिं बांधु तुरन्ता ॥
ब्राह्मण रूप उदधि प्रगटाना । हनुमतसे छल कियउ महाना ॥
हम नहिं जानहिं कञ्चन मेरू । काहे कोपि कहत चहुँ पेरू ॥

हम नहिं जानहिं हनुमत, कञ्चन मेरु सुमेरु ।
जो घट मोरे होहितौ, खोजि लेहु चहुँ फेरु ॥

कहि यह सिंधु हँसो मदमाता । तब हनुमन्त कोपि कह बाता ॥
जैसे लङ्का में जो डाहा । तैसे आज समुद्र उछाहा ॥
पवनपुत्त तब मैं हनुमन्ता । नातो कञ्चन देहु तुरन्ता ॥
नातो रारि होइ यहि ठाईं । देखि हो आजु मोरि मनसाईं ॥
तब हनुमन्त लँगूर उठावा । अवलोकत मीनहुँ डर खावा ॥
तब कीन्हेउ अजगुत हनुमन्ता । विधी विष्णु तब कांपु तुरन्ता ॥

देहु मोहिं कञ्चन नहीं, कह अस पवनकुमार ।
ब्रह्मा विष्णु जु रखहीं, तौ मारों परचार ॥

इतनो बात पवनसुत करिया । सिन्धु डरे मत्सहु खरभरिया ॥
कह राघो सुनु सिंधु गुसाईं । इहां मृतुत्र हम सब कर आंईं ॥
देहु सोन सबके जो रहई । राघो अस समुद्र से कहई ॥
कह समुद्र जो हैं घट तोरे । आनिदेहु कस लावहु भोरे ॥
उगलि मीन तब कञ्चन दीन्हा । करन उठाय सिंधु तब लीन्हा ॥
पवन पुत्रके आगे आवा । करि विनती हनुमत समुझावा ॥

मैं नहिं जानो धर्म दोहाई । चमा करहु अपराध गोसाई ॥
राघव मत्सत्र कहां तो पावा सो मोहिं आपुहि आनि मिलावा

तबहिं पवनसुत हर्ष, कञ्चन लिये सुमेरु ।
आनि दीन्ह अर्ज्जुन कहँ, अङ्कमाल किय फेरु ॥

तब हनुमत अर्ज्जुन सन कहेउ । हम सेवक अब राउर अहेउ ॥
जहँ सुमिरहु आवें तोहिं पासा । अरु हनुमत यह वचनप्रकाशा
जैसे रामचन्द्र के काजा । विमुख होहिं तो मातुहिंलाजा ॥

तब अर्ज्जुन सम्बोधेउ, सुनहु वीर हनुमान ।
हमहुँ तुरत अब जाहिंगे, जहँवां श्रीभगवान ॥

अङ्क मालिका अर्ज्जुन कियऊ । पुरहस्तिन कहँ मारग लियऊ ॥
हनूमन्त तब उहवां गयऊ । तब अर्ज्जुन हस्तिनपुर अयऊ ॥
कीन्ह प्रणाम पार्थ तबजाई । कृष्ण लीन्ह तब अङ्कम लाई ॥
सुनि कुन्ती तब हर्ष कराई । द्रौपदि सँगलै आरतिलाई ॥
राय युधिष्ठिर अङ्कम कीन्हा । सहदेव नकुल चरण शिरदीन्हा ॥

पांचो पाण्डव मुदित मन, कृष्ण युधिष्ठिर राय ।
धन्य धन्य तुम अर्ज्जुन, यज्ञ संबोधे आय ॥

सुन राजा अब कथा प्रमाना । पतिव्रता परपुरुष नजाना ॥
धर्मराज नृपती सख्याता । पूछे व्यास ऋषी ते वाता ॥
धर्म अधर्म पुण्य अरु पापा । लक्ष्मी गृह कैसे अस्थापा ॥
चारि वर्ण के धर्म प्रमाणा । अपने धर्म केरि निर्माणा ।
ब्राह्मण चत्री शूद्र वईसा । चारो वर्ण धर्म परदीसा ॥

जो जन जापन होम प्रमाणा । आपने धम करैं निर्माणा ॥
षट कर्म्मन विप्रन परमाणा । इह सब विना विप्रकत जाना ॥
दान शौर्य अरु सत्य जुझारा । चत्री धर्म्म याहि परकारा ॥
कृषी वणिज वैश्यहु करजाना । सेवन धर्म्म शूद्र परमाना ॥

यहि प्रकार सुनु राजा, धर्म कथा परभाव ।
रानी धर्म्म जो राजा, तोहिं कहौं अब राव ॥

पति आज्ञा सनद्ध रह जोई । पर पुरषनसे रहे अगोई ॥
सास ससुरको सेवा करे । वोधिन माहिं शोचि पगुधरे ॥
इस्त्री धर्म्म इहै परकारा । अब अधर्म्म जो सुनो भुआरा ॥
कर्म्मन छूहो हीन द्विज जोई । चत्री वंश और जो कोई ॥
आपन धर्म्म जो वैश्य न जाना । दूसर कर्म्म करै परमाना ॥
शूद्र गर्भ उत्तम ते करे । इहै अधर्म रूप सञ्चरे ॥
ये गृह कहँ नारी जो जाई । विना काज सूनो हो राई ॥
पति के आज्ञा नहिं जो माना । अपर पुरुषते बात बखाना ॥
विधवा होके करे शृंगारा । जानहु सब अधर्म्मके सारा ॥
माता पिता पुत्र नहिं सेवा । चञ्चल पुरुष नारि जो भेवा ॥

इहै सकल सुन राजा, कहौं अधर्म्म उपाय ।
पुण्य पाप औ राजा, सुनो सत्य मन लाय ॥

गुरुको शिष्य जान सम हरी । छेद वेद मनमाहँ न करी ॥
है गुरु ब्रह्मा रूप समाना । भिन्न भाव वाको नहिं जाना ॥
सदा पवित्र सुकीरति रहै । मातासम परनारिहि कहै ॥

भिक्षुक नाहीं होत निराशा । कूप तड़ाग बाग परकाशा ॥
येहौ पुण्य जगत महँ सारा । व्यास कहे सुनु पाण्डुकुमारा ॥
पाप कर्म कै सुनो विचारा । गुरुको आनहिं भाव निहारा ।
हृदय नाहि सत सुकृत प्रकाशा । परनारीते सदा विलाशा ॥
भिक्षुक जन निराश फिरजाई । ज्ञान धर्म हृदये नहि राई ॥
तनु अपवित्र सदा जो रहै । मिथ्या वचन सन्तसे कहै ॥
गुरु द्रोह पावे न प्रसादा । यह सबते है परम विषादा ॥

यह सब पातक जगत है, परधन हर जो कोय ॥
सदा पाप मन वसत है, राजा सुनिये सोय ॥

लक्ष्मीको भाषीं अस्थाना । सदा पवित्र जौन नर जाना ॥
सात वर्ष कन्या जु कहावे । ताके दान धर्म फल पाव ॥
पतिव्रता नारी जो होई । सदा पवित्र रहति है सोई ॥
द्विज वैष्णव अरु गुरुजन माना । देवालय बहु कर निर्माना ॥
काहू को निंदा नहिं करहीं । ताके गृह लक्ष्मी सञ्चरहीं ॥
अब सुनु राजा कथा विच्छेदा । जहां लक्ष्मी तहां न भेदा ॥
जाके सदा जुआ मन भावे । सुरापान में चित्त रमावे ॥
परदारन रति सबे सुहावे । धातु नाम जो सबै चुरावे ॥
पुस्तक तेल घीव अरु धाना । मूल पुष्प फल काठ समाना ॥
अमवश्या संक्रान्ति सुहावे । एकादशी नारि मनलावे ॥

ग्रहण समय अरु श्राद्ध दिन, तिय सँग भोग सुहाय ।
देव गुरु नहिं मानहीं, तहां न लक्ष्मी जाय ॥

व्यास कहे राजा के पाहा । यज्ञ अश्व जानहु नरनाहा ॥
धर्मराज भीमहि हँकराये । जाहु द्वारका हरि हित भाये ॥
आनहु कृष्ण सहित परिवारा । द्वारावति मधुपुरी मँझारा ॥
सवहि सङ्ग ले आवो जाई । राजा भीमहि कहा बुझाई ॥
भीमसेन तव हर्ष प्रमाना । तव द्वारावति कियो पयाना ॥
पहुँचे जाय कृष्णके द्वारा । जेंवतथे तहँ नन्दकुमारा ॥
वहुविधि भोजन परसे आनी । पवन करत चारों पटरानी ॥
जाम्ववती अरु रुक्मिणि वाला । सतभामा लच्मणा रसाला ॥
जाम्ववती तव हास्य वखाना । नँद गृह भोजन भूलेउ खाना ॥
चोर पियत वन महँ यदुराई । सो सव चितसे दीन्ह भुलाई ॥

कौतुक नारी करत तहँ, सोनहिं कीन्ह वखान ।
तेहि अवसर तहँ पहुँचेऊ, भीमसेन वलवान ॥

तव सतिभामा हरिते कहेऊ । आये भीमसेन तो अहेऊ ॥
इन्हों न आवन दीजे नाथा । वूझे भीम कहत तव गाथा ॥
कौतुक भीम करन तव लागे । ठाढ़ होय आंगन महँ आगे ॥
केधौं अशुचि होउँ भगवाना । केधौं मैं पापी अज्ञाना ॥
कहा सोदाद हरीके आहे । ऐसा काम कीन्ह जो चाहे ॥
जो वाकहँ हम देखन पावें । नाशा श्रवण हीन करवावें ॥
जो कछु अटके कण्ठ तुम्हारे । देउ गदा ते वेगिहि टारे ॥
कौतुक सुनि हर्ष भगवन्ता । हँसिके भीमहि कहे तुरन्ता ॥
आओ भीमज भोजन करहू । मनमें कछु रोष नहिं धरहू ॥

भीमसेन तब भाषेउ, जो तुम भये भुआर ॥
जानो हरि हम जेयँ भे, आपुन करो अहार ॥
निके कृष्ण हर्ष मन लाये । बांह गहो भीमहिं बैठाये ॥
ाजन पान तुरत करवाये । किय आचमन परम सुखपाये ॥
े भीम निमन्त्रण दीन्हे । बांचेउ कृष्ण हर्ष तब कीन्हे ॥
ब श्रीपति अक्रूर बुलाये । पुनि अनिरुद्ध प्रद्युम्न मँगाये ॥
तवर्मा तुरन्त हँकराये । सुनि सात्यकी सारथी धाये ॥
बते कहा कृष्ण यदुराई । साजहु दल हस्तिनपुर जाई ॥
ाजिमेध यज्ञादि परवाना । देखहु जाय ताहि अस्थाना ॥
निके सबहि हर्ष अति पाये । आगे पुरके लोग सिधाये ॥
र्ण वर्ण हय चढ़ि सबधाये । श्वेत वाजिपर श्रीहरिआये ।
वर्ण वर्ण सब हय चले, कौतुक होत अपार ।
बल वसुदेव बुझायके, भाषे नन्दकुमार ॥
ाकरो नगरके माहीं । रहो द्वारका कह यदुनाहा ॥
ब वसुदेवजु बोलन लागे । प्रेम मग्न श्रीपतिके आगे ॥
ाधूलोग धर्म्म जो जाना । तब तो सँगलीजै भगवाना ॥
ारीवश कामी जन होई । दुष्ट लोग जेतिक हैं सोई ॥
न्हके सङ्ग गमन जनि करहू । वचन मोर तुम हिय में धरहू ॥
ह कहिके तब बिदा कराये । कृष्णचलेउ बहु हर्ष बढ़ाये ॥
ानी सबै कृष्णके सङ्गा । हर्षित गात चले श्रीरङ्गा ॥
ीम करत हांसी मग माहीं । देखत बहुत नारिके पाहीं ॥

वर्गा वर्गा सब चलि भे तहां । आये एक सरोवर जहां ॥
कुञ्ज अनेक हंस बहुताई । नाना भँवर तहां गुंजराई ॥
कौतुक प्रेमकथा हरी, कहे रुक्मिणी पांह ।
भानु अस्त जब लीन्ह है, सदा भँवर रस चाह ॥
निशिके मांह हर्ष तब पावे । प्रात विकसिके पतिहिं दिखावे ॥
दस्तीके मन धिर ना रहै । सुनि प्रद्युत्तर रुक्मिणि कहै ॥
यहां न पक्षपात कछु राखों । सत्यवचन प्रभु तुमसन भाखों ॥
भौंरा तो बालक सम अहई । माताके हिय भीतर रहई ॥
बालक सम रोदन सो करई । माताहिय अन्तर सञ्चरई ॥
प्रेम सहित सुत गोद लगावैं । प्रीतिहेतु मन चञ्चल धावै ॥
जब रुक्मिणि यह बात जनाई । सुनतहिं कृष्ण परमसुखपाई ॥
रहे रातभरि हरिपुनि तहां । अनुपम पाथ सरोवर जहां ॥
तबहिं चले आये यहि भांती । मिले हरीके बाल सँघाती ॥
नाना कौतुक सभासब, करत श्यामको देख ।
परम अनंदित हर्षहिय, आनि सखा सब पेख ॥
पाछे सब गोपी तब आई । हर्षित दर्श कृष्णको पाई ॥
नाना कौतुक भाव बनाई । चले अनेक संग मन लाई ॥
सब संग मिल चल भगवाना । तब यमुना तट आय तुलाना ॥
तहँ उतरे प्रभु श्रीयदुराई । नगर लोग सब भेंटेउ आई ॥
ब्राह्मण अरु बन्दीजन नाना । पावनगुण गावत सविधाना ॥
पुर नारी देखहिं घनश्यामा । संन्यासीको करैं प्रणामा ॥

होके सावधान इत रहो। धर्मराज को पुर महँ कहो॥
निशि भो विगत प्रात जब भयऊ। सबै राखि हरि अंकत लयऊ
अश्व चढ़े सब जन ले साथा। पुर हस्तिन गौवने यदुनाथा॥
नाना कौतुक अस्तुति, पन्थ मांह विस्तार।
बहुत होत भये नाटक, सूक्ष्म किया विचार॥

इति तृतीय अध्याय॥ ३॥

वैशम्पायन कथा सुनाये। राजा गृह तब श्रीपति आये॥
तब अन्तःपुर गे यदुराई। राजा देखि परम सुखपाई॥
धृतराष्ट्रक अरु विदुर बन्धुगन। कृष्ण मिलेउ पारथसह सबजन॥
भेट कृपाचार्य्यहि से कीन्हा। धर्मराज तब पूंछन लीन्हा॥
आए सङ्ग वंश परिवारा। कहे कृष्ण सब आउ भुआरा॥
पिता और हलधरको ताहीं। रक्षाको राखो पुर माहीं॥
सुने धर्म राजा सुख पाये। अन्तःपुर तौ श्रीपति आये॥
कुन्ती और सुभद्रा भेटी। पञ्चाली भेटी दुख मेटी॥
पीछे धर्मराजपहँ आये। धर्मराज अर्ज्जुनहिं बुलाये॥
कुन्ती आदिक जेती नारी। निपुण काज करकर शृङ्गारी॥
सबै सङ्ग ल चलिये, जेहि थल सब यदुवंश।
धर्मराजके वचनका, सब नर करहिं प्रशंस॥
चले सबै सङ्गहि हरि लीन्हे। आगे सबन अश्व करिलीन्हे॥

राजा चले सबै दल सङ्गा। नारी सब तो परम अनङ्गा॥
आये सबै यमुन तट जहां। सब यदुवंशी उतरे तहां॥
देवकि और रोहिणी आई। कुन्ती चरण परी सो जाई॥
रुक्मिनणि अरु सतिभामा नारी। कुन्ती चरण परी व्यवहारी॥
पाञ्चाली हरि जन तिहि परशी। यहि परकार त्रिया सब दरशी॥
सतिभामा परिहास कर तहां। परम कथा सतिभामा कहा॥
पञ्च पुरुष वश तुम कस कीन्हा। तब पञ्चाली यह वर दीन्हा॥
तुम कछु बोल हरी ते कहो। कैसे पुरुष कीन्ह वश चहो॥
आपन तन मन दीजै वारी। तबहि कन्त वश करै सो नारी॥

एक पुण्यके अर्थ तू, सखिके दीन्हेउ कन्त।
कैसे प्रीतम होत वश, मुँह की प्रीति अनन्त॥

यह प्रकार ते कौतुक नाना। सखिन सबै आपन हठठाना॥
सतिभामा देवन सन कहा। करन अश्व पूजन सब चहा॥
देवन कहा कृष्णके पाहा। श्रीहरि कहा धर्म नरनाहा॥
मातु अश्वको पूजन चहई। आज्ञा कह नारायण कहई॥
धर्मराज सब वीर बोलाये। समाधान कै सब समुझाये॥
क्रिया अश्व पूजो घर आवैं। तब तुव कार्य पूर मन भावैं॥
तब वीरन सब साज बनाये। श्यामकरनके सङ्ग सिधाये॥
सब जन अश्वहि पूजन लागी। कौतुक प्रेम हर्ष शुभ भागी॥
गो अनुशल्य तहां विकराला। जहां अश्वको पूजैं वाला॥
कर्णहि वधौं शालमहँ आई। लेउँ वैर मारौं यदुराई॥

यह विचारिके राक्षस, घेरेउ जाय तुरङ्ग ।
शोर भयो तिय यूथमहँ, वीर भये सब भङ्ग ॥
अश्व बांधि वह हमहीं राखा । समाधान अपने बल भाखा ॥
कृष्ण कहे पारथते बाता । हरे अश्व सबके सख्याता ॥
महा गर्व करि यह लै गयऊ । आजु काल दैत्यन यह भयऊ ॥
धर्म्मराजसे कह ब्रजराजा । अश्वहरनसे भै मोहिं लाजा ॥
मरहिं वीर ध्रुव हारहिं क्षत्री । यौवनाश्व क्षत्रीपति अत्री ॥
अश्व लीन्ह अब का करु चहिये । ता कारण सबहीते कहिये ॥
तब श्रीपति वीरा कर लीन्हे । क्षत्रिन शीश नीच तब कीन्हे ॥
काहूके साहस नहिं चीन्हे । कामदेव तब वीरा लीन्हे ॥
मैं गहि अश्व क्षणक महँ लाओं । कामदेव तब नाम कहाओं ॥
कामदेव चढ़ि रथपर धाये । नाना अस्त्र शस्त्र सजवाये ॥
प्रदुमनकेरे हाथ तब, वीरा श्रीपति दीन्ह ।
वीर सबै चुप भवन गे, वृषकेतुहि सँग लीन्ह ॥

कर्णपुत्र रथ चढ़िके धाये । कामदेवके साथहि आये ॥
हांक दीन अरु शंख बजाये । दैत्यराज सुनि क्रोधित धाये ॥
रहु रहु काम कहे जब बाता । कर्णपुत्र देखेउ सख्याता ॥
तब अनुशल्य काम परचारा । बहु प्रकार ताही ललकारा ॥
पतिव्रत नारि पुत्रके पाहीं । चले तेज तोरत छक नाहीं ॥
महा क्रोधकरि दैत्य भुवारा । पांच बाण कामहिके मारा ॥

लगत बाण तब भयो अचेता । उडि हरिपहँ छाड़े तब खेता ॥
देख क्रोध किय नन्दकुमारा । तुरत कामको चरण प्रहारा ॥
तिनके बहु अवगुण प्रभु कहा । कर्म कमीन जन्म लिय चहा ॥
गर्भपात काहे नहिं भयऊ । हारे समर प्राण नहिं गयऊ ॥

गर्भपात जो होते, कै मरते रण देश ।
काटे होत कुनाम मम, भाषे श्री हृषिकेश ॥

सुनत भीम अस गुन मन लाई । ऐ प्रभु काम भागि नहिं आई ॥
बाण तेजते तुर उडि आये । बरबश काम आपपहँ धाये ॥
सब दोष चमिये अब कामा । हम लै सङ्ग जातहैं धामा ॥
कामहि सङ्ग भीम ले धाये । गदा घात बहु वीर उड़ाये ॥
भीमन गदा घात दल मारा । हाथ पाय चूरण करि डारा ॥
रथ गज दल पैदल असवारा । कोटिन गदा रथिनको मारा ॥
कर्णपुत्र तब भीमते कहई । आप समान जगतको अहई ॥
तुम लायक दल है यह नाहीं । इत क्यों अस्त्र गहे रण माहीं
सुने भीम हर्षित ह्वै कहई । काम परा भय सङ्गर रहई ॥
तुम मारो रिपुको दल भारी । हम राजहिं मारब परचारी ॥

भयो क्रुद्ध कहि भीम यह, तब राजा शिर धाय ।
काल सरिस शर मारेउ, भीम मुरछि गिर जाय ॥

मूर्च्छित भीम देखि जगतारन । आये द्रुत रणको पशु धारन ॥
क्रोधित दारुक रथ लै आये । हांकमारि राजापहँ आये ॥
तब अनुशल्य हांक कर दीन्हा । मैंहीं इनको वध है कीन्हा ॥

भीम काम रणमहँ मैं मारा । अब बल देखौं नन्दकुमारा ॥
तबहीं दैत्यराज परचारा । भारी बाण कीन्ह परचारा ॥
चारो बाण तुरङ्गहि लागे । रथके अश्व तुरन्तहि भागे ॥
भो अदेख रथ श्री भगवाना । तब हरिको आगमन बखाना ॥
मैं तो पापी हौं भगवाना । आप गये मैं भेद न जाना ॥
पुहुपवन्त कन्या जो होई । रजस्वला असनान करोई ॥
तादिन पुरुष जो तजिके भागे । गर्भपातकी हत्या लागे ॥

मोर देशके सबनहीं, अरु मम पावन कीन्ह ।
दीजै दर्शन नाथ मोहिं, सुनि हरि दर्शन दीन्ह ॥

जब श्री हरि तो आगे आये । तब अनुशल्य हर्षि पहुँचाये ॥
तीनि बाण तव प्रभुहि चलाये । एकहि शरते काटि गिराये ॥
हरिके बाण क्रोधते काटे । औरहु एक बाण तब डाटे ॥
प्रभुके तनु में लाग्यो बाना । मूर्च्छित भये तहां भगवाना ॥
रथ चढ़ाय सारथि लै आयो । भागे सैन्य चेत तब पायो ॥
धर्म्मराज जब देखे नैना । हाहा शब्द करे तब बैना
हरि प्रिया अरु रुक्मिणिरानी । मूर्च्छित देखा शारँगपानी ॥
रोदन करती हरिकी रानी । हा हा शब्द भये घन बानी ॥
कछु चैते आगे यदुराई । सबहि समोधि परम सुख पाई ॥
तब सतिभामा कहेउ रिसाई । कछुक चेत जानेउ यदुराई ॥
जब प्रद्युम्न मूर्च्छित भयऊ । बलि अनुशल्य मलेच्छनकियऊ ॥

तुम भागे केहि हेतु प्रभु, कह सतिभामा बात ।
चरित्र रूप अब धरब मैं, दैत्य वधब सख्यात ॥

यहि अन्तर श्रीपति तब आगे । महाक्रोध हिरदैमहँ लागे ॥
गहे अस्त्र रथ हो चढ़ि धाये । युद्ध भूमि रण भीमहि आये ॥
वृषकेतुहि कर शारँग धारा । सप्त बाण अनुशल्यहि मारा ॥
तब अनुशल्य चारि शर मारा । वृष्यकेतु रण काटि प्रचारा ॥
चारो बाण वहुरि कर जोड़े । मारेउ रथके चारिउ घोड़े ॥
एक बाणते सारथि मारा । रथ सारथि पैदल संहारा ॥
तेहि चण सूरज देखन पाये । हय रथ तब वेगही पठाये ॥
चढ़ि रथ कर्णपुत्र सन्धाना । शरन छांह अनुशल्य छिपाना ॥
सारथि अश्व तुरत संहारा । क्रोधित भो अनुशल्य भुआरा ॥
क्रोधवन्त दैत्यन पति धावा । तब करगहि वृषकेतु फिरावा ॥

कर्णपुत्र क्रोधित भये, अनुशल्यहि गहि लाय ।
सन्मुख देखत कृष्णके, पन्द्रह बार फिराय ॥

फिर अस कहा सुनो जगनायक । यह तुरङ्ग हरनेके लायक ॥
श्रीपति भाषे धन्य कुमारा । जो अनुशल्य वीर कहँ मारा ॥
ऐसी बात कहन हरि लागे । यहि अन्तर अनुशल्यहु जागे ॥
जब देखा तहँ श्री भगवाना । नाना अस्तुति हर्ष बखाना ॥
कर्णपुत्र कहँ धनि कर लेखे । तव प्रताप मैं श्रीपति देखे ॥
जो जगदीश्वर भगत उधारे । ध्रुवहि अचल पद कर सञ्चारे ॥

अस्तुति करत बहुत तहँ राऊ। सुनि श्रीकृष्ण बहुत हर्षाऊ॥
अनुशल्या किरपा हरि कीन्हा। हर्ष गात आलिङ्गन दीन्हा॥
दच्छिण कर गहि कर हरि लाये। धर्मराजके दर्श दिखाये॥
सन्मुख हाथ जोरि भै ठाढ़े। धर्म वचन कह अति सुख बाढ़े॥

भीम आदि मम बन्धु जे, तुम हो तिनहिं समान।
यज्ञ अश्व प्रतिपालहु, राजा कहेउ बखान॥

तब अनुशल्य कही अस बाता। देहौं शीश भुजा सख्याता॥
भाषे प्रभु अरु धर्मभुवारा। धन्य धन्य हो कर्णकुमारा॥
तव प्रताप अनुशल्यहि पाये। परमहर्ष तब राजा आये॥
पाछे राजा धर्म नरेशा। सहित अश्व पुरको परवेशा॥
रथ तुरङ्ग गज पैदल सारा। नृप हस्तिनपुरका पगुधारा॥
पहुँचे जाय नगरके माहीं। वीर आदि जेते सब आहीं॥
अरु छत्री गण जेते आये। अर्घ्य देय आसन बैठाये॥
भोजन पान सबन करवाये। ऐसे दिन तब बीस गँवाये॥
चैत्र पूर्णिमा पुरव प्रमाना। तबहीं यज्ञ होय निर्वाणा॥
सबै विप्र तहँ यज्ञ बनाये। द्रुपदसुता नृप तबहि नहाये॥

गाठि जोरि राजा तबै, बैठि यज्ञमहँ जाय।
मणि सुवर्ण बहु दान दै, उठीं युवति जन गाय॥

यज्ञ दान जो कछु विविधाना। तेहि प्रकार तह दीन्हो दाना॥
वाद्य शब्द घन मानो गाजे। पूजा अश्व वेद तब साजे॥
उत्तम घरो वेद जो वरना। बांधि अश्वके माथ अभरना॥

तामहँ लिखे युधिष्ठिर राजा। अश्वमेध यज्ञहि तिन साजा॥
ऐसो छत्री को जग आही। गहे अश्व को निज बल वाही॥
यह लिखिके पारथहि बोलाये। अश्व सङ्ग तब भूप पठाये॥
यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा। प्रदुमन है अरु कामकुमारा॥
अपनो अनी सङ्ग कर लीजे। तबहि गमन अश्वहि सँग कीजे॥
पारथ सुनत हर्ष तहँ पाये। धर्मराजको शीश नवाये॥
माथ मुकुट अरु गांडिव हाथा। और सैन चली सख्याता॥

दल साजे सेनापती, जहँ लगि सब सरदार।
भेंटे सबै सुपार्थ कहँ, अरु धृतराष्ट्र भुआर॥

सब तो बिदा भये सुख पाये। पाछे शीश मातुकहं नाये॥
अश्व राख नृप आज्ञा दीन्हा। पारथ कह माता सों लीन्हा॥
कुन्ती कह केतक दल संगा। निज बलते गमनहु रणरङ्गा॥
पारथ कहेउ सबै सरदारा। श्रीपति अरु हैं कामकुमारा॥
यदुवंशी ये सोहहिं संगा। यदुनन्दन दीन्हो मम संगा॥
कुन्ती कहा सुनो मन दीन्हे। कर्णपुत्रकी रक्षा कीन्हे॥
तासों यज्ञ सफल नहिं पैहो। जो पुत्रन कहँ कहूं जुझैहो॥
यह कहिके तब आज्ञा दीन्हा। पारथ चरणवन्दना कीन्हा॥
चले पार्थ तब हर्षित गाता। कर्णपुत्र पुनि चले सख्याता॥
भद्रावती कुँवरको रानी। सुनि पति बिदा होत बिलखानी॥

पिय अनुरागिनि नारि तब, कहत पार्थसों बात।
जहँ इच्छा तहँ जाइये, जिव हमार लै साथ॥

रणमहँ कादरता नहिं करहू। मम लज्जा माथे पै धरहू॥
कर्णपुत्र वामासों कहई। जो सब तीर्थ पुण्य पै अहई॥
गया पिंड तिरिया गति पाव। हरी नाम यमदूत डरावै॥
यह सब तो जो झूठ बखानहिं। तो हम भागहिं रण संग्रामहिं
ऐसे चले कहत रह सोई। आपन सेना संग लगोई॥
श्रीपति और भीम उठि धाये। पारथको पहुँचावन आये॥
मध्य देश गे तजा तुरङ्गा। नाना दल पारथ के सङ्गा॥
चला तुरङ्ग तेज पगु जाई। तौ पारथ परसे यदुराई॥
धर्मराज माथे कर दीन्हा। श्रीपति काम बुलाइहि लीन्हा॥
पारथ मेरो सब धन प्राना। तुम रक्षा कीजो सज्ञाना॥

यह कहि सौंपा कामको, पारथही यदुराय।
भीमसेनते पारथ, विदा भये सुख पाय॥

सेन संग पारथ चलि आये। श्रीपति पुनि हस्तिनपुर आये॥
भीम कृष्ण हस्तिनपुर आये। पारथ अश्व संग तब धाये॥
बाणै बाणन होत अघाता। चले वीर पारथके साथा॥
अरु अनुशल्य कर्णसुत चाला। मेघवर्ण यौवन भूपाला॥
औ सुवेग जो प्रदुमन वीरा। अनिरुध वीर जो है रणधीरा॥
सैन समूह चले जो साजा। महा घोर तब बाजन बाजा॥
चले वीर ह्वै हर्षित नाना। सबही वीर भगत भगवाना॥
महाबली सब दल है राऊ चले वीर आनँद उपजाऊ॥

दल चतुरङ्ग पन्थ नहिं पावै। आगे अश्व तेज पग धावै॥
पाछे सेना वीर अपारा। हय सँग चले वीर विस्तारा॥
हय गज रथ जो पैदल नाना। चलो महावीर जग जाना॥
दिशि दक्षिण प्रथमहि सो धाये। कुलबल महावीर संग लाये॥
पवन वेग दिशि दक्षिण, चला तुरन्त तुरङ्ग।
हर्षित सब सेनाधिपति, करत कुतूहल रङ्ग॥

इति चतुर्थ अध्याय॥ ४॥

राजा सुनो कथा तब कहई। महिसरस्वती नगर इक अहई॥
नालपुञ्ज तहँका नरनाहा। प्रथमहि अश्व गयो चलि ताहां॥
राजनि नाम प्रदीप कुमारा। कुञ्जमहांतिय रूप अपारा॥
नदी नर्मदा तटसों अहई। तहां अश्व गो मुनि अस कहई॥
कुञ्ज माहिं इस्त्री जब पाये। तहँ पर वीर देखि मनलाये॥
पढ़ि पत्रहि तिरियन समुझाये। धर्मराजके हय यहँ आये॥
हैं रक्षक पारथ धनुधारी। सुनि नारी सब गृह पगु धारी॥
तबहि कुँवर रण कर मन धरेउ। दल लै पारथ सन्मुख खरेउ॥
नर सब चलो देखन धाये। कर्णपुत्र तहँ आगे आये॥
भाषे रणमहँ काह विचारो। पाछे पारथ पास सिधारो॥
पांच बाण हनि कर्णसुत, मारे चारि तुरङ्ग।
पुनि सारथि रथ काटिकै, कियो वीरपन भंग॥

त्रयगासी शर राजकुमारा। क्रोधित कर्णपुत्र कहँ मारा॥
कर्णपुत्र मूर्च्छित मैदाना। तब अनुशल्य चलाये बाणा॥
शरन छांह छपि राजकुमारा। जुरे वीर दूनो सरदारा॥
नीलध्वज सुनि दल लै आये। बाणावरि कर पुत्र छुड़ाये॥
सब दलकहँ तब मारे बाणा। पार्थ हांक करि क्रोध बखाना॥
क्रोधयुक्त सुनि पारथ पायो। पांच बाण लै क्रोधि चलायो॥
एक बाणते राजा काटे। तब पारथ क्रोधित शर छांटे॥
नीलध्वज तब मूर्च्छा पाये। जागे महा युद्ध मन लाये॥
अग्नि बाण तब राजा मारा। पारथ दलमें भयो सँहारा॥
रथ गज दल पैदल असवारा। जरे लगे सब करैं पुकारा॥

मारि पार्थ तब वरुण शर, पावक अस्तुति ठानि।
हाथ जोरि कै पार्थ तहँ, बहु प्रशंस उर आनि॥

सदा कृपा तव हमरे पाहीं। रथ धनु बाण दिये तुम आहीं॥
अबकह दुख यह हमको दीन्हा। वारेक महँ सेना वध कीन्हा॥
तब कह पावक ऐसी बानी। पारथ तुम तो भये अज्ञानी॥
सदा रहत संग जगके तारण। अश्वमेध कीजै केहि कारण॥
हम राखे राजा कर माना। ससुर हमार महिप जगजाना॥
जन्मेजय पूंछत मन लाई। नीलध्वज कत ससुर कहाई॥
कैसे नृप कन्या तेहि दीन्हा। वैशम्पायन कह मन लीन्हा॥
नीलपुञ्जके ज्वाला रानी। श्याम नाम कन्या भै आनी॥

भद्र तरुणी तब पूंछहिं राऊ। चाहो वर सो हमें सुनाऊ॥
कन्या कहे मनुष नहिं काजा। देव श्रेष्ठ वर देहु जु राजा॥
बोले नृप इच्छा कहा, अरु संयम परवान।
जो मन आवत पुत्रि तव, हमते कहो बखान॥
कन्या कहेउ चारके करनो। कीन्हे पाप छले ऋषि घरनो॥
सर्फ काम वश हुइ अज्ञाना। ऐसे सँगते शुभ यमथाना॥
दूजो पति जो नारी करे। कुम्भीपाक नरकमहँ परे॥
अग्नीमाहँ मरेते जरही। ताते दुइ पति नहिं अनुसरही॥
यहि कारण तनु अग्निहि दीजै। वचन मोर पितु यह सुन लीजे
पुरजन राजा अचरज माना। कन्या करे अग्निको ध्याना॥
राजा कहा सर्व जो खाहीं। सात जीभ ताके मुख आहीं॥
मुख अरु चर्म त्यागि मुख कैसे। नदी नार नीचे वह जसे॥
हरका शीश तेज यश गङ्गा। पृथ्वीमहं तिन कीन्ह प्रसंगा॥
काहू वात न कन्या मानी। समाधान कै तवहीं आनी॥
चन्दन घृत अरु चिनी ले, तिल जो मधुको राव।
लौंग जायफल सोमकी, आहुत होम कराव॥
वेदवाक्य मन्तर अहिवाना। विप्ररूप तव अग्नि तुलाना॥
राजापाहि हर्षि पगु धारा। देखि विप्र तव पूंछ भुआरा॥
को हौ देव कहांते आये। तव ब्राह्मण अस वचन सुनाये॥
कन्या व्याहा हमको दीजे। ताते आये नृप सुनि लीजे॥
नृपति कहे सो पावक चहंई। विप्र कहे हम पावक अहंई॥

राजा कह प्रतीत मोहिं कीजै। अग्नी रूप आपनो लीजै ॥
मन्त्री कहा यही विधि जबहीं। पावक रूप प्रकट किय तबहीं ॥
भइ प्रतीत तब अस्तुति लाई। कन्याकी तब मौसी आई ॥
सो कहि द्विज चेटक यह करै। प्रकट रूप अग्नीको धरै ॥
राजा कहै आप गृहमाहीं। परखाये कैसीजै ताहीं ॥

ताके गृह पावक गये, रूप घरा बहु भार।
चीर कंचुकिहि जारत, और शीशको बार ॥

राजा पहँ वह रोवत गई। राखिलेहु यह पावक अहई ॥
अस्तुति करि नृप आदि बुझाई। तबहि व्याहकी बात चलाई ॥
मेरे गृहमें संतत रहौ। आवै रिपु तेहि जारत रहौ ॥
ऐसे वचन करौ परमाना। तब राजा दिये कन्यादाना ॥
राजा गृहमें पावक रहई। वैशम्पायन राजहि कहई ॥
सो वाचासे सेन जराई। ताते पारथ अस्तुति लाई ॥
पारथसों पावक तब कहई। पयनिधि बहुत कछु अब अहई ॥
अब देखो दल तुमही नैना। उठि है सबै तुम्हारी सैना ॥
सबै उठे जब पार्थ निहारा। राजा पहं पावक पगु धारा ॥

कहे जाय तब नृपतिसन, पारथ मित्र हमार।
मिलौ जाय नहिं जीति हौ, जेहि सहाय करतार ॥

पारथ मित्र कहै वैताई। मोहिं खवायो अन्न पुराई ॥
वचन सुनत राजा खुश भये। तब रानीको पूंछन गये ॥
मिलन मंतते कोपी रानी। जब राजाको बोली वानी ॥

सैना रण न जुझाये काहू। कायर ह्वै मिलिबे को जाहू॥
राजा सुनत क्रोध कर भारी। गो पारथपहं रण विस्तारी॥
राजा क्रोधित धनु सन्धाना। तेहि क्षण बहुत चलायो बाना॥
ऐसे बाण पार्थ तब मारा। बाण छांह ते भयो अंधारा॥
बाण पार्थके राजहि लागे। रथ चढ़ाय सारथि ले भागे॥
ह्वै अचेत तिरियासे कहेउ। सुतहि गवांय मन्त्र तब गयउ॥

अस कहि हय धन राजा, सङ्गहि चले लेवाय।
श्यामकरन करि आगे, पारथ भेटेहु जाय॥

भेटे जाय द्रव्य बहु दीन्हे। हर्षित पारथ सो ले लीन्हे॥
सेनापति तुम राउ हमारा। परममित्र पारथ सञ्चारा॥
अश्व पाय चलिबे मन दये। सँग नीलध्वज राजा भये॥
ज्वाला क्रोध शोक ते भारी। तुरत वधौं गृहमें पगु धारी॥
बन्धौ पहं सो रोदन कीन्हा। मोर पुत्त पारथ वध कीन्हा॥
बैर लेहु पारथ ते जाई। सुनतहि बात कहै सो भाई॥
अपने गृहमहं बैठहु जाई। आयो हम कहं खोवन धाई॥
सो सुनि ज्वाला क्रोधित भई। रोवत गंगा तट चलि गई॥
तरणी चढ़े कहे सो नारी। भयो पाप लखु गँग हत्यारी॥
गङ्गातीरके मानुष जेते। ज्वालापाहि कहैं सब तेते॥
पतित पावनी गङ्गजू, जगको पाप विनास।
सिध मुनि तट तेहि जायके, पावत सुरपुर वास॥

धर्म रूप तब कहै भवानी । गङ्ग दोषका कहौं बखानी ॥
ज्वाला कहा अपुत्री भारी । सात पुत्र दीन्हे जल डारी ॥
एक पुत्र तब तात बचाये । ताको पारथ मारि गिराये ॥
सुनतहि गङ्गा क्रोध अपारा । पारथकहँ शापो विस्तारा ॥
मेरो पुत्र पार्थ संहारा । छठे मास सो जैहै मारा ॥
ज्वाला कहा कृपा करु माई । बाण जन्म लै मारव जाई ॥
तब गङ्गा दीन्हो वरदाना । ज्वाला तजे गङ्गमहँ प्राना ॥
प्राण तजे भो शर अवतारा । अर्ध चन्द्र पर्वत तनु धारा ॥
जन्म बाण पाये पर सङ्गहि । पारथसुत के रहे निखङ्गहि ॥
बभ्रुवाहन है नाम भुआरा । वही पुत्र ते करब सँहारा ॥

यह चरित्र इतही भये, उत तब चलत तुरङ्ग ।
नीलध्वज अर्ज्जुन सहित, यौवनाश्व नृप सङ्ग ॥

जौन धर्म इक कानन रहा । अश्व गयो वाही बनमहा ॥
योजन एक शिला है जाहां । अश्व जात भयो ताहीमाहां ॥
पाहन लागि अश्व रहे कैसे । चुम्बक लोहे लागत जैसे ॥
कोटि यतन करि अश्व छुड़ावत। शिला छोड़ि तब अश्व न आवत
तब सब शोच करन तहँ लागे । कहो जाय पारथके आगे ॥
पारथ देखि शोच भो भारी । तब सेवकसे कहा हँकारी ॥
देखो ऋषि कोई इत अहई । पारथ बात सबनते कहई ॥
दूरि गये हेरन बन माहीं । शम्भरि नाम सुनी तहँ आहीं ॥

ऐसे श्राद्ध सिद्धि करवाये । इतना कहि मुनि नाम नशाये ॥
मुनि कछु कार्य्य करनको कहई । प्राणजायँ वरु तिय नहि चहई ॥
वात भूलिके मुनि सञ्चारो । ल पिण्डा गङ्गा में डारो ॥
सुनत वात क्रधित ह्वै नारी । लै पिण्डा घूरे महँ डारी ॥
देखि क्रोध मुनि शापेउ भारी । पाहन होहु जन्म हत्यारी ॥
जब पारथके दर्शन पैहौ । शीघ्र शापते तब तनि जैहौ ॥
शिला भई तब मुनिकी नारी । फेरो कर सुन वात हमारी ॥
करि प्रणाम पारथ शुभ कीन्हा । जातहि हाथ शिलामहँ दीन्हा ॥

छटा अश्व चला तब, पाहन ते भइ तीय ॥
उद्दालक तिय लै चले, परम हर्ष ह्वै जीय ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

वैशंपायन कथा सुनाये । पारथ अश्व चले मन लाये ॥
छूट शिला ते अश्व सिधाये । पञ्चज पुरी अश्वं तो आये ॥
हंसध्वज राजा पुर माहीं । पांच पुत्र राजा के आहीं ॥
सुन्दर सेरन सबल कुमारा । तीजे नाम सुरथ सञ्चारा ॥
चौथा पुत्र सुरथ परवाना । सवते छोट सुधन्वा माना ॥
दूत जाय रार्जाह समझाये । अश्व सङ्ग पारथ हैं आये ॥
सुनि राजा मन चिन्ता आई । तब सब सेनापतिहि बुलाई ॥
सब ते कहन लाग अस बैना । अब लौं दीख न पङ्कजनैना ॥

लखौं आज हरि आनँदकंदा। पारथ पास सदा यदुनन्दा॥
नगर माहिं कोऊ जनि रहहू। लाओ सबहिं दरश हरि करहू॥
हर्षित ह्वै सब आयकै, कह्यो सुनौ नरनाह।
जो नहिं आवै युद्ध हित, भुंजव कराहे माह॥
राजा चले सबै दल साजा। बाजन लगे अनेकन बाजा॥
विद्रथ चन्द्रकेतु तब आना। चन्द्रसेन सँग दल परमाना॥
चन्द्रदेव औ वरत सिधाये। यह पांचो राजा सँग भाये॥
सबह सेनापति लै साथा। रणको चलत भये नरनाथा॥
पांच सहस इकसौ रथ आये। सहस निशान तोप लदवाये॥
गजके ठाट पचास हजारा। लच्च सहस्र रहैं असवारा॥
सब दल चढ़ि मैदानहि अयऊ। पाछे कुँवर सुधन्वा गयऊ॥
दल मधि तेल कराहन भरी। पावक लाय तप्त तब करी॥
जोनहिं आवे दलमहँ कोई। मांझ कराह मृत्यु तेहि होई॥
शङ्खलिखित प्रोहित दुइ भाई। वाचा हेतु सर्वसो जाई॥
चले सुधन्वा हर्ष हिय, माताको शिरनाय।
कृष्ण दरश गति पाइ हौं, माता कहेसि बुझाय॥
तहँते गये कुँवर परमाना। पाछे गये बहिनिके धामा॥
बहिनीकर लै आरति कीन्हा। तब वीरनते बोलन लीन्हा॥
बहिनि भेटिकै बाहर आई। तिया प्रभावति देखन पाई॥
प्रिया कन्त सन कह वरि नारी। ताहि छोड़िकहँ चले सिधारी॥
नारी एक सदा व्रत आही। चलिये भवन देहु रतिचाही॥

कुँवर कह्यो दिवस न होही रति। तब नारी व्याकुल ह्वै विनवति
ऋतु अस्नान कीन्ह मैं नाथा। रतीदान दै करौ सनाथा॥
बिन अपराध पुरुष तिय त्यागा। गर्भ वधेकर हत्या लागा॥
वहु प्रकार नारिहि समुझाये। मिलना कठिन वहुरि सुरझाये॥

विवशहि रस भे कुँवर तब, बिलमे तत्क्षण धाम।
सुचित भये रतिदान दै, चले पार्थ संग्राम॥

कुँवर कह्यो सुनु वचन हमारो। को पीछे रह प्रश्न विचारो॥
ताको भुजहुँ कराहन माहीं। याही प्रण कीन्ह्यो मन माहीं॥
तब नारी कह रति दै जैये। पीछे दरश तिहारो पैये॥
विवश कुंवर नारीके परे। टोप सनाह उतारी धरे॥
रति रस हेतु तबहिं तो साजा। इत दलमाहिं हंसध्वज राजा॥
पूछन लाग सबनके पाहीं। देखियत कुंवर सुधन्वा नाहीं॥
सुधि कराह भूला मैं जाना। वेगि दूत तहँ करौ पयाना॥
गहिकर केश कुंवर लै आओ। ताहि कराहे माहिं जराओ॥
राजादूत चलन मन दीन्हा। करि रति कुंवर शीघ्र शुचि कीन्हा
बांधि अस्त्र रथ भे असवारा। हर्षित चलिभा राजकुमारा॥

यहि अवसरमें दूत सब, देख्यो कुंवरहि जाय।
राजा आज्ञा जो दियो, कुंवरहि कहो बुझाय॥

सुनतहि गोश गाज अनुपरेऊ। दूतन पाहि वचन अनुसरेऊ॥
आज्ञा तात अहैं परमाना। यह कहि कुंवरहि कीन पयाना॥
जातहि गये पिताके आगे। क्रोधित ह्वै नृप बोलन लागे॥

पारथ हरिके दर्शन कारण। आये नहीं मूढ़ मति धारण॥
मेरी आनि कुंवर नहि माने। सुनत कुंवर कर जोरि बखाने॥
पुत्र पतोहू तुम्हरे अहई। रती दान जलदी यक चहई॥
तेहि ते मोहि ह्वै गई अबारा। कीजै जो कछु होय विचारा॥
राजा दूतहि कह्यो बुझाई। तैलहि तप्त करो अब जाई॥
अब तो नात पुत्र का नाहीं। पूछौ जाय पुरोहित पाहीं॥
सुनतहि तेल तप्त तब कीन्हा। प्रोहित पाहि पूछ सबलीन्हा॥

तबहिं पुरोहित अस कह्यो, अब पूंछतका जानि।
पुत्र हेतु माया विवश, ताते पूंछत आनि॥

वचनहीन राजा तब भयऊ। अब हम यहां रहब नहिं कहेऊ॥
जाय दूत राजापहँ कहेऊ। राजाके मन चिन्ता भयऊ॥
राजागे प्रोहितके पासा। विनती करिके वचन प्रकासा॥
करि विनती प्रोहित दोउ भाई। अपने सँग लै गयो लेवाई॥
तेल तप्तहै पावक जैसो। मन्त्री पाहि कहै न्टप ऐसो॥
मध्य कराह सुधन्वहि डारो। तेलके मध्य जरायके मारो॥
मन्त्री गयो कुंवर के पासा। करुवो वचन जाय परकासा॥
हमते कछु नहि बनत विचारा। आज्ञा तात जो कीन्ह तुम्हारा॥
मधि कराह डारौ किन आना। सुना कुंवर तब कीन्ह बखाना॥
वचन तातका करो प्रमाना। मन्त्र मोहिं भावे नहिं आना॥

शोच किये का होत अब, परवश जनि कोइ होय।
अब काको शंका करौ, कुँवर कह्यो अस रोय॥

तेल कराह अग्नि सम ताता। कुँवर कह्यो धीरज धरि बाता॥
मोसन घाटि भई जगतारन। आयेते हरि दरशन कारन॥
ध्रुव प्रह्लाद और पंचारी। तुहीं विभीषण लिये उबारी॥
दीनदयालु राखि अब लीजै। महिमा प्रगट आपनी कीजै॥
जैसे ग्रहते गजहि छुड़ाओ। ताही विधि अब मोहि बचाओ॥
ऐसो सुयश रहै संसारा। कूदा कराहे राजकुमारा॥
करि अस्नान अस्तुती कीन्हा। तुलसीपत्र शीशपर दीन्हा॥
बहु प्रकार हरि अस्तुति ठानी। कह्यो अल्प महिं बहुत बखानी॥
नृप आज्ञा मन्त्री प्रतिपाली। दीन्ह कराह कुँवर को डाली॥

पावक उठा कराहसों, देखहिं सब दल वीर।
त्राहि त्राहि सबहिन कही, राखि लिये रघुवीर॥

रोवहिं दलके सब सरदारा। कुँवरहिं राखि हमैं किन मारा॥
शीतल तेल भयो सख्याता। कुँवर वदन भयो कंजप्रभाता॥
केशव कृष्ण जपत यहि नामा। प्रोहित सङ्ग करै नृप ग्रामा॥
कुँवरहि देखि पुरोहित कहै। जाते अग्नि बरायनि रहै॥
कीधौं तेल तप्त नहिं आही। की कछु जरी कुँवर मुखमाही॥
दूतन कह्यो झूठ सब अहई। केवल नाम कृष्णको कहई॥
प्रोहित तबहि प्रतिज्ञा धारी। नरियर एक कराहे डारी॥
परत कराह फूटि छितराई। प्रोहितके माथे लग जाई॥
तातया प्रोहित बहुत लजाना। भक्त द्रोह मैं कियो निदाना॥

न कुँवर सुधन्वा, तोर हृदय हरिवास ।
हिमों कहा, मिले कुँवरके पास ॥
हि भरि लीन्हा । अस्तुति बहुत कुँवरकी कीन्हा
प्र सुख परेऊ । भक्ति प्रभाव वदन नहिं जरेऊ ॥
भुकी बाढी । प्रोहित कुंवर दुहुँनकहं काढ़ी ॥
ाये न्टप आगे । प्रोहित तवहिं कहन असलागे ॥
 मैं जाना । इनके हृदय वास भगवाना ॥
सुतहिं वुलायो । उठि न्टप दौरि अंक लपटायो
न सुख पायो । बहुत प्रशंसा करि बैठायो ॥
हु नहिं मनमें । मैं दल गमन करौं अब रणमें ॥
ात पग परशे । करि प्रणाम प्रोहितके दरशे ॥

चले कुंवर तब, रथ पर ह्वै असवार ।

कर्णपुत्र तब कह यह वाता। तुम दुइ वीर
इनहि रहो तुम हम रणजाहीं। इतना क

कर्ण पुत्र अरु नृप सुवन, दोउ भये
राजपुत्र तब पूंछता, कर्णपुत्रके नां

कह वृषकेतु कर्ण मम ताता। कश्यप कुल
वृषवर नाम हमारो अहई। सुनिकै वात
वन्धुछन्द मुनि गोत्र हमारा। नाम सुधन्वा
दोउ वीरन तो रण प्रण ठाना। क्रोधवन्त
नृपति पुत्रके मारे वाना। सारथि रथ स
मूर्छा पाय चणकमहं जागे। वाणन वृष्टि

दूसर रथ सारथि लिये, पुनि आये
कर्णपुत्र तब चढ़यो रथ, सुमिरि कृ

कर्णपुत्र बहु जय रण लीन्हा। विपुल वीर
हना सुधन्वा वाण रिसाई। कर्णपुत्रको मू
कर्णपुत्र रण मूर्च्छित जाना। तब प्रद्युम
तुरतहि काम पञ्च शर मारे। सारथि हय
विशिख लग्यो तब खसे तुरङ्गा। जोती
यह देखतहि सुधन्व रिसाना। क्रोधवन्त

दोनों वीर भिड़े रण करणी । कबहूं गगन कबहुं कै धरणी ॥
गदा गदाते छत बहु लागे । मूर्च्छे दोउ कुंवर तब जागे ॥

कामदेव मूर्च्छित रहे, कुंवर रथहि चढ़ि जाय ।
साहस चोहिणि सैन्य दल, मारत कुंवर रिसाय ।

दीख तबै कृतवर्मा धाये । तुरत कुंवरपर बाण चलाये ॥
राजपुत्र बाणनते मारा । और बाण अश्वहि संहारा ॥
एक बाणते सारथि मारा । रणमहं गर्जै राजकुमारा ॥
तब कृतवर्मा साजि सिधाये । देखतहीं अनुशल्यहु धाये ॥
तीक्ष्ण राज बाण विस्तारा । सो अनुशल्य कुंवर पर डारा ॥
मूर्च्छित कुंवर परे रण माहीं । बहुतै दल मारे गै ताहीं ॥
हाहाकार करत सब भागे । राजपुत्र यहि अन्तर जागे ॥
क्रोधित कुंवर बाण तब मारा । मूर्च्छा भइ अनुशल्य भुवारा ॥

क्रोधवन्त ह्वै राजसुत, मारे बाण अपार ।
हय गज रथ पैदल कटे, पारथ दल संहार ॥

पारथ दल तब भागन लागा । ताक्षण वीर सात्यकी जागा ॥
विपरित बाण क्रोध करि छांटे । पञ्च बाणते धनु गुन काटे ॥
दोनों वीर लड़त मैदाना । दोनों मानहुं देव समाना ॥
रक्त भिजे जनु टेसू फूले । देखत रूप वीर सब भूले ॥
शेल चक्र कुंवरहि धै मारा । मूर्च्छे सात्यकि रणहिं मंझारा ॥
मूर्च्छे सात्यकि सब दल भागे । तब अर्ज्जुन रथ हांक्यो आगे ॥
कहा टेरि सुनु राजकुमारा । मोर नाम अर्ज्जुन धनुधारा ॥

भीषम द्रोण कर्ण संहारा। वड़ वड़ वीर औ
कुंवर कहा पारथ जगतारण। सब रथ जि

हरिसे सारथि साजिकै, आये हो रण
ताते भाषत पार्थ यह, जीति तुम्हार

तुमहि जीति हौं लैकरि काजा। करि हैं य
सुनि पारथ तब बाण चलाये। दशहो बाण
काटयो बाण कुंवर भयो क्रोधा। राजकुम
बरषै बाण सके का भाषन। सौते सहस स
पारथ पावक बाण चलाये। कुँवरके दलव
वरुण बाण कुंवर तब मारा। अग्नि बुझी ब
वर्षाको जनु उपमा पाये। पवन बाण तब
जल गयो सूखि उड़न दल लागा। राजहिं
तीस बाण क्रोधित ह्वै छाटे। ध्वज पताक
कह्यो कुंवर अब पारथ कहिये। सारथि

हरि सारथिको सुमिरहो, जो चाहै
नातरु बाम विधाता, अन्तकाल तव

पारथ सुनिकै जीतो गहेउ। रणदल मांझ
महाकष्ट आयो परमाना। पारथ तब सुमिर
सुमिरतहीं तुर्तहि हरि आये। जीतो गहे प

अस्तुति करिकै शारँग गहेउ । वचन एक पारथ तब कहेउ ॥
कृष्ण समान पाय हौं सारथ । आज देखि हौं तुव पुरुषारथ ॥
पार्थ कहो शर तीन हमारा । ताते करब तोहिं संहारा ॥
कुंवर कह्यो तीनहुँ शर कटिहौं । खण्ड खण्ड करि मस्तक बटिहौं
कह्यो पार्थ जो तोहि न मारौं । अपने पितृ नरकमहँ डारौं ॥
इतना सुनि द्वै वीर रिसाने । क्रोधवन्त ह्वै शारँग ताने ॥

कुंवर कह्यो शर तोर मैं, जो न हतौं सुनु बात ।
तौ मम वास अधोगति, कुंवर कहे सख्यात ॥

राजपुत्र तब बाण चलाये । हरि समेत रथ माहिं बचाये ॥
हाथ मारि सो पाछे गयउ । पारथते हरि बोलत भयउ ॥
तव पुरुषारथ देखौं पारथ । वध परतिज्ञा कीन्ह अकारथ ॥
एक नारि कुंवरक व्रत आहै । ऐसी बात कौन निर्वाहै ॥
हम तुमते यह व्रत नहिं होई । कौन पुण्यते मारब सोई ॥
राजकुमार बाण तब छाटे । हय गज रथ पैदल तब काटे ॥
कह्यो कुंवर गोवर्द्धन धरेउ । गाय गोपको रच्छा करेउ ॥
पारथको अब राखौ हरी । सुनत क्रोध पारथ तनु जरी ॥
एक बाण पारथ कर लीन्हा । तामहँ पुण्य जगतपति दीन्हा ॥
गोवर्द्धन धरि जो फल भयउ । सोइ पुण्य हरि शरको दयउ ॥

धाये देखन देव सब, रहत काहि प्रण आज ।
दोउ वीर हैं भक्त हरि, काह करी ब्रजराज ॥

मारे पारथ बाण तुरन्तहिं। कुंवर बात यह कह भगवन्तहिं ॥
जो नहिं शर कटिहै तौ पापू। यह कहि बाण चलाये आपू ॥
अर्द्धचन्द्र तब बाणन मारा। पारथको शर काटि पवाँरा ॥
अचरज सबै देवतन माना। तब पारथ लिय दूसर बाना ॥
रामऽवतार पुणय जो कीन्हा। सो सब पुणय बाणको दीन्हा ॥
पारथ बाण करै सन्धाना। कुँवर कहै सुनिये भगवाना ॥
पुणय तोहारे पारथ बाना। मैं शण काटे तृणहि समाना ॥
परनारी ते जो रति भाओ। बिन काटे सो पातक पाओ ॥
पारथ बाण तजे जो भारी। करु सन्धान कुँवर धनुधारी ॥
ऐसे बाण क्रोधकरि छाटे। पारथ काहि वोहु शर काटे ॥

शङ्खध्वनि तब कुंवर करि, देवन अचरज पाय।
पारथ शर हरि सैन्य सब, काटे तृण सम भाय ॥

कह श्रीकृष्ण पार्थ सुनि लीजे। रहो युद्ध शङ्खध्वनि कीजे ॥
हरिपारथ तब शङ्ख बजाये। पाछे श्रीपति कह मन लाये ॥
लेहु बाण सुनु बात हमारा। यही बाण वध होय कुमारा ॥
पारथ बाण हाथ लै लीन्हे। मध्यकाल वधि पश्चिम दीन्हे ॥
श्रीपतिशर मन्त्रावलि कीन्हे। सोइ बाण श्रीपति करदीन्हे ॥
फरपर आप चले भगवाना। पारथ सो शर करु संधाना ॥
कुँवर कहै जाने जगतारन। फर पर बैठि कै आवत मारन ॥
मेरो प्रण सुनिये प्रभु सोई। हरि हर नाम भेद कछु होई ॥

जो नहिं यह शर काटि गिरायो । तौ यह पाप जगत महँ पायो
पारथ मारि क्रोधित बाना । तीन लोक शर देखि सकाना ॥

क्कुँवर तेज तब बाणको, मारि मांझ शर माहिं ।
काटयो बाण सुपार्थ को, रच्च काल जेहि आहि ॥

सबै देवतन अचरज माना । पंख सहित आधा उड़ि आना ॥
आधा बाण लग्यो तब जाई । राज पुत्र शिर काटि गिराई ॥
जूझ क्कुँवर जगत यश पायो । हरिके चरण शीश उड़ि आयो ॥
कृष्णहि कृष्ण जपत शिर रहई । धाय कबंध अस्त्र कर गहई ॥
शीशहि गहे हँसत भगवाना । पारथ शर कीन्हा संधाना ॥
श्रीपति शीश हाथ में लीन्हा । राजाके रथ डारि सो दीन्हा ॥
तब हंसध्वज शिर लै हाथा । रोदन करत ठोंकि कै माथा ॥
बहु विलाप तो कर भुआरा । ताको नहिं कीन्हा विस्तारा ॥
तब राजा शिर चुम्बन कीन्हा । प्रभुके रथहिं डारि सो दीन्हा ॥

हर्षित ह्वै हरि शीश गहि, दीन्हो गगन चलाय ।
तहँ शिव शङ्कर पाय शिर, मालामुण्ड बनाय ॥

दूसर पुत्र सुरथ है नामा । पितुके सन्मुख कीन्ह प्रणामा ॥
तात शोक वारन अब कीजै । हमैं युद्धको आज्ञा दीजै ॥
पितुको आज्ञा हर्षित पाये । रथपर चढ़ि रण हेतु सिधाये ॥
शंखध्वनि करि धनुष टँकोरा । मानहु प्रलय गाज घनघोरा ॥
अब कत जैहौ पारथ बीरा । मेरो बन्धु मारि रणधीरा ॥
हरी पुराण द्वन्द्व जन्मको दीन्हा । मेरो बन्धु तबहिं वध कीन्हा ॥

यहि प्रकार सब कहा सुनाई। पारथपाहिं कह्यो यदुराई ॥
बन्धु शोकते व्याकुल आओ। अब यासों नहिं जीतन पाओ ॥
पारथ कह्यो कौन रणधीरा। सहसन वधे एक दिन वीरा ॥
आप सहाय जगतके नायक। सुरथ कहा मम जीतन लायक ॥

कृष्ण कहा पारथ सुनो, सुरथ शूर सतवन्त।
ताते प्रदुमन आदि ले, लड़हु कहा भगवन्त ॥

सब वीरन मिलि कुंवरहि घेरा। मारु मारु कहि सबहिन टेरा॥
पारथके पाछे यदुराई। आगे वीर घनेरे जाई ॥
योजन त्रय पाछे हरि आये। आगे वीरन गे अटकाये ॥
सुरथ कह्यो पारथ है काहा। सुने वीर हांके रणमाहा ॥
हम सन रण जो करिये आछो। हरि पारथको पूछो पाछो ॥
सुनतहि सुरथ क्रोध तब पाये। वीरन ऊपर बाण चलाये ॥
ऐसे बाण क्रोध करि मारै। पैदल रथ अरु अश्व सँहारै ॥
बाणमई जूझे रणमाहा। सबको मोहित कीन्हो ताहा ॥
सबै जीति गयो पारथ पहा। रहु रहु हांक मारि कै कहा ॥
क्रोधित मारे बाण हजारा। ध्वज अरु छत्र काटि महि डारा ॥

पारथ मारे बाण सो, काटे राजकुमार।
लागे बर्षन बाण तब, मानहु सावन धार ॥

पारथ पर अवसर नहिं पावै। ऐसो सुरथ बाण झरि लावै ॥
तब पारथसों भाख्यो यदुपति। देखो रथी सुरथकी यह गति ॥
बन्धुशोक तेहि मारन चहई। इतना सुनि तब पारथ कहई ॥

मारयो पार्थ सुरथ रथ बाना । धसि गयो रथ पाताल समाना ॥
मारयो सुरथ पार्थ रथ बाना । लगत बाण रथ स्वर्ग उड़ाना ॥
तब श्रीपति औरौ हनुमाना । राखे रथ सम्भारि प्रमाना ॥
पारथ बाण क्रोध करि छोड़े । मारे रथके चारहु घोड़े ॥
काटे सारथि छत्र निदाना । कुँवरहि कह्यो पाय मैदाना ॥
मैं मारयो पारथ रथ बाना । राख्यो हरिहि और हनुमाना ॥

कुँवर बाण फिरि मारेऊ, रथ पारथके माह ।
औ भाष्यो कहु पारथ, अब रथ डारौं काह ॥

सुनतहि पार्थ पञ्च शर मारा । मूर्च्छित भो तब राजकुमारा ॥
क्षणक एकमहँ चेतन पाये । चढ़ि रथ शर शोणित लपटाये ॥
अर्द्धचन्द्र औ कर्ण वराहा । तब प्रणाम करि पारथ काहा ॥
जो नहि रथते तोहि गिराओं । तौ मैं वास अधोगति पाओं ॥
यह कहि पार्थ क्रोध शर छांटे । ध्वजा पताक सुरथके काटे ॥
मारेउ सुरथ जु बाण तुरन्ता । काटे ध्वजा दण्ड बलवन्ता ॥
क्रोधवन्त पारथ शर छाटे । रथ रथवान पताका काटे ॥
तबहि सुरथ क्रोधानल जरेउ । लेकर गदा प्रार्थसे लरेउ ॥
दुइ सहस्र तबहीं रथ मारा । एक लक्ष मारे असवारा ॥
गज अरु हय बहु पैदर मारा । पारथ दूसर बाण प्रहारा ॥
गदा सहित कर काटिहौं, सुरथहि कहा रिसाय ।
महा मारु मैं करि अहौं, सुनु पारथ मनलाय ॥

तब पार्थ से बांह मिलाये। पारथ मिले हर्ष अति पाये॥
पांच दिवसमें अश्व छुड़ाये। श्रीपति हस्तिनपुरहि सिधाये॥
धर्मराजसों श्रीहरि कहेऊ। सबही राजधर्म कहिदयेऊ॥
अश्व छूट तब पार्थ सिधाये। हंसध्वजको संग लगाये॥

उत्तर दिशि अब अश्व चलु, महाभयानक देश।
महाकुंज कानन विषे, अश्वहि कीन्ह प्रवेश॥

सरवर एक अश्व तब गयऊ। प्रविशत जल अश्विनिसो भयऊ॥
केतिक दूर गयो दुखपागे। सरवर एक और है आगे॥
ताको जल हय कीन्हो पाना। अश्विनिते भयो बाघ प्रमाना॥
सभय अचम्भो पूछहि राऊ। याहि अर्थ मुनि हमैं बताऊ॥
अश्व अश्विनी भो केहिकाजा। व्याघ्र भयो कत पूछै राजा॥
फेरि अश्व ह्वै हैको नाहीं। सुनि मुनि वैशम्पायन काही॥
सतयुग माहिं देवि तप साधे। वहि सर तट शंकर अवराधे॥
शंकर हेतु तबहि मन लावा। असुर एक पापी मति भावा॥
कहे तबै कत करु अज्ञानी। चलो संग करिबे हम रानी॥
सुनत शाप तब देवी दीन्हा। भस्म तुरन्त दैत्यको कीन्हा॥

सर परशै जो पुरुष कोइ, तिया होत परनाम।
यही शापते राजन, अश्विनि अश्व ललाम॥

एक वर्ग मुनि सतयुग रहेउ। दूजे सर अस्नानहि गहेउ॥
करि स्नान ध्यान मन लाये। सरवरको शापित भै पाये॥
यहि सरको जल प्रविशै जोई। निश्चय बाघ सो प्राणी होई॥

वहि सर माहिं अश्व जब गयऊ । बाघरूप ता कारण भयऊ ॥
पारथ मही शोध तो पाये । तबसो हरिको चरण नवाये ॥
तारो पाप सिंधु भगवाना । अश्विनि प्रभु करहू निरमाना ॥
तबहीं दलहि ध्यान मन लयऊ । राजा सुन प्रसन्न मन भयऊ ॥
सगरौ दोष अश्व को गयऊ । श्यामकर्ण आलंकृत भयऊ ॥
हर्षित भे तब चले चलाये । इस्त्रीराज्य सो पहुँचे आये ॥

लियाराजको त्रिया सब, पुरुष नहीं है ताहँ ।
गन्धर्वराज शापदिय, पुरुष न जन्मे चाह ॥

कीन्ह भोग तब गँधरव देखा । महाक्रोध दैत्यन वध लेखा ॥
दैत्यको मारि देश कहँ शापा । पुरुष जन्म पुर होय न पापा ॥
औरो पुरुष भोग मन धरई । गये तीस दिन निश्चय मरई ॥
यहि प्रकार ते शाप रिसाई । तब गन्धर्व स्वर्गपुर जाई ॥
तब ते देश रूप यह भयऊ । श्यामकर्ण हय तहंपर गयऊ ॥
देखत एक त्रिया तह आई । श्यामकर्ण सो हरि लै जाई ॥
धर्मराजको हय यह अहई । पारथ रक्षक नृपते कहई ॥
परिमल नाम रजा इक अली । हँसिकै कहेसि कीन्ह तो भली ॥
लै हयशाला बाँधेउ जाई । साजि त्रिया दल युद्धहि आई ॥

हय गज पैदल रथन चढ़ि, चलीं सबै जो तीय ।
चन्द्राननी कठोर कुच, रूप विधातै दीय ॥

पारथ पाहँ परीमल कहई । अबहूँ आश अश्वकै अहई ॥
आशा तजहु भोग करु आई । युद्ध करै तो कालहि खाई ॥

तबहिं सबै दल मोहित भयऊ । कर्णपुत्र तो सुधि महँ रहऊ ॥
पारथ कह्यो सुनहु हो तिया । तुम्हरेपहँ गये पुरुष न जिया ॥
परिमल कहै काल तव आये । युद्ध माहिं जय को धौं पाये ॥
सतते भोग करो मन लाई । सुखमें करो परम सुख पाई ॥
युद्ध करो जय पैहो नहीं । सुनिक अस्त्र पार्थ तव गही ॥
मोहन वाण हने तब पारथ । हँसी तिया कह भये अकारथ ॥
सुर नर मुनी शंभु उर धरें । देखत हमहि तासु मन हरें ॥
मोहन वाण करहि का मेरो । पारथ आज काल है तेरो ॥

मोहन वाण हमार है, देखत मोहत शंभु ।
मोहन वाण तुम्हार जो, हमको करत अनंभु ॥

नई वैश नवयौवन वारी । मृगनयनी सरोज रतनारी ॥
जब पारथ क्रोधित शर गहेऊ । तब देवन नभ दुन्दुभि महेऊ ॥
यह कहि पञ्चवाण तब मारे । और सहस्रन वाण प्रहारे ॥
तिरिया वधे पाप हो पारथ । प्रीति करो तो होवे स्वारथ ॥
पारथसन तो प्रीति विचारो । परिमल ते जो वचन उचारो ॥
यज्ञहि होत योग मन लइये । लैके दल जो मम द्रुत अइये ॥
नातो पुरी हस्तिना चलिये । फिरव तुरन्त मोहिं प्रतिपलिये ॥
लै धन द्रव्य सैन्य परमाना । पुरी हस्तिना करिय पयाना ॥
छटा अश्व पार्थ तब चलेऊ । चली वीर संग सब भलेऊ ॥

ऐसे तरु देखे सबै, फूले सुरभि प्रमान ।
औ मनुष्य सम फल लगे, अचरज भयो महान ॥

देखत सबहिन अचरज माना । देखत चले अश्व परधाना ॥
एक नैन देखा वँग देशा ! देश विदेश और प्रविदेशा ॥
गजके श्रवण न सम हैं काना । एक देश देखा परमाना ॥
तीनि नैन अरु तीनै नाशा । एक देश ऐसा परकाशा ॥
एक देश नरसिंह स्वरूपा । भोग गन्धरब सुख अनुरूपा ॥
यहि सब देश अश्व तो गयऊ । जीते सबै अश्व तब भयऊ ॥
चलत अश्व आये पुनि तहां । भीषम नाम दैत्य यह जहां ॥
एक चक्रवर्ती पुर आना । तहँको अश्वहिं कीन्ह पयाना ॥
मेदु हाथ दो प्रोहित अहई । सुनो बात यह न्टपतें कहई ॥
अर्ज्जुनादि सब लाय तुरङ्गा । जासु बन्धु तोरा पितु भङ्गा ॥

पिता शत्रु तुव आवत, वधो ताहि महराज ।
रणमें धाओ बाण लै, यज्ञ करो जगसाज ॥

चारि मासके व्रत हम अहई । निराहार है तुमते कहई ॥
मदिरा रक्तासव नहिं खाये । बालक यती भाइ जे पाये ॥
जटा धारि अस्नान अहारा । कार्तिक कन्या भच्छ अपारा ॥
अब तौ वारन कीन्हे चहौं । वधौं पार्थही तातें कहौं ॥
भीषम सुनिकै क्रोधित भयऊ । युद्धहिं हेतु चलन मनदयऊ ॥
कोटिन दललै दैत्य सिधायो । लङ्काको निशिचरि बहु आयो ॥
दैत्यनि एक दीख हनुमाना । भाग भाग सो करै बखाना ॥
वह बन्दरकै जाना भाई । पलमहँ लङ्कापुरी जराई ॥

सुने एक अरु कहे बुझाई । नरके मारे कौन बड़ाई ॥
मानुष मारे रावण राऊ । मै कुचते सब सैन्य गिराऊ ॥

ओरो भाषो एक तो, तोरौं कुच सम बेल ।
कुचको अग्रह मारहू, योजन दूकका मेल ॥

यह कहि स्वर्गमाहँ सो जाई । पारथको दल गो भहराई ॥
बहुते दल तो मारो जाई । दलपर जाय प्रगटतो भाई ॥
लेकर दल तो आगे आये । पारथ पाहँ कहे समुझाये ॥
तोको हतिक भौम सँहारौं । पिता वैर लै यज्ञ सँवारौं ॥
यह कहि बाण वृष्टि करलाये । वृक्ष पहाड़ अनेक चलाये ॥
लखबाण तब पारथ मारा । पर्वत वृक्ष अस्त्र भो छारा ॥
वह दैत्यनी बड़ो दुख दीन्हा । पारथ वीर बाण तब लीन्हा ॥
मारे रथ पैदल असवारा । दैत्यन दल तो बहु संहारा ॥
प्राणहिं अन्त भयउ जब जाना । तब राक्षस माया निर्माना ॥

बाघ सिंह औ गऊ सम, सैना भयो प्रमान ।
भीषम वह अचरज भयो, तपा रूप परवान ॥

माया ते पारथ तब कहेऊ । येह दैत्य दुखदाई अहऊ ॥
पारथ तो माया सब जाना । तुर्तहिं वधे ताहि परमाना ॥
छूटे प्राण दैत्य तब गयऊ । महाहर्ष पारथको भयऊ ॥
सब सेना को पल महं मारा । जीते रणमहं पाण्डुकुमारा ॥
मार दैत्य जब सब हर्षाना । पारथ रथ बैठे हनुमाना ॥
चले अश्व तो किये पयाना । पारथके सँग दल बहुनाना ॥

यौवनाश्व नीलध्वज राऊ । हंसध्वज वृषकेतु सिधाऊ ॥
मेघ वर्ण आहे अनुशाला । कामदेव अरु सुत गोपाला ॥
चले अश्वके पाछे जाय । अश्वचला तौ तेज पराय ॥
चले अश्व तब आये तहां । मणिपुर नाम ग्राम इक जहां ॥

सत्यशन्त सब क्षत्रिगण, एक नारि व्रत वेश ।
सब राजा कर देत हैं, अर्ज्जुन पुत्र नरेश ॥
पर उपमा नहिं जातकहि, जनु कैलास समान ।
ऐसी शोभा देखि तहँ, पुर इन्द्रासन जान ॥

इति सप्तम अध्याय ॥ ७ ॥

वैशम्पायन करै बखाना । पुर उपमा नहिं जातबखाना ॥
पारथ संग बीर जो रहई । बड़े बलीहैं सब मिलि कहई ॥
अश्व छुड़ावत कष्ट प्रमाना । तत्क्षण देखे मृत्यु निशाना ॥
गीध उड़ैं पारथ शिर लागे । सबहिं देखि तौ संशय पागे ॥
नगर लोग अश्वहि तब देखा । गौ राजा ते कहैं विशेखा ॥
सुनतहि राजा वीर पठाये । श्यामकर्णको तुर्त मगाये ॥
कञ्चन पत्र शीर पर रहेऊ । पठये राव जान सब अहेऊ ॥
तब राजा मन्त्री सन कहेउ । धर्म्मराजको हय यह अहेउ ॥
पारथ ताको रक्षक आही । मेरे पितु अस राजा काही ॥
ताते मन्त्री कहै विचारी । कौनो बुद्धि करौं अब भारी ॥

तात भङ्ग मम तात करु, श्रापे तो कह तात ।
ग्राह भई ता कारणे, पारथ अति सकुचात ॥
पारथको स्पर्श जब लीन्हा । ऐसे लिया व्याह तौ कीन्हा ॥
छांड़ि गये होते जो ताता । अब हम भेट करब सख्याता ॥
करि मन प्रेम सुबुद्धि बिचारा । आने अश्व कौन परकारा ॥
मन्त्री कहै अश्व लै मिलो । राजा कहै मन्त्र यह भलो ॥
तब राजा बहु साज बनाये । नाना द्रव्य अनेक मँगाये ॥
नाना राग रङ्ग तब ठाना । श्यामकर्ण लै किये पयाना ॥
गजते उतरि राव तब गयऊ । पारथ चरण माथ तब दयऊ ॥
म अब पुत्र तोहार प्रमाना । चित्रांगदा गर्भ निर्माना ॥
सम्पति राज्य लेहु अब ताता । कीजै कृपा जन्मकर दाता ॥
पारथके दलका सरदारा । सब पारथ सों कहै सुसारा ॥
पारथ मिलो न पुत्रते, देखौ सुतकर देश ।
शीश चरण दै मुनि रहै, मणिपुर मती नरेश ॥
पारथ उपजो क्रोध अपारा । नृपके हृदय लात इक मारा ॥
भाषत तोहि लाज नहिं आवै । वैश्य गती मम पुत्र कहावै ॥
मोसे जन्म तोर नहिं अहई । मेरो सुत ऐसे नहिं कहई ॥
सुत अभिमनुग्रहि जानु हमारा । चक्रव्यूह इकला संहारा ॥
नाच गान गन्धर्वको काजा । राजा भै तुहि नेकु न लाजा ॥
अश्वहि गहे सर्व मन लाये । भय आतुर तब देखन पाये ॥
युद्ध न भो तोहि मरणन लागे । देखत भय आतुरते पागे ॥

बभ्रुवाहन सुनत रिसाना । क्रोधवन्त ह्वै वचन बखाना ॥
और सही सब जो तुम कही । एक बात तौ जात न सही ॥
कहेउ वैश्य सुत मोकहँ मारी । तौ मम मातु भई व्यभिचारी ॥
अबतौ अश्व न देब हम, सुनु पारथ यह बैन ।
वैश्यनते हय लेउ अब, देखौं चत्री नैन ॥
यह कहि अश्व बांधि लै गयऊ । तब रण हेतु युद्ध मन दयऊ ॥
न्टपको दल निकरो अति भारी । आगे भये वीर धनुधारी ॥
अश्वहिं राखि गेह न्टप आये । महाक्रोध युद्धहि मन लाये ॥
तात जानि अश्वहि मैं दयऊ । महा गर्वते गारी दयऊ ॥
अब आवत हौं युद्ध हि करेऊ । सुनत क्रोध अनुशल्या जरेऊ ॥
नऊ बाण अनुशल्या मारे । क्रोध बभ्रवाहन उरधारे ॥
धनुष सँभारा सौ शर छांटे । तीनि बाण ते इन्ह दल काटे ॥
तब राजहिं भो क्रोध अपारा । लगे बाण वर्षन जलधारा ॥
भीजे रक्त दोऊ सरदारा । ऋतु वसन्त टेसू परकारा ॥
चारि बाण राजा तब मारे । रुण्ड मुण्ड महि परे विकारे ॥
पांच बाणते सारथी, काटे ध्वजा निसान ।
हाथ धनुष तब कटपरो, अनुशल लागे बान ॥
भयो क्रुद्ध अनुशल्य भुआरा । और रथहिं भये असवारा ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये । रथ समेत ते काम बहाये ॥
शर सारंग करै सन्धाना । मारे राव सहस इक बाना ॥
तबहिं गदा लै राजा धाये । जाय जाय अनुशल्वहु लाये ॥

तापाछे नौ बाणहि मारा । मूर्च्छा भो अनुशाल्व भुआरा ॥
सारथि लेक तुरतहिं आये । पाछे कामदेव तब धाये ॥
रहरहु करिके शर दश छाटे । अयुत शरनते राजहिं काटे ॥
दोनहुं वीर लगे शर मारन । सौते सहस हजार हजारन ॥
अश्वरु गज रथ पैदल जूझे । बाणन विना और नहिं सूझे ॥
रुण्ड मुण्ड तब भे वहुताई । रक्त नदी तहं वहु बढ़िआई ॥
नदी तरङ्ग वहत है भारी । योगिनि सब तौ करैं धमारी ॥

कामदेवने रण कियो, रक्त वहायो खेत ।
रुण्ड मुण्ड मय मेदिनी, नाचहिं योगिनि प्रेत ॥

जबहिं काम ऐसे शर ठाना । तौ मणिपुर पति क्रोध रिसाना ॥
क्रोधित ऐसे बाण चलाये । रथ सकेत तौ काम छुपाये ॥
कामहि तन सब झंझार भयऊ । ऐसौ मार कामको दयऊ ॥
दोनों वीर तजे क्रोधितशर । होन लगी अति मार परस्पर ॥
राजा मारेउ बाण रिसाई । मोहित कामदेव भे आई ॥
सांग गदा तब लेकर छाटे । तीन बाण ते गद नृप काटे ॥
दोनों शर मारहिं रिसिआई । तब दोनों मूर्च्छित भे जाई ॥
क्रोधित राजा मारेउ वाना । मूर्च्छित भयो काम मैदाना ॥
मूर्छित काम वहुत दल मारे । रुण्ड मुण्ड महि परे विकारे ॥
विकट कबन्ध रूप तब धाव । योगिनि गण तो मङ्गल गावें ॥

हाथ चरण शिर कहुँ परे, कहूं रुण्ड कहुँ मुण्ड ।
नाना अस्त्र सुहाय महँ, मारत धावत रुण्ड ॥

वीर अनेकन पारथनन्दन । पारथको दल कियो निकन्दन ॥
तब अनुशल्व चेल भो धाये । प्रद्युम्न चेतत आगे आये ॥
हंसध्वज नीलध्वज राई । यौवनाश्वको सैन सिधाई ॥
मेघवर्ण आदिक सरदारा । वह अकेल मणिपुरी भुआरा ॥
सबै वीर मिलि शर तो छाटे । पारथ पुत्र सबै शर काटे ॥
जूझे वीर खेत तों लाखन । महा मारु भै सकि को भाषन ॥
सुर तुरङ्ग जूझो नहि परेऊ । कायर प्राण प्रथमता हरेऊ ॥
लडि लड़ि शूर तजे तब प्राना । गये अमरपुर बैठि विमाना ॥
सुरकन्या सङ्ग रम सुख पाये । अपनी देह अवनि दिखराये ॥
कुञ्जर अश्व पदातिक नाना । जूझे बहुत न जाय बखाना ॥

जैसे लवकुश रामते, मारु भई विपरीति ।
पारथ सुत अरु पार्थं ते, युद्ध होत यहि रीति ॥

राम कथा सब मुनि तब कहेऊ । जैसे रण तहँ होते भयेऊ ॥
पारथ नन्दन बाण प्रहारा । मूर्छित भो अनुशल्य भुआरा ॥
औरो बाण कामको लागे । मूर्च्छित भये नेकु नहि जागे ॥
नीलध्वज मूर्च्छित मैदाना । यौवनाश्व लीन्हे तब बाना ॥
क्रोधवन्त तब बाणन छाटे । पारथ पुत्र मांझ तो काटे ॥
पारथसुत तब मारे बाना । यौवनाश्व मूर्च्छित मैदाना ॥
तब सुवेग अमरष भरि धाये । मणिपुर पतिपर बाण चलाये ॥
मध्यबाण तब राजा काटे । बाण सुवेग और तब छाटे

मूर्च्छित भये मणीपुर राऊ । पलकमाहँ चेतन तव पाऊ ॥
चेत भये तव मारेउ वाना । तव सुवेग मूर्च्छित मैदाना ॥
मेघवर्ण तव धायऊ, कर लै शारँग वान ।
महायुद्ध तव लागेऊ, राजा सुनहु वखान ॥
मेघवर्ण पुरुषारथ करेऊ । दल अनेक खेतनमहँ परेऊ ॥
जवहिं मणीपति मारेउ वाना । मेघवर्ण मूर्च्छित मदाना ॥
मेघवर्ण मूर्च्छा जव पाये । तव हंसध्वज राजा धाये ॥
रहु रहु करि मारे तव वाना । मणिपतिको छाये मैदाना ॥
ऐसे शर तव राजा मारे । रथ सारथि पैदल संहारे ॥
हंसध्वज कीन्हो प्रभुताई । पांच चोहिणी मारि गिराई ॥
क्रोधित भये मणीपुर राऊ । हंसध्वजपर वाण चलाऊ ॥
रथ सारथी सुकीन्ह निदाना । हंसध्वज मूर्च्छित मैदाना ॥
जेते वीर सवे वध भयऊ । वृषकेतूसों पारथ कहेऊ ॥
जैसे पुत्र हस्तिना देशहि । कहो जाय सुधि धर्म्मनरेशहि ॥
कहो जाय वृत्तान्त सव, अग्र राधिकारौन ।
जो तुम जूझे रण विषे, कहै जाय सुधि कौन ॥
तुम जूझे कुन्ती दुख पैहै । हमहिं शाप दै प्राण गँवैहै ॥
जव पारथ यह कहे वखानी । तव देखा है मृत्यु निशानी ॥
पारथ उपर गृद्ध उड़ि आये । रुण्ड छांह लखि पारथ पाये ॥
कर्णपुत्र तुम शीघ्र सिधाओ । यह सव कष्ट जाय समझाओ ॥
मोरे वल नृप यज्ञ कराई । मोपर काल आय नियराई ॥

देखन यज्ञ नयन नहिं पाये। यह बड़ शोच मोर मन आये ॥
दण्ड सहस्र छत्र जेहि लागे। सोइ चला राजाके आगे ॥
यज्ञ माहँ दीन्हा नहिं दाना। नृप ने कीन्ह शेष अस्थाना ॥
गङ्गा जल नहिं रानी भरेऊ। यही शोच मोरे जिय धरेऊ ॥
जाहु तुरन्त कर्णके नन्दन। कहौ जायके जहँ जगवन्दन ॥

कर्णपुत्र तब अस कह्यो, जो रण तजि हम जाहिं।
मम प्रपितामह स्वर्ग ते, टूटि परें भुवि माहिं ॥

रहै सुयश सब यहि संसारा। यहि ते भल जो मृत्यु विचारा ॥
ताको जन्म सफल है पारथ। जो तन धन देवहि परस्वारथ ॥
तन धन निष्फल ताको गयऊ। पर उपकार विमुख जो भयऊ ॥
जीतैं यज्ञ बड़ाई पावें। जूझैं स्वर्ग लोकको जावें ॥
उत्तम देह पार्थ परमाना। मणिपुर नृप है तृणहि समाना ॥
बहु प्रकार पारथ समझायो। कर्णपुत्र के हृदय न आयो ॥
शारँगबाण हाथ करि लीन्हा। रथ चढ़ि तबहिं हांक तो दीन्हा
और वीर सम हमैं न जानो। अब हमते रण तुमहीं ठानो ॥
यह कहि तीन बाण फटकारा। लगे मणिपती गात भुआरा ॥

तब सँभारि मणिपुर पती, मारे बाण प्रचण्ड।
सहित अश्वके सारथी, काटि किये नौ खण्ड ॥

कर्णपुत्र क्रोधहि तब पाये। एक लक्ष तब बाण चलाये ॥
रथ सारथि काटे पल माहा। दोनों वीर बड़े बल बाहा ॥
पारथपुत्र कहे तब बैना। तो सम वीर न देख्यों नैना ॥

कर्णपुत्र शर ऐसे मारा । पर्वत पवन छाय अँधियारा ॥
रवि कुवेर औ यमके बाना । ते सब कुँवर करें सन्धाना ॥
लेकर शंभु बाण तब अस्त्रहि । ताते हते पताका छत्रहि ॥
मणिपुर-नृपति हने अस बाना । कर्णपुत्र नभ कियो पयाना ॥
रविमण्डल में पल इक रहेऊ । पितु प्रपिताके दर्शन भयेऊ ॥
तबहिं वीर बसुधापर आवा । पारथ सुत तब वचन सुनावा ॥

विनतासुत जिमि इन्द्र-बध, तैसे हति तुव प्रान ।
सुनत क्रोध भो कर्णसुत, मारे राजहिं बान ॥

तब मणिपुरपति स्वर्गहि गयऊ । सूर्य्य तेज महं छिपि सो रहेऊ
वहँ ते जब हीं कीन्ह पयाना । तो सम वीर न देख्यो आना ॥
तब फिरि गये सूर्य्यके पाहा । अङ्ग अङ्ग जर जर नरनाहा ॥
पुत्र सुपुत्र कहे रिसि आई । हंसध्वजको वधि प्रभुताई ॥
ताते स्वर्ग देखायो तोहीं । अजहूं वीर न चीन्ह्यो मोहीं ॥
मणिपुर पति तब बसुधा आये । वृषकेतूपर बाण चलाये ॥
कर्णपुत्र स्वर्गहि महं गयऊ । पाछे प्रगट भूमि महँ भयऊ ॥
कबहुं अकाश कबहुं धर धरणी । पार्थ ठाढ़ देखत रण करणी
बाण लगे तनु मांस उड़ाये । अन्तरिक्षमहं पक्षी खाये ॥
पांच दिवसलौं तब रण कीन्हा । रैनि दिवस सांसहु नहिं लीन्हा

मारे बाणजु क्रोधकर, मणिपुरपती नरेश ।
काटि शीश वृषकेतु कर, भये युद्ध कर शेष ॥

उठी कबन्ध अस्त्र तो धरेऊ। शिर पारथके रथपर परेऊ॥
हय रथ पैदल रुण्ड सम्भारे। देखा पार्थ रुदन सञ्चारे॥
हाहा कर्णपुत्र धनुधारी। सुन्दर मुख बलिजाउं तुम्हारी॥
कुन्ती नृप भाई यदुराई। इन सब ते का कहिहौं जाई॥
बहु प्रकारते रोदन करही। विविध भांति विलाप सञ्चरही॥
हा हरि सारथि कीन्ह हमारा। आवत को नहिं दोष तुम्हारा॥
कर्णपुत्रका वदन निहारी। मोहित भये पार्थ धनुधारी॥
शीश गोद लै मुर्छे पारथ। रसना रटै श्रीपती सारथ॥
देखे मूर्छित पारथ आई। बभ्रुवाहन परम सुख पाई॥

मूर्छित जाने तातकहं, धनुषहि अग्र उठाय।
कछुक वचन कहि मणिपती, भाषत कटुक सुभाय॥
सुनिये राजा श्रवण दे, ताको करौं बखान।
शोच किये का काम है, गहो धनुष कर बान॥

इति अष्टम अध्याय॥ ८॥

वैशम्पायन करैं बखाना। पारथ पुत्र कहेउ परमाना॥
सुत वैश्यनको तब तुम कहेऊ। ता कारणते प्रण हम गहेऊ॥
सूझि परत नहिं क्षत्रिय कोई। वैशम्पायन हय ले सोई॥
एते दलमहं वीर न ऐसे। कर्णपुत्र कहं देख्यों जैसे॥
तुम क्षत्री हम वैश्य सख्याता। करौ युद्ध ऐसी कहि बाता॥

यह सुनि कर तब पारथ जागे। महा खंभार क्रोधमें पागे॥
बाण धनुष तब कर में लीन्हा। क्रोधित ह्वै रथचढ़ि शुभकीन्हा॥
करिके क्रोध कहा यहपाहां। रे मणिपुरपति जैहै काहां॥
मेरो दल तुमने सब मारा। तोहिं वधौं अब पाण्डुकुमारा॥
औरो बहुत बात कहि आये। बाण वृष्टि तो पारथ लाये॥

क्रोधित पारथ वीर तब, बाण वृष्टि झरि लाय।
रथ गज हय पैदल घने, त्रासित सब भहराय॥

कृतवर्माको उत्तम साथी। अश्वत्थामा नामा हाथी॥
भीम उपर कुञ्जर जब धायो। वीचहि अर्जुन मारि गिरायो॥
प्रलय काल महं शङ्कर जैसे। पारथ अस्त्र प्रहारत तैसे॥
पारथ बाण करै सन्धानहि। देखे कोइ न मर्महि जानहि॥
छूटत बाण न देखे पायो। तब देख्यो जब मारि गिरायो॥
मणिपुरपति तब विचले जाई। पारथ लगे कोटमहँ आई॥
बाण चावते गढ तब तोरे। शरके घाव कँगूरा फोरे॥
नगर नारि नर रानी भागी। भर ते पावक पुरमें लागी॥
जबहीं पारथ किय प्रभुताई। क्रोध भये मणिपुरके राई॥
मारे बाण मणीपुर राऊ। चारों हयके लागो घाऊ॥
तीनि बाण पारथ को मारे। एक बाण ते छत्र सँहारे॥
मान बाण मुर्च्छे तब वीरा। बेरथ भये पार्थ रणधीरा॥

तब दोऊ जन भूमिमहँ, युद्ध करत विपरीत।
महामारु को कहि सकै, देखत सब भय भीत॥

पारथने जेते शर छाटे । मणिपुरपति तुरतहि सब काटे ॥
तब बभ्रूवाहन रण कीन्हा । अस्त्र अनेक जु देवन दीन्हा ॥
द्रोण आदि जो अस्त्र सिखाये । सारथि भे हरि सदा बचाये ॥
सो सब अस्त्र होत हैं कैसे । कृपिणीके घर भिक्षुक जैसे ॥
मम माता है सती प्रमाना । ताको दोष दीन्ह अज्ञाना ॥
साधुहिं दोष दीन्ह अज्ञाना । निश्चल होत ताहिको बाना ॥
यह अपराध बूझ दै गारी । अजहूं सुधि नहिं लीन्ह तुम्हारी ॥
सुमिरि बोलावहु श्रीभगवाना । तब लगि हम नहिं मारहिंबाना॥
सुनि पारथ क्रोधित शर मारा । मणिपति घायल भये अपारा ॥
तब बभ्रूवाहन शर मारा । बाणनते ह्वै गो अँधियारा ॥

प्रबल बाण तब मारेऊ, मणिपुरपती भुआर ।
पारथ तब मोहित भयो, भूले घात प्रहार ॥

कोपि पार्थ तब बाण चलाये । पै नहिं सकहिं पुत्र बिचलाये ॥
गङ्गा शाप तुलानेउ आई । बिसरा बल औ बुद्धि नशाई ॥
क्रोधवन्त मणिपुरके नाथा । लीन्हे अर्द्धचन्द्र शर हाथा ॥
गङ्ग बैर लै ज्वाला रानी । अर्द्धचन्द्र शर आप समानी ॥
उहै बाण लै धनु सन्धाना । तेज मनो द्वादशहू भाना ॥
देखत शर पारथ अकुलाना । लक्षबाण बहु किय संधाना ॥
पावक बाण लगे तब झारन । पै वह बाण लगै नहिं टारन ॥
लाग्यो बाण कण्ठमह आई । तजे कबन्ध शीश उड़ि जाई ॥

कार्त्तिक शुदि एकादशी, उत्तरा मङ्गलवार।
सांझ समय जूझे जहां, पारथ पाण्डुकुमार॥
पारथ वध राजा तव धाये। शङ्खध्वनि करि हर्षमनाये॥
हर्षवन्त वहु वाजन वाजैं। वन्दीजन तव अस्तुति साजैं॥
नगर माहिं तव भूपति चलेऊ। नाना शकुन होत सव भलेऊ॥
तव अन्तःपुरको शुभ कीन्हा। रानी उतरि आरती लीन्हा॥
राजा सुनि तव आनँद मानो। जीते सुत वहु हर्ष वखानो॥
दासी एक जाय कहि तहां। चित्राङ्गदा उलूपी जहां॥
महावीर है पुत्र तुम्हारा। पारथको कीन्हा संहारा॥
सुनत दोउ मूर्छित भुविपरी। दासी सव तव विस्मय करी॥
राजा पाहिं कहा तव जाई। माता दोउ मूर्छा खाई॥
सुनतहिं राजा अचरज पाये। देखन मातुहिं तुर्त सिधाये॥

कोइ चन्दन कोइ पवन करि, हाहा करत पुकार।
अस देखा दोउ मातुकहं, मणिपुरपती भुआर॥
अलङ्कार विन विधवा जैसे। मातुहिं जाय दीख नृप तैसे॥
माताकहं तव भूप उठाये। औरो वचन कहे मन लाये॥
हर्ष माहिं दुख भो का जाना। माता हमसों कहौ वखाना॥
मेरो सुयश सुनो अस माता। पारथ कहं मारे सख्याता॥
हंसध्वज नीलध्वज राजा। यौवनाश्व प्रद्युमन रण गाजा॥
अनुशल्या रणधीर जुझारा। और महावल कर्णकुमारा॥
अलङ्कार पहिरो हे माता। देखत हैं अव मङ्गलदाता॥

सुनत वचन माता तब कहई । हे सुत तू पापी बड़ अहई ॥
पारथ कन्त हमारो अहई । मेरो सुत ह्वै पापहि कहई ॥

मेरो भूषण सकल तुव, ताहि उतारेउ आज ।
अब भूषण पहिरावतो, नेक न आवे लाज ॥

यज्ञनाशि धर्म्महिं दुख दीन्हे । कुन्तीकहँ पारथ बिन कीन्हे ॥
युद्ध समय पूंछेउ नहिं मोहीं । पापी पापबुद्धि भई तोहीं ॥
हम अब कन्तहि संग सिधावें । रे पापी मोहिं कन्त देखावे ॥
यह कहि दोउ तिय बाहर गई । विस्मय राय बहुत विधि भई ॥
तब उलुपी भाषण अस कहई । एक परीक्षा पियकै अहई ॥
आप विलोकत हैं अब रोई । है उपाय करि सकै जो कोई ॥
मणी सजीवन अहै पताला । प्राण सजीव होय तत्काला ॥
जीवहि पारथ जो मणि आवै । सुनत बभ्रुवाहन सचु पावै ॥
हमरे पितुसन शङ्कर हारे । वज्रसम भो को सर्प विचारे ॥
मैं पताल चलि मणि लै आओं । जीति नाग अब तैं तजि आओं ॥
सुनत मातु कह हेतु बुझाई । पुत्र न करु यह बड़ि लरिकाई ॥
विषम विषैल तेज प्रत्यक्षक । पन्द्रह कोटि नाग जहँ रक्षक ॥

सौ मुख कोइ दुइसै वदन, कोइ वदन सौ तीन ।
चार पांच छः सात सौ, वदन आठ सौ कीन ।

नागन केर मणी है प्राना । परस्वारथ जिय देतको दाना ॥
रहो पुत्र मैं मन्त्र उपावों । अपनो भूषण पितहि पठावों ॥
तबहीं मन्त्रि बोलिकै लीन्हा । सबै आभरण साथहि दीन्हा ॥

कहियो जाय पिताके पाहीं । तुव दुहिता विधवा भइ आहीं ॥
मणी देहु तो तात बचायो । कह्यो तबहिं इकलो जब पायो ॥
ताता को जो सहोदर कहेऊ । खलुकै रहो रहा नहिं चहेऊ ॥
पुण्डरीक मन्त्री कह वाता । नाश होय तनु पार्थ सख्याता ॥
पिण्ड लगै तो मणि का करही । कैसे प्राण फेरि सञ्चरही ॥
मैं डसि जाउँ पिण्ड तो रहई । सुनत बभ्रुवाहन तब कहई ॥

वड़े वड़े सरदार सब, कर्णपुत्र औ तात ।
जाहु डसौ यह कहैं सब, मणिपति कह सख्यात ॥

तब मन्त्री सबकहँ जो डसेऊ । हर्षित होय पतालहि धसेऊ ॥
पंच पेंड़ दाडिमको अहहीं । ताहि देखि अब मोते कहहीं ॥
यज्ञ माहिं जो पारथ मरहीं । पांचौ पेड़ आपुते जरहीं ॥
जौनि परीक्षा मृतकै पाओ । तो हम तुम मिलि प्राण गँवाओ ॥
देखहु जाय जरे तरु आहैं । तब रोदन करि चलि पिय पाहैं ॥
हा हा कन्त पुकारत चली । सङ्गहि उलुपी रोवत भली ॥

देखा जाये शीश भुइँ, दोउ तिया लगि पावँ ।
शीश लगाये हृदयमहँ, देह परो केहि ठावँ ॥

रोदन करत कन्तको देखी । बहुत विलाप न जाय विशेखी ॥
हा हा कन्त किरात सँहरेहु । राहु वेधकै द्रुपदी हरेहू ॥
द्रोणहि हेतु द्रुपद लै धायो । नृप विराटके गऊ छोड़ायो ॥
पावक मरण होत नरनाया । वन अखण्ड जारेउ हरि साथा ॥
रुदन करै अरु बात सँचारी । सुन मम शीश काटि महि डारी ॥

माता कह सुनिये अब राई । दीजे कठिन चिता बनवाई ॥
तजिहौं कन्त सङ्ग मैं प्राना । सुनि रोदन करि पुत्र वखाना ॥
पितुको जानि अश्व लै गयऊ । मिलत तात गारो मोहिं दयऊ ॥
सो माता अब कहा न जाई । यहिते क्रोध हृदय मम आई ॥
जन्मत हम मातु वध करतौ । शोकसिन्धु केहि कारण परतौ ॥

विभव विलास हुलास रस, विन पारथ केहिकाज ।
निश्चय अब पावक जरौं, स्वामी सँग लै साज ॥

सेवक बोलि नृपति अस कहई । रचौ चिता जारन हम चहई ॥
चित्राङ्गदा सुनत तब कहऊ । आपुहिं जरौ हेतुका अहऊ ॥
लै भूषण तौ चलौ प्रवेशा । प्रथम गये व्यालनके देशा ॥
सुतल तलातल सब परमाना । देखे जाय लोक तहँ नाना ॥
नागसुता सब धर्म्म सुशाला । देखत पहुँचे सप्त पताला ॥
गङ्गधार देखन जब पाये । तब गङ्गापहँ शीश नवाये ॥
बहुरि अन्हाय देवकुल पूजा । पूजत हरहिं और नहिं दूजा ॥
नागसुता सब देखहिं नाना । मदनरूप लखि चित्त लोभाना ॥
पूजि देवता तुर्त सिधाये । सुधाकुण्ड तब देखन पाये ॥
नागयूथ तहँ रक्षा करहीं । हरित वदन जे उपमा धरहीं ॥
ताहि देखिकै अश्व सिधारा । पहुँचे शेषनाग दरबारा ॥
कर्कोटक जहँ मन्त्री अहई । हरित वर्णते शोभित रहई ॥

भरी सभा महँ मन्त्री, दीन्ह आभरण डारि ।
तुव दुहिता विधवा भई, भाषै बात विचारि ॥

सो कन्या मणिहेतु पठाई । जाते पार्थ जिये सुखदाई ॥
सुनिकै शेष अचम्भौ माना । सबै कथा जो पूछि प्रमाना ॥
कैसे पार्थ तज्यो है प्राना । पुण्डरीक सुन कियो बखाना ॥
धर्म्मराज यज्ञहि निर्माये । हय रक्षक अर्ज्जुनहिं पठाये ॥
बहुत देश जीतत जब आये । तब मणिपुर जो अश्व सिधाये ॥
बभ्रूवाहन पार्थ कुमारा । गह्यो अश्व जब सुने भुआरा ॥
पिता जानि मिलने जब गये । तब पारथ बहु गारी दये ॥
तात क्रुद्ध ह्वै रण अनुसारा । सब दल सहित पार्थको मारा ॥
तुव कन्या सब विनय प्रमाना । है सरवर संजीवन जाना ॥
मणी देहु तौ बचिहै पारथ । नातौ सब जो भये अकारथ ॥

शेष कहे विस्मयवदन, धृतराष्ट्रक की बात ।
सुन मन्त्री आश्चर्य्य है, पार्थ मृत्यु उत्पात ॥

मणी देहु औ अमृत भाई । जाते पार्थ प्राण बचिजाई ॥
सुनतै सबै नाग रिस ताता । एकहि बदन कहे सब बाता ॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहेऊ । पृथ्वीनाथ एक मणि अहेऊ ॥
परो पताल नाग जहँ मरई । कहो बात तव कत सञ्चरई ॥
यह मणि मृत्युलोक कहं जाई । औषधि मन्त्र होव कत राई ॥
तेज हमार हीन विष होई । भय हमार मनिहै नहिं कोई ॥
ताते मणी दीन्ह नहिं चहौ । सुनतै शेषनाग तब कहौ ॥
मणि दीजे ह्वै है यश मेरो । और काम तो होय घनेरो ॥

मन्त्री कहै देव नहिं राजा। मणी गये नाशै तब काजा॥
धनुष वांधिकै नागन खैहै। गरुड़ दुष्ट आवत दुख पैहै॥

शेष कहै मणि दीजिये, पारथ हरिको दास।
आये दूत सु आश करि, कैसे करहुँ निराश॥

ग्वाल वत्स जब ब्रह्मा हरेउ। माया रूप कृष्ण सब करेउ॥
बर्ष एक विधि रहे भुलाये। सो पारथके आय सहाये॥
मैं मणि देहौं जग यश रहई। सुनत बात मन्त्री अस कहई॥
जो विनाश नागन कुल कीजै। मृत्यु लोक तौ मणि यह दीजै
मन्त्री हेतु कह्यो सब यही। राजाके मन विस्मय रही॥
अब हम कछु कहैं नहिं बाता। अहिके भवन गये सख्याता॥
पुण्डरीकके शेष बुझायो। हमते कछू नहीं बनि आयो॥
वहँ हैं कृष्ण जगतके तारण। तुम पताल आये केहि कारण॥
शेषनाग तौ कह मन दयेऊ। आशा भङ्ग दूत तब भयऊ॥
भये निराश चले पुनि तहां। नर नारी मग जोहत जहां॥

रोदन करतीं तिया सब, बिस्मयमन बहुराय।
मग जोहत अभ्यन्तर, दूत पहूँचे आय॥

बातैं कह्यो सबै समुझाई। पुरी पताल मणी नहिं पाई॥
शेष दीन्ह मन्त्री नहिं दीन्हा। सुनत बभ्रु वाहन रिस कीन्हा॥
धृतराष्ट्रक राजा ते कहई। मृत्युभुवनको मणी न अहई॥
मणि अमृत हति सर्प्प हिलाऊं। बभ्रु वाहन तब नाम कहाऊं॥
इन्द्र वरुण यम शङ्कर होई। जीतों सबहिं जो आवै कोई॥

इतना कहि किय रणके साजा। ले दल चले युद्धके काजा॥
पहुँचे जबहि शेष सुनि पाये। तब मन्त्री सन कहा बुलाये॥
आये रणहि मन्त्रका अहई। सुनत बात मन्त्री तब कहई॥
हम तो जाव करन रण साजा। मारहुँ सबहि शोच का राजा
इतना कहि धृतराष्ट्र सिधाये। नाग सैन्य तब अद्भुत आये॥
हय गज रथ पर भे असवारा। विषम विषैल चले मणिआरा॥

दोय तीनसौ चार मुख, विषधर वीर अपार।
गहे अस्त्र आये सबै, अगणित पार्थकुमार॥

देखत पारथ कुँवर रिसाना। वर्षन लागे अद्भुत बाना॥
नागहि अस्त्र विषम फुफकारा। मानुष जूझैं होत सँहारा॥
सेलह सांग मारेउ असि बाना। मारौं सर्प वीर बलवाना॥
विषके तेजहि दल अकुलाना। जूझानल तब बहुत रिसाना॥
सहस एकइस दल वध भयऊ। बभ्रुवाहन नाम तब लयऊ॥
धृतराष्ट्रकसो मारे बाना। क्रोधवन्त ह्वै काल समाना॥
न्यूर मोरको अस्त्र चलायो। ऐसे बहुत नाग विचलायो॥
महामारु तब प्रगटो भारी। मारे गये बहुत विषधारी॥
पुनि सब नागन कीन्ह दरेरा। दशो दिशामें नरदल घेरा॥
बभ्रुवाहन तब बहुत रिसाना। क्रोधित मारे मधुको बाना॥

मधू प्रश्न करिके तबै, मारत पिलके बान।
चाम मांस औ हाड़जे, छेदे उभय प्रमान॥

ऐसी मारु भई घमसाना । तबहिं नागदल सब भहराना ॥
मारन गये क्रोध करि बाना । भागे हेतु कहा सोमाना ॥
अबहूं मणी तुरन्तहि दीजे । शेष कहा मन्त्री अस कीजे ॥
शेषनाग उर हर्ष जु कीन्हा । मणि अमृत दोऊ लै दीन्हा ॥
मिलन हेतु सो सब पगधरेउ । गृहमें मन्त्री रोदन करेउ ॥
वैरी पाण्डव दुष्ट हमारा । मणि अमृत गै करै विचारा ॥
दुष्ट दुर्बुधी दो सुत अहई । तब ते बात तात सन कहई ॥
हमहैं ऐसो पुत्त तुम्हारा । जिये पार्थ कैसे संसारा ॥
आज़ु जाहु राजासँग धाई । हम कछु तबहीं रचब उपाई ॥

शिर आनबमैं पार्थका, रुण्ड रहै मैदान ।
देखौं कैसे सुधामणि, करि देही जिवदान ॥

यह कहि तात तुरन्त सिधाये । दूनौ बन्धु मणीपुर आये ॥
भेद कोउ जानै नहिं पाये । पारथको लै शीश सिधाये ॥
कुञ्जविपिन महं मलिके डारा । शीश नहीं तब तिया निहारा ॥
रोदन करैं तिया बहुरूपा । मणिपति मिले धायके भूपा ॥
मणि अमृत दीजै ती हाथा । हर्षित चले मणीपुर साथा ॥
शेष आदि सबही तब आये । रणभूमीजहं पार्थ गिराये ॥
देखा तहां राव द्वइ नारी । काहु हरो शिर करी गोहारी ॥
राजा सुनतै मूर्च्छित भयऊ । हे विधि कौन कर्मतें कियऊ ॥
जबहीं राजा मूर्च्छित भयो । पुरी हस्तिनाकी सुधि कियो ॥
पारथ सपना मातुहि दयऊ । कुन्ती हरिते बोलन लयऊ ॥

तेलकुण्डमहं पार्थ अरु, सवन करै अस्नान।
चढ़ि गर्दभ दच्छिण दिश, कीन्हा रैनि पयान॥

सो वर्तन सुलाल है फूला। पारथ स्वप्न देखि भयशूला॥
रोदन करि कुन्ती सञ्चारै। श्रीपति कीन्हा पारथ मारै॥
चले भीम तव कुन्ति डेरानी। हरी गरुड़ पर आसनठानी॥
पार्थ हेतु चल शारँग पानी। मणिपुर चले पहूँचे आनी॥
देखा रण शमशान समाना। तम्बू एक देख भगवाना॥
अगणित रानी रोदन करहीं। कृष्णरु भीम तहां पग धरहीं॥
देखा हरि पारथके रुण्डा। रोदन कर लिया विन मुण्डा॥
कह तव हरिहिं कौन रण राना। को पारथको कौन निदाना॥
हा पारथ करि कहो वखानी। रोये भीम कुन्ति पटरानी॥
तवहीं भीम कहा अस वानी। ऐसो कोन वीर जग जानी॥

मेरे देखत अघ हरि, वधे पार्थ रणधीर।
जाहि कुशल सो प्राण लै, ऐसो को यदुवीर॥

बभ्रुवाहन रोदन करि कहई। हम तो पुत्र पार्थकर अहई॥
कर्म दोष हत्या हम पाये। तातहि अपने हाथ गिराये॥
अमृत हरि पताल ते लाये। अभ्यन्तर शिर कोउ दुराये॥
ताते भीम गदा परिहारो। मेरो शीश चूर्ण कर डारो॥
मैं दर्शन श्रीहरिके पाये। जगके भय मो मन नहिं आये॥
श्रीपति हमें मृत्यु अव दीजै। मेरो पाप उद्धरण अव कीजै॥
चित्रांगद तव रोदन करहो। कुन्तीके चरणनमहँ परहो॥

शोकित कुन्तौं परि मुर्छाई। शेष कहा सुनिये यदुराई॥
पाण्डुवंश बूड़त अब कैसे। तुमहि कियो रक्षा उपजैसे॥
सुनिकै हरि चिन्ता उर पागे। सबै लोग तब बोलन लागे॥

ब्रह्मचर्य्य जो पुण्य हम, कीन्ह जगत मों झार।
तौ आवै शिर पार्थको, चोर होउ संहार॥

कहतै तुर्त शोश तब आये। मन्त्री दुष्ट नाश तब पाये॥
पाय शीश कन्धापर धारे। हरि मणिहाथ कहे सञ्चारे॥
उरमें पारथ मणि तब राखे। उठत पार्थहौ श्रीपति भाखे॥
लागे शीश उठो तब कैसे। चुम्बक माहि लोह लग जैसे॥
प्रद्युमन वह मणि धरि जगवन्दन। रहु रहु करि तब उठे अनन्दन
कर्णपुत्र रण धीर कुमारा। यौवनाश्व अनुशल्य भुआरा॥
हंसध्वज नीलध्वज राऊ। जागे सबै चेत तब पाऊ॥
पारथ आदि सबै जब जागे। धाय कृष्णके चरणन लागे॥
सेवक शेषनाग तौ भयऊ। शेष अनन्द बहुत बिधि लयऊ॥

नाना कौतुक वाद्य तब, होत अनन्द अपार।
पैदल सैना पार्थ ले, सुनत नगर पगुधार॥

बभ्रूवाहन लज्जा पाये। सभा माहि नहि मुख देखराये॥
कहे पाप पितुको वध ऐसो। पाप याहि छूटै धौं कैसो॥
करवट लेउँ दहौं तनु काशी। हिम प्रयाग जाइहौं प्रकाशी॥
तबहुँ पापका छूटत अहई। सुनिकै भीम बोधि तब कहई॥
सुनहू पुत्र शोच नहि कीजे। हम जो कीन्ह श्रवण सुनिलीजे॥

भीष्म पितामह मैं संहारा । द्रोण गुरु अपने कर मारा ॥
हरि दर्शनसों पाप नशाना । तुव दर्शन पाये भगवाना ॥
पारथ गहे तवहि सुत हाथा । गहि बैठारे अपने साथा ॥
पुरमहँ भई अनन्द वधाई । परमहर्ष माने यदुराई ॥

पांच दिवस आनन्द वहु, बीते मणिपुर देश ।
प्रात समय सब आयहू, बोलत भये ऋषेश ॥

कह्यो भीमते श्रीयदुराई । चित्रांगदहि लीन्ह सँग लाई ॥
शेषसुता तौ सङ्ग सुजाना । कुन्ती औ मम मातु प्रमाना ॥
अब तो जाहु हस्तिना देशहि । हम हस्तिनके संग विशेषहि ॥
सुनते सबको सङ्ग करि लयऊ । भीम विदा तब हस्तिन भयऊ ॥
शेषनागको पूजा दीन्हे । शेषागमन पतालहि कीन्हे ॥
भीमसेन हस्तिनपुर गयऊ । सबै बात तो कहवै लयऊ ॥
विस्मय हर्ष तु धर्मकुमारा । वैशम्पायन कथा सँचारा ॥
पांडु विजय यह पुण्य कहानी । बाढ़ै धर्म पापकी हानी ॥
तब जन्मेजय पूछन लागे । कीनौ कौन देश नृप आगे ॥
कहा भयो कैसो रण भारी । वैशम्पायन कहौ विचारी ॥

वैशम्पायन भाषेऊ, रहस कथा सुनु राय ;
मणिपुरते हय छूटेऊ, चले वीर सँग धाय ॥

इति नवम अध्याय ॥ ९ ॥

बभ्रूवाहन सँग है पारथ। वैशम्पायन कहै यथारथ॥
चलत पंथ महँ कौतुक भायो। ताम्रध्वज हय देखन पायो॥
मोरध्वजको पुत्र जुझारा। अपनो अश्व करै रखवारा॥
मोरध्वजहि यज्ञ निर्मांये। पारथको हय देखन पाये॥
पारथको हय गहि सो पाये। पठ सचिव तौ अर्थ सुनाये॥
बहुत शुद्ध मन्त्रीको बाता। ताम्रध्वज हर्षित सुनि गाता॥
हरे अश्व दलको संहारा। कहै कुँवर तो काज हमारा॥
संवत मध्य यज्ञ तो करै। अष्टम यज्ञ अश्व तब हरै॥
हरे अश्व तौ हर्ष अपारा। तब पारथ दल परी पुकारा॥
हरेउ अश्व तब रव रव भारी। तब पारथते कह बनवारी॥

महाबली मोरध्वज, सब राजा कर देत।
बभ्रुवाहन कह सत्य है, हम कर देत सचेत॥

कहेउ कृष्ण नर्मदके तीरा। इनके तात यज्ञ करि धीरा॥
इनते जीति सकै नहिं कोई। यद्यपि सैना साजै जोई॥
गीध व्यूह दल करी प्रमाना। अनुशल्या रह कन्ध स्थाना॥
हंसध्वज नयनन महँ राखो। और काम अनिरुद्धहि भाषो॥
सात्यकि पुत्र पच्छके माहां। मेघवर्ण दल रच्छक ताहां॥
पारथ सुत औ कर्णकुमारा। दोनों चोंचनके रखवारा॥
ऐसे दल संयुत करवाये। मोरध्वजपहँ कृष्ण सिधाये॥
करि प्रणाम ताम्रध्वज कहै। आपै युद्ध हेतु मन गहै॥

आपुहि युद्ध करिय मनलाई। मोको नाहीं भ्रम यदुराई॥
अर्द्धचन्द्र शर सेना करई। अगणित ताम्रध्वज सञ्चरई॥

सत्रह बाणन हाथ लै, मारयो बिरह अनङ्ग।
तीनि बाण तब श्याम के, मारे ताकि अभङ्ग॥

पांच बाण दारुकको मारे। घायल भयउ न ज्योति सम्हारे॥
रणमहँ गर्जो सिंह समाना। मारा सात्यकिके तब बाना॥
कृतवर्महि मारे नौ बाना। सहस बाण प्रद्युम्न समाना॥
बाण सहस्र कामसुत ताना। अनिरुध क्रोधे काल समाना॥
रह रह अब सह बाण हमारा। यह कहि बहुत बाण संचारा॥
करिकै क्रोध बाण तब छाटे। मोरध्वज ता बीचहि काटे॥
पांचबाण ताम्रध्वज मारा। मारे चारौ तुरँग तुषारा॥
व्याकुल भये क्रोध रण ठयऊ। पारथदल सब घायल भयऊ॥
प्रद्युमनके रथको तब तोरा। तब अनिरुद्ध क्रोध शर जोरा॥

तब दोनों बसुधा लरे, महामारु तौ ठान।
मल्लयुद्ध तब ठानेऊ, अनिरुध गिर मैदान॥

औरो रथ ताम्रध्वज चढ़ेऊ। महामार युद्धहि मन बढ़ऊ॥
हरि ते भाषै अनिरुध गिरेऊ। तब देखत वृषकेतू फिरेऊ॥
मारि हांक तब बाण प्रहारा। ताम्रध्वजको रथ सञ्चारा॥
जौने रथ ताम्रध्वज आवै। कर्णपुत्र सो मारि गिरावै॥
तबहीं क्रोध ताम्रध्वज भयऊ। काल समान बाण तब लयऊ॥
तेहि शर मूर्च्छित कर्णकुमारा। पांचबाण तब तेहि संचारा॥

तातें मूर्च्छित भो अनुशला । देखत बभ्रुवाहन तब चला ॥
पाचबाण रहु रहु करि मारा । तामध्वज रथ काटि पँवारा ॥
यौवनाश्व पारथ सुत मारे । ताम्रध्वज सो काटि पँवारे ॥
क्रोधित बाण छांड़ि तब दीन्हा । बभ्रुवाहन मूर्च्छित कीन्हा ॥

रहो कृष्ण रण माहिं अब, सहो हमारो बाण ।
चन्नी भागेउ देखतै, पारथ दल भहरान ॥

सब वीर देखत हैं ताहां । ताम्रकेतु डारत रणमाहां ॥
देखत पारथ बीर रिसाना । ताम्रध्वज कहँ मारेउ बाना ॥
नवो बाण पग अश्वन मारे । और बाणते रथ संहारे ॥
औरे रथहिं भये असवारा । नवो बाण पारथकहँ मारा ॥
और बाण ते रथ संहारा । औरे रथहिं भयो असवारा ॥
तबहीं क्रोध करै बहु लीन्हा । बाण वृष्टि पारथपर कीन्हा ॥
ते अस देखि सुचित तहँ भयऊ । शङ्खध्वनि पारथ तहँ कियऊ ॥
ताम्रध्वज को रथ संहारा । औरे रथ चढ़ि श्यामकुमारा ॥
क्रोधवन्त बाणन तब मारा । पारथके सारथि संहारा ॥
और बाण पारथ के लागे । मूर्च्छित भे पुनि पारथ जागे ॥
महामारु पारथ पर दीन्हें । एक सहस्र मारि रथ लीन्हें ॥

ताम्रध्वज को सबै दल, पारथ शर भहरान ।
तबहूँ ताम्रध्वज बली, छांड़ा नहिं मैदान ॥

पारथ मारा बाण रिसाई । ताम्रध्वज रथ मारि गिराई ॥
औरहि रथ पर भो असवारा । पारथ ऊपर बाण प्रहारा ॥

पारथ के शर प्रबल समाना । च्चोहिणि दुइ दल गिरे प्रमाना ॥
अयुतबाण ताम्रध्वज मारा । पारथ क्रोधित बाण सँचारा ॥
धनुषे गुन काटे तब पारथ । दोय सहस मारे रथ सारथ ॥
सात दिवस लग दिन अरु राती । ऐसी मारु भई बहु भांती ॥
ताम्रध्वज शर हते रिसाई । पारथको रथ चला उड़ाई ॥
ऊपरते रथ भुवि करि यामा । हस्तकमल पर लीन्हे श्यामा ॥
भुवि पर जब राखे यदुराई । तब ताम्रध्वज कह बिलखाई ॥
मैंने तो उड़ाय रथ डारा । राखे कर धरि नन्दकुमारा ॥

श्रीपति गदा घाव करि, औ करि चरणप्रहार ।
मूर्च्छा रहि पल एकलौं, जागे राजकुमार ॥

तीनि बाण हरिको तब मारा । कह हरि पार्थ करो संहारा ॥
हम तुम आजहि इन को मारैं । यहि अन्तर श्रीकृष्ण विचारे ॥
मारे रिस करि पारथ बाना । बहुरि क्रोध भे पार्थ रिसाना ॥
क्रोधवन्त ह्वै बाण चलाये । ताम्रध्वज गुन काटि गिराये ॥
तब ताम्रध्वज कहै रिसाई । अब पारथ राख्यो यदुराई ॥
जौनहि रथपर पारथ आये । सारथि भे तव रथहि बचाये ॥
ताम्रध्वज हरिको हनुमाना । पारथ दल तब सब भहराना ॥
हय गज रथ पैदल हैं जेते । वहि रणमें विचले सब तेते ॥

ताम्रध्वजको सबै दल, क्रोधित ह्वै भगवान ।
गहे चक्र तब चक्र धर, महा मारु तब ठान ॥

रथ ते वेगि उतरि कै धाये । तीनि लोक तब शङ्का पाये ॥
डगमगानि भुवि सब संसारा । एक चौहिणी दल संहारा ॥
तब सुचित्र बहु घातैं करै । आय धाय श्रीकृष्णहि धरै ॥
दहिने हाथ गहे तब धाये । वामकरपदहि शीश चढ़ाये ॥
पारथ जाना मिले प्रमाना । तामृध्वजहि क्रोध तब माना ॥
बाम चरण पारथकहँ मारा । हरिपर गिरे सुचित्र कुमारा ॥
हरि अर्ज्जुन तब मूर्च्छित भयऊ । लैकर अश्व चलन मन दयऊ ॥
हर्ष गात अपने पुर चलेउ । दूनो अश्व सङ्ग हैं भलेउ ॥
मोरध्वज तब देखन पाये । दूजो अश्व कहांते लाये ॥

तामृध्वज औ मन्त्रि ने, भाषेउ सकल वृतान्त ।
धर्म्मराज कर अश्व है, रच्छक कमलाकान्त ॥

रच्छक पारथ औ भगवाना । सब दल मोहित किय मैदाना ॥
सुनहु तामृध्वज राजा कहई । धृक धृक सुत तू मेरो अहई ॥
हरिको तजे अश्व ले आये । धृक जीवन तोहिं गुरु पढ़ाये ॥
बहु प्रकार ते डाटन लागे । इत पारथ हरि मूर्च्छा जागे ॥
बभ्रुवाहनादि सरदारा । चेतन भये सबै विस्तारा ॥
पारथ कहै कहां यदुराई । अश्वहि लये कहां सो जाई ॥
हमहूं को चलिये लै तहां । सुनी बात तब श्रीपति कहा ॥
रत्नपुरी मोरध्वजराऊ । वह ल अश्व गयो परभाऊ ॥
परमबली है भक्तहमारा । मायाकै कीजै सञ्चारा ॥
वृद्ध द्विज हम तुम हो बालक । यहि विधि चलो कहैं गोपालक

नृपका सत्त देखाइहौं, तुमको पारथ वीर ।
बाल वृद्ध मायाकरी, चलौ नृपतिके तीर ॥
सेन राखिके दोउ जन आये । रत्नपुरी निशिमाहिं सिधाये ॥
नर नारी कौतुक लख नाना । प्रात होत नृप पहँलो आना ॥
यज्ञशाल मो राजा अहई । दूनो अश्वहि देखत रहई ॥
जाय विप्र जब आशिष दयऊ । तब राजा यह बोलत भयऊ ॥
बिन प्रणाम तुम आशिष दयऊ । मोको महापाप द्विज भयऊ ॥
द्विज कह कछू पाप नहिं राजा । याचक द्विजको है यह काजा ॥
करि प्रणाम तब राजा कहई । कहौ विप्र मन-कामन अहई ॥
विप्रन कहो मध्यपुर ग्रामहि । कृष्ण शर्मा है मेरो नामहि ॥
अपने सुत को ब्याह बनाये । पुत्र वधू लै तुमपहँ आये ॥
मार्ग माहिं घन कानन अहई । तहां सिंह मेरो सुत गहई ॥
मैं विलाप बहु विधि किये, सिंह नेक नहिं मान ।
मोहिं न पकरो शिशु गहेउ, ताहि चहत अब खान ॥
सिंह कहै आयु जेहि अहई । ताको हम नाहीं द्विज गहई ॥
जो चाहत हौ पुत्र बचावा । तौ दीजे जो मम मन भावा ॥
एक वस्तु मांगा हम पासा । जाते हम आये करि आसा ॥
मोरध्वज राजा तब कहई । मेरे देश सिंह नहिं अहई ॥
तब राजा पूछन यह लागे । तुमते सिंह कहो का मांगे ॥
जो मांगे सो हमैं सुनाओ ।जामैं तुम अपनो सुत पाओ ॥
मिथ्या होय न बात हमारी । तब द्विज यह वाणी संचारी ॥

मोरध्वजको अर्द्ध शरीरा । मोहिं दै सुतकहँ ले द्विज बीरा ॥
तब हम कहा सिंह सुनु बीरा । मोहित न्टप कत देत शरीरा ॥
तबहिं सिंह कह सत जो ह्वै है । देहै देह कछु ना कहै ॥

तातें न्टप मैं आयऊं, अपने सुतकी आश ।
धर्म्मराज साहस सुनो, सो तो तुम्हरे पास ॥

मोरध्वज हर्षित ह्वै कहेऊ । लेहु शरीर विप्र जो चहेऊ ॥
कछु नहिं दुःख करो सञ्चारा । यह ब्राह्मण है इष्ट हमारा ॥
सुनतहिं जग मों द्विज हैं जेते । हाहा शब्द पुकारत तेते ॥
काल स्वरूप विप्र इक आवा । नगर निवासिन बहु दुख पावा ॥
खम्भ दोय तहँ तबहीं गाड़ो । राजा तहां जाय भो ठाड़ो ॥
करि अस्नान तुलसिदल लयऊ । कृष्ण ध्यानमहँ अति मन दयऊ
तबहिं म्लेच्छ राजा ते कहेऊ । करवत शिर देखो जो गयेऊ ॥
पशु पच्छी रोवत पुर भारी । तब रानी गइ कहै विचारी ॥
कुमुदावती तु रानी कहई । अर्द्ध अङ्ग स्त्री द्विज अहई ॥

हर्ष गात द्विज भाषेऊ, सिंह कहा समुझाय ।
वाम अङ्ग जनि लायेऊ, दहिना लाओ जाय ॥

वाम अङ्ग पतिव्रता आहै । तातें सिंह तुम्हैं नहिं चाहै ॥
यहि अन्तर ताम्रध्वज आये । करि प्रणामतौ द्विजहिं सुनाये ॥
पितुको अङ्ग पुत्र सो अहई । मेरो तनु लीजै यह कहई ॥
सुन्दर तनु जो पुष्ट सोहाई । तबहिं विप्र यह वचन सुनाई ॥

सिंहहि कहा और नहिं काजा । लाओ तनु मोरध्वज राजा ॥
इस्त्री पुरुष चीरि हैं देहा । विस्मय नहिं आनन्द सनेहा ॥
मङ्गल करिके देह चिराओ । दहिने अङ्ग विप्र लै आओ ॥
इस्त्री पुरुष हर्ष तब करो । करवत लै राजहि शिरधरो ॥
इन्द्र आदि देवन गण जेते । नृप सुत देखन आये तेते ॥
नगर लोग सब देखहिं नाना । इस्त्रीपुरुष तु हर्ष निदाना ॥

उलटे आरा नयन कर, अर्द्ध शीश गयो चीर ॥
वाम नैन मोरध्वजहि, तुर्त चलो तब नीर ॥

देखतहीं द्विज कह नृप पाहीं । कादर दान लेत द्विज नाहीं ॥
देत शरीर तु रोदन करैं । याहि दान हम कैसे धरैं ॥
वरु पुत्रहो सिंह ल खाऊ । यह कहि चले तुर्त द्विजराऊ ॥
संगहि पारथ करिके चलेऊ । लोग सबै तहँ देखत भयेऊ ॥
तब रानी करवती उतारा । गहे दाबि शिर हाथ भुआरा ॥
कहहीं बात नाथ सुनि लीजै । विप्रकाहि संतुष्ट करीजै ॥
तेज शरीर विमुख द्विज जाई । अहो कन्त द्विज लेहु मनाई ॥
तब राजा कर शिर धरि लहई । पाछे बात विप्रसों कहई ॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै । पाछे आप गमन जो कीजै ॥
करवत नहिं दुःख हमारे । बहुत दुःख जो विमुख सिधारे ॥
वाम अङ्ग रोदन करैं, हम निष्फल संसार ।
दक्षिण अङ्गहि हर्ष बहु, मैं द्विज काम सँवार ॥

सुनतहि बात हर्ष द्विज पाये । हर्षित राजहिं रूप देखाये ॥
चतुर्भुजा ह्वै दर्शन दीन्हा । मांग मांग वर बोलै लीन्हा ॥
दै शरीर सन्तोषा मोहीं । जगमें भक्त देखियत तोहीं ॥
धन्य पुत्र ताम्रध्वज तेरो । सब दल जीति लियो जिन मेरो ॥
तब राजा अस्तुति बहु करई । पाछे विप्र चरणमें परई ॥
माथे हाथ मृतकके दीन्हा । सर्व कलेश नाशतब कीन्हा
राजा कह विश्वम्भर देवा । मांगहु वर सूनौ हरि भेवा ॥
जैसि परिच्छा हमरी लयऊ । इस्त्री सुत चिन्ता नहिं भयऊ ॥
कलिमहँहोय जु भक्त तुम्हारा । ऐसन याचहु तेहि जगतारा ॥
यह कहि धन अरु सम्पति दयऊ । दूनहु अश्व आप सँग लयऊ ॥
यह भाषे जगहेतु कहँ, पाय दर्श भगवान ।
करै यज्ञ हरि दश लहि, होय तदा कल्यान ॥
अश्वहिदल नृप संगलै, चले मोरध्वज राव ।
भक्त परीच्छा लेन को, तब हरि कीन्ह उपाव ॥

इति दशम अध्याय ॥ १० ॥

दूनो हय लै पारथ चले । बैशम्पायन बोलत भले ॥
दल समग्र चलि आयो तहां । सरस्वति पुरी नगर है जहां ॥
वीरभानु तहँ नाम नरेशा । दोनों अश्व करैं परवेशा ॥
पुरके लोग धर्म्म अनुरूपा । आये अश्व सुन्यो तब भूपा ॥

पञ्चवीरको आज्ञा दयऊ । तबहीं अश्व नृपति पहँ गयऊ ॥
सुरभ सुलभ अरु नील प्रमाना । कुवलै बल पांचौ बलवाना ॥
पांच वीर रणमों गह गहई । तब मणिपुर पति रहु रहु कहई ॥
शङ्ख नाद तब वीरन कीन्हा । धनुषबाण हाथै सब लीन्हा ॥
वर्षन लगो बाण की धारा । दोउ दल जूझे वीर अपारा ॥
रथ गज अस्वरु पैदल लाखन । जूझनलगे सकै को भाषन ॥

यहि अन्तर यम आयकै, सैना वधे हजार ।
यह नृप यम जो माता, भाषे नन्दकुमार ॥

ताते सैना इह वध कीन्हा । तब पारथ पूछै कह लीन्हा ॥
यम को कत नृप कन्या कीन्हा । सुनतै कृष्ण कहे तब लीन्हा ॥
राजाके मालिन भौ वारी । योग स्वयम्वर भूप विचारी ॥
राजा पूछहि कन्या कहौ । मांगहुवर जो मनमें चहौ ॥
देवनाग अरु मनुज सुरारी । जो वर चाहो कहो कुवारी ॥
कन्या कहै तात ते वाता । यमराज को चाहत ताता ॥
कालहि पाय त्रिया जो मारै । अन्त जन्म तो गृह पगुढारै ॥
तब कन्त दूसर तौ होई । महापाप ताते है सोई ॥
ताते प्रथमहि यमको वरो । एक पुरुष दूसर परिहरो ॥
नृपकन्या नृपपर मनसाधे । निशि वासर यमको आराधे ॥

नारद यह तो जानिकै, यमपुर गो हरषाय ।
कन्याका वृत्तान्त सब, कहा धर्म्मसन जाय ॥

पांच पुण्य जानौ सम राजा । मालिनि सुधि बिसरे केहिकाजा
धर्म्मवन्त कन्या सो अहई । सारस्वतपुर नृपको रहई ॥
एकव्रत सो मनमहँ धरई । यम राजाको चाहत बरई ॥
जाय करौ अब ताको व्याहा । तब यम भाष्यो नारद पाहा ॥
आपु जाहु हम पाछे ऐहैं । वैशाख मासमों हमहू जै हैं ॥
शुक्लपक्षमों ऐहौं सही । नारद सुना चले तब जही ॥
सारस्वत नगरै तब गयऊ । सबै बात राजा सों कहेऊ ॥
कहिकै नारद सुरपुर गयऊ । शुक्लपक्ष वैशाख तु भयऊ ॥
धर्म्मराज सब वीर बोलाये । सबै लोग तब तुरतहिं आये ॥
दुष्ट आहैं सबके सरदारा । शुक्र प्रमेह विकार अपारा ॥

सबन रोग सों यम कहै, चलो सङ्ग वरिआत ।
व्याह हमारो होत है, सारस्वत पुर जात ॥

तब सब रोग कहैं यह बाता । पुण्य धर्म्म है ह्वां बहु ताता ॥
वहां हमार नहीं सञ्चारा । तुरत तेज बल जाव हमारा ॥
यमहि कहा पापी नर जेते । रूप कुरूप देखि हैं तेते ॥
धर्म्मवान जेते नर अहई । रूप अनूप देखिहैं कहई ॥
जाको पीड़ा कर बहु भाई । ताको भेद कहौ समुझाई ॥
ब्रह्म वधे कर पातक जाही । ब्रह्म अंशते क्षय भय ताही ॥
गोदावरि गौतम इक माशा । परशे क्षयी रोगको नाशा ॥
देव द्रव्य हर वरी सतावे । तासु शरीर विषूचिक आवे ॥
ताको नाम खण्ड है भाई । अजया कञ्चन सुख नहिं जाई ॥

कञ्चन भूषण श्रद्धया, दान दिये ते जाय ।
गर्भपातके पाप ते, गहत जलन्धर जाय ॥

एकोत्तर सौ तुला जु करई । लच छत्र दीन्हे सो हरई ॥
रस अरु द्रव्य जु चोरी करई । ताको व्याधि अरुचित धरई ॥
कञ्चन दान करें ते जाई । गौव देहि कहै यमराई ॥
वेश्या सङ्ग हर गुरु नारी । सन्निपात पीड़ाके धारी ॥
पङ्ग उधारनको धन हरई । यम राजाको चाहत बरई ॥
श्रुति दे भूषण भेटत दाना । दीनहु व्याधि तुरन्त पराना ॥
भूमिदान दीन्हे सो जाई । पुनि द्विज भोजन जाय छोड़ाई ॥
अरुचक तो ताही गे धरई । लाखन द्विज भोजन परिहरई ॥
आशा भङ्ग पन्थ रटपारी । शूल व्याधि तेहि होती भारी ॥

पञ्चो कोटिन नाश कर, वेंचत है जो होय ।
हेमयज्ञ' वैष्णव द्विजहिं, दान दिये चय होय ॥

वरदान कादर हुचको होय । लच होम मह नाशै सोय ॥
साजुयोग जो दारे होई । चुगुल रोग पावत है सोई ॥
तेलकुण्ड दाना इक मासा । तब सो व्याधि होति है नासा ॥
निन्दा सन्त रोग मुख पावै । लच दान दे ताहि भगावै ॥
पर नारी देखत जो धावहि । नैन रोग ते बहु दुःख पावहि ॥
गुरु हतने को ध्यान जो धरही । नैन रोग तुर्तहिं परिहरही ॥
अंग छोड़ावे वेधा होई । पञ्च रतन दीन्हे छै होई ॥

देखत दान सूम मुरझाही । मिरगी रोग होत है ताही ॥
कृष्ण धेनु कञ्चन कर दाना । मृगी रोग जाता है माना ॥

यज्ञ स्थित जो दाह तनु, डारत बन्दी माहि ।
शिव पूजै अति हेतु सों, तब सो व्याधि नशाहि ॥

यही प्रकार और बहुतेरे । नाना व्याधि पुरुष तनु घेरे ॥
यहि प्रकार ते सबहि बुझाये । तब सब सारस्वत पुर आये ॥
राजा हर्ष गात ह्वै कहई । कन्यादान देन तो चहई ॥
मेरे रिपु सों करहु लराई । यह बाचा तौ कीन्हो राई ॥
तब कन्या दीन्हो यह दाना । पारथपाहँ कहैं भगवाना ॥
तै वाचा ते रण हरिलाये । ताते युद्ध हेतुको धाये ॥
आप सबै रण को मन दीजै । युद्ध जीति अश्वहि को लीज ॥
पारथके रथ पर हरि आये । युद्ध हेतु सबही मन लाये ॥
बीरवर्म्म राजा तब आये । पारथ सों तब बात सुनाये ॥
करो युद्ध पारथ मन लाई । महा मारु ह्वै है प्रभुताई ॥

जो सेना सरदार सब, मैं जानत बल तासु ।
सुनी बात क्रोधित वदन, पारथ वचन प्रकासु ॥

छांड़ो अश्व कहैं हम राजा । ना तो महामार अब साजा ॥
बर्म्मा बीर कहन अस लागे । अश्व कहां अब पही मांगे ॥
दुऔ अश्व लै मख मैं करहूँ । तुम्हें समेत कृष्ण कहँ धरहूँ ॥
मोरे रण लायक नहिं पारथ । पारथ सुनो क्रोध पुरुषारथ ॥
मारे पारथ बाण अपारा । बर्म्मा बीर काटि शर डारा ॥

तब सौ बाण पार्थकहँ मारा । साठि बाण तब नन्दकुमारा ॥
पांच बाण मारि ध्वजराई । लग्यो बाण तब मूर्च्छा आई ॥
जब राजाके सारथि आये । तब पारथ बहु बाण चलाये ॥
पारथ शर तब वर्षत नाना । वीरवर्म्म मारे बहु बाना ॥
पारथ कृष्ण दृष्टि नहिं आये । बाण बुन्दते वर्षा लाये ॥

पारथ मारा बाण तब, कोटि बाण संजाय ।
सात बाण तब राजहीं, मारे पार्थ रिसाय ॥

नृप करि क्रोध साठि शर मारा । सौ शर लागे नन्दकुमारा ॥
चारि बाण अश्वहिपर दयऊ । तबै अश्व आतुर ह्वै गयऊ ॥
वीरवर्म्म तब कह यह बाता । मोरे जयकर पाव सख्याता ॥
भीषम द्रोण कर्ण संहारा । ते शर काम न आव तुम्हारा ॥
सुनिकै हरि भाष्यो हनुमानहि । नृप रथ तुम लै जाहु अकाशहि
घोर सिन्धु रथ डारौ जाई । सुना हनू तब चले रिसाई ॥
लै रथ अन्तरिक्ष कपि गयऊ । वीरवर्म्म बहु बल तब कियऊ ॥
कूदि पार्थ रथ ध्वजको गहेऊ । लै रथ अन्तरिक्ष पुनि कहेऊ ॥
जहां स्वर्ग माहीं हनुमन्ता । पारथ रथ लै गयो तुरन्ता ॥

हनूमान सन भाषेऊ, लीजे रथहि हमार ।
हम लै आये पार्थ कहँ, सहितै नन्दकुमार ॥

कहिये रथ लै डारों कहां । क्षीरसिन्धु लक्ष्मी है जहां ॥
हनुमत कह्यो धन्य तुम राजा । सुयश तुम्हार जगतमों बाजा ॥

साधु भक्त औ बली कहाये। बीरबर्म्म तब बाण चलाये॥
मैं तौ नाम सुना है तोरा। ल रथ जान सके नहिं मोरा॥
यह कह एक मुष्टिका दई। हनूमानके पीरा भई॥
हरि राजा पारथ हनुमाना। तब सब वसुधा च्याय प्रमाना॥
देखत श्रीपति हाथ प्रहारे। बीरबर्म्म मूर्च्छित विकरारे॥
जागत भक्ति हृदय महँ भयऊ। तुर्त कृष्णके आगे गयऊ॥
प्रभु कृपालु भक्तन भयहारी। आयों शरणै कृष्ण तिहारी॥
तुम दर्शन करि पातक भागे। प्रेम भक्ति हिदयमहँ जागे॥

तब राजा अस्तुति करी, धनुष बाण दिय डार।
करि प्रणाम घोड़ा लिये, आगे किये भुआर॥

पारथ सन भाष्यो यदुराई। इनते जय काहू नहिं पाई॥
वीरबर्म्मको जीतन पायो। मोरि भक्ति है प्रीति बढ़ायो॥
पारथ कह जो तुम्हैं मनायो। तासों जगमें जयको पायो॥
मिले पार्थ श्रीकृष्णहि राजा। भांति भातिके बाजन बाजा॥
सब दल लैके नगरहि गयऊ। दिन इक द्वै बीतत जब भयऊ॥
देश भूमि तव आगे कीन्हा। अष्ट भार मुक्ताहल दीन्हा॥
शत सहस्र हाथी तो दयऊ। औरहु अश्व अनेकन लयऊ॥
छूट अश्व तौ सङ्ग नरेशा। भरमत फिरा अनेकन देशा॥
नदी एक महँ पैठ तुरङ्गा। तटहीं तट पारथ दल सङ्गा॥
पारथ भये अश्व तौ जाई। तबै सर्व दल पार सिधाई॥

परमानन्दित सब दल, पारथ हयके सङ्ग।
वैशम्पायन यह कहत, पारथ परम अनङ्ग॥
चले अश्वके संग सब, नाना वीर नरेश।
आय देश सब जीतिकै, चन्द्रहासके देश॥

इति एकादश अध्याय॥ ११॥

वैशम्पायन राजहि कहा। चलो अश्व तब आगे रहा॥
चन्द्रहास राजा जहँ रहई। तहां अश्व चलि भो मुनि कहई॥
कित गो अश्व शोच सब पाये। यहि अन्तर नारद मुनि आये॥
पारथ पांह कह्यो समुझाई। कुन्तलपुरहि अश्व तब जाई॥
चन्द्रहास जो भक्त कहाये। बड़े कष्ट राजा तब पाये॥
दुष्टबुद्धि वैरी तेहि अहे। रक्षक सदा श्रीपती रहे॥
बहुत कष्ट महँ कृष्ण बचाये। यही प्रसाद राज पद पाये॥
तब पारथ कह विनती लाई। चन्द्रहास गुण कहो गुसांई॥
नारद कह भल समय सुहाये। कथा सुने का हेतु सुनाये॥
अश्व कहां खोये मन लाई। तब पारथ बोले विहँसाई॥

कुरु पाण्डवके युद्धमहँ, एक पलकके माहि।
गीता कृष्ण बखानेऊ, सुना ज्ञान हम ताहि॥

सुनत कथा नारद तब कहहीं। कदिदल देश धर्म्म नृप रहहीं॥
ताके गेह जन्म इन लयऊ। जन्मत तात मातु मरिगयऊ॥

लैकै धाइ कुँडलपुर आई। वर्ष तीनिपर सोउ मरिजाई॥
तीनि वर्षको बालक अहई। षट अङ्गुलि बायांपद रहई॥
ताको लोग दया करि राखैं। लच्चण राज सबै तो भाखैं॥
दुष्टबुद्धि मन्त्री गृह माही। एक दिना सो बालक जाही॥
जा दिन द्विज उन भोजन दयऊ। सो दिन बालक तहँवां गयऊ॥
रूप देखि मन्त्री सुख पायो। करि बहु प्रीति अग्र बैठायो॥
द्विज मुनि तो कहते यह बाता। बालक नृप होवो सख्याता॥
राजा ह्वै है आशिष दयऊ। दुष्टबुद्धि तब चिन्तत भयऊ॥

सब विप्रनको बिदा करि, मनमों करै विचार।
मदन अमल दो पत्न मम, पै यह होत भुआर।

यह बालक राजा मुनि कहई। तातै मन बहु चिन्ता गहई॥
सुनिकै वाक्य झूठ नहिं सहेऊ। बोलि चँडालहिं मन्त्री कहेऊ॥
बालक हति चिह्नहि लै आवो। धन सम्पति मोतै बहु पावो॥
लै चण्डाल बाल बन गयऊ। दधि पावन शिशु मुखमों लयऊ॥
गोली खेलै मुख मों रहै। तब चण्डाल हतनको चहै॥
हरि माया मोह्यो चण्डारा। पूर्व पाप कहँ जनु अवतारा॥
बाल वधे अघ का गति होई। बालक कहँ मारो जनि कोई॥
वाम पाद षट अंगुलि देखी। काटि लीन तौ देखि विशेखी॥
दुष्टबुद्धिको दीन्ह्यो जाई। धन सम्पति चण्डालहि पाई॥
भई झूठ विप्रन मुख बानी। बालक हतै होति रजधानी॥

दुष्टबुद्धि आनन्दित, बालक वनमहँ रोय।
पशु पच्छी वन जन्तु सब, करि मनुहार सुजोय॥
सो वन गयो शिकारहि राजा। नाम कलिंद भक्त रघुराजा॥
ते बालक देखनको पाये। हर्ष गात लै गोद चढ़ाये॥
दुष्टबुद्धिके सेवक सोई। पाछे शिशु हर्ष मन होई॥
सचावतो तासु लिय आही। बालक लेकर दीन्ह्यो ताही॥
पुत्र सरिस प्रतिपालन कीन्ह्यो। गुरुको सौंपि पढ़े कह दीन्ह्यो
जैसे हरि प्रह्लाद पुकारे। कृष्ण ध्यान इन तैसे धारे॥
गुरु तब जाय कुलिंदहि कहई। तुव सुत बाउर हरि हरि कहई॥
औरहु कछू बात नहिं अहई। तब कुलिंद गुरुसों अस कहई॥
सात वर्षमहँ विद्या देहौं। यज्ञ रु जाप पवित्र सिखैहौं॥
जादिन ते सुख पायऊ, राजा शिशु धन वृद्धि।
कृष्ण सदाहीं जपत शिशु, सर्व तासुकर सिद्धि॥
सात वर्ष मों यज्ञ कराये। पुत्रहिं तबै पढ़न बैठाये॥
वेद पुराण शास्त्र तौ पाये। चत्री व्रत सब अस्त्र सिखाये॥
पारथ मनहि हर्ष उपराजू। ऐसे भक्तहि देखब आजू॥
पन्द्रह वर्षके भये कुमारा। दुर्ग विजय कीन्हा संचारा॥
बहुतक देश जीति धन लाये। अपने देश अनेक बसाये॥
द्विज वैष्णव तौ अगणित राखे। ग्राम भूमि दे प्रीतिहि भाखे॥
ग्राम ग्राममहँ देवल दीन्हा। कूप तड़ाग बाग बहु कीन्हा॥
घर घर सबै जपैं भगवाना। श्रवण करैं सब वेद पुराना॥

सबही व्रत एकादशि अहहीं । परमानन्द प्रजा सब रहहीं ॥
दुर्ग विजय करि गृह पगधारे । आरति हर्षित मातु उतारे ॥

रूप देखि सब मोहित, गृहमें गयो कुमार ।
कह कुलिंद कुन्तलपुरी, आहै भूप हमार ॥

तिन्हकहँ वस्तु पठाये कञ्चन । बारह सेर सौंप गृह रञ्चन ॥
सेर षष्ट रानी सचिवन ते । सो सुत जाहु सेवकहि गनते ॥
पत्री लिखि दीनी ता हाथा । औ कञ्चन दीन्हा है साथा ॥
गयो पंथ में पहुँचे ताहा । जा दिनव्रत एकादशि आहा ॥
करि अस्नान ध्यान मन दयऊ । तब मन्त्रीके गृहको गयऊ ॥
भीगे वस्त्र देखि सञ्चारा । मन्त्री कुशल पूंछि विस्तारा ॥
कहे कुशल तो सबै सँदेशा । और वस्तु तब दीन्ह प्रवेशा ॥
पत्री पढ़ी सुनी सब बाता । दुर्ग विजय देवस सख्याता ॥
तब भोजनकहँ मन्त्री कहई । सर्व प्रकार भवन मम अहई ॥
चन्द्रहास भाष्यो द्विज पाहीं । एकादशी अन्न ना खाहीं ॥

प्रातकाल है द्वादशी, पारण कीन्हो जानि ।
बिदा होन जब लागेऊ, मन्त्री कहा बखानि ॥

चन्दनपुर हम देखन जाई । विदा मांगि नृपते चलि आई ॥
राज्य कार्य्य मदनहि जो दीन्हा । चन्दनपुर मंत्री शुभ कीन्हा ॥
जाय दीख चन्दनपुर थाना । वही ग्राम कीधौं है आना ॥
देखत मन महँ चिन्ता भयऊ । तब कुलिंदके गृहको गयऊ ॥
बहु आनन्द कुलिंदहि करही । तब मन्त्री पूछन मन धरही ॥

जब तुम्हरे गृह बालक भयऊ । मोहिं खबरि काहू नहिं दयऊ ॥
कहै कुलिन्द नहीं तिय जाये । कानन विचरत बालक पाये ॥
छठई अँगुरी काटी कोई । बालक व्याकुल बनमहँ रोई ॥
हम लै आये पाले आनी । मन्त्री सुनत बुद्धि हैरानी ॥
जाना निश्चय बालक जो है । चाण्डाल नहिं मारा सो है ॥

अस्त्र शैल सम लागई, मन आनन्द न पाव ।
केहि विधि बालक मारिये, काधौं मन्त्रहि आव ।

करिहौं झूठ मुनिनकी बानी । चन्द्रहासते कहा बखानी ॥
कागज मसी कलम लै आओ । लै पत्री तुम मम गृह जाओ ॥
चन्द्रहास जानीकै दयऊ । मन में मन्त्री शोचत भयऊ ॥
प्रगटहि बधे द्वंद्व बहु होई । गरलहि देकै मारै सोई ॥
पत्री लिखे मदन को ताहा । सोसति मदनपुत्र तो आहा ॥
यही हेतु पत्री लिखि दयऊ । चन्द्रहास गति दर्शन भयऊ ॥
शील पराक्रम पण्डित सोई । हम संपतिको ठाकुर होई ॥
कछु विचार हृदय नहिं कीजै । तुरत विष याकहँ सुत दीजै ॥
सबही काम सिद्ध तब होई । कागजमांहि छाप करु सोई ॥
चन्द्रहासको पाती दीन्हा । मम गृह जाहु बोल अस लीन्हा ॥

पत्रीकर में लैतबै, कहै पितहि विरतन्त ।
पाछे मातापहँ गये, विदा होन सुत सन्त ॥

माता तबहीं आरति कीन्हा । रचक देव कहै तब लीन्हा ॥
पद्मनाभ ऊदर हैं माधो । दीपहरण नरसिंह हि साधो ॥

कटि मधुसूदन मखपति जानू । मुख नारायण रक्ष प्रमानू ॥
वक्षस्थल माहीं ऋषि केशो । सब तनु रक्षक पवन नरेशो ॥
इस्त्री लेकर गृह को ऐहैं । मनोकाम तुरतै सिधि पैहैं ॥
करि प्रणाम माता को चले । ह्वै सवार हय मोदित भले ॥
पत्री पाग माहिं तब कीन्हे । उत्तम हार शीश सों लीन्हे ॥
चन्द्रहास तब उपमा पाये । मानहु दूलह व्याहन आये ॥

कुन्तल पुर पहुँचे तबै, बाहर ग्राम सुदेष ।
मध्य दिवस आये तबै, जहँवां बाग विशेष ॥

शीतल छाहँ जु देखन पाये । चन्द्रहास विश्राम कराये ॥
गज अरु अश्व अम्ब तरु बाधे । तृण अरु जल दै हर्षित साधे ॥
पांचौ जने शयन मन दये । यहि अन्तर यह कौतुक भये ॥
नृपकन्या तौ अनुपम बामा । पञ्चक मालिन ताके नामा ॥
मन्त्रीको कन्या तौ अहै । सङ्गहिं सखी अनेकन रहै ॥
वहि सर माहिं सबै तो गई । तूरि पुष्प न्हाती फिर भई ॥
कौतुक न्हान सबै तो कियऊ । पाछे पग गृहको तब दयऊ ॥
पाछे विषया चली विशेखी । तहँवा चन्द्रहासको देखी ॥
रूप देखि मोहित भयो भारी । वही ठांव विलमी घरि चारी ॥
अश्वहि किये प्रणाम बनाई । हे प्रिय जनु विधि देहु जगाई ॥

पुरुष निकट गइ नारि तब, देखतिरूप अघाय ॥
पिता हाथकी पत्रिका, तासु पागमहँ पाय ॥

छाप खोलिक पाती पढ़े। महाशोच तौ मनमहँ बढ़े ॥
विपद्दै यहिको तुरतहि मारैं। तब का बन जब सबै बिगारैं ॥
रूप देखि भइ मोहित नारी। मनमा तब इक युक्ति विचारी ॥
नख कनिष्टते कज्जल लीन्हा। जहँ विष तहँ विषया के दीन्हा ॥
पूरब विधि तौ छाप बनाई। बांधे पत्न प्रथम जहँ पाई ॥
चली सखिनमहँ मिलि सो जाई। नाना कौतुक सखिन बनाई
पूर्व देखि तब रही लोभाई। लागी कौतुक करैं सोहाई ॥
तब कन्या अपने गृह गई। सांझ पहरको वेरा भई ॥
चन्द्रहास उठिके मुँह धोवै। खाये पान मगन मन होवै ॥
गजारूढ़ ह्वै चलते भये। मन्त्री गृह अभ्यन्तर गये ॥

द्वार द्वार प्रतिहार तौ, छठे द्वार महँ जात।
सप्तम द्वारे शूर हैं, अष्ट द्वार सख्यात ॥

तिन तौ जाय मदन सों कहा। चन्द्रहास द्वारेमहँ रहा ॥
वेद पुराण सुनै तो आहा। सुनत तुरन्त चले उठि ताहा ॥
बाहर आय भेट हियलाई। भीतरको सो गयो लिवाई ॥
कुशल प्रश्न पूछे मन दीन्हा। सबै कुशल कहने तब लीन्हा ॥
गूढ़ पत्न तब तात पठाये। यह पत्नी पढ़ि बूझहु जाये ॥
पढ़ने मदन सभा महँ लागे। सो सति मदन लिखाहे आगे ॥
यही हेतु पत्नी लिखि दये। चन्द्रहास गति सुन्दर लये ॥
गोत्र पराक्रम पण्डित सोई। हम सम्पति कर ठाकुर होई ॥

कछु विचार हृदय नहिं कीजै। तुरतहिं विषया व्याहि सो दीज
पूरण कार्य्य सिद्धि तब होई। मदन पढ़ै चिट्ठी महँ सोई॥

हर्षित मदन हृदयमहँ, तुर्त ज्योतिषी लाय।
सर्व सुयोग सुमङ्गल, लग्न विवाह धराय॥

विषया तहां मनाव भवानी। चन्द्रहास वरदे कल्यानी॥
वृतिया व्रत करिहौं मैं तोरी। तुम जो आश पूजावहु मोरी॥
अन्तःपुरै मदन तब गये। सब बिरत्तान्त मातुपहँ कहे॥
गोधन समय व्याह परमाना। चन्द्रहास वर विषया बामा॥
विषया ते सब सखिन सुनाई। सुनतै विजया लज्जा पाई॥
लग्न भये तब बाजन बाजे। मङ्गलचार सखीगण साजे॥
चन्द्रहासको तब अन्हवाये। विषयाको श्रृङ्गार बनाये॥
विविध प्रकार लग्न धरवाये। ब्राह्मण प्रोहित तहां बोलाये॥
गोत्र पूंछि कह तब मन लाई। चन्द्रहास तब बात सुनाई॥
माता पिता गोत्र हरि अहई। ले कुलिन्द पारावति कहई॥

शाखोच्चार उचारि कै, वेद जो विविध प्रमान।
शास्त्रधर्म्म कुलधर्म्म मत, मदन देत है दान॥

कन्यादान मदन तब कीन्हा। गज तुरङ्ग मणि मुक्ता दीन्हा॥
रजत सुवर्ण बहुत तेहि दीन्हा। सब भण्डार शून्य तो कीन्हा
होम करी गँठि बन्धन भयऊ। भांवरि सात अग्निपर दयऊ॥
दक्षिण ब्राह्मण सबहिन पाये। यहि प्रकार ते व्याह कराये॥
सब द्विज और पुरोहित आये। दान देय सब विदा कराये॥

मङ्गलचार युवति जन गाये। बहुत गुणी जन मँगता आये ॥
विष देवायके मारन चहई। हरि सहाय तो नारद कहई ॥
केवल हरिहो सदा मनलाये। विष देते विषया सो पाये ॥
परमभक्त प्रभु कपट न करई। एक पिता भक्ती मन धरई ॥
ताहि सदा हरि रचक अहई। काह करै विष नारद कहई ॥

मङ्गलदायक वही प्रभु, नारद कहा बखानि।
वैशम्पायन भाषेऊ, सुनत दुःखकी हानि ॥

दुष्टबुद्धि चन्दनपुर माहीं। तब कुलिन्दको पाये ताहीं ॥
प्रजा लोगको दण्डै ताहा। महाकष्ट चन्दनपुर माहा ॥
बहु प्रकारते कष्ट दिखावै। यहि विधि सबसों धन मँगवावै ॥
मठ देवालय देखत जरई। महाकष्ट कालिदहि करई ॥
लूटि मारि लीन्हा जब देशा। तब कुलिदको भई अँदेशा ॥
मन्त्री महा हर्ष मन भयऊ। जाना शत्रु नाशि अब गयऊ ॥
इक दिन बसि दूजे दिन गयऊ। तीजे अन्त भोर जब भयऊ ॥
हर्षित ह्वै चण्डोल सवारा। तुरत आपने पुर पगुधारा ॥
सौ तीन सौ कहार सो आये। तेहि चँडोल सम पवन चलाये ॥
मारग मांहि सर्प यक रहई। विषया खाकी बातें कहई ॥

मूँह कलश मो हम हते, देखा विषया व्याह।
बूझा नहिं सो मन्त्रिने, चला हर्ष मनमाह ॥

बाद्य शब्द सुनियें मनभङ्गा। विधना कीन्ह छलको भङ्गा ॥
गृहके निकट पियादे भयऊ। जहँ मङ्गल जन तहँवां गयऊ ॥

व्याह अर्थ सबही तहँ कहेऊ । मन्त्री सुनत क्रोध उर दहेऊ ॥
भाषे चन्द्रहास है जाना । मङ्गल जन भाषे परमाना ॥
आगे जात द्विजनको देखा । आशिर्वाद देत द्विजपेखा ॥
चन्द्रहास वर भाग्यन पाये । सुनतहि मन्त्री मारन धाये ॥
गांठि गहे बहु क्रोधित पागे । देखत सब विप्र तब भागे ॥
काहु यज्ञमे सूत्र उतारो । काहू कुश पैंती अण्डारो ॥
आगे द्विज गृह मन्त्री आये । चित्र विचित्रहि देखन पाये ॥
इस्त्री धूप दीप लै आई । तब मन्त्री पूछा मनलाई ॥

कहा देय कह पायऊ, मङ्गल कौन उपाय ।
चन्द्रहास कहँ पायऊ, इस्त्री कहैं बुझाय ॥

पूछे काह तासु कह दीन्हा । इस्त्री सबै निवेदन कीन्हा ॥
धन रतनन दे कन्या दीन्हा । सुनत क्रोध मन्त्री तब कीन्हा ॥
क्रोधवन्त मन्त्री चलि आगे । वर कन्या तौ चरणन लागे ॥
क्रोधित नयन सो देखत अहई । सत्य असत्य न एको कहई ॥
अग्र बैठिकै मदन बुलाये । धिक धिक करि तब बात सुनाये ॥
पत्री पढ़िकै काम न कीन्हा । मदन जोरि कर बोलै लीन्हा ॥
धन अरु रत्न अश्व गज दयऊ । सब भण्डार सून तब भयऊ ॥
सुनतै अधिक क्रोध उर भयऊ । जा वनवास तु आज्ञा दयऊ ॥
मदन कहा मम दोष न दीजै । का अपराध प्रगट तेहि कीजै ॥
एक घाटि भइहै मैं जाना । नहीं कुलिन्द बुलायो माना ॥

आज्ञा दीन्ही जाहि हम, लाओ चरण मनाय।
तुमने लिखा सु सत्य है, जरहु काहि मन लाय॥
सुनते मन्त्री वहुते जरई। कर मींजे ओ हाहा करई॥
मन्त्री कह वह पत्री लाओ। बांचि अर्थ तौ हमैं सुनाओ॥
मदन तुरन्त पत्रि लै आये। विषया नाम तु तुर्त बताये॥
देखत पत्री विस्मय भयऊ। वहुत वोध तौ पुत्रहि दयऊ॥
विधिका लिखा मिटै नहि भाई। आन करत आनै हो जाई॥
करि सन्तोष तु पोथी लीन्हा। चन्द्रहास तब विनती कीन्हा॥
जनि कछु संशय करु मनमाहीं। तुम तो हमरे पितु सम आहीं॥
कपट रूप भाष्यो तब वाता। मनहि विचारै वध सख्याता॥
यहि हतिके कन्या विधवाओं। करि छल येहि तुर्त मरवाओं॥
बोलि चँडाल कहे यह वानी। प्रथमहि कपट करेहु अज्ञानी॥
अब तौ मानहु वात मम, लै करबान कृपान।
पुर बाहर है चण्डि गृह, छिपि रहिओ सज्ञान॥
सन्ध्या जाय मारियो ताहीं। वहुतै धन पैहो मम पाहीं॥
तब चण्डाल जाय छिपि रहेऊ। चन्द्रहास सों मन्त्री कहेऊ॥
हमरे कुलकी चण्डी आहा। पूजहु जाय कियो है व्याहा॥
सन्ध्या समय अकेले जैयो। चण्डी कहँ पूजा दै ऐयो॥
सुनत बात तौ पूजन चलेऊ। मदन गये राजा गृह भलेऊ॥
कुन्तल राजे सपना पाई। गालव प्रोहितको समुझाई॥
विना शीश देखा परछाहीं। कहो बुझाय कौन फल आहीं॥

गालव कहै अमङ्गल अहई । अन्त निकट आये मुनि कहई ॥
और परीक्षा बहुत बताई । जाते मृत्यु जान सब राई ॥
बहुत अरिष्ट ब सुने भुआरा । ताको नहीं करे विस्तारा ॥

कुन्तल नृपति मदनते, कही बात समुझाय ।
चन्द्रहासको राज्य दै, हम तप कानन जाय ॥

कन्यादान राज पद पाये । तुरतहि चन्द्रहासको लाये ॥
गोधुलि बेरा सब चलि आहीं । आगे और लग्न है नाहीं ॥
सुनतहि मदन तुरन्त सिधाये । मगमहँ चन्द्रहासको पाये ॥
धूप दीप नैवेद्य सुहाये । कहँ लै चल्यो पूंछि मनलाये ॥
चन्द्रहास कह मन्त्रि पठाये । अकसर चण्डी पूजन आये ॥
मदन कह्यो हम पूजैं जाई । तुमहि तुरन्त हँकारत राई ॥
चन्दन पुष्प जो हमको दीजै । आप विजय राजा पहँकीजै ॥
लै नैवेद्य मदन तब चलेऊ । चन्द्रहास नृप गृह गयो भलेउ ॥
मदन कहै अब असगुन भयऊ । मनमहँ अतिशय चिन्ता कियऊ

तब नरेश अभिषेक करि, दीन्हा कन्यादान ।
राज्यदेश भण्डार सब, दीन्हें हर्ष प्रमान ॥

राज्य देश संकल्पहि दीन्हा । राजा बनहि गमन तब कीन्हा ॥
मदन गये चण्डी गृह माहीं । मृत्यु भवन ह्वै गो तब ताहीं ॥
चाण्डालन तब कीन्हे घाऊ । भूल खड्ग लै घाव लगाऊ ॥
मदन तबहिं चण्डीते कहा । हमको बलि दीन्हे तुव अहा ॥
परस्वारथ किय मैं गो मारा । माता पूजत तुम्हने मारा ॥

मैं नहिं महिषासुर हौं माता । रक्तबीज नहिं असन सख्याता ॥
और निशुम्भ नहीं हौं माई । परमज्योति तुम सुन मन लाई ॥
यह कहि प्राण अन्त तब भयऊ । सो चण्डाल सबै गृह गयऊ ॥
चन्द्रहास राज्यासन पाये । मन्त्री गृहले लिया सिधाये ॥
दूत जाय मन्त्रिहि समुझाये । कहे जाय सब बात बुझाये ॥

राजा कन्यादान दिय, करि नृप बनै पयान ।
मन्त्रि बात तब सुनतही, लागे शैल समान ॥

चन्द्रहास जब आये आगे । कन्या सहित चरण तब लागे ॥
मन्त्री पूंछ चण्डि गृह माहीं । गये हते कौधौं पुनि नाहीं ॥
चन्द्रहास कह मदन सिधाये । हमहि नृपतिके भवन पठाये ॥
चन्द्रहास कहि गृह को गयऊ । पुत्र शोक मन्त्रीकहँ भयऊ ॥
रोवत चलि भो चण्डी पाहां । अन्धकार रजनी भइ ताहां ॥
पुनि श्मशानमहँ आये जवहीं । भूत प्रेत सब भागे तवहीं ॥
बरते चिता काठ यक लाये । तेहि उजियार चण्डि गृह आये ॥
डारि काठ तब पुत्र उठाये । ग्रीव लगाय रुदन मन लाये ॥
मण्डपमाहँ खम्भ यक आहा । मारे शीश खम्भके माहा ॥
मृतक भयो मन्त्री परमाना । यहि अन्तर तब भयो विहाना ॥

द्विज पूजनकहँ गयो जब, देखा गृह मो जाय ।
मन्त्री मदन परे हते, चण्डी मण्डप आय ॥

विप्र जाय राजाते कहऊ । चन्द्रहास तहँपर तब गयऊ ॥
बहु अस्तुति चण्डीको करई । कुण्ड खनाय यज्ञ सञ्चरई ॥

घृत चीनी यव तिल तब लीन्हा । वेद मन्त्र आवाहन कीन्हा ॥
चण्डीपहँ राजा अस कहई । तूतो शक्ति मातु जग अहई ॥
मोरे हेतु पूजने आये । मोते रिस करि बलि यह खाये ॥
यह कहिकै तब होम शरीरा । सर्व शरीर होमि नृप बीरा ॥
पाछे माथ उतारन चहई । काढि खड़्ग हाथेमहँ गहई ॥
गह्यो हाथ तब हर्षि भवानी । चन्द्रहास यह वचन बखानी ॥

पाछे मांग्यो भूपने, ये दोउ देहु जिआय ।
चन्द्रहास यह भाषेऊ, सुनहु चण्डिका माय ।

तब हँसि चण्डी कह मृदुबानी । अचल भक्ति होइहि सज्ञानी ॥
बालापनका चरित तुम्हारा । सो कहि मैं गावत संसारा ॥
मुँदो नयन मैं देउँ जिआई । सुनत नयन मूँद्यो तब राई ॥
मन्त्री मदनहि दियेे जगाई । अन्तर्द्धान चण्डि ह्वै जाई ॥
नयन खोलिकै राजा देख्यो । उठे दोउ तब हर्ष विशेख्यो ॥
तीनहुँ जन तब मग्नहि गयऊ । चन्द्रहास अस राजा भयऊ ॥
तब पारथ पूछै मन लाई । फेरि कुलिन्द मिले किमि आई ॥
पारथ सों नारदमुनि कहई । चन्दनपुर कुलिन्द दुख सहई ॥
जो कछु धन होते परमाना । सब दे दियो द्विजन को दाना ॥

कहि विचार पावक दहन, मरै पाय दुख पाय ।
संशय यह तब मन्त्रि सन, कहा दूत कोइ जाय ॥

तब मन्त्री चन्दनपुर गयऊ । बहु प्रकार अनुहारी कियऊ ॥
चन्द्रहास चन्दनपुर गयऊ । देखि कुलिन्द हर्ष मन भयऊ ॥

सब समेत कुन्तलपुर आये । परमहर्ष ते राज रजाये ॥
वर्ष तीनि राजा तप कियऊ । चन्द्रहास को सुत तब भयऊ ॥
विषया सुत मकरध्वज नामा । पद्म नेत्र सुन्दर परमाना ॥
पञ्जक औ मालिनी विद्वानी । दोनों गर्भ दोउ सुत जानी ॥
बाल दशा बीते जब ताही । शालग्राम साध व्रत आही ॥
शिला महातम उत्तम अहई । शालग्राम निराञ्जन लहई ॥
मृत्यु समय चरणोदक पावै । पापी तरि वैकुण्ठ सिधावै ॥
निरमायल जो भच्छत कोई । देव पितृ सन्तुष्टित होई ॥
दानी दाता द्वीपन राऊ । चन्दन लेपन मुक्ति उपाऊ ॥

शालग्राम जहां रहैं, देव पितृ सब ताहि ।
सर्व तीर्थ जल पुण्यती, चरणामृतके माहिं ॥

तुलसी सम नी तरु नहिं आहीं । विष्णु समान देवता नाही ॥
तुलसी मञ्जरि हरिको पाशा । देखत पाप होत हैं नाशा ॥
ऐसे चन्द्रहास नृप भयऊ । सबै कथा तुमते कहि दयऊ ॥
नारद देवलोक कहँ गयऊ । सुनत पार्थ आनन्दित भयऊ ॥
दल लेकर कुन्तलपुर आये । राजा अश्वहि देखन पाये ॥
पत्र पढ़े राजा सुख पाये । धर्मराजको अश्व जु आये ॥
आज देखिबे श्रीपति नैना । चन्द्रहास हर्षित कह वैना ।
मकरध्वजते बात जनाई । पूरब दिवस निकट भो आई ॥
युद्ध रचे जग होहै नाशा । लेकै अश्व मिलो हरि पासा ॥

पन्द्रह दिन पर्यन्त हय, रक्षा कीन्हयो राव ।
पाछे मिलने हेतु तव, चन्द्रहास नृप आव ॥
तिलक सुतुलसी माल विराजै । मोरपंख रथ ऊपर छाजै ॥
तब श्रीपति देखै कहँ पाये । होय चतुर्भुज तुरत सिधाये ॥
गरुड़ चढ़े दरशन वहि दीन्हे । चारो भुजते अंकम लीन्हे ॥
चन्द्रहास चरनमें परेऊ । बहु प्रकार ते अस्तुति करेऊ ॥
तब राजासे कहे भगवाना । इनके हृदय मोर अस्थाना ॥
आकर मिलो भक्त यह अहई । तब पारथ श्रीपति तेकहई ॥
भारत माहँ कहै यदुराई । प्रणको गुन आये दुखदाई ॥
ताको मिलो कहो का राजा । क्षत्री धर्म होत है लाजा ॥
तब हरि भाषे यह तनु मेरा । मिले आयकै हर्ष घनेरा ॥
प्रभु प्रतापते नृपति सो, भाषे श्री यदुराय ।
सुनत बिहँसिकै पारथ, मिले तुरन्तहि जाय ॥
प्रेम हर्ष भै अंकम गहेऊ । चन्द्रहास राजाते कहेऊ ॥
मो मन करना हती लराई । पै इक वर्ष आय नियराई ॥
युद्धहि रचे यज्ञ कर भङ्गा । ता कारण मिलाप तुव सङ्गा ॥
जहँ श्रीपती तहां रण कैसो । यह अचरज मनमांह अँदेशो ॥
अश्व रुध न राजा तब जाना । राजा दीन्ह चरण भगवाना ॥
श्रीपति राजा ता सुत किये । प्रेम हर्ष आनन्दित भये ॥
तीन दिवस रह तेहि पुर माहां । छूटो अश्व चलो पुनि ताहां ॥
चन्द्रहास कहँ तब सँग लीन्हा । बालकते जिन रक्षा कीन्हा ॥

ते पुर छंडि रहब घर माहीं । कृष्ण सङ्ग सना करि जाहीं ॥
ले दल चन्द्रहास तब चलेऊ । पारथ सङ्ग चले सुख भलेऊ ॥

प्रेम हर्ष नारायण, पारथ परमानन्द ।
चन्द्रहास सङ्गहि चले, विष्णु भक्त सानन्द ॥
चला अश्व भर्मत फिरे, नाना देश विदेश ।
अस न कोई नर जगत महँ, पकरे अश्व नरेश ॥

इति द्वादश अध्याय ॥१२ ॥

वैशम्पायन कहैं बखानी । चला अश्व विधिवत परमानी ॥
जौने जौन देश हय गयऊ । सबै नृपति पारथ वश भयऊ ॥
पाछे अश्व चले जग माहीं । सिन्धुमांह परवेश्यो ताहीं ॥
पारथ तब शोचन मन लागे । दीन वचन भाषे हरि आगे ॥
कहो कृष्ण का करौं उपाई । तब पारथसों कह यदुराई ॥
सुन हंसध्वज पुत्र तुम्हारा । मोरध्वज हम पञ्च भुवारा ॥
ये सब रथौ उदधि महँ चलहीं । दरशन मात्र रिपूदल भलहीं ॥
पांचौ रथ सागरमहँ गयऊ । जलमें रथ चलते तब भयऊ ॥
छाये मकरा देवल छाये । पशु पक्षी तहँपर बहु आये ॥
देख पुनि तहँ दालभ मुनिवर । वटको पत्र धरे शिर ऊपर ॥

नक्षा भेदौ लाल भ्रू, औ बहु अहै भुअङ्ग ।
नमस्कार गे कीन्ह तब, पांचौ रथ इक सङ्ग ॥

पारथ कहै गेह किन करहू। ऐसा कष्ट हेतु केहि धरहू ॥
मुनी कहै दुख गृहमें अहई। इस्त्रीग्रहण पाप बहु रहई ॥
क्षण क्षण माहिं कष्टहै नाना। पैहैं पाप झूंठ परवाना ॥
पातक नहीं धर्म्म पुनि नाना। पाप पुण्य कर बहुत बिधाना ॥
सुत नारी कब देखब नैना। माया विष्णु सर्व सुख चैना ॥
ताते थोरे जीवन काजा। ताते गृह कीजै नहिं राजा ॥
मार्कण्डेय वशिष्ठ सभागे। लोमश आदि कहन अस लागे ॥
प्रलय समय हम देखा जेते। पारथ बात कहत हैं तेते ॥

एक वट तरे आरहै, तासु एकसौ डार।
एक पत्रके ऊपरै, बाल रूप कर्तार ॥

बालरूप वटपत्रहि पहई। पद अँगुष्ठसों चाटत रहई ॥
तै प्रभु जाना मैं मनमाहा। एही कृष्ण सन्त जग आहा ॥
अब मोको आलिङ्गन दीजै। धर्म्मराजको यज्ञ सुकीजै ॥
श्रीपति कहैं मुनी सों बाता। महा मुनी तुम हो सख्याता ॥
एक बार करि गर्व जु नाना। हरि माया इक पवन उड़ाना ॥
मोहिं समेत गयो ल तहां। अष्टमुखी ब्रह्मा है जहां ॥
उन्ह पूछा तुमको अह अहो। इन कह ब्रह्मा जानत रहो ॥
उन्ह कह अष्ट वदन हैं मोहीं। कह ब्रह्मा मुख कह को तोहीं ॥

अष्ट वदन ब्रह्मा हम, तुमहौ कौन प्रकार।
यहै रूपतो बोलतो, भयो पवन सञ्चार ॥

दूनो ब्रह्मा गे तब तहां। सोलहा मुख ब्रह्मा हैं जहां॥
उनहु एक परकार सुनाये। तीनौ ब्रह्मा पवन उड़ाये॥
बत्तिस वदन पाहँ तब गयऊ। उनहु रारितौ यहिविधि कियऊ॥
चारो ब्रह्मा पवन उड़ाये। चौंसठ मुख पाहीं पहुँचाये॥
उनहू रारि करैं मन लाई। पांचौ ब्रह्मा पवन उड़ाई॥
एक सौ अट्ठाइस मुख जहां। उनहू गर्व बात तौ कहा॥
छाहौ ब्रह्मा उड़िगे तहां। लक्षानन ब्रह्मा रहते जहां॥
तिनने सबको ज्ञान सिखायो। यह दालभ मुनि कथा सुनायो॥
ऐसो ब्रह्मा मान गमाये। बकदालभ मुनि सबै बताये॥
मुनिको लै चण्डोल चढ़ाई। अश्व दोउ लाये यदुराई॥

चले अश्व तब लेके, बकदालभ मुनि साथ।
वैशम्पायन कहत हैं, सुन जन्मेजय नाथ॥

चले अश्व तब आये तहां। जयद्रथको बालक है जहां॥
दूतन कहा हमारे देशा। अर्ज्जुन कृष्ण कौन परवेशा॥
जो पारथ जयद्रथहि मारो। सुनत सुवत्र तेहि भये भुवारो॥
सभामाहि मृतक तौ भयऊ। ताको माता रोदन ठयेऊ॥
रोदन करत हरी पहँ आई। पारथ हम महादुख दाई॥
पतो पुत्र मारयो दुइ सहो। देखत दयावन्त हरि कहो॥
चलो पुत्र तब देखौं जाई। सभामाहँ पहुँचे यदुराई॥
देखा नृपति अचेतन परेऊ। श्री हरि हाथ शीश पर धरेऊ॥

उठे पुत्र कहते भय त्यागो। सुनतहि बात तुरत सो जागो॥
जागे हर्षित भै महतारी। पुत्रहि लै पारथ पगढारी॥

पारथ विनय कीन्ह बहु, नेवता दीना थाल।
पुत्र सहित हर्षित मन, चले यज्ञके काल॥

श्रीपति कहत पार्थके पाहीं। वर्ष तुलान चलो गृहमाहीं॥
दूनो अश्व गये वनवारी। सबै नृपनसों कहा मुरारी॥
नीलध्वज हंसध्वज राऊ। वीर ब्रह्म मोरध्वज नाऊ॥
चन्द्रहास अनुशल्या अहई। यौवनाश्व वेगहि तब कहई॥
वृषकेतू औ काम कुमारा। सबसों भाषो श्रीभतारा॥
हम तो जात अग्रगृह आछे। तुम सब मिलिके आवहु पाछे॥
यह कहि हरि हस्तिनपुर गयऊ। आनन्दित तब अर्ज्जुन भयऊ॥
राजा सुनत हर्ष मन माना। हरिको दै आलिङ्गन दाना॥
जहां जहांपर भै रण करणी। करि विस्तार सबै हरि वरणी॥

भीम आदि पाण्डव सबै, परशे सबै मुरारि।
रुक्मिणि आदि नारि जहां, तहां गये वनवारि॥

भीम सङ्ग हरिगै जहँ नारी। सतभामा परिहास विचारी॥
नाना कौतुक भये अपारा। ताको नहीं करें विस्तारा॥
तब हरि भीम नृपतिपहँ आये। चले अग्र राजा समुझाये॥
धृतराष्ट्रक आगे तब कीजै। आगे हो पारथ कहँ लीजै॥
कुन्ती आदि सहित गन्धारी। औ जेती श्रीपतिको नारी॥
वेदध्वनि कर ब्राह्मण चलेऊ। कीन्हा गवन लोग सब भलेऊ॥

दधी दूब अक्षत औ माला। यह सब लेइ चले द्विजपाला॥
आरति बहुते भांति सँवारी। चलीं साजि क्षत्तिनकी नारी॥
शङ्खध्वनि तहँ होत अपारा। नाना भ्रमर करत गुञ्जारा॥
उतते अश्व अग्र हैं दोऊ। वकदालभ्य सङ्ग हैं सोऊ॥

भूप भूप सब भटत, मिलत सबै सरदार।
इस्तीसे इस्ती सबै, लेत अहैं इकबार॥

मिलिकै सबै नगर महँ गयऊ। धर्म्मराज आनन्दित भयऊ॥
राजा सब तब करैं जोहारा। पुण्य प्रतापी धर्म्मकुमारा॥
सब राजाको करि सन्माना। यज्ञ रचा तब वेद विधाना॥
अश्वमेधको मण्डप साजै। अष्ट द्वार तहँ सरस विराजै॥
वेलि पर्ण औ पुष्प बनाये। यज्ञ साज सबही निर्माये॥
वकदालभ जो वर्ण धर्म्मा। लागे मुनी यज्ञके कर्म्मा॥
वामदेव वशिष्ठमुनि आये। पाराशर मुनि अत्रि सिधाये॥
भरद्वाज ऋषि गौतम आये। मुनि अङ्गिरा आइ मन भाये॥
आठौ मुनी दयाके पाला। वरन कीन्ह है धर्म्मभुआला॥
छोड़न भै नृप द्रौपदि रानी। हरिणा सिह गहे कर जानी॥

धौम्य पुरोहित यह कह्यो, जइये गङ्गातीर।
निज तिरिया लै जाइये, भङ्ग न गङ्गा नीर॥

तिरियन सङ्ग चले सब भलेउ। अरुन्धती वसिष्ठहुँ चलउ॥
कृष्णसङ्ग औरुक्मिणि रानी। प्रभावती प्रद्युम्न प्रमानी॥
ऊषा अरु अनिरुधके जोरी। भीम सुसङ्ग हिड़म्बी तोरी॥

वृषकेतु भद्रावति रानी । मोरध्वज कुमोदनी दानी ॥
यौवनाश्व चन्द्रावति चली । नीलध्वजहि नन्दनी भली ॥
वेद पढ़ैं द्विज सबै सिखाये । नारद सत्यभामा गृह आये ॥
कहे बात रुक्मिणि हरि प्यारी । गांठ जोरि जल हेतु पधारी ॥
तब सतभामा मुनिते कहई । सदा कृष्ण मेरे ढिग रहई ॥
तहां हरी मुनि देखन पाये । ऐसे अष्ट नारिपहँ आये ॥
गोपिन गृह कह देख न जाई । तहँवां देखा श्रीयदुराई ॥

सतभामा श्रीजाम्वमति, रुक्मिणि नारी सङ्ग ।
गांठी जोरी चले हरि, भरन हेतु जल गङ्ग ॥

जलके हेतु तु सबै सिधाये । तब राजा नारदपहँ आये ॥
हरी सहित जेते हैं राजा । गङ्गा माहँ करैं जल काजा ॥
प्रथम शीश पर रुक्मिणि धरेउ । पाछे और सबन सञ्चरेउ ॥
व्यास आदि जल पूजन करेउ । कञ्चन कलश नीरसों भरेउ ॥
चलीं नीर ले सब नृप रानी । अरुन्धती रुक्मिणी बखानी ॥
कलश भार दुखदायक अहई । सुनिये बात जाम्बवति कहई ॥
करपर घर तौ कृष्ण पहारा । शीश न धरै कलशको भारा ॥
बहुते कौतुक दृष्टिन कीन्हो । आये सबै गङ्ग जल लीन्हे ॥
वेदध्वनिके कलश उतारा । युवती गावहिं मङ्गलचारा ॥

श्याम कर्ण जल पान करि, रानी नृप अस्नान ।
द्रौपदि रानी धर्म्मसुत, जैसो यज्ञ विधान ॥

धोती पहिरि मुनी सब आये। उत्तम चन्दन अङ्ग लगाये॥
पारथ भीम देत हरि दाना। राजा सबै किये अस्नाना॥
दछिणा भये यज्ञके हेता। सब कहँ पूजन कियो सचेता॥
वेद उचार मन्त्र तब कीन्हे। धौम भीमते बोले लीन्हे॥
बायें श्रवण अश्वको मारा। ताते चले चीरके धारा॥
तब सबहीं विस्मयके माना। धौम कह्यो भीमहि सुनकाना॥
मारो अश्व होइ द्वै खण्डा। तबही भीम गहे कर खण्डा॥
तबहीं भीम क्रोध करि छांटा। दोय टूकके अश्वहि काटा॥
शिर उड़ि रविमण्डल महँ रहेउ। सुघर अश्व जग जीवन कहेउ॥
हयके हृदय आप हरि मारा। चली हृदय तब रक्तक धारा॥

अश्व ज्योति हरि अङ्गमों, प्रविशत भै तब जाय।
परा अश्व वसुधा विषे, भौ कपूर तनु आय॥

सो कपूर धराहै आगे। व्यास होम करनेको लागे॥
कुण्ड माहिं तब आहुति दीन्हे। तबहीं व्यास कहनकहँ लीन्हे
इन्द्र आगमन परिश्रम करो। तबहीं इन्द्र वचन अनुसरो॥
इन्द्र कह्यो पावक मुख मेरो। आहुति दें सब देव घनेरो॥
अग्निशिखा आहे गुरु पारा। होम करो द्विज वेद उचारा॥
सो कपूरते आहुति दयऊ। तब सब जग संतुष्टित भयऊ॥
यज्ञ धर्म्म आगममें लागे। धर्म्मराजके पातक भागे॥
कृष्ण गह्यो सब राजा ठांय। यज्ञ धर्म्म लीजे तन आय॥

अब आगे कलियुग जो ऐहै । कोइ न ऐसो यज्ञ करैहै ॥
नृपति देव सन्तुष्टित भयऊ । सबै यज्ञके पातक गयऊ ॥

शेषस्नान भुवाल तब, कीन्हा रानी सङ्ग ।
सहस दण्ड धरि छत्र तब, ताने नृपशिर रङ्ग ॥
भयो यज्ञ सब पूरण, भागे पाप अनन्त ।
जहां आप ठाकुर रहे, तहां सबै हर्षन्त ॥

वशम्पायन कथा सुनाये । तौ सब राजा तहां न आये ॥
धर्म्मराज हर्षित मन भयऊ । श्रीहरिको आलिङ्गन कियऊ ॥
पाछे देन लगे सब दाना । जो कछु होवे यज्ञ विधाना ॥
व्यासहि भूमि दान तौ दयऊ । साठ एक बकदालभ भयऊ ॥
एक हस्ति अरु एक तुरङ्गा । कञ्चन माल एक ता सङ्गा ॥
मुक्ता अञ्जलि गऊ हजारा । सेवक चारि तु दिये भुआरा ॥
एकक द्विज तौ एतिक पाये । करि मख सबै दरिद्र भगाये ॥
गज सौ चार तुरङ्ग हजारा । प्रति दिन दीन्हो भूप उदारा ॥
द्विजनको भूषण पहिराये । वैष्णव ब्राह्मण खुशी कराये ॥
प्रेम रु हर्ष धर्म नृप जाना । सिंहासन बैठे भगवाना ॥

अश्वमेध मख पूरण, हरि करि दीन्ह्यो राउ ।
तीन लोक सन्तुष्टित, देवन आनँद पाउ ॥

पाछे नृपति मुनीजन आये । षट्रस भोजन अमृत जिमाये ॥
करि भोजन तब अचमन कीन्हा । खरिका शोधन केशव दीन्हा
तेहि अन्तर ब्राह्मण दो आये । झगरत धर्म्मराजपहँ धाये ॥

एक कहै भूमी मोहि दीन्हा। इनने खेत जुवल करि लीन्हा॥
कहै धान्य बाटी कर लीजै। लेउँ मैं कैसे सो कहि दीजै॥
दूसर कहै भूमि है तेरी। सबै धान्य ह्वै है कत मेरी॥
कृष्ण कह्यो धर्मजके पाहीं। है अन्याय छुटो है नाहीं॥
तीन मास बीते कलि ऐहै। आपन न्याय आप करि लैहै॥
तुम जो दीन बांटि के आधा। ऐसे कनी कपट दुख दाधा॥
यह कह घरको दीन्ह पठाये। पाछे राजन विदा कराये॥

जहां देश है जाहि कर, तहँ तहँ गये नरेश।
अश्वमेध भारत कथा, काटे पाप कलेश॥

विधि संयोग आय बन आवा। वैशम्पायन कथा सुनावा॥
राय युधिष्ठिर कहवे लहेउ। मम अस मख काहू नहिं कहेउ॥
एही बीच नकुल इक आवा। मध्य उच्छिष्टहि बुड़की खावा॥
तन मन देखि बुड़े पे सोई। क्षण बूड़े क्षण ऊपर होई॥
यह अचरज तहँ देखत भयऊ। यहि विधि पहर एक सो गयऊ
कृष्णदेव सो राजा कहई। यह चरित्र देखो कस अहई॥
कांठ माहि बूड़े उतराई। तन मन देखि वहुत पछताई॥
ऐस नकुल मैं कबहुं न देखा। कञ्चनमुख कबहूं न परेखा॥
तबहीं कृष्ण कहा समुझाई। यह वृत्तान्त कहौं मैं गाई॥
पूरब कथा सुनो नरनाहा। जाते एहि मुख कञ्चन आहा॥
सो वृत्तान्त कहौं म ताहीं। जो नृपती तुम पूछेहु मोहीं॥
पूर्व जन्म इक ब्राह्मण रहेऊ। वहुत दुःख तनु व्यापित भयऊ॥

सुत पत्नी द्विजके संग आहा । चारों प्राणी रह सँग माहा ॥
परम दरिद्र दुखित सो रहई । तीरथ व्रतसो फिरि फिरि करई ॥
नेम धर्म्म बहुते सो करई । अस ब्राह्मण शुचिवन्ता रहई ॥
चारो प्राणी बहु शुचिवन्ता । निशि बासर ध्यावत भगवन्ता ॥
भिक्षा मांगि विप्र लै आवै । अर्द्ध अन्न सङ्कल्प करावै ॥
याही विधि बहु दिवस गँवावा । व्यासदेव तब नृपहि सुनावा ॥
चारों प्राणि विप्रसो रहेउ । एकते एक धर्म्म बहु कहेउ ॥

एक दिवस चलि यात्रा, पत्नी सह द्विजराव ।
ऋषि अनङ्ग तहँ भूपती, सबही कृष्ण सुनाव ॥

चला यात्रा विप्र नहाई । चारि दिवस सो अन्न न पाई ॥
क्षुधावन्त ब्राह्मण तब भयऊ । पञ्च दिवस याही विधि गयऊ ॥
छठयें दिवस नगर इक आयो । विधि संयोग तहां कस भायो ॥
जवकर खेत तहां इक अहई । मारग बीच तहां सो रहई ॥
जव काटी किशान लै गयऊ । जव इक पारा तहंपर रहऊ ॥
तब द्विजसुत ब्राह्मणिसों कहेउ । चुनहु आय बुद्धी यह रहेउ ॥
पुत्र सहित द्विज बीनै लीन्हेउ एकक जव चुनि राशि जो कीन्हेउ
जब सब चुनी बनावन गयऊ । तबहीं विप्र कहत अस भयऊ ॥
आयो आधा द्विज तब किहेउ । आधा अंश हाकिमहि दिहेउ ॥
आधा अंश गृहस्थ विचारी । जो उबरा सो लिह्यो सँभारी ॥
सो ब्राह्मणि लैगे जत सारा । जवको चूरन कीन सुसारा ॥
सत्तुपीसि ब्राह्मणि लै आई । ब्राह्मणि दोना पांच बनाई ॥

पांचो पत्र कीन्ह द्विज जबहीं । एकक पत्त चार लिय तबहीं ॥
इकसो अभ्यागतकहँ राखा । अस धर्मिष्ठ कृष्ण तौ भाषा ॥
जबहीं भोजन चाहे लीन्हा । अस्तुति आय विप्र इक कीन्हा ॥
तब द्विज चरण पखारा जाई । बहु आदर आन्यो बैठाई ॥
हर्ष सहित द्विज पत्त जु दीन्हा । तबहीं द्विज कृष्णार्पन कीन्हा ॥
कह्यो विप्र सन्तुष्ट न भयऊ । आपन पत्त जो ब्राह्मण दयऊ ॥
उनहु पत्त द्विज याचन कीन्हा । चारो पत्तर जेवै लीन्हा ।
करि प्रसाद अँचवा पुनि सोई । नीर प्रवाह पुहुमिमें होई ॥
एक नकुल तहँ आव पियासा । ठौर कुँवाके नीर प्रकास ॥
नीर उच्छिष्ट मुखै जब पीहेउ । कञ्चन मुखहि तहांतक भयऊ ॥

असं कौतुक तहँ होत भा, सुनौ राव चितलाय ।
पुनि उच्छिष्ट पानी पियत, सब सुवर्ण हो जाय ॥

नकुल मनहि मन करै हुलासा । अब विधि मोर जो पुरवै आसा ॥
सुना नकुलने यह सदभाऊ । राय युधिष्ठिर यज्ञ कराऊ ॥
बहुत ऋषे आये मखशाला । औरौ बहु आये महिपाला ॥
बड़ बड़ ऋषी तहां चलि आये । प्रेम पुनीत देख मन भाये ॥
औरौ देवमुनी जन भारी । तिनके सँग आये बनवारी ॥
उनकर जूँठ परा तहँ होई । तनु मोरा कञ्चन हो सोई ॥
यह गुण जानि नकुल तहँ आवा । जूँठ माहि तनु आप बुडावा
सो जु देह सुवरण नहि होई । तब तव बुड़को मारे सोई ॥
यह गाथा जब कृष्ण सुनाई । सुनतहि मानभङ्ग भो राई ॥

राय युधिष्ठिर गर्व गमावा। लज्जा वशह्वै शीश नवावा॥
सबै ऋषैकहँ लज्जा आवा। मान महातम सुनत गमावा॥

यह चरित सुन राजा, कृष्ण कहा समुझाय।
सबके मगन जु भड़भे, रहे ऋषी शिरनाय॥

कृष्ण साथ लिय सब परिवारा। द्वारावती नगर पगुधारा॥
प्रेम हर्ष आनन्द उपाये। कृष्ण द्वारका पहुँचे जाये॥
वैशम्पायन कहैं बखानी। अश्वमेधहै पुण्य कहानी॥
दुखी सुनै दारिद्र पराई। रोगी रोग तुरत क्षय जाई॥
निःपुत्री सुनते सुत पावै। पुरुषन सुनत ज्ञान उपजावै॥
सहसन धेनु देइ जो दाना। सर्ब तीर्थ करते अस्नाना॥
पर्व अठारह सुन फल होई। अश्वमेध जानो फल सोई॥
यह चरित सुनिजै मनलाई। यमके दूत निकट नहिं जाई॥
कथा सुनत देते जो दाना। प्रापति देव होंय भगवाना॥
पाण्डव विजय कहे अनुसारा। यह संक्षेप करे विस्तारा॥

पाण्डव विजय कथा यह, पुण्यश्लोक बखान।
अश्वमेध संपूरण, सुनु राजा सज्ञान॥

अश्वमेध मख पातक हरता। राजा सुनौ श्रीपती करता॥
कर श्रद्धा नर सुनै पुराना। तापर रह प्रसन्न भगवाना॥
श्रद्धा जाके मनमहँ नाहीं। सुन अनसुनी एक सम ताहीं॥
मनसा फल प्रापति तब होई। यही सत्यक जानौ सोई॥

मनमों धर ज्ञान गुरुदेवा । मनमें पार होत नर सेवा ॥
श्रद्धा मन जानौ परवाना । ताते परब्रह्म पहिचाना ॥
काम क्रोध मद अक्षय चाहा । भावे ज्ञान कहो का ताहा ॥
का कामीके आगे ज्ञाना । काह क्रोधते भक्ति बखाना ॥
का लम्पटके आगे धर्मा । कामौ काह पुण्यका कर्मा ॥
जेसे ऊसर बीज बोवाये । तैसे यह सब भेद बताये ॥

भारत गाथा हिय धरे, होत पुण्य परवेश ।
मनमें भक्ति न जासुके, सो नहि फल उपदेश ॥

इति त्रयोदश अध्याय ॥ १३ ॥

इति अश्वमेधपर्व्व समाप्त ।

महाभारत।

आश्रमवासिक पर्व ।

ति रघुवर श्रीरामा । भक्त जननको पूरण कामा ॥
ोविन्द सब ताता । वन्दौं पुनि श्रीपितु अरु माता ॥
ब्रादिक देवा । बारबार शिवकी करि सेवा ॥
सु शारद देवी । सविधि काव्यजनकी जो सेवी ॥
क मुनि नारद । हनूमान जो ज्ञान विशारद ॥
ारत भाखा । श्रीप्रभु जब अरके दै राखा ॥
ीपति राजत । मित्रसेनि भूपति तहँ गाजत ॥
महँ गाये । सबलसिंह चौहान बनाये ॥
क्यावन । शुक्लपच्छ दशमी बुध सावन ॥
त कीन्हा । व्यासदेवको सुमिरण कीन्हा ॥
न जौन हैं, हैं लच्मी वश जाहि ।
ैं मिलैं, वन्दतहौं मैं ताहि ॥

श्रीहरिव्यापक जपत सब, तेहिते वन्दिय सर्व।
सबलसिंह चौहान कह, आश्रमवासिक पर्व॥

नृपवर यज्ञ सरावत भयऊ। कछुदिन अधम शंभुवलिगयऊ॥
नृपवर यज्ञ सुभग श्रमभवा। तादिन सभा अनूपम हुवा॥
द्विजन पूजि सह भाइन वैठो। ठौरहि ठौर भूप जन ऐंठो॥
कथा वार्ता विविध प्रकारा। सुरन पूजि नृप कीन्ह जुहारा॥

प्रथमहिं पूजिय गणपतिहिं, जाको सेवा सर्व।
सबलसिंह चौहानकह, भाषा आश्रमपर्व॥

सबजन नृप वैठे आसन प्रति। होइनि यज्ञ ठौर होके अति॥
ताहि समय द्वैपायन आये। नृपसव वन्दि भ्रात मुद पाये॥
सिंहासनोपर नृप वर राजत। नृत्य होत बाजन बहु बाजत॥
वैठे भूप सकल पृथिवीके। अर्ज्जुन भीम युधिष्ठिर नीके॥
वभ्रूवाहन नृप अनुशाला। नीलाम्वुज आदिक महिपाला॥
च्यारो वहु वैठे तहँ राजा। विविध तँबूर तबल जहँ बाजा॥
सकल भूप तहँ रहे वखानो। कहा हुते वलि शारँग पानो॥
कहमुनि सुनु नृप वचन सोहाये। तुवहित हेतु कहत हम गाये॥

रहे दूरिके राय, जे आये नृप यज्ञमहँ।
जे नगीचके आय, निज निज नगरनको गये॥
षटमास की वात, यज्ञान्तर नृप ह्वै गयो।
रहे दूरि नृपतात, द्वैपायन सह भूप मणि॥

नाच होइ तहँ त्रिविध प्रकारा । मुख मोरहिं जोरहिं सब तारा॥
उछरहिं और केश छिटकावहिं । कुच देखाइकै भूप रिझावहिं ॥
द्वादश षोडश वर्ष कि नारी । करहिं नृत्य नटनी सुकुमारी ॥
तासु आभरन कौन बखानै । पहिरे कर्ण मोतिया सानै ॥
त्रिवली तरल तरङ्ग सोहाई । अभिगण नाभि मनोहरताई ॥
कटिकर किंकिणि तहँ छबिछाई । पग नूपुर झनकार सोहाई ॥
कुचयुग चक्रवाक जनु साजै । मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजै ॥

नाचैं नारी मनहुँ रति, अलक झलक छवि होत ।
चन्द्रवदनि मृगिनैनि शिशु, भ्रुकुटी कुटिल उदोत ॥
कुन्दकली समदांत, अधर अनूपम चिबुक तिल ।
कुच सुचक्रकभांत, तिलप्रसून नासा सुभग ॥

यहिविधि नृत्यहोत दिनराती । नृप समाज देखत सुनिपांती ॥
द्वैपायन नृप गे आश्रम को । रैनि व्यतीत मिलन कोकीको ॥
यहि विधि होत रात दिन उत्सौ । आवत देशन केर वकीलौ ॥
जीतत हारत सकल वकीला । करत सुभग हितनृपगणमीला ॥
बभ्रूवाहन नृप दुःशाला । जीवनाथ आदिक महिपाला ॥
करिकरि सैन साजि सब राजा । बिदामांगि गे सहित समाजा॥
लै जनवास बिदा रानिन ह्वै । चलेनृपतिसबश्रीशिवसुतह्वै ॥
करत बड़ाई धर्म्मज केरी । निज निजधाम गये नृपफेरी ॥
इहां हस्तिपुर धर्म्मज राजा । नित नव मङ्गल मोद समाजा ॥
बहुत बर्ष बीते सुखदाई । आगे नृप सुनु कथा चलाई ॥

यक दिन कृष्णचन्द्र बलरामा। पुत्र पौत्र आदिक वर वामा॥
आये धर्म्मराजके धामहिं। यथा उचित सब कीन्ह प्रणामहिं॥
वास कीन्ह श्रीप्रभु बलनागर। कुन्ती भगिनि द्रुपदिमिलिआगर
यहि विधि बीति गये कछु काला। रहे कृष्ण गे हलधर वाला॥

कृष्णचन्द्र नारिन सकल, बलसँग दीन्ह पठाइ।
आपु रहे हस्तिननगर, भ्रातादिक सुख पाइ॥

यहिविधि कृष्णचन्द्र सुखदाई। रहे हस्तिना मास गँवाई॥
यकदिन द्वै ब्राह्मण तहँ आये। तिन्ह बोलाय तिन्ह बात जनाये
इनको भूमि लीन्ह जोतन हित। जोतत रहत सुनो हे नृपनित
तामें मिलो सवन भण्डारा। हमरो हक नहिं ताहि पुकारा॥
सो हम धनहिं कृष्ण नहिं लीजै। यादव पांडु न्याय करि दीजै॥
हमसों अन्न देवते कामा। गड़ो मिलो सो याकर जामा॥
यह सुनि बोलेउ द्विजवर दूसर। नहिं हमार धन उपजो ऊषर॥
हमसों वर्ष दण्डसों रहई। और मिलै सो याकर अहई॥
नाहीं होत अन्न जब याके। तबहूं लेत दण्ड हम साके॥
उपजै जो करोरि धन भाई। तबहूं वहै मिलत है राई॥
उपजा जौन अवनि धनराजा। हमसों नहीं कछु है काजा॥

नृपवर सुनि द्विजवर वचन, कृष्णपाहिं दै ताहि।
कृष्णचन्द्र भाष्यो तिन्हैं, षठमास निरवाहि॥

षठ मास महं तुम द्विज आयो। धर्मराय मुख न्याय करायो॥
यह सुनिगेद्विजनिजनिजधामहिं। सभावन्दिनितप्रतियहकामहि

सुनु आगे नृपसुत अब कथा । मैं गुणगाइ कहत भइ यथा ॥
इकदिन आज्ञा नृपसों लीन्हा । द्विजन बुलाइ दान बहुदीन्हा ॥
ह्वै कै बिदा सुभद्रा पासहि । द्रुपदिहि मिलो बहुरिकै सादहि ॥
मिलि नृप भीमपार्थसोंभेंटत । मन्त्रिहि नकुल मिलिहि संभेटत
कर्णपूत गांधारी मातहि । तौ पितु अंध और बहु जातहि ॥
मिलत सबनसों चाल न कीन्हा । रथह्वै वेगि द्वारकहि चीन्हा॥
मिलत सबन यदुवंशिन आछे । गये प्रथम मन्दिरकहँ पाछे ॥
इत नृप धर्म्मराज शुभ करई । चलै न मारग सत्य न टरई ॥
बीते कछुक दिवस इमि ईछे । आये व्यास शिष्यसह पीछे ॥
देखि नृपति बन्धुन सह वन्दे । अपूवासन लखि व्यास अनन्दे ॥
कहा व्यास सुनुधर्म्म महीसो । कहेउ दास कारण सबहीसो ॥
मम आगम तोहिं लागतफीको । जाते होउ दास नृपही को ॥
धर्म्मजसुनत बन्दि हँसिदीन्हों । कहेउ कृपातव सब सुखकीन्हों ॥
शत्रु न मारि राज्य हम पावा । तव प्रसाद घोड़ा फिरि आवा॥

अब कछु दिनसों महामुनि, लखत अन्य अपकार ।
मिथ्या वाक्य प्रसाद अति, और सकल आकार ॥
ताहि समय सुनु तात, करत बतकही व्याससों ।
आयो द्विज तब रात, बोलि न्याय लागे करन ॥

भाष्यो द्विज है भूमि हमारी । अन्न छांड़ि सब लेव करारी ॥
याके हाथ भूमि क्रय नाहीं । करि क्रिरिया लेबै हम आहीं ॥
सुनिबोलेउ द्विज दूजो बानी । लेबै कौन कहत शिव आनी ॥

याको भूमि वित्त सो चहिये । और मिलै मोको न्टप अहिये ॥
यह सुनि सबहिन धिक धिक बोले । वृक्ष हले धरणी नग डोले ॥
डरके मारे पुर तिहुँ कांपे । जल समुद्र उछले अरु तापे ॥
धर्म्मज सुनत आंगुरो चापी । पवन चली वसुधा सब कांपी ॥

सुनि धर्म्मज कंपन लगो, भे प्रमुदित भूपाल ।
रामकृष्ण कहिक गिरे, भे सचेत पुनिहाल ॥

आधो अङ्ग दीन्ह के राजन । तव लागो पूंछन महराजन ॥
अहो व्यास मुनिकारण कहिये । नहिं तो चित्त अनलसों दहिये
कहो व्यास यह कलियुग लागो । धर्म्म धर्म्म न्टप धर्म्महि त्यागो ॥
ताते आपु बद्रि पहँ जैये । गलि हेवार हरि आश्रम रहिये ॥
कलिमें सकल गोतवध करि हैं । पाप तिहारे ऊपर धरिहैं ॥
कलियुग नगर हेतु हम भाखा । दोष झूंठ तव ऊपर राखा ॥
ऐसे व्यास कहेउ बहु ज्ञाना । व्यास धर्म बिन जाको आना ॥
व्यासगये निज आश्रम काहीं । कहेउ धर्म्म अब रहिबे नाहीं ॥
चलो कृष्णपहँ मांगि रजाई । जो उत्तर दिशि चाहो जाई ॥
सुनि अर्जुन अतिशय सुखमाना । भीम नकुल मन्त्री हर्षाना ॥
वेगवन्त अर्जुन रथ साजा । तापर चढ़े युधिष्ठिर राजा ॥
चारि बन्धु भूपति सँग लीन्हे । हरिपुर ओर गमन न्टप कीन्हे ॥
चले अलौकिक देखत शोभा । जितहिं जात तितही मनलोभा
कतहूं शिचित पण्डित बालक । कतहूं जात सैन रिपुघालक ॥
कहूं जरत जग अतिहित तारे । उज्ज्वल गिरि समान भैभारे

माल महिष उष्ट्रादिक नाना । लड़त शब्द फाटत ते काना ॥
कहत धनुर्विद सूरति छीजत । पुरबाहर ह्वै कोउ कोउ देखत ॥
कोउ नृतनाटक करत रिझावत । वारमुखी नाचैं गुणगावत ॥
मालीगण सींचत कहुँ बागन । मधुकरकाम अंधसह रागन ॥
कहुँ कहुँ होत युद्धके साजा । आवत नृपन पत्र जहँ राजा ॥

को कवि करै बखान, जहां रहैं श्रीब्रह्म प्रभु ।
असको त्रिभुवन आन, जो न भजत श्रीप्रभु असहि ॥

कहुँ विवाह चूड़ा कर नादी । गावत मङ्गलचार सदादी ॥
सर अरु बाग नदीतट पावन । भ्रमती नारी काम लजावन ॥

कोकिल पिक अरु मोरगण, सुमन सहित ऋतुराज ।
रहत सदा हरिकी कृपा, हो नित प्रति यह काज ॥
यहि विधि लखत सबन्धु नृप, करत मिलन सब पास ।
रामकृष्ण कहि मिलत सब, कुशल कहत हम दास ॥

कहेउ कृष्ण नृप कहु केहि काजा । आये सकल बन्धु महराजा ॥
व्यासवच्चन अरु न्यायबतायो । कलियुग घोर पापमय आयो ॥
जानचहत उत्तरदिशि प्रभु हम । कीन्हगोलवध हम नाहीं कम ॥
जो आज्ञा आगे प्रभु केरी । हम तो पलक कोर प्रभु हेरी ॥
भाष्यो कृष्ण सुनो हे राजन । कलियुग अहै घोर यहि काजन ॥
तुम्हें गोत्र वध पाप न ह्वै है । पुनि कलियुगबासी नहिं छैहै ॥
कहि हैं धर्मराज जो कीन्हा । पाप पुण्य उनहूं नहिं चीन्हा ॥

व्यास कहेउ यहि हेत, कलिवासी जो जन करत ।
दोष तुम्हें जो देत, पाप लहै तुव सोइ सुनो ॥
कलियुग ऐहै घोर अपारा । तामें चलै न कछुक अचारा ॥
वृद्ध ध्यान मम भू गिहराई । मानहिं मातु पिता नहिं गाई ॥
यौवन मदवश करहिं कुकर्मा । तजिहैं देश लोक कुल शर्मा ॥
ब्राह्मण जोतहिं हलतजिपूजा । जो तजिदिवसकरहिं निशिपूजा
वीर्य्यहीन चत्री ह्वै जैहैं । तवहीं म्लेच्छ न्टपति ह्वै ऐहैं ॥
वैश्य देव द्विज सेवा हीना । कहिहैं शूद्र ब्रह्म हम चीन्हा ॥
चत्री भूमि हीन ह्वै जैहैं । बूझो न्टप कब कलियुग ऐहैं ॥
भाद्र मास शुभ पच तम, तयोदशी रविवार ।
अवते बाकी मास षट, कलियुगकर अवतार ॥
जब कलियुग गङ्गाकहँ जाना । तब ह्वैहैं अति अवगुण नाना ॥
नारि धर्म जो विधवा करिहैं । कन्या गर्भ कुमारहि धरिहैं ॥
कहँलों कहौं प्रभाव भुवाला । संकर वर्ण होइ कलिकाला ॥
कछुदिन करहु राज्य न्टप आछे । हमसहचलबकछुकदिन पाछे ॥
अब तुम नगर जाइयो राजन । प्रथमैं कहेउ कियेउ जब साजन ॥
सुनि न्टप प्रभुके वचन वर, मिले सबहिं भूपाल ।
अर्जुन रहिगे द्वारकहि, आये सब जन हाल ॥
नगर आइ भूपाल सुहाये । पौत्रहि बोलि सुकण्ठ लगाये ॥
माताको सब बात जनाई । कृपाचार्य सुनते दुख पाई ॥
घोरजबरि कुन्ती यह भाखा । पति संगगमनमोहिंविधि राखा

पुत्त बिना कस रहिहौं राई । जावा चहत सुतहि तुमहाई ॥
कलियुग केर प्रभाव बतावा । तब कछु हृदयज्ञान भरि आवा ॥
कलियुगपुत्तजो पियअबआयो । ताते मान मोहिं नहिं भायो ॥
हम सबको तिलअञ्जलि दीजे । उत्तर पन्थ गमन तब कीजे ॥

चलत कथा आपहु कहे, तब लग माता जाय ।
आये अर्ज्जुन तेहि समय, गये मातु लग धाय ।

कुशल प्रश्न सब यदुकुल केरी । अर्ज्जुन कही कथा जस हेरी ॥
कहेउ कथा नृपरहोकछुकदिन । सुनिनृपभयेप्रशंसतछिनछिन ॥
है कारज अब ह्वै हैं पारथ । मातुजावयहसबविधि स्वारथ ॥
सन्ध्या भई सबन शुभ कीन्हा । भोर अन्हाइ दान सब दीन्हा ॥
क्रिया कराई सुबिर सुहाये । गहे हुते बहु दिन अब आये ॥
ताही समय आगमन कीन्हा । पुरजनसहितनृपतिवर चीन्हा ॥
बन्दि चरण सब जन तब ईछे । चरण धोइ आसनपर पोछे ॥

कुन्ती द्रुपदि भगिनि प्रभु, तुव पितु मातु सबंदि ॥
आशिष दीन्हीं मुदित मन, औवर विदुर अनन्दि ॥

सन्ध्या देखि क्रिया नित कीन्हे । भोजनकीन्ह सबनमुदलीन्हे ॥
ताहि समय नृप बन्धु सयाना । विदुरहि कहेउ पौढ़िये आना ॥
करहु तात अब तुम विश्रामा । यह सुनि कहेउ विदुरनिजकामा ॥
विदुर वचन भूपति सों बोले । चाहत मिलन भ्रात मन डोले ॥
आज्ञा दियो धर्मको राजन । विदुर चले मिलिबेके काजन ॥

किंकरजन लेगे विदुर, चरण गहेउ कहि नाम।
सुनत नाम नृप उठि मिले, सह संजय अभिराम॥
विदुर मिले सह नारि, बार बार धीरज कहत।
दीन्हेउ जो सुख चारि, ताको प्रभुता है महत॥
हाहा विदुर कहत भूपाला। असकहिदम्पतिठोंकतभाला॥
हाय विदुर मम सुत सब जूझे। अजहुँ चुद्रितनु प्रान असूझे॥
नात गोतजन सों भयो हीना। पुत्र हीन हम अबहूँ दीना॥
मरत न फटत हियो है भाई। मम सम भयो न होनेउ आई॥
अस कहि दम्पति रोवनलागे। अस सुनि जनमेजय नृप आगे॥
धीरज दियो विवध परकारा। दियो ज्ञान भू एक अकारा॥
तब बोले नृप अन्ध सुजाना। कहँ कहँ गये बन्धु द्रुत आना॥
इततें गये सुनहु नरपाला। रहेउ उजैनि जहां महकाला॥
चर्म्मवती अरु तीर्थ अनेका। सोमनाथ वसि भयो अशोका॥
गङ्गाद्वार वास तब कीन्हा। आय नैमिषारण्यहिं लीन्हा॥
वैजनाथ को परस पुनि, कियो जनकपुर वास।
जगन्नाथमें जायकर, पूजी मनकी आस॥
वाराणसी तहां ते आये। विश्वेश्वरके दर्शन पाये॥
गये हिमालयकहँ भूपाला। अलकापुरी लख्यो सुख माला॥
व्यासाश्रम दश वर्ष विताये। तहँ ते चित्रकूट कहँ आये॥
तहँ सत्सङ्ग ऋषिन कर लीन्हा। ब्रह्मघाट आये कर चीन्हा॥
तहँते गये बड़े सो देखहि। भुवनेश्वर किय दर्श विशेषहि॥

रामनाथकर दरश सुहाये । तात तहांते इतको आये ॥
लहि मैत्रेयपास ककुशुभगति । तुमहिं देखिबे आय गयेसति ॥
तब सुधि बिसरति हुती न नेको । देखत तुमहि सुखी नहिं एको
चलौ भ्रात तप हेतु महावन । जहँ थल अहै व्यासकर पावन ॥

सुन नृप दुःख न मानिये, देखे तीर्थ अनेक ।
हरि बिनु जग सूनो सब, तेजवान वह एक ॥

सोई जल सोई थल जानो । सगुण निर्गुण तैसेहि मानो ॥
सोई पृथ्वी सोइ आकासा । आपुइ स्वामी आपुइ दासा ॥
आपुहि राजा आपुहि रानी । सोई अग्नि सोइ है पानी ॥
सोई धन सोइ चोर कराला । सोई मरत सोइ है काला ॥
सोइ है हीन सोइ है पावन । सोइ है राम सोइ है रावन ॥
हरि आपुइ नर आपुइ नारी । आपु गृहस्थ आपु ब्रह्मचारी ॥
आपुहि पिता आपुही माता । आपुहि पुत्र आपुही भ्राता ॥

आपुहि गुरु कवि आपही, आपुहि शिष्य सुजान ।
आपुहि विद्या चवुदश, आपुहि गुण गणज्ञान ॥

आपुहि पण्डित आपुहि ज्ञानी । आपुहि महिष आपुही सानी
आपुहि ग्वाल आपुही गाई । आपुही आपु चरावन जाई ॥
आपुहि भँवर आपुही फूला । आपुहि ज्ञान विना जनमूला ॥
राज रङ्क दुजो नहिं कोई । आपुइ आपु निरञ्जन होई ॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एका । तैसे जानै ब्रह्म विवेका ॥
यहि प्रकार जाको मन लागै । जरा मरण नाशै भ्रम भागै ॥

योग समाधि ब्रह्म चित्त लावै। ब्रह्मानन्द सुनहिं तब पावै॥
सोइ बैकुण्ठ सोई है नरका। सोइ है शोक सोइ है हरषा॥

मातु सोई पितु सुत सोइ, सोई नृपति सोइ रङ्क।
एक रूप जानों सुखद, नृप मति करये शङ्क॥

बोले विदुर सुनहु हे राजा। दुखवश देखि परत केहिकाजा॥
कहा अन्ध नृप सुनि हे भाई। भीम वचन मोहिं सहो न जाई॥
बार बार मुहिं दे दुरकारे। कहे न आओ निकट हमारे॥
तेनेही सब काम बिगारा। घरमें प्रगटयो शत्रु हमारा॥
खाय हमारो जूठ जुठाई। अब हमहीं सों करत खुटाई॥
दासीसुतसों लाभ न होई। कोटि उपायकरो किन कोई॥
सुन अस वचन फटत ममछाती। यहै शोच मोको दिनराती॥
मौन साध चुपको ह्वै रहिहौं। अपने मनकी कासों कहिहौं॥

और सकल सुखदेत, भीम कहत मोहिं कटु वचन।
सो न सहब मंन लेत, को भाषै हरिकी रचन॥

विदुरजाहिजिमिनृपकटभाषत। श्वानसमाननृपतितुवभाषत॥
जैसे लकुट हनत नर नायक। भीम कहत नृपसे तुव लायक॥
खात शूद्रगृह लाज न आवत। हीन वंश अजहूं होरावत॥
तातें करो चलो तप जाई। नातरु लहौ अधिक दुखभाई॥
सुनि कटु वन तपहिं कहँ इच्छे। विदुर सुनाय ज्ञानसह पीछे॥
सुनो बन्धु जगकर व्यवहारा। जामें बंधो सकल संसारा॥
सुखदुख स्वप्न जानियो राजा। यह सब देह नेहके काजा॥

इन्द्री है अर मन बहक, देह सुरथ रथवान।
याके वश भर्मत फिरत, जीव न कछु है आन॥
कह सञ्जय मतिमान, नृपहि देखा साधुको।
ताबिन कछु नहि आन, जड़ चेतन उत्पत्ति सत॥
भई व्यतीत सुरैनि तब, भयो ज्ञानको भोर।
धर्म्मन्नृपति आवत भयो, वन्दत पितु हित ओर॥

नृपति भीम अर्ज्जुन तब बन्दे। नकुल देव सहदेव अनन्दे॥
नाम कहेउ तब पाण्डव चीन्हों। गद्गद ह्वै दम्पति शिषदीन्हों॥
कृपाचार्य मिलि विदुरहि भेटत। सञ्जय मिलो तापत्रय मेटत
मिलि युयुत्सु आदिक बहुतेरे। औरौ सकल बसैया नेरे॥
कर्णपुत्र नृपहृदय लगायो। मेघवर्ण मिलि दुसह नशायो॥
बैठे निजनिज आसनपर सब। अन्ध नृपति गद्गद बोले तब॥
होहो पुत्र धर्म्म सुखदाता। किय प्रतिपाल मोर अरु माता॥
दुर्योधन आदिक सब जूझे। तबसों तुम मोको अति बूझे॥
बिसरो दुख पुत्रन वध मोहीं। रोमहि रोम अशीशत तोहीं॥
मम सुत तुमहि दुःखबहुदीन्हो। फल पायो ते आपन कीन्हो॥
अब मम देह सकल जरजरसै। भइ बलहीन दीन गति दरसै॥
सरिता निकट वृक्ष मोहिं जानो। बुर्त उखरिबो शङ्क न मानो॥

आज्ञा दीजे जाउँ हम, दम्पति भ्राता साथ।
कर्म मुक्ति हित बने कछु, उतहित धन जो हाथ॥

नृप सुनियथ बंधुनसहदुखअति । बोलत भे तब ज्ञानचक्षुपति
हमरे तुम सबके सुखदाता । केहिविधि कहौं जाहु अस बाता ॥
पुनि पितु जाहु नीक कत हेतू । होय सुभग सह मङ्गलसेतू ॥
तब कुन्ती बोली बिलखाई । हमहूं चलब सङ्ग तुव राई ॥
सुनतै सब काहुन समुझावा । कुन्तीके मन नेकु न आवा ॥
तब धृतराष्ट्र कहन अस लागे । धर्मराज राजाके आगे ॥
पुत्र मात सम्बन्धी जोई । जाना है औरो सुन सोई ॥
पिण्डा श्राद्ध सबनको करिकै । भोर जाव पुनि सब व्रत धरिकै

सुनि धर्मज गुण ऐन, बन्दि सबनि पितुपदपदुम ।
आये निज निज ऐन, नित्य क्रिया भोजन कियो ॥

नृप है शुचि सहदेव बुलाये । तिन नृप आयसु सुखद सुनाये ॥
लै धन सबन वस्त्र पट नाना । गज रथ वाजी उष्ट्र विताना ॥
अरु भोजनके साज अथोरा । लै मतिदृगपहुं जाहु करोरा ॥
यह सुनि किंकर सकल बुलाये । जो जेहि लायक ताहि सुनाये ॥
निकरत सुखमानो किंकर जन । लै सबगये मिलो अतिअरुबन ॥
आदि साज नृप मन्दिरमों सब । होन लाग तबसाजसकलतब ॥

निशा भयो पुनि विक्तमों, गये धर्मके राज ।
पितरहि बन्दि लागि करन, सबजन सब विधि साज ॥

होम भयो पिण्डा नृप दीन्हा । जसविधि वेद कहेउतसकीन्हा ॥
भोजन श्राद्ध यथाविधि कीन्हों । दान अथोर विप्र नृप दीन्हों ॥
याचक सकल अयाचक भयऊ । इकदिन एक निशा इमि गयऊ

अरुणोदय लखि चालनकीन्हा। दान दयासों ब्राह्मण दीन्हा॥
आशिषदै निज धाकन आयो। जन्मेजय सुनि मुनि सबगायो॥

कुन्ती मिलि गन्धारि तौ, विदुरसहित मिलि धर्म्म।
सबन मिलत आगे चले, पुरजननसह जिमि सम॥
पुरजनमहँ सुरराज सम, नृप धर्म्मज सहभाय।
नारी नर सब बिकल ह्वै, हा हा हा कहि राय॥

नृप धृतराष्ट्र सबन समुझावा। मिलिसबहिनयोजनयकआवा॥
धर्म्मराजकहँ आशिष दीन्हा। सञ्जयकहँ प्रबोध तब कीन्हा॥
सब काहुन पलटायो राजा। गांगे मिले अर्द्ध महराजा॥
माया मोह तोरि तृण इव सब। आगे चले सुनहु नृपवर अब॥
विदुर कन्ध धरि कर नरपाला। पति कन्धा गन्धारी बाला॥
ता पाछे कुन्ती धरि हाथा। चले नवाय गंगकहँ माथा॥
करि मज्जन अरु बहुकर दाना। चले बनहिं चारिउ जन भाना॥
यहिविधि करत वासमगमाहीं। चलेजातनितभय दुखनाहीं॥
व्यासाश्रम मिलिसबमुनिजूहन। भे प्रसन्न भोजन फलमूहन॥
व्यासहिंमिलत अधिक सुखपावा। कहमुनिभलीकीन्ह जोआवा
जैमिनि शुक अरु बकदालंभी। औरौ मिले मुदित मुनि तंभी॥
कह नृप लहेउ दुःखमैं ताता। सुत जूझन आदिक बहु बाता॥
कह मुनि प्रथम तुम्हैं समुझावा। नेकुहृदयमहँ ज्ञान न आवा॥

निज तनु तूल भराइकै, निज कर अग्नि लगाय।
दोष देय तब ईशको, कह्यो ऋषै समुझाय॥

तातें करु तप भूप, हृदय राखि अव्यक्त प्रभु ।
देखि चराचर रूच, जो तिभुवनमहँ एक रस ॥

करन लगे तप न्टप औ रानी । विदुर आनि करि ज्ञान सुहानी ॥
भे अदृत सदृश्य यमराजा । मग्न फिरत वन और न काजा ॥
उत न्टप धर्मराज दुख पावत । लख्यो तबै ऋषि नारद आवत ॥
उठे सभासद मुनिकहँ बन्दे । लख्यो धर्म्म न्टप बहुत अनंदे ॥
अर्घा देइ आसन बैठारयो । मुनि समीप अस वचन उचारयो ॥
त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ मुनीशा । फिरत रहत तुम सदा अहीशा ॥

तुम मुनीश सर्वज्ञ प्रभु, जानत मन भगवान ।
कहो खबरि कछु विदुरकी, सबलसिंह चौहान ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

विदुर विरक्त फिरत वनमाहीं । त्यागो तनु गै हरिपुर काहीं ॥
तो पितु और दोउ पटरानी । गई अग्नि जरि मरि गुणखानी ॥
भये विकल सुनि बन्धुन्टपाला । जोगतिहोतविकलजिमिकाला ॥
रोवत बार बार हाहा कहि । मूर्च्छित ह्वै कै गिरत अवँमहि ॥
यह देखत बोले मुनि नारद । सुनु न्टपवर विज्ञान विशारद ॥
मरत भयो न कछु यह जाना । समुझनहेतु कहेउ अस राना ॥
है पितुभक्त सदृश कोइ नाहीं । परपितु मानतसम पितु आहीं ॥
अब चलि दरश करौ पितु केरा । नातरु काल आयगो नेरा ॥

यह कहिकै नारद ऋषै, चले ब्रह्मपुर ओर।
अब आगे सुनु नृप कथा, वरणौ सकल बहोर॥

तुरत तयार नृपतिवर भयऊ। बन्धुसहितनृपमिलि अब गयऊ॥
पति औ नारी सकल समाजा। नगरमहाजन अरु द्विजराजा॥
चले सकलजेहि राजत पुरमों। बाधा सदृश यह लागत उरमों॥

छले नृपाल भुआल, सहित बन्धु पुरजन सकल।
ठौर ठौर रखपाल, राखि चले हस्तीनगर॥

नृप तब नगर राखि रक्षकगन। चलेसबनसह दुखितनृपतिबन॥
तीरथ करत वास भगवाना। चले बनहि जहँ कुरुपतिराना॥
गये व्यास आश्रमके पासा। भै पदत्रान बिहीन सदासा॥
मिलतऋषिन कहँ बिविधविधाना। गयेजहाँ हैं व्याससुजाना॥
मिले व्यासकहँ वन्दन करि करि। बारबारशिरपदमहँ धरि धरि
दै अशीश नृप कहँ मुनिराया। कृपा कटाक्ष सबनपर दाया॥
मिले पिता द्वै मातन काहीं। नाम सुनाइ कहेउ कछुनाहीं॥
सकल मोहवश जल नैननमहँ। को अस कहै दशानृप भै तहँ॥

दै अशीश सबकहँ सबन, बैठे सब जनराय।
वैशम्पायन कहत हैं, जन्मेजयपहँ गाय॥

दुर्लभ देखि रायकहँ राजा। सहमतु नहिं दुर्बल तपकाजा॥
बोले नृपवर गद्गद वानी। कहँ हैं विदुर कहेउ तब रानी॥
कुन्ती कह भै परमहंस सो। ढूंढ़न चले अकेल बन सो॥
देख्यो भागि जात वनमाहीं। गोहरायो ठिठुके तेहि नाहीं॥

तदपि ब्रह्म आश्रित चीन्होंजव । नयन नीरभरिरहेउ ठाढ़ि तव ॥
चरण गहेउ धर्म्मजके राजा । ताहि समै दुन्दुभिवर वाजा ॥
विदुर त्याग तनु ताही औसर । गे यमराज विदुर ह्वै के बर ॥
देखि धर्म्मन्टप बन्धु बोलाये । कहि सबकथा नयन जल छाये ॥
दाहन चहेउ तबै वाणीभय । जीवन्मुक्तविदुर यमकह हय ॥

यम राजाको अङ्ग है, विदुर भक्त भगवान ।
धर्म्मराज हिय सुमति भौ, परबोधिक सुनि कान ॥
आयो राजा धर्म्म, कहेउ कथा सब विदुरकी ।
कीन्हों विधिवत कर्म, निजकर राजा अन्धवर ॥

रहे बनहिं कछुदिन शुभ बीतत । महादुःखलखिमुनिवरचीतत ॥
पूछेउ सबसों को केहि चाहत । जासों होत उछ्रणामों दाहत ॥
कुन्ती कहेउ कर्ण में देख्यो । गन्धारी यामातहि लेख्यो ॥
सुभद्रा आदिक सुतकहँ भागत । पितु सुतबन्धुपतिहिशरणागत
सबै कौशिकी तट ले गयऊ । तपप्रभाव सब आवतभयऊ ॥
दिव्य दृष्टि अन्धहि नारीसह । सुनत लगायो कह हाहा तह ॥
कोउपति मिलत महामुद छाये । कोउकोउ पुत्तन हृदयलगाये ॥
कोऊ भाई बापहि लावत । दुख मिटि ग कोउ मङ्गल गावत॥
रैनि एक सुखसे सब बीतत । अरुणोदयलखिसबजनचीतत ॥
फांदि सब यन न्टप जल माहीं । रहे न एकौ धौ कोउ माहीं ॥
सकल मोहवश नारि अपारा । धसीं जलै करि घोर चिकारा ॥
कोउ कोउ बनमहँ ढूंढ़त भागत । कोउकोउप्राणतजतभैलागत ॥

कोउकोउव्याघ्रादिकधरिखायो। जलमहँ धसिसबप्राणगँवायो॥
कोउकोउ शून्य होम मखशाला। जरीं अग्निमहँ जे वरबाला॥

सब काहुँन तनु त्यागि करि, गई पतिनके साथ।
व्यास कहेहु यह धर्मसों, अब भल तबहि अनाथ॥
आये सुनि नरपाल, जहां होमशाला नृपति।
सुनु अब कछु सुन हाल, वैशम्पायन कहत भे॥

धर्मनृपति मख करत रहे तहँ। मखशाला रह व्यासकेर तहँ॥
अग्नि प्रचण्डशिखा अतिबाढ़ी। अर्द्ध नृपति अङ्गहि तहँडाढी॥
कुन्ती चलन चहेउ उठि तहँते। अक्षविहीन नृपतिवर जहँते॥
धर्मविचारि जरी संग तिनके। रामकृष्ण कहि कहि वेजिनके॥
कोऊ ऋषि अरु पांडुकुमारा। रहे न तब कोउ उठवनहारा॥
आय नृपति यह दशा निरेखी। कीन्ही रुदन सुनत जिनदेखी
रोय उठे सहनृप बन्धुन जन। और नगरवासी आये वन॥
रोवहिं कुन्तिहि गन्धारी कह। हाय हाय कहि अन्धनृपतिसह॥
लैकर अस्थि सुदम्पति केरी। लीन्हे अस्ति ढूंढ़ि माकेरी॥
कीन्हे कर्म सबिधि गङ्गातट। जहँ पवित्र बन मोहिं एकवट॥
कीन्हतिलांजलिदेयसविधिविधि। चलेधीरधरिनगरनृपतिसिधि
करिवन्दन ऋषिव्याससबनको। चलेमगहिंमहँ श्रमनहिंमनको॥
बास चलन करि मगन सब, नृपराजन सहभाय।
नारीसंग सुभद्र सह, द्रुपदी सह दुखपाय॥

आये नगर नृपाल, दियेतिलांजलि दिवसनिधि ।
एकादश सुखपाल, दिये बाजि नारी सदन ॥
द्वादशमें दिन भूपमणि, दीन्हों दान अथोर ।
बास लसो दम्पति तबै, सहझान्ती सब ओर ॥

पायोवास सुखद सब काहू । मिटेउ दुःख प्रबलित जो राहू ॥
धर्मराज जो बिदुर कहायो । निजपुरवास न्याव मनलायो ॥
जन्मेजय सुनि भाषन लागे । सम्पुट जोरि सुनीशन आगे ॥
नाथ कहो यम केहि अपराधू । भये मनुज गुणवर अरु साधू ॥
बोले मुनि राजाके आगे । गद्गद वचन रावके पागे ॥
एकमण्डवी ऋषी सोहावन । कर बहुतप पवनमधि पावन ॥
बहु सत कर चोरी कर लाये । तहँ बन मध्य मोर करि पाये ॥
तहँ बन डारि सकल तबभागे । उनन्टप आपु उदय लखिजागे ॥
धन बिहीन लखि रचक डांटे । तिनके चोप रह्यो नहिं काटे ॥
चरण चिह्न देखत ते दौरे । धन देख्यो देख्यो मुनि बौरे ॥
धन लदाइ मुनि बूझन लागे । अरे चोर क्रोधहि अति पागे ॥
धरे मौनब्रत मुनि नहिं बोले । धन सहायकरि गयो नृपतोले ॥
नृप देखत अति क्रोधहि पागे । कहिकटुवचन कहनअसलागे ॥
सूली देहु चढ़ाय सुचोरहि । दिय चढ़ाइ तब मुनिवर औरहि ॥

सूलीपर बैठे ऋषै, धरे तत्त्वको ध्यान ।
पाय सब ऋषि तबै, आये ऋषिके थान ॥

खग मृग रूप न धार, आये मुनि बूझन लग्यो ।
पाप कौन अस चारि, जो ऋषिवर अति कष्टहौ ॥
हरि इच्छा अस कहि दयो, सबसों मुनिवर गौन ।
राय सुनत कीन्हीं कुटै, आयो यमके भौन ॥

हे यमराज कहो केहि पापन । लह्यो घोरदुख सुनु सोइ दापन ॥
कह यमराज सुनौ मुनि राजा । लह्योकष्टअतिसुनु सोइकाजा ॥
है पतङ्ग गुदवालो कीन्हो । तेहिकारण इतनो दुखलीन्हो ॥
यहसुनि क्रोधित ह्वै ऋषिबोले । अग्निशिखामुखअग्निहि बोले ॥
शूद्रसदृश तुव प्रकृति जनावत । शूद्रयोनि जन्मज तुम पावत ॥
सुनि यमराज चरणगहि लीन्हों । ह्वै प्रसन्न तब आशिष दीन्हों
ह्वै है शूद्र मुख भाषन कीन्हों । हरिके भक्त और सिखदीन्हों ॥
पुनि यमराज होइ हौ आई । आये मुनि कहि अतिसुखपाई ॥
विदुर व्यास तप बलते राई । भै हैं शूद्र प्रथम मैं गाई ॥
बोले जन्मेजय भूपाला । व्यास रच्यो नरवश सबबाला ॥
बनमहँ देहत्यागि तिन्हकीन्हों । मायरतप यह चाहत चीन्हों ॥
बोले मुनि तपबल ऋषिव्यासा । कीन्ह देखु अमरावतिवासा ॥
मैं जानो नृप तुव मन इच्छत । ताते आवत पिता परीच्छित ॥
ताहि समय नभ गहगहबाजत । आवतदेखि विमानहिगाजत ॥
किन्नर देव नृपति सँग आवत । बाजत वेणु अप्सरा गावत ॥
नवल नारि नलनी कच राजत । कुचयुगभारतफूलमकुबाजत ॥

चमकत मोतिन जोरि मुख, हँसत फँसत चित दून।
लाजत देखत जाहि रति, मति न रहत शुभ जून॥
यहि विधि सुभग सुजान, आयो रथ वगमेलमें।
मिले पतिहि दै यान, वार वार वन्दत उदित॥
मिले देव किन्नर सब राजा। बाजे हरि तन आनँद बाजा॥
मिले परीछितकहँ सब न्टपगण। नामगोत्रसुत सहपुरजनजन॥
तब जन्मेजय द्विजन बोलाये। आशिष पाय प्रसन्न जनाये॥
देव सकल पितु सह उठि पेछे। मज्जन करवायो सब पीछे॥
द्विजन बोलि बहुदान दिवायो। ब्रह्मदेव सब रसन जवायो॥
सिंहासनपर पूजा कीन्हों। चरणधोय चरणामृत लीन्हों॥
सुभग सुगन्धित माला दीन्हो। शय्या दै आश्वासन कीन्हो॥
तब पश्चिमलखिअस्तदिवाकर। द्विजभूपन मिलि मिलेपुत्रवर॥
दै अशीष निज पुत्र अनन्दे। चढ़े प्रथस पुनि मुनिकहँ वन्दे॥
बाजे किंकिणि चारु ध्वनि, नाचन लागींनाद।
जाइ पहूँच्यो इन्द्रपर, तनक न लागी बार॥
तब जन्मेजय भूपवर, मुनि अस्तुति अनुरागि।
सूत शौनकादिक कहत, निशाबीति सब जागि॥
अरुणचूड़ अरुणोदय लागत। श्रोता वक्ता भव जन जागत॥
मज्जन करि आसन प्रति आये। जन्मेजय इमि अर्ज सुनाये॥
कहो तात सब कथा सुहावन। पापनशनि समपुण्य बढ़ावन॥
शत्रु नशनि मित्रनिसुखदानी। मलिनाशनि मुनिमहजियबानी

कल्पलता कल्पाय सुतासी । कुन्दकली लचखित कुन्दासी ॥
जीवनसी जीवात्मा वासी । परमतत्त्व परतत्त्व तमासी ॥
जीवन धनसी ईशसी, पौस सदृश गुणदाय ।
सो अब भाष्यो महामुनि; कलिजन पाप नशाय ॥
मुनिवर भाष्यो वैन, राजा सुनु धरि ध्यान यह ।
सब सुखको जो ऐन, पढ़त सुनत सुखनवल नित ॥
यकदिन राजा धर्म, भोर उठे श्रीकृष्ण कहि ।
कीन्हों नित कृतकर्म, बन्धुनसह राजत सभा ॥
ताहिसमय कलियुगसुधिआई । देह दशा धर्मज दुख पाई ॥
कह पारथ हरिपुर अब जैये । उत्तर चलौ कृष्णपहँ लैये ॥
मातु पिताके हित इत रहेऊ । ते सब गाय सविधिते कहेऊ ॥
अब रहिवो नहिं उचित सुभाई । ताते लावहु श्रीहरि जाई ॥
अर्ज्जुन सुनत सुभग रथ साजा । भीमहिं मिलेसबहिंपुनिराजा ॥
बेगवन्त अर्ज्जुन चले, जहाँ बसत भगवान ।
आश्रमवासिक पर्व्व कहि, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

आश्रमवासिकपर्व्व समाप्त ।

मुशलपर्व्व ।

श्रीगिरिजा गणपति सुमिरि, वरणि भक्ति हनुमान ।
मुशल पर्व भाषा रचत, सबलसिंह चौहान ॥
जन्मेजय मुनिसों जवन, भाष्यो मुनि शुभगाथ ।
ताहि सुभग भाषा करौं, धरि शिर निज प्रभु पाथ ॥

बन्दौं गुरु गोविन्दके पायन । जिन प्रसाद हूज सुखदायन ॥
सुमिरौं अवधनाथ सीतापति । नारद शारद सुमिरि महामति ॥
सुमिरौंआदिकाव्यघटव्यासहि । जाकीसविधिभांतिमोहिंआशहि
ईश्वर रूप जानि जगतीको । सुमिरा राम आदि शिव नीको ॥
संवत सत्रहसे शुभ तीशा । भाद्रमास सप्तमि रजनीशा ॥
औरँगशाह दिलीपति नायक । सबलसिंह तब हरिगुणगायक ॥
वैशम्पायन कहत सुनाई । सुनहु सार्थ कुलवर नृपराई ॥
जब धृतराष्ट्रादिक सज्ञानी । गै हरिपुर सह कुन्ती रानी ॥

सुत अर्जुन गे द्वारकहि, कुशल हेत सुख पाय ।
मार्ग मिले नारद सुमुनि, रथमों लियो चढ़ाय ॥

विविधभांति भाषत शुभगाथा । जातचले अर्जुन मुनि साथा ॥
पहुँचे निकट द्वारका ग्रामा । मिले अमृतहो श्रीबलरामा ॥

अनिरुध सांबप्रद्युम्नसुआदी। औरौ चले देखि मिलनादी॥
देखि पार्थ नारद मुनिराई। उतरे रथ मिलने हित धाई॥
यदुवंशिन प्रणाम तब कीन्हो। नारदमुनि आशिष तब दीन्हो॥
पग वन्दे पारथ हलधरके। हिये लगाय कहतहौं नीके॥
जे थे कृष्ण पुत्र अरु नाती। बन्दे चरण मिले सब जाती॥
कुशल प्रश्न इत उत सब पूछे। मिले सात्यकादिकछलछछे॥
यहिविधिमिलत पार्थसुनिरामा। राजहि मिलिगेजहँसुखधामा॥
सम बन्दे तहँ मुनिवर देखे। अर्जुन कृष्ण मिलै तहँ पीछे॥
अर्घ्यपाद्य मुनिवरकहँ दीन्हा। विधिवतपूतिसुआशिषलीन्हा॥
लै अन्तःपुर गे मुनि पारथ। मिले पार्थ सब तियन यथारथ॥
मुनिको सबन दण्डवत कीन्हा। मनभावतआशिषशुभलीन्हा॥
पटरानिन सेवा मन दीन्हो। पार्थ कृष्ण मुनि भोजन कीन्हो॥

भोजन करि बीरा लयो, सुभग सुगन्धित लेपि।
तब सोये वर पार्थ भट, बूड़ेउ नारद सोपि॥
आगम कहो मुनीश, केहि कारण आवन भयो।
कह नारद सुनि ईश, ब्रह्मा पठयो आपुपहँ॥

मानुष उमिरि अधिक ह्वै गयऊ। अजहुँनआवनहरिकर भयऊ॥
प्रभुडर काल डरत नहिं आवत। यदुकुलकतहुँ जीवनहिंजावत॥
तव प्रसाद पितु मातु तुम्हारे। उग्रसेन आदिक जे ठारे॥
तेऊ मरत न सुनहु कृपाला। ब्रह्मा है यहि हेत बिहाला॥

कहुँति सृष्टि नइ नौति चलाई । केहिकारण मोहिं ईश बनाई
चतुर्मुखा केहि कारण भाषत । देवनमें सरिता करि राखत ॥
हौं पुनि उनहीं कर बनावा । अन्त खोज प्रभु हमहुँ न पावा ॥
तौ निज कर क्यों नाहिं बनावत । हमरे ऊपर दोष धरावत ॥
ब्रजमों गाय गोप उन कीन्हो । तब प्रथमे हम परचो लीन्हो ॥
ताते अब यह उचित न तुमको । हँसब न उचित प्रतुमें हमको
ताते कृपा करहु बनवारी । पाहि पाहि मैं शरण तुम्हारी ॥
औरौ कही बात करजोरी । कहँलौं कहौं अनुग्रह तोरी ॥
हँसिकह प्रभु भौ घोर नेवारा । तुम सर्वज्ञ मुनीश उदारा ॥
कह मुनि भार अघोर अपारा । यदुकुल मरिहि न काहुहि मारा
करिय नाथ अब कछुक उपाई । जाते नाथ लोक निज आई ॥
कह हरि गन्धारी सुत जूझे । तब अस पुनि सञ्जयसों बूझे ॥

श्री हरि पचो पाण्डुके, जयकी आशा छूटि ।
अन्ध दीन्ह मेरे लिये, शत सुत विधने लूटि ॥
कहा कृष्ण सिरजे तवै, सुनु माता अस कौन ।
हारि यहां मेटन चहै, मनमानो किय जौन ॥
यह सुनि क्रोधा लुब्ध ह्वै, शाप गन्धारी दीन्ह ।
अबते छत्तिस वर्षमें, जो·मोकहँ तुम कीन्ह ॥

करि असमत गन्धारी शापा । निजकुल हते सुनिजकर पापा ॥
कह मुनि द्विज सुशापते नाशा । गुणगावत मुनि चले अकाशा
ब्रह्मा पास कही जो हेरी । यदुकुल नाश आइहै फेरी ॥

यहि विधि बीतिगये कछु काला । आगे सुनहु नृपति जो हाला ॥
यक दिन ब्रह्मा अति दुख पायो । अजहुँ न काशी श्रीप्रभु आयो ॥
अस मन समुझि देव ले साथा । गये द्वारकहि जंह ब्रजनाथा ॥
करि परिक्रमा नाय करि शीशा । प्रस्तुति करत देव दिगईशा ॥
पाहि पाहि शरणागतवत्सल । हे कृपालु पालन श्रीअत्सल ॥
दीनानाथ देवकीनन्दन । मैं तुव शरण भक्त पालनजन ॥
जय गोविंद बासी वृन्दावन । जयति देव जय जगजन वन्दन ॥
जय जय जय माधव असुरारी । तारण तरण गौतमी नारी ॥
दशरथसुत जयजयजगपालक । जनकसुता बारनहरिबालक ॥
परशुराम निज रूप मानहर । बनहिं बासकिय नाशत्रिशिरखर ॥
मग मारीच बधन सीता छल । बानरसङ्ग सहित हनुमतबल ॥
सेतु बांधि रावणको मारो । अवधपुरी प्रभु भक्त उधारो ॥
कंसादिक सब दुष्ट सँहारण । चलिये निजपुर श्रीजगतारण ॥
हे प्रभु भक्तवछल बनवारी । हँसि तब मधुर गिरा उच्चारी ॥
चलब कछुक दिन मैं हे देवा । यह सुनि लगे जनावन सेवा ॥

सुनि ब्रह्मा सहपुर सकल, गे प्रसन्न तब सर्व ।
सबलसिंह चौहान कहि, भाषा मूशल पर्व ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

गे निज धाम देव समुदाई । अब न्टप कथा सुनहु जो गाई ॥
इत सुपाण्डु सुत पारथ जागे । कृष्णचन्द्र सन बूझन लागे ॥
पठयो मोहि युधिष्ठिर भूपा । जो प्रथमहिं प्रभु सन्त अरूपा ॥
इतसों जाइ चलन जब चहे । तब कुन्ती माता बश रहे ॥
अब पौत्रहिं दै राज्य सोहाई । जान चहत उत्तर न्टपराई ॥
चलन हेतु प्रभु तुमहूँ भाखा । चलहु नाथ अब काहे राखा ॥
यह सुनि धर्मबन्धु की बानी । सुनु न्टप बोले शारँग पानी ॥

चलब कछुक दिनमें सुनहु, रहो इतै कछु काल ।
सुनु अस कहि राखत भये, श्रीप्रभु करिकै जाल ॥

रहे बहुत दिन आदर लहिके । अति मुद सहित वारता कहिके ॥
एकदिनहरि असकह्यो विचारी । नाश होइ केहिविधिपरिवारी ॥
ताहि समय नारद मुनि आये । हरि गुण गावत आदर पाये ॥
तिनसों बूझेउ यदुकुल नायक । नाश यतन भाषो जेहि लायक ॥
नारदकह बिन शाप दिवाये । देखि न परत कि युद्ध मचाये ॥
यह भाषत नारद सुनु राई । ताहिसमय ऋषि मुनि गण आई ॥
आये व्यासशिष्य सब साथा । हमहुँ हते सुनिये नर नाथा ॥
एकतीऋषि भृङ्गी मुनिनायक । देवल कपिल आदिसुखदायक ॥
सनतकुमार समऋषि राजा । दुर्वासाऋषि सहित समाजा ॥
विश्वामित्र वसिष्ठादिक मुनि । अरु कौंडिन्य सुनो भाषतगुनि ॥

अरु भृगुनायक अङ्गिरा, पाराशरऋषिराय ।
देखि कृष्ण आदिक सकल, परे पार्थ सहपाय ॥

उग्रसेन सह कृष्ण, पायँ धोय भोजनदयो ।
हलधर कीन्ह्यो प्रश्न, केहि कारण आगम सवन ॥
बोले मुनिवर व्याससुहावन । अशनदेहु इत कछुदिन पावन ॥
चतुर्मास वर्षाऋतु पावन । देह अशन यहि हित सब आवन ॥
रहब इतै सबमुनि सुखदायक । करब सुतप जो आज्ञापायक ॥
कह हलधर मम भाग्य अपारा । महा महामुनि जो पगुधारा ॥
रहो देवहम अशन सोहावन । टिकयो मुनिन्ह अपावन पावन ॥
नित प्रति भोजन सुभग बनाई । बिलग मुनिन्हप्रति देतपठाई ॥
यहिबिधिकछुकदिवसन्हपबीते । यकदिन सब शिकार हित रीते
पद्युम्नादि साम्ब सुत नाती । लै आज्ञा हय चढ़ि सबभांती ॥
खेलि शिकार मारि मृग रूरे । पुरहि पठाय चले मुद पूरे ॥
आयें मुनिवर जेहि बनबासा । बैठे हैं जहँ ऋषि दुर्वासा ॥
कोउकहमुनिभोजनहित आये । मांगत भीख कतहुँ नहिंपाये ॥
मिलो पेट भरि इतै अहारा । परे ताहिते ये शठ द्वारा ॥
कछु नहिं जानत हैं मुनि कोई । जो विधि लिखा होतहै सोई ॥
कोउ कहत सर्वज्ञ निधि, कृपा यत्न मुनिराज ।
नृपन चाहियो दानशुभ, मुनिवरभोजनकाज ॥
निन्दो मति सबकोय, इनको मानतकृष्णबल ।
जो विश्वास न होय, कत न परीक्षा लेहु तुम ॥
तुरत ग्राम को दूत पठायो । मूशल काढि एक लै आयो ॥
पियो सुरा सब यादव बालक । भयेमस्त हरि इच्छासा पक ॥

बांधिसाम्बहिय काढ़ि सुहावन। मूशल राखि मध्य हियरावन॥
सुभग नारि गर्भिणी बनाई। केश मूल गहना पहिराई॥
गेन्दनके तहँवा कुच कीन्हे। सेन्दुर दे शिर बेन्दी दीन्हे॥
बिकुवा आदि अभूषण जेते। कहँ लौं कहौं किये सब तेते॥
जाय बन्दि मुनिवर दुर्वासा। बैठि वचन अस कीन्ह प्रकासा॥
हे मुनिवर सर्वज्ञ निधाना। पुत्री पुत्र जात नहिं जाना॥
जो कृपालु ह्वै तुरत बतावो। अतिशुभसुयश जगतमहँपावो॥
ध्यान धरो मुनिवर तहँ देखे। छल समुझे कछु और न देखे॥
क्रोधित मुनिवर बोले बैना। सुत सुख देख्यो यह कुलनैना॥

बोले मुनिवर क्रोधकरि, होय सत्य यहबैन।
याही सुतके होतही, मरै कृष्ण सह सैन॥
सकुल संहरिहैं सर्व, जिन टिकाय अपमान किय।
अस सुनिये नृप पर्व, मरै रुक्मिणी जवन सिय॥

यह सुनि सकलभभरि तबभागे। मनहुँ सिंह कोउ सोवत जागे॥
मुनिहिं सकोप बकत बहु बैना। दूत आये सब निजनिज ऐना॥
सकल बात सब काहु न पावा। जुरि समाज सब नृपपहँ आवा॥
सुनत कृष्ण अति भये प्रसन्या। उग्रसेन सह शोचित अन्या॥
शोचत बसुदेव अरु बलरामा। बारबार कहि शिवहरि नामा॥
तब नृप मन्त्री ज्ञाति बोलाये। उद्धव सात्यकादि सब आये॥
शोच सुमत करि यह ठहराये। बोलि लोहार सहस्रन आये॥

मूशल काढ़ि छोरि तब लयेऊ । चूरन करि समुद्रमहँ बहेऊ ॥
ताते भयो सु खर उत्पन्या । औरो सुनौ कछुक नृप अन्या ॥
एक चूर जो लोह बहायो । शापसत्य हित मीन सु खायो ॥
मीनहि ताहि पकरिकै लावा । बालि नाम धीमर जो आवा ॥
चीरेउ हृदय निकारेउ लोहा । तीक्ष्ण धार शोथमहँ सोहा ॥

सुनु नृप भावी मिटै कस, अरु श्रीकृष्णप्रताप ।
जो न चहत श्रीकृष्ण प्रभु, करत कोटि कह शाप ॥

कछु दिन बीतिगये यहि भांती । आनँदजात दिवस अरु राती ॥
श्रीप्रभु कृष्ण वृत्ति असजागी । द्वारावती शाप नहिं लागी ॥
असमनसमुझि वृत्तिभगवाना । चहहुँ प्रभासकरिय असनाना ॥
यहसुनि सकलबुलाय सुबासी । भोर चलनकह आनँदरासी ॥
यहसुनि उद्धव हरिपहँ आये । नमस्कार करि अस्तुतिगाये ॥
पुनि रोवन लागे हाहा कहि । कब म रहौं नाथ दुख यहसहि ॥
तब मनमें हो निजपुर जैहो । नाथ लौटि नहिं द्वारहि ऐहो ॥
ताते रहौ जहां हम पैये । जोमन चहौ नाथ सो ह्वैये ॥

कहौ नाथ का करिय हम, जाते होहुं सनाथ ।
अस कहि लागे रुदन्न तब, धरेउ चरणपर माथ ॥

भाष्यो श्रीप्रभु बैन, करत शोच तुमहो कहा ।
धरि पद निज हिय ऐन, करो जाय तप बद्रिका ॥

यह देखतहौ जौन सकल जग । सो जानहु सबजाहि एकमग ॥
हय गय द्रव्य पुत्र अरु दारा । सो सब जानु झूठ व्यवहारा ॥

मरणकाल कोउ काम न आवत। कवि कोविद मैं सज्जनगावत॥
मम नाभीते कमल भयोजब। ताते ब्रह्मा भयो सुनहु तब॥
ताते भई सृष्टि विस्तारा। मैंहूं धरेउँ बहुत अवतारा॥
चारि वेद श्वासनते गाये। मुखते द्विज भुज क्षत्रिय जाये॥
वैश्य जानु पद शूद्र बनावा। याहीमें सब जग बिलमावा॥
तब श्रीकृष्ण कृपा अति कीन्हे। ब्रह्म देखाय दुःख हरिलीन्हे॥
औ यह कह्यो सुनो उद्धव तुम। अब तुम जाउ बद्रिकाको गुम॥
नाश होन चाहत अब द्वारा। किहेउ दिवसप्रतिभजनहमारा॥
वृक्ष योनिते मनुज होत जब। सुमिरण मेरो उचितसुनहु तब॥
सुनि उद्धव तब शीश नवायो। परिक्रमा करि तुरत सिधायो॥
इत यदुवंशी भोर भये जब। चले प्रभास कालप्रेरित तब॥
सजि सजि साज चले सब कोई। पुरजन कृष्णसहित बलजोई॥

> कहँलगि कहिये सुनहुन्टप, चले सहित यदुनाथ।
> सात्यकि कृतवर्मा सहित, यदुजन पुरजन साथ॥
> उग्रसेन वसुदेव बिन, रह्यो न कोइ पुरमाहिं।
> अर्जुन राख्यो कृष्णप्रभु, सुखद सु गहिकै बाहिं॥
> उद्धव ज्ञान बुझाय, बद्रीदिशि भेजेउ तिन्हैं।
> उद्धव दुःख नशाय, ब्रह्म मिले करि नेह बर॥

पारथ राखि नगर रखवारो। आपु चलन हित कीन्हतयारो॥
दारुक अरु पारथसों कहेऊ। आयो कालहि नारिसह रहेऊ॥

गै सब प्रभाचेत्र सुख पाई । तहँ नारद मुनि बीणा बजाई ॥
नारद आयसु दीन कृपाला । जाहु नगर द्वारकहि विशाला ॥
सिखवो तात मातु न्टपजाई । मोह-मूलको शूल नशाई ॥
तहँनारद अस ज्ञान सिखावत । भूमि अकाशहि निजदरशावत ॥

वृक्षयोनिते मनुज तनु, पायो पुनि हरिपूत ।
ताते अजहुँ न सुमिरियो, होन चहतहौ भूत ॥
पारब्रह्म हरिसुत लयो, पूर्व भाग्य मुनिराज ।
भक्ति मुक्ति मांगी नहीं, अब आवतिहै लाज ॥
मुनि बोले इति बैन, तुवहित हेतहि कहतहम ।
यक इतिहास गुने न, नौयोगीश्वर जनकको ॥

नौयोगीश ऋषभ सुत आये । जनक देखिके शीश नवाये ॥
आश्वासन कीन्हेउ बहुभांती । सिंहासन दीन्हो मन माती ॥
कृपा कीन्ह मम भाग्य अपारा । ऋषभदेव सुत जो पगधारा ॥
जैसे कियो पवित्रमोहिं चरणन । तैसे पूछत करिये वरणन ॥
तब बोले योगी बर बैना । निज इच्छित तुम पूछत हैना ॥
कहा जनक कर सम्पुट करिकै । कौन वस्तु इस्थिर बिनभरिकै ॥
जो कह धन इस्त्री अरु बालक । आज्ञा करिकै चत्रकुलपालक ॥
ताते मुनि कछु इस्थिर नाहीं । धनदकुशासन सब मरिजाहीं ॥
ताते शोक होत है भारी । है इस्थिर को कहो बिचारी ॥
जाप घट न बढ़ै कछु ऐसो । इस्थिर नाम न कहिये तैसो ॥

बोले कश्यप नामक योगी । प्रथमभयो हरिहर यश भोगी ॥
बहुसुखप्राप्त उन्हें मिथिलेशा । जे हरिभक्तिते त्यागि अँदेशा ॥

भक्त सदा आनंद रहत, त्याग जगतको मोह ।
बात बात में हरि कथा, काहू सों नहि द्रोह ॥

पुत्र दार धन सब परिवारा । भाग्यमान जिमि अलबकरारा ॥
जे लपटे पुत्रादिक नेहा । ते जब मरे विकल सन्देहा ॥
ताते नाश वस्तु है जोई । अलग रहै सुख पैहै सोई ॥
हरि नरतन यहि हेतु धरतहैं । गाय जाहि नर नारि तरत हैं ॥
जो मन लाग एकधा नाहीं । थोरा थोरा कीजिय ताहीं ॥
जिमि भूखा जन ज्यों ज्यों खैहै । त्यों त्यों बूत तासुके ऐहै ॥
जोकोउमगनितप्रतिचलिहैंनर । एक दिवस वो जाहि पहुँचिवर
जो न चलै वह पहुँचो कैसे । हे मिथिलेश भक्ति है तैसे ॥
माया थोरो थोरो छूटै । भक्ति थोरहो थोरो जूटै ॥

पारब्रह्म जो एक है, आद्यो ब्रह्म स्वरूप ।
सोई तौ थिरता सुनौ, और झूठ है भूप ॥
योगी कहि भे मौन, कर जोरेंकह जनक तब ।
कहिये तप मित भौन, भक्तिरूप किमि होतहै ॥

तब हरिनाम दूसरो भाई । सुनु न्टप कहत सुलक्षणगाई ॥
कबहुँ हँसत जब होइ प्रसन्नित । कबहुँ रोप लक्षण उनके द्रुत ॥
हँसन हेतु यह सुनहु विदेहा । करत भक्ति पर तुम हरि नेहा ॥

धरते सगुण गाथ जाते जन । भवसागर तरिजाहिं जौनबन ॥
गाय ध्यानधरि तरियतु जाते । ये लच्चण हंसने मन माते ॥
रोषन कर लच्चण यहि काजन । सो अब सुनहु कहतमैं राजन ॥
आयु हमारी बीती भारी । फँसो रही ममता अवतारी ॥
बिनु हरि भक्ति बीति गै सोई । हे जनकेश देत बय रोई ॥
भक्ति और सुनु तीन प्रकारा । उत्तम मध्यम और नकारा ॥
सकल चराचर देखिय जौने । चौरासी लच्चित न्टप तौने ॥
यक सों लखत ब्रह्म सब माहीं । हैं लच्चण ये उत्तम आहीं ॥
साधू सङ्गति सतपथ चलिये । हैं ये लच्चण मध्यम पलिये ॥
पुनिये तेज बराबरि सबमें । नहिं समुझत विदेह वे जगमें ॥
अब निकृष्ट लच्चण ये सुनिये । माया मोह फँसे हैं दुनिये ॥
काहू पहर असमरण पूजा । ते करि लेहिं निकृष्टित मूजा ॥

जबलगि तृष्णा नहिं छुटत, तो लगि नहिंन विरक्त ।
दूसर योगीश्वर कहै, तब लगि विषयासक्त ॥
तीनि प्रकारित भक्तिके, सुनु लच्चण मिथिलेश ।
हाथ जोरि पूछन लगे, मेटहु नाथ कलेश ॥
माया जाको नाम, नारायणमें लीन है ।
को है विलग अकाम, तौन नाथ वर्णन करो ॥

अन्तरिच्च जो तीसर योगी । सुनिये न्टपति रामयश भोगी ॥
माया हरिको देहा जानो । ताको त्रिगुण रूप है मानो ॥

सात्विक राजस तामस जोई । मारण उत्पति पालन सोई ॥
बिनु हरि माया कर भ्रमजाला । काम क्रोध मद लोभ कराला ॥
नाहिन छूटि सकत कोउ राजा । चहिये करिबो उत्तम काजा ॥
महाप्रलय ऊपर हरि रचना । चाहत जबहिं सुनहु न्टपवचना ॥
तब मायाको ओरहि देखत । माया महातत्त्व को पेखत ॥
महत्तत्त्व सब उत्पति करिके । सब जग देत बराबरि भरिके ॥

नाशकरन चाहत जबहिं, मूसलधारा वर्षि ।
सुनो करत माया सहित, पारब्रह्म तहँ हर्षि ॥
तेहिते हरि ईहा सुनो, मायाकर व्यवहार ।
समुझ बहुरि को उचित है, सुनुजनकेश उदार ॥

जो माया हरि ईहा कहिये । संसारी किमि उतरन चहिये ॥
मायाते छूटे किमि योगिनि । तुमहो वैद्य बताइ अरोगिनि ॥
पर बुधि नाम चोय है जौने । जब जान्यो हरि ईहा तौने ॥
माया हरि इच्छा जब जानौ । तब हरि ईहा एकै मानौ ॥
हरि परिक्रमा करै नर जोई । पावै सफलं अफल नहिं होई ॥

ब्राह्मण लक्षणसहितहै, ब्राह्मणको मति पौन ।
नहिं सो ब्राह्मण शूद्रसम, ताहि कहत मतिहीन ॥
ऐसो जानौ जनक न्टप, चारि वर्णको चाल ।
पारब्रह्मको जानिबो, नातरु सोई काल ॥
पारब्रह्म जानो जिन्हें, सो पायो मो लौन्ह ।
नातरु है सब अन्यथा, जन्म विधाता कीन्ह ॥

बोले जनकराय कर जोरी । को अस विना हृदय जो होरी ॥
कौन जीव सोवत हैं नाहीं । जल थल नभ अकाशके माहीं ॥
बोले पञ्चम योगी बैना । हृदय तात पत्थरके हैं ना ॥
सोवत मीन सुनो नृप नाहीं । और सकल श्रमवश ह्वै जाहीं ॥

जगमें गरुआ कौन अति, अति ऊंचोहै कौन ।
बोले षष्टम योगिवर, अति वरबुधिको भौन ॥
मेरो गिरिते गरुहै, मात सुनो नृप बात ।
आसमानते ऊंचअति, जानो है निज तात ॥
कैसे मन नहिं लाग, विषयामें मन सबनकर ।
बोलेउ मुनि अनुराग, सप्तम सुखद सोहावनो ॥

ऐसे कृपा कृष्णकी होई । मन लागे हरि यह सुनु सोई ॥
जेते रोवां जानो तन में । तेते रोकन हारे जनमें ॥
पाप पुण्य कछु जगमें नाहीं । कर्म्म भोगवत है सब याहीं ॥
बोले तब जनकेश उदारा । काके बीज जगत विस्तारा ॥
कह मुनि पारब्रह्म को जानो । बीज कौन काको को मानो ॥
परदादाके दादा जाये । दादाके पितु निज तब भाये ॥
ताके सुत यह देह भई सुनु । को ताको अस सकै भूप गुनु ॥

कहेउ जनक यह बात, कहो कर्म्मव्यवहार अब ।
कह मुनि सुनु नृप तात, कर्म्मआदि व्यवहार सब ॥
कहो पूर्व निष्ठा द्विधा, ज्ञान योग सञ्जोग ।
साखिन कह योगीनकह, कर्म्मयोग व्यवहार ॥

अनारम्भ के कर्मते, होत न नर निष्कर्म्म।
सर्व त्यागसङ्कल्पते, मिलत न सिद्ध सुधर्म्म॥
मनसा इन्द्रिन रोकि जे, करत न तत्त्वविचार।
रहत लगाये विषय में, मनसो मिथ्याचार॥
अस कहिके योगी सकल, गये ब्रह्मपुर ओर।
पीछे नारद मुनिगये, सकल मुनिनशिरमौर॥

अब नृप सुनहु कथा मन लाई। वहां टिके यदु यदुकुलराई॥
गडे वितान अमोलिक लाखन। राखन लगे सूरप्रभु माखन॥
वस्तु अमोलिक भांतिन केरी। बाजहिं ठौर ठौर प्रति भेरी॥
सेना देखि लगत भय हियमें। तबहिं विचारे श्रीप्रभु जियमें॥
सबते कहेउ चलिय अस्नाना। करि अस्नान कीन्ह सबजाना॥

प्रभासेन अस्नान करि, निशिहि टिकेउ यदुवंश।
उत सुदेव मिलि सुनु नृपति,। खेंच्यो निज निजअंश॥

हलधर सह पुनि होत विहाना। सुरापान करि गे अस्नाना॥
भे मदमत्त उछाड़ें कूदें। और हनैं पुनि आंखी मूंदें॥
देहिं परस्पर गारि प्रचारी। नाहीं हँसहिं देहिं करतारी॥
पितु सुत नहिं घरनी हो वारा। लाजहीन लपटहिं अनुदारा॥
लटपटाहिं धरणीउ गिरहीं। भाजत लड़हिं दौरितेहिधरहीं॥
करहिंजलहिं अन्हान सोहावन। आपुवीरदल लागो आवन॥
पुनिपुनि जलउछालसबकरहीं। डण्ड ठोंकि पितुसुतसों भिरहीं

एक पकरि बोरहिं जल माहीं । बूड़हिं रोवहिं छांडहिं नाहीं ॥
एकहि डारि सुजलके माहीं । चढ़हिं सहस्र सहस्रन ताहीं ॥
उत सात्यकि कृतवर्मा जूटे । भिरहिं प्रचारि केश शिरछूटे ॥

लरहिं भिरहिं यहि बिधि सुनहु, रहो न काहू ध्यान ।
शापवश्य राजा सुनो, को सुत को पितु आन ॥
जल उछालकरि वीर, आये निज निज पच्छ लखि ।
जहँसात्यकि कृतधीर, ह्वै समाज उमहत दोऊ ॥

तब सात्यकि कृतवर्म्म बखाना । भागेसि शठ नत काल निराना ॥
मम सहाय पाण्डव रण जीते । मारे दुर्योधन भट रीते ॥
सो मैं शतु आउँ कृत तेरे । भागि बचो नहिं हनत सबेरे ॥
ताते अजहुँ मानु शठ बानी । नत अब होन चहत कुलहानी ॥
कह कृत होत अधम केहि धोखे । निज कर बधब हनब शर चोखे
मानि कृष्ण प्रभुकेरि रजाई । नत मारत बहु पांडव राई ॥
अजहूं सात्यकि जीह सँभारो । नत अब शरण देत शिरमारो ॥
सुनिसात्यकिकोपितह्वै मनमों । मानहुँजीति चले रणि रणमों ॥
अरे अधम सात्यकि कहेउ, सोवतते बहुमारि ।
सत्रहजित पाण्डवसुवन, अजहुँ बकत बश हारि ॥
तब सात्यकि भटयुद्ध, पारथ गुरुको ध्यानधरि ।
लै हथ्यार हित युद्ध, तदपि मध्यआवत भयो ॥
तब कृत कह अति कोपित बैना । शठ धर्म्मातम देख्यो नैना ॥

भूरिश्रवा हनि डारन चहेऊ। ताहि समय वरपारथ रहेऊ॥
भुजाकाटि तब हत तुम कीन्हा। यह धर्मातम तब हम चीन्हा॥
असकहि सहपक्षी वर वीरा। लै हथ्यार आयो तेहि तीरा॥
सात्यकि पक्ष सहित लै हाथा। वज्रनाभि भजिगो तजि साथा॥
जायवचो अनिरुध सुतभागी। शापवश्य लागी तव आगी॥
तव सात्यकि प्रचारि निजपक्षी। कतल करि सेनानिज अच्छी॥
याक्य वादि करिकरि उतकर्षा। लागे करन सूलशर वर्षा॥
चहुँदिशि वाणगदाअसिधारा। भिरेवीर करिक्रोध अपारा॥
तदपि न जूझो कोउ वरवीरा। टूटिगिरे हथियार व तीरा॥
तब सब समुदफेन खर लीन्हा। ताते मारु भयानक कीन्हा॥
सुरामस्त भटजूझैंगिरिगिरि। उलटिपलटिलपटैंपुनिभिरिभिरि
भाजत लखहिं प्रचारहिं फेरी। मारहिं सुभटफेनु तेहिघेरी॥

शापकथा मंसा प्रबल, अबला मनुष्य उपाउ।
जे गदादि जूझे नहीं, ते जूझे खर घाउ॥
जूझि गिरे बहुवीर, जे रहिगे प्रभुपहँ चले।
योगाभ्यास गंभीर, तनु त्याग्यो जे सहसवर॥

कृपाचन्द्र तब भागि पधारे। रहे जीवत युद्ध विचारे॥
मरे जूझि एकानहिं बाचे। मन क्रम रहे शूर सब सांचे॥
इन तहँ श्रीप्रभु कृपानिधाना। बैठे पीपल वृक्ष सुजाना॥
तातर बैठि कीन्ह प्रभु आसन। लीला कीन्हसुभगहितदासन॥

धरे जानुपर चरण कृपाला। ताहि समय आयो बहुकाला॥
जान्यो नयन मृगाकृति सोहत। लैके धनुष बाण मन मोहत॥
बालिनाम बानर त्रेता कर। धीमर रूप छांड़ि दीन्होशर॥
चरणमध्य चमकत तहँ जानी। आयो लेन शिकार गिल्यानी॥
देखि कृपालु कृष्ण भगवाना। बन्दि चरण तब ऐंच्यो बाना॥
कह कृपालु बदला तुम लीन्हो। रथहि चढ़ाय परमपद दीन्हो॥
उत अर्ज्जुन सब रथहि चढ़ाई। रानिन सबहिन लीन्ह चढ़ाई॥
दारुक पास कही अस बाता। लै रथ जाहु अग्र तुम ताता॥
पाछु हम आवत सह नारिन। जाते होइ न श्रम कंसारिन॥
दारुक हांकि सुभगरथगयऊ। उतरिरथहिहरिचरणनयऊ॥
उतरत दारुकके नरपाला। हय समेतरथउड़िगोहाला॥
यह लखि दारुक विस्मय पावा। सब चरित्र तब कृष्णव तावा॥
यह सुनि सूत परेउ गिरि धरणी। तबहरि कही दुःखको हरणी॥
तुम धरिध्यान त्यागु तनुजाई। अर्ज्जुन पास कहेउ अस जाई॥
कछुक दिवस में बुड़िहै ग्रामा। कहेउजांइलै निजनिज सामा॥

गीता ज्ञानहि राखि हिय, जाय बद्रिकाधाम।
अब आयो कलियुग प्रबल, इतै न रहिबो काम॥
ऐसे कहते कहत हरि, गहगह हने निशान।
चले ब्रह्मपुर आपुप्रभु, किंकिणिनादविमान॥
यहि विधि कृष्ण कृपाल, गये धाम निज निज सुनहु।
दारुक गयो उताल, अर्ज्जुन सो सब यों कहेउ॥

सुनि अर्जुन सह यदुकुल नारी । रोवहिं गिरहिंमुर्च्छि सुकुमारी ॥
दारुक जाय कतहुँ तनुत्यागा । तब सबहिनकर मुर्च्छा जागा ॥
सङ्ग नारिन गे जहँ रणपावन । देखि भूलिगो को कत आवन ॥
पटरानी अरु यदुकुल नारी । अति दुख बूड़ि मरीं कछु बारी ॥
कछुक चिता रचि धरिसुतनाती । पतिसह जरतभई सब जाती ॥
गईसकलमिलिनिजनिजअंशन । अनिरुधसुतबिनरहेउ न वंशन ॥
इत अर्जुन पुनि धीरज धारा । वज्रनाभ सहगे न्टपद्वारा ॥
पढ़े सुने जो कथा सुहावन । वंश वृद्धि होवै अति पावन ॥

पाप नशै कीरति बढ़ै, व्यास गिरा परमान ।
भणित पर्व मूशल कथा, सबलसिंह चौहान ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

इति मुशलपर्व्व समाप्त ।

महाभारत।

स्वर्गारोहण पर्व।

प्रथमहिं गुरुके चरण शुभ, सुमिरौं शीश नवाइ।
जाकी कृपा कटाक्षते, सकल विघ्न मिटि जाइ॥
महादेव पदकंज पुनि, सुमिरौं दोउ कर जोरि।
जो अभिलाषा बढ़ी मन, सो पुरवो प्रभु मोरि॥
शिरीशक्ति मैं विनवौं तोहीं। माता पार लगावो मोहीं॥
हरिलीला वरणौं मन लाई। सो तुम अक्षर देहु मिलाई॥
महावीर सुमिरौं सबलायक। भयभंजन मनवांछितदायक॥
अगणित विघ्नहरण हनुमाना। सो भरोस मैं मन अनुमाना॥
दिहिनि मोहिं मन प्रभुउपदेशू। सोकहिहौं हिय सुमिरिगणेशू॥
कहौं हृदय गुरुको धरिध्याना। तेहिते पावों निर्मल ज्ञाना॥
अगहन मास पुनीत सुहावा। बुधवासर हरितिथि शुभ पावा॥
संवत सतहसै इक्यासी। ताहि समय हरिकथाप्रकासी॥

हरिको रूप सकल जग जामा। करि सबहिनकहँ दंडप्रणामा॥
द्रुम स्वरूप एक ईश बखानी। तीनि लोक सो शाखा जानी॥
चारिहु युग सो पत्रसमाना। शुभ अरु अशुभ युगलफलजाना॥
सबर्जासिह कर जोरि युग, सब सन्तन शिरनाइ।
अस्तुति करत गणेशको, अक्षर देहु मिलाइ॥
सोमवंश हस्तिनपुर राजा। नृपति युधिष्ठिर तहाँ विराजा॥
कीन्हेउ महभारत अतिभारी। गुरु औ बन्धु सखा सबमारी॥
दुर्योधनको जीति भुवारा। पाछे कीन्हेउ यज्ञ पसारा॥
शिरीकृष्णकी आज्ञा पाई। कीन्ह यज्ञ कछु वरणि न जाई॥
राज कीन्ह बहु काल सोहाई। पाछे नृपके मन अस आई॥
गोत्रघात कीन्हें बहुतेरा। कस होई भवसिन्धु निवेरा॥
व्यासदेव सों द्वै कर जोरी। सुनौ नाथ अब विनती मोरी॥
जेहि प्रकार हरिलोकहि जाई। सो प्रसङ्ग प्रभु कहौ बुझाई॥
तब ऋषि व्यास विचारकरि, बोले वचन विनीत।
जाय हिमालय गलो तुम, तब तनु होय पुनीत॥
जो हिवार तनु त्याग कोई। मन वांछित फल पावै सोई॥
कोटि जन्मके पाप कमाये। गलत हिवार पार तिनपाये॥
व्यास कहान्टप सुनु इतिहासा। जो सुनु होय सकल भ्रमनासा॥
एक ग्राम इक पण्डित रहई। नितउठि एक नृपतिके जहई॥
श्रीभागवत सो जाय सुनावै। दक्षिणा लै अपने घरआवै॥
एक दिवस तेहि मारगमाहीं। मिला नाग तेहि पण्डितकाहीं॥

नरबानी बोल्यो शिरनाई। पण्डित दीनदयाल गोसाई॥
हमहिं भागवत आजु सुनावो। हरिलीला अमृत रसगावो॥

नागवचन सुनि पण्डित, मनमहँ कीन्ह विचार।
हरिलीलापर प्रीतिलखि, तब कीन्हों उच्चार॥

अध्यायक तब पण्डित बाँचा। मनक्रमवचनताहिलखिसांचा॥
कथासुनाय बिदा जब भयऊ। इक मोहर तेहि दक्षिणादयऊ॥
विप्रहि बहुरि कहेउ शिरनाई। यकाध्याय मोहि नित्तसुनाई॥
गयो विप्र तब अपने ग्रामा। रहेउ नाग सो अपने धामा॥
नित उठि विप्र भूप घरजाई। श्रीमत कहै न्रपहिं समुझाई॥
फिरती बार नाग गृहआवै। यकाध्याय नित ताहिसुनावै॥
एक अशरफी सो नित देई। पण्डित महा मगन ह्वै लेई॥
कछुक दिवस यहि विधिगैबीती। पण्डित नागकेरि शुभरीती॥
सुनत कथा भा ज्ञान अपारा। नाग सुमिरि मिथ्या संसारा॥

पण्डितसों शिरनायकै, नाग कहेउ मृदुवयन॥
वचन एक मैं माँगहूँ, मोहिं देहु गुणअयन॥

एवमस्तु तब पण्डित कहेऊ। जो तुम कहौ तौन मैं दयेऊ॥
नाग कहेउ विप्रहि समुझाई। बद्रिकआश्रम चलौ गोसाई॥
विपुल अशरफी मोरे धामा। सो लै जाहु नाथ निजग्रामा॥
सकल अशरफीतब द्विजलिन्हा। लैकै नाग गमन तब कीन्हा॥
कछुकदिवसमहँ तहँ चलि आये। बद्रीपति जहँ धाम सुहाये॥

जाय शम्भुके दरशन कीन्हा । तबसो नाग उतर फिरिदीन्हा ॥
निकट हिवारिकहँ अब चलहू । जो मैं कहौं तौन तुम करहू ॥
विप्र निकट तब गयो तुरंता । नाग सुमिरि तब लक्ष्मीकन्ता ॥
कह्यो विप्रसन सुनहु गोसाईं । मोहिं शीतमहँ देहु चलाईं ॥

विप्र चलायो नागकहँ, गिरो हिवारे जाइ ।
विप्र चल्यो घर आपने, हँस्यो नाग ठठ्ठाइ ॥

इति प्रथम अध्याय ॥ १ ॥

तबफिरि विप्र उतर असदीन्हा । जो तुम हँस्यो चहहुसो चीन्हा ॥
तिन तब कह्यो सुनहु द्विजराई । हँसके भेद मिलै इक ठाईं ॥
काशीपुरी शंभु अस्थाना । तहँके राजा परमसुजाना ॥
तेहिते जाइ पूछि तुम लेहू । अनते जाइ कह्यो जनि केहू ॥
तबहिं तुरत द्विज गमनत भयऊ । कछुक दिवसमहँकाशिहिगयऊ
पुरी मनोहर देखत रहई । दरशन करत सकल अघ दहई ॥
तुरतहि चल्यो शंभु दरबारा । प्रदक्षिणा दै विप्र उदारा ॥
उठि तब चलेउ भूपदरबारा । करि प्रणाम राजा बैठारा ॥
प्रथम कथा द्विज कह्यो बुझाई । सुनो नृपति यह चरित सुहाई
नाग हिवारे जेहिविधि गयऊ । हँसके भेद जौन कछु रहेऊ ॥

सो यह भेद बतावहु, सुनौ भूप रणधीर ।
तब मैं निजगृह जाइहौं, मिटै हृदयकी पीर ॥

तब नृप कह्यो सुनहु द्विजराई । वैष्णव तीन रहैं इक ठाईं ॥
महि प्रदच्छिणा करत सोहाये । फिरत फिरत आश्रम इक आये॥
करत प्रसाद रहैं इक तीरा । तीनिउ जने ज्ञान मतिधीरा ॥
तहँवां एक श्वान चलिआवा । तेहिका दै तिन भोजन पावा ॥
भोजनकरि वै चलिभे आछे । श्वान चला तब तिनके पाछे ॥
तब तिन कह्यो ताहि समुझाई । हम नितवाह सुनोरे भाई ॥
जन्मभूमि यह होय तुम्हारी । रहो श्वान अस हृदय विचारी ॥
तब वह कहै लाग अस बूझी । मोकहँ परत यहै अब सूझी ॥
जहां मिलै मम उदर अहारा । सोई है निजधाम हमारा ॥
यह कहि चलेउ तासु सँग सोई । नित तिनके सँग भोजन होई ॥
यहि बिधि महि प्रदच्छिण दयऊ । तीनिउ जने हिवारे गयऊ ॥
पाछे श्वानलागि तहँ गयऊ । तीनिउ जने अमरपद लयऊ ॥

कुत्ताकेरे श्रवणमहँ, रहे किलना दुइ लाग ।
कुत्ता गलेउ हेवारमहँ, तिनहुँ कीन्ह तनुत्याग ॥

सुनहु हिवारे के प्रभुताई । किलना दोऊ भूप भे आई ।
जगन्नाथपुर एक विराजा । यक मकसुदाबाद के राजा ॥
महीं होंउ वह श्वान सुहावा । काशीपुरी रुचिर मैं पावा ॥
सोवहु नाग हँसा असजानी । ब्राह्मण रहे बड़े विज्ञानी ॥
दैकै द्रव्य आइ तनु त्यागी । लौटयो विप्र कौन सुखलागी ॥
सो वह हँसा सुनहु द्विजराई । मैं अपनी निज करणी गाई ॥

यह इतिहास व्यास अस कहेऊ। सबलसिंह संक्षेपहि लहेऊ॥
सुनो युधिष्ठिर अस मनजानी। गलौ हिवारे मन क्रम बानी॥
यह सुनि तब सहदेव बिचारा। कह्यो भूप सुनु कहा हमारा॥
जो गुरु कह्यो सत्यासो बानी। चलौ जहां हैं शारँगपानी॥
यदुनायक सों आज्ञा मांगौ। चलौ हिवारेमहँ तनु त्यागौ॥
तुरत व्याससों आज्ञा लीन्हा। द्वारावती गमन नृप कीन्हा॥
अर्ज्जुन जाय तुरत रथ साजा। तेहिपर चढ़्यो युधिष्ठिर राजा॥
अतिशोभित रथ बरणि न जाई। किङ्किणिध्वनिसुनिदेवसिहाई॥
पांचौभाई चढ़े तब, श्रीगुरुचरण मनाय।
सिन्धु तीर द्वारावती, तहां पहूँचे जाय॥
द्वारावती निकट नृप गयऊ। तब रथत्यागि पियादे भयऊ॥
जहँ श्रीकृष्ण बिराजहि धामा। तहँ नृप कीन्ह्यो दण्ड प्रणामा॥
धर्मतनय संपुट करि हाथा। अस्तुति करत नमाइहि माथा॥
नमामि शैलधारणं। अनेक गोपतारणं॥
सुरेशमान मर्दनं। नमामि श्रीजनार्दनं॥
नमामि कंसमर्द्दनं। चणूर गर्व गञ्जनं॥
गयन्दप्राण रञ्जनं। गिराह गर्व भञ्जनं॥
प्रह्लाद प्राणरक्षकं। सुरारि दुष्ट भक्षकं॥
समुद्रपुविनायकं। गजेन्द्र सुःख दायकं॥
महीश कष्ट टारणं। फणीश मान मारणं॥
सुमञ्जु कञ्जवपुधरो। सर्वांग गञ्ज मधुहरो॥

वराह रूप धारि कर। मही लई उबार कर॥
स्वरूप धारि नरहरी। सुजन प्रह्लाद जयकरी॥
नमामि रूपवासनं। ब्रह्माण्डकीन्ह पावनं॥
नमामि गरुड़वाहनं। भजन्तकामदाहनं॥
नमामि चक्रधारणं। सुधेनुदुःख हारणं॥
सुरेन्द्र मान भञ्जनं। अपार दुष्ट गञ्जनं॥
सदैव भक्त कारणं। अनन्त रूप धारणं॥
मुकुन्द जगतपालकं। गोविन्ददनुजघालकं॥
सुक्षीर सिन्धुशायनं। सुसर्व यश गुणायनं॥
नमामि शरण आयहौं। ब्रजेन्द्र दरश पायहौं॥
यहि विधि अस्तुति कीन्ह, पाणिजोरिकै धर्म्मसुत।
कृष्ण अङ्कभरिलीन्ह, करिदाया बहुविधिमिलेउ॥
सबलसिंह तजि मोह, जो सुमिरे हरिनामदृढ़।
सोई नर अति सोह, जन्म जन्म सुख पावही॥
बैठे तुरत नृपहि बैठारी। बोले वचन सन्त भयहारी॥
कहौ कुशल नृप हमहि सुनाई। हस्तिनपुर के सब कुशलाई॥
आयो सकल भाइ किमि आजू। सो महिपाल बताबहु काजू॥
तब बोले नृप दोउ करजोरी। सुनहु मुरारी विनती मोरी॥
हमसे व्यास कह्यो अस बाता। तुम नृप अगणित गोत्रनिपाता॥
कोटिन यज्ञ करहु जो, तीर्थ करहु समुदाय।
दान अनेकन देहु नृप, यह हत्या नहिं जाय॥

सो यदुनाथ कहौ समुझाई। जेहि विधि हम भव पारै जाई॥
तब बोले श्रीयदुकुल नाथा। कर्म अकर्म सबै विधि हाथा॥
एक बात समुझावहुँ तोहीं। जस न्टप समुझि परतहै मोहीं॥
आयो कलियुग महाअनीती। अब न कोय निज इन्द्रियजीती॥
ब्राह्मण नहि करिहैं शुभकाजा। सजिहैं शूद्र तपस्या साजा॥
दाया धर्म रहित ह्वै जाई। साधु निरादर जहँ चलिजाई॥
कलियुग तीरथ रहै छपाई। विरला कोउ तीर्थका जाई॥
कलियुग गौवैं दूध न देहैं। कन्या बेंचि सकल धन लेहैं॥
दाया रहित सकल संसारा। कोउ न आतम करहि विचारा॥
मेघवृष्टि करिहैं अतिघोरा। मण्डल खण्ड वृष्टि चहुँ ओरा॥
राजा प्रजा त्रासि धन लेहैं। बोइ किसान अंश नहि देहैं॥

करिहैं राज्य मलिच्छ सब, चलो सब विधि हीन।
धर्महीन ह्वै जाइहैं, तेहिते ह्वैहैं चीन॥

कन्या द्वादश वर्ष प्रसूता। षोड़श वर्ष जाइ है पूता॥
अर्थ लागि नर धर्महि करहीं। विना अर्थ नहि दाया धरहीं॥
कलियुगकर्म विविध परकारा। वर्णत होइहै ग्रन्थ अपारा॥
सो संक्षेप कह्यों समुझाई। आगिल चरित सुनहु मनलाई॥
श्रीकृष्णहि जब कह्यो बुझाई। तब राजाके विस्मय आई॥
विविध भांति मन कीन्ह विचारा। अब नाहीं होई निस्तारा॥
कृष्ण कृष्णकहँ करि परणामा। चढ़ि रथ चलत भयो निजधामा

आयौ तहँवां पांचो भ्राता । जहँवां रहै कुन्तिमा माता ॥
पुत्रन देखि कुन्तिमा कहई । काहे वदन सूख तव अहई ॥
कहा नृपति माता सुनहु, कलियुग भा विस्तार ।
सबलसिंह श्रीकृष्ण प्रभु, भाष्यो सबै विचार ॥

इति द्वितीय अध्याय ॥ २ ॥

कहा नृपति मातहि समुझाई । उत्तर पन्थ जाब सब भाई ॥
सुनत कुन्तिमा नृपके वयना । हृदय शोच भरि आये नयना ॥
केहि कारण मम पुत्र बिछोहू । यह मन समुझि भयो अतिमोहू
फिरि धीरज धरि कह्यो विचारी । सुनहु पुत्र यह बात हमारी ॥
भूमिहेतु तुम भारत कीन्हा । रणमहँ लोह गुरुनसन लीन्हा ॥
दुर्योधनके सेन सँहारी । गुरु औ वन्धु गोत्र सब मारी ॥
मारेउ कर्ण दुशासन वीरा । विष्वक्सेन हत्यो रणधीरा ॥
भीषमचार्य धर्मध्वज मारेउ । अश्वत्थामा बन्धु सँहारेउ ॥
वीर कलिङ्ग जीन धनुधारी । कुंवर लक्ष्मण हत्यो प्रचारी ॥
विविधभांति संग्राम करि, जीतेउ वीर अनेक ।
पाइ एकछत्र राज्य अब, तजो भीमको टेक ॥
सुनि माता के वचन विनीता । तब नृप बोल्यो गिरा पुनीता ॥
सुनु माता अब कलियुग माहीं । राज्य करै कर पौरुष नाहीं ॥
श्रीकृष्णहि आज्ञाशिर धरिहौं । उत्तरपन्थ गमन अब करिहौं ॥

राज्य परीक्षित देहु सुहाई । करिहै मातु तोरि सेवकाई ॥
यह सुनि भीम परीक्षित नाये । बोले नृपसन वचन सोहाये ॥
तुम बिन नाथ मोहिं सुखनाहीं । बन्धुहीन नहि राज्य सोहाहीं ॥
तब न्टप पुत्रहि हृदय लगावा । धीरजदीन बहुत समुझावा ॥
सत्य वचन सुतकह्यो विचारी । चलौ धर्म सदा अनुसारी ॥
दाया राख्यो मन करि धीरा । पाल्यो प्रजा सदा तुम बीरा ॥

दाया राख्यो हृदयमहँ, कहेउ सो किहेउ प्रमान ॥
राजधर्म लक्षण कहे, ऐसे वेद बखान ॥

भीमसेनसों कह्यो भुवारा । वेगिकरौ अभिषेक विचारा ॥
अगणित स्यन्दनतुरत सजाये । औषधिमूल फूल सबलाये ॥
दूतन बोलि तुरत जल मांगा । साजे वेगि अनेकन नागा ॥
विविध भांति बाजन बजवाये । व्यास आदि सबऋषै बोलाये ॥
विप्रन कीन्ह वेद उच्चारा । जयजयशब्दभयो अनुसारा ॥
महादिव्य सिंहासन आवा । मणिनजटितबहुभांति सोहावा ॥
व्यासदेवको आज्ञा पाई । राज्य परीक्षितको बैठाई ॥
व्यासदेव तब तिलक करावा । सब भूपन आ माथ नवावा ॥
पौत्रहि राज्यभूप जब दीन्हा । सबहिन विविधनिछावरिकीन्हा ॥
तबहि न्टपतिमातहि शिरनाई । पांचौ भाइ चले हर्षाई ॥
गङ्गातीर तुरत न्टप आये । मणि मुक्ता बहुभांति लुटाये ॥

बोले विप्र अनेक विधि, दीन्ह दान बहुभांति ।
स्यन्दन हय गज वसन मणि, वर्णत वरणि न जाति ॥

वायु वेग साज्यो रथ पावन। ऊंचध्वजा अति परम सुहावन॥
सहित द्रौपदी पांचो भाई। तिहिपरन्टपतिच्यो हर्षाई॥
उत्तर मुख तुरतहि रथ भयऊ। नगरलोग व्याकुलह्वै गयऊ॥
रोवहिं पशु पच्छी सब नाना। महा वियोग न जाइ बखाना॥
अब केहिके शरणागतरहिहैं। होइहि त्रास भागिकह जहिहैं॥
तब सबहिन समुझाय नरेशा। कहि सब कलियुगको उपदेशा॥
धर्मराय सबकहँ समुझावा। उत्तर दिशहि विमान चलावा॥
ब्रह्मचर्य व्रतयुक्त सुहाये। हरिद्वार के ढिग न्टप आये॥
को छवि हरिद्वारकी कहई। दर्शन करत महाअघ दहई॥
घाट सोहावन रत्न जड़ाये। जहँ बहु देव रहैं नित छाये॥

हरि चरणन दर्शन करो, ब्रह्मकुण्ड अस्नान।
शिरीकृष्णपद सुमिरितब, न्टप फिरि कीन्हपयान॥

हरिद्वार उत्तर चलि आये। बीरभद्रके दर्शन पाये॥
करि दर्शन न्टप आगे गयऊ। तपकानन प्रमुदितमनभयऊ॥
विविध मुनिनके धाम सुहाये। भूपति देखि महासुख पाये॥
भरत दरश कीन्ह्यो हरषाई। लच्मणचरण विलोक्योजाई॥
करिपददच्छिण सुमिरि मुरारी। सुरप्रयाग देख्यो भयहारी॥
फेरि न्टपति तहँवां चलि आये। शिव आश्रमजहँवेदन गाये॥
शङ्कर दरश हेतु मन ठाना। सो गिरिनाथ हेतु सब जाना॥
छिपे शंभु महिषा उरमाहीं। ढूंढ़न लगे मिलहि हरनाहीं॥
कह न्टप सुनहुवचन अब ताता। कहँगे शंभु कहौ सो बाता॥

कह सहदेव विचार करि, सुनहु भूमिपति बात।
यहे जानि छपि रहे शिव, हम कीन्हे कुलघात॥
सुन्यो भीम महिषासुर जबहीं। क्रोध कीन्ह वायूसुत तबहीं॥
जो महिषा उर छिपे महेशू। तौ तुम सुनहु मोर उपदेशू॥
मम चरणनके बीच निकारी। तब दर्शन देहैं कामारी॥
भूप कह्यो सुनु भीम कुमारा। क्रोधकिये नहिं काज हमारा॥
शङ्कर दीनबन्धु जगदीशा। सुरनरमुनिसबनावहिंशीशा॥
धर्मराय तब अस्तुति ठाना। पांचौ भाइन यह मत माना॥
जय जय शङ्कर जन भय हारी। दीनबन्धु भयहरण पुरारी॥
जय शिवशङ्कर शरण भयहरण व्यापक रूप अनूपा।
पाणित्रिशूल दरिद्र दवन प्रभु कृपासिन्धु सुररूपा॥
सुरमुनिपालक खलकुलघालक जय कृपाल वृषकेतू।
जय त्रिपुरारी प्रभु कामारी जासु नाम भवसेतू॥
अङ्गविभूति अभूषण सोहैं लख सुरन रमुनिमोहैं।
कण्ठे शेष गरलकृत भक्षण गङ्गजटा शिर सोहैं॥
हमहिं कृतारथ करनहेतु अब दरशन देहु कृपाला।
सबलसिंह पुनि पुनि नृप विनवै जय जय दीनदयाला॥
जयशिवसबलायक सबजगनायक गञ्जन विपतिसमूहा॥
गुणअगाह थाह नहिं पावत गावत सब सुर यूहा॥
यहि विधि विनती कीन्ह, धर्मराज करजोरि तहँ।
तबहर दरशन दीन्ह, तब केदारपति परशि नृप॥

परशि केदार भुवाल, विनयकरत महिभाल धरि।
जय जय शंभु कृपाल, प्रभुमोहि पार लगाइये॥
नमामि ईश ईश्वरं। सुपाहि मे परमेश्वरं॥
नमामि आशुतोषणं। समस्त लोकपोषणं॥
अनेक रूपधारणं। विभञ्जलोक कारणं॥
गिरीश रूप आगरं। त्रिलोकमें उजागरं॥
कृपाल माल शोभितं। शरण शरण शरण नितं॥
नमामि गङ्ग धारणं। अनेक भय निवारणं॥
सव्यापकं विभुं प्रभो। गुणाकरं कृपाल भो॥
दयालु दीन नायकं। सुसन्त सुःखदायकं॥
कराल काल भक्षकं। स्वभक्त दीन रक्षकं॥
हिमेशपुत्रि नायकं। सुसर्व सिद्धि दायकं॥
निरंकार रूप नाथ। अर्थचारि प्रभो हाथ॥
शैलनाथ शिवनाथ। नागेश्वर रामनाथ॥
शीशगङ्ग चन्द्रभाल। कण्ठमाहि नागमाल॥
दरश दियोजानिदीन। मैं तौ सर्वज्ञ हीन॥
बार बार हाथ जोरि। राखो अभिलाष मोरि॥
बार बार विनती करी, भूप दण्डवत कीन्ह॥
मन वांछित वर पायो, शंभु आशिषहि दीन्ह॥
पांचौ भाइ बहुरि शिरनाई। आगेकहँ रथ दीन चलाई॥
चलेउ बद्रिकाश्रमको ताके। अगणित पर्वत नांघत बांके॥

शैलावत पर्वत पर आयो । महा ऊँच नहिं मारग पायो ॥
ताहि तोरि तहँ पवनकुमारा । रजकर शृङ्ग तोरि महिडारा ॥
निर्मल पन्थ कीन्ह बलवाना । आगे चलत भक्तभगवाना ॥
विश्ववती गिरि देख्यो जाई । मारग तहां भीम नहिं पाई ॥
बायें हाथ तोरि तिहि दयऊ । तहां पन्थ अति निर्मल भयऊ ॥
तिहिपर चढ़िगे पांचो भाई । शिखर विमानवती नियराई ॥
तहां एक अति दैत्य प्रचण्डा । आगे आइ मिला बरबण्डा ॥
देखि नृपहि अतिहर्षितभयऊ । वचनक्रोधअतिशीतलकहेऊ ॥
सफल जन्म मम भयो भुवारा । शत्रु दरशमोहिंमिलेउतुम्हारा ॥
सज्जन शत्रु आजु गृह आवा । मिटा कोटिदुख दरुण दावा ॥

आजु जन्म मम सफल भा, सज्जन रिपु गृह पाइ ।
देहुयुद्ध धर्मराजमोहिं, कहै लाग गोहराइ ॥

कहा भूप सुनु निशिचर राजा । मैं छांड्यो सब लौकिक काजा ॥
ब्रह्मचर्य हम पाचौ भाई । व्रतसुयुक्त नहिं युद्ध सोहाई ॥
अस्त्रसकल अर्जुन धरिदीन्हे । अगमपन्थमहँ काहु न लीन्हे ॥
शङ्कर दरश कीन्ह हम जबहीं । भीमहु गदा दीन्ह धरि तबहीं ॥
पण्डित है भाई सहदेऊ । नकुल न जान युद्ध कर भेऊ ॥
यहिमा लरनहार नहिं कोई । हमसों युद्ध कबहुँ नहिं होई ॥
यह सुनि मेघनाद असकहई । विना युद्ध नहिं देवै जाई ॥
देहु युद्ध मोहिं नृप रणधीरा । पुनि पुनि कहै निशाचर वीरा ॥
सुनिकै भीम क्रोधभरि आयो । धर्मरायसों वचन सुनायो ॥

आज्ञादेहु नृपाल मोहिं, निशिचर हतौं प्रचारि ।
भूपति कहेउ भीमसेन, राखहु क्रोध सँभारि ॥
कहा पन्थ कहँ जो कोउ रहई । तजै क्रोध शास्त्रौ अस कहई ॥
हरि जन कहँ रिस कबहुँ न आवै । द्वादश षष्ठ पुराणे गावै ॥
दैत्य नृपतिकहँ बहुत प्रचारा । नहिं आवा कछुहृदय रूमारा ॥
मेघनाद तब गर्जत भयऊ । जनु घनघोर महाध्वनि ठयऊ ॥
प्रलय समान ठोंकि भुजदण्डा । कीन्हत्रासि नाद महापरचण्डा ॥
झपटि द्रौपदीको लै गयऊ । भीमहृदयअतिविस्मयभयऊ ॥
कहा भूप सन पवनकुमारा । नाथ भयो अपमानहमारा ॥
पाञ्चाली को दैत्य अब, लै गा अपने धाम ।
धृकधृक जीवन जन्म मम, जो न कीन संग्राम ॥

इति तृतीय अध्याय ॥ ३ ॥

असकहिभीम क्रोधभरि आयो । मानहुँ सोवत सिंह जगायो ॥
ताल ठोंकि पर्वत लै धायो । जहँवा असुरधाम तहँ आयो ॥
कोटिन दैत्य महा बरियारा । धाये गर्जत विविधप्रकारा ॥
शिखरप्रहार भीम तब कीन्हा । मानहु वज्रघातकरि दीन्हा ॥
पवनतनय अतिभुजबलजोरा । सहस निशाचर गहिशिरफोरा ॥
मेघनाद कहँ भूमि पछारी । हाहाकार भयो अतिभारी ॥
मारिनिशाचर तपसिन लीन्हा । तबहिं द्रौपदी आशिषदीन्हा ॥

धन्य पवननन्दन बलवाना। अपनि प्रतिज्ञा कियो प्रमाना॥
धन्य महाबल अतिभुजजोरा। राख्यो भीमसत्य तुममोरा॥

धन्य धन्य पाण्डव सुवन, द्रुपदी कौन बखान।
पांचौ भाइन सुमिरि हरि, पुनि फिरि कौन पयान॥

बशम्पायन कहि समुझाई। सुनु जन्मेजय नृप मन लाई॥
कथापुनीत सुनत दुखभागे। पांचौभाइ चले पुनि आगे॥
यूप कूप आगे शत वीरा। देखत कोप भीम रणधीरा॥
कहा कूपै सुनु पाण्डुकुमारा। सुनहु नाथ अब कहा हमारा॥
क्रोध ढील अरु पन्थ सुहाये। हमहूं दरश तुम्हारे पाये॥
अशुभवचन कूप जब कहेऊ। सुनतभीम तबशीतलभयऊ॥
आगे चले युधिष्ठिर राजा। बेनवती देखिनि नृपसाजा॥
देवसुता तब आगे आई। दोउ करजोरि कहा शिरनाई॥
धन्य धर्म्मध्वज राजकुमारा। अबकछुसिखवनसुनहुहमारा॥
उत्तर पन्थ नाथ दुख भारी। महाशिखर आगे भयकारी॥

इहवां रहहु नरेशतुम, करहु विविधविधि भोग।
सुरपुरते अति सरिससुख, छूटै जक्त वियोग॥

कहेउ भूप सुनु कन्या वानी। वेद चारि अस कहैं बखानी॥
राजप्सरा लोक तिन त्यागा। हरिचरणनतिनकर मन लागा॥
तिन सम धन्य और नहिं कोई। हरिहि पियार सदा वे सोई॥
अन्त समय केवल पद पावैं। फिरि यहि जगत बहुरि नहिं आवैं

मैं निजपुर त्यागो अस जानो । कहत भयो नृप अति मृदुवानो ॥
वेनवती समुझाय भुवाला । बहुरि सुमिरि निज इष्ट गोपाला ॥
धरा शिखर ऊपर चढ़ि आये । महागहन नहिं मारग पाये ॥
भीम हृदय तब कीन्ह विचारा । धरा शिखर अति ऊँच अपारा ॥
सब पर्वतते अति विस्तारा । ताके शृङ्ग तोरि महि डारा ॥

धरा पर्वतन तोरिकै, कीन्हों पन्थ पुनीत ।
हरिहर सुमिरत बन्धु सब, आगे चले विनीत ॥

भद्रकालि कन्या तहँ रहेऊ । देखि पाण्डवन मोहित भयऊ ।
आगे आइ नृपति शिर नाई । मृदुलवचन अति कह्यो सोहाई ॥
धन्य देव राजन शार्दूला । सत्यवादि शुभ सुकृती मूला ॥
विविध विलास महा अस्थाना । करहु भोग नृप परम सुजाना ॥
देवनकन्या परम सुहाई । सो तुम्हारि करिहैं सेवकाई ॥
इन्द्रपुरी सुख सरिस सुहाये । सो पैहौ नृप नित मन भाये ॥
करहु विलास त्याग निज हेतू । रहौ नाथ सब बन्धु समेतू ॥
उत्तर पन्थ गहन बहुतेरे । तहँवां पन्थ न पैहौ हेरे ॥
देव सुतन तब रूप देखावा । देखि भूपके नहिं मन भावा ॥

भद्रकालिसों धर्मसुत, बहु विधि कहेउ बुझाइ ।
इन्द्रपुरीसों सरस सुख, सो मैं चलेउँ बिहाइ ॥

हम जादव श्रीपतिके धामा । हमको नहीं भोगसे कामा ॥
भद्रकालि समुझाइ नरेशा । आगे चलेउ अगम जहं देशा ॥
शिखर अनन्त महा विस्तारा । शतयोजन सो ऊँच अपारा ॥

(७०

चढ़उ युधिष्ठिर पांचौ भाई। सङ्ग द्रौपदी पन्थ न पाई॥
आगे भीम पन्थ तहँ कीन्हा। गिरिके शृङ्ग तोरि तब दीन्हा॥
नांघि अनन्त शिलापर गयऊ। बद्रीपतिकहँ देखत भयऊ॥
दूरिहि ते प्रदक्षिणा कीन्हा। ठाकुरके दर्शन नहिं कीन्हा॥
अस्तुति कीन्ह नृपति हर्षाई। जय कृपालु सन्तन सुखदाई॥
जय जय भवतारण असुर संहारण जयति चक्रवरधरस्वामी।
महिभार विभञ्जन सुरमुनि रञ्जन जय कृपालु अन्तर्यामी॥
जय गदापद्मधर आनन्द निधि हर जासुचरणसे श्रीगङ्गा।
प्रगटी संसारा जगविस्तारा कीन्हे पाप सकल भङ्गा॥
जय दुष्ट निकन्दन जय जगवन्दन तुम भस्मासुर भस्मकरी।
प्रह्लादउवारे असुर विदारे रूपधार नरसिंहहरी॥
प्रभु तुम सबलायक रिधिसिधिदायक जिनकरमनरतपदकञ्जा।
सुमिरै निशिवासर हरि हरि हर हर मदमायाके दलभञ्जा॥
मधुकटभमारेउ महिविस्तारेउ खरदूषणके बल भञ्जा॥
बन मच्छ कच्छनर वामन वपुधर सुरसन्तनको दुखगंजा॥
सकल चराचर रूप तुम्हारा तुमही प्रभु यह जग विस्तारा
कोई न पावै पारा।
निगमागम निशि वासर गावै शेष शारदा शङ्कर ध्यावै
बीते कल्प हजारा॥
गुण अवगाह थाह नहिं पावै अपनी मतिभरि सहि नहि गावै
का कवि करै बखाना।

जेहि पर नाथ दयाकर हेरेउ तेहि को मतिको मोह न घेरेउ,
सो चरणन लिपटाना ॥

बार बार करजोरि धर्मसुत सहित द्रौपदी और अनुजयुत,
अस्तुति करत सुजाना।

मनवांछित फलसो दीन्हेउ मोहि जय कृपालुप्रभु मैं यांचेतोहि
यह वर मन अनुमाना ॥

भिर नृपवन्धु सहित गये तहंवां ऋषिय समूह विराजै जहंवां
कीन्हेउ दण्ड प्रणामा।

लोमशादि मुनि सकल विराजैं निज निज वेहिन ऊपर राजै
तेज ज्ञानके धामा ॥

गौतम औ जमदग्नि मुनि, भरद्वाज सुखधाम ॥
भृङ्गीऋषि शृङ्गीऋषी, जिन जाने हरिनाम ॥

पारस उद्दालक मुनि ज्ञानी। औ कौण्डिन्य महा सज्ञानी ॥
शोभाऋषै गर्गऋषि तहँवां। मार्कण्डेय सहित हैं जहँवां ॥
सुरगुरु कपिल देव तहँ आजा। विश्वामित्र करहिं तपसाजा ॥
सूर्यवंशके गुरु तहँ देखे। राजै धर्म धन्य करि लेखे ॥
वामादिक अरु ऋषयवशिष्टा। ये सब बैठे सकल सरिष्ठा ॥
वाल्मीकि सम ऋषी अनेका। ऋषिदल भज जे परमविवेका ॥
भृगुनायक अरु भारद्वादो। और सकल परमारथवादी ॥
अत्रीमुनि तहँ ज्ञान निधाना। कुम्भज आदि सकल सज्ञाना ॥
परमहंस देखत मन मोहै। मानहुँ वेद धरे तनु सोहै ॥

सनक सनन्दन सनतकुमारा। शौनकादि नारदहि निहारा॥
जान्यो सफल जन्म मम होई। ऋषि समूह जब देख्यो सोई॥
सब कहँ कीन्ह्यो दण्डवत, धन्यजन्म निज जानि॥
सबलसिंह नृप बन्धु युत, चरण परेउ तब आनि॥
तब ऋषि बोले गिरा सुहाई। आशिष दीन्ह नृपहिं बैठाई॥
नारदऋषि बोले तब बानी। सुनहु धर्मनन्दन विज्ञानी॥
करतेउ राज सकलसुखनाना। अबहीं काहेक कियो पयाना॥
वैतरणी अति दूरि भुवाला। मारग अगम बसै बहुकाला॥
तहँको पहुँचब कठिन नरेशा। काहेक तज्यो रुचिर अति देशा॥
हस्तिनपुरी महासुख सोहै। जेहिके देखत सुरगण मोहै॥
सुनि नारदके वचन सुहाये। भूप जोरिकर वचन सुनाये॥
मोरि भाग्य अति बल ऋषिराई। जो तवचरण विलोक्यों आई॥
नृपकर जोरि मुनिनके आगे। अस्तुति करन लगे अनुरागे॥
नमामि सिद्धि दायकं। मुनीश सन्त नायकं॥
त्रिवेद रूप आगरं। सुब्रह्मपुत्रनागरं॥
स्वब्रह्म नाथ ब्रह्ममय। नमो नमः कृपाल जय॥
सुब्रह्म विष्णु शंभुरूप। अग्नि सूर्य चन्द्ररूप॥
सनाथ नाथ वेदरूप। हरो कलह कलाप कूप॥
नमामि विश्वलोचनं। नमामि पाप मोचनं॥
दिया सदर्श आयके। लियो हृदय लगायके॥
कृपा करो कृपा करो। दयानिधान भय हरो॥

अहो भाग्य अवगाह, देख्यो चरण मुनीश तव।
छुटिगे कोटिन दाह, सबलसिंह नृप कहेउ अस॥

सुनहु ऋषय कह बहुरि नरेशू। जेहि कारण मैं छोड़ेउँ देशू॥
आयो कलियुग महा प्रचण्डा। अब सबके उर बस पाखण्डा॥
नीति विचार करै नहि कोई। विविध अनीति जगतमें होई॥
नारदऋषि तब बोले वयना। सुनहु महीप सकलगुण अयना॥
भल कीन्हेउ तुम यह मत ठाना। जो उत्तरपथ कियो प्रयाना॥
नारद कहन लगे विज्ञाना। सुनहु महीप हृदय धरिध्याना॥
यहि तनु अमितअनीतिहिरहहीं। अपनीवृद्धिसकल वे चहहीं॥
अस्थि मांस नारी त्वच जोरा। काम क्रोध तिहि मा बरजोरा॥
माया मोह साज भय सङ्गा। इनके विविध प्रकार तरङ्गा॥
॥रजो तमो औ सतगुण आवै। इन सबजीव विविधविधि भावै॥

ये सब करहिं कर्म वश, जीव कहे हम कीन्ह।
नारद भाषत ज्ञान यह, तेहिते इनमहँ लीन्ह॥

चिन्ता हर्ष बसै तनु माहीं। बहु विधि नींद वश्य ह्वै जाहीं॥
प्राकृत कर्म जीव कहँ लागै। होइ सुखी जो इनकहँ त्यागै॥
कर्म अकर्म उभय जग करई। तेहिते देह अनेकन धरई॥
इन्द्रिय स्वाद भूलि जग माहीं। हरिशरणागत आवत नाहीं॥
दश इन्द्रिनके दशै विचारा। वे निशि वासर चलै अपारा॥
नेत्रन रूप रूप वश करई। देखेको इच्छा बहु धरई॥

श्रवणन शून्य सुनै कछुजबहीं। जीवहि आइ करै वश तबहीं ॥
जिह्वा पर रस रसको चाहै। नासा गन्ध गन्ध वश राहै ॥
त्वचा वसत अस्पर्श सोहाई। शीत तपनि दुखसुखहि बताई ॥
औरौ इन्द्रिनके अति स्वादा। सोवै चहैं गयर मर्य्यादा ॥
औरौ चारि अवस्था गाढ़ी। तिन वहु भांति जीवकहँ दाढ़ी ॥
वालक होय युवा ह्वै जाई। वृद्ध होय तनु जाय पराई ॥
योनि लच चौरासी जोई। कर्म निबन्ध करै जिय सोई ॥
यहिप्रकार जिय हरिकहँ भजई। रहत अधीन सङ्ग कस तजई ॥
तीनि अवस्था वेद बखाना। जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिः जाना ॥
पांच पचीस तत्त्व बलवाना। इन सँग जीव भयो अज्ञाना ॥
शोधि मनै नहि ध्यावै पावै। इनते गांसि नादपर लावै ॥
त्रिकुटी संयम चढ़ै गगनमा। सुरति बांधि देखो निजतनमा ॥
पांचौ शब्द होयँ झनकारा। सोइ साहब त्रिभुवनते न्यारा ॥

प्राकृत सङ्ग छोड़ाइ, मनकहँ गांसि विचारि करि ॥
हरिपद सुरति लगाइ, फिरि न परै भ्रमजाल नर ॥
समदरशी ह्वै जाइ, एकरूप सब जगत लखि ॥
कहु नारद समुझाइ, सबलसिंह भव तरै सोइ ॥

इति चतुर्थ अध्याय ॥ ४ ॥

जब नारद राजहि समुझावा। तत्त्व ज्ञानको भेद बतावा ॥
तब नृप बहुरि हर्षि शिरनाये। सहित द्रौपदी पन्थ सिधाये ॥

आबू शिखर गये सब भाई । तहँवां दैत्य मिले समुदाई ॥
कोटिन निशिचर यूथ घनेरे । राजहि आइ पन्थमहँ घेरे ॥
मांगहि युद्ध गर्जि घनघोरा । प्रलयकाल रव भै चहुँ ओरा ॥
ह्वै गयंद हय रूप देखावैं । ह्वै कै हरि कहुँ गर्जत आवैं ॥
अगणित रूप भयङ्कर देखी । नृपति भीमसों कहेउ विशेखी ॥
क्रोध न कीन्हेउ पवनकुमारा । अब मन सुमिरहु जक्तउदारा ॥

वासुदेव भगवान प्रभु, हरे कृष्ण गोपाल ॥
गोपीपति गोविन्द कहि, आगे चलेउ भुवाल ॥

तहँवां शीत प्रबल अति भयऊ । तुरत द्रौपदी तनु गलि गयऊ ॥
पंचाली तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह वैकुण्ठ निवासा ॥
देखि भीम अति शोचबढ़ावा । दोनों नयन नीर भरिआवा ॥
हा देवी तुम तनु तजि दीन्हा । तुम सम वर्त्त न काहू कीन्हा ॥
जस रोहिणी चन्द्रमहि जाना । जस रुक्मिणी कृष्णकहँ माना ॥
तस अर्ज्जुनकहँ मानेहु देवी । निशिदिन चरण नृपति केसेवी ॥
तव व्रत राखा कृष्ण मुरारी । उभय सभामहँ होत उघारी ॥
भीमहि बाढ़ा शोच अपारा । तब समुझायो धर्म्मकुमारा ॥
भीमसेन तुम तजहु कलेशू । निगमागमकर अस उपदेशू ॥
भारत भयो द्रौपदी हेतू । जूझि गये सब गुरुन समेतू ॥
तेहिकारण तनुगत ह्वै गयऊ । धरहुधीर राजहि असकहेऊ ॥
ज्ञान मिटै उर करत अँदेशा । धर्मसुवन बहुविधि उपदेशा ॥

जनअर्दन यदुनाथ कहि, शिरोकृष्ण कुलकेतु ॥
आगे बढ़ेउ नरेश तब, पांचौ भाइ समेतु ॥
कछुक दूरि आगे जब गयऊ । कञ्चनपुरी विलोकत भयऊ ॥
रत्नखम्भ सब जड़ित सोहाये । कञ्चनके कपाट बहु लाये ॥
देवन कला विविध परकारा । जिनके रूप न कोउ संसारा ॥
रति रम्भा उर्वशी लजाहीं । और तियाको लेखे माहीं ॥
शिव हरि शक्ति गने को भाई । जगतमातु उपमा किमि लाई ॥
रूप राशि कन्या सब धाई । धर्मतनय सों कह्यो बुझाई ॥
अहहु भूप तुम शीलनिधाना । राज्य करौ हमरे अस्थाना ॥
विविध भांति सुखकरहु नरेशा । देव सुतनकर अस उपदेशा ॥
पांचो भाइ रहौ सब जानी । बोलों सकल वचन रससानी ।
तब राजें सब वचन सुनाये । हम तो राजभोग तजिआये ॥
श्रीपति पुरुषहि इच्छा जागी । तव हमचलेसकलसुखत्यागी ॥
राज विषयरस भोग हैं, म त्यागेउँ अस जानि ॥
श्रीकृष्णक पदपङ्कज, मति लागे भयहानि ॥
असकहि भूपचलतपुनिभयऊ । नाम अनङ्ग शिलापर गयऊ ॥
शीत प्रबल कछु बरणिन जाई । सहदेव तनुतहँ गयो बिलाई ॥
कीन्ह भीमतहं अति अपघाता । बुद्धिवन्त नहिं देखिय ताता ॥
कह्यो भीम भा बन्धु बिछोहू । यह सुनि नृपहि भयो अतिकोहू ॥
ज्योतिष सकल विशारदभाई । सकलशास्त्रमतिवरणि नजाई ॥

वेद निधान सकल गुण भूरे । चली धम अस्त्रके पूरे ॥
अहहबन्धु गत भै केहि पापा । सुमिरि भीम अति कीन्ह विलाप
राय युधिष्ठिर तब समुझाये । कूर्मशिला ऊपर चढ़ि आये ॥
अतिघनघोर शिलातवकीन्हा । नकुलहि आयतोपितेहिलीन्हा ॥
कीन्ह कोलाहल तेहिभयकारी । अतिप्रज्वलितशीतत्योंडारी ॥
तहंवां नकुल देह गलिगयऊ । पवन तनयके अति दुखभयऊ ॥

रूपराशि मम बन्धु दोउ, सकलगुणनकी खानि ॥
रोवहिं अर्ज्जुन भीम सब, बल औ शील बखानि ॥

नृपति समेत चणककरि शोचू । आगेचल्यो छांड़ि सब शोचू ॥
नाम गोमती शिला पुनीता । तेहिपरप्रबल अमित अतिशीता ॥
गर्जि धनञ्जय कहं लै लीन्हा । गजपुरनाथ शोच तब कीन्हा ॥
अहह बन्धु तुम यज्ञ कराई । घोड़ा लायहु भूमि फिराई ॥
तुम्हरे बल विप्रनकहं दाना । दीन्हओं मैं जो मो मनमाना ॥
महा धनञ्जय कृष्ण पियारे । तुम राजनके गर्व प्रहारे ॥
तुव भुजबल सुरनाथ गयंदा । पूजि कूजि मैं कीन्ह अनंदा ॥
तुम विनु दिशाशून्य सब भयऊ । अहह बन्धु कहंवां तुम गयऊ ॥
धृक मम जन्म युधिष्ठिरकहेऊ । जो मम बन्धुनाशह्वै गयऊ ॥
चणक शोच फिरि शोचबिहाई । आगे चलत भये द्वै भाई ॥
बैतरणी जहं नदी सोहाई । तिहि अस्थान गये द्वै भाई ॥

वैतवती जहं शिला बड़, गर्जा प्रलय समान ॥
तिहितर तोपि गयो पुनि, वायुसुत बलवान ॥

न्टपति युधिष्ठिर शोच बढ़ावा । श्वानस्वरूप तहां इक आवा ॥
ताहि देखि न्टप कहेउ विचारी । अहो श्वान कहं वासतुम्हारी ॥
उत्तर पन्थ स्वर्ग भयकारा । तुम कहुं देख्यहु भीमकुमारा ॥
अर्जुन भीम नकुल सहदेवा । कहो श्वान कछु इनकर भेवा ॥
यह सुनि श्वानकह्योमृदुवानी । सुनहु युधिष्ठिर न्टप विज्ञानी ॥
वैतरणी यह नदी पुनीता । कृष्णस्वरूप कहत अस गीता ॥
मज्जन करहु पाप मिटि जाई । फिरि नहिं जगतजन्मनियराई ॥
नरतनु मोह लोभ सँग लागे । माया रजगुण तीनि अभागे ॥
यह नर देह मूत्र मल झोरी । यहिमा पांच तत्त्व हैं जोरी ॥
कामादिक विष्टा लपटानी । करु अस्नान न्टपति असजानी ॥
यामें मज्जन करे जो कोई । पलटै देह देवतनु होई ॥

श्वान कहेउ समुझाइकै, करहु न्टपतिअस्नान ॥
सकल पाप तब छूटही, आवै स्वर्ग विमान ॥

तुरत न्टपतिमज्जनतबकियऊ । छुटिगा मोह ज्ञानवर भयऊ ॥
भूपश्वानकी अस्तुति कीन्हा । तुम मम पिता ज्ञान मोहिंदीन्हा ॥
माता बन्धु सखा तुम मोरे । यहिविधि न्टपति कहत करजोरे ॥
तिहिक्षण आवा विष्णु विमाना । तेजपुञ्ज रवि किरणिसमाना ॥
को शोभा तेहि यानकि कहई । शेष शारदा तेउ ठगि रहई ॥
मुक्तनके गुच्छा चहुँ ओरा । मणिनसिंहासन तिहिपर जोरा ॥
महा पुनीत रत्नमय सोहा । जानै धर्मसुवन जिन जोहा ॥
विविध सुगन्ध लपेटिसोहावा । लेकै विष्णु तहँतहूं आवा ॥

धर्मतनयसन कहेसि बुझाई । चढ़हु विमान नाथ अब आई ॥
चढ़िवैकुण्ठहि चलो भुवाला । तहँभोगहुसुख विविधविशाला ॥
सकल देव जहँ श्रीभगवाना । मुनिजनतहां वसतहैं नाना ॥
विविधतपस्याजिनमहिकीन्हा । तिनहिंनिवासतहांविधिदीन्हा ॥

विष्णु दूतके वचनसुनि, कहा नृपति करजोरि ॥
श्वान चढ़ावो यानपर, प्रभु विनती सुनि मोरि ॥

विना श्वान नहिंचढ़ौं विमाना । नहिं वैकुण्ठ करौं प्रस्थाना ॥
नृपवाणी सुनि सूर्यकुमारा । कह्यो धन्यसुतज्ञानतुम्हारा ॥
चढ़हु तात हरिरुचिर विमाना । मैं तव पिता नहीं मैं श्वाना ॥
धन्य युधिष्ठिर देवन कहेऊ । सुरतरुसुमनवृष्टि नभ करेऊ ॥
धर्मराज सुररूप देखावा । राययुधिष्ठिर पदशिरनावा ॥
धन्य जन्म मम भयो सोहावा । पितातुम्हार दरश मैं पावा ॥
नेम क्रिया सब सफल हमारे । तात चरण अब देखि तुम्हारे ॥
नमोस्तुते कहि बारहिंबारा । हरिविमानपरचढ़्यो भुवारा ॥
विष्णु विमान बैठि जब राजा । तबहरि गणन अभूषणसाजा ।
मुकुट मनोहर शीश बंधावा । पीताम्बरपटआनि ओढ़ावा ॥
नवभूषण भुज बांधि बहूटा । कङ्कण आनि हाथमहँ जूटा ॥
हरिस्वरूप जस वेदन गाये । विष्णुगणनतस नृपहिबनाये ॥
रुचिरछत्र शिर ऊपर ताना । ढोरत चमर उड़ान विमाना ॥

यहि विधि नृपहि विष्णुगण, क्षणमहं लैगे धाम ।
जे छल छांड़ि भजहिं हर, तिनहिं देत गति राम ॥

हरिगण न्टपहि धामलै आये । श्रीनिवासके दर्शन पाये ॥
देखि भूप दोनों करजोरी । जय दयालु राखहु रुचि मोरी ॥
जय सच्चिदानन्द घनश्यामा । यह सुनि आपु उठे श्रीरामा ॥
श्रीरनिवास हृदयमहं लाये । गहि भुज अपने ढिग बैठाये ॥
न्टप वैकुण्ठ विराज्यो जाई । वैशम्पायन कथा सुगाई ॥
जनमेजयसुनि अतिसुखपावा । मुनिकहं बहुरिहर्षिशिरनावा ॥
कथा पुनीत सुनत दुखभागा । आगे बहुरिकरहुअनुरागा ॥
मुनिअभिलाषन्टपतिको जाना । फिरि आगे तब कीन्ह बखाना ॥
हरिपुर न्टपति जाइ सुख पाई । तहां विलोक्यो चारिहु भाई ॥
सहित द्रौपदी रूप अनूपा । द्रोणाचार्य सहित सब भूपा ॥
देवरूप तहं भीष्मपितामह । कर्णसहित राजहिहरिधामह ॥
दुर्योधन आदिक बलवाना । जिनजिन मरत युद्ध रणठाना ॥
कुरुक्षेत्र पर जूझे जेते । हरिपुरमध्य विराजहिं तेते ॥
न्टप वैराट सहित सुत देखा । औरहु बहुत करैको लेखा ॥
गान्धारी माता तहं देखा । माद्री सहित धरे शुभवेखा ॥
जयद्रथ न्टप अहिबरणकुमारा । सबहिनकहं तहं देखि भुवारा ॥

भारत महं जे जूझे, स्वर्ग निवासहि झारि ।
विविधभांति सखपायो, धर्मज सहितनिहारि ॥

पर वैकुण्ठ पांडवा गयऊ । सुनि जन्मेजय कहं सुखभयऊ ॥
बारम्बार जोरि युग पानी । ऋपिते कह्यो भूप मृदुबानी ॥

आनन शशि तव नाथ पुनीता । अमृतमय यह गिराविनीता ॥
तृषित हृदयसुनिअतिसुखभयऊ । नाना भांति लाभ मैं लहेऊ ॥
यह तनु कल्प पाण्डवन केरा । सुनि छूटै चौरासी फेरा ॥
व्यासदेव भारतमहं भाखो । यहिके चारि निगम हैं साखो ॥
जो कोउ सुनै कपट करि दूरी । पाइहि सिद्धि सकल सुखभूरी ॥
जो नर याकहँ झूंठ विचारी । होइहि अधम नरक अधिकारी ॥
चत्री सुनत समर जय पावे । जो विश्वासमानि यह गावे ॥
ब्राह्मण पढै सुनै छल त्यागी । वेद निधान होय बड़ भागी ॥
जो नर नारि सुनै मन लाई । तेहि कर पापसकलमिटिजाई ॥
अन्तकाल निर्भय हरिलोका । जाइ बसै तजिके यमशोका ॥
काशी प्राग गया अस्नाना । तसफलयहसुनि व्यासबखाना ॥
दान अनेक देइ जो कोई । तस फलहोय सुनै यहसोई ॥

शङ्कर शारद शेष, चारिहु वेद सहस्र षट ।
सबकर अस उपदेश, भजु हरिचरण बिहाय छल ॥
सबलसिह मतिहीन, व्यास कहत तस कहेउ हम ।
प्रभु तारत जन दीन, सोइ मनकर्म भरोस करि ॥

इति पञ्चम अध्याय ॥ ५ ॥

स्वर्गारोहण पर्व्व समाप्त ।

इति महाभारत अठारह पर्व्व समाप्त ।